शहरक दोसर चेहरा

मैथिली कादम्बरी



गजेन्द्र ठाकुर
विदेह

शहरक दोसर चेहरा

मैथिली कादम्बरी

मैथिली कादम्बरी

शहरक दोसर चेहरा

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण : २०१७

प्रकाशन-विवरण

शहरक दोसर चेहरा [मैथिली कादम्बरी]

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

© २०१७ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

प्रथम संस्करण : २०१७

सर्वाधिकार सुरक्षित।

अनुक्रमणिका

प्रथम भाग : नोकरीक खोज.....1

अध्याय १ : आवेदनक पाँति.....2
अध्याय २ : घरक हिसाब.....9
अध्याय ३ : पुरान चिनजान.....16
अध्याय ४ : नई दिशा रोजगार केन्द्र.....24
अध्याय ५ : पूनमक जमा राशि.....33
अध्याय ६ : चन्दनक ऋण.....42
अध्याय ७ : नोकरीक पहिल दिन.....51
अध्याय ८ : किरणक चेतावनी.....60
अध्याय ९ : रतनक प्रतिष्ठा.....69
अध्याय १० : पहिल वेतन.....78
अध्याय ११ : सन्दिग्ध माल.....88
अध्याय १२ : पूनमक अन्तिम सन्देश.....98

द्वितीय भाग : गायब भेल लोक.....109

अध्याय १३ : बन्द मोबाइल.....110
अध्याय १४ : थानाक दुआरि.....119
अध्याय १५ : बदलल नाम.....128
अध्याय १६ : झूठक कागज.....138
अध्याय १७ : अभयक समाचार.....147
अध्याय १८ : गामक बदनामी.....156
अध्याय १९ : गुप्त हिसाब.....164
अध्याय २० : अवैध सम्बन्ध.....172
अध्याय २१ : पहिल धमकी.....180
अध्याय २२ : नरेशक निर्णय.....189
अध्याय २३ : नहरक कात.....197
अध्याय २४ : हत्या आ अनुसन्धान.....206

अनुक्रमणिका — क्रमशः

तृतीय भाग : घृणा आ विश्वासघात.....215

अध्याय २५ : शोकसभा.....216
अध्याय २६ : दोषक बोझ.....224
अध्याय २७ : चन्दनक मौन.....232
अध्याय २८ : विभाक सन्देह.....240
अध्याय २९ : किरणक स्वीकार.....248
अध्याय ३० : प्रेमपर संशय.....257
अध्याय ३१ : झूठ आरोप.....265
अध्याय ३२ : ऋणक दलदल.....273
अध्याय ३३ : अस्पतालक राति.....282
अध्याय ३४ : सहयोगक हाथ.....290
अध्याय ३५ : बदलैत गवाही.....299
अध्याय ३६ : नरेशक कागजात.....307

चतुर्थ भाग : साँचक दाम.....316

अध्याय ३७ : नब पूछताछ.....317
अध्याय ३८ : पुरान गाड़ी.....326
अध्याय ३९ : गोदामक भीतर.....334
अध्याय ४० : किरणक भय.....343
अध्याय ४१ : विभाक निर्णय.....351
अध्याय ४२ : सीमापारक सूत्र.....359
अध्याय ४३ : पूनमक पता.....368
अध्याय ४४ : जीवित भेटल पूनम.....376
अध्याय ४५ : घावक साक्षी.....384
अध्याय ४६ : बेईमान प्रस्ताव.....393
अध्याय ४७ : मनोजक गिरफ्तारी.....401
अध्याय ४८ : मजिस्ट्रेटक समक्ष.....410

अनुक्रमणिका — क्रमशः

पंचम भाग : बाँचल लोक.....419

अध्याय ४९ : रतनक गिरफ्तारी.....420
अध्याय ५० : हत्याक वास्तविकता.....429
अध्याय ५१ : बन्द कार्यालय.....437
अध्याय ५२ : विभाक नब जीवन.....445
अध्याय ५३ : दिनेशक स्वीकार.....454
अध्याय ५४ : समाचारक मर्यादा.....463
अध्याय ५५ : चन्दनक गलती.....472
अध्याय ५६ : नब रोजगारक प्रयास.....480
अध्याय ५७ : विवाहक विरोध.....489
अध्याय ५८ : अदालतक सुनवाई.....498
अध्याय ५९ : फेर नौकरीक पाँति.....507
अध्याय ६० : जिनगी आगाँ बढ़ैत अछि.....515

प्रथम भाग

नोकरीक खोज

अध्याय १–१२

अध्याय १ : आवेदनक पाँति

भोरे-भोर नवगढ़क बस अड्डापर एतेक भीड़ छल जे बस ठाढ़ होइतहि लोक ओकर दुआरि दिस दौड़ि पड़ैत छल। नैना मिश्र अपन फाइल दुनू हाथसँ छाती लगौने ठाढ़ छलीह। फाइलक भीतर प्रमाणपत्रक नकल, दूटा तस्वीर, पहचानपत्र आ एक पन्नाक जीवनवृत्त छल। ऊपरसँ प्लास्टिकक पातर खोल चढ़ौने छलीह, मुदा रातिक वर्षाक बाद सड़कपर जमल पानिसँ फाइलकेँ बचेबामे हुनका बेसी चिन्ता भऽ रहल छलनि। जूताक अगिला भागमे कीचड़ लागि गेल छल। घरसँ निकलैत काल माय साफ करबा लेल कहलथिन, मुदा बस छुटबाक डरें ओ रुकि नहि सकलीह।

आँगनसँ विदा होइत समय नैनाकेँ पड़ोसक छतपर कपड़ा पसारैत एकटा महिला देखाइ देने छलीह। ओ पुछने छलीह, ‘आइ फेर नोकरीक बात अछि?’ नैना ‘हँ’ कहि आगाँ बढ़ि गेलीह। गलीमे आब एहन प्रश्नक उत्तर देनाइ कठिन भऽ गेल छल। जे लोक पहिने हुनक पढ़ाइ पर गर्व करैत छलाह, ओहीमे किछु गोटे आब पूछैत छलाह—‘एतेक पढ़ि कऽ घर बैसलासँ की लाभ?’ नैना जनैत छलीह जे सभक नीयत खराब नहि होइत छैक; किछु लोक सचमुच चिन्तित रहैत अछि। मुदा बेरोजगारीक आठ महिनाक बाद प्रत्येक प्रश्न एकटा नब हिसाब जेना लागि जाइत छल।

आइ नगरक एकटा निजी प्रशिक्षण संस्थामे कार्यालय-सहायकक साक्षात्कार छल। विज्ञापनमे स्नातक उपाधि, कम्प्यूटरक ज्ञान आ स्पष्ट लेखनक योग्यता माँगल गेल छल। ई तीनू बात नैनाक लग छलनि। तखनहुँ हुनका पक्का विश्वास नहि छलनि जे काज भेटि जाएत। पछिला आठ मासमे ओ चौदह ठाम आवेदन देने छलीह। कत्तहु पद पहिने भरि गेल छल; कत्तहु उत्तर नहि आएल; दू ठाम साक्षात्कारक बाद कहल गेल छल जे चयनित अभ्यर्थीकेँ खबरि देल जाएत। खबरि कहियो नहि आएल।

बसक भीतर ठाम कम छल। खिड़की लग बैसल एकटा युवक अपन झोरा घुटनापर राखि देलक आ नैनाकेँ आधा सीट भेटि गेलनि। युवकक हाथमे मोट पुस्तक छल—सामान्य

ज्ञानक प्रश्नोत्तरी। ओ पन्ना पलटैत छल, फेर मोबाइलपर किछु देखैत छल, आ फेर पुस्तक दिस घुरि जाइत छल। अगिला सीटपर दू युवती प्रतियोगिता परीक्षाक प्रवेशपत्र मिला रहल छलीह। एक गोटे कहलीह, 'काल्हि केन्द्र बदलि गेल। रातिमे सन्देश आएल। आब पचास कोस दूर जाएब।' दोसर कहलीह, 'किछु नहि होइ छै। पढ़ैत रहू, फॉर्म भरैत रहू, किराया दैत रहू।' हुनक स्वरमे थकान छल; शिकायत करबाक सामर्थ्य सेहो जेना घटि गेल छलनि।

नैना मोबाइल खोलि अपन आवेदनक पुष्टि फेर देखलनि। ग्यारह बजे पहुँचनाइ छल। घड़ीमे साढ़े नौ बजल छल। शहरक बीचवला सड़कपर मरम्मतिक काज चलि रहल छल। बस धीरे-धीरे सरकैत छल। हुनका याद आएल जे माय निकलैत काल एतबे पूछने छलीह, 'भोजन रखि लेने छह?' ओ हँसि कऽ कहने छलीह, 'साक्षात्कारमे खेबाक समय कतऽ भेटत?' माय अल्पना बनाओल पुरान डब्बामे दूटा रोटी आ तरकारी राखि देने छलीह। ओ डब्बा आब हुनक झोरामे छल।

माय रोटी राखैत समय पुछने छलीह जे लौटैत समय बजारसँ औषधि अनतिह कि नहि। नैना कहलथिन जे पहिने घरमे राखल औषधिक पत्ता देखि लेब, तकर बाद कीनब। औषधिक नाम हुनका याद छल, मुदा ओकर दामो याद छल। छोट-छोट निर्णयमे एतेक सोचब पहिने हुनका अस्वाभाविक लगैत छल। आब ओ बुझि गेल छलीह जे सीमित आमदनीवला घरमे प्रत्येक खर्चक आगाँ एकटा मौन प्रश्न ठाढ़ रहैत अछि—ई वस्तु एखन आवश्यक अछि कि दू दिन बादो चलि सकैत अछि?

संस्थानक फाटकपर पहुँचलीह तँ बाहर तीनटा पाँति छल। पहिलमे आवेदन-पत्र जाँच होइत छल, दोसरमे शुल्कक रसीद, तेसरमे साक्षात्कारक क्रमाङ्क। प्रवेशद्वार लग बड़का अक्षरमे लिखल छल—'योग्यतासँ सफलता भेटैत अछि।' ओकर नीचाँ एकटा कर्मचारी सबकेँ पाँति सोझ करबाक लेल डाँटि रहल छल। नैना अपन नम्बर पुछलनि। कर्मचारी बिना मुँह उठौने कहलक, 'पहिने फोटोकॉपी लगाउ, फेर एतय आउ।' नैना कहलथिन जे विज्ञापनमे दू प्रतिक उल्लेख छल आ ओ दू प्रतिये अनने छथि। ओ कहलक, 'आब तीनटा चाही। बाहर दुकान छै।'

फाटकसँ कनेक दूर फोटोकॉपीक दोकान छल। दोकानक बाहर सेहो पाँति छल। पाँच रुपैयाक एक पन्ना दस रुपैये मे बनैत छल। नैना विरोध करबाक विचार कएलनि, मुदा पाछाँ ठाढ़ युवती कहलथिन, 'एखन झगड़ा करब तँ नम्बर छुटि जाएत।' नैना चुपचाप रुपैया निकाललनि। महीनाक अन्तिम सप्ताह छल। झोराक भीतर छोट पर्समे कुल दू सय पचहत्तरि रुपैया छलनि। बसक भाड़ा, नकल आ भोजनक अतिरिक्त खर्चक हिसाब हुनक मोनमे अपने-आप बनि रहल छल।

प्रमाणपत्रक एहि नकलसभक अपन इतिहास छल। स्नातकक मूल प्रमाणपत्र पएबाक लेल एक बेर विश्वविद्यालयक कार्यालयक तीन दिन चक्कर काटय पड़ल छलनि। जन्मतिथिक प्रमाणपत्रमे लिखल नामक एकटा मात्रा सुधारबाक लेल दू बेर आवेदन देबय पड़ल छलनि। कम्प्यूटर प्रशिक्षणक प्रमाणपत्रक शुल्क सरस्वती देवी अपन सिलाइक कमाइसँ जोड़ि-जोड़ि कऽ चुकौने छलीह। नैनाकेँ पढ़ाइ याद अबैत छल तँ संगहि ओहि सभ छोट त्यागक बात सेहो मोन पड़ैत छलनि। योग्यता केवल कागजक नाम नहि छल; प्रत्येक कागजक पाछाँ परिवारक समय, पैसा आ आशा लागल छल।

फेर पाँतिमे घुरलीह तँ हुनक आगाँ सविता कुमारी ठाढ़ छलीह। सवितासँ पहिने एकटा पुस्तकालयमे परिचय भेल छलनि। ओ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत छलीह, मुदा घरक खर्च लेल कोनो अस्थायी काज सेहो खोजैत छलीह। 'अहाँ सेहो एतय?' सविता पुछलथिन। नैना कहलथिन, 'घर बैसि कऽ तैयारी होइत अछि, मुदा घरक खर्च पुस्तकक पन्ना नहि देखैत अछि।' सविता मुसुकैलीह, फेर बुझाइत छलनि जे ओ हँसी सहज नहि छल। कहलीह, 'एहि पद लेल पाँच सय आवेदन आएल अछि। पद दूटा अछि।'

नैना फाटक दिस तकलनि। बहुतो अभ्यर्थी सुन्दर कपड़ा पहिरने छलाह; किछु गोटे पुरान कुर्ता इस्त्री कऽ अनने छलाह। एक युवकक हाथमे बच्चाक दूधक खाली डब्बा छल; ओ अपन संगीकेँ कहैत छल जे साक्षात्कारक बाद दूध कीनत। पाँतिक अन्तमे एकटा अधेड़ व्यक्ति अपन बेटीक कागजात सम्हारने ठाढ़ छलाह। बेटीकेँ बारम्बार कहैत छलाह, 'घबरायब नहि, जे अबैत अछि से कहब।' नैना सोचलनि, एहि पाँतिमे सभक चेहरा अलग

अछि, मुदा सभक घरमे किछु ने किछु एहन बात अछि जकर समाधान एकटा नियमित आमदनीसँ भऽ सकैत अछि।

ग्यारह बजलाक बाद कागजातक जाँच शुरू भेल। एक-एक अभ्यर्थीकेँ भीतर पठाओल जाइत छल। घाम चढ़ि गेल छल। बरामदामे पंखा छल, मुदा हवा केवल पहिल दू पाँतिधरि अबैत छल। किछु लोक सीढ़ीपर बैसि गेलाह। एक कर्मचारी पान चबैत कहैत छल, ‘सार्वजनिक जगहमे एतेक भीड़ नहि करिऔ।’ भीड़ ओकरा उत्तर नहि देलक; सभकेँ अपन बारीक प्रतीक्षा छल।

सविता धीरे स्वरमे पुछलथिन, ‘अहाँक भाइ चन्दनक तैयारी केहन चलि रहल अछि?’ नैना कहलथिन, ‘पढ़ैत अछि। मुदा अपन खर्चक चिन्ता बेसी करैत अछि।’ सविता कहलीह, ‘हमर कोचिंगमे एकटा लड़का कहैत छल जे पैसा देला पर प्रश्न पहिनेसँ भेटि जाइत अछि। हम तँ ई सभ सुनि कऽ डरि जाइत छी।’ नैना ओकरा दिस तकलनि। ‘अफवाह सेहो बहुत होइत अछि। पढ़ाइ छोड़ि कऽ एहन बातक पाछाँ नहि पड़ू।’ सविता सहमति जनौलनि, मुदा कहलथिन, ‘अफवाहो ईमानदार विद्यार्थीकेँ परेशान करैत अछि। परीक्षा होएबाक पहिनहि संदेह बैसि जाइत अछि।’ दुनू फेर चुप भऽ गेलीह।

ओही पाँतिमे पाछाँसँ एकटा युवक पुछलक, ‘अहाँ सभकेँ शुल्कक रसीद भेटल?’ सविता अपन थैला टटोललनि। युवक कहलक जे ओकरा आवेदनक शुल्कक अतिरिक्त नब पंजीकरणक नामपर धन देबाक कहल गेल छैक। नैना जाँचक खिड़की लग गेलीह आ लिखित सूचना पुछलनि। कर्मचारी पुरान पन्ना देखा कऽ कहलक जे अतिरिक्त शुल्क केवल ओहि अभ्यर्थी लेल अछि जिनकर कागज अपूर्ण अछि। युवकक कागज पूरा छल; गलत पाँतिमे लगला कारण ओ भ्रममे पड़ि गेल छल। नैना ओकरा उचित खिड़की देखौलनि। आबो कतहु अन्यायक प्रमाण नहि भेटल छल, मुदा व्यवस्था एतेक अव्यवस्थित छल जे साधारण नियमो ककरो लेल फाँस बनि सकैत छल।

दुपहरक एक बजे नैनाक क्रमाङ्क पुकारल गेल। भीतर एकटा लम्बा टेबुल छल, जकर पाछाँ तीन व्यक्ति बैसल छलाह। सोझाँ प्लास्टिकक कुरसी। नैनाकेँ बैसबाक इशारा भेल।

बीचमे बैसल व्यक्तिक चश्मा नाकक नीचाँ सरकि आएल छल। ओ जीवनवृत्त देखैत पुछलनि, 'स्नातक भेलाक बाद एतेक दिन की केलहुँ?' नैना उत्तर देलनि, 'घरमे रहि कऽ प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी केलहुँ। संगहि किछु बच्चाकेँ पढ़बैत रहलहुँ।' ओ पुछलनि, 'स्थायी नोकरी भेटला पर एहि काजकेँ छोड़ि देब?' प्रश्नमे एहन फाँस छल जकर कोनो उत्तर सुरक्षित नहि लगैत छल। नैना कने ठहरि कऽ कहलीह, 'जखन काज करब तँ पूरा उत्तरदायित्वसँ करब। भविष्यक विषयमे एखन असत्य आश्वासन नहि देब।'

बामा दिस बैसल महिला कम्प्यूटरपर काजक विषयमे पुछलथिन। नैना पत्र लिखबाक ढङ्ग, तालिका बनेबाक काज आ अभिलेख सहेजबाक उपाय बतौलनि। महिला एकटा पन्ना बढ़ा देलथिन; ओकरा टाइप करबाक छल। पुरान कम्प्यूटरमे कुञ्जी कतेको बेर दबेला पर चलैत छल। नैनाकेँ कनेक बेसी समय लगलनि, मुदा ओ पन्ना पूरा केलनि। महिला देखलथिन आ माथ हिलौलनि।

अन्तमे बीचवला व्यक्ति कहलकनि, 'छ मास प्रशिक्षणकाल रहत। वेतन पाँच हजार। समय भोरे नौसँ साँझ सात। आवश्यकता पड़ला पर छुट्टीक दिन सेहो।' नैना पुछलनि, 'प्रशिक्षणकालक बाद वेतन कतेक रहत? आ नियुक्तिपत्र कखन भेटत?' ओ एक-दोसराक मुँह तकलनि। उत्तर आएल, 'एहि सभ बातक निर्णय बादमे होयत। अहाँ बहुत प्रश्न करैत छी।' नैना शान्त स्वरमे कहलीह, 'काज शुरू करबाक पहिने ई बात जाननाइ आवश्यक अछि।' हुनका लगलनि जे एहि उत्तरक बाद हुनक अवसर घटि गेल। मुदा ओ अपन प्रश्न वापस नहि लेलनि।

बाहर निकलय सँ पहिने महिला सदस्य हुनका रोकलथिन। 'अहाँ जे पन्ना टाइप कएलहुँ, से ठीक अछि,' ओ धीमे स्वरमे कहलीह। 'मुदा एतय कामक बोझ बहुत रहैत अछि।' नैना पुछलनि, 'कर्मचारी कतेक छथि?' उत्तर भेटल, 'जे छथि, ओही सभ काज सम्हारैत छथि।' महिला हुनका एकटा नम्बर लिखि देलथिन जकर माध्यमसँ परिणाम पुछल जा सकैत छल। नैना धन्यवाद दऽ बाहर आएलीह। हुनका बूझल भेल जे साक्षात्कारक भीतर बैसल सभ लोक एके विचारक नहि छलाह; किछु गोटे व्यवस्था बदलि नहि सकैत

छलाह, तथापि ओकर कठोरता बुझैत छलाह। ई बात हुनक हताशाकेँ कने नरम कऽ देलकनि।

बाहर निकललीह तँ दिन झुकय लागल छल। सविताक साक्षात्कार भऽ चुकल छलनि। ओ फाटक लग बाट तकैत छलीह। 'की भेल?' सविता पुछलथिन। नैना बात बतौलनि। सविता कहलथिन, 'पाँच हजारमे दस घण्टा? यातायातक खर्च निकालि देब तँ बचत की?' नैना कहलीह, 'घरमे पाँच हजारो बहुत अछि। मुदा एतेक देर रहला पर बच्चाकेँ पढ़ेबाक काज छूटि जाएत। तखन कुल आमदनी शायद ओतबे रहत।' दुनू कनेक दूर धरि संग चललीह। सड़कक मोड़पर सविता अपन गामक बस पकड़बाक लेल बिदा भऽ गेलीह।

नैना फुटपाथपर बैसि भोजनक डब्बा खोललनि। रोटी ठण्ढा भऽ गेल छल। तरकारीक तेल डब्बाक एक दिस जमा भऽ गेल छल। ओ धीरे-धीरे खाइत रहलिह। सड़कक दोसर कात नब भवनक निर्माण चलि रहल छल। माथपर ईंट नेने महिला मजदूर चढ़ैत-उतरैत छलीह। हुनका देखि नैना सोचलनि—कतेक तरहक मेहनत अछि; ककरो लग मेहनतक अभाव नहि, मुदा ओकर उचित दाम भेटनाइ अलग बात अछि।

ओहि समय एकटा युवक पातर कागज बाँटैत आएल। 'नोकरी चाही? निजी कम्पनी, बाहरक अवसर, दफ्तरक काम, कम्प्यूटरक काम!' नैना पहिने हाथ नहि बढ़ौलनि। मुदा युवक कागज हुनक लग राखि देलक। ऊपर लिखल छल—'नई दिशा रोजगार केन्द्र'। नीचाँ आकर्षक वेतन आ त्वरित नियुक्तिक बात छल। सम्पर्कक ठाम नवगढ़क एकटा परिचित सड़कक नाम छल। नैना कागज मोड़ि कऽ झोरामे राखि लेलनि। ओ तत्काल विश्वास नहि कएलनि, मुदा फेकि सेहो नहि देलनि।

घर घुरैत काल बसमे हुनका ठाढ़ रहय पड़लनि। खिड़कीसँ बजारक रोशनी देखाइत छल। विद्युत्क तारक नीचाँ दोकानसभ एक-एक कऽ बन्द भऽ रहल छल। मोबाइलमे मायकेँ सन्देश पठौलनि—'घुरि रहल छी।' माय उत्तर देलथिन—'आबि जाउ, भोजन गरम अछि।' छोट उत्तर पढ़ि नैनाक आँखि कनेक भरि आएलनि। साक्षात्कारमे पूछल गेल प्रश्न सभकेँ

ओ फेर मोन पारलनि। हुनका अपन उत्तरपर पछतावा नहि छल, मुदा घरक खर्चक चिन्ता बारम्बार मनमे उठैत छल।

बस अड्डापर उतरि कऽ ओ पैदल घर दिस बढ़लीह। गलीक अन्तिम मोड़पर पहुँचि झोरासँ ‘नई दिशा’क कागज निकाललनि। अधबन्हि रोशनीमे विज्ञापन-पत्र फेर पढ़लनि। कागजक कोन वर्षाक पानिसँ नर्म भऽ गेल छल। ओ तय नहि कऽ सकलीह जे एतय आवेदन देथि कि नहि। मुदा एकटा बात स्पष्ट छल—काल्हि फेर काज खोजय पड़त। आइक दिन पूरा भऽ गेल छल, नोकरीक खोज नहि।

ओ विज्ञापनक पाछू दिस देखलनि। ओतय कार्यालयक समय लिखल छल, मुदा शुल्कक स्पष्ट उल्लेख नहि छल। नैना मोनमे निर्णय कएलनि जे एतय गेलापर पहिल प्रश्न एही विषयमे पुछतिह। कागज भरोसाक प्रमाण नहि होइत अछि; आ कागजक अभाव सदैव छलक संकेत सेहो नहि। वास्तविकता बुझबाक लेल आदमीकेँ पुछय पड़ैत छैक, उत्तर जाँचय पड़ैत छैक। गलीक भीतर हुनक घरक मन्द प्रकाश देखाइत छल। ओ कागज सम्हारि लेलनि आ दुआरि दिस बढ़लीह।

अध्याय २ : घरक हिसाब

नैना घर पहुँचलिह तँ आँगनमे माटिक चुल्हासँ धुआँ उठि रहल छल। गैसक चूल्हि सेहो छल, मुदा सिलिन्डरक दाम बढ़लाक बाद सरस्वती देवी ओकर प्रयोग सोचि-समुझि कऽ करैत छलीह। बरसातक बाद भीजल लकड़ी सहजसँ जरैत नहि छल। ओ घुटना मोड़ि बैसल छलीह आ पंखासँ आगि सुलगा रहल छलीह। नैनाकेँ देखि पुछलथिन, ‘बहुत देर भऽ गेल। भोजन खाइ लेलहुँ ने?’ नैना झोरा राखि कहलथिन, ‘अहाँ जे देने रही, से खा लेलहुँ। पहिने ई धुआँसँ बाहर आउ।’ माय हँसलीह, ‘धुआँक संग दिन कटैत अछि। अहाँ अपन बात कहू।’

नैना साक्षात्कारक बात शुरू कएलनि, मुदा वेतनक बात कहैत संकोच भेलनि। पाँच हजार टका, प्रतिदिन दस घण्टा, प्रशिक्षणकालमे कोनो स्पष्ट लिखित आश्वासन नहि। सरस्वती देवी पहिने चुप रहलिह। फेर कहलीह, ‘काज छोट-पैघ नहि होइत अछि, मुदा काज करयवालाक देहक सेहो मूल्य होइत अछि। साँझ सात बजे छुट्टी भेटत तँ घर पहुँचैत आठ बजि जाएत। एतेक राति घुरब केहन रहत?’ नैना बुझेने छलीह जे मायकेँ घरे रहबाक काजक चिन्ता कम, बेटीक सुरक्षाक चिन्ता बेसी छन्हि।

घरमे तीनटा कोठरी छल। अगिला कोठरीमे पुरान सिलाइ-मशीन आ एकटा टेबुल, बीचमे पलङ्ग, पछिलका कोठरीमे रसोइक सामान। बरामदामे चन्दनक पुस्तकसभ ठाम-ठाम राखल छल। किछु पन्नापर लाल स्याहीसँ चिह्न बनल छल। नैना पुस्तक उठौने छलीह तखने चन्दन भीतर आएल। कन्धापर झोरा आ माथपर घामक दाग छल। ‘की भेल साक्षात्कारमे?’ ओ पुछलक। नैना कहलीह, ‘नियुक्तिक खबरि बादमे देताह।’ चन्दन तुरन्त पुछलक, ‘वेतन?’ ‘पाँच हजार।’ चन्दन हँसल नहि। एतबे कहलक, ‘एतय लोककेँ मजबूरी बुझल छैक।’

सरस्वती देवीक लग एकटा पुरान कॉपी छल। ओहीमे महिनाक खर्च लिखैत छलीह। चाउर, दालि, तेल, सब्जी, बिजली, औषधि, आवागमन, परीक्षाक आवेदन, मोबाइलमे धन

भरनाइ—सभक अपन पाँति छल। नामक आगाँ किछु रकम पेंसिलसँ लिखल छल, जाहिसँ बादमे बदलल जा सकय। नैना कॉपी खोललनि। बिजलीक बिलक आगाँ प्रश्नचिह्न छल। औषधिक रकम पूरा भरल छल। रसोइक खर्चक बगलमे माय एकटा छोट रेखा खींचने छलीह। 'एहि महिनामे तेल कम चलत,' ओ कहलथिन। नैना पुछलनि, 'कम करब तँ की खाएब?' माय सहज स्वरमे उत्तर देलथिन, 'जतबा अछि, ओहिमे चलत।'

किछु दिन पहिने सरस्वती देवी बजारसँ दालि आनबाक लेल गेल छलीह। एक दोकानदार पुरान ग्राहक बुझि कऽ थोड़ेक उधार देबाक प्रस्ताव केने छल, मुदा ओ हाथ जोड़ि कऽ कहने छलीह—'जतबा टका अछि, ताहिमे दे दिअ।' उधार लेनाइ अपने-आपमे अपमान नहि छल; मुदा अगिला मास कतेक आमदनी होयत, से नहि बुझलाक कारण हुनका ऋणसँ डर लगैत छलनि। घरक पाछू छोट जमीनपर साग लगाओल छल। साग कम उगैत छल, मुदा माय ओकरा देखि कहैत छलीह जे किछु वस्तु एखनो अपन हाथमे अछि।

नैनाक पिता अशोक मिश्र तीन वर्ष पहिने असामयिक चलि गेल छलाह। हुनक जीवनमे घरक आमदनी बड़ बेसी नहि छल, मुदा मासक निश्चित तिथिपर किछु टका अबैत छल। आब ओ निश्चित दिन समाप्त भऽ गेल छल। सरस्वती देवी पड़ोसक बच्चासभकेँ सिलाइ सिखबैत छलीह, कखनो कपड़ा सुधारैत छलीह। नैना दूटा बच्चाकेँ साँझमे पढ़बैत छलीह। चन्दन प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत छल आ बीच-बीचमे छोट-मोट काज देखैत छल। घर चलैत छल, मुदा प्रत्येक मासक अन्तमे अगिला मासक चिन्ता पहिनेसँ दुआरिपर ठाढ़ भेटैत छल।

अशोक मिश्र जीबैत काल घरमे एकटा नियम रहनि—पहिने आवश्यक वस्तु, तकर बाद इच्छा। हुनक मृत्युक बाद ई नियम आरो कठोर भऽ गेल। दिवालीक नब वस्त्र कतेको बेर टलि गेल, आ रिश्तेदारक विवाहमे भेट दयबाक समय नैनाकेँ सावधानीसँ टका राखय पड़ल। कतेको सम्बन्धी सहानुभूति जनौलनि; किछु गोटे सहायता सेहो केलनि। मुदा नियमित खर्चक लेल नियमित सहायताक कोनो व्यवस्था नहि छल। नैनाकेँ एहि कारणें अपन कमाइ पर भरोसा करबाक इच्छा छलनि। ओ नहि चाहैत छलीह जे प्रत्येक संकटमे ककरो दुआरि ताकय पड़य।

एहि बीच दुआरिपर आवाज भेल, ‘दिदी, पुरान बरतन अछि की?’ ई माधवी देवी छलीह। ओ नवगढ़क चारि घरमे झाड़ू-पोछा आ बरतन धोबाक काज करैत छलीह। सरस्वती देवीसँ हुनक पुरान चिनजान छलनि। कहियो बचल तरकारी, कहियो सिलाइक काज, कहियो बच्चाक पुस्तक लेल ओ एतय अबैत छलीह। आइ हुनक हाथमे कपड़ाक थैला छल। थैलामे राशन दोकानक चाउर आ एकटा छोट साबुन छल। ‘बैसू ने,’ सरस्वती देवी कहलीह। माधवी बैसलिह तँ नैनाकेँ पूछलथिन, ‘नोकरीक की भेल, बेटी?’ नैना उत्तर देलनि, ‘एखन किछु पक्का नहि।’

माधवीक पति रघुनाथ पहिने दैनिक मजदूरी करैत छल। ओ कमाइ कऽ घर घुरैत काल मदिरा पीबि लैत छल। कखनो आधा, कखनो पूरा मजदूरी ओहीमे खर्च भऽ जाइत छल। माधवी अपन कमाइसँ बच्चासभकेँ पढ़बैत आ घरक भोजन जुटबैत छलीह। शराबबन्दीक शुरुआती दिनक बात करैत हुनक चेहरा आबो बदलि जाइत छलनि। ‘पहिने-पहिने लगल जे भगवान सुनि लेलनि,’ ओ कहलीह। ‘रघुनाथ साँझमे खाली हाथ नहि, तरकारी लऽ कऽ अबैत छल। घरमे गारि-गुप्ति घटि गेल छल। छोटका बेटा लेल नब चप्पल कीनने रहिऐ। पहिल बेर बुझायल जे ओकरा बापो कमा कऽ घरक लेल रखि सकैत अछि।’

सरस्वती देवी कहलथिन, ‘हमरो याद अछि। ओहि दिनसभमे गलीक महिला सभक चेहरा चमकैत छल।’ माधवी माथ हिलौलनि। ‘हम सभ सोचने रही जे आब जिनगी बदलि जाएत। एक दिन रघुनाथक पुरान संगी ओकरा पुछलक—कोना छेँ? रघुनाथ कहलक—कने मोन तेहन नै, मुदा जेबीमे आब टका रहैए। हम बगलमे ठाढ़ रही। सुनि कऽ मोन कतेक प्रसन्न भेल छल।’ माधवी एहि संवादकेँ हँसैत दोहरौलनि, मुदा हँसी तुरन्त मन्द पड़ि गेलनि।

ओ दिनसभमे माधवी पड़ोसक महिलासभक संग छोट बचत समूहमे धन जमा करबाक आरम्भ केने छलीह। पहिल बेर छओ मास धरि नियमसँ टका बचल छल। रघुनाथ अपन बेटाक विद्यालयक शुल्क समयपर देलने छल, जकर रसीद माधवी कतेको दिन धरि बक्सामे सम्हारि राखने छलीह। साँझ पड़लापर घरक दुआरि देखैत भय नहि लगैत छलनि। गलीक बच्चासभ पुनः घरक आगाँ खेलय लागल छल। कतहु वाद-विवाद उठितो तकर समाधान

बातचीतसँ भऽ जाइत छल। माधवी एहि समयकेँ कोनो महान चमत्कार नहि कहैत छलीह; हुनका लेल ई केवल सामान्य परिवार जकाँ जीबय पएबाक अवसर छल।

‘फेर?’ नैना पुछलनि। माधवीक आँखि दुआरि दिस गेलनि। ‘फेर एक बरखो नहि बीतल छल जे चोरी-नुकाए शराब भेटय लागल। पहिने जे आदमी खुल्लमखुल्ला बेचैत छल, ओकरा स्थानपर नब लोक आबि गेल। दाम बेसी, डर बेसी। रघुनाथकेँ फेर संगति भेटि गेल। आब ओ घरमे झूठो कहैत अछि। कमाइ कतऽ गेल, पुछू तँ झगड़ा। कहैत अछि—काज कम भेटल। मुदा देहसँ गन्ध अबैत छैक।’

नैना चुपचाप सुनैत रहलीह। हुनका जानल छलनि जे माधवीक जीवनमे ई बदलाव केवल खर्चक नहि छल। एक दिन माधवीक छोटकी बेटी विद्यालयसँ घुरैत रोइत आएल छलीह; बापक नशाक कारण घरमे भेल हल्लाक चर्चा सहपाठीसभ कएने छल। दोसर दिन माधवी नोकरीपर देरिसँ पहुँचलीह तँ मालिकिन वेतन काटि लेलथिन। एहन चोटक कोनो रसीद नहि बनैत अछि। समाजमे ओकर हिसाब के राखत?

माधवी कखनहुँ अपन पति रघुनाथक बीमारी आ श्रमक थकानकेँ सेहो नकारैत नहि छलीह। दिनभरि काज नहि भेटला पर ओ चिड़चिड़ा भऽ जाइत छल, आ काज भेटला पर मजदूरी समयपर नहि भेटब अलग संकट छल। मुदा एहि कठिनाइक अर्थ ई नहि छल जे घरक लोक मारपीट आ अपमान सहय। माधवी बारम्बार कहैत छलीह—‘भूखक उपाय खोजल जा सकैत अछि; नशामे कएल गारि आ मारक घाव अलग बात अछि।’ हुनक बेटी आब बड़ होइत जा रहल छलीह। ओ नहि चाहैत छलीह जे बेटी अपन घरक विषयमे बोलयसँ डेराय।

‘पुलिसकेँ कहैत नहि छी?’ चन्दन पुछलक। माधवी तुरन्त प्रतिवाद नहि केलनि। ‘कहि देब तँ की होयत, बाबू? एक बेर गलीमे लोक शिकायत केलक। दू दिन शान्ति रहल। फेर ओकरा बाद नब लोक सामान लऽ कऽ आबय लागल। हम नहि जानैत छी केकर हाथ कतऽ धरि पहुँचैत छैक। मुदा एतबा जानैत छी—गरीबक घरक झगड़ा गरीबकेँ अपन माथ लऽ

कऽ सहय पड़ैत छैक।' सरस्वती देवी चूल्हिपर चढ़ल हाँड़ी उतारैत कहलीह, 'एहिमे दोष ओहि घरक महिलाक नहि, जे दिन-राति जूझैत अछि।'

माधवीक थैला उठेबाक बेला भेल। नैना हुनका दरवाजाधरि छोड़य गेलीह। दुआरिपर माधवी धीरे स्वरमे कहलीह, 'अहाँ नोकरी देखू, बेटी, मुदा कोनो आदमी पहिने बहुत टका माँगय तँ सावधान रहब। हमर जेठानीक लड़कीसँ नोकरी देबाक नामपर धन लेलक, काज तँ भेटल नहि, धन सेहो घुरल नहि।' नैना पुछलनि, 'कतऽ?' माधवी कहलीह, 'नाम ठीकसँ नहि जानैत छी। बजारक ओहि दिस कोनो दफ्तर। पूछिकऽ कहब।'

माधवीक गेला पर सरस्वती देवी नैनाकेँ बतौलथिन जे हुनक बचत समूह पहिने कतेक नियमित चलैत छल। पाँच-पाँच, दस-दस टकासँ शुरू भेल बचत एक बेर माधवीक बेटाक विद्यालयक शुल्क चुकबामे काज आएल छल। आब समूहक आधा सदस्य अपन जमा राशि समयपर दऽ नहि पबैत छलीह। एकटा महिलाक पति घरक समान बेचि देने छल, दोसरकेँ अपन मजदूरीक किछु भाग नुकाकऽ रखय पड़ैत छल। सरस्वती देवी कहलीह, 'ई सभ घटना देखैत छी तँ बुझाइत अछि जे कानून बनब एकटा बात भेल, लोकक जिनगीमे ओकर लाभ टिकि रहब दोसर बात।' नैना सहमति देलनि। हुनका ई बात अपन लेखा-किताबसँ अलग नहि लागलनि।

माधवी गेलाक बाद घरमे किछु बेर नीरवता रहल। चन्दन अपन पुस्तकमध्ये बैसि गेल। नैनाकेँ खयाल आएल जे अहाँकेँ कहल गेल पाँच हजारक प्रस्ताव शायद स्वीकार करय पड़त। मुदा ओकर संग बच्चाकेँ पढ़ेबाक आमदनी घटत, आवागमनक खर्च बढ़त आ माय दिनभरि एसर रहि जाएत। ओ कॉपीमे हिसाब केलनि। प्रत्येक संख्या लिखैत हुनका बुझाइत छल जे कठिनाइ केवल टकाक अभाव नहि, समयक अभाव सेहो अछि।

चन्दन पुछलक, 'दिदी, तोहर ई कम्प्यूटरवाला प्रमाणपत्रक काज नहि अबैत छौ?' नैना कहलीह, 'काज अबैत अछि। जिनका चाही, हुनका कम वेतनमे पूरा दिनक लोक चाही।' चन्दन कुछु कहयवाला छल, फेर रुकि गेल। नैना देखलनि, ओकर मोबाइलपर कोचिंग संस्थाक सन्देश आएल छल।

चन्दनक अध्ययनक अलग हिसाब छल। एकटा परीक्षाक आवेदन शुल्क, दोसरक यात्रा, तेसरक पुस्तक, आ प्रत्येक बेर नब पाठ्यक्रमक नामपर किछु ने किछु खर्च। ओ अपन संगीसभक संग पुरान पुस्तक बदलि लैत छल। कतेको बेर राति लाइट बन्द भेलाक बाद मोबाइलक प्रकाशमे पढ़ैत छल; नैना डाँटैत छलीह जे आँखि खराब होयत। चन्दन कहैत छल, 'थोड़ेक दिनक बात अछि।' मुदा ई 'थोड़ेक दिन' दू बरखसँ बढ़ैत जा रहल छल। एहि बीच ओकर अनेक संगी दूर शहरमे छोट काज पकड़ि लेने छल, आ किछु फेर परीक्षा देबय घुरि आएल छल। नब परीक्षाक तिथि घोषित भेल छल। चन्दन कहल, 'एहि बेर परीक्षा ठीकसँ भऽ जाए, तँ हमरो किछु आस अछि।' नैना ओकर मुँह दिस देखि कहलीह, 'तैयारी जारी रख। मुदा कोनो दलालक बातमे नहि पड़िहें।' चन्दन ठाढ़ भऽ गेल। 'हम एतेक मूर्ख नहि छी,' ओ कने तिक्त स्वरमे कहलक।

राति भोजनक बाद सरस्वती देवी ओहि पुरान कॉपीमे नब हिसाब लिखय बैसलिह। घरक छतसँ किछु ठाम पानि चुबैत छल। बरसात फेर शुरू भेल तँ मरम्मत करेनाइ आवश्यक छल। नैना अपन पुरान छाता खोलि देखलनि, ओकर एकटा काँटी निकलल छल। ओ सुइ-धागासँ कपड़ा जोड़बाक प्रयास केलनि। माय हँसि कऽ कहलीह, 'ई छाता तँ बहुत दिन चलि गेल। आब नब कीनि लेब।' नैना सेहो हँसलीह, 'पहिने नब नोकरी तँ भेटय।'

बिछानापर जाइत समय नैना झोरासँ कागज निकाललनि। 'नई दिशा रोजगार केन्द्र'क विज्ञापन फेर पढ़लनि। पदसभक नाम आकर्षक छल—कार्यालय-सहायक, आँकड़ा प्रविष्टि, ग्राहक-सेवा, बाहरक कम्पनीमे नियुक्ति। ओ मोबाइलपर देल नम्बर देखलनि, मुदा फोन नहि केलनि। विज्ञापनमे संस्था लिखने छल जे योग्यता अनुसार नियुक्ति होयत। नैनाकेँ बुझल छलनि जे लिखल शब्द आ वास्तविक काजमे अन्तर भऽ सकैत अछि।

आँगनसँ माय आवाज देलथिन, 'दीप बुताय देलहुँ की?' नैना कहलथिन, 'हाँ।' मुदा टेबुलक छोट प्रकाश एखनो जरैत छल। ओ कॉपीमे अगिला दिनक काज लिखलनि—विद्यालयक बच्चाकेँ पढ़ेनाइ, सवितासँ एकटा पुरान विज्ञापनक जानकारी लेनाइ, 'नई दिशा'क कार्यालयक पता सत्यापित करनाइ। अन्तमे पेंसिलसँ एकटा वाक्य जोड़लनि—'नियुक्तिपत्र बिना काज नहि।' लिखि कऽ हुनका कने भरोस भेलनि।

घर सोइ गेल छल। बाहरे वर्षा थमि गेल छल, मुदा छतसँ टपकैत बूँदक आवाज एखनो सुनाइत छल। नैनाकेँ माधवीक बात मोन पड़लनि—पहिने घरमे टका बचैत छल, फेर झूठ आ भय घुरि आएल। ओ सोचलनि, जखन एकटा घरमे कमाइ आ शान्तिक एतेक पैघ महत्त्व अछि तँ नोकरीक नाम सुनिते लोक कतेक आशा बाँधि लैत होयत। एहि आशाक लाभ उठेबाक लेल सेहो संसारमे लोक तैयार अछि। ओ विज्ञापनक पन्ना कॉपीक भीतर राखि देलनि। भोरे ओकर पता देखबाक निर्णय पक्का भऽ गेल छल।

रातिक नीरवतामे नैनाकेँ घरक भीतर तीन तरहक साँस सुनाइत छल—मायक कखनो-कखनो उठैत खाँसी, चन्दनक अधखुलल दुआरिपाछू पुस्तकक पन्ना पलटबाक आवाज, आ अपन थाकल देहक धीमा श्वास। ई छोट घरमे सभ एक-दोसराक जीवनसँ जुड़ल छलाह। एक गोटाक नोकरी भेटब केवल एक गोटाक जीत नहि होयत; ओहिसँ माय औषधि समयपर कीनि सकतिह, चन्दन बिना संकोच परीक्षा देत, आ बरसातसँ पहिने छत सुधरि सकत। मुदा एही आवश्यकता कारण ओ ककरो झूठ आश्वासनक शिकार नहि बनय चाहैत छलीह।

अध्याय ३ : पुरान चिनजान

अगिला दिन नवगढ़मे घाम जल्दी चढ़ि गेल। रातिक वर्षाक पानि सड़कक गड्ढामे जमल छल, मुदा ओकर ऊपरसँ धूलि उड़य लागल छल। नैना घरसँ निकललीह तँ माय छाता हाथमे देलथिन। ‘घाम अछि, मुदा साँझमे पानी पड़ि सकैत अछि,’ ओ कहलीह। नैना छाता झोरामे राखलनि। आइ हुनका साक्षात्कार नहि छल। ‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’क कार्यालयक पता बुझबाक छल, आ ओकरा पहिने साइबर दोकानमे किछु नकल निकालबाक छल।

बजारक पहिल मोड़पर चायक दोकान छल। ओतय समाचारपत्रक गड्डी खुलि रहल छल। एक युवक अखबारक पन्ना खोलि कऽ ऊँच स्वरमे कहैत छल, ‘एतबा पद लेल एतेक आवेदन! पढ़ल लोक घर बैसल अछि।’ दोकानक मालिक उत्तर देलक, ‘हमर बेटा पाँच बरखसँ तैयारी करैत अछि। ओहि पुस्तकक नाम बदलैत रहैत छैक, नोकरीक ठाम नहि बदलैत छैक।’ किछु लोक हँसलाह, मुदा हँसीक भीतर अपन दुख सेहो छल। नैना चाय नहि लेलनि। ओ अपन कामक बाट पकड़लनि।

बजारक ई सड़क नोकरीक खोजमे निकलल लोकक लेल परिचित बाट छल। एक दिस कोचिंगक भवन, दोसर दिस प्रमाणपत्रक नकल बनेबाक दोकान, आ बीचमे चाय-पानक ठेला। कोनो दीवालपर पुरान नियुक्तिक विज्ञापनक आधा फाटल पन्ना एखनो सटल छल। नब विज्ञापन ओकर ऊपर लगाओल जा रहल छल। नैना एकटा पन्ना पढ़लनि, जाहिमे ‘उज्ज्वल भविष्य’क वचन छल, मुदा पदक संख्या स्पष्ट नहि छल। ओ सोचलनि जे विज्ञापनक भाषा प्रायः एहन होइत अछि जे आशा तुरन्त जागि उठय, मुदा प्रश्नक उत्तर खोजय लेल अलग श्रम करय पड़य।

साइबर दोकानमे पहुँचलीह तँ बिजली गेल छल। दोकानक मालिक अनिल पुरान बैटरी चालू करबाक प्रयास करैत छल। ‘आधा घण्टा लाग सकैत अछि,’ ओ कहलक। नैना

पुछलनि, 'ताबत एतय बैसि सकैत छी?' अनिल एकटा मुढ़ी बढ़ा देलक। काउन्टरपर फार्म भरबाक लेल चारि लोक ठाढ़ छलाह। एकटा युवक अपन नामक वर्तनी ठीक करबय चाहैत छल; दोसरक तस्वीर निर्धारित आकारसँ पैघ छल; एक महिलाकेँ ऑनलाइन शुल्क भरबाक लेल आनल धन कम पड़ि गेल छल। काज छोट छल, मुदा ओकर प्रत्येक भूलक दाम लागैत छल।

'नैना?' पाछाँसँ आवाज आएल। ओ घूमलीह। दरवाजापर अभय पासवान ठाढ़ छलाह। पातर कद, कन्धापर कपड़ाक झोरा, हाथमे नोटबुक आ मोबाइल। हुनक माथपर घामक पसीना छल। नैना क्षणभरि पहचानबाक प्रयास कएलनि, फेर मुसुकैलीह। 'अभय! अहाँ एतय?' अभय कहलथिन, 'एहि दोकानसँ एकटा छायाचित्र चाही। मुदा बिजली हमरा सभक संग भेदभाव करयपर तुलल अछि।' नैना हँसि पड़लीह।

दुनूक चिनजान महाविद्यालयक पुस्तकालयमे भेल छल। नैनाकेँ ओ समय मोन पड़लनि जखन कॉलेजक वार्षिक पत्रिकामे छात्रसभक लेख छपैत छल। अभय छात्रसभक समस्यापर छोट-छोट समाचार लिखैत छलाह। एक बेर छात्रावासक पानिक संकटपर हुनक लिखल पत्रक बाद नलक मरम्मत भेल छल। नैना ओहि समय पुस्तकालयसँ सम्बन्धित एकटा निवेदन लिखने छलीह। दुनू अनेक बेर साथमे प्राचार्यक कार्यालय गेल छलाह। पढ़ाइ समाप्त भेलाक बाद भेंट घटि गेल छल, मुदा परस्पर सम्मान बनल छल।

एक बेर महाविद्यालयक पुस्तकालय दस दिन बन्द रहल छल। कारण बताओल गेल छल जे मरम्मतिक काज चलि रहल अछि, मुदा भीतर पुस्तक सभ धूलिमे पड़ल छल आ कोनो मरम्मत शुरू नहि भेल छल। अभय पुस्तकालयाध्यक्षा आ विद्यार्थीसँ बात कऽ समाचार लिखने छलाह। नैना छात्र-छात्राक हस्ताक्षर जुटौने छलीह। दूनूक प्रयाससँ पुस्तकालय फेर खुलल छल। ओहि दिन अभय कहलथिन जे सही प्रश्न पुछनाइ सेहो एक तरहक काज अछि। नैना उत्तर देने छलीह—प्रश्नसँ बेसी महत्त्व ओकर उत्तर लेल धैर्य राखबाक अछि। आब ई पुरान बात याद आबि दुनूकेँ सहज हँसी आएल।

‘एखन कतऽ काज करैत छी?’ नैना पुछलनि। अभय कहलनि, ‘नवगढ़ समाचारमे। कहबा लेल संवाददाता छी, व्यवहारमे फोटोग्राफर, लेखक, वितरणक शिकायत सुननिहार आ कखनो कखनो विज्ञापन जुटेनिहार सेहो।’ ओ हँसैत कहला, ‘अहाँक की समाचार?’ नैना साक्षात्कारक बात छोटमे बतौलनि। अभय गम्भीर भऽ गेलाह। ‘दस घण्टाक काजक पाँच हजार? लिखित नियुक्तिपत्रो नहि?’ नैना कहलीह, ‘एहि कारणें एखन हँ कि नहि, किछु नहि कहलहुँ।’

अनिल काउन्टरपर आवाज देलक, ‘साहेब, बिजली आबि गेल।’ अभय अपन मोबाइलसँ छायाचित्र पठौलनि। नैना कागजातक नकल बनबौलनि। मुद्रकसँ गरम कागज निकलैत छल; अनिल ओकरा व्यवस्थित कऽ एकटा पिन लगौलक। दुकानमे भीड़ बढ़ैत जा रहल छल। अभय बाहर ठाढ़ रहबाक इशारा केलनि। दुनू गलीक किनार एकटा नीमक छाहमे आएलाह।

‘अहाँ एखन कोन समाचार लिखैत छी?’ नैना पुछलनि। अभय कहलनि, ‘बेरोजगारीपर एकटा श्रृंखला चलि रहल अछि। कोनो युवा पाँच बेर परीक्षा देने अछि, कोनो आठ बेर। ककरो घरमे खेती अछि, मुदा परिवारक सभ बच्चाकेँ खेतमे राखब सम्भव नहि। निजी काज भेटैत अछि तँ वेतन एतेक कम जे शहरमे रहबाक खर्चो नहि निकलैत।’ नैना कहलीह, ‘कागजपर पद देखाइत अछि, असलमे कतेक लोककेँ काज भेटैत अछि, से अलग हिसाब अछि।’ अभय सहमति जनौलनि।

‘एहि सभ बातक बीच एकटा दोसर समाचारो अछि,’ अभय कहलनि। ‘किछु गलीमे अवैध शराबक बिक्री फेर बढ़ल अछि। हम काल्हि तीनटा घरमे गेल रही। पहिने शराबबन्दीसँ ओतय बहुत राहत भेटल छल। आब घरक महिला सभ कहैत छथि जे राति लोक फेर नशामे घुरैत अछि।’ नैना तुरन्त माधवीक बात मोन पारलनि। ‘हमर चिनजानक एकटा महिला सेहो काल्हि एही विषयमे कहैत छलीह। हुनका आरम्भमे बड़ राहत भेटल रहनि।’

अभय पुछलनि, ‘ओ अपन अनुभव लिखबाक अनुमति देतीह?’ नैना सोचलनि। ‘पहिने हुनकासँ पूछब। हुनक नाम छापल जाएत की नहि, से सेहो हुनकेँ तय करय देब। हुनक घरमे समस्या बढ़ि सकैत अछि।’ अभय कहलथिन, ‘ठीक कहैत छी। समाचारमे घटना चाही, मुदा ककरो निजी दुःखकेँ तमाशा बना कऽ नहि।’ नैनाकेँ ई उत्तर नीक लगलनि। ओ महाविद्यालयक अभयकेँ मोन पारलनि, जे ककरो बात बीचमे काटैत नहि छलाह।

अभय बतौलनि जे समाचार लिखैत काल हुनका कतेको बेर कठिन निर्णय लेबय पड़ैत अछि। एकटा परिवार अपन दुःख कहैत अछि, मुदा नाम प्रकाशित नहि होएबाक शर्त रखैत अछि। दोसर व्यक्ति आरोप लगबैत अछि, मुदा प्रमाण नहि दैत अछि। तेसर अधिकारी फोन नहि उठबैत अछि। ‘हम जँ सभ बात यथावत छापि दी, तँ ककरो अनावश्यक हानि भऽ सकैत अछि,’ ओ कहला। ‘आ जँ भयक कारण किछु नहि लिखी, तँ समस्या नुकाएल रहि जाएत। एहि दुनूक बीच सही बाट खोजनाइ पड़ैत अछि।’ नैना देखलनि जे अभयक बातमे अपन काजक कठिनाइक स्वीकार छल, बड़प्पनक प्रदर्शन नहि।

सड़कपर एकटा भारी ट्रक गुजरल। ओकर पाछाँ मिट्टीक धूलिक बादर उठल। अभय झोरासँ नोटबुक निकालि किछु लिखलनि। ‘एहि ट्रकसभक काजक विषयमे सेहो जानकारी जुटा रहल छी,’ ओ कहला। ‘कहियासँ ठीकेदारक नब गोदाम बनि रहल अछि। स्थानीय मजदूर कहैत छथि जे काज भेटैत अछि, मुदा वेतन समयपर नहि भेटैत।’ नैना पुछलनि, ‘ककर ठीकेदार?’ अभय कहलनि, ‘वीरेन्द्र राय। पैघ काज करैत छथि। मुदा एखन धरि जे सुनलहुँ, ओकर पुष्टि करब बाँकी अछि।’ ई कहैत ओ नोटबुक बन्द कऽ देलनि।

‘अहाँ कतऽ जा रहल छलीह?’ अभय पुछलनि। नैना झोरासँ ‘नई दिशा’क विज्ञापन निकाललनि। अभय ध्यानसँ पढ़लनि। ‘नाम सुनने छी। बजारक पाछिल सड़कपर कार्यालय अछि। किछु दिन पहिने एकटा रोजगार मेलामे ई लोक छल।’ नैना पुछलनि, ‘संस्था केहन अछि?’ अभय स्पष्ट कहला, ‘एखन हम एतबा नहि जानैत छी जे नीक वा खराब कहि सकी। ने कोनो आरोप बिना जाँचक, ने कोनो प्रशंसा केवल विज्ञापन देखि। अहाँ जाएब तँ पूरा शर्त लिखित रूपमे पुछब। आगाँ पैसा माँगय तँ ओकर कारण आ रसीदक विषयमे बुझब।’

नैना कहलथिन, 'हमरा एखन नियमित आमदनीक आवश्यकता अछि। मुदा प्रत्येक ठाम एकटा नब शर्त सामने आबि जाइत अछि।' अभय किछु बेर चुप रहलाह। फेर कहला, 'अहाँ पढ़ल-लिखल छी, हिसाब बुझैत छी। तथापि आवश्यकता मनुष्यकेँ जल्दी निर्णय करबा पर विवश करैत अछि। एही कारणें लिखित बातक महत्त्व बेसी अछि।' नैनाकेँ लगलनि जे अभय हुनका उपदेश नहि दऽ रहल छथि; अपन अनुभवक बात कहैत छथि।

दोसर मोड़पर सविता भेटि गेलीह। हाथमे पुस्तक आ कन्धापर झोरा। ओ नैनाकेँ देखि रुकलीह। अभयसँ परिचय कराओल गेल। सविता तुरन्त कहलथिन, 'अहाँ पत्रकार छी तँ प्रतियोगिता परीक्षाक केन्द्र बदललाक समाचारो लिखू। काल्हि एकटा लड़कीक साक्षात्कार छल, आइ ओकरा प्रवेशपत्रमे दूटा अलग पता अछि। ओ कतऽ जाए?' अभय ध्यानसँ सुनलनि। 'कागज देखाउ। जे सत्यापित भऽ सकत, ओ लिखब।' सविता मोबाइलसँ सूचना देखौलनि। अभय सम्बन्धित कार्यालयक सम्पर्क अङ्क नोट करैत कहलथिन, 'भ्रम दूर होयबाक पहिने समाचार लिखि देब तँ अभ्यर्थी आरो परेशान होएत।' सविता कहलीह, 'ठीक अछि। मुदा ककरो तँ पुछय पड़त।'

सविता बतौलनि जे ओ परीक्षा देबाक लेल पहिनेसँ यात्रा करैत आ विद्यालयक ठेकान पूछैत रहैत छथि। प्रत्येक बेर घरक लोक हुनका समयपर पहुँचबाक चिन्तामे आधा राति जागल रहैत अछि। कखनो प्रवेशपत्र बहुत देरीसँ अबैत अछि, कखनो वेबसाइट काम नहि करैत अछि। ओ कहलीह, 'हम पढ़ाइ करबाक लेल समय चाहैत छी। मुदा आधा समय सूचना खोजैत बीतैत अछि।' अभय हुनका आश्वासन देबाक बदला एतबे कहला जे विभागसँ आधिकारिक स्पष्टीकरण पुछताह आ जे उत्तर भेटत, ठीक ओतबे लिखताह। सविताकेँ ई बात उचित लगलनि।

सविताक बस आबि गेल। बिदा होइत ओ नैनाकेँ कहलीह, 'काज भेटय तँ बतायब।' नैना मुसुकाइत कहलीह, 'अहाँकेँ सेहो।' बस चलि गेलाक बाद अभय कहलनि, 'एहि एकटा वाक्यमे कतेक आशा अछि—काज भेटय तँ बतायब।' नैना उत्तर देलनि, 'हम सभ एक-दोसराकेँ नोकरीक समाचार बाँटैत छी। कखनो लगैत अछि, एही समाचारक आदान-प्रदानमे समय बितैत रहि जाएत।'

बजारक भीड़ बढ़ि गेल छल। अभयकेँ कार्यालय पहुँचनाइ छल। नैना पुछलनि, 'अहाँ आबो ओही घरमे रहैत छी?' अभय कहलनि, 'हाँ, रेलफाटक लग। बाबूजी खेती देखैत छथि, माय घरक काज। छोट बहिन महाविद्यालयमे पढ़ैत अछि।' नैना कहलथिन, 'हमरो घर पहिनहुक गलीमे अछि।' अभय कने ठहरि कऽ पुछलथिन, 'काका जी?' नैना धीरे कहलीह, 'तीन बरख भऽ गेल, ओ नहि रहलाह।' अभयक मुँह बदलि गेल। 'ई बात हमरा नहि बुझल छल। क्षमा करब।' नैना कहलीह, 'बहुत लोककेँ नहि बुझल। पढ़ाइ समाप्त भेलाक बाद सभ अपन-अपन दिशामे चलि गेल।' दुनू किछु बेर नीरव रहलाह।

नैनाकेँ बाबूक अन्तिम दिनसभ मोन पड़लनि। ओ विद्यालयसँ घुरि कऽ घरक पिछला कोठरीमे बैसैत छलाह आ चन्दनक पढ़ाइ पुछैत छलाह। मरबाक किछु दिन पहिने सेहो नैनाकेँ कहने छलाह जे अपन कमाइ भेला पर पहिल मासक टका मायकेँ नहि, अपन लेल एकटा नीक पुस्तक कीनबाक लेल राखिह। नैना ओहि बातपर हँसि देने छलीह। आब कखनो कोनो पुस्तकक दोकान आगाँसँ गुजरैत ओहि वाक्य मोन पड़ैत छलनि। अभय हुनक आँखिक बदलाव देखि विषय नहि बदललनि; चुपचाप संग ठाढ़ रहलाह। एहि नीरवतामे नैनाकेँ कोनो असहजता नहि भेलनि।

सोझाँ चायक दोकानमे छोट छज्जा छल। घामक तीखापन घटेबाक लेल ओतय ठाढ़ भऽ गेलाह। अभय दू कप चाय मँगौलनि। नैना कहलीह, 'हमरा चाय नहि चाही।' अभय पुछलथिन, 'तखन पानी?' ओ सहमति देलनि। दोकानक मालिक स्वच्छ गिलासमे पानि देलक। नैना किछु पीबि कहलथिन, 'पहिने पुस्तकालयक बहस मोन अछि? अहाँ कहैत रही जे समाचारमे संख्या लिखलासँ मनुष्यक पीड़ा बुझाइत नहि अछि।' अभय हँसि पड़लाह। 'आ अहाँ कहैत रही जे संख्या नहि लिखब तँ पीड़ा देखेबाक आधार कत्तऽ रहत। आब दुनू बात सही बुझाइत अछि।'

अभयक मोबाइल बजल। कार्यालयसँ सम्पादकक फोन छल। अभय छोट उत्तर देलथिन—'आबि रहल छी, सूचना जाँचि लेने छी।' फोन राखि कहला, 'हमरा जएबाक अछि। मुदा अहाँ 'नई दिशा' जाएब तँ अपन अनुभव बतायब। यदि कोनो समस्या भेटय, तँ पहिने आधिकारिक शिकायतक बाट बुझब। हम समाचारक लेल कागजातक जाँच करब।'

नैना कहलीह, ‘अहाँ पत्रकार छी; मुदा सभ बात समाचार बनबाक नहि होइत अछि।’ अभय उत्तर देलथिन, ‘एकदम। किछु बात भरोसामे कहल जाइत अछि, छापबाक लेल नहि।’

अभय बिदा होइत एकटा छोट घटना सुनौलनि। पछिला सप्ताह ओ एकटा युवकसँ भेटने छलाह जे तीन बरख प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारीक बाद दिनमे ट्यूशन पढ़बैत आ रातिमे गोदाममे सामान गनैत छल। युवक कहने छल—‘हमरा नोकरी चाही, मुदा घरक लोककेँ दिन भरि प्रतीक्षामे नहि राखि सकैत छी।’ अभय ओहि वाक्यकेँ अपन नोटबुकमे लिखने छलाह। ओ नैनाकेँ कहलनि, ‘जखन लिखब, तखन ई नहि कहब जे सभ पढ़ल युवक एक्के तरहक निर्णय लैत अछि। ककरो खेत अछि, ककरो नहि। ककरो घर सहारा दैत अछि, ककरो घर हुनकर सहारा तकैत अछि।’ नैनाकेँ ई भेद बुझल छलनि।

दुनू अलग भेलाह। अभय बजारक उत्तर दिस बढ़ि गेलाह। नैना पाछिल सड़क दिस चललीह। चौराहापर रंगीन विज्ञापनक पट्टी टँगल छल। कोनोमे कम्प्यूटर प्रशिक्षण, कोनोमे विदेशमे नियुक्तिक आश्वासन, कोनोमे केवल मोबाइल नम्बर। ‘नई दिशा’क बोर्ड एखन देखाइत नहि छल। ओ दुकानदारसँ पता पुछलनि। दुकानदार कहलक, ‘ओहि बड़का भवनक दोसर तल्लापर। सीढ़ी बाहरी दिससँ अछि।’

भवनक नीचाँ एकटा चाय-पानक दोकान छल। दोसर तल्लापर नब रंगक बोर्ड टाँगल छल—‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’। बोर्डक नीचाँ छोट अक्षरमे लिखल छल जे कार्यालय प्रत्येक कार्यदिवस खुलल रहैत अछि। नैना सीढ़ीक पहिल पायदानपर पयर रखलनि, फेर रुकलीह। अभयक बात मोन आएलनि—कागजात देखब, लिखित शर्त पुछब, जल्दबाजी नहि करब। ओ पर्समे राखल प्रमाणपत्र जाँचलनि। आजुक दिन केवल जानकारी लेबाक निर्णय छल।

ओ सीढ़ी चढ़ि गेलीह। ऊपर खुलल दुआरिसँ टेलिफोनक घण्टी आ लोकक बातचीतक आवाज सुनाइत छल। एकटा युवती मेजपर नाम लिखि रहल छलीह। नैना अपन नाम बतौलनि आ पुछलनि, ‘एतय कार्यालयक काज लेल आवेदन देल जा सकैत अछि?’ युवती एकटा पन्ना आगाँ बढ़ा देलथिन। ‘बैसू। जानकारी भेटत।’ नैना कुरसीपर बैसि गेलीह।

खिड़कीसँ बाहर देखलनि तँ नवगढ़क सड़कपर लोक अपन-अपन काजमे भागि रहल छल। हुनक हाथमे नब आवेदन-पत्र छल। आगाँ की होयत, से एखन हुनका नहि बुझल छल; एतबा बुझल छल जे बिना पूछने, बिना जाँचने कोनो शर्त स्वीकार नहि करबाक अछि।

अध्याय ४ : नई दिशा रोजगार केन्द्र

मेजक ओहि पार बैसल युवती नैनाक आवेदन-पत्र दिस एक बेर तकलीह, फेर रजिस्टरमे किछु लिखय लगलीह। कार्यालयक भीतर दूटा पंखा घुरि रहल छल, मुदा लोकक भीड़क कारण हवा बुझाइत नहि छल। दुआरिक लग पाँच-छहटा प्लास्टिकक कुरसी राखल छल। एकटा कुरसीक पयर छोट छलैक; ओहिपर बैसल अधेड़ आदमी बेर-बेर देह सम्हारैत छलाह। देवालपर ठाम-ठाम विभिन्न कम्पनीक नाम आ नियुक्तिक विज्ञापन चिपकल छल। अधिकांश विज्ञापनमे वेतन मोट अक्षरमे छल, मुदा काजक ठाम आ शर्त छोट अक्षरमे।

‘अहाँ अपन लेल काज खोजैत छी कि दोसराक नियुक्तिक विषयमे आएल छी?’ युवती पुछलथिन।

‘अपन लेल। कार्यालयक काज करबाक अनुभव अछि। कम्प्यूटर पर लिखब आ हिसाब रखब अबैत अछि,’ नैना उत्तर देलथिन।

‘तखन ई गुलाबी पन्ना भरू। नोकरीक लेल आवेदन करयवला सभक पन्ना अलग अछि।’

नैना पन्ना फेरि देखलनि। ऊपर नाम, उमेर, शिक्षा, अनुभव आ मोबाइल नम्बर माँगल गेल छल। अन्तिम पाँतिमे लिखल छल—‘कम्पनीक निर्णय अन्तिम होयत।’ ओ पुछलनि, ‘ई कार्यालयक अपन पद अछि कि अहाँ सभ दोसर संस्थामे पठाएब?’

युवती पहिल बेर ठीकसँ हुनक मुँह दिस तकलीह। ‘हमरा कुसुम कहैत छथि। एखन अहाँकेँ कार्यालय-प्रबन्धिकासँ भेंट करए पड़त। अपन पद खाली अछि, मुदा बाहरो नियुक्ति करबैत छी।’

‘एहि आवेदनक शुल्क अछि?’

‘कर्मचारीक पदक लेल नहि। बाहर नियुक्ति लेनिहार सभसँ पञ्जीकरण शुल्क लेल जाइत अछि।’

‘कतेक?’

‘तीन सय पचास। मुदा बाहरक काजक प्रकृति अनुसार आगाँ आर किछु खर्च भऽ सकैत अछि। सभ बात प्रबन्धिका बतौतीह।’

नैनाकेँ एकटा भेद स्पष्ट भेलनि। विज्ञापनमे एतेक चमक छल, शुल्कक बात नहि छल। हुनका सोझाँ एकटा युवक तीन सय पचास टका गनि रहल छल। ओकरा संग आएल वृद्धा अपन आँचरसँ बान्हल गाँठि खोलि दूटा नोट देलथिन। युवक कहलक, ‘माय, एखन एतबे दियौ। बाँकी पाछाँ देखल जाएत।’ वृद्धाक हाथमे काँप छल। ओ पुछलथिन, ‘एहि बेर नोकरी पक्का भेटत ने?’ काउन्टरक आदमी उत्तर देलक, ‘हमर सभक प्रयास रहत।’ वृद्धा शायद ई दू वाक्यक बीचक अन्तर नहि बुझलीह।

नैना पन्ना भरैत रहलिह। पिता जीवित छथि कि नहि, ई प्रश्न नहि छल; मुदा आपातकालीन सम्पर्क माँगल गेल छल। ओ मायक नम्बर लिखलनि। शैक्षणिक योग्यताक पाँतिमे अपन विषय लिखैत समय हुनका कॉलेजक पुस्तकालय मोन पड़लनि। एहन पद लेल जे पढ़ाइ आवश्यक नहि छल, से पढ़ाइकेँ हुनका निरर्थक नहि बुझैत छलनि। तखनहुँ कागजपर अपन योग्यता लिखैत ओ सोचैत छलीह—काज भेटब अलग बात अछि, काजक शर्त मानबाक सामर्थ्य अलग।

भीतरसँ कोनो महिला तेज पएर बाहर अएलीह। धूसर रंगक साड़ी, सम्हारल केश आ हाथमे कागजातक मोट फाइल। ‘कुसुम, कालिहक सूची कहाँ गेल?’ हुनक स्वरमे जल्दीक संग आदेश छल।

‘मेजक दहिना दराजमे, मैडम,’ कुसुम कहलीह।

महिला दराज खोलि पन्ना निकाललनि, फेर नैनाक पन्ना उठौलनि। ‘नैना मिश्र?’

‘जी।’

‘हम किरण छी, एतय कार्यालयक देखरेख करैत छी। अहाँ एतए बैसू।’

किरण हुनका भीतरक कोठरीमे लऽ गेलीह। कोठरीमे छोट मेज, दू कुर्सी आ एकटा कम्प्यूटर छल। खिड़कीक काँचपर विज्ञापनक पट्टी चिपकल छल, तेँ बाहर आधा सड़क

मात्र देखाइत छल। मेजपर रखल फाइलसभ पर नम्बर लिखल छल, मुदा एकहि फाइलमे विभिन्न रङ्गक पन्ना भरल छल।

‘पहिने कतहु नोकरी केलहुँ?’ किरण पुछलथिन।

‘नियमित नोकरी नहि। विद्यालयक किछु बच्चाकेँ पढ़बैत छी। एकटा स्थानीय संस्थाक परीक्षा-अभिलेख कम्प्यूटरमे चढ़ेबाक अस्थायी काज केने रही।’

‘कम्प्यूटर पर गिनती आ नामक सूची बना सकैत छी?’

‘सकैत छी। जँ उदाहरण देब, तँ एतहि कऽ देखाएब।’

किरण एकटा पुरान सूची निकाललनि। हुनका बीस अभ्यर्थीक नाम, आवेदन तिथि आ जमा रकम कम्प्यूटरमे चढ़ेबाक लेल कहल गेलनि। नैना कुर्सीपर बैसि काज आरम्भ केलनि। अनेक नामक वर्तनी रसीद आ रजिस्टरमे अलग छल। ओ बिना मनमाने सुधार केने असङ्गति चिन्हित करैत गेलीह। दूटा आवेदनमे एक्के रसीद क्रमाङ्क छल। नैना कोठरीमे बैसल किरणकेँ कहलथिन, ‘ई दूटा रसीदमे क्रमाङ्क एक्के अछि। हम जाँच लेल चिह्न लगा रहल छी।’

किरण कागज हाथमे लऽ कने चुप भेलीह। ‘गलती भऽ गेल होयत। अहाँ सूची पूरा करू।’

‘ठीक अछि। मुदा नाम आ जमा राशिक मिलान बिना हिसाब ठीक नहि रहत।’

‘एहि कार्यालयमे रोज बहुत लोक अबैत अछि,’ किरण कहलीह। ‘एतेक छोट गलतीपर रुकब तँ काज आगाँ नहि बढ़त।’

नैना किछु नहि कहलीह। ओ जस-तस अङ्क ठीक नहि कएलनि; दूनू प्रविष्टिक आगाँ ‘पुनः जाँच’ लिखि देलनि। आधा घण्टामे काज समाप्त भेल। किरण कागज देखलनि। हुनक मुँहपर पहिल बेर प्रसन्नताक हलुक चिह्न आएल।

‘अहाँ लिखित बात ठीक बुझैत छी। हमर कार्यालयमे एहन लोक चाही। मुदा एहिठाम रोज भीड़ रहैत अछि। लोक तकरा सहि नहि सकैत अछि,’ किरण कहलथिन।

‘काजक समय आ वेतन की रहत?’

‘पहिल तीन मास परीक्षण-काल। मासिक सात हजार छह सय। भोरे दससँ साँझ छह धरि। बीचमे आधा घण्टा भोजन लेल।’

‘साप्ताहिक छुट्टी?’

‘रविवार। मुदा विशेष शिविर भेल तँ आबय पड़ि सकैत अछि। तकर बदला छुट्टीक व्यवस्था रहत।’

नैना किछु क्षण विचार केलनि। पहिल संस्थामे पाँच हजारक बदलामे दस घण्टा काजक प्रस्ताव भेटल छलनि। एतए वेतन कने बेसी, समय कने उचित लगैत छल। मुदा लिखित नियुक्तिपत्रक बात आवश्यक छल। ‘अहाँ लिखित शर्त दऽ सकैत छी?’ ओ पुछलनि।

किरण हुनक मुँह देखलनि। ‘प्रत्येक नब कर्मचारी एहन प्रश्न नहि पुछैत अछि।’

‘बिना लिखित शर्तक घरमे किछु कहब कठिन होयत। हमर मायक औषधि आ घरक खर्चक हिसाब अछि।’

‘ठीक अछि। मालिकक हस्ताक्षरक बाद पत्र देल जाएत। एखन निर्णय नहि भेल अछि।’

एही बीच बाहर सँ पुरुषक ऊँच आवाज सुनाइ देलक। ‘किरणजी, ओहि पहिल सूचीमे चौदह आदमी छल कि पन्द्रह?’ किरण तुरन्त उठि गेलीह। बाहर तीन गोटे ठाढ़ छलाह। बीचमे उज्जर कुरता पहिरने एकटा पुरुष, बगलमे चकचकी जूता आ हाथमे महँग घड़ी। कुसुम हुनका देखितहि अपन कुर्सीसँ उठि गेलीह।

‘रतन बाबू, काल्हि बारह गोटेक कागज आएल छल। दूटा पाछाँ जोड़ल गेल,’ किरण उत्तर देलथिन।

‘दूटा पाछाँ के जोड़लक?’ पुरुष पुछलथिन।

‘हम स्वयं।’

‘तखन सूची हमरा दियौ। बेर-बेर बदललासँ गड़बड़ होइत अछि।’

किरण फाइल देलथिन। पुरुष एक नजरि नैनापर देलनि। ‘नब कर्मचारी?’

‘आवेदन देबय आएल छथि। काजक जाँच नीक भेल छन्हि,’ किरण कहलीह।

‘नाम?’

‘नैना मिश्र।’

‘ठीक। जे अभ्यर्थी अबैत छथि, हुनकासँ नम्रतासँ व्यवहार होयबाक चाही। हमर संस्था लोकक भरोसापर चलैत अछि,’ रतन कहलनि। हुनक स्वर बाहरक भीड़ सुनि सकय, एतेक ऊँच छल।

ओ सीढ़ी दिस बढ़ि गेलाह। कुसुम फुसफुसाइत कहलीह, ‘मालिक छथि। रतन सिंह।’ नैना देखलनि जे रतनक संग आएल व्यक्तिमे एक गोटे ठेकेदारक कागज नेने छल। ओकरा देखितहि कुसुम ‘वीरेन्द्र बाबू’ कहि नमस्कार केलथिन। ओ लोक कोठरीक दुआरि बन्द कऽ भीतर चलि गेलाह।

किरण फेर नैनाक काज दिस घुरलीह। ‘अहाँ काल्हि दुपहरिया फोन करू। जँ अनुमति भेटत तँ परसुसँ काज शुरू कऽ सकैत छी।’

‘आवेदनक शुल्क नहि लागल, ई बातो लिखित रहत?’

‘कर्मचारीक लेल नहि। अहाँकेँ कोनो शुल्क देबाक नहि अछि,’ किरण स्पष्ट कहलीह। ‘बाहर नियुक्तिक मामला अलग अछि।’

किरण मेजक दराजसँ एकटा सादा कागज निकाललथिन। ‘ई हमर कार्यालयक नियम अछि। अहाँ चाही तँ एक प्रति लऽ जाउ।’ कागजमे कर्मचारिक समय, उपस्थितिक अभिलेख आ परीक्षण-कालक उल्लेख छल। वेतनक तिथि खाली छोड़ल गेल छल। नैना ओहिपर आङुर रखि पुछलथिन, ‘वेतन प्रत्येक मासक कोन दिन भेटैत अछि?’

‘सात तारिखक भीतर,’ किरण कहलीह।

‘ई बात पत्रमे लिखल रहत तँ नीक होयत।’

किरण कलम उठा कऽ खाली ठाममे लिखलनि—‘अगिला मासक सात तारिखक भीतर।’ कने झुँझला कऽ कहलीह, ‘अहाँ बहुत हिसाब पुछैत छी।’

‘घरमे हिसाबक प्रश्न बेसी अछि,’ नैना शान्त स्वरमे उत्तर देलथिन।

किरणक मुखक कठोरता कने घटल। ओ कहलीह, ‘हमरो पहिल नोकरीमे तीन मास वेतन रोकि देने छल। ओहि समय घरसँ भाड़ा मँगए पड़ल छल। तकर बाद हम बुझलहुँ जे लिखित शर्त किएक आवश्यक होइत अछि।’ ई कहि ओ चुप भऽ गेलीह, जेना अपन विषयमे एतेक कहब हुनका उचित नहि लगलनि।

एही बीच दरवाजापर चोट पड़ल। कुसुम एकटा रसीदक पुस्तक लऽ ठाढ़ छलीह। ‘मैडम, बाहरक नियुक्ति लेल जे बारह हजारक जमा राशि कहल गेल अछि, ओकर रसीद कोन शीर्षकमे काटब?’

किरण नैनाक उपस्थितिक दिस तकलीह। ‘पहिने नामक सूची मिलाउ। सभसँ पैसा एखन नहि लेबाक अछि। जिनकर कागज पूरा नहि, हुनकासँ टका नहि लेब।’

कुसुम चलि गेलीह। नैना पुछलथिन, ‘बारह हजार टका ककरा लेल?’

‘दूरक कम्पनीमे जे कर्मचारी जाएत, तकर प्रशिक्षण आ यात्राक किछु खर्च। सभ नियुक्तिमे ई बात नहि अछि।’

‘जँ कम्पनी स्वयं नियुक्ति दैत अछि तँ अभ्यर्थीसँ एतेक खर्च किएक?’

‘किछु कम्पनी दैत अछि, किछु नहि। प्रत्येक व्यवस्थाक नियम अलग होइत अछि।’

‘तकर पूरा विवरण अभ्यर्थीकेँ पहिने भेटैत अछि ने?’

‘भेटबाक चाही,’ किरण कहलथिन। ‘अहाँ एखन अपन काजक विषयमे सोचू। दोसर लोकक आवेदनक हिसाब अहाँकेँ नियुक्ति भेलाक बाद देखय पड़त।’

किरणक अन्तिम वाक्यमे सामान्य निर्देश छल, मुदा नैनाकेँ बुझलनि जे ओ एखन बेसी प्रश्न सुनबाक इच्छुक नहि छथि। एखन धरि हुनका कोनो प्रत्यक्ष छलक प्रमाण नहि भेटल छलनि। कार्यालयक भीड़मे अयोग्य कर्मचारी सेहो भऽ सकैत छल, असङ्गत हिसाब सेहो।

प्रश्नकेँ उत्तर बनाकऽ घर नहि लऽ जएबाक निर्णय ओ मनहि मन केलनि। जखन कागज हाथमे आएत, तखन ओहि कागजक अर्थ बुझब आवश्यक होयत।

नैना अपन कागजात समेटलनि। 'तखन धन्यवाद। हम काल्हि फोन करब।'

बाहर अएलीह तँ भीड़ पहिनेसँ बढ़ि गेल छल। एकटा युवक अपन बटुआमे राखल नोट गनि रहल छल। ओ कहैत छल, 'हमरा जहिना हो, कोनो फैक्टरीमे काज भेटय। गाममे रहि कऽ आब चलब कठिन अछि।' कुसुम ओकरा एकटा पर्ची दऽ कहलीह जे पहिने पञ्जीकरण करय। ओकर संग आयल दोसर युवक पूछलक, 'जँ कम्पनी भर्ती नहि केलक तँ पैसा वापस भेटत?' कुसुम रसीदक पाछू लिखल नियम देखौलथिन। युवक पढ़ि नहि सकल। नैना रुकि कहलीह, 'एहिमे लिखल अछि जे पञ्जीकरणक शुल्क नहि घुराओल जाएत।'

दूनू युवक हुनका दिस तकलक। पहिल युवक कने असहज भऽ गेल। 'एना तँ काज नहि भेलो पैसा गेल।'

'हँ, तँ पूरा शर्त पढ़ि लिअ,' नैना कहलथिन। कुसुम हुनका एकटक देखैत रहलिह, मुदा किछु नहि कहलीह।

सीढ़ी उतरैत समय नैनाकेँ मोबाइलपर मायक सन्देश भेटलनि—'दोपहरिक भोजन खा लेब। औषधि चिन्ता नहि।' ओ उत्तर लिखलनि जे एखन किछु निश्चित नहि भेल अछि, मुदा काजक आशा अछि। समाचार देबाक उतावली नहि छलनि। पहिने लिखित पत्र भेटि जाए, तखन घरमे प्रसन्नताक बात होयत।

भवनक नीचाँ चायक दोकानदार गिलास धोइत छल। ओकर रेडियोपर परीक्षा स्थगित होयबाक समाचार चलि रहल छल। तीन युवक सुनि रहल छलाह। एक गोटे कहलक, 'कतेक बेर परीक्षा देब? पढ़ाइ कऽ बूढ़ भऽ जाएब?' दोसर अपन फोनक स्क्रीन बढ़ा कऽ देखौलक। समाचार एखन प्रारम्भिक छल, प्रमाण नहि। नैना तकरा पूरा सुनबाक लेल रुकलीह। चन्दन एहि परीक्षाक तैयारी करैत छल। ओ तुरन्त ओकरा फोन केलनि।

'की भेल, दीदी?' चन्दन पुछलक।

‘तोहर परीक्षाक कोनो नब सूचना आएल अछि?’

‘अधिकृत सूचना नहि। केओ कहैत अछि प्रश्न बाहर गेल। हम देखैत छी।’

‘अफवाहपर भरोस नहि करिहें। विभागक सूचना देखिहें।’

‘ठीक अछि,’ चन्दन कहलक, मुदा ओकर स्वरमे जे घबराहट छल, से नैना सुनि सकैत छलीह।

ओ गली पार कऽ बस अड्डा दिस बढ़लीह। कार्यालयक भीतरक रंगीन विज्ञापन, वृद्धाक आँचरसँ निकलल टका, किरणक सावधान नजरि आ रतनक ऊँच आवाज हुनक मोनमे एक-एक कऽ आबि रहल छल। ओ एखन संस्थाकेँ ठग नहि मानैत छलीह; नोकरीक लेल नियुक्तिपत्र देबाक आश्वासन सेहो भेटल छलनि। मुदा जँ लोकक आशा एतबा सस्तोमे पञ्जीकरणक रसीद भऽ जाइत अछि, तँ ओहि आशाक हिसाब राखयवला लोकक जिम्मेवारी बहुत पैघ होयबाक चाही।

बस अड्डापर पाँति लागल छल। नैनाक आगाँ दू महिला ठाढ़ छलीह। एक गोटे विद्यालयमे भोजन बनबैत छलीह, दोसरक बेटा कोचिंग छोड़ि शहरक बाहर मजदूरी करबाक निर्णय लेने छल। पहिल महिला कहलीह, ‘हमर विद्यालयमे नब रसोइयाक नाम लिखल गेल। तीन मास बीतल, एखन धरि मानदेय नहि।’ दोसर पुछलथिन, ‘तखन लोक काज करैत कोना अछि?’ महिला उत्तर देलथिन, ‘काज छोड़ि देब तँ आगाँ नाम नहि रहत। करब तँ घरमे कर्ज बढ़त।’

नैना ई बात सुनैत रहलिह। सरकारी सहायता, निजी संस्था आ दिहाड़ी—तीनू ठाम एकटा समस्या छल जे काज करबाक समय निश्चित, मुदा कमाइक भरोसा अनिश्चित। ओ अपन नियुक्तिक सम्भावित पत्रक विषयमे सोचलनि। जे वेतन सात हजार छह सय कहल गेल छल, ओ समयपर भेटि जाए तखनहि ओकर वास्तविक अर्थ रहत।

पाछाँ ठाढ़ एकटा युवक एकाएक पुछलक, ‘बहिनजी, नई दिशा कतए अछि?’ ओकर हाथमे ओही विज्ञापन छल जे नैनाकेँ काल्हि भेटल छलनि। नैना ठेगाना बता देलथिन। युवक कहलक, ‘मोट वेतन लिखल अछि। पक्का होयत ने?’ नैना उत्तर देलथिन, ‘हम किछु

पक्का नहि कहि सकैत छी। संस्था कई तरहक काजक बात करैत अछि। अहाँ जे पद लेल जाउ, ओकर स्थान, वेतन आ शर्त लिखितमे देखब।' युवक धन्यवाद कहि चलि गेल। ओकरा कतए पहुँचबाक अछि, से ओ बहुत उत्साहसँ जनैत छल; ओतएसँ की भेटत, से ककरो नहि बुझल छल।

बस आबि गेल। नैना भीड़क संग चढ़लीह, मुदा मनमे सोचलनि जे ओ स्वयं एखन एकटा अवसर आ अनेक आशङ्काक बीच ठाढ़ छथि। दोसराकेँ सावधान करबाक बात कहब सहज अछि, घरक खर्च सोझाँ रहला पर सावधानी निभाएब कतब कठिन होइत अछि, से आब हुनका बुझाइत छलनि।

साँझ घर पहुँचलीह तँ चन्दन कोठरीमे पुस्तक खोलने बैसल छल। मोबाइल ओकर हाथ लग छल। नैना पुछलथिन, 'परीक्षाक पक्का समाचार?'

'एखनो नहि,' ओ कहलक। 'मुदा सभ समूहमे एक्के बात चलि रहल अछि।'

नैना ओकर पुस्तकक पन्नापर देखलनि। माथपर शीर्षक छल—सामान्य अध्ययन। बहुतो स्थानपर पेन्सिलसँ रेखा घिचल छल। ई रेखासभ चन्दनक अनेक मासक परिश्रम छल। नैना कहलीह, 'पहिने सत्य बुझि ली। एखन पढ़ाइ छोड़बाक कोनो कारण नहि।'

ओ अपन झोरासँ 'नई दिशा'क आवेदनक नकल निकाललनि आ मायकेँ देलथिन। 'काज भेटि सकैत अछि। मुदा पत्र भेटलाक बादे पक्का मानब।' सरस्वती देवी कागज हाथमे लऽ आँखिसँ पढ़बाक प्रयास केलथिन। 'सात हजार छह सय?'

'हँ, परीक्षण-कालमे। आब देखू।'

माय कागज सम्हारि कऽ पुरान अलमारीक ऊपर राखि देलथिन। 'हम एतबे चाहैत छी जे तोरा अपन कमाइक भरोसा भेटौक। मुदा ओहि भरोसाक दाममे अपना बुद्धि नहि छोड़िहेँ।'

नैना मुसुकैलीह। दिन भरिक भीड़क बाद घरक ई छोट बात हुनका सान्त्वना देलकनि। दोसर दिन किरणक फोनक प्रतीक्षा करबाक छल।

अध्याय ५ : पूनमक जमा राशि

दुपहरिया पूनम यादव नैनाक घर पहुँचलिह तँ सरस्वती देवी आँगनमे पुरान साड़ी काटि तकियाक खोल बना रहल छलीह। पूनम दुआरिक कात अपन चप्पल उतारि प्रणाम केलथिन। हुनक हाथमे प्लास्टिकक फोल्डर आ लाल कपड़ामे बान्हल छोट गाँठि छल। चेहरापर घामसँ थकान छल, मुदा आँखिमे किछु पएबाक उतावलापन सेहो देखाइत छल।

‘नैना घरमे छथि?’

‘भीतर छथि। आइ एतेक दिउसा कोन बात?’ सरस्वती देवी पुछलथिन।

‘हुनकासँ काजक बात बुझबाक अछि।’

नैना कोठरीसँ बाहर अएलीह। पूनमकेँ देखि प्रसन्न भेलीह। दूनू विद्यालयक समयसँ एक-दोसराकेँ जनैत छलीह। पढ़ाइ अलग-अलग विषयमे भेल छलनि, मुदा गाममे पर्व-त्योहार आ विवाहक अवसरपर भेंट होइत रहैत छल। पूनम हाथक काजमे निपुण छलीह। पाछाँ तीन वर्ष एकटा सिलाई केन्द्रमे काज केने छलीह, जतए वेतन प्रायः देरीसँ भेटैत छल आ अन्तमे केन्द्र बन्द भऽ गेल छल। तकर बाद घरमे कपड़ा सिअब आ कखनो विवाहमे सजावटिक काज कऽ किछु कमबैत छलीह।

‘हमरा नई दिशामे बाहरक नोकरीक बात भेटल अछि,’ पूनम कहलथिन।

नैना चौंकि गेलीह। ‘अहाँ ओतए गेल रही?’

‘काल्हि। एकटा पुरान सहेली फोन नम्बर देने छलीह। हुनकर परिचित ओहिठामसँ बाहर काज पओने छल। कहल गेल जे कपड़ा बनाबयवला कारखानामे स्त्रीसभक आवश्यकता अछि। मासिक पन्द्रह हजार, रहबाक जगह अलग।’

‘ठाम कतए?’

‘पहिने गोरखपुर लग प्रशिक्षण, तकर बाद कम्पनी जतेक आवश्यकता कहत। एहिपर लिखल अछि।’ पूनम फोल्डर खोललथिन।

नैना कागज पढ़लनि। ऊपर ‘कौशल-सम्बद्ध नियुक्ति’ लिखल छल। नीचाँ एकटा निजी कम्पनीक नाम छल, जकर पूरा पता अस्पष्ट छल। वेतनक उल्लेख ‘अधिकतम पन्द्रह हजार’क रूपमे छल। प्रशिक्षण आ निवासक शुल्कक विषयमे एकटा छोट अनुच्छेद छल।

‘अधिकतम लिखल अछि, पक्का पन्द्रह हजार नहि,’ नैना कहलथिन।

‘तँ बारह-तेरहो भेटत तँ खराब की? एतय हमरा तीन हजारक नोकरीक लेल नव घण्टा बैसय कहल गेल छल।’

‘ई बात मानैत छी। मुदा एखन धरि नियुक्तिपत्र भेटल अछि?’

‘जमा राशि देलाक बाद।’

‘कतेक जमा राशि?’

पूनम किछु काल चुप रहलिह। फेर कहलीह, ‘बारह हजार। तीन सय पचास पञ्जीकरणक देलहुँ अछि।’

सरस्वती देवी सुइ कपड़ामे रोपि कऽ रोकलीह। ‘एतेक टका पहिने?’

‘प्रशिक्षण आ रहबाक व्यवस्थाक लेल कहैत छथि। अपन परिवारसँ बाहर जाएब तँ व्यवस्था तँ चाही ने?’ पूनमक स्वरमे प्रतिवाद छल।

नैना कागजक दोसर पन्ना खोललनि। ओतए ‘जमा रकम सामान्य परिस्थितिमे वापस नहि होयत’ लिखल छल। ओ ऊँच स्वरमे पढ़लनि। पूनमक मुँह कने उतरि गेल। ‘किरण मैडम कहलथिन जे नोकरी नहि भेल तँ दोसर ठाम देखतीह।’

‘कहलनि, मुदा लिखल नहि अछि। जँ नियुक्ति नहि भेल तँ टका घुरत कि नहि, ई साफ होएबाक चाही।’

पूनम अपन गाँठि खोललथिन। भीतर दू हजारक नोट आ पाँच-पाँच सयक किछु नोट छल। ‘ई सात हजार अछि। बाबूजी पुरान बाछी बेचि कऽ देलनि। पाँच हजार मौसीसँ लेल अछि। हम नहि जाएब तँ ई ऋण कोना चुकाएब?’

‘आ एखन जमा कऽ देब आ नोकरी नहि भेटत तँ?’ नैना पुछलथिन।

‘सेहो तँ होइत अछि। मुदा काजक प्रयत्न नहि करब तँ फेर की होयत?’ पूनम उत्तर देलथिन। हुनक आँखि भरि आएल छल, मुदा ओ रोएब नहि चाहैत छलीह।

दूनू सहेली किछु काल चुप भऽ गेलीह। सरस्वती देवी पानि देलथिन। पूनम गिलास हाथमे रखने-रखने कहलीह, ‘हमर छोट बहिन रीना एखन दसमीमे अछि। ओकर परीक्षा फीसक बात आबि गेल अछि। बाबूजीक घुटनाक पीड़ा बढ़ल अछि। खेतीक आमदनीसँ घर चलैत अछि, मुदा किछु बचैत नहि। हम बारम्बार हुनकासँ पैसा माँगब तँ अपनासँ नजरि नहि मिला सकब।’

नैना अपन अनुभव बतौलनि। ‘हमरो ओहि कार्यालयमे काजक प्रस्ताव भेटल अछि। पहिने लिखित पत्र देखबाक अछि। काल्हि दुपहरिया फोन करब। अहाँकेँ जँ ओतए फेर जएबाक अछि तँ हमरो संग चलू। पूरा शर्त पुछि लेब।’

‘आइये जमा करबाक कहल गेल अछि। नहि तँ जगह दोसरकेँ भेटि जाएत,’ पूनम कहलथिन।

‘जगह तुरन्त छुटबाक डर देखाएल जाए तँ आर सावधान रहबाक चाही। कमसँ कम आजु रसीद, कम्पनीक पूरा पता आ नियुक्तिक शर्त लिखि लिअ।’

सरस्वती देवी धीरे कहलीह, ‘बेटी, अपना मेहनतक टका देब, तँ नोकरीक बात पक्की कऽ लेब। गरीबक जमा टका घुराओब कठिन होइत छैक।’

पूनम सहमति देलथिन, मुदा हाथमे बान्हल नोट फेर समेटि लेलथिन। हुनक निर्णय पहिनेसँ आधा भऽ चुकल छल, आधा एखन डर आ आशाक बीच अटकल छल।

पूनमक फोनपर घरसँ सन्देश आएल। बाबूजी पुछने छलाह जे दस्तखतक ठाम पहुँचलिह कि नहि। पूनम हुनका फोन केलथिन। 'एखन नैना लग छी। कागज बुझि रहल छी।'

ओहि पारसँ पिताक धीमा स्वर आएल। 'जँ भरोसा नहि हो तँ टका घुराइ आन। गाममे ऋण हम कोनो तरहें चुकाय लेब।'

'अहाँकेँ चलबामे कष्ट अछि, बाबूजी। एतबा काज तँ हमरा करए दिअ,' पूनम कहलीह।

'हम तोरा रोकि रहल छी से नहि। मुदा कतहु जा, अपन ठेगाना आ फोन बतबैत रहिहेँ।'

पूनम फोन राखि देलथिन। हुनक आँखिक कोर भीजि गेल छल। नैना पुछलथिन, 'एखन रुकि सकैत छी। बाबूजी सेहो कहैत छथि।'

'ओ हमरा रोकैत नहि छथि। ओ चाहैत छथि जे हमरा इच्छा पूरा हो। मुदा हुनकर स्वर सुनि मोन बदलय लगैत अछि। एहि कारणें निर्णय लेबा लेल घरसँ बाहर निकललहुँ।'

नैना हुनका पानि देलथिन। पूनम कहलीह जे बरख भरि पहिने सिलाई केन्द्र बन्द भेलाक दिन मालिक प्रत्येक कर्मचारीकेँ एक सप्ताहक वेतन दऽ विदा केने छल। दू मासक बकाया एखन धरि नहि भेटल। पूनमक हाथमे तखन आधा सिअल चोलीक जोड़ा छल। ओ काम पूरा कऽ देबाक प्रस्ताव केने छलीह, मुदा मालिक कहने छल जे ग्राहकक ऑर्डर रद्द भऽ गेल। 'हमरा काजसँ परहेज नहि अछि,' पूनम कहलीह। 'मुदा काज समाप्त भेलाक बाद मजदूरी नहि भेटय, तँ मन टूटि जाइत अछि।'

सरस्वती देवी पुछलथिन, 'बाहरक शहरमे रहबाक व्यवस्था स्त्रीसभक लेल अलग अछि ने?'

'कहल गेल अछि जे अलग छात्रावास रहत।'

'कहल गेल, मुदा कागजमे सेहो लिखल होयत?'

पूनम फेर फोल्डर खोललथिन। एक पन्नामे 'साझा आवास' लिखल छल, ओकर आगाँ किछु विवरण नहि। नैना पुछलथिन, 'जतए प्रशिक्षण होयत, ओतए स्त्री अधीक्षिका अथवा सम्पर्कक महिला रहैत छथि कि नहि, ई सेहो पुछब।'

‘पुछब,’ पूनम दृढ़ स्वरमे कहलीह। ‘हम जएबाक निर्णय लेने छी, मुदा जकरा लग जाएब ओकरा आँखि मुनि कऽ भरोसा नहि करब।’

दूनू अपन-अपन चप्पल पहिरि दुआरिपर अएलीह। पूनमक झोरामे लाल कपड़ाक गाँठि छल। सरस्वती देवी एक बेर फेर हुनका रोकि कहलीह, ‘पैसाक रसीदपर संस्थाक मुहर आ तारीख देखब। जँ किछु ठीक नहि लागय, तँ देब नहि।’ पूनम माथ हिलौलथिन।

दूनू सहेली संगहि बजार दिस निकललीह। बाटमे एकटा विद्यालयक फाटकपर नौकरीक विज्ञापन चिपकल छल। विद्यालयमे सहायकक मासिक वेतन चारि हजार बताओल गेल छल, मुदा पहिने तीन मास बिना वेतन प्रशिक्षणक शर्त छल। पूनम विज्ञापन पढ़ि कहलीह, ‘हमर उमेर सत्ताइस भऽ गेल। प्रत्येक जगह पहिने प्रशिक्षण, पहिने रुपैया। नोकरीकेँ लोक बाजारक सामान बना देने अछि।’ नैना उत्तर देलथिन, ‘एहि कारणेँ तऽ कागज देखब जरूरी अछि।’

नई दिशाक कार्यालयमे आइ भीड़ कम छल। कुसुम दूनूकेँ देखितहि पुछलथिन, ‘नियुक्ति पत्र लेल आएल छी?’ पूनम नाम कहलथिन। कुसुम रजिस्टरमे एकटा पन्ना ताकलनि। ‘अहाँक बारह हजार बाकी अछि। मैडमसँ हस्ताक्षर करा ली।’ नैना अपन परिचय देलथिन। कुसुम कहलथिन, ‘अहाँक कर्मचारीक काजक विषयमे सेहो खबरि भेटत।’

किरण कोठरीमे ककरोसँ फोनपर बात कऽ रहल छलीह। ‘नहि, पाँच गोटेक कागज बिना मिलानक नहि पठाएब। पाछाँ सभ हमरा लग अबैत अछि,’ ओ कहैत छलीह। फोन राखि पूनमकेँ बैसायलनि। नैना दोसर कुरसीपर बैसि गेलीह।

‘अहाँ जमा राशि लऽ आएल छी?’ किरण पुछलथिन।

‘हँ, मुदा किछु शर्त बुझबाक अछि,’ पूनम कहलीह।

‘पुछू।’

‘कारखानाक पूरा पता की अछि? मासिक वेतन पन्द्रह हजार पक्का रहत कि कम भऽ सकैत अछि? आ नोकरी नहि भेटलासँ जमा टका की होयत?’

किरण कनेक असहज भेलीह। 'नैना अहाँकेँ ई सभ पुछबाक सलाह देने हेतीह।'

नैना उत्तर देलथिन, 'हम केवल कागज पढ़ि कहलहुँ अछि। पूनम अपन निर्णय स्वयं करतीह।'

'ठीक अछि। कम्पनीक नियुक्तिक संख्या एखन अन्तिम नहि भेल अछि। पहिल चरणमे प्रशिक्षण केन्द्र जएबाक रहत। वेतन अनुभवक अनुसार बदलि सकैत अछि। जँ उपयुक्त काज नहि भेटत तँ हमर संस्था दोसर पद खोजत। जमा राशि प्रशिक्षणक खर्चमे लगैत अछि, तेँ वापसीक वचन नहि दऽ सकैत छी,' किरण स्पष्ट कहलीह।

पूनमक चेहरापर निराशा आएल, मुदा ओ पुछलथिन, 'तखन प्रशिक्षणक बाद काज भेटबाक सम्भावना कतेक अछि?'

'हम सभ बहुतो लोककेँ पठौने छी। अहाँ सिलाई जानैत छी, तेँ अवसर नीक अछि। मुदा अन्तिम निर्णय कम्पनीक होयत।'

नैना पुछलथिन, 'कम्पनीसँ सीधा बात करबाक कोनो नम्बर अछि?'

किरण फाइलसँ एकटा पन्ना निकाललनि। ओहिपर एकटा कार्यालयक दूरभाष नम्बर आ सम्पर्क व्यक्तिक नाम छल। 'अहाँ चाही तँ सम्पर्क कऽ सकैत छी। मुदा कार्यालयक समयमे।'

नैना नम्बर लिखि लेलनि। पन्नाक ऊपर मुहर छल, मुदा पता पूरा नहि छल। ओ कहलीह, 'अहाँ पूनमकेँ लिखित रसीद आ प्रशिक्षणक तिथि दऽ देब।'

'रसीद अवश्य। तिथि जमा भेलाक बाद निश्चित होयत।'

पूनम अपन नोट निकाललथिन। नैना हुनक हाथपर हाथ राखि एक बेर कहलीह, 'एखनो सोचि सकैत छी।'

पूनम हुनका दिस तकलीह। 'हम सोचि लेने छी। जँ नहि गेलहुँ तँ जीवन भरि एतहि सिलाईक चारि-पाँच सय टकाक काज जोड़ैत रहि जाएब। हमरा अपन बहिनकेँ पढ़ेबाक अछि।' ओ नोट मेजपर रखि देलथिन।

किरण गनि कऽ कुसुमकेँ बुलौलथिन। रसीद काटल गेल। पूनम नाम, राशि आ तिथि ध्यानसँ देखलथिन। नैना कहलीह, ‘एहि रसीदक तस्वीर फोनमे रखि लिअ। मूल कागज घरमे सम्हारि राखब।’ पूनम फोटो खींचलथिन। कुसुम एकटा फार्म देलथिन जाहिमे घरक सम्पर्क, स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य विवरण आ आपातकालीन व्यक्तिक नाम भरबाक छल।

‘आपातकालीन नम्बरमे हमर नम्बर लिखू,’ नैना कहलीह। ‘घरक दोसर नम्बर सेहो देब।’

पूनम सहमत भेलीह। ओ पहिने मायक नम्बर, तकर बाद नैनाक नम्बर लिखलथिन।

कार्यालयसँ निकलैत समय पूनमक चालि हलुक छल, जेना पैघ निर्णय लेनाइए अपन एकटा राहत हो। मुदा सीढ़ीक नीचाँ पहुँचि ओ चुप भऽ गेलीह। नैना पुछलथिन, ‘की भेल?’

‘एतेक टका एक बेरमे देलहुँ। आब किछु डर लगैत अछि।’

‘डर लगब गलत नहि। एखन कम्पनीक नम्बरपर बात करब। जँ किछु अस्पष्ट अछि तँ तुरन्त पुछब। जएबाक तिथि निश्चित भेला पर अकेले नहि निकलिहेँ।’

पूनम कहलथिन, ‘अहाँ हमरा रोकबाक प्रयास नहि केलहुँ। तेँ नीक लगल।’

‘हम अहाँकेँ रोकबाक अधिकार नहि रखैत छी। मुदा जँ कागजमे कोनो बात साफ नहि अछि, तँ पुछबाक अधिकार दुनूकेँ अछि।’

दूनू एकटा टेलिफोनक दोकान लग रुकलीह। नैना पन्नापर देल नम्बर मिलौलनि। पहिल बेर घण्टी बजल, उत्तर नहि आएल। दोसर बेर कोनो पुरुष फोन उठौलक। कम्पनीक नाम सुनिते कहलक जे सम्बन्धित अधिकारी बाहर गेल छथि। प्रशिक्षणक विषयमे ‘नई दिशा’सँ जानकारी लेबाक सलाह दऽ फोन राखि देलक। नैना तकर शब्दसभ नोट कऽ लेलनि। पूनम पुछलथिन, ‘ई खराब बात अछि?’

‘एतबासँ कोनो फैसला नहि होइत अछि,’ नैना कहलीह। ‘मुदा प्रशिक्षणक ठाम आ जिम्मेवार व्यक्तिक पूरा पता भेटबाक चाही।’

पूनम कहलथिन जे जे सहेली हुनका 'नई दिशा'क नम्बर देने छलीह, हुनको फेर फोन कऽ पुछबाक चाही। ओ फोन लगौलथिन। सहेली कहलीह जे हुनक दूरक परिचित ओहि संस्थाक माध्यमसँ बाहर गेल छल, मुदा आब हुनकासँ नियमित बात नहि होइत अछि। 'हम स्वयं ओतए काज नहि केने छी,' सहेली स्पष्ट कहलीह। 'केवल सुनने बात अहाँकेँ कहने रही।'

पूनम फोन राखि देलथिन। 'हम बुझने रही जे ओकर परिचितक संग रोज बात होइत छैक।'

नैना कहलीह, 'एहि कारणें सूचना देनिहार आ प्रत्यक्ष जाननिहारमे भेद राखब जरूरी अछि। ओ गलत नीयतसँ नहि कहने होयत, मुदा ककरो सुनने बातपर पूरा जिनगीक निर्णय नहि टिकल रहबाक चाही।'

पूनम किछु बेर सड़क दिस तकैत रहलिह। 'आब हम सभ कागज जाँचि लेब,' ओ कहलीह। 'जँ प्रशिक्षणक पूरा ठाम नहि बताएत तँ जएब नहि। टका देलहुँ, तकर अर्थ ई नहि जे सभ शर्त मानि लेब।' नैना हुनक ई निर्णय सुनि कने निश्चिन्त भेलीह।

बजारसँ घुरैत काल पूनम अपन बचपनक बात करय लगलीह। विद्यालयमे दुनू एकटा नाटकमे भाग लेने छलीह। पूनमकेँ सिलाईक काज एतेक अबैत छल जे नाटकक सभ पोशाक हुनकेँ बनबय पड़ल छल। आब ओ हँसि कऽ कहलीह, 'हम ओहि समय सोचने रही जे कखनो अपन दोकान खोलब। दर्जीवाली मशीन किनब, दूटा लड़कीकेँ काज सिखाएब। मुदा मशीन कीनबाक टकासँ पहिने घरक काज सामने आबि जाइत अछि।'

नैना पुछलथिन, 'बाहरसँ घुरि आबि गेलापर दोकान खोलब?'

'जँ बचत भऽ गेल तँ किएक नहि? रीना हिसाब रखत, हम कपड़ा सिएब। अहाँ नाम सोचि देब।'

'नाम तँ सोचि देब। मुदा पहिने अहाँ सुरक्षित काज करि घुरू,' नैना कहलीह।

गामक मोड़पर पहुँचि दूनू अलग भेलीह। पूनमक लाल कपड़ाक गाँठि आब खाली छल। ओकरा फोल्डरक भीतर रसीद रखल छल। नैना दूर धरि ओकरा तकैत रहलिह। ओ जनैत

छलीह जे प्रत्येक गरीब परिवार अवसरक लेल किछु ने किछु जोखिम लैत अछि। सभ जोखिम अपराध नहि होइत अछि, मुदा एहन जोखिममे सही जानकारीक अभाव सभसँ पैघ संकट बनि सकैत अछि।

घर घुरि नैना अपन कॉपी खोललनि। पूनमक नियुक्तिक सम्भावित ठाम, देल जमा राशि, रसीदक क्रमाङ्क आ फोनपर भेल बात लिखि लेलनि। लिखबाक उद्देश्य अपन सहेलीपर नजरि राखब नहि छल; पूनम बाहर गेलाक बाद कखन, ककरासँ आ कतए सम्पर्क करबाक अछि, से स्पष्ट राखब छल। कॉपीक अन्तमे ओ लिखलनि—‘नियुक्तिपत्र अबैत धरि फेर जाँच।’

साँझ पूनमक छोट सन्देश आएल—‘मायकेँ रसीद देखा देलहुँ। बाबूजी कहैत छथि, मेहनतसँ काज करिहेँ।’ नैना उत्तर देलथिन—‘अवश्य। आ जतेक जानकारी भेटय, हमरा सेहो बतब।’

उत्तर पठौने ओ मोबाइल राखि देलनि। पूनमक आँखिमे जे उत्साह छल, तकरा ओ मेटाबय नहि चाहैत छलीह। मुदा एकटा रसीदक भरोसापर एतेक पैघ यात्रा शुरू होएबाक बात हुनका सहज नहि लगि रहल छलनि।

अध्याय ६ : चन्दनक ऋण

चन्दन भोरे चारि बजे जागि गेल छल। कोठरीक खिड़कीसँ बाहर अन्हार देखाइत छल आ पड़ोसीक आँगनमे राखल पानिक बाल्टीमे वर्षाक बूँद टपकि रहल छल। ओकर सोझाँ इतिहासक पुस्तक खुलल छल। दू दिनक बाद जे प्रतियोगिता परीक्षा होमयवला छल, तकर लेल ओ पछिला डेढ़ वर्षसँ तैयारी करैत छल। परीक्षा लेल सहर जायबाक बसक टिकट पहिनेसँ कटा लेने छल। एकटा सादा झोरामे प्रवेशपत्र, पहचानपत्र आ कलम राखि देने छल।

मोबाइलपर सन्देशक आवाज भेल। कोचिंगक एकटा समूहमे ककरो लिखल छल —‘प्रश्नपत्र रातिमे लीक भऽ गेल। परीक्षा रद्द होएत।’ चन्दन पहिने हँसि देलक। एहन अफवाह प्रत्येक परीक्षासँ पहिने उठैत अछि। दोसर सन्देशमे प्रश्नक फोटो छल। तेसरमे कोनो अनाम व्यक्ति दावा केने छल जे सभ प्रश्न पहिनेसँ बँटि गेल अछि। ओ फोटो खोललक, मुदा फोटोमे देखाओल प्रश्न सही परीक्षा केर छल कि पुरान नमूना, से नहि बुझल जा रहल छल।

ओ स्वयं विभागक आधिकारिक सूचना देखलक। तखने धरि किछु नहि छल। घड़ीमे पाँच बजैत छल। ओ पुस्तकपर ध्यान देबाक प्रयास केलक, मुदा एक्के वाक्य तीन बेर पढ़लाक बादो अर्थ मोनमे नहि बसल। काल्हि दीदी फोनपर अफवाहसँ सावधान रहबाक बात कहने छलीह। ओ एहि सलाहकेँ उचित बुझैत छल। तथापि मन डोलि गेल छल।

सात बजे सविताक फोन आएल। ‘अहाँ किछु पक्का सुनलहुँ?’

‘नहि। विभागक सूचना नहि अछि। अहाँ?’

‘हमर सहेली कहैत अछि जे ओकर केन्द्रपर पुलिस गेल छल। मुदा हम स्वयं देखल नहि अछि।’

‘तँ एखन अफवाहे बुझू।’

‘हँ। मुदा जँ सच भेल तँ?’ सविता पुछलथिन।

चन्दन उत्तर नहि देलक।

नौ बजे आधिकारिक वेबसाइटपर सूचना आबि गेल। निर्धारित परीक्षा ‘प्रश्नपत्रक गोपनीयता भङ्ग भेलाक प्राथमिक जानकारीक कारण’ स्थगित कएल गेल छल। फेर परीक्षा होयबाक तिथि बादमे देल जाएत। सूचना पढ़ैत चन्दनक देहसँ जेना बल खसि गेल। ओ कुर्सीपर बैसि रहल। डेढ़ वर्षक तैयारी, किताबक मूल्य, कोचिंगक शुल्क आ घरक आशा—सभ तत्काल एकटा छोट पन्नाक नीचाँ दबि गेल छल।

नैना भीतर अएलीह। ‘की भेल?’

चन्दन मोबाइल हुनका देलक। नैना सूचना पढ़लनि। ‘ई तँ बहुत खराब भेल।’

‘खराब?’ चन्दन हँसल, मुदा ओकर हँसीमे कटुता छल। ‘हमर उमेर बढ़ि रहल अछि। प्रत्येक बेर कहैत छथि फेर परीक्षा होयत। कब होयत, के जनैत अछि? जे लोक प्रश्न कीनि लेने होयत, ओकरा की? हम पढ़ि-पढ़ि कऽ बैसल छी।’

‘प्रश्न सचमुच के खरीदलक, से जाँचक बादे बुझल जाएत,’ नैना कहलीह। ‘मुदा परीक्षा रोकल गेल अछि, ई साँच अछि। तोहर दुःख हम बुझैत छी।’

‘अहाँ हमर दुख बुझब? अहाँकेँ काल्हि नोकरीक बात भेटल अछि। हमरा लग फेर शून्य अछि।’

नैना किछु क्षण नीरव रहलीह। ‘हमरो नोकरी एखन पक्की नहि। आ तोहर परिश्रम शून्य नहि भेल अछि। मुदा एखनि जे भेल, तकरा कम कहि कऽ तोरा सान्त्वना नहि देब।’

चन्दन मुँह फेरि लेलक। ओ जानैत छल जे दीदी ओकर विरुद्ध नहि छथि। तखनहुँ क्रोध ककरो न ककरोपर उतरबाक बाट ताकैत छल।

परीक्षा स्थगित भेलाक समाचारसँ नवगढ़क पुस्तकालयक बाहर अभ्यर्थीसभ जमा भऽ गेलाह। सविता चन्दनकेँ फोन कऽ कहलथिन जे किछु लोक विभागकेँ लिखित ज्ञापन देबाक तैयारी करैत छथि। चन्दन पुस्तकालय धरि गेल। ओतए एकटा युवक हाथमे प्रवेशपत्र नेने

कहैत छल, ‘हम गामसँ किराया जुटा कऽ एतए आएल रही। एखन घुरि जाएब? फेर परीक्षा होयत तँ फेर एतबे खर्च।’

एकटा युवतीक आँखि भरि आएल छल। ओ कहलीह, ‘घरसँ सभ कहैत अछि, ई अन्तिम बेर तैयारी करू। अन्तिम बेर कतेक बेर होइत छैक?’

सविता एकटा सादा कागजपर माँग लिखि रहल छलीह—जाँचक स्पष्ट जानकारी, फेर परीक्षाक तिथि, आ योग्य अभ्यर्थीसभक अनावश्यक खर्च घटेबाक व्यवस्था। ओ चन्दनसँ पुछलथिन, ‘हस्ताक्षर करब?’

‘करब,’ चन्दन कहलक। ‘मुदा केवल ज्ञापन देलासँ की होयत?’

‘जँ सभ चुप रही तँ कोन लोक बुझत जे हमरा सभक एक-एक दिनक मूल्य अछि?’ सविता उत्तर देलथिन।

चन्दन दस्तखत केलक। एकटा आदमी भीड़क भीतरसँ चिचिएलक, ‘हमरा लग प्रश्नक फोटो अछि। पन्द्रह हजार देला पर काल्हिये भेटैत छल।’ किछु युवक ओकरा घेरि लेलनि। सविता तुरन्त कहलीह, ‘फोटो सही छैक कि नहि, जाँच बिना ककरो दोषी नहि कहू। जे प्रमाण अछि, सम्बन्धित अधिकारीकेँ दियौ।’

चन्दन कने दूर भऽ गेल। ओहि आदमीक बात सुनि ओकर भीतरक पीड़ा फेर जागल छल। किछु लोक प्रश्न किनबाक लेल पैसा जुटबैत छलाह; ओ अपन पुस्तक कीनबो ऋणसँ करैत छल। तखनहुँ ओकरा बुझाइत छल जे रोषक कारण बिना जाँचक ककरो दोषी ठहरा देब ठीक नहि। भीड़क बीच ठाढ़ भऽ ओ अपनासँ पुछलक—आब घरमे की कहब? मायकेँ कोना समझाएब जे फेर प्रतीक्षा करय पड़त? उत्तर ओकरा लग नहि छल।

ओ ओतएसँ घुरि अएलक। घर पहुँचि देखलक जे बहिन खाली कपड़ा पसारि रहल छलीह। नैना ओकरा किछु पुछलीह नहि। चन्दनकेँ एहि नीरवतासँ कनेक राहत भेल।

दुपहरिया ओकर पुरान संगी विक्रम घर आएल। विक्रम पहिने संगहि तैयारी करैत छल, मुदा आब मोबाइल मरम्मतिक दोकान चलबैत छल। ओ कहलक, ‘चन्दन, जँ अबहिसँ किछु कमेबाक सोच नहि करब तँ ऋण आरो बढ़त। परीक्षा फेर होयत, ताहि बीच काज कर।’

‘काज कतए अछि?’

‘गोदाममे गिनती करयवला चाही। कखनो माल चढ़ेबाक-उतारेबाक देखरेख। एकटा आदमीकेँ जनैत छी। मनोज साह।’

‘कतेक वेतन?’

‘मासिक नहि। दिनक वा खेपक हिसाबसँ। पहिने भेंट कऽ ले।’

चन्दनक मनमे पहिल प्रश्न टकाक छल, मुदा ओ पुछलक, ‘काज नीक अछि ने?’

‘हम जतेक जनैत छी, साधारण माल-ढुलाई। मुदा अपन आँखिसँ देखि लेब। हम गारंटी नहि दऽ सकैत छी।’

विक्रमक ई उत्तर चन्दनकेँ उचित लगल। ओ तुरन्त हँ कहबाक बदला कहलक जे साँझ भेंट करब। विक्रम चलि गेलाक बाद ओ पुरान कॉपी निकाललक, जकर पाछू पन्नामे ऋणक हिसाब लिखल छल। कोचिंगक शुल्क लेल स्थानीय परिचितसँ आठ हजार, फार्म आ यात्राक खर्च लेल संगीसँ तीन हजार पाँच सय, पुरान मोटरसाइकिल सुधरेबाक लेल दोकानदारक चारि हजार, आ एकटा निजी उधारदातासँ बारह हजार। ओहि अन्तिम रकमपर प्रत्येक मास ब्याज जोड़ल जाइत छल। कुल रकम देखितहि ओकर माथ गरम भऽ गेल।

मोटरसाइकिल ओ पिता जीवित रहिते किने छल। बाबूजी अपन बचत आ चन्दनक कमाएल ट्यूशनक टका जोड़ि आधा मूल्य देने छलाह। शेष किस्त चुकैत-चुकैत मशीन पुरान भऽ गेल। आब बारम्बार मरम्मति चाहैत छल। बेचि देत तँ आधा ऋणो नहि उतरैत, आ राखत तँ पेट्रोल आ मरम्मतिक खर्च बढ़ैत। ओ नब हिसाब करबाक प्रयास केलक, मुदा जेबमे टका नहि हो तखन हिसाबक पन्ना बहुते बेर केवल चिन्ता बढ़बैत अछि।

दुपहरिया मायक औषधि लेबाक लेल ओ बजार गेल। औषधिक दोकानदार पछिला बकाया मोन पारौलक। ‘चन्दन, साढ़े पाँच सय रहि गेल अछि। आजुक जोड़ि कऽ सात सय भेल।’

‘दू दिनमे दऽ देब,’ चन्दन कहलक।

दोकानदार औषधि दऽ देलक, मुदा ओकर स्वरमे पुरान अपनापन नहि छल। चन्दन बाहर निकलल तँ मोबाइल बजल। निजी उधारदाताक आदमी छल। 'मासक अन्तिम दिन आबि गेल। मालिक कहलनि, एहि बेर ब्याज बिना नहि चलत।'

'अहाँकेँ कहने रही, परीक्षा भेला पर किछु व्यवस्था करब।'

'परीक्षा भेल कि नहि, से मालिकक हिसाब नहि अछि।' फोन कटि गेल।

चन्दन रास्ताक किनार रुकि गेल। गाड़ीक आवाज, ठेलावालाक पुकार आ बाजारक भीड़ ओकरा एकाएक असह्य लगल। ओकरा मोन पड़ल जे आरम्भमे ऋण लैत समय प्रत्येक आदमी कहने छल—'जखन सुविधा हो, देब।' सुविधा आइ धरि नहि आएल छल। ब्याजक तिथि, मुदा एक दिनो नहि चुकल।

घर पहुँचल तँ सरस्वती देवी औषधि देखि पुछलथिन, 'दाम कतेक भेल?'

'दू सय लग।'

'बकाया चुकौलह?'

'नहि, अगिला बेर।'

सरस्वती देवी चुप भेलीह। चन्दनक झूठ पकड़ेबाक इच्छा हुनका नहि छलनि; ओ बुझैत छलीह जे बेटा अपनासँ बेसी घरक चिन्ता कऽ रहल अछि। मुदा एहि चिन्तामे ओ ककरो बहकावामे पड़ि नहि जाए, ई आशङ्का हुनक भीतर बनल छल।

साँझ पाँच बजे चन्दन विक्रमक संग बस अड्डाक पाछूक गोदाम पहुँचल। गोदामक फाटकपर दू ट्रक ठाढ़ छल। एक ट्रकसँ चाउरक बोरा उतरि रहल छल, दोसरपर खाली पेटी राखल जा रहल छल। फाटक लग रखवाला बैसल छल, जकर सोझाँ एकटा पुरान रजिस्टर खुलल छल। विक्रम ओकरासँ पुछलक, 'मनोज बाबू भीतर छथि?'

रखवाला माथ हिलौलक। 'दहिना कोठरीमे।'

मनोज साह लगभग चालीस वर्षक व्यक्ति छल। गाढ़ नील कमीज, सफा जूता आ कलाईमे मोट घड़ी। ओकर मेजपर तीनटा मोबाइल रखल छल। एक फोनपर बात करैत-

करैत ओ दूनूकेँ बैसबाक इशारा केलक। ‘हँ, वीरेन्द्र बाबू, गाड़ी समयपर पहुँचि जाएत। नहि, आजु रातिक बात दोसर अछि; ओकर खबरि हम स्वयं देब।’ फोन राखि ओ चन्दन दिस तकलक।

‘विक्रम कहलक जे तोरा काज चाही?’

‘हँ। काजक प्रकृति बुझबाक अछि।’

‘पढ़ल-लिखल छह?’

‘स्नातक। प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत छी।’

मनोज हँसि पड़ल। ‘एतए तँ सभ पढ़ल आदमी परीक्षा दैत-दैत थाकि गेल अछि। काज केओ नहि करय चाहैत अछि। तोहर पढ़ाइ काम आएत। मालक रसीद, गिनती, गाड़ीक नम्बर—ई सभ लिखबाक।’

चन्दन पुछलक, ‘कतेक घण्टा?’

‘स्थिर समय नहि। खेप भेला पर पाँच-छह घण्टा, कखनो पूरा दिन। प्रत्येक खेपक चारि सय पचास। जे राति बाहर जाएत, तकर दर अलग।’

‘माल केहन?’

‘अनाज, भवनक सामान, घरेलू वस्तु। ठीकेदारक आपूर्ति सेहो रहैत अछि।’ मनोज बाहरक ट्रक दिस इशारा केलक। ‘पहिने एहि सभक हिसाब सीख।’

चन्दन पुछलक, ‘रसीदक प्रति हमरा भेटत? जे मालक जिम्मेवारी देब, से कागजपर रहबाक चाही।’

मनोजक मुँह कने बदलल। ‘अच्छा, बहुत नियम जनैत छह। ठीक अछि, जतेक जिम्मेवारी तोहर होयत से लिखल रहत। मुदा हमरो लोकपर भरोसा चाही।’

‘भरोसा ठीक अछि, मुदा कागज रहला पर गलत बुझाइ नहि होइत अछि,’ चन्दन कहलक।

मनोज टेबुलक दराजसँ एकटा रजिस्टर निकाललक। तीन खेपक विवरण देखौलक। ‘देख, ई चाउर, ई सीमेण्ट, ई लोहारक सामान। एतए गाड़ीक नम्बर अछि। जँ अपन काज ध्यानसँ करबह तँ रोज किछु कमाइ भऽ सकैत अछि।’

चन्दन रजिस्टर देखलक। तीनू प्रविष्टि सामान्य बुझाएल। ओ पुछलक, ‘पैसा कखन भेटत?’

‘दिनक अन्तमे, अथवा दू खेप भेला पर। किछु रोकल नहि जाएत।’

एही बीच दुआरिपर एकटा युवक आएल। मनोज ओकरासँ कहलक, ‘बाहरक ट्रकमे गिनती मिला ले। नव लड़का काल्हिसँ आएत।’ युवक चलि गेल। मनोज फेर चन्दन दिस तकलक। ‘आजुक काज नहि अछि। काल्हि भोरे आठ बजे आबि सकैत छह?’

चन्दन उत्तर देबासँ पहिने विक्रमक दिस तकलक। विक्रम चुप छल।

‘आबि सकैत छी,’ चन्दन कहलक, ‘मुदा परीक्षा फेर घोषित भेला पर समय निकालय पड़त।’

‘परीक्षा दिहें। हमरा तोहर भविष्य रोकबाक शौक नहि,’ मनोज हँसि कऽ कहलक। ‘जखन समय भेटय, काज करिहें।’

बाहर अएला पर विक्रम पुछलक, ‘की बुझलह?’

‘देखब। पहिने सामान्य काज करब। कागज नहि भेल तँ माल नहि लेब।’

‘ई सावधानी राखिहें,’ विक्रम कहलक। ‘गोदाममे सभ तरहक लोक अबैत अछि। केओ कि कहैत अछि, केवल सुनि कऽ काज नहि करिहें।’

घर घुरबाक बाटमे चन्दन देखलक जे चौकपर दू पुलिसकर्मी गाड़ी रोकि जाँच कऽ रहल छलाह। किछु दूरीपर पानक दोकान लग तीन आदमी फुसफुसाइत छलाह। एक कहलक, ‘शराबबन्दी भेलाक बाद जाँच बढ़ल अछि, मुदा रातिमे सभ किछु चलैत अछि।’ दोसर ओकरा चुप रहबाक इशारा केलक। चन्दन आगाँ बढ़ि गेल। ओहि समय ई बात ओकरा अपन जीवनसँ असम्बद्ध लगल। ओकर चिन्ता केवल एहि बातक छल जे काल्हि चारि सय पचास टका कमाएत कि नहि।

गोदामसँ पाओल पता ओ एकटा कागजपर लिखि लेने छल। ट्रकक गिनती करब ओ सीखि सकैत छल, मुदा खेल-खेलमे ककरो जिम्मेवारी अपने माथ पर नहि लेबाक निर्णय सेहो केलक। विक्रम कहने छल जे दर खेपक हिसाब लिखि राखिहें। चन्दन घर पहुँचबाक पहिने एकटा सस्ता पन्नावला कॉपी कीनलक। दोकानदार पुछलक, 'एखन फेर परीक्षाक तैयारी?' चन्दन कहल, 'नहि, काजक हिसाब।' ई कहैत ओकरा कनेक लाज लागल, फेर अपने मनमे सोचलक जे कोनो ईमानदार काजमे लाजक कोनो कारण नहि होइत अछि।

घरमे नैना साँझक भोजनक तैयारीमे मायकेँ सहायता करैत छलीह। चन्दन भितर अएलाक बाद कहलक, 'हमरा गोदाममे किछु दिनक काज भेटि सकैत अछि।'

नैना पुछलथिन, 'परीक्षाक तैयारी?'

'चलत। भोरे काज, राति पढ़ाइ। केवल किताब खोलने बैसलासँ ऋण नहि उतरयवला।'

'गोदाम ककर?'

'मनोज साह नामक आदमी अछि। वीरेन्द्र राय ठीकेदारक मालो अबैत अछि।'

नैनाकेँ अभयक बात मोन पड़लनि। वीरेन्द्र राय ओही ठीकेदारक नाम छल, जकर मजदूरक वेतनक विषयमे अभय जानकारी जुटा रहल छलाह। ओ तत्काल कोनो निष्कर्ष नहि निकाललनि। 'तोहर काज लिखित रहत ने?' ओ पुछलथिन।

'रसीद रहत। देखब,' चन्दन कहलक। 'दीदी, हमर सम्बन्धमे प्रत्येक बेर शङ्का नहि करू। हमरा घर लेल टका कमेबाक अछि।'

नैना ओकर आँखि दिस तकलीह। 'हम तोहर काजपर शङ्का नहि करैत छी। केवल चाहैत छी जे तोरा ककरो गलत काजक जिम्मेवारी नहि उठाबय पड़ौक।'

चन्दन एतबापर चुप भऽ गेल। सरस्वती देवी दूनू लेल भोजन बढ़लथिन। चन्दन दिन भरिमे पहिल बेर पेट भरि खएलक। खायब समाप्त कऽ ओ अपन कोठरीमे गेल आ पुस्तकक बगलमे नोटबुक खोललक। ऊपर लिखलक—'काल्हि, पहिल खेप—चारि सय पचास।' तकर नीचाँ ब्याजक हिसाब लिखबाक प्रयास केलक।

ओहि समय नैनाक मोबाइल बजल। किरणक फोन छल। ‘नैना जी, अहाँक काज स्वीकृत भऽ गेल। लिखित नियुक्तिपत्र तैयार अछि। काल्हि दस बजे आबि जाउ।’

नैना दू बेर वेतन आ समयक बात सुनिश्चित केलनि। किरण उत्तर देलथिन, ‘हाँ, जे कहल गेल छल, ओही शर्तपर।’ फोन राखि नैना मायकेँ समाचार देलथिन। सरस्वती देवीक मुँहपर थकानक बीच छोट मुस्कान देखाइ देलक। चन्दन अपन कोठरीसँ बाहर आएल। ‘दीदी, नोकरी भऽ गेल?’

‘पत्र लऽ लेबाक अछि। मुदा हँ, काल्हिसँ जाएब।’

‘तखन नीक भेल,’ चन्दन कहलक। स्वरमे प्रसन्नता छल, संगहि अपन असफलताक कने कसक सेहो।

राति देर धरि चन्दन जागल रहल। ओ परीक्षा रद्द होयबाक सूचना फेर पढ़लक। कागजक एकटा पन्नापर ‘अगिला तिथि’क ठाम खाली छल। दोसर पन्नापर गोदामक पता आ आठ बजेक समय लिखल छल। किछु घण्टा पहिनेसँ ओकर भविष्य एकटा परीक्षा केन्द्रमे देखाइत छल; आब काल्हि भोरे ओकरा ट्रकक बोरा गनबाक अछि। ओ एहि काजकेँ अपमान नहि मानैत छल। अपमान तकरा एहि बातमे लगैत छल जे पढ़बाक अवसर बचएबाक लेल ओकरा बारम्बार ऋण लेबय पड़ैत अछि।

आँगनमे माय बासन समेटि रहल छलीह। नैना अगिला दिनक लेल अपन प्रमाणपत्र एक बेर फेर जाँचि रहल छलीह। घरक भीतर दूटा नब काजक तैयारी चलि रहल छल। एकटा कार्यालयक मेजपर, दोसर गोदामक फाटकपर। दुनू पाछाँ घरक एक्के चिन्ता छल—मासक अन्तमे कतेक टका बचत।

अध्याय ७ : नोकरीक पहिल दिन

भोरे आठ बजे सरस्वती देवी नैनाक झोरामे दूटा रोटी, आलूक भुजिया आ छोट डिबियामे अचार राखि देलथिन। नैना भोजनक डिबिया निकालि कहलीह, 'माय, कार्यालयक समय दस बजेसँ अछि। एखन बहुत समय अछि।'

'पहिल दिन बाट नहि बुझल रहत। बस कखन भेटत, से कोन ठेकान?' माय उत्तर देलथिन। ओ एकटा सादा रुमाल सेहो झोरामे रखलथिन। 'दुपहरिया खा लेब। घर घुरबाक आसमे दिन भरि खाली पेट नहि रहब।'

नैना मायक मुँह दिस तकलीह। पछिला कतेको माससँ ओ नोकरीक आवेदन करैत छलीह; माय प्रत्येक बेर भोजनक तैयारी एही आशासँ करैत छलीह जे बेटी कतहु काजपर जा रहल छथि। मुदा अधिकांश बेर नैना साक्षात्कार दऽ अथवा कोनो विज्ञापनक सच्चाइ बुझि निराश घुरैत छलीह। आइ हुनक हाथमे नियुक्तिपत्र लेबाक वचन छल। एहि वचनक निश्चितता एखन बाकी छल, तैयो घरमे किछु नब बात घटि रहल छल।

चन्दन एखन धरि घुरल नहि छल। गोदाममे आठ बजे पहुँचेबाक बात ओ काल्हि कहने छल। नैनाकेँ ओकर चिन्ता भेलनि। मोटरसाइकिलक पेट्रोलक लेल ओ अपन झोरासँ पचास टका निकालि मायकेँ देलथिन। 'ओ घुरि आए तँ ओकरा दऽ देब। गाड़ी बिना काजपर कोना जाएत?'

माय टका नहि लेलथिन। 'तोरो बसक भाड़ा चाही। ओकरा दू दिनक लेल व्यवस्था अछि।'

'हमरा लग आरो अछि,' नैना कहलथिन। ई आधा साँच छल। हुनका लग घुरबाक भाड़ासँ कने बेसी टका बचल छलनि, मुदा मायकेँ अपन चिन्ता नहि देखेबाक छल। सरस्वती देवी नोट हुनक झोरामे घुरा देलथिन। 'पहिल वेतन हाथमे आबय तखन घरक हिसाब फेर करब।'

नई दिशाक भवनक नीचाँ पहुँचैत दस बजबामे पन्द्रह मिनट छल। फाटक लग कतार आरम्भ भऽ गेल छल। किछु युवक फाइल बान्हने ठाढ़ छलाह, दू महिला अपन बच्चाकेँ संग अनने छलीह। काउन्टर एखन बन्द छल। भवनक देवालपर लगाओल विज्ञापनमे 'रोजगारक नब अवसर' लिखल छल। नैनाक मोनमे भेलनि—एहि कतारमे ठाढ़ प्रत्येक व्यक्तिक घरमे एकटा अलग कथा रहत, मुदा भीतर नामक पाँतिमे ओ सभ केवल आवेदन-संख्या बनि जाएत।

ओ सीढ़ी चढ़लीह। कुसुम मेज पोंछि रहल छलीह। नैनाकेँ देखितहि कहलीह, 'अहाँ समयसँ आबि गेलहुँ। किरण मैडम एखन नहि अएलीह। पहिने कर्मचारीक उपस्थिति-पञ्जीमे नाम लिखि दियौ।'

रजिस्टरमे आठटा नाम छल। ककरो आगाँ आगमनक समय लिखल, ककरो आगाँ खाली। नैना अपन नाम लिखि दस बजबाक पहिनेक समय अंकित केलनि। कुसुम कहलीह, 'हमरा सभकेँ कखनो नौ बजे आबय पड़ैत अछि, मुदा पञ्जीमे दस बजेसँ समय गनल जाइत अछि।'

'तखन अतिरिक्त समयक हिसाब राखल जाइत अछि?' नैना पुछलथिन।

'अहाँ पहिल दिनसँ हिसाबमे पड़ि गेलहुँ!' कुसुम हँसलीह, मुदा हँसी क्षण भरिमे मन्द भऽ गेल। 'एक बेर आगाँ पुछने रही। कहल गेल जे कार्यालयक आवश्यकता अछि। खाली काजक समय पुछलासँ नोकरी नहि चलैत।'

नैना फेर नहि पुछलथिन। ओ सोचलनि, लिखित शर्तमे समय स्पष्ट अछि, तेँ एक दिनक बातसँ झगड़ा करब उचित नहि। मुदा तथ्य मोनमे राखब आवश्यक छल। कुसुम हुनका भीतरक छोट कोठरी देखौलथिन। खिड़की लग पुरान कम्प्यूटर, मेजपर रजिस्टर आ पाछूक अलमारीमे दर्जनो फाइल छल। कर्मचारीसभक लेल पानीक घैला आ दूटा गिलास राखल छल।

दस बजि पाँच मिनटपर किरण अएलीह। पहिल दिनक अपेक्षा हुनक चालिमे अधिक तेजी छल। हाथमे कागजक पुलिन्दा छल। ‘नैना जी, स्वागत अछि। पहिने नियुक्तिपत्र पढ़ि लिअ,’ ओ कहलीह।

पत्रमे तीन मासक परीक्षण-काल, मासिक सात हजार छह सय टका, भोरे दससँ साँझ छह धरि काज आ रविवारक छुट्टी लिखल छल। वेतन अगिला मासक सात तारिखक भीतर देबाक बात सेहो छल। नैना पूरा पत्र पढ़लनि। एकटा शर्तमे ‘संस्थाक आवश्यकतानुसार अन्य प्रशासनिक दायित्व’ लिखल छल।

‘ई अन्य दायित्व कतेक दूर धरि होयत?’ नैना पुछलथिन।

‘अभ्यर्थीक रजिस्टर, रसीदक सूची, दूरभाष पर जानकारी, कखनो प्रशिक्षणक अभिलेख,’ किरण कहलीह। ‘मैदानमे जा कऽ धन वसूलब अहाँक काज नहि रहत।’

‘जँ कखनो एहन आदेश देल जाए?’

‘तखन हमरा पुछब। मुदा एखन कागजपर जे लिखल अछि, ताहिसँ अलग काज देबाक कोनो बात नहि।’

नैना पत्रक एक प्रति अपने लग रखबाक शर्तपर हस्ताक्षर केलनि। किरण हस्ताक्षर कऽ दोसर प्रति देलथिन। नोकरीक छोट कागज हाथमे आबितहि हुनका एकटा हलुक राहत भेटलनि। एखन पहिल वेतन बहुत दूर छल, मुदा प्रतीक्षाक एकटा पड़ाव पार भेल छल।

एघार बजे धरि दुआरिपर भीड़ बढ़ि गेल। कुसुम नाम लिखैत-लिखैत थाकि गेलीह। काउन्टरक दोसर कर्मचारी रामविलास बिना माथ उठौने रसीद काटि रहल छल। नैना भीतर बैसि पछिला तीन दिनक आवेदन कम्प्यूटरमे चढ़ाबय लगलीह। कागजमे नाम, गाम, शिक्षा, इच्छित पद आ जमा शुल्क लिखल छल। किछु अभ्यर्थीक योग्यता बारहम कक्षा छल; किछु स्नातकोत्तर कऽ लेने छलाह। दसवीं पास युवक आ परास्नातक युवती दूनू समान तीन सय पचास टका पञ्जीकरण शुल्क देने छलाह।

नैना एकटा प्रविष्टिपर रुकलीह। रसीद संख्या एक सौ बारह दू बेर छल—पहिल पन्नामे इन्द्रजीत साहक नाम, दोसरमे सुनीता कुमारीक। तारीख अलग-अलग। ओ कागज दूनू

अलग राखि देलनि। थोड़ेक बाद पाँचटा आवेदनमे जमा राशि लिखल छल, मुदा ओकर सङ्ग रसीदक प्रति नहि छल। ओहि ठाम ओ 'रसीद नहि भेटल' लिखलनि।

रामविलास भीतर अएल। 'सूची तैयार भेल?'

'आधा। दूनू नामपर एक्के रसीद संख्या अछि। आ पाँचटा आवेदनक सङ्ग रसीद नहि अछि,' नैना कहलीह।

'एतेक भीड़मे कखनो पन्ना बदलि जाइत अछि। नाम चढ़ा दियौ, पाछाँ सुधार होएत।'

'नाम तँ चढ़ा रहल छी। मुदा रकमक स्तम्भमे प्रमाण बिना निशान लगाओब ठीक नहि होयत।'

रामविलास खिड़कीक बाहर तकैत कहलक, 'हमरा पाछाँ लोक ठाढ़ अछि। अहाँ जे उचित बुझू से करू। मुदा आजुक सूची आइये चाही।'

दुपहरिया एकटा महिला काउन्टरपर रोषमे बजय लगलीह। हुनक बेटा तीन मास पहिने सुरक्षा-रक्षकक नोकरी लेल नाम लिखौने छल। प्रशिक्षणक तिथि दुई बेर बदलल गेल, मुदा काज नहि भेटल। महिला रसीद मेजपर पसारि कहलीह, 'हमरा काज चाही, नहि तँ पैसा घुरा दियौ। बेटा रोज बाजार अबैत अछि, भाड़ा कोन देत?'

रामविलास कहलक, 'प्रशिक्षणक केन्द्रसँ खबरि नहि आएल अछि। हम सभ प्रतीक्षा करैत छी।'

'प्रतीक्षामे किराया तँ रोज जा रहल अछि,' महिला कहलथिन। 'हमर नाम गनने की होएत? हम जे टका देने छी तकर लेखा दियौ।'

किरण बाहर अएलीह। ओ महिलाकेँ कुरसीपर बैसा कऽ कागज देखलनि। 'अहाँ अपन मोबाइल नम्बर लिखि दिअ। हम आजु प्रशिक्षण केन्द्रसँ बात करब। लिखित उत्तर भेटला पर अहाँकेँ बताओल जाएत।'

'आ जँ फेर नहि भेटल?'

‘तखन कार्यालय आबि हमरा भेटब,’ किरण कहलीह। महिला बुझलथिन जे एखन फेर भरोसा करबाक अतिरिक्त उपाय नहि अछि। ओ चलि गेलीह। नैना अपन मेजसँ ई दृश्य देखैत रहलीह। ककरो शिकायत दर्ज भेला आ ओकर समाधान भेला बीचक दूरी कोना बढ़ैत जाइत अछि, से हुनका पहिल दिनहि देखबाक भेटल।

दुपहरिया धरि नैनाक आँखि दुखाय लागल छलनि। कम्प्यूटरक पर्दापर एके तरहक अक्षर देखैत रहला सँ नाम आ अङ्क गड़बड़ाएबाक डर लगैत छल। ओ आँखि हटाकऽ बाहर देखलनि। काउन्टरक लग एकटा महिला अपन सुतल बच्चाकेँ काँधसँ लगौने ठाढ़ छलीह। महिला बारम्बार घड़ी देखैत छलीह, कारण हुनका ककरो घरमे भोजन बनेबाक काजपर पहुँचेबाक छल। तीन सय पचास टकाक पञ्जीकरणक लेल ओ एक दिनक दिहाड़ी छोड़ि अएलीह।

एक बजे कुसुम नैनाकेँ छतपर बनल छोट कोठरीमे भोजन करबाक लेल बजौलथिन। ओतए चारि कर्मचारी पाँतिमे बैसि अपन डिबिया खोलने छलाह। कुसुम नैनाक रोटी देखि कहलीह, ‘घरक भोजनक गन्ध अलगे होइत छैक। हम तँ भोरेसँ फुर्सत नहि पबैत छी, जतेक बँचैत अछि से लऽ अबैत छी।’

नैना पुछलथिन, ‘अहाँ एतए कतेक दिनसँ छी?’

‘एक वर्ष। पहिने सिलाईक दोकानमे रही। ओतए मालिकक घरक काजो करय पड़ैत छल। एतए कमसँ कम मेजपर बैसैत छी।’ कुसुम क्षण भरि रुकलीह। ‘मुदा वेतन कखनो सातक बाद अबैत अछि। पछिला मास नौ तारिखकेँ भेटल।’

‘पत्रमे सात लिखल अछि,’ नैना कहलथिन।

‘पत्रमे बहुत किछु लिखल अछि। अहाँ पत्र राखि लिअ, से ठीक केलहुँ। हम पहिने प्रति नहि लेने रही।’

दूर बैसल कर्मचारी धीरे कहलक, ‘बात धीरे करू। छतक ओहि पार किरण मैडमक कोठरी अछि।’ कुसुम हँसि देलथिन, ‘हम कोनो चोरीक बात थोड़े कहैत छी।’ तैयो ओ विषय बदलि देलथिन।

भोजनक बाद नैना फेर सूची बनबय बैसलीह। नरेश मण्डल नामक अधेड़ व्यक्ति भीतर अएलाह। हुनक हाथमे पुरान बही आ छोट कैलकुलेटर छल। 'अहाँ नब कर्मचारी छी?' ओ पुछलथिन।

'जी। नैना मिश्र।'

'हम नरेश। भुगतानक हिसाब देखैत छी। जे प्रविष्टिमे शङ्का हो, ओकरा दोसर रङ्गसँ चिन्हित करि दिअ, मुदा मूल राशि नहि बदलिहें।'

नैना मुसुकैलीह। 'हम सेहो एही तरहें कऽ रहल छी।'

नरेश सूची देखलनि। 'ई पाँचटा रसीदक प्रति ककरा लग अछि?'

'एखन नहि भेटल। रामविलास जी कहलनि जे पाछाँ देखताह।'

नरेश माथ हिलौलनि। 'ठीक अछि। हम मूल बहीसँ मिला लेब। जे कागज नहि भेटय, तकरा भेटल लिखि देलासँ आगाँ झंझट होइत अछि।' ओ अपन बही खोलि नम्बर नोट केलनि।

नरेशक बात नैनाकेँ ठोस लगलनि। कार्यालयमे पहिल बेर ककरो मुँहसँ एहन निर्देश सुनलनि जाहिमे जल्दीसँ बेसी शुद्ध हिसाबक चिन्ता छल। मुदा नरेश बही बन्द करैत पूछलनि, 'अहाँकेँ नियुक्तिपत्रक प्रति भेटल?'

'हँ।'

'सम्हारि राखब। आ जतेक काजक कागजपर अहाँ हस्ताक्षर करब, पहिने पढ़ि लेब।'

ओ एतबा कहि बाहर चलि गेलाह। नैनाकेँ हुनक अन्तिम वाक्य सामान्य सावधानी जकाँ लगलनि। नहि बुझलनि जे ओ अपन अनुभवसँ कहि रहल छलाह वा सभ नब कर्मचारीकेँ एही बात कहैत छलाह।

दुपहरिया तीन बजेक बाद एकटा युवक बहुत झुँझलाएल भीतर अएल। ओकर नाम संजय कुमार छल। ओ पुछलक, 'काल्हि परीक्षा रद्द भेल, आइ एहि कार्यालयमे दलाल सभ कहैत छथि जे पैसा दियौ तँ नोकरी पक्का। अहाँ सभ सेहो एही तरहक काज करैत छी?'

नैना शान्त स्वरमे कहलीह, 'हम एतए आजु पहिल दिन काज शुरू केने छी। अहाँ जे विज्ञापन देखने छी, से हमरा देखाउ। बिना लिखित विवरणक कोनो वचनकेँ पक्का नहि मानू।'

संजय मोबाइल खोलि एकटा सन्देश देखौलक। सन्देशमे 'नई दिशा'क नाम छल, मुदा भेजनिहारक नम्बर कार्यालयक कागजपर लिखल नम्बरसँ अलग छल। 'ई सन्देश ककरा लगसँ आएल?' नैना पुछलथिन।

'कोचिंगक समूहमे।'

'हम एहि नम्बरक सम्बन्धमे स्वयं किछु नहि जनैत छी। अहाँ शिकायत लिखि दियौ, प्रबन्धिकाकेँ पहुँचाएब।'

संजयक क्रोध कने शान्त भेल। ओ छोट कागजपर नम्बर लिखि देलक। बाहर जएबाक पहिने कहलक, 'हमरा नोकरी चाही। जँ गलत लोक हमरा सभक मजबूरीपर टका कमबैत अछि तँ ओकरा रोकेब के?'

नैना ओकर प्रश्नक तुरन्त उत्तर नहि दऽ सकलीह। ओ आवेदनक सूचीमे लिखल अनेक नाम फेर देखलनि। सभ अपन-अपन जगहसँ उम्मीद लऽ एतए आएल छल। हुनक काज केवल अङ्क चढ़ाएब छल, मुदा एहि अङ्कक पाछाँ लोकक भरोसा सेहो छल।

साँझ पाँच बजे किरण सूची देखलथिन। 'अहाँ शङ्कित रसीद अलग राखने छी?'

'हँ। छओटा प्रकरणमे कागजक मिलान बाकी अछि। एहि पाँचटाक रसीदक प्रति नहि भेटल, एकटामे क्रमाङ्क दोहराएल अछि।'

'सूची सही बनल अछि,' किरण कहलीह। 'मुदा एखन हमरा केवल कुल आवेदनक संख्या चाही।'

नैना संख्या बता देलथिन। किरण जल्दीमे छलथिन। फोन बजितहि ओ फाइल उठौलनि। 'काल्हि भोरे दूनू सूची नरेश जीकेँ देब। मूल फाइल अलमारीमे राखि दिअ।'

नैना पुछलथिन, 'संजय नामक युवक शिकायत देने अछि। एकटा बाहरी नम्बर संस्थाक नामसँ नियुक्तिक वचन दैत अछि।'

किरण कागज लेलथिन। ‘ई बात हमरा देखय दिअ। एहन झूठ सन्देश बहुत घूमैत अछि।’

‘तकर उत्तर हुनका कहिया भेटत?’

‘जाँच भेला पर। एखन अहाँ ओकरा किछु वचन नहि देब।’

छह बजे दुआरि बन्द भेल। नैना कम्प्यूटरक सूची सुरक्षित कएलनि, अपन लिखल परिवर्तनक प्रति ठामपर राखलनि आ नियुक्तिपत्र झोरामे समेटलनि। बाहर निकललीह तँ शहरक सड़कपर साँझ उतरि रहल छल। चायक दोकानपर फेर किछु युवक परीक्षाक बात करैत छलाह। बसक प्रतीक्षामे ठाढ़ रहिते नैनाकेँ चन्दनक स्मरण भेलनि। ओ फोन कऽ पुछलथिन, ‘काज केहन रहल?’

‘साधारण गिनती छल,’ चन्दन कहलक। ‘चारि सय पचासक बात तय अछि। पैसा खेप पूरा भेला पर देत।’

‘कागज मिलल?’

‘हँ, गाड़ीक रसीदपर नाम लिखल अछि। अहाँ चिन्ता नहि करू।’

नैना कहलथिन, ‘आइ हमर पहिल दिन नीकसँ बीतल। मुदा एतए कामक भीड़ बहुत अछि।’

‘दीदी, कमसँ कम तोरा नियमित वेतन भेटत,’ चन्दन कहलक। ‘हमरा तँ रोज नब खेप ताकय पड़त।’

बस आबि गेल। नैना चढ़ि गेलीह। घर पहुँचि मायक हाथमे नियुक्तिपत्र देलथिन। सरस्वती देवी पहिने पन्नाक ऊपर बेटीकेँ लिखल नाम तकलनि, फेर कागज नीकसँ तह लगा कऽ पुरान अलमारीक दराजमे रखि देलथिन। नैना एहि छोट क्रियाकेँ देखैत रहलीह। माय लेल ई केवल कागज नहि छल; घरक अगिला मासक भोजन आ औषधिक एकटा सम्भावना छल।

राति सुतबाक पहिने नैना अपन कॉपीमे पहिल दिनक तीन बात लिखलनि—नियुक्तिपत्रक प्रति भेटल; छओटा आवेदनक हिसाब जाँचबाक बाकी; बाहरी नम्बरक

शिकायत किरणकेँ देल। ओ पत्रक प्रति फेर देखलनि। लिखित शर्तसँ काजक आरम्भ स्पष्ट भेल छल, मुदा कार्यालयक प्रत्येक कागज एखन हुनका बुझल नहि छल। ओ निर्णय कएलनि जे जे काज हुनका सौंपल जाएत, तकरा ध्यानसँ करब; आ जे नहि बुझाइत अछि, तकरा बुझल मानि हस्ताक्षर नहि करब।

अध्याय ८ : किरणक चेतावनी

दोसर दिन भोरे नैनाकेँ कार्यालय पहुँचैतहि बुझा गेलनि जे पहिल दिनक परिचय समाप्त भऽ चुकल अछि। कुसुम बिना बैसबय देने तीनटा फाइल हुनका हाथमे दऽ देलथिन। ‘एहि सभक नामक मिलान कऽ लिअ। किरण मैडमकेँ एगारह बजे धरि सूची चाही।’

‘कल्हिक छओटा शङ्कित प्रविष्टिक कागज नरेश जीकेँ देबाक छल,’ नैना स्मरण करौलथिन।

‘दऽ देब। मुदा पहिने ई काज करब,’ कुसुम कहलीह। ओ अपन काउन्टरपर घुरि गेलीह, जतए दू महिला पहिनेसँ प्रतीक्षा करैत छलीह।

नैना मेजपर फाइल खोललनि। एहि बेर सभ आवेदन दूरक कपड़ा कारखाना आ पैकेट बनाबयवला इकाइक लेल छल। किछु फाइलमे प्रशिक्षण शुल्क बारह हजार, किछुमे आठ हजार लिखल छल। अनेक आवेदनक पाछाँ फोटो चिपकल छल, मुदा दोसर पन्नापर लिखल ठेगाना अपूर्ण छल। सबसँ ऊपरक पन्नामे पूनम यादवक नाम छल। ओकर रसीदक नकल साफ छल, मुदा प्रशिक्षण केन्द्रक पूरा पता एखन धरि जोड़ल नहि गेल छल।

नैना पन्ना एक कात रखलनि। पूनमकेँ काल्हि राति फोन केने छलीह। पूनम बतौने छलीह जे घरमे सभ आब यात्रा लेल तैयारी करैत अछि, मुदा नियुक्तिक पूरा ठाम नहि भेटल अछि। ‘पहिने पता आबि जाए,’ नैना कहने छलीह। पूनम एखन सहमत छलीह, मुदा जतेक दिन बीतैत छल, ऋण देनिहार लोकक प्रश्न बढ़ैत जाइत छल।

फाइलक दोसर आवेदनमे एकटा युवतीक नाम दू तरहेँ लिखल छल। तेसरमे जमा राशिक आगाँ हस्तलिखित सुधार छल, मुदा सुधार करनिहारक हस्ताक्षर नहि। नैना कागज बिना बदले क्रमसँ लिखैत गेलीह—‘नामक मिलान आवश्यक’, ‘प्रशिक्षण स्थल अधूरा’, ‘राशिक सुधार प्रमाणित नहि’। ओ जनैत छलीह जे एना लिखितहि सूची समाप्त करब कठिन अछि, मुदा ओहि त्रुटिकेँ चुपचाप पोंछि देब आरो कठिन लगैत छलनि।

नैना पन्नासभक बीच एकटा आवेदनक पाछू लिखल पेंसिलक टिप्पणी देखलनि —‘भर्ती संख्या सीमित’। मुद्रित पर्चीमे, एकर विपरीत, ‘अनेक पद रिक्त’ लिखल छल। ओ दूनू विवरण अपन सूचीमे अलग-अलग उतारलनि। कागज देखैत हुनका पूनमक बाबूजीक बात मोन पड़लनि—बाहर जाएब तँ ठेगाना बतबैत रहिहें। नियुक्तिक पद निश्चित नहि रहला पर यात्रा निश्चित करबाक आग्रह हुनका सहज नहि लगैत छलनि।

ओ कुसुमसँ पुछलथिन, ‘प्रशिक्षणक सूचीकेँ कम्पनीक पत्रसँ मिलाओल जाइत अछि?’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘किछु पत्र सीधे किरण मैडम लग अबैत अछि। हमरा केवल नाम टाइप करबाक देल जाइत अछि।’ नैना पुछलथिन, ‘तँ जिनका पत्र नहि भेटल, हुनकर नामकेँ अन्तिम सूचीमे राखब?’ कुसुम फाइल देखैत कहलीह, ‘हम अहाँकेँ अन्तिम कहल नहि अछि। जे लिखल अछि, ओहीकेँ प्रारम्भिक लिखू।’ एहि सादा उत्तरसँ नैनाकेँ काजक एकटा स्पष्ट बाट भेटलनि।

दस बजि बीस मिनटपर रामविलास भीतर अएल। ओकर हाथमे चायक गिलास छल। ‘नैना जी, पहिल दिन बहुत नियम लिखलहुँ। आजु किछु तेजीसँ करब ने? बारह बजे वाहनक सूची भेजबाक अछि।’

‘फाइलमे सूचना पूरा नहि अछि। जे अछि से चढ़ा देब; जे नहि अछि, ओकरा नहि जोड़ि सकैत छी,’ नैना कहलीह।

‘अहाँक काज केवल टाइप करब अछि। सभ बातक फैसला अहाँ किएक करब?’

‘फैसला नहि करैत छी। मूल कागजमे जे देखलहुँ, ओही बात लिखैत छी।’

रामविलास ठोर भींचि कऽ चलि गेल। ओकरा लग नैना बेसी प्रश्न करनिहार नब कर्मचारी छलीह। नैनाकेँ ओकरा लगसँ कोनो व्यक्तिगत शत्रुता नहि छलनि। मुदा पिछला दिनसँ एकटा बात स्पष्ट होमय लगल छल—भूल देखेबाक लोककेँ कखनो एना बुझल जाइत अछि जे ओ काज रोकैत अछि।

एगारह बजेसँ पहिने नरेश मण्डल आएलाह। नैना काल्हिक सूची हुनका देखौलनि। नरेश अपन बहीसँ दूटा क्रमाङ्क मिलौलनि। एकटा रसीदक नकल दोसर फाइलमे लागल छल। दू प्रविष्टि गलत रजिस्टरमे चढ़ल छल। तीनटाक हिसाब एखनो स्पष्ट नहि भेल।

‘एहि तीनटाकेँ अधूरा लिखि छोड़ू,’ नरेश कहलथिन। ‘कल्हि मूल रसीदक पुस्तक भेटत तँ देखब।’

‘आ पूनम यादवक प्रशिक्षण ठाम?’ नैना पुछलथिन।

नरेश नाम सुनि फाइलक ऊपर तकलनि। ‘ओ विषय प्रबन्धिका देखैत छथि। हमर बहीमे केवल जमा रकमक जानकारी अछि।’

‘पता बिना लोककेँ पठाएब उचित होयत?’

‘उचित की, अनुचित की—ओ निर्णय देबाक अधिकार हमरा नहि अछि,’ नरेश शान्त स्वरमे उत्तर देलथिन। ‘मुदा कागज पूरा होयब चाही, एहि बातपर हम सहमत छी।’

ओ अपन बही समेटलनि। बाहर जएबाक समय फेर कहलथिन, ‘अहाँ जतेक देखैत छी, ततेक लिखैत जाउ। सुनने बातकेँ प्रमाण नहि मानू। आ अपन लिखल सूची पर तिथि अवश्य राखू।’

नैना हुनक बातपर माथ हिलौलनि। ओ एहि निर्देशमे किछु व्यावहारिक बोध देखैत छलीह। कार्यालयक भीतर कतेको लोक आ कतेको काज छल; सभक पूरा इतिहास एक दिनमे बुझब सम्भव नहि छल।

दुपहरियाक पहिने एकटा वृद्ध पुरुष, जिनकर गेरुआ रङ्गक गमछा काँधपर छलनि, अपन बेटाक संग कार्यालय आएलाह। बेटा लगभग बाइस वर्षक छल। वृद्धक हाथमे रसीद आ दूटा पत्र छल। ओ कुसुमसँ कहैत छलाह, ‘एहि कागजपर जे कम्पनी लिखल अछि, ओतए फोन करैत छी तँ कहैत छथि कि सूची नहि पहुँचल।’

कुसुम कहलथिन, ‘पहिने अभ्यर्थीक नम्बर दियौ।’

वृद्ध उत्तर देलथिन, ‘नम्बर कहब। मुदा ई बताउ जे हमर बेटाकेँ नोकरी भेटत कि नहि? दस हजार टका ऋण लऽ देने छी।’

बेटा बापकेँ चुप करबैत कहलक, ‘पहिने हमरा सभक बात सुनू। नियुक्तिक साक्षात्कारक तिथि तीन बेर बदलल अछि।’

कुसुम भीतर ककरो बजबय गेलीह। वृद्ध कुरसीपर बैसलाह। नैनाक मेज दुआरिक लग छल, तेँ हुनक बात स्पष्ट सुनाइत छल। वृद्ध कहैत छलाह, 'घरमे दू बीघा खेती अछि। बरखा ठीक नहि भेल तँ अनाज आधा होइत अछि। बेटा पढ़ल अछि, ओकरा लेल पैसा देलहुँ। कागज हमर आँखिसँ पढ़ल नहि जाइत। सभ कहलक कि शहरक संस्था भरोसाक अछि।'

नैना अपन काज रोकि पुछलथिन, 'अहाँक बेटाक नाम की अछि?'

'विनोद कुमार।'

ओ सूचीमे नाम देखलनि। विनोदक पञ्जीकरण भेटल, मुदा कम्पनीक अन्तिम स्वीकृतिक स्थान खाली छल। 'एतए नाम अछि। मुदा अन्तिम नियुक्तिक सूचना एहि अभिलेखमे नहि अछि। एखन हम जे देखैत छी, ओतबे कहि सकैत छी,' नैना कहलीह।

विनोदक मुँह उतरि गेल। 'मास भरिसँ कहैत छथि, अगिला सप्ताह। हम आइ काजक बारेमे साफ उत्तर चाहैत छी।'

'अहाँक आवेदनक प्रति आ रसीदक तस्वीर लऽ लिअ। प्रबन्धिका एखन अबैतीह,' नैना कहलीह।

किरण भीतरसँ बाहर अएलीह। ओ विनोदक कागज ध्यानसँ पढ़लनि आ एकटा नम्बर मिलौलनि। 'अहाँकेँ काल्हि लिखित स्थिति बताओल जाएत,' ओ कहलीह।

वृद्ध अधीर भऽ गेलाह। 'फेर काल्हि? घरसँ बसक भाड़ा दऽ-दऽ कऽ थाकि गेलहुँ।'

किरण स्वर नरम केलनि। 'अहाँ सभ काल्हि एतए नहि आबू। अहाँक नम्बरपर लिखित सन्देश पठाएब। जँ नियुक्ति सम्भव नहि होयत, तकर जानकारी सेहो देब।'

'आ टका?' वृद्ध पुछलथिन।

किरण एक क्षण रोकलीह। 'रसीदक शर्त जाँचि कऽ बताओल जाएत। हम एखन घुरेबाक वचन नहि दऽ सकैत छी।'

वृद्धक आँखिमे रोष आयल, मुदा ओ उठि गेलाह। 'हम फेर प्रतीक्षा करब। मुदा हमर लड़का कखन धरि एना घुमैत रहत?' हुनक प्रश्नक उत्तर दुआरिक भीतर ककरो लग नहि छल।

वृद्ध आ बेटा बाहर निकललाक बाद कुसुम हुनकर खाली कुरसी सम्हारलीह। मेजपर रखल पानिक गिलास आधा भरल रहि गेल छल। नैना विनोदक आवेदनक क्रमाङ्क अलग कागजपर लिखि लेलनि, जाहिसँ काल्हि ओकर स्थिति सहजेसँ खोजल जा सकय। ओ विनोदक लेल किछु करय चाहैत छलीह, मुदा नियुक्तिक निर्णयक अधिकार हुनका नहि छलनि। एतबा जरूर कऽ सकैत छलीह जे शिकायत फाइलमे दबि नहि जाए।

थोड़ेक दूर बैसल एकटा नवयुवक कहलक, 'हमहुँ तीन दिनसँ एतए आबि रहल छी। हर बेर कहैत छथि, भोरे आबू।' कुसुम ओकर पर्ची देखि निश्चित समय लिखि देलथिन। 'आइ दोसर बेर नहि घुमायब,' ओ कहलीह। युवक कृतज्ञ भावसँ चलि गेल। नैनाकेँ बुझलनि जे एतए सभ कर्मचारी एकरूप नहि छथि; कोनो काज केवल लापरवाहीसँ अटकैत अछि, तँ किछु काज अधिकारीक उत्तरक प्रतीक्षामे। असुविधाक कारण बुझने बिना दोष लगाओब उचित नहि।

विनोद चलि गेलाक बाद किरण नैनाक मेज लग अएलीह। 'अहाँ हुनका फाइल देखौने रही?'

'नाम आ रिक्त स्वीकृतिक स्तम्भ देखौने रही। कोनो नियुक्तिक वचन नहि देलहुँ।'

'नीक केलहुँ। मुदा एकटा बात बुझि लिअ। कार्यालयक अभिलेख ग्राहककेँ अपन इच्छासँ देखेबाक नहि अछि। कर्मचारीक जे अधिकार अछि, ताहिसँ बेसी बात करब तँ विवाद होयत।'

नैना कहलीह, 'हम कोनो गोपनीय कागज नहि देलहुँ। केवल कहलहुँ जे नियुक्ति एखन दर्ज नहि अछि।'

'ओ बात ठीक अछि। मुदा बाहरक लोक प्रत्येक शब्दक अलग अर्थ निकालैत अछि। जँ अहाँ कहलहुँ कि सूचीमे स्वीकृति नहि, तँ ओ बुझि सकैत अछि जे संस्था धोखा दऽ रहल अछि।'

'तखन अधूरा जानकारीकेँ पूरा कहब?' नैना पुछलथिन।

किरण चुप भेलीह। फेर अपन कोठरी दिस इशारा केलनि। 'भीतर आबू। एतए ठाढ़ भऽ चर्चा नहि करब।'

कोठरीक दुआरि बन्द नहि कएल गेल, मुदा भीतर सड़कक कोलाहल कम छल। किरण कुर्सीपर बैसि जलक गिलास पीलथिन। 'अहाँ पहिल दिनहि लिखित शर्त देखबाक बात केने रही। हमरा ओ नीक लागल। अहाँ सजग छी। मुदा सजगता आ प्रत्येक काजपर सवाल उठाएब एक्के बात नहि अछि।'

'जँ कागज गलत अछि तँ ओकर सूचना देब हमरा काजक हिस्सा लगैत अछि,' नैना कहलीह।

'सूचना हमरा दियौ। ग्राहकक सामने बहस नहि करब। ओ लोक धन लगौने छथि, आशा लगौने छथि, तेँ क्रोध स्वाभाविक अछि। मुदा हमरा एतए काज चलएबाक अछि। एकटा झूठ वचन देब या सभक सामने अधूरा कागज देखाएब, दुनू गलत होयत।'

नैना पहिल बेर किरणक बातमे विरोधक सङ्ग तर्क सेहो देखलनि। 'ठीक अछि। हम शिकायत लिखि देब आ सम्बन्धित फाइल अधिकारीकेँ देब। मुदा जँ ग्राहक पुछत जे अहाँ जे देखैत छी से की, तखन हम गलत बात नहि कहि सकब।'

'गलत बात कहबाक लेल के कहैत अछि?' किरणक स्वर कने तेज भेल। 'अहाँकेँ जे जिम्मेवारी देल गेल अछि, ओ निभाउ। निर्णयक अधिकार जेकरा अछि, तकरा नाम बताउ। प्रत्येक प्रश्नक न्यायाधीश बनबाक आवश्यकता नहि।'

किछु क्षण दुनू चुप रहलीह। खिड़कीक बाहर ठेलावाला अमरूदक आवाज लगा रहल छल। कार्यालयक भीड़, फोनक घण्टी आ लेखा-पत्रक बीच ई छोट नीरवता नैनाकेँ असहज लगलनि। हुनका नोकरीक आवश्यकता छल, मुदा अपन हस्ताक्षरक अर्थ सेहो बुझबाक छल।

किरण फेर धीरे बजलीह, 'अहाँक घरमे आर्थिक दबाव अछि, से अहाँ कहने रही। हमहुँ एहन दिन देखने छी जखन घरक किराया जुटएबाक लेल उधार लेबय पड़ल। नोकरी बचब, ई चिन्ता हम बुझैत छी। तेँ कहैत छी—अनावश्यक टकरावसँ बचू। काजमे कोनो त्रुटि भेटय तँ हमरा लिखित दियौ। अपन प्रति राखू। मुदा बिना पूरा जानकारीक ककरो अपराधी ठहराएब उचित नहि।'

'हम ककरो अपराधी नहि कहने छी,' नैना उत्तर देलथिन।

‘हम से नहि कहैत छी। केवल आगाँ लेल सावधान करैत छी।’ किरण एकटा फाइल आगाँ बढ़ौलनि। ‘ई देखू। प्रशिक्षणक ठाम आ सम्पर्कक जानकारी हमरा माँगने छी। भेटितहि जोड़ल जाएत।’

फाइलमे पूनमक संग आठटा दोसर नाम छल। नैनाकेँ राहतक कनेक अनुभव भेल। ‘एहि सभक परिवारकेँ तिथि भेटबाक पहिने पूरा पता देल जाएत ने?’

‘हम प्रयास करब,’ किरण कहलीह। ‘मुदा अन्तिम तिथि दोसर संस्था तय करत। अहाँ एखन सूची तैयार करू।’

किरण फोन उठौलनि। ओहि समय स्क्रीनपर रतन सिंहक नाम देखाइ देलक। ओ तत्काल कुर्सीसँ सिधा बैसि गेलीह। ‘जी, सर। हँ, कार्यक्रमक निमन्त्रण पहुँचि गेल अछि। कर्मचारीसभक सूची तैयार अछि।’ किछु क्षण सुनलाक बाद कहलीह, ‘नैना नब अएलीह। लिखबाक काज नीक करैत छथि। हँ, हम देखैत छी।’

फोन राखि ओ नैनाकेँ कहलथिन, ‘रविवारक बाद नगरक उच्च विद्यालयमे रोजगार आ शिक्षा-सहायता कार्यक्रम अछि। मालिक स्वयं रहताह। अहाँकेँ पञ्जीकरणक सूची लऽ ओतए जाए पड़त। ई प्रशासनिक काजक हिस्सा अछि।’

‘काजक समयक भीतर रहत?’ नैना पुछलथिन।

‘दिनमे। कार्यक्रमक दिन कार्यालयक कामक बदला ओतए रहब। आ सूचीमे जे नाम अछि से ही लेब, अधिक नहि।’

नैना बाहर अएलीह। हुनका किरणक चेतावनीक अर्थ आ सीमा दुनू सोचबाक छल। ओ अपन मेजपर बैसि फाइल मिलौलनि। दोहरायल प्रविष्टि लाल रङ्गसँ चिह्नित कएलनि; जे जानकारी नहि छल से खाली छोड़लनि। बाहरक भीड़ एखन कने घटल छल।

साँझ कुसुम पुछलथिन, ‘मैडम बहुत डाँटलथिन?’

‘काजक सीमा समझौलथिन,’ नैना कहलीह।

‘तखन नीक। एतए जे चुप रहैत अछि ओकरा बड्ड सुविधा अछि। जे पुछैत अछि, ओकरा काजो बेसी भेटैत अछि।’ कुसुम अपन बटुआ समेटैत हँसलीह।

‘चुप रहब तँ सभ ठीक होएत, से अहाँ स्वयं मानैत छी?’ नैना पुछलथिन।

कुसुम एखन हँसलीह नहि। ‘नहि। मुदा हमर घरमे दू बच्चा छथि। वेतन रुकि गेल तँ घरक चूल्हि रुकत। अहाँ जे उचित बुझू, करू। खाली ई मोन राखब जे एतए सभक विवशता अलग-अलग अछि।’

मेज समेटैत कुसुम हुनका अपन परिवारक विषयमे एक-दू बात कहलथिन। हुनक पति सिलाईक मशीन सुधरैत छथि, मुदा कखनो दू दिन धरि ग्राहक नहि अबैत अछि। पैघ बेटीक विद्यालयमे शुल्क जमा करबाक तिथि आबि गेल अछि। ‘एहि मास जँ सात तारिखकेँ वेतन भेटि जाए तँ बहुत सुविधा होयत,’ ओ कहलीह। नैना पुछलथिन, ‘अहाँ एकटा लिखित आवेदन दऽ सकैत छी ने जे समयपर वेतन चाही?’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘दऽ सकैत छी। मुदा सब काज एतेक सीधा नहि होइत अछि। पहिने मालिकसँ बात कऽ लेब।’

कुसुमक बात नैनाकेँ सहज लगलनि। हुनका अपन माय, चन्दन आ घरक बकाया मोन पड़लनि। ओ अपन नोटबुक बन्द केलनि। एखन धरि हुनका ठोस प्रमाण नहि भेटल छल जे कार्यालय जानि-बुझि गलत काज करैत अछि। मुदा जतेक अपूर्ण कागज देखलनि, तकरा अनदेखल सेहो नहि कऽ सकैत छलीह।

घर घुरि नैना पूनमकेँ फोन केलनि। ‘अहाँक नाम प्रशिक्षणक सूचीमे अछि। मुदा पूरा पता एखन धरि नहि आएल अछि। अहाँ जएबाक पहिने ई बात स्पष्ट करिऔन।’

पूनम पुछलथिन, ‘किरण मैडम की कहलीह?’

‘कहलथिन जे जानकारी मँगाओल जा रहल अछि। जखन लिखित भेटत, तखन अहाँकेँ बतायब।’

‘अहाँ एतय काज करैत छी। अहाँपर दबाव तँ नहि पड़त?’ पूनम धीरे पुछलथिन।

नैना किछु क्षण चुप रहलिह। ‘हमर काज अभिलेख देखब अछि। दोस्तीक कारणें अतिरिक्त भरोसा नहि देब। मुदा जे पक्का जानकारी भेटत, से अवश्य कहब।’

पूनम कहलथिन, ‘ईएह चाही। हमरा अपन कागज बुझेबाक अछि, केवल दिलासा नहि।’

रातिक भोजनपर चन्दन अपन पहिल खेपक चारि सय पचास टकाक बात केलक। ‘मालक गिनती मिलि गेल। मुदा पूरा भुगतान काल्हि करत,’ ओ कहलक। सरस्वती देवी पुछलथिन, ‘तँ भोजनक टका आबि गेल?’ चन्दन चुप भऽ गेल। नैना ओकर दिस तकि कहलीह, ‘काज करबाक बादो टका हाथमे नहि आएल तँ ओकर मोल एखन कहाँ भेटल?’ चन्दन उत्तर देलक, ‘मालिक कहने अछि। काल्हि देखब।’ ओकर स्वरमे भरोसा जतेक छल, ताहिसँ बेसी थकान छल।

नैना अपन कार्यालयक वेतनक तिथि मोन पाड़लनि। घरमे दू व्यक्ति काज करबाक आरम्भ केने छलाह, मुदा कोनो भुगतान एखन धरि हाथमे नहि आएल छल। सरस्वती देवी भोजन परोसैत कहलीह, ‘कागजमे लिखल रहय वा मुँहसँ कहल जाए, घरक चूल्हि तँ टकासँ चलैत अछि।’ हुनक एहि बातपर दुनू भाय-बहिन चुप रहलाह।

फोन राखि नैना बहुत देर धरि कॉपीक खाली पन्ना तकैत रहलीह। कार्यालयमे कोन प्रश्न करबाक अधिकार अछि, कोन उत्तर देबाक जिम्मेवारी, आ ककर बातपर चुप रहब उचित—एहि सभक स्पष्ट रेखा एखन हुनका नहि भेटल छलनि। तैयो ओ एकटा बात निश्चित कऽ लेने छलीह: दोसराक भरोसाक हिसाबमे अपन अनुमानकेँ तथ्य बनाकऽ नहि लिखब।

अध्याय ९ : रतनक प्रतिष्ठा

नगरक उच्च विद्यालयक फाटकपर भोरेसँ रंगीन कपड़ा टाँगल जा रहल छल। विद्यालयक प्राङ्गणमे बेंच आ कुरसी लगाओल गेल छल। मंचक पाछाँ पैघ अक्षरमे लिखल छल—‘युवा रोजगार आ शिक्षा-सहायता समारोह’। नीचाँ दानदाता संस्था आ स्थानीय सहयोगीसभक नाम छल। रतन सिंहक तस्वीरक संग हुनक नाम सबसँ ऊपर छपल छल।

नैना दस बजबासँ पहिने विद्यालय पहुँचलिह। हुनक हाथमे आवेदनक सूची, सादा रजिस्टर आ किछु खाली पन्ना छल। किरण कालिहये स्पष्ट कऽ देने छलीह जे एतए कोनो नब नियुक्तिक वचन नहि देबाक अछि; जे लोक परामर्श लेल आबत, तकर नाम आ सम्पर्क लिखि लेबाक अछि। कुसुम पहिनेसँ एकटा मेजपर पञ्जीकरणक पर्ची सजौने छलीह।

‘अहाँ देरी नहि केलहुँ,’ कुसुम कहलीह। ‘हमरा तँ सबेरसँ मंचक लोक सभ दौड़ा रहल छथि। एक बेर कहैत छथि मेज दहिना करू, दोसर बेर कहैत छथि बाँमा।’

‘कार्यक्रम केकर अछि? विद्यालयक कि संस्थाक?’ नैना पुछलथिन।

‘नाम विद्यालयक अछि, खर्चक पैघ हिस्सा रतन बाबू देलनि अछि। रोजगार केन्द्रसँ परामर्शक मेज लगाओल गेल अछि। ओहि कारणें हम सभ एतए छी।’

मंचक आगाँक पाँतिमे विद्यालयक प्रधानाध्यापक आ शिक्षकसभक लेल कुरसी राखल छल। दोसर पाँतिमे गामसभसँ आएल अभिभावक छलाह। किछु छात्र अपन पुरस्कार लेबाक आशामे नीक कपड़ा पहिरने छलाह। विद्यालयक पुरान भवनक देवालपर सीलनक धब्बा छल; बगलमे बनि रहल नब कोठरीक चारू कात बाँसक घेरा राखल छल। आयोजनमे चमक छल, मुदा विद्यालयक रोजक आवश्यकता सेहो आँखिक आगाँ छल।

एकटा बालिका अपन मायसँ कहि रहल छलीह, ‘माय, किताबक सूची कहिया भेटत?’ माय उत्तर देलथिन, ‘कार्यक्रम समाप्त होय तखन मास्टर साहेब पुछब।’ बालिकाक हाथमे

पुरान फाइल छल जकर कोन घिसि गेल छल। नैना हुनका बैसबाक ठाम देखौलथिन। माय धन्यवाद कहि अपन बेटीकेँ लऽ पाँतिमे बैसि गेलीह।

प्राङ्गणक दोसर कात माधवी देवी पानीक घैला सम्हारि रहल छलीह। ओ नगरक अनेक घरमे बासन माँजैत आ झाड़ू-पोंछा करैत छलीह। विद्यालयमे सेहो आवश्यकता पड़ला पर काज करैत छलीह। नैना हुनका पहिने मायक परिचयक कारणें जनैत छलीह।

‘माधवी काकी, अहाँ एतए?’ नैना पुछलथिन।

‘आजु सभ दिनक काज छोड़ि एतए आएल छी। विद्यालयसँ कहल गेल जे भोजन बाँटबाक व्यवस्था देखू। मजदूरीक बात एखन निश्चित नहि,’ माधवी कहलीह।

‘पहिने दाम तय कऽ लेबाक चाही।’

‘हाँ, कहने छी। मुदा बेटी, कतहु काज छूटल देखैत छी तँ हाथ नहि रोकल जाइत। विद्यालयमे बच्चा सभ अछि। भोजनक व्यवस्था खराब भेल तँ हुनका सभकेँ कष्ट।’ माधवी मुसुकैलीह। ‘तोहर नोकरी भेल, से सुनलहुँ। नीक कएलह।’

नैना हुनका प्रणाम केलनि। माधवीक चेहरापर धूपक रेखा छल, हाथक चाम कठोर भऽ गेल छल। हुनका देखैत नैनाकेँ मायक ओ बात मोन पड़लनि जे शराबबन्दीक आरम्भमे माधवीक घरमे बचत होमय लगल छल, मुदा एक वर्षक भीतर अवैध शराबक कारोबार बढ़ला पर पतिक पुरान लत फेर घरक खर्चमे सेंध मारय लागल। माधवी एखन एहि बातपर किछु नहि कहलीह। ओ पानिक घैला उठबैत फेर काजमे लागि गेलीह।

एगारह बजे दूटा चमकैत गाड़ी फाटकपर रुकल। पहिल गाड़ीसँ रतन सिंह उतरलाह। उज्जर कुरता-पाजामा, काँधपर हलुक अङ्गवस्त्र आ पएरमे चमकदार जूता। हुनक सङ्ग दोसर गाड़ीसँ वीरेन्द्र राय उतरलाह, जे नगरक निर्माणक ठीकेदार छलाह। स्थानीय नेता जगदीश चौधरी सेहो पहुँचलाह। शिक्षकसभ हुनका सभक स्वागत केलनि। किछु युवक मोबाइल निकालि तस्वीर खींचय लगलाह।

रतनक विषयमे नगरमे अनेक कथा सुनबा भेटैत छल। कोनो कहैत छल जे ओ छात्रवृत्ति दैत छथि; ककरो अनुसार दू वर्ष पहिने बाढ़क समय ओ राहतक सामान पठौने

छलाह। विद्यालयक प्रधानाध्यापक बतबैत छलाह जे नब कोठरीक निर्माणमे हुनकर आर्थिक सहयोग अछि। ई सभ बात केवल विज्ञापन नहि छल—कोठरीक अधबनल देवाल आ पुस्तकक बण्डल सभक आँखिक आगाँ छल।

रतन प्राङ्गणमे घुसितहि पहिने प्रधानाध्यापकसँ हाथ मिलौलनि। 'बच्चासभक लेल जे पुस्तक मँगाओल गेल छल, सभ पहुँचि गेल?' ओ पुछलथिन।

'जी, पहुँचि गेल। मुदा विज्ञानक प्रयोगशालाक किछु सामान बाकी अछि,' प्रधानाध्यापक कहलथिन।

'सूची हमरा दऽ दिअ। जे सम्भव होयत, देखब,' रतन उत्तर देलथिन। ओ कार्यक्रमक तैयारीक विषयमे स्वयं कतेको प्रश्न पुछलनि। एहि व्यवहारसँ हुनका देखनिहार लोकक मनमे अपनापनक भाव होइत छल।

नैनाकेँ किरण बजौलथिन। 'रतन सरकेँ पञ्जीकरणक संख्या कहि दिअ।'

नैना रजिस्टर खोलि कहलथिन, 'एखन धरि अड़सठि लोक नाम लिखौने छथि। चौदह गोटे प्रशिक्षणक जानकारी मँगने छथि। छओटा आवेदनमे शैक्षणिक प्रमाणपत्रक प्रति बाकी अछि।'

रतन ध्यानसँ सुनलनि। 'अहाँ नब कर्मचारी छी?'

'हँ, नैना मिश्र।'

'रजिस्टर सम्हारि रहल छी?'

'नाम आ प्राप्त जानकारी लिखैत छी। नियुक्तिक अन्तिम निर्णय संस्थाक सम्बन्धित अधिकारी करैत छथि।'

रतन एक बेर किरण दिस देखलनि, फेर मुसुकौलाह। 'ठीक अछि। जतेक बात निश्चित नहि, तकर वचन देबाक नहि चाही। लोक एतए भरोसा लऽ अबैत अछि।' ओ नैनाकेँ आगाँक काज करबाक इशारा केलनि।

विद्यालयक एकटा शिक्षक नैनाक मेज लग अएलाह आ छात्रवृत्तिक पुरान सूची देखबैत कहलथिन जे पिछला वर्ष रतनक सहयोगसँ तीनटा छात्र पढ़ाइ छोड़बासँ बचल। ओहि छात्रसभमे एकटा छात्र एखन महाविद्यालयमे नाम लिखौने छल। नैना पुछलथिन, 'सहायता नियमित भेटैत छैक?' शिक्षक कहलथिन, 'सभकेँ नहि। जे सूची स्वीकृत भेल अछि, हुनका सभकेँ।' ओ विद्यार्थीसभक नाम देखौलनि। नैनाकेँ ई बात महत्त्वपूर्ण लगलनि जे सहायता वास्तविक आ उपयोगी छल, मुदा ओकर सीमा सेहो छल। कार्यक्रमक विज्ञापनमे जतेक चमक छल, प्रत्येक विद्यार्थीक अवसर ओतबा व्यापक नहि छल।

छात्रसभक बीचसँ एकटा बालक बाहर आबि पानि पीलक आ अपन जूताक फाटल फीता गाँठि फेर पाँतिमे बैसि गेल। मंचसँ देल नब पुस्तक ओकर गोदमे छल। नैना देखलनि जे ओकर मुस्कान पुस्तक पएबाक छल, नहि मंचपर बजल पैघ बातक।

मंचपर कार्यक्रम आरम्भ भेल। छात्रसभ स्वागतगीत गाओलनि। प्रधानाध्यापक विद्यालयक आवश्यकता गनौलनि। जगदीश चौधरी मंचसँ कहलथिन जे युवासभक लेल रोजगार आ पढ़ाइ दुनू आवश्यक अछि। ओ स्थानीय व्यवसायीसभकेँ शिक्षा-सहायतामे भाग लेबाक आग्रह केलनि। वीरेन्द्र राय नब कोठरीक निर्माण शीघ्र समाप्त करबाक आश्वासन देलनि। तकर बाद रतनकेँ बजाओल गेल।

रतन माइकपर बैसने शिक्षकसभकेँ प्रणाम केलनि। 'हम एही नगरक साधारण घरसँ उठल छी,' ओ कहने छलाह। 'पहिल काजमे असफल भेल रही। जे लोक अपन बेटा-बेटीकेँ पढ़बैत छथि, हुनक परिश्रम बुझैत छी। रोजगार केवल नौकरी-पत्र नहि, कमेबाक अवसर सेहो अछि। मुदा अवसरक नामपर झूठ बात नहि होएबाक चाही।'

पाँतिमे बैसल अनेक लोक ताली बजौलनि। रतन पाँचटा निर्धन छात्रकेँ पुस्तक-सहायता देलनि। दू छात्राकेँ अगिला वर्षक शुल्कक लेल चेक देल गेल। एक बालकक पिता मंचपर आबि हाथ जोड़लनि। रतन हुनका रोकि कहने छलाह, 'ई बच्चाक पढ़ाइक सहायता अछि, व्यक्तिगत उपकार नहि।' ई दृश्य लोकक मने-मने स्थान बना रहल छल।

नैना पञ्जीकरणक मेजपर बैसल-बैसल समारोह देखैत छलीह। ओकरा देखाइत छल जे आजु देल सहायता वास्तविक अछि। साथहि ओ जानैत छलीह जे कार्यालयक रजिस्टरमे अनेक लोक जमा पैसा आ अपूर्ण नियुक्तिक बीच अटकल छथि। एक दिस लाभ देखाइत छल, दोसर दिस प्रश्न। दुनूकेँ एक्के झटकामे झूठ अथवा साँच कहब हुनका उचित नहि लगैत छलनि।

कार्यक्रमक बीच अभय पासवान विद्यालय पहुँचलाह। काँधपर पुरान झोरा, हाथमे छोट रजिस्टर आ मोबाइल। स्थानीय समाचारपत्रक प्रतिनिधि भेलाक कारण हुनका मंचक कात बैसबय चाहल गेल, मुदा ओ पहिने पञ्जीकरणक मेज लग रुकलाह। नैनाकेँ देखि मुसुकौलाह।

‘अहाँ एतए?’ अभय पुछलथिन।

‘कार्यालयसँ सूची लऽ आएल छी। कार्यक्रममे परामर्शक व्यवस्था अछि,’ नैना उत्तर देलथिन।

‘पहिल सप्ताहक नोकरी आ एतेक पैघ आयोजन!’

‘पैघ आयोजन देखब हमर काज नहि। नाम लिखब अछि।’ नैना मुसुकैलीह। ‘अहाँ समाचार लेल अएलहुँ?’

‘हँ। विद्यालयक नब कोठरी, छात्रसभक सहायता आ रोजगार परामर्श—तीनू बातक प्रमाण चाही। केवल मंचक भाषण लिखलासँ समाचार पूरा नहि होयत।’

अभयक नजरि मेजपर राखल पर्चीपर पड़ल। ओ पुछलथिन, ‘नियुक्ति एतहि होइत अछि?’

‘नहि। नाम आ जानकारी लेल जाइत अछि। आवेदनक बाद अलग प्रक्रिया अछि,’ नैना स्पष्ट केलनि।

‘तखन समाचारमे परामर्श केन्द्र लिखब, नियुक्ति शिविर नहि,’ अभय कहलथिन। ओ कागजमे किछु नोट केलनि। नैना मनहि मन सोचलनि जे लिखित शब्दक अर्थ बदललासँ लोकक आशा सेहो बदलि जाइत अछि।

मंचक कात वीरेन्द्र राय दू व्यक्तिसँ बात करैत छलाह। एक आदमीक कपड़ा धूलिसँ भरल छल; ओ निर्माणक मजदूर लगैत छल। नैना सुनलनि जे ओ अपन मजदूरीक बकाया विषयमे कहि रहल छलाह। 'दू सप्ताहक टका रहि गेल अछि, बाबू। घरमे राशन नहि।'

वीरेन्द्र कने धीमा स्वरमे कहलक, 'कार्यालय आबि हिसाब देखाबह। एतए कार्यक्रम चलि रहल अछि।'

'कार्यालयमे चारि बेर गेलहुँ,' मजदूर कहलक।

वीरेन्द्र आसपासक लोक दिस तकैत कहलक, 'तँ पाँचम बेर आबिहें। पहिने हिसाब मिलब।' ओ आदमीकेँ किनार करि मंच दिस बढ़ि गेल।

नैना एहि बातचीतक पूरा सन्दर्भ नहि जनैत छलीह। ओ मजदूरक नाम पुछबाक लेल आगाँ नहि बढ़लीह। हुनक अपन मेजपर लोकक पाँति छल। मुदा ओ देखलनि जे मंचपर दानक घोषणा होइत समय जे हाथ ताली बजबैत छल, ओहि हाथमे मजदूरीक बकाया रसीद सेहो रहि सकैत अछि।

माधवी देवी पानि बाँटैत ओहि मजदूर लग पहुँचलिह। 'दुपहरिया भोजनक बाद जाइहें,' ओ कहलीह। 'खाली पेट धूपमे नहि ठाढ़ रहिहें।' मजदूर हुनका धन्यवाद कहलक। कार्यक्रमक आयोजनमे एहन छोट सहायता लेल कोनो घोषणा नहि भेल, मुदा ओकर आवश्यकता वास्तविक छल।

कार्यक्रमक भोजनक पाँतिमे माधवी देवी अन्तिम धरि ठाढ़ रहलीह। अधिकांश अतिथि भोजन कऽ चलि गेलाक बाद हुनका खएबाक फुर्सत भेटलनि। विद्यालयक परिचारक हुनका एकटा थारी देने छल। 'पहिने खा लिअ, काकी,' ओ कहलक। माधवी कनेक बसीह, मुदा भोजनक पहिल कौर मुँहमे दैतहि प्रधानाध्यापक हुनका बजौलनि। ओ थारी ढाँकि कऽ उठि गेलीह।

नैना दूरसँ देखलनि आ कुसुमसँ कहलीह, 'दू घड़ी हुनका भोजन कऽ लेबाक समय भेटबाक चाही।' कुसुम प्रधानाध्यापक लग जा कऽ कहलीह जे वितरणक शेष हिसाब ओ स्वयं देखतीह। माधवी फेर बैसलीह। ओ हँसैत कहलथिन, 'हमरा खाना खएबाक लेल

अलगसँ अनुमति चाही, से आइ बुझलहुँ।' नैनाकेँ हुनक हास्यक भीतरक थकान सुनाइ देलक।

दुपहरिया प्रधानाध्यापक छात्रसभक नामक सूची अभयकेँ देखौलनि। अभय सहायता पाओल छात्रक संख्या लिखलनि, निर्माणक प्रगति पुछलनि आ वीरेन्द्र रायसँ मजदूरक भुगतानक विषयमे बात करबाक अनुमति माँगलनि। वीरेन्द्र कहलक, 'कोनो बकाया होयत तँ कार्यालय देखत। आजुक समाचार बच्चासभक विषयमे लिखू।'

'विद्यालयक निर्माणो बच्चासभक विषय अछि,' अभय उत्तर देलथिन। 'भुगतानक विषयमे अहाँक लिखित पक्ष भेटत तँ ओहो प्रकाशित कएल जाएत।'

वीरेन्द्र नाराज नहि देखएबाक प्रयास केलक, मुदा बात आगाँ नहि बढ़ौलक। अभय अपन रजिस्टर बन्द कऽ प्रधानाध्यापक लग चलि गेलाह। नैना दूरसँ ई संवाद देखलनि। पत्रकारक काजमे केवल प्रश्न पुछब नहि, उत्तरक प्रतीक्षा करब आ उत्तर नहि भेटलासँ ई बातो लिखब शामिल अछि—एहि बातक अनुभव हुनका धीरे-धीरे होमय लागल।

कार्यक्रम समाप्त होइत-होइत साँझक छाया प्राङ्गणमे उतरि रहल छल। रतन गाड़ीमे बैसबासँ पहिने विद्यालयक पुरान पुस्तकालय देखय गेलाह। ओ विद्यार्थीसँ पूछलनि जे कोन पुस्तकक आवश्यकता अछि। एकटा लड़की कहलीह, 'गणितक प्रश्न-संग्रह पुरान अछि।' रतन प्रधानाध्यापककेँ सूची बनेबाक लेल कहि देलनि। एहन छोट बात हुनका विषयमे फैलल प्रतिष्ठाकेँ आरो पुष्ट करैत छल।

किरण नैनासँ सूची लेलथिन। 'कुल कतेक नाम?'

'एक सौ बत्तीस। मुदा चौदह नाममे मोबाइल नम्बर ठीकसँ नहि लिखल अछि। हम अलग चिह्नित केने छी।'

'काल्हि मिलान करि लेब,' किरण कहलीह। 'आजुक कार्यक्रम नीक रहल। मालिक प्रसन्न छथि।'

नैना पुछलथिन, 'रोजगारक परामर्श लेल आएल लोककेँ अगिला चरणक लिखित सूचना कहिया भेटत?'

‘कार्यालयमे निर्णय होएत। आजु केवल नाम लिखल गेल अछि। एहि बातपर सभकेँ स्पष्ट कहि देल गेल छल।’

नैना माथ हिलौलनि। कुसुम मेज समेटैत थाकल छलीह। माधवी देवी खाली थारी गनि रहल छलीह। प्रधानाध्यापक बचल पुस्तकक बण्डल कोठरीमे राखि रहल छलाह। मंचक कपड़ा उतरि रहल छल; दिन भरिक घोषणासभ धीरे-धीरे रोजक काजक बीच विलीन भऽ रहल छल।

अभय बाहर निकलैत नैनाकेँ फेर भेटलाह। ‘घर कोन बाट जएब?’

‘बस अड्डा दिस। अहाँ?’

‘समाचारपत्रक कार्यालयमे। आजुक समाचार लिखबाक अछि।’ अभय कनेक रुकि कहने छलाह, ‘रतनक सहायता वास्तविक अछि। विद्यालयकेँ लाभ भेटल। मुदा रोजगारक दावाक सङ्ग ठोस नियुक्तिक संख्या सेहो देखबाक चाही।’

नैना कहलीह, ‘हम ओतए नब छी। जे जानकारी अछि से कहि सकैत छी, अनुमान नहि।’

‘ठीक बात अछि,’ अभय कहलथिन। ‘हम सेहो केवल जे जाँचल अछि, ओहीकेँ लिखब।’

दूनू फाटक धरि संग चललाह। फाटकक बाहर सड़कपर रिक्शावाला अपन दिनक कमाइ गनि रहल छल। दूर बस अड्डापर बेरोजगार युवकसभक भीड़ छल, किछु लोक हाथमे ओही कार्यक्रमक पर्ची नेने छलाह। नैना देखलनि जे रतनक गाड़ी बत्ती जरा कऽ आगाँ निकलि गेल। पाछाँ धूलि उड़ेबाक बाद सड़क फेर सामान्य भऽ गेल।

घर घुरबाक बसमे बैसल नैना दिन भरिक घटना क्रमसँ सोचैत रहलीह। रतन लोकक सोझाँ विनम्र छलाह, वास्तविक सहायता सेहो देलनि। वीरेन्द्रक मजदूरीक विषयमे प्रश्न अनुत्तरित रहल। रोजगारक आशामे दर्ज नामसभक भविष्य एखन अनिश्चित छल। एहि तीनू बातकेँ अलग-अलग बुझब आवश्यक छल। नगरक एकटा प्रतिष्ठित व्यक्तिक पूरा चित्र

केवल मंचक भाषणसँ नहि बनैत; कार्यालयक मेज, मजदूरक घर आ अभ्यर्थीक प्रतीक्षा सेहो ओहि चित्रक हिस्सा होइत अछि।

साँझ नैना मायक समक्ष कार्यक्रमक बात कहलीह। सरस्वती देवी पुछलथिन, 'बच्चासभकेँ पुस्तक भेटल?'

'हँ, माय। किछुकेँ शुल्कक सहायता सेहो।'

'नीक बात अछि। गरीबक बच्चाक पढ़ाइमे ककरो मदद भेटय तँ बहुत राहत होइत छैक।'

नैना सहमत भेलीह। सरस्वती देवी फेर पुछलथिन, 'तोहर कार्यालयक वेतनक कागज ठीक अछि ने?'

'पत्र ठीक अछि। आब काज करैत बुझब,' नैना कहलीह। माय एहि उत्तरसँ कनेक निश्चिन्त भेलीह।

राति नैना पञ्जीकरणक एकटा नकल सम्हारि रखलनि, जे किरण हुनका अगिला दिनक मिलानक लेल देने छलीह। ऊपर कार्यक्रमक चमकदार नाम लिखल छल। पन्नाक भीतर एक सौ बत्तीस लोकक साधारण नाम छल। ओ बत्ती बुझाबय सँ पहिने एक बेर फेर सूची देखलनि। एतेक लोकक आशा लिखित भेल अछि; आब ओहि आशाक विषयमे की कहल जाएत आ वास्तवमे की कएल जाएत, सेहि बातक महत्त्व हुनका कार्यक्रमक भाषणसँ बेसी बुझाइत छलनि।

अध्याय १० : पहिल वेतन

मासक सातम दिन भोरे नैना कार्यालय जेबाक लेल तैयार भेलीह तँ सरस्वती देवी भोजनक डिबियाक संग एकटा छोट कागज सेहो हुनक झोरामे राखि देलथिन। कागजमे औषधि, चाउर, दालि, किरासन आ बिजलीक बकायाक हिसाब लिखल छल। ऊपर माय अपन हाथसँ लिखने छलीह—‘जे आवश्यक हो, पहिने से।’ नैना कागज पढ़ि मुसुकैलीह।

‘आइये वेतन भेटत, से पक्का कहाँ अछि, माय?’

‘पत्रमे सात तारीख धरि लिखल अछि ने? एक बेर आशा कऽ लेलासँ कोनो दाम नहि लगैत छैक।’

‘आशाक दाम लगैत अछि, जखन ओ पूरा नहि होइत अछि।’

सरस्वती देवी बेटीकेँ तकलीह। ‘तखन आजु आशा कम, हिसाब बेसी राखिहेँ।’

बाहर गलीमे दूध बेचयवला अपन साइकलक घण्टी बजबैत जा रहल छल। वर्षाक दिन बितलापर धूप फेर तीख भऽ गेल छल। छतक पातर दरारि सूखि कऽ उज्जर देखाइत छल, मुदा नैनाकेँ बूझल छलनि जे अगिला वर्षा होइतहि ओहि दरारिसँ पानि टपकत। पिता जीवित छलाह तँ छत सुधरेबाक काज हुनकेँ ध्यानमे रहैत छल। हुनक चलि गेलाक बाद घरक प्रत्येक बिगड़ल वस्तु एकटा नब हिसाब बनि गेल छल।

चन्दन आँगनक कोनमे मोटरसाइकिलक चेन साफ कऽ रहल छल। पिछला मासमे ओ मनोजक गोदाममे कतेको खेपक हिसाब रखने छल, मुदा मजदूरी पूरा समयपर नहि भेटल छलैक। नैना ओकरा पुछलथिन, ‘आइ फेर गोदाम?’

‘दिउसा। भोरे पुस्तकालय जाएब। सविता कहलक जे परीक्षाक नब तिथिक सम्बन्धमे ज्ञापनक उत्तर आएल अछि।’

‘नब तिथि देलनि?’

‘तिथि नहि। केवल लिखने छथि जे जाँच चलि रहल अछि। जाँच कखन पूरा होएत, से नहि।’

‘एहिबीच पढ़ाइ नहि छोड़िहें,’ नैना कहलीह।

चन्दन हाथक कपड़ा नीचाँ राखलक। ‘दीदी, रोज ई कहब आसान अछि। पढ़बाक लेल मन सेहो चाही।’

नैनाकेँ ओकर स्वरक थकान सुनाइ देलकनि। ओ किछु क्षण रुकलीह। ‘मन नहि होइतो जे दिन दू पन्ना पढ़ैत छह, ओहो परिश्रम अछि। हम केवल एतबा कहैत छी जे गोदामक मालिक तोहर आगाँक बाट तय नहि करथि।’

चन्दन उत्तर नहि देलक। ओ चेनपर तेल देबय लगल। नैना घरसँ निकलैत अपन झोराक भीतर मायक हिसाबक पन्ना फेर सम्हारि रखलनि।

नई दिशा रोजगार केन्द्रमे सात तारीखक मतलब कर्मचारिसभ लेल अलग तरहक प्रतीक्षा छल। कुसुम काउन्टर खोलि रहल छलीह, मुदा नजरि बेर-बेर मोबाइलपर जा रहल छलनि। रामविलास पिछला सप्ताहक रसीद बान्हि रहल छल। नरेश मण्डल बही खोलि ओहि पन्नाक जोड़ मिला रहल छलाह, जाहिमे कार्यालयक वेतन आ बाहरी प्रशिक्षणक शुल्क अलग-अलग दर्ज छल।

‘अहाँक पहिल वेतन आइ अछि,’ कुसुम कहलीह। ‘हमर तँ तीन मासँ सात तारीख अपन मनमानी करैत अछि। कखनो छह, कखनो आठ, कखनो दस।’

‘पत्रमे सात तारीख धरि लिखल अछि,’ नैना कहलथिन।

‘हँ, कागजक तारीख ठीक अछि। आदमीक जरूरत ओकरा मानैत नहि अछि।’ कुसुम हँसबाक प्रयास कएलथिन, मुदा हुनक चेहरापर चिन्ता छल। बेटीक विद्यालयक शुल्कक पर्ची झोरासँ बाहर झाँकि रहल छल।

नैना अपन मेजपर बैसलीह। कार्यक्रमक एक सय बत्तीस नाममे सँ छब्बीस गोटेक सम्पर्क विवरण एखन धरि अपूर्ण छल। ओहि सभक मिलान करैत-करैत हुनका सोझाँ

एकटा पुरान अभ्यर्थी आबि ठाढ़ भेल। नाम विनोद कुमार। पिछला मास सेहो ओ नियुक्तिक स्थिति पुछय आएल छल।

‘दिदी, पहिने कहल गेल छल जे तेसर सप्ताहमे फोन आएत,’ विनोद कहलक। ‘आब मास बितल अछि। घरमे बाबूजी कहैत छथि जे कम्पनीक नाम बदलि गेल तँ जमा टका घुरा लिअ।’

नैना रजिस्टर देखलनि। ‘अहाँक आवेदन एखन प्रतीक्षामे दर्ज अछि। कम्पनीसँ नियुक्तिक पुष्टि हमरा लग नहि अछि।’

‘तँ हम की करू?’

‘अहाँ आवेदनक रसीदक नकल लऽ प्रबन्धिकासँ लिखित उत्तर माँगू। हम आवेदनक तारीख आ वर्तमान स्थिति स्पष्ट लिखि देब।’

विनोद निराश छल, मुदा कनेक सम्हरलक। ‘कमसँ कम लिखित बात भेटय। प्रत्येक बेर मुँहसँ अलग उत्तर सुनि घर घुरब कठिन होइत अछि।’

ओ चलि गेल तँ कुसुम धीरे कहलीह, ‘अहाँ सभकेँ कागज दैत छी, फेर ई लोक बारम्बार ओकरा लऽ कऽ अबैत अछि।’

‘जे लिखल अछि ताहिसँ भागब उचित नहि,’ नैना उत्तर देलथिन।

किरण अपन कोठरीसँ बाहर अएलीह। हुनक हाथमे बैंकसँ आएल वेतनक सूची छल। ‘सभ कर्मचारी अपन खाता जाँचि लिअ। भुगतानक आदेश गेल अछि। पहिल मासमे नैनाक पूरा सात हजार छह सय अछि।’

नैना मोबाइल निकालि बैंकक सन्देश देखलनि। जमा राशिक सूचना आबि चुकल छल। सात हजार छह सय टका। न कोनो पैघ रकम, न जीवन बदलि देनिहार चमत्कार। ई टका हुनक अपन छल। तैयो एतेक दिनक परिश्रम पहिल बेर एकटा निश्चित अङ्कक रूपमे हुनक अपन खातामे छल।

ओ किरणसँ वेतन-पर्ची मँगलनि। किरण कनेक हँसलीह। ‘अहाँ बिनु कागजक एक डेग नहि चलैत छी।’

‘घरमे हिसाब राखबाक अछि। बादमे किछु असङ्गति भेल तँ दूनू दिस स्पष्ट रहत।’

‘ठीक अछि। रामविलाससँ हस्ताक्षरित प्रति लऽ लिअ।’

कुसुम सेहो मोबाइल देखलथिन। ‘हमरो आबि गेल!’ ओ राहतक साँस लेलथिन। ‘आइ विद्यालयक शुल्क जमा करब। बेटीक नाम सूचीसँ नहि कटत।’

नैना देखलनि, एक्के वेतनक दिन दूटा घरमे दू तरहक चिन्ता कनेक कम भऽ रहल छल। ओ कुसुमकेँ बधाइ देलथिन। कार्यालयक बाहरे पाँतिमे ठाढ़ युवकसभ एही समय नोकरीक समाचारक प्रतीक्षा करैत छलाह। भीतरक कर्मचारी वेतन पएबाक प्रसन्नतामे छलीह, बाहरक लोक पहिल वेतनक दिनक कल्पना करैत।

दुपहरिया भोजनक समय नरेश अपन बही लऽ नैनाक मेज लग अएलाह। ‘पिछला कार्यक्रमक पञ्जीकरणक सूची अहाँ बहुत साफ बनौने छी,’ ओ कहलथिन। ‘मुदा एहि तीनटा नामक आगाँ भुगतानक पुष्टि कहाँसँ आएल, से बुझल नहि।’

‘हम भुगतानक पुष्टि कएने नहि छी,’ नैना कहलीह। ‘जतए मूल रसीद नहि छल, ओतए खाली छोड़ने छी।’

नरेश चश्माक ऊपरसँ कागज तकलनि। ‘नीक कएलहुँ। काल्हि प्रबन्धिकाक निर्देशपर दोसर सूची आएल अछि। ओहिमे तीनू नामक आगाँ राशि भरल अछि।’

‘तकर आधार?’

‘एखन पूछबाक अछि।’

ओतबा कहि नरेश बही सम्हारि लेलनि। नैना हुनका रोकि पुछलथिन, ‘जँ मूल रसीद भेटत तँ हम कम्प्यूटरक सूची मिलान कऽ देब?’

‘अवश्य। मुदा लिखल बातक स्रोत अपने लग मोन राखू। सभ कागज एक्के बात नहि कहैत अछि।’

नरेशक स्वरमे न धमकी छल, न अनुमान। ओ साधारण लेखापाल छलाह, जे अङ्कक अन्तर परखैत छलाह। नैना फेर अपन काजमे लागि गेलीह, मुदा ओहि तीनटा नामक बात हुनका मोन रहलनि।

दुपहरिया नैनाक मेज लग एकटा वृद्ध महिला पोता संग अएलीह। पोताक नाम राकेश छल। महिला अपन साड़ीक कोरसँ कागजक तह खोललथिन। 'बाबूजीक पेंशनमे सँ ई टका देने रही,' ओ कहलीह। 'लड़का गोदाममे पहरेदारक काज करत, से कहने रहथि। आब तीन मासस‍ँ कहैत छथि जे जगह नहि खाली अछि।'

राकेश बीचमे बजल, 'दादी, ककरो सामने ई बात कहबाक आवश्यकता नहि।'

'किएक नहि?' वृद्धा पुछलथिन। 'जखन टका देलिऐ, तखन सभकेँ पता छल। आब पूछब तँ लाज किएक?'

नैना रसीद देखलनि। आवेदनक तिथि तीन मास पुरान छल। संस्था राकेशक नाम प्रतीक्षासूचीमे रखने छल। 'हम अहाँकेँ नोकरी पक्की भेल कहि नहि सकैत छी,' नैना स्पष्ट केलथिन। 'मुदा अहाँक लिखित आवेदन प्रबन्धिकाकेँ पहुँचा सकैत छी। रसीदक मूल प्रति अपने लग राखू।'

वृद्धा रसीद समेटैत कहलीह, 'जँ पैसा नहि घुरत तँ सेहो लिखिकऽ दिअ। हम घरमे झूठ आशा नहि बँटायब।'

ओहि वाक्यसँ नैनाकेँ झटका लगलनि। ओ पन्नापर प्रार्थना-पत्रक प्राप्तिक तिथि लिखि अपन हस्ताक्षरसँ स्वीकार करौलनि। वृद्धा उठैत-उठैत कहलथिन, 'बेटी, अहाँ नई छी, से बुझाइत अछि। पुरान लोक हमरा पुछिते अपन घड़ी देखैत छथि।'

नैना हुनका सीढ़ी धरि देखैत रहलीह। वृद्धाक बात सत्य छल कि नहि, से ओ नहि जनैत छलीह; मुदा कार्यालयमे समयक भेद स्पष्ट छल। जे टका जमा करैत छथि, हुनका अनेक बेर आबय पड़ैत छन्हि। जे टका लैत छथि, हुनका अपन कुर्सीसँ उठबाक आवश्यकता कम पड़ैत छन्हि।

कार्यालयसँ निकलैत समय नैनाकेँ अभयक सन्देश भेटल—‘आइ समाचारक काज जल्दी समाप्त भऽ गेल। बस अड्डाक पुस्तकक दोकान लग भेंट भऽ सकत?’ ओ पहिने अपन घड़ी देखलनि, फेर उत्तर देलथिन—‘पन्द्रह मिनट। घर समयपर पहुँचबाक अछि।’

अभय पुस्तकक दोकानक छज्जी तर ठाढ़ छलाह। हाथमे दूटा समाचारपत्र आ पुरान झोरा। नैनाकेँ देखितहि पुछलथिन, ‘आजुक दिन केहन रहल?’

‘पहिल वेतन भेटल,’ नैना कहलीह।

‘तखन बधाइ। एहि शहरमे ई समाचार पहिल पृष्ठपर छपबाक योग्य अछि।’

नैना हँसि पड़लीह। ‘पहिल पृष्ठपर एतेक लोकक बेरोजगारी अछि। हमर सात हजार छह सयक लेल जगह नहि छोड़ू।’

‘ठीक। मुदा अहाँक लेल ई दिन विशेष अछि। अपन कमाइक पहिल खर्च की सोचने छी?’

‘मायक औषधि, घरक राशन, बिजलीक बिल। तकर बाद जँ बाँचत तँ छतक मरम्मति लेल राखब।’

अभय कने नीरव भेलाह। ‘अपन लेल किछु नहि?’

‘अपन लेल घरक आवश्यकतासँ अलग कोन बस्तु अछि, से एखन सोचेबाक अछि।’

‘एकटा पुस्तक?’ अभय पुछलथिन।

नैना दोकान दिस तकलीह। नब उपन्यासक ढेरीमे एकटा पुरान मैथिली कविताक पुस्तक राखल छल। ओ पुस्तक हाथमे लऽ पन्ना पलटलनि। मूल्य साठि टका छल। फेर राखि देलनि। ‘आइ नहि। पहिने घरक सूची।’

अभय पुस्तक कीनि देबाक आग्रह नहि केलनि। ओ केवल कहलथिन, ‘जखन मन हो, अपन कमाइक किछु हिस्सा अपन खुसीपर सेहो खर्च करब। ई बात कहबाक अधिकार हमरा नहि, मुदा दोस्तीमे सुझाव देल जा सकैत अछि।’

‘अधिकारक बात एतेक जल्दी किएक करैत छी?’ नैना मुसुकैलीह।

‘किएक तँ सलाह देब आ जीवनक निर्णय करब अलग बात अछि।’

दूनूक बीच कनेक नीरवता रहल। बस अड्डाक सोझाँ एकटा रिक्शावाला अपन बच्चाकेँ बगलमे बैसा कऽ चना खुआ रहल छल। अभय विद्यालयक कार्यक्रमपर प्रकाशित समाचार देखौलथिन। रतनक पुस्तक-सहायताक तथ्य छपल छल; संगहि निर्माणक मजदूरीक बकायापर ठीकेदारक उत्तर प्रतीक्षित होयबाक उल्लेख छल। नैना शीर्षक पढ़लनि।

‘वीरेन्द्र राय एखन धरि उत्तर नहि देलनि?’

‘लिखित उत्तर नहि। कहैत छथि जे हिसाब जाँच होइत अछि। जे बातक प्रमाण अछि, से लिखने छी। जकर प्रमाण नहि, तकरा प्रश्नक रूपमे छोड़ने छी।’

नैना कहलथिन, ‘हमर कार्यालयमे सेहो बहुत प्रश्न अछि।’

अभय हुनका दिस तकलनि। ‘अहाँ ओकर जवाब देबाक जिम्मेवारी अपने माथ नहि लिअ। कर्मचारी छी। जे कागज सही अछि, ओकरा सही लिखू; जे नहि बुझाइत अछि, तकरा नहि बुझल कहू।’

‘हम एही प्रयासमे छी।’

बस आबि रहल छल। अभय रास्तासँ हटि कऽ हुनका चढ़बाक ठाम देलथिन। ‘घर पहुँचि मायक चेहरा देखब। ओ आइक दिनक समाचारपत्रसँ बेसी महत्त्वपूर्ण होयत,’ ओ हँसैत कहलनि।

नैना बसमे चढ़ि गेलीह। खिड़कीसँ अभय हाथ हिलौलनि। बसक भीड़मे ठाढ़ नैना एक बेर फेर मोबाइलक जमा राशि देखलनि। एतेक सामान्य अङ्क आइ हुनका असाधारण बुझाइत छल।

बससँ उतरि नैना औषधिक दोकान दिस बढ़लीह। दोकानक बाहरे माधवी देवी एकटा छोट थारीमे तेल आ मसालाक पुर्जी नेने ठाढ़ छलीह। हुनका देखि नैना प्रणाम केलनि।

‘काकी, घरमे सभ कुशल अछि?’

‘कुशल कहि सकैत छी। आइ तीन घरक काजक मजदूरी भेटल। तेल आ दालि किनब,’ माधवी उत्तर देलथिन।

‘बच्चासभक पढ़ाइ?’

‘बड़की लड़की नवम कक्षामे पहुँचि गेलीह। पहिने शराबबन्दी भेल छल तँ हुनक बाबूजी कतेको मास नशा छोड़ने छलाह। ओहि समय पहिल बेर ओकरा लेल नब पुस्तक किनने रही। राति घरमे झगड़ा नहि होइत छल। पतिको सुख रहैत छलनि जे बचल टकामे घरमे किछु राखि सकैत छथि।’

नैना हुनक मुँह दिस तकलीह। ‘आ आब?’

‘आब कखनो-कखनो फेर नशा कऽ अबैत छथि। पहिनेवला जकाँ रोज नहि, मुदा जखन अबैत छथि तँ घरक बचत उजरि जाइत अछि। कहाँसँ पीबैत छथि, हमरा नहि बुझल। बड़की बेटी एक दिन पुछलक, जँ दारू बन्द अछि तँ बाबूजी कखन पीबि कऽ अबैत छथि?’ माधवीक स्वर दुखसँ मन्द पड़ि गेल। ‘हम ओकरा कोन उत्तर देतिऐ?’

नैना कहलीह, ‘अहाँ पड़ोसक महिलासभसँ एही विषयमे बात कऽ सकैत छी। एक्लै सभ बोझ उठेबाक आवश्यकता नहि।’

‘बात होइत अछि। सभ घर एक्के नहि। किछु ठाम पियब सचमुच छुटि गेल। मुदा जकर घरमे फेर आरम्भ भेल, ओहि महिलाक दुःख कम नहि।’ माधवी सामान समेटलथिन। ‘तोहर नोकरी भेल अछि, से सुनि नीक लगल। पहिल वेतनमे अपन मायक लेल किछु अवश्य कीनिहें।’

नैना झोरामे राखल मायक हिसाबक पन्ना छूबलनि। ‘आइ ओही कामसँ जा रहल छी।’

माधवी मुसुकैलीह। ‘तखन जाइहें। पहिल कमाइकेँ घर पहुँचबामे देर नहि होएबाक चाही।’

घर पहुँचि ओ पहिने बैंकसँ चारि हजार टका निकालबाक बात मायक समक्ष कहलथिन। सरस्वती देवी अपन लिखल सूची खोललथिन। औषधि, पिछला महीनाक बिजलीक बिल, चाउर-दालि, गैसक सिलिन्डरक लेल बचत। नैना एक-एक रकम अलग

केलनि। मायक औषधिक उधार चन्दन दुपहरिये चुकौने छल—गोदामसँ भेटल किछु मजदूरीसँ। ई सुनि नैना ओकरा पुछलथिन, 'तोरा टका भेटल?'

'आधा हिसाब। मनोज कहलनि बाकी अगिला खेपक संग। सात सय औषधिवालाकेँ दऽ आएल छी।'

'तँ अपन ऋण?'

'ब्याज एखनो अछि।' चन्दन नजरि नीचाँ केलक। 'हम सोचने छलहुँ जे दीदीक वेतन भेटत तँ घरक खर्च कनेक सम्हरि जाएत। मुदा अपन ऋण तोहर माथपर नहि रखब।'

'ऋण तोहर अछि, मुदा घर तोहरो अछि,' नैना कहलीह। 'एहि बातमे लाज नहि, परन्तु अनावश्यक ऋण फेर नहि लेब।'

सरस्वती देवी दूनूकेँ रोकि देलथिन। 'आइ झगड़ा नहि। जे टका अछि, पहिने एहि घरमे चैनसँ भोजन होउ।'

ओहि साँझ चूल्हिपर दालिक संग लौकीक तरकारी बनल। नैना बजारसँ छोट डिबियामे मिठाइ कीनि अनने छलीह। सरस्वती देवी पहिल टुकड़ा बेटीकेँ खुआओलथिन, दोसर चन्दनकेँ देलथिन। 'आब घरमे दू गोटे कमेबाक काज शुरू केने अछि,' ओ कहलीह।

'दू गोटे कमाइत नहि छी, माय,' चन्दन हँसि कऽ कहलक। 'हमरा तँ खेप गनैत-गनैत आधा भुगतान भेटैत अछि।'

'तखन गणतीक काज ईमानदारीसँ कर। काजक पूरा दाम सेहो माँग,' माय उत्तर देलथिन।

राति नैना अपन कॉपीमे मासक बजट लिखलनि। औषधि आ भोजनक बाद जे टका बाँचि रहल छल, तकर एक हिस्सा छतक मरम्मतिक लेल अलग केलनि। ओ पहिने पढ़बाक लेल पुस्तक कीनबाक विचार लिखि फेर नहि काटलनि; केवल ओकर आगाँ 'अगिला मास' लिखि देलनि।

दुआरिपर पूनमक सन्देश आएल—‘यात्राक कागज आबि गेल अछि। पूरा पता एखन दोसर पन्नामे लिखल अछि। काल्हि देखाएब।’ नैना तुरन्त उत्तर देलथिन—‘पूरा कागज लऽ आउ। कार्यालयक नकलसँ मिलान कऽ लेब।’

एखन धरि पूनम बाहर नहि गेल छलीह। हुनक आँखिमे नोकरीक आशा छल, आ नैनाक मनमे ओहि आशाक सुरक्षाक चिन्ता। पहिल वेतनक दिन समाप्त होइत-होइत नैना बुझि गेलीह जे अपन घरक हिसाब सुधारब सम्भव अछि, मुदा दोसराक जीवनसँ जुड़ल प्रश्न केवल अपन मेहनतसँ नहि सुलझैत अछि। ओ मोबाइल राखि बत्ती बुतौलनि। घरक भीतर सभ सुतबाक तैयारी कऽ रहल छल। बाहर गलीमे कोनो गाड़ी धीरेसँ निकलि गेल, आ राति सामान्य भऽ गेल।

अध्याय ११ : सन्दिग्ध माल

गोदामक फाटकपर पहुँचैत चन्दनकेँ पहिने जे आदमी देखाइ देलक, ओ ट्रकक चालक नहि, रखवाला छल। ओकर नाम भोलाराम छल। माथपर गमछा बान्हने ओ लोहेक कुरसीपर बैसल पान चबा रहल छल। चन्दन अपन मोटरसाइकिल देवालक कात लगौलक तँ भोलाराम कहलक, 'आइ देर भेलह? मनोज बाबू सबेरसँ तोरा ताकैत छथि।'

'हम पुस्तकालय गेल रही। दिनक खेपक समय तँ काल्हि तीन बजे कहल गेल छल,' चन्दन उत्तर देलक।

'आजु माल बढ़ि गेल छैक। समय सभ बदलि जाइत छैक।' भोलाराम भीतरक तरफ देखौलक। 'पहिने हुनकासँ भेंट कर।'

गोदामक बाहर दूटा ट्रक ठाढ़ छल। एकटामे सीमेण्टक बोरा छल, दोसरमे टिनक पेटी आ गत्ताक डिब्बा। भीतरक कोठरीमे पङ्खाक नीचाँ मनोज साह फोनपर बजि रहल छल। 'दस्तखत आजु नहि भेटत तँ माल रुकत? हम अपना तरफसँ कहने छी, कागज साँझ धरि पहुँचा दिअ।' चन्दनकेँ देखि ओ फोन राखलक।

'पढ़ाइ चलि रहल अछि?'

'चलि रहल अछि। परीक्षा फेर कहिया होयत, से सूचना नहि।'

'परीक्षा लेल जिनगी नहि रोकिहेँ। आइ दूटा खेपक हिसाब बनाबय पड़त।' मनोज मेजपर कागज पसारलक। 'पहिल खेप विद्यालयक भवनक लेल सीमेण्ट अछि। दोसरा मे घरेलू सामान। दोसर गाड़ी रातिमे निकलत। चाहबह तँ ओकरो गिनती कऽ लेब।'

'रातिक कतेक बजे?'

'अँधार भेलाक बाद। समय गाड़ीक हिसाबसँ तय होयत। रातिक मजदूरी अलग भेटत।'

चन्दन पहिने सीमेण्टक बोरा गनबाक काज लेल चलि गेल। बोरा सभपर कम्पनीक नाम, मात्रा आ आपूर्तिक क्रमाङ्क साफ लिखल छल। चालक रसीदक प्रति देलक। चन्दन अपन कॉपीमे संख्या लिखलक आ भोलारामसँ गिनती मिलौलक। जहिया ओ काज शुरू केने छल, तखने मनमे तय केने छल जे कागज बिना कोनो मालक जिम्मेवारी नहि लेत। आइ पहिल खेपमे ओहि नियमक पालन सहज छल।

दुपहरिया एकटा मजदूर चाउर आ आलूक भुजिया लऽ गोदामक ओटमे बैसल। नाम शम्भु। ओकरा दू दिनसँ मजदूरी नहि भेटल छलैक। ओ चन्दनसँ पुछलक, 'अहाँकेँ हिसाबक टका समयपर भेटैत अछि?'

'कखनो पूरा, कखनो आधा। जतेक भेटैत अछि, लिखि राखैत छी।'

'ठीक करैत छी। हम लिखब नहि जनैत छलहुँ। आब बेटासँ लिखबबैत छी। नहि तँ मालिक कहैत अछि जे एतेक दिन काम केलहि कहाँ?'

चन्दन शम्भुक कॉपी देखलक। कखनो दिनक संख्या लिखल छल, कखनो आधा दिन। ओ काजक बदला देल रकमक अलग पाँति बनेबाक सलाह देलक। शम्भु कहल, 'पढ़ल लोकक संग काज करबाक एकटा लाभ अछि। कमसँ कम हिसाबक बात बुझैत छथि।'

चन्दनकेँ ई प्रशंसा सुखद नहि लागल। जे पढ़ाइ लेल ओ घरक टका खर्च केने छल, ओकर परिणाम एखन बोरा गनबाक मेजपर सिमटल बुझाइत छल। तखन ओकरा शम्भुक अवस्था देखलाक बाद बुझाइत छल जे एक दिनक मजदूरीक हिसाबो ककरो लेल बड़का बात होइत अछि।

दुपहरिया मनोज ओकरा चाय पीयबाक लेल बजौलक। मेजपर मोट फाइल खोलल छल। 'अहाँक पछिला पाँच खेपक हिसाब मिलि गेल,' ओ कहलक। 'किछु रकम आजु लऽ लिअ, बाकी अगिला भुगतानमे।'

चन्दन गनलक। तीन खेपक बराबर टका छल। 'दू खेपक बाकी एखन?'

'गाड़ी मालिकसँ भुगतान एखन नहि भेल। तोहर टका डूबत नहि।'

'मासक अन्तमे हमरा ब्याज देबाक अछि। समयपर भेटत तँ सुविधा रहत।'

मनोज पाछू कुर्सीपर टेक देलक। 'तोरा पढ़ाइक कारणें ऋण भेल, से विक्रम कहने छल। चाहबह तँ रातिक काजसँ जल्दी उतारि सकैत छह। ओतए मेहनत बेसी नहि, जिम्मेवारी बेसी अछि।'

'कोन जिम्मेवारी?'

'डिब्बाक संख्या मिलायब, गाड़ी चलैत समय साथ देब, आवश्यकता भेल तँ माल उतरबाक पुष्टि करब।'

'मालक कागज रहत?'

'रहत। मुदा प्रत्येक बातमे एतेक प्रश्न करबह तँ मालिकसभ नाराज होएत।'

चन्दन शान्त स्वरमे कहलक, 'जे माल हमरा देखबाक अछि, ओकर विषयमे पूछब आवश्यक अछि।'

मनोज ओकरा किछु क्षण तकलक। फेर हँसि देलक। 'आब बुझलहुँ जे पढ़ल लड़का छी। ठीक अछि। साँझे देखिहें।'

गोदामक दोसर भागमे प्लास्टिकक मोट परदा लागल छल। ओहिपार टिनक पेटी आ गत्ताक डिब्बा राखल छल। किछुपर 'घरेलू उपयोग' लिखल छल, किछुपर केवल अङ्क। एकटा पेटीक कोना फाटल छल। भितरसँ शीशाक बोतल एक-दोसरासँ टकराएबाक मन्द आवाज आएल। चन्दन हाथ बढ़ाकऽ देखबाक सोचलक, मुदा रखवाला ओकरा रोकि देलक।

'ओहि मालकेँ हाथ नहि लगाबह। मनोज बाबूक अलग आदमी गनत।'

'तँ हमरा किएक बजौलनि?'

'काज बदलैत रहैत छैक। हमरा कोन माल केकर, से सभ नहि बुझल अछि।'

भोलारामक एहि उत्तरक बाद चन्दन एक कात ठाढ़ भऽ गेल। बाहरी बोरा सभक समान व्यवस्थित कागज एतए देखाइत नहि छल। न तौल स्पष्ट, न पूरा पता। ओ सोचलक जे

थोक मालमे कखनो एहन अव्यवस्था रहि सकैत अछि, मुदा बिना जानकारीक संख्या प्रमाणित करब उचित नहि।

साँझ भेल तँ गाड़ी चालक नसीम पहुँचल। ओ मनोजसँ किछु कागज लऽ चन्दन लग आएल। 'तोहर नाम चन्दन ने? ई पेटीसभ गनि लिअ।'

चन्दन कागज देखलक। कागजपर चालीस पेटीक उल्लेख छल, मुदा गोदामक भीतर पचास पेटी राखल छल। ओ कहलक, 'दस पेटीक अन्तर अछि। दोसर रसीद अछि?'

नसीम भृकुटि चढ़ौलक। 'हमरा जे कागज देल गेल, से ईएह अछि। अहाँ मालिककेँ पुछू।'

मनोज फोनपर छल। चन्दन प्रतीक्षा केलक। फोन समाप्त भेल तँ अन्तर बतौलक। मनोज एकटा दोसर पन्ना निकालि कहलक, 'बाकी दस पेटी दोसर आपूर्तिक अछि। एक्के गाड़ीमे जाएत।'

'दूनू आपूर्तिक अलग पर्ची चाही। नहि तँ हमर गिनती चालीस लिखल रहत।'

मनोजक स्वर कठोर भऽ गेल। 'ई काज हम वर्षोंसँ करैत छी। तोरा तीन सप्ताह भेल अछि। हिसाब सीख, मालिक बनबाक प्रयास नहि कर।'

चन्दनक चेहरा गरम भऽ गेल, मुदा ओ उत्तर नहि देलक। ओ कॉपीक पन्नापर स्पष्ट लिखलक—'चालीस पेटीक कागज भेटल; दस पेटीक अलग विवरण नहि।' ओ पन्ना अपन लग राखि लेल।

ओहि समय गोदामक बाहर एकटा जीप रुकल। जीपसँ सादा कपड़ा पहिरने दू व्यक्ति उतरल। एक गोटेकेँ मनोज आदरसँ भीतर लऽ गेल। भोलाराम चन्दन लग फुसफुसाइत कहलक, 'भानु बाबू आएल छथि। एतए सभ हुनका जनैत अछि।'

'कोन भानु बाबू?'

'पुलिसमे छथि। बाकी पुछब नहि।'

चन्दन जीप दिस तकलक। गाड़ीपर सरकारी चिह्न नहि छल। भीतर जे बातचीत भऽ रहल छल, ओकर शब्द स्पष्ट सुनाइत नहि छल। किछु देर बाद मनोजक हँसी सुनाइ देलक। भानु प्रताप नाम चन्दन पहिने स्थानीय चौकमे सुनने छल, मुदा ओ अपन आँखिसँ देखल व्यक्ति कैं कोनो अपराधसँ जोड़बाक कारण नहि बुझैत छल। केवल एतेक देखैत छल जे मनोज ओहि अतिथिक सोझाँ अपन सामान्य रूखापना छोड़ि अत्यन्त विनम्र भऽ गेल छल।

नसीम गाड़ीक कागज समेटि बाहर निकलल। चन्दन पुछलक, 'जतए माल पहुँचेबाक अछि, ओहि ठामक नाम?'

'रसीदमे जे अछि, से पढ़ि लिअ,' नसीम कहलक।

'रसीदमे केवल बजारक नाम अछि। दोकान वा गोदामक पूरा पता नहि।'

नसीम कनेक चुप रहल। 'हमर काज गाड़ी चलाएब अछि। रास्तामे फोनपर ठाम बताओल जाएत। हम नहि जनैत जे ई सब केना तय होइत अछि।'

'तँ अहाँकैं सेहो पूरा जानकारी नहि?'

'पूरा जानकारी सबकैं कहाँ भेटैत अछि?' नसीमक स्वरमे थकान छल। 'दू महिनाक किस्त बाकी अछि। एकटा गाड़ी बन्द भेल तँ घरक कमाइ बन्द। मुदा जे बात गलत लागैत अछि तकरा मनमे दबाएब कठिन अछि।'

चन्दन पहिल बेर बुझलक जे ओ एतए एकमात्र विवश आदमी नहि अछि। चालक, मजदूर, रखवाला—सभ अपन-अपन ऋण आ परिवारक बोझ लऽ काज करैत छथि। एहि विवशताक बीच निर्णयक जिम्मेवारी समाप्त नहि होइत अछि, मुदा स्पष्ट निर्णय लेब सेहो सहज नहि रहैत अछि।

भानु प्रताप चलि गेलाक बाद मनोज बाहर अएल। 'ई दस पेटीक अलग पत्र राति धरि आबि जाएत। अहाँ गाड़ीपर चढ़ू। बाकी कागज कल्हि देब।'

'कागज बिना हम प्राप्तिक पुष्टि नहि करब,' चन्दन कहलक।

'पुष्टि नहि करिहें, केवल साथ जइहें। रातिक एक हजार दू सय भेटत।'

चन्दन चौंकि गेल। दिनक चारि सय पचासक बदला एक हजार दू सय। ओकर ऋणक हिसाब आँखिक आगाँ घूमि गेल। मायक औषधि, मोटरसाइकिलक मरम्मति, उधारदाताक फोन। ओ पुछलक, 'एतेक अधिक किएक?'

मनोजक मुँह फेर कठोर भेल। 'रातिक समय, बाहरक बाट, जिम्मेवारी। तोरा नहि चाही तँ दोसर लोक अछि।'

चन्दन तुरन्त हँ नहि कहलक। 'हमर काज दिनक रसीद मिलाएब छल। रातिक कामक बात घरमे नहि कहने छी।'

'घरमे पूछिकऽ आबिहें। हमरा लोककेँ आजुक भीतर निर्णय चाही।'

ओ अपन मोटरसाइकिलपर बैसल, मुदा तुरन्त गाड़ी नहि चलौलक। मनोजक प्रस्तावक रकम ओकरा आकर्षित करैत छल। ओ सोचलक जे केवल संग जाएबामे की हानि होयत। तखन ओहि फाटल पेटीमे शीशाक आवाज, अपूर्ण कागज आ अतिथि पुलिसकर्मीक आगमन मोन पड़ल। एक-एक बात अलग देखल जाए तँ साधारण कारण भेटि सकैत अछि; सबकेँ जोड़ल जाए तँ प्रश्न उठैत अछि।

घर घुरैत काल चौराहापर एकटा छोट भीड़ देखलक। एगो रिक्शावालाक पत्नी ओकरा हाथ पकड़ि घर लऽ जा रहल छलीह। आदमी लड़खड़ा रहल छल। एकटा दोकानदार कहलक, 'पहिने शराबबन्दी भेल तँ ई गलीक लोक सुधरि गेल छल। आब फेर कता-कतासँ दारू अबैत अछि, के जनैत अछि।'

दोसर आदमी प्रत्युत्तर देलक, 'सभपर एक्के बात नहि लागू कर। किछु घरमे एखनो लत छुटल अछि।'

चन्दन कने दूर रुकल। ओकरा माधवी काकीक घर मोन पड़ल। शराबबन्दीक पहिल वर्ष ओहि घरमे रातिक झगड़ा कम भेल छल, ओहि टकासँ बच्चाक किताब कीनल गेल छल। आब फेर कखनो-कखनो हुनक पतिक नशामे घर घुरबाक खबरि सुनबा भेटैत छल। ककरो नीतिक सफलताक अथवा असफलताक पूरा हिसाब एकटा गलीसँ नहि बनैत अछि; मुदा प्रत्येक झगड़ाक असर वास्तविक लोकपर पड़ैत अछि।

घर पहुँचि चन्दन मोटरसाइकिल आँगनमे रोकलक। सरस्वती देवी चूल्हिपर भात उतारि रहल छलीह। नैना अपन वेतनक हिसाब लिखि रहल छलीह। चन्दन भोजनक पहिने हाथ-मुँह धोइत पुछलक, 'माय, रातिमे बाहरक काज करब तँ अहाँकेँ चिन्ता होयत?'

सरस्वती देवी तवेपर ढकना राखि ओकरा तकलीह। 'काज ककर, कोन ठाम?'

'गोदामक माल बाहर जाएत। संगहि जेबाक प्रस्ताव अछि।'

नैना कॉपी बन्द केलनि। 'जे रातिक काजक शर्त पत्रमे नहि छल, से आब किएक?'

'बेसी मजदूरी देत। एक हजार दू सय।'

'माल की अछि?'

चन्दनक उत्तर तुरन्त नहि निकलल। 'घरेलू सामान कहैत छथि। मुदा कागज अधूरा अछि। हम ओ बातपर हस्ताक्षर नहि केलहुँ।'

नैना स्पष्ट कहलीह, 'तँ बिना पूरा कागजक नहि जइहें। टकाक आवश्यकता हमरो बुझल अछि। मुदा जे मालक जानकारी नहि, ओकर संग नाम जुड़ल तँ पाछाँ स्वयंकेँ निर्दोष कहब कठिन होयत।'

चन्दनकेँ ई बात कटु लगल। 'दीदी, अहाँ कार्यालयमे बैसि सात हजार छह सय पाबैत छी। हमरा दिन भरि धूरि खा कऽ चारि सय पचासो पूरा नहि भेटैत अछि। एखन अवसर भेटैत अछि तँ अहाँ रोकैत छी।'

'अहाँक मेहनतक अवमानना नहि कऽ रहल छी,' नैना कहलीह। 'हम केवल एतबा पुछैत छी जे एतेक टका काजक लेल दैत अछि कि चुप रहबाक लेल?'

प्रश्न सुनि चन्दन चुप भऽ गेल। सरस्वती देवी बीचमे कहलीह, 'जे निर्णय करब, सोचि करब। घरक जरूरत हमरा सभक अछि; जोखिमक भार एक गोटेक नहि।'

चन्दन भोजन बिना छुए अपन कोठरीमे चलि गेल। ओ कॉपी खोलि दिनक गिनती देखलक। सीमेण्टक रसीद साफ छल। दोसर गाड़ीक चालीस पेटी, आ दसक अनिश्चित

हिसाब। जे प्रश्न ओ गोदाममे पूछने छल, ओही प्रश्न घरमे ओकरा उत्तर देबय पड़ि रहल छल।

भोजनक बाद नैना भाईक कोठरीक दुआरिपर ठाढ़ भेलीह। 'चन्दन, हम भीतर आबि सकैत छी?'

'आउ।'

मेजपर प्रतियोगिता परीक्षाक दूटा पुस्तक खुलल छल। बगलमे गोदामक हिसाबवाली कॉपी। नैना कुरसी नहि खींचलीह; पलङक एक कात बैसि गेलीह। 'अहिसँ पहिने तोरा जे बात कहली, ताहिसँ जँ खराब लगल हो तँ क्षमा करिहें। अपन मासक वेतन भेटल अछि, तैँ तोहर दिनक कमाइक कष्ट हमरा कम बुझाइत होयत, ई सोचि नहि कहने छलहुँ।'

चन्दन कनेक देर बाद बजल, 'हमरो राग बेसी भऽ गेल। मुदा दीदी, दिन भरि सोचैत छी जे हर बेर परीक्षा रद्द भेला पर हमर उमेर रुकि किएक नहि जाइत अछि? जकर पिता लग पैसा अछि ओ एकटा साल आरो पढ़ि लेत। हमरा पर ब्याज बढ़ैत अछि।'

'एहि कारणसँ तोरा कमायब जरूरी अछि। मुदा जे काम छोड़बाक विचार आजु करि सकैत छह, ओकरा काल्हि छोड़ब कठिन भऽ सकैत छैक।'

'हमरा सभ बातक डर देखाएल जाइत अछि। पढ़ाइमे असफल होएबाक डर, काजमे धोखा होएबाक डर, ऋण नहि चुकाएबाक डर। किछु करब किएक चाही?'

नैना ओकरा तकलीह। 'भयसँ नहि, बुझिकऽ काज कर। काल्हि जे सामानक कागज पूरा होयत, ओकर गिनती करिहें। जे नहि होयत, तकरा हाथ नहि लगाबह। एतबा निर्णय तोहर अपन अछि।'

चन्दन धीरे कहलक, 'विक्रमसँ फेर बात करब। ओ मनोजकेँ पहिनेसँ जनैत अछि। कखनो ओकरा कोनो खराब अनुभव भेल होयत तँ बताओत।'

'पुछिहें। मुदा केवल विक्रमक भरोसापर सेहो निर्णय नहि करिहें।'

नैना उठैत-उठैत देखलनि जे कॉपीक पहिल पन्नापर चन्दन कतेको मास पहिने लिखने छल—'एहि बेर परीक्षा उत्तीर्ण करबाक अछि।' ओ पन्ना मोड़ल नहि छल। ओकरा देखैत

नैनाकेँ बुझा गेलनि जे भाइ अपन लक्ष्य बिसरल नहि अछि; केवल लक्ष्य धरि पहुँचबाक बाटमे ओ थाकि रहल अछि।

राति आठ बजैत मनोजक फोन आएल। ‘की निर्णय?’

‘आइ नहि जाएब। पूरा कागज भेटला पर अगिला खेपमे दिनक काज कऽ सकैत छी।’

दोसर दिस क्षण भरि नीरवता रहल। फेर मनोज कहलक, ‘ठीक अछि। मुदा अवसर बारम्बार नहि भेटैत अछि।’

फोन कटि गेल। चन्दन मोबाइल टेबुलपर राखि देलक। निर्णय लेने ओ निश्चिन्त नहि भेल; बरु एहि बातक भय बढ़ि गेल जे मनोज आगाँ ओकरा काज देत कि नहि। ओ नब परीक्षाक पाठ्यक्रम निकाललक, एक पन्ना पढ़लक, फेर घड़ी देखलक। कोनो प्रश्नक उत्तर मोनमे नहि बसैत छल। ओकरा बारम्बार एक्के रकम मोन पड़ैत छल—एक हजार दू सय। ओकरा एखनो पूरा भरोसा नहि भेल छल।

राति सुतबासँ पहिने विक्रमक फोन आएल। ओ मोटरसाइकिलक मरम्मतिक दोकान बन्द कऽ रहल छल। चन्दन पुछलक, ‘मनोजक गोदामक रातिक काजक विषयमे तोरा किछु जानकारी अछि?’

विक्रम उत्तर देलक, ‘हम ओकरा सामान्य मालक ढुलाईक आदमी बुझैत रही। पहिने हमरा दिनक काज कहने छल। रातिक काज हम स्वयं नहि केने छी।’

‘कागज अधूरा रहैत अछि?’

‘जतए कागज अधूरा हो, ओतए अपन नाम नहि जोड़िहेँ। हम तोरा काजक पता देने छलहुँ, सभ मालक जिम्मेवारी नहि लेने छलहुँ।’

विक्रमक स्वरमे मित्रताक संग एकटा सावधानी छल। चन्दन बुझलक जे संगीसँ सलाह लेनाइ आ अपन निर्णयक भार ओकरा देनाइ अलग बात अछि। ओ फोन राखि एकटा छोट रेखा कॉपीमे खींचलक आ बकाया मजदूरी अलग लिखलक।

दोसर दिन भोरे भोलारामक फोन आएल। ‘काल्हिक राति जे गाड़ी गेल, ओकरा लग किछु हल्ला भेल छल। एखन गोदाममे मनोज बाबू बहुत रागमे छथि। अहाँ दिउसा आबिहें तँ पहिने फोन कऽ लेब।’

‘कइसन हल्ला?’ चन्दन पुछलक।

‘हमरा पूरा नहि बुझल। गाड़ीक कागजपर प्रश्न उठल छल। एतबा सुनलहुँ।’

चन्दन फोन राखि बहुत देर धरि अपन कॉपीक ओहि पन्नाकेँ तकैत रहल, जतए दस पेटीक अलग विवरण नहि भेटबाक बात लिखने छल। ओकर मनमे कनेक राहत छल जे ओ राति गाड़ीपर नहि गेल, संगहि ई डर सेहो जे अगिला बेर जरूरत ओतेक बढ़ि जाएत जे मना करबाक साहस नहि बाँचत।

अध्याय १२ : पूनमक अन्तिम सन्देश

पूनम दोसर दिन भोरे नैनाक घर पहुँचलिह तँ हुनक हाथमे फोल्डरक संग एकटा छोट बैग सेहो छल। यात्रा लेल सामान एखन पूरा नहि भेल छल, तैयो ओ बैग संग लऽ अएने छलीह। सरस्वती देवी आँगनमे धानक चाउर बीनि रहल छलीह। पूनम प्रणाम कएलथिन तँ ओ उठि पानि देलथिन।

‘बाहर जएबाक तिथि पक्का भऽ गेल?’

‘परसू सबेरे बस अछि, काकी,’ पूनम उत्तर देलथिन। ‘कागज नैनाकेँ देखेबाक अछि।’

नैना भीतरसँ बाहर अएलीह। पूनमक चेहरापर उत्साह छल, मुदा आँखिक नीचाँ राति कम सुतबाक थकान सेहो। ओ फोल्डर खोलि तीनटा पन्ना मेजपर पसारि देलथिन। पहिल पन्नामे प्रशिक्षण केन्द्रक नाम, दोसरमे आवासक सामान्य निर्देश, तेसरमे यात्राक सूचना छल। पहिने जे सम्पर्कक नाम देल गेल छल, आब ओकर बदला दोसर नाम लिखल छल।

‘ई सम्पर्क व्यक्ति बदलि गेल छथि?’ नैना पुछलथिन।

‘किरण मैडम कहलथिन जे पहिनेवला अधिकारी छुट्टीपर छथि। नव अधिकारी बस अड्डापर भेटतीह।’

‘महिला?’

‘हँ, कहैत छथि। नाम नीला देवी।’

नैना यात्राक पन्ना देखलनि। बस नवगढ़सँ दूरक औद्योगिक नगर सोनापुर जेबाक छल। ओतएसँ कम्पनीक गाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र लऽ जाएत। पन्नामे बसक प्रस्थान आ पहुँचबाक समय लिखल छल, मुदा प्रशिक्षण भवनक ठाम केवल औद्योगिक क्षेत्रक नाम आ भवनक एकटा संख्या छल। मोबाइल नम्बर लिखल छल, स्थिर दूरभाष नहि।

‘कम्पनीक मुख्य कार्यालयक पूरा पता नहि अछि,’ नैना कहलीह।

‘ई प्रशिक्षणक पता अछि। काज दोसर इकाइमे भेटत। कम्पनी जे पन्ना देलक, ओहीमे लिखल अछि।’

‘दूनू ठाम अलग होयत तँ कोन ठाम रहब, ई पूछनाइ आवश्यक अछि।’

पूनम कने अधीर भेलीह। ‘नैना, हम चारि सप्ताहसँ पुछि रहल छी। जतेक बेर पुछैत छी, नब उत्तर भेटैत अछि। मुदा एखन बसक टिकट आ समूहक नाम पक्का भऽ गेल अछि। बाबूजी कहैत छथि जे अवसर छोड़ब नहि।’

नैना हुनक स्वरक अधीरता बुझलीह। ई केवल जिद्द नहि छल। बारह हजार टका जमा भऽ चुकल छल, घरक लोक ऋण लेने छलाह, आ गाममे प्रत्येक दोसर आदमी पुछैत छल जे पूनमक नोकरी कहिया शुरू होयत। एखन नहि गेलापर केवल अवसर नहि, अपन निर्णयपर भरोसा सेहो टूटबाक डर छल।

‘हम अहाँकेँ नहि कहि रहल छी जे जाउ नहि,’ नैना धीरे कहलीह। ‘केवल एतबा चाहैत छी जे यात्रा मे जकर सङ्ग जएब, हुनक नाम, नम्बर आ ठेगाना घरक लोककेँ पता रहय।’

सरस्वती देवी चाउरक सुप्पी एक कात रखलथिन। ‘बेटी, पहिल बेर घरसँ दूर जएब। अपना कपड़ा, औषधि, पहचानपत्र आ किछु अलग टका राखिहेँ। अनजान ठाम अपना कागज बिना आवश्यकता ककरो हाथमे नहि दिहेँ।’

पूनम मुसुकैलीह। ‘अहाँ दुनू हमरा सभसँ बेसी कागजक बात बुझबैत छी।’

‘कागज तखनहि काज अबैत अछि जखन ओहि पर लिखल बात निभाओल जाए,’ माय उत्तर देलथिन।

नैना तीनू पन्नाक तस्वीर अपन मोबाइलमे रखि लेलनि। पूनमक पिता, माता आ बहिन रीनाक नम्बर सेहो एकटा कॉपीमे लिखलनि। ओ पुछलथिन, ‘रीना कोना अछि?’

‘विद्यालयक शुल्क जमा भेल अछि। मुदा हम चलि जाएब तँ घरक सिलाईक काज ओकरा सम्हारय पड़त। ओ कहैत अछि जे हम लौटब तँ दुनू मिलि मशीन कीनब।’

‘एखन मशीनक चिन्ता छोड़ि अपन सुरक्षाक बात सोचू,’ नैना कहलीह।

पूनमक आँखि कने भीजि गेल। ‘हम बाहर केवल टका कमएबाक लेल नहि जा रहल छी। घरमे सभ हमरा निर्णय करबाक योग्य मानय, ईहो चाहैत छी।’

नैना हुनका हाथ थामि लेलनि। ‘तँ अपन निर्णयक संग अपन प्रश्न पूछबाक अधिकार सेहो राखू।’

दुपहरिया नैना कार्यालय पहुँचलिह तँ किरण अपन कोठरीमे ककरोसँ फोनपर बात कऽ रहल छलीह। नैनाकेँ देखि ओ दरबज्जा आधा बन्द करि देलथिन। किछु देर बाद बाहर अएलीह। ‘पूनमक कागज देखलहुँ?’

‘देखलहुँ। प्रशिक्षण स्थल आ वास्तविक काजक ठाम अलग छैक। मुख्य कार्यालयक पूरा ठेगाना अधूरा अछि।’

किरण घड़ी देखलथिन। ‘ई नियुक्तिक पहिल चरण अछि। समूह पहुँचला पर पूरा जानकारी भेटत।’

‘यात्रासँ पहिने नहि भेटि सकैत अछि?’

‘अहाँ फेर ओही बातमे पड़ि गेलहुँ।’

‘पूनम हमर सहेली छथि। मुदा हम कार्यालयक रजिस्टरमे सेहो देखैत छी जे हुनक विवरण एखन पूर्ण नहि अछि।’

किरणक स्वर कड़क भेल। ‘अहाँक काज सूची मिलाएब अछि, नियुक्तिक निर्णय करब नहि। कम्पनीक अधिकारीक नाम बदलल अछि, ई सही अछि। मुदा प्रत्येक परिवर्तन अपराध नहि होइत अछि।’

‘हम कोनो अपराधक आरोप नहि लगा रहल छी,’ नैना कहलीह। ‘केवल ओहि परिवर्तनक पुष्टि लिखित चाहैत छी।’

किरण किछु क्षण नीरव रहलिह। ‘हम मेल पठबैत छी। जे उत्तर भेटत, से फाइलमे रखि देब।’

नैना अपन मेजपर घुरि गेलीह। कार्यालयक दुआरिपर अनेक अभ्यर्थी पाँतिमे ठाढ़ छलाह। केओ काजक विज्ञापन लऽ आएल छल, केओ जमा शुल्कक रसीद। रामविलास एक-एक नाम पुकारि रहल छल। नरेश मण्डल पाछाँ बहीक पन्ना पलटि रहल छलाह। सभ किछु सामान्य दिन जकाँ चलि रहल छल। नैनाकेँ केवल पूनमक तीनटा पन्ना असामान्य लगि रहल छल।

साँझ धरि किरणक कोठरीसँ कोनो नब पत्र नहि आएल। नैना पूछलथिन तँ उत्तर भेटल —‘मेल पठाओल गेल अछि, जवाबक प्रतीक्षा अछि।’ नैना ओही स्थितिक उल्लेख कार्यालयक सूचीमे कऽ देलनि। ओ ककरो कागजमे अपुष्ट तथ्यकेँ निश्चित लिखय नहि चाहैत छलीह।

दू दिनक बाद पूनमक यात्राक भोरे अएल। बस अड्डापर एखन ठीकसँ उजासो नहि भेल छल। चाय बेचयवला आगि सुलगा रहल छल। यात्रु अपन झोरा आ बक्सा लऽ एक ठामसँ दोसर ठाम भागि रहल छलाह। नैना मायक आग्रहपर पूनमकेँ विदा करय आएल छलीह। अभय सेहो ओतहि समाचारपत्रक गाड़ी लेल आएल छलाह; नैनाकेँ देखि किछु दूर ठाढ़ रहलाह।

पूनम अपन पिता संग अएलीह। वृद्ध पिताक चालिमे कठिनाइ छल। रीना बहिनक झोरा सम्हारि रहल छलीह। पूनमक माय चुप छलीह। हुनक हाथमे कपड़ाक छोट पोटरी छल—बाटक लेल पूड़ी आ सुखायल तरकारी। ओ बेटीकेँ बारम्बार कहैत छलीह जे भोजन समयपर कऽ लेब।

पूनमक संग यात्रा करयवाली दूटा आओर युवती सेहो बस अड्डापर पहुँचलीह। एकटाक नाम ममता, दोसरक शबनम। दुनू नोकरीक आशामे अलग-अलग गामसँ आएल छलीह। ममताक भाइ कहलक जे कम्पनीक आदमी टिकट एक संग कटौने अछि। शबनमक पिता पुछलनि, ‘उतरबाक बाद ककरा लग जाएत?’

ममता फोल्डर देखौलक। ‘नीला देवीक नम्बर अछि।’

नैना पुछलथिन, ‘अहाँ सभ एहि नम्बरपर स्वयं बात केने छी?’

‘कएलहुँ,’ शबनम कहलीह। ‘कहलथिन जे बस अड्डाक बाहर गाड़ी रहत। मुदा गाड़ीक नम्बर एखन नहि जनैत छथि।’

‘भेटलाक बाद घर फोन करब,’ नैना कहलीह। ‘आ कम्पनीक भवनक नाम लिखि पठायब।’

एहि बीच मध्यम आयुक एकटा महिला अएलीह। हुनक हाथमे मोबाइल आ कागजक सूची छल। ओ अपन परिचय नीला देवीक रूपमे देलथिन। कागजमे तीनू युवतीक नाम मिलौलथिन, आ बसक टिकट देखौलथिन। पूनम हुनका स्पष्ट पुछलथिन, ‘प्रशिक्षणक बाद काज कतए भेटत?’

‘पहिने पहुँचू। ओतए काजक विभाग तय होयत,’ नीला कहलीह। ‘एखन भीड़ अछि, चढ़बाक तैयारी करू।’

नैना नीला देवीक परिचयपत्र देखबाक आग्रह केलथिन। महिला एकटा परिचयपत्र देखौलथिन, जाहिमे निजी संस्थाक नाम आ हुनक तस्वीर छल। नैना नाम लिखि लेलनि। ओ महिला कनेक अप्रसन्न भेलीह, मुदा यात्रुक भीड़क कारण आगाँ बहस नहि केलथिन।

बस चढ़बाक पहिने पूनम नैना लग अएलीह। ‘अहाँ रोषमे छी?’

‘रोष किएक?’

‘हर बात पूछैत छी। नीला मैडमकेँ खराब लगैत छन्हि।’

‘जकरा जायब अछि, ओकर जानकारी पूछब खराब नहि,’ नैना उत्तर देलथिन। ‘हम अहाँक मुँहसँ ई सुनय चाहैत छी जे अहाँ अपना सँ निर्णय लेने छी।’

पूनम सीधा आँखिमे तकलीह। ‘हँ, हम निर्णय लेने छी। डर लगैत अछि, मुदा जाएब चाहैत छी।’

नैना हुनका गला लगा लेलनि। ‘तखन सुरक्षित पहुँचि फोन करब। कोनो बात ठीक नहि लागय तँ अपन मनक बात नुकाएब नहि।’

बसक सीढ़ीपर चढ़ैत पूनम पाछू घुरि हाथ हिलौलथिन। रीना आँखिमे नोर नेने ठाढ़ छलीह। पिता चुपचाप बसक खिड़की देखैत रहलाह। गाड़ी चलल तखन पूनमक माय छोट पोटरी नेने दौड़ि पड़लीह—भोजनक दोसर डिबिया बैगमे राखब बिसरि गेल छलीह। नैना जल्दीसँ डिबिया लऽ खिड़कीसँ पूनमकेँ देलथिन। पूनम हँसि कऽ कहलीह, 'मायकेँ कहियौ चिन्ता नहि करथि।'

बस निकलि गेल। भीड़ छँटि गेलाक बाद अभय नैनाक कात अएलाह। 'अहाँक परिचित छलीह?'

'विद्यालयक समयसँ सहेली। बाहर नोकरी लेल गेलीह।'

'संस्थाक नाम?'

'नई दिशा ओकरा पठौने अछि। मुदा प्रशिक्षणक ठामक विषयमे किछु बात एखन स्पष्ट नहि।'

अभय प्रश्न पूछबाक पहिने रुकलाह। 'अहाँ चिन्तित छी। जँ कखनो तथ्य जाँचबाक आवश्यकता हो, तखन कहब। एखन पूनम सुरक्षित पहुँचथि, एहि बातक प्रतीक्षा करू।'

'हम एही चाहैत छी।' नैना उत्तर देलथिन।

बस छुटलाक किछु घण्टा बाद पूनम अपन मायक फोन उठौने छलीह। माय पुछैत छलीह जे भोजनक डिबिया खोलल कि नहि। पूनम हँसैत कहने छलीह, 'अहाँ दुइटा डिबिया देलहुँ। हम तीनू संग खाएब।' हुनक आसनक बगलमे बैसल ममता अपन घरसँ अनल निमकी निकाललथिन। शबनम कहलीह जे पहिल वेतन भेटितहि ओ छोट भाइ लेल विद्यालयक बस्ता किनतीह। तीनू अपन-अपन घरक बात करैत छलीह। नोकरी एखन भले हाथमे नहि छल, मुदा एक-दोसराक सङ्ग रहला पर यात्रा कम अपरिचित बुझाइत छल।

पूनम खिड़कीसँ खेत आ छोट बजार देखैत रहलिह। हुनका विद्यालयक समयक नैना मोन पड़लीह, जे परीक्षा लेल प्रश्न पढ़ि सुनबैत छलीह आ गलत उत्तर भेलापर स्वयं हँसि दैत छलीह। पूनम सोचलथिन जे पहिल वेतनसँ नैनाकेँ एकटा नीक दुपट्टा देब। रीना लेल सिलाईक नब कैंची कीनब। पिताक औषधिक खर्च सेहो अपन हाथमे लेब। योजना

बनएबामे किछु नहि लगैत अछि; ओहि योजनाकेँ पूरा करबाक इच्छा हुनका भीतर साहस दैत छल।

दोपहरक बाद नीला देवी बसक पाछिल आसनसँ आबि तीनूकेँ कहलथिन, 'उतरबाक बाद एक संग रहब। बिखरब नहि।' पूनम पुछलथिन, 'कम्पनीक गाड़ीपर नाम लिखल रहत?' नीला कहलीह, 'हम सङ्ग रहब, तेँ चिन्ता नहि करू।' पूनम प्रश्न फेर नहि पुछलथिन, मुदा उतरबाक ठामक नाम मोबाइलमे लिखि लेलनि।

दुपहरिया पूनमक पहिल सन्देश आएल—'बाटमे छी। ममता आ शबनम संग छथि। सभ ठीक अछि।' नैना तुरन्त उत्तर देलथिन—'जतए उतरब, ओहि ठामक नाम बतायब।' सँझिया दोसर सन्देश आएल—'सोनापुर पहुँचि गेलहुँ। कम्पनीक गाड़ी भेटल अछि।' यात्राक पहिल सन्ध्यामे पूनम अपन बहिनकेँ सेहो सन्देश पठौने छलीह। रीना उत्तर देलथिन जे माय भोजन बना रहल छथि, बाबूजी दुआरिपर बैसल छथि, आ सभ हुनक सुरक्षित पहुँचबाक बाट तकैत छथि। तकर बाद किछु घण्टा कोनो सन्देश नहि। नैना सोचलीह जे नब ठाम पहुँचि सामान रखबाक, भोजन करबाक आ परिवारसँ बात करबाक व्यस्तता होयत।

राति साढ़े नौ बजे पूनमक फोन आएल। आवाज कमजोर छल। पाछाँ किछु महिलाक बातचीत सुनाइत छल।

'पहुँचि गेलहुँ?' नैना पुछलथिन।

'हँ। मुदा जे भवनक नाम कागजमे अछि, एतए दोसर नाम लिखल अछि। कहैत छथि जे ई अस्थायी रहबाक ठाम अछि।'

'कम्पनीक अधिकारीसँ भेट भेल?'

'एक गोटे आएल छलाह। कागज जमा करबाक लेल कहलथिन।'

'मूल प्रमाणपत्र देलहुँ?'

'नहि। केवल नकल। मुदा पहचानपत्र देखबाक लेल माँगलनि। आब हमरा सभकेँ भोरे दोसर ठाम लऽ जाएत, से कहैत छथि।'

नैना पुछलथिन, 'अहाँ जतए छी, ओकर पूरा पता पठाउ।'

‘पता लिखल नहि भेटल। खिड़कीसँ बाहर कारखानाक गोदाम देखाइत अछि। नीला मैडम कहैत छथि जे काल्हि बताओल जाएत।’

‘अहाँक सङ्ग ममता आ शबनम छथि ने?’

‘हँ। तीनू एक कोठरीमे छी।’

‘माय-बाबूजीकेँ फोन करि लेलहुँ?’

‘हँ, कहि देलहुँ जे पहुँचि गेल छी।’

नैना किछु कहबाक छल, एतबे मे फोन कटि गेल। दोसर बेर फोन लगौलनि तँ पूनम कहलीह, ‘एतए सञ्जाल ठीक नहि अछि। भोरे बात करब।’

नैना घड़ी देखलनि। ओ पूनमकेँ लिखि पठौलनि—‘पूरा ठेगाना आ कम्पनीक नाम पक्के लिखि पठायब। जँ जरूरत बुझू तँ तुरन्त फोन करब।’ सन्देश पहुँचलाक चिह्न देखाइ देलक, उत्तर नहि।

अगिला दिन नैनाकेँ कार्यालयमे कागजातक मिलान करबाक काज छल। पूनमक बात मनमे घुरैत छल, मुदा ओ तय कएलनि जे अपुष्ट आशङ्काकेँ आरोप नहि बनाओतीह। किरणसँ पुछलथिन—‘सोनापुरक प्रशिक्षण भवनक नाम बदलि गेल अछि?’

किरण पुछलथिन, ‘के कहलक?’

‘पूनम स्वयं। काल्हि राति।’

‘अस्थायी निवास होयत। ओतए अनेक भवन अछि। समूहक अधिकारीसँ बात कऽ लेब।’

‘सम्पर्कक लिखित उत्तर एखन धरि नहि आएल?’

‘एखन नहि।’ किरण स्पष्ट कहलीह। ‘अहाँ अपन काज करू। जँ किछु गम्भीर शिकायत आएत तँ हमरा बतायब।’

नैना पाछू घुरलीह, मुदा हुनका बुझाइत छल जे शिकायत गम्भीर होयबाक प्रतीक्षा करब आ शिकायत रोकबाक व्यवस्था करब, दुनू अलग बात अछि। कुसुम हुनका देखि धीरे

पुछलथिन, ‘सहेली पहुँचि गेलीह?’ नैना उत्तर देलथिन, ‘पहुँचलीह, मुदा पता स्पष्ट नहि।’ कुसुमक मुँहपर चिन्ता देखाइ देलक। ‘अहाँ फोनपर सम्पर्क बनाएल राखू,’ ओ कहलीह।

साँझ छह बजे धरि पूनमक कोनो सन्देश नहि आएल। नैना एक बेर फोन केलनि। घण्टी बजल, मुदा केओ नहि उठौलक। आधा घण्टा बाद फेर प्रयास केलनि। फोन बजैत रहल। ओ घर पहुँचि मायकेँ स्थिति बतौलनि। सरस्वती देवी कहलीह, ‘एखन केवल एक दिन भेल अछि। काजक भीड़ होयत। मुदा ठेगाना पूरा भेटब आवश्यक अछि।’

भोजनक समय चन्दन सेहो सुनलक। ओकरा अपन गोदामक अपूर्ण कागज मोन पड़ल। ‘दीदी, जे आदमी पूरा ठेगाना नहि दैत अछि, ओकर बातपर भरोसा कठिन अछि,’ ओ कहलक।

नैना भाइ दिस तकलीह। ‘अहाँ सही कहैत छह। मुदा पूनम एक्लै नहि गेल छथि। दोसर युवतीसभ सेहो अछि। पहिने हुनका सभसँ सम्पर्क करबाक प्रयास करब।’

ओ यात्राक सूचीमे सँ ममताक नम्बर मिलौलनि। फोन बन्द छल। शबनमक नम्बर पर घण्टी गेल, मुदा उत्तर नहि आएल। नैना ममताक भाईकेँ फोन करबाक विचार कएलनि, फेर सोचलीह जे पहिने पूनमक घरक लोकसँ बात कऽ लेबाक अछि। ओ पिता केँ फोन केलथिन। हुनकर उत्तर सुनि नैना ठिठकि गेलीह—‘बेटी, पूनम भोरे छोट फोन केने छल। कहलक जे काजक ठाम जा रहल छी। तकर बाद नहि। हम सोचने रही जे तोरासँ बात होइत होयत।’

‘राति हम बात केने रही। आब सम्पर्कक प्रयास करैत छी,’ नैना कहलीह। ‘जँ ओ फोन करतीह तँ हमरा तुरन्त खबरि दियौ।’

राति साढ़े दस बजे, जखन घरमे सभ सुतबाक तैयारी करैत छल, नैनाक मोबाइल कम्पित भेल। पूनमक नाम देखितहि ओ फोन उठौलनि।

‘पूनम? अहाँ ठीक छी?’

दोसर दिस पहिने कोनो उत्तर नहि। फेर फुसफुसाहट सुनाइ देलक। ‘नैना, अहाँ सुनैत छी?’

‘हँ, साफ सुनैत छी। की भेल?’

‘हमरा सभकेँ काल्हि दोसर ठाम अनलनि। एतए जे काज कहल गेल छल, से नहि अछि। हमरा सभक फोन रखि लेबाक बात कहैत छथि। हम अपन फोन नुकाकऽ राखने छी।’

नैनाक देह सिहरि उठलनि। ‘अहाँ कतए छी? बाहरक कोनो चिन्ह, भवनक नाम?’

‘नहि बुझाइत अछि। दुआरिपर लोक छथि। ममता रोइत अछि। शबनम कहैत अछि जे घर घुरबाक लेल माँगलासँ डाँट पड़ल।’

‘अहाँ शान्त रहू। जे देखैत छी, से स्पष्ट बताउ। हम अहाँक परिवारकेँ संग लऽ सहायता मँगब।’

‘नैना, हमरा बाहर नहि जएबा दैत छथि। अहाँ ककरो कहि—’

ओहि समय दूरसँ ककरो कठोर स्वर सुनाइ देलक। पूनम एक बेर जल्दीसँ कहलथिन, ‘हमरा सभकेँ एतयसँ निकालू। हमरा डर लगैत अछि।’

तकर बाद फोन कटि गेल।

नैना तुरन्त फेर नम्बर मिलौलनि। फोन बन्द छल। दोसर बेर, तेसर बेर—एक्के उत्तर। ओ पूनमक पिता केँ फोन करबाक लेल मोबाइल उठौलनि, मुदा हाथ काँपि रहल छलनि। सोझाँ मेजपर पूनमक तीनटा पन्नाक तस्वीर खुलल छल: प्रशिक्षणक नाम, यात्राक समय, सम्पर्कक नम्बर। ओ सभ सूचना, जकरा ओ बारम्बार मिलान करैत छलीह, एकाएक असहाय कागज बुझाएब लागल।

सरस्वती देवी कोठरीक दुआरिपर अएलीह। ‘की भेल, नैना?’

नैना मायक मुँह दिस तकलीह। ‘पूनम सहायता मँगलनि। ओतए हुनका बाहर नहि आबय दैत छन्हि।’

माय पल भरि चुप रहलीह। फेर कहलीह, ‘तखन देर नहि करू। हुनक घरमे खबरि दिअ। जे सही बाट अछि, ओहीसँ सहायता माँगू।’

नैना पूनमक पिताक नम्बर मिलौलनि। राति गहिर भऽ रहल छल, मुदा हुनका बुझा गेलनि जे आब ई विषय केवल नोकरीक अनिश्चितता नहि रहल। सहेलीक जीवन संकटमे पड़ि सकैत छल। फोनक दोसर दिस घण्टी बजैत रहल।

द्वितीय भाग

गायब भेल लोक

अध्याय १३–२४

अध्याय १३ : बन्द मोबाइल

पूनमक पिताक फोन उठेबामे किछु समय लगलनि। नैना ओहि बीच दुआरि लग ठाढ़ भेलीह। घरक भीतर सरस्वती देवी चन्दनकेँ उठा रहल छलीह। राति गहिर छल, मुदा नैनाकेँ अनुभव भऽ रहल छलनि जे घड़ीक प्रत्येक टिक-टिकक संग किछु महत्त्वपूर्ण हाथसँ निकलि रहल अछि। फोन उठलाक बाद पूनमक पिता रामलाल यादवक स्वर नीन्नसँ भरल छलनि।

‘एतेक राति, बेटी? पूनम ठीक अछि ने?’

नैना एक क्षण चुप रहलीह। उत्तर कहनाइ कठिन छल, मुदा साँच नुकएबाक कोनो अर्थ नहि छल। ‘काका, पूनम हमरा फोनपर सहायता मँगलनि। कहलीह जे हुनका सभकेँ बाहर नहि जएबा दैत छन्हि। फोन कटि गेल। आब बन्द अछि।’

ओहि दिस चुप्पी पसरि गेल। फेर रामलाल पुछलथिन, ‘कखन बात भेल?’

‘एखन, साढ़े दस बजेक बाद। हम तुरन्त अहाँकेँ कहलहुँ।’

‘हम एखन हुनक मायकेँ उठबैत छी। अहाँ जँ सकी तँ भोरमे आबि जाउ। राति भरि हम फोन करैत रहब।’

नैना कहलथिन जे ओ मोबाइलमे आएल सन्देश आ यात्राक कागजक तस्वीर सुरक्षित राखि रहल छथि। बात समाप्त भेलाक बाद चन्दन आँगनमे आबि गेल। ओकर आँखि आधा नीन्नमे छल, मुदा बहिनक चेहरा देखि ओ पूर्ण जागि गेल। ‘दीदी, सोनापुरमे जकर नम्बर देल गेल छल, ओकरा फोन कएल?’

‘अखन नहि। नीला देवीक नम्बर अछि। मुदा पूनमक बातसँ लागैत अछि जे ओहिना सभक संग छथि। पहिने स्वतंत्र रूपसँ खबरि पएबाक उपाय सोचब।’

‘आ ममता आ शबनम?’

‘दूनूक मोबाइलो बन्द अथवा अनुत्तरित अछि।’

चन्दन अपन मोबाइल लऽ बैसल। ओ यात्रा-सूचीमे देल नम्बरसभ एक-एक कऽ नैनासँ लिखबौलक। रातिक एतेक समय अपरिचित लोककेँ फोन करब उचित नहि बुझाइत छल; मुदा पूनमक सहायता मँगबाक स्वर सुनने नैना प्रतीक्षाक बात सेहो नहि सोचि सकैत छलीह। ओ अभयकेँ सन्देश पठौलनि—‘पूनम संकटमे छथि। काल्हि भोरे जरूरी बात करबाक अछि। फोन बन्द अछि।’ सन्देश पठबितहि हुनका ईहो बुझा गेलनि जे अभय पत्रकार छथि, पुलिस नहि; हुनकासँ चमत्कारक आशा नहि, केवल अनुभव आ सहायता भेटि सकैत अछि।

सरस्वती देवी चूल्हिपर पानि गरम कऽ तीनूकेँ दऽ देलथिन। ‘घबराहटमे गलती भऽ जाइत छैक,’ ओ कहलीह। ‘जे-जे सूचना अछि, एक ठाम लिखि लिअ। फोनक समय, की कहलनि, कतेक लोक संग छलीह। भोरमे बूझल बात याद राखब सहज नहि होयत।’

नैना पुरान कॉपी खोललनि। पूनमक प्रस्थानक दिन, सोनापुर पहुँचबाक सन्देश, रातिक बातचीत, अगिला दिन छोट फोन आ अन्तिम पुकार—सभ अलग पाँतिमे लिखलनि। अन्तिम पाँतिमे लिखलनि—‘हमरा सभकेँ एतयसँ निकालू।’ ओहि शब्दक बाद कलम किछु क्षण ठमकि गेल। एहिमे कोनो असमञ्जस नहि छल; सहेली स्पष्ट सहायता मँगने छलीह।

भोर हेबाक पहिनहि रामलालक फेर फोन आएल। ‘हम पूनमकेँ बीस बेर फोन कऽ चुकलहुँ। एक्के उत्तर—बन्द। रीना सेहो नम्बर मिलौलक। पूनमक माय राति भरि बैसल छथि।’

‘हम सात बजे धरि अहाँक घर पहुँचब,’ नैना कहलीह।

पड़ोसक लोक एखन उठि रहल छल जखन नैना अपन झोरामे फोल्डर, कॉपी आ मोबाइलक चार्जर रखलनि। चन्दन साइकिल बाहर निकालि देलक। ‘हम संग चलब?’

‘अहाँ अपन पढ़ाइक समय नहि छोड़ू। जँ जरूरत पड़त तँ फोन करब,’ नैना उत्तर देलथिन। फेर भाइकेँ देखि कहलीह, ‘मुदा मनोजक कोनो रातिक काज एखन नहि लेब। हमरा अहाँक चिन्ता सेहो अछि।’

चन्दन किछु कहबाक छल, फेर केवल माथ हिलौलक। ओकरा अपन गोदामक अपूर्ण कागज मोन पड़ल, मुदा ओहि आशङ्काकेँ पूनमक घटनासँ जोड़ि देनाइ अनुमान होइत। ओ बहिनकेँ सड़क धरि छोड़ि देलक।

पूनमक घरक आँगनमे पहुँचैतहि नैना देखलनि जे ओतए तीन-चारि पड़ोसी पहिनेसँ बैसल छथि। रीना दुआरिक लग ठाढ़ छल। हुनक हाथमे पूनमक पुरान चप्पलक एक जोड़ा छल, जकरा ओ घरक भीतर रखबाक लेल उठा रहल छलीह। नैना आबितहि रीना पुछलथिन, 'दीदी कहलथिन जे बचाउ? साफ-साफ कहलथिन?'

'हँ,' नैना उत्तर देलथिन। 'ओ भयभीत छलीह। मुदा एखन हम नहि जनैत छी जे हुनका कतए राखल गेल अछि।'

पूनमक माय ललिता देवी ओसारापर बैसल छलीह। नैनाकेँ देखितहि उठलीह, फेर बैसि गेलीह। 'हमर बेटी नोकरी करय गेलीह। किछु अनर्थ तँ नहि?'

'एखन कोनो अनर्थक पक्का खबरि नहि अछि, काकी। हमरा सभकेँ सही ठाम पता करबाक अछि। समय नष्ट नहि करब।' नैना हुनक लग बैसि कहलथिन। ई आश्वासन नहि छल जे सभ ठीक भऽ जाएत; केवल एतेक छल जे परिवारकेँ अकेला नहि छोड़ल जाएत।

रामलाल फोल्डर लऽ अएलाह। जमा रकमक रसीद बारम्बार खोललासँ किनारासभ मुड़ि गेल छल। ओ नैनाक आगाँ राखि कहलथिन, 'बारह हजार टका देलहुँ। चारि हजार ऋण छल। गहना रखनाइ पड़ल। मुदा आब टकाक कोनो हिसाब नहि चाही, बेटी चाही।'

नैना रसीद देखलनि। ओहि रसीदक नम्बर कार्यालयक पञ्जीकरण सूचीक नकलमे अलग लिखल छल। भर्ती संस्थाक छाप तँ छल, मुदा प्रशिक्षण केन्द्रक पता नहि छल। रामलाल अपन फोनमे कम्पनीक एकटा सन्देश देखौलनि—'अभ्यर्थी समूह सुरक्षित पहुँचि गेल अछि।' सन्देश पूनमक दोसर ठाम लऽ जाएबाक पहिने आएल छल। तकर बाद परिवारकेँ किछु नहि भेटल।

एहि बीच ममताक भाय राकेश आ शबनमक काका इस्माइल सेहो आबि गेलाह। दुनू परिवार फोनपर एक-दोसराकेँ खोजि लेने छल। राकेशक कहब छल जे ममता राति पहिने

कहने छलीह—‘आइ प्रशिक्षण शुरू नहि भेल; काल्हि दोसर ठाम जाइ छी।’ शबनमक मायकेँ अन्तिम सन्देश भेटल छल—‘हम ठीक छी, चिन्ता नहि करू।’ कखन, कोन फोनसँ आ ककर उपस्थितिमे सन्देश पठाओल गेल, से केओ नहि जनैत छल।

राकेश पुछलनि, ‘तीनू एक्के ठाम छथि तँ तीनू मोबाइल एक संग कोना बन्द?’

केओ उत्तर नहि देलक। घरक दुआरिक बाहर दूटा बालक विद्यालयक बस्ता नेने निकलल। हुनका सभकेँ ई आँगन सामान्य दिनक आँगन बुझाइत छल। भीतर बैसल लोकक लेल भने प्रत्येक अपरिचित आवाज आशाक कारण बनि रहल छल।

नैना नीला देवीक नम्बर मिलौलनि। पहिल बेर घण्टी गेल, उत्तर नहि। दोसर बेर एकटा पुरुष स्वर सुनाइ देलक। ‘के?’

‘हम नवगढ़सँ नैना मिश्र बाजि रहल छी। पूनम यादवक परिवारक दिससँ। नीला देवीसँ बात करबाक अछि।’

‘ओ एखन उपलब्ध नहि छथि।’

‘अहाँ के छी? ई नम्बर यात्राक सम्पर्कक रूपमे देल गेल अछि।’

‘कर्मचारी छी। समूह ठीक अछि। चिन्ता नहि करू।’

‘पूनमक संग बात कराबि दियौ।’

‘प्रशिक्षणमे मोबाइल उपयोगक अनुमति नहि। बादमे बात होयत।’

‘कम्पनीक पूरा पता आ प्रभारीक नाम बताउ।’

ओहि दिस क्षण भरि कोनो आवाज नहि। फेर पुरुष कहलक, ‘कार्यालयसँ जानकारी लिअ।’ फोन कटि गेल।

नैना जतेक बात भेल छल, ततेक शब्दशः लिखि लेलनि। ओकर नाम पुछनाइ, ठेगाना माँगनाइ—सभ प्रश्नक उत्तर टारल गेल छल। रामलाल ओकर लिखैत हाथ दिस तकि रहल छलाह।

‘हम सोनापुर जाएब,’ ओ कहलथिन। ‘बसक टिकट एखन कटेब।’

‘जाएब जरूरी भऽ सकैत अछि,’ नैना कहलीह, ‘मुदा पूरा पता बिना ओतए भटकलासँ बेसी लाभ नहि होयत। पहिने कार्यालयमे लिखित उत्तर माँगू, आ थानामे जानकारी दिअ। यात्रा करब तँ स्थानीय सहायताक ठामक नाम पता कऽ कऽ करब।’

ममताक भाय बतौलनि जे हुनक एकटा परिचित सोनापुरक बस अड्डापर छोट दोकान करैत छथि। ओ फोन कऽ पुछताह जे कम्पनीक गाड़ी वा ओहि नामक प्रशिक्षण भवनक किछु ठोस जानकारी भेटि सकैत अछि कि नहि। ककरो अपरिचित ठाम बिनु सूचना भेजनाइ उचित नहि छल।

एहि बीच रीना घुरि आँगनमे अएलीह। हुनक हाथमे पूनमक पुरान डायरी छल। ‘दीदी जे दिन शुल्क जमा करबाक गेलीह, एहि डायरीमे किछु लिखने छलीह,’ ओ कहलीह। डायरीक अन्तिम पन्नापर तीनटा नाम छल—पूनम, ममता, शबनम। ओकर नीचाँ प्रशिक्षणक सम्भावित दिन आ दोसर फोन नम्बर लिखल छल। रामलाल एखन धरि ई पन्ना देखल नहि छलाह।

नैना दोसर नम्बर मिलौलनि। फोन उठेनिहार महिला अपन नाम बताबयसँ मना कऽ देलनि। ओ कहलीह, ‘हम पहिने समूहक व्यवस्था देखैत रही। आब ई काज हमर जिम्मामे नहि अछि।’

‘तखन आब ककर जिम्मामे अछि?’

‘कार्यालयसँ पूछू। हमरा फेर फोन नहि करू।’

बात समाप्त भऽ गेल। नैना सोचलीह जे जिम्मेवारी बदलनाइ सामान्य व्यवस्था सेहो भऽ सकैत अछि, मुदा तीनू परिवारकेँ कोनो नब नाम आ पूरा पता नहि देनाइ असामान्य अछि। ओ महिलाक शब्द कॉपीमे लिखलनि, अपन दिससँ कोनो निष्कर्ष नहि जोड़लनि।

पूनमक घरक पाछाँ बसयवाली रामदुलारी काकी पानिक लोटा नेने अएलीह। हुनका पूरे बातक जानकारी नहि छल। ओ पूछलथिन, ‘पूनम दिल्ली गेलीह कि सोनापुर? बजारमे कियो कहैत छल जे दिल्लीक कारखानामे काज भेटलनि।’

रामलालक चेहरा तमतमा उठलनि। ‘जे नहि जनैत छथि, ओ अफवाह किएक फैलाबैत छथि?’

‘हम स्वयं नहि कहने छी,’ रामदुलारी काकी उत्तर देलथिन। ‘दुइ घर आगाँ सुनलहुँ। से पूछबाक लेल आएलहुँ। जँ कोनो मदद हो तँ बतायब।’

नैना काकीकेँ कहलीह, ‘अहाँ लोककेँ केवल एतबे बताउ जे परिवार सम्पर्क करबाक प्रयास करैत अछि। अपुष्ट बात नहि फैलय दिअ। जखन साँच पता लागत, तखन सभकेँ कहल जाएत।’

आँगनमे बैसल ललिता देवी बहुत देर बाद मुँह खोललनि। ‘जखन पूनम छोट छलीह तँ हम खेतमे काज करैत रही। ओ घरक दुआरिपर बैसि हमर बाट तकैत रहैत छलीह। आब हम बैसल छी आ ओकर बाट तकैत छी। मुदा ई बाट कतए जाइत अछि, से नहि जनैत छी।’

हुनक बात सुनि केओ तुरन्त उत्तर नहि देलक। रीना मायक लग बैसि गेलीह। ओ पहिने कानैत छलीह, आब आँखि पोछि एकटा कागज पकड़ि लेलक। ‘हम फोनक समय आ नामसभ साफ-साफ लिखब। किछु छूटय नहि देब।’

ममताक भाईक फोन दोसर बेर बजल। सोनापुरवला परिचित कहलक जे औद्योगिक क्षेत्रमे एक्के नामक दूटा गोदाम अछि, मुदा प्रशिक्षण केन्द्रक नामसँ ओकरा कोनो ठोस जानकारी नहि भेटल। ‘हम अपना दिससँ अनुमान नहि करब,’ राकेश ओहि दिस कहलनि। ‘तूँ केवल जकरा स्वयं चिन्हैत छह, ओकरासँ पुछिहेँ।’

इस्माइल अपन घरसँ शबनमक नियुक्तिपत्रक तस्वीर मँगौलनि। मोबाइलपर तस्वीर आएल तँ नैना पूनमक पत्रक संग मिलौलनि। दूनू पत्रक ऊपर एक्के कार्यालयक छाप छल, मुदा प्रशिक्षणक तिथि एक दिनक अन्तरसँ छपल छल। इस्माइल कहलक, ‘तीनू तँ एक्के बससँ गेलीह। तिथि अलग किएक?’

‘लिपिकक गलती सेहो भऽ सकैत अछि,’ नैना कहलीह। ‘मुदा ई बात कार्यालयसँ लिखित रूपमे पुछबाक अछि।’

ओहि समय रामलालक पड़ोसी एकटा मोटरसाइकिल लऽ अएलाह। ओ कहलनि जे जँ थानामे जाएबाक हो तँ ओ संग देताह। रामलाल पहिने मना कएलनि—‘हम स्वयं जाएब।’ फेर ललिता देवीक दिस तकि कहलनि, ‘अहाँ घर सम्हारू। रीना फोन लगबैत रहत। हम नैना संग जाएब।’

ओ उठि भीतर गेलाह आ धोतीक काँछ सम्हारि पुरान कमीज पहिरि अएलाह। हुनका देखैत नैनाकेँ काल्हुक दृश्य मोन पड़ल—पूनम एकटा नव झोरा नेने आत्मविश्वाससँ बसपर चढ़लीह। आब ओहि यात्राक ठेगाना खोजबाक लेल परिवार अपन सभ कागज लऽ दुआरि छोड़ि रहल छल।

दस बजे लग नैना परिवारक दू गोटेक संग रोजगार कार्यालय पहुँचलिह। कुसुम स्वागत-कक्षमे बैसल छलीह। सामान्य दिन नैनाकेँ देखैतहि ओ कागज बढ़ा दैत छलीह; आइ नैनाक संग रोआँसी आँखिवला लोक देखि ठिठकि गेलीह।

‘किरण मैडम छथि?’ नैना पुछलथिन।

‘बैठकमे छथि। की भेल?’

‘पूनम यादव आ हुनक सङ्ग गेल ममता आ शबनमसँ सम्पर्क नहि भऽ रहल अछि। पूनम काल्हि राति सहायता मँगने छलीह। परिवारकेँ पूरा पता चाही।’

कुसुमक मुँहक भाव बदलि गेल। ओ एक बेर दराज खोललनि, फेर बन्द कऽ देलनि। ‘हम प्रशिक्षण समूहक विवरण नहि सम्हारैत छी। किरण मैडमकेँ पूछब।’

किछु देर बाद किरण बाहर अएलीह। हुनक हाथमे दूटा फाइल छल। रामलालकेँ बैसबाक कहलथिन, मुदा ओ स्वयं ठाढ़ रहलीह।

‘हम बुझैत छी जे अहाँ सभ चिन्तित छी,’ किरण कहलीह। ‘बाहरक प्रशिक्षण केन्द्रमे सम्पर्कक असुविधा होइत अछि। एहनमे घबराउ नहि।’

नैना शांत स्वरमे उत्तर देलथिन, ‘सम्पर्कक असुविधा होयत, मुदा पूनम हमरा सहायता मँगलनि आ कहलनि जे बाहर नहि जएबा दैत छन्हि। एहि बातक लिखित जानकारी देब आवश्यक अछि।’

किरणक आँखिमे पल भरि असहजता देखाइ देलक। ‘हम सम्बन्धित प्रभारीसँ पूछब। अहाँ सभ काल्हि फेर आबि सकैत छी।’

रामलाल पहिल बेर कड़क स्वरमे बजलाह, ‘काल्हि? बेटी राति सहायता मँगलक। अहाँ आइ ओकर पता नहि दऽ सकैत छी?’

‘हम तुरन्त फोन करैत छी,’ किरण उत्तर देलथिन। ओ भीतर चली गेलीह। नैना देखलनि जे केवाड़ी बन्द करैत समय किरणक हाथ काँपल नहि, मुदा बातक उत्तर सेहो नहि भेटल।

बीस मिनट बाद किरण घुरलीह। ‘समूहक निवास बदलल अछि, से पुष्ट भेल। मुदा कार्यालयक प्रभारी एखन यात्रामे छथि। लिखित विवरण भेटितहि देब।’

‘कतेक बजे धरि?’ नैना पुछलथिन।

‘एखन नहि कहि सकैत छी।’

‘तखन अहाँ हमरा सभकेँ लिखि दियौ जे परिवार पता माँगलनि आ कार्यालय एखन उपलब्ध नहि करा सकल।’

किरण एहन अनुरोधक लेल तैयार नहि छलीह। ‘एहि तरहक प्रमाणपत्र तुरन्त नहि बनैत अछि।’

नैना अपन झोरासँ सादा कागज निकाललनि। ओ तीनू युवतीक नाम, परिवारक सम्पर्क, उपलब्ध कागज आ अन्तिम फोनक समय लिखि देलनि। नीचाँ निवेदन जोड़लनि —‘सम्पूर्ण पता, वर्तमान स्थिति आ प्रत्यक्ष बातचीतक व्यवस्था तत्काल उपलब्ध कराओल जाए।’ रामलाल हस्ताक्षर कएलनि। कुसुम स्वागत-कक्षक आगत-पञ्जीमे आवेदन लेबाक समय लिखि देलथिन आ प्राप्तिक छाप लगा देलथिन।

कार्यालयसँ बाहर निकलैत रामलाल थाकल बुझाएब लगलाह। ‘आब की?’

‘आब थानामे चलब,’ नैना कहलीह। ‘जे कहल गेल अछि, से सम्पूर्ण बतायब। केवल मोबाइल बन्द अछि, एतेक नहि; सहायता मँगबाक बात सेहो।’

ओहि समय अभयक फोन आएल। रातिक सन्देश ओ भोरे देखलथिन। नैनाक बात शान्तिसँ सुनि ओ पुछलनि, 'लिखित आवेदनक नकल अछि ने?'

'हँ। कार्यालयक प्राप्ति सेहो।'

'नीक। परिवारक संग थानामे जाउ। हम समाचार लिखबाक जल्दबाजी नहि करब। पहिने लड़कीसभक सुरक्षाक बात अछि। अहाँ पहुँचब तँ हमरा खबरि दिअ।'

नैना फोन राखलनि। सड़कपर बससभ आबि-जाइत छल। फलवाला तराजूपर अमरूद जोखि रहल छल; विद्यालयक घण्टी बजैत छल। नगर अपन सामान्य गतिमे छल। केवल तीनटा घरक भीतर समय ठमकि गेल छल। पूनमक नाम नैनाक मोबाइलक ऊपर एखनहुँ छल, मुदा ओकर नम्बर फेर मिलौलापर एक्के स्वर अबैत छल—'मोबाइल बन्द अछि।'

रामलाल नैनाकेँ एक बेर फेर पुछलनि, 'पूनम जे शब्द कहलीह, अहाँ ओकरा ठीकसँ लिखलहुँ ने?' नैना कॉपी खोलि हुनका देखौलनि। रामलाल पढ़ि नहि सकलाह। चश्मा घरमे छुटि गेल छलनि। नैना धीरे-धीरे पूरा पाँति पढ़ि सुनौलनि। ओ सुनि बहुत देर धरि चुप भऽ गेलाह।

रामलाल नैनाक संग सड़क पार कएलनि। थानाक बाट नगरक भीड़क बीचसँ जाइत छल। पहिने ओ एहि बाटसँ केवल काजक सिलसिलामे गेल छलाह; आइ हुनका अपन बेटीक खोजमे जाएबाक छल। नैनाकेँ बुझाइत छलनि जे एखन धरि हुनका सभक हाथमे सन्देह आ किछु कागज मात्र अछि। मुदा ओ कागजसभ कमसँ कम एहि बातक साक्षी छल जे परिवार समय रहिते सहायता माँगने छल।

अध्याय १४ : थानाक दुआरि

थानाक फाटकपर पुरान पीपरक गाछ छल। ओकर नीचाँ दूटा मोटरसाइकिल, एकटा जप्त साइकिल आ लोहेक टुटल चौकी राखल छल। भीतर बरामदामे दू परिवार अपन-अपन कागज नेने बैसल छल। एक गोटे मोटरसाइकिल चोरीक शिकायत करय आएल छलाह; दोसर महिला अपन घरक मारपीटक विषयमे कहब सुनाबय चाहैत छलीह। रामलाल यादव फाटकपर पहुँचि ठमकि गेलाह। पूनमक कागजक फोल्डर हुनक बगलमे दबायल छल।

‘चलू, काका,’ नैना कहलीह। ‘अहाँकेँ जे बात कहबाक अछि, ओ साफ-साफ कहब।’

बरामदाक कोनामे बैसल सिपाही माथ उठा कऽ पुछलक, ‘की काज?’

‘हमर बेटी रोजगार लेल सोनापुर गेलीह। काल्हि राति सहायता मँगलनि। आब सम्पर्क नहि होइत अछि,’ रामलाल कहलथिन।

‘कतेक दिन भेल गेलाक?’

‘तीन दिन नहि, दू दिनसँ बेसी भेल अछि। मुदा एतए समयक बात केवल नहि अछि। ओ कहलीह जे हुनका बाहर नहि जएबा दैत छन्हि।’

सिपाही कलम रोकलक। ‘बेटी बालिग छथि?’

‘सत्ताइस वर्षक। मुदा ई बातसँ फर्क की पड़ैत अछि?’ रामलालक स्वर ऊँच भऽ गेल।

नैना धीरे कऽ हुनक हाथ छूलनि। ‘पहिने बात पूरा बतायब। उमेरक जानकारी पूछनाइ प्रक्रियाक हिस्सा होयत।’

सिपाही पञ्जी खोललक। ‘एकटा लिखित आवेदन देब। फोटो, यात्रा दिन, संस्था आ फोन नम्बर लिखब। दारोगा साहेब देखताह।’

नैना कागज निकाललनि। काल्हि रातिसँ बनाओल विवरणमे ओ पूनमक अन्तिम शब्द सेहो लिखने छलीह। राकेश आ इस्माइल अपन-अपन परिवारक बातक अलग नकल दऽ

गेल छलाह। तीनू युवतीक नाम आ सम्पर्क अलग कएल गेल। कागज देबाक बाद सिपाही कहलनि, 'एहि बेंचपर बैसू।'

एक घण्टा बीतल। बीचमे थानाक गाड़ी भीतर अएल। दू गोटे पुलिसकर्मी चाय पीबय निकललाह। एकटा युवक अपन चोरीक आवेदन फेर लिखि रहल छल; पहिल आवेदनमे मोटरसाइकिलक नम्बर गलत छल। रामलाल दोसर बेर उठि सिपाही लग गेलाह। 'बाबू, बेटी मदद मँगने छलीह। किछु त जल्दी होउ।'

'हम आवेदन रखि लेने छी। साहेब बाहरसँ आबि रहल छथि,' सिपाही उत्तर देलक। ओ कठोर नहि छल, मुदा ओकरा लग एहन अनेक फाइल छल जे सभक दुख अलग-अलग छल आ सभक लेल समय एक्के ढङ्गे बीतैत छल।

नैना अपन मोबाइलमे पूनमक फोटो खोललनि। फोटो विद्यालयक पुरान कार्यक्रमक छल। पूनम हरियर साड़ीमे हँसि रहल छलीह। नैना सोचलीह जे पहिचान लेल एखनक फोटो उचित होयत। रीना लग फोन कऽ नव फोटो मँगौलनि। थोड़े देर बाद रीना पूनमक यात्रा दिनक तस्वीर पठौलक—नील कुरता, काँधपर झोरा, बसक खिड़कीक लग ठाढ़। फोटो स्पष्ट छल।

बरामदामे बैसल महिलाक बच्चा पानि माँगैत छल। नैना बोतल निकालि देलथिन। महिला पानि पिया कऽ पुछलथिन, 'अहाँ पहिल बेर शिकायत करय अएल छी?' नैना माथ हिलौलनि। महिला कहलीह, 'हम तेसर बेर अएल छी। पहिने भय लगैत छल जे लोक की कहत। आब बुझि गेल छी जे चुप रहला पर कियो नहि सुनत।' ओ अपन आवेदनक नकल सम्हारि राखलनि। नैना देखलीह, थानाक दुआरिपर कतेको घरक दुख पहुँचैत अछि।

रामलाल एक बेर बाहर निकलि ललिता देवीकेँ फोन केलनि। 'हम थानामे छी। आवेदन लेताह। तूँ भोजन कऽ लियह। खाली पेट बैसल रहबह तँ ताकत नहि रहत।' ओहि दिस पत्नी किछु कहलीह जे नैना नहि सुनि सकलीह। रामलालक आँखिमे आँसु छल, मुदा ओ तुरन्त गमछासँ पोंछि लेलनि।

नैना हुनक लग बैसलीह। ‘काका, काल्हि पूनम अपन पहिल वेतनसँ बहिन लेल कैंची कीनबाक बात करैत छलीह।’

रामलाल अचम्भित भऽ तकलनि। ‘हमरा कहने छलीह जे घरक छपरक मरम्मत कराएब। ओकर अपन लेल कोनो सूची नहि छलैक।’

दुनू एक क्षण लेल पूनमक हँसी मोन करैत रहलाह। ओतए किछु समय धरि न थानाक शोर सुनाइ देलक, न गाड़ी। रामलाल पाछू कहलथिन, ‘बेटी, ओ जखन घुरत तँ हम ओकरा फेर बाहर जाएबासँ रोकि देब कि?’

‘एखन घुरबाक बाट खोजब,’ नैना कहलीह। ‘बादमे ओ स्वयं की चाहतीह, से सुनब। डरक कारणेँ हुनक सभ बाट बन्द कऽ देब, से उचित नहि।’

रामलाल माथ हिलौलनि। ओहि उत्तरमे हुनक डर कम नहि भेल, मुदा बेटीक भविष्यक अधिकारक बात ओ पहिल बेर एहि घड़ीमे सोचि सकलाह।

उपनिरीक्षक भानु प्रताप ग्यारह बजेक बाद पहुँचलाह। हुनक वर्दीक जेबमे दूटा कलम, हाथमे मोबाइल छल। ओ बरामदासँ कार्यालयमे जाइतहि सिपाहीकेँ किछु निर्देश देलनि। किछु देर बाद नैनाकेँ भीतर बजाओल गेल। कमरामे पैघ मेज, दूटा कुरसी आ देवालपर जिलाक मानचित्र टाँगल छल। मेजपर फाइलक ढेरी छल, जकर ऊपर एकटा अधखुलल आवेदन राखल छल।

‘पूनम यादवक परिवार?’ भानु प्रताप पुछलनि।

‘हँ,’ रामलाल कहलथिन। ‘हम पिता छी।’

भानु आवेदन खोललनि। ‘बेटी बालिग छथि। बाहर नोकरी करय गेलीह। दू दिनमे मोबाइल बन्द भऽ गेल तँ सम्भव अछि सञ्जाल नहि हो। एखन कोन आधारपर अपराधक बात कहैत छी?’

नैनाकेँ हुनक प्रश्न बेजाय नहि बुझाएल, मुदा ओहि प्रश्नमे पूनमक अन्तिम पुकारकेँ छोट कऽ देबाक प्रवृत्ति छल। ओ स्पष्ट कहलीह, ‘हम अपराध निश्चित भेल, से नहि कहैत छी। मुदा ओ स्वयं कहलनि जे हुनका बाहर नहि जएबा दैत छन्हि, फोन राखि लेबाक प्रयास

भऽ रहल अछि, आ ओ सहायता चाहैत छथि। ई बात परिवारक चिन्तासँ बेसी गम्भीर अछि।'

'अहाँ स्वयं बात केने छी?'

'हँ। काल्हि राति साढ़े दस बजेक बाद।'

'रिकॉर्डिंग अछि?'

'नहि। फोनक सूचना अछि आ हम बात समाप्त होइतहि समय लिखि लेने छी।'

'आ दोसर दुनू युवती?'

'ममता आ शबनम। परिवारसभकेँ हुनको पूरा पता नहि मालूम। हमरा तीनू परिवारक नम्बर देबाक अछि।'

भानु प्रताप कागज उठौलनि। 'जतए गेलीह, ओ सोनापुर अछि। ओतुक्का पुलिसक बात सेहो होयत। अहाँ सभ एतए आवेदन दऽ सकैत छी, मुदा बिना ठेगानाक तुरन्त खोज कठिन अछि।'

रामलाल काँचक गिलास दिस ताकैत रहलाह। 'हम ओतए धरि जाएब, साहेब। हमरा बेटी चाही। जँ अहाँ लिखित रूपमे कहब जे केकरा लग जाएब, हम ओतए सेहो जाएब।'

दारोगा अपन कुरसीपर कने पाछू सरकलाह। 'एतबा उतावल नहि होउ। एखन हम संस्थाक सम्पर्क देखैत छी।'

ओ मोबाइलपर एकटा नम्बर मिलौलनि, थोड़े देर सुनलनि, फेर फोन राखि देलनि। नैना देखलनि जे नम्बर मिलाबैत समय ओ कागज नहि, अपन मोबाइलक पुरान सम्पर्क-सूची देखलनि। भानु प्रताप कहलनि, 'नई दिशा रोजगार केन्द्र? ओकर संचालक रतन सिंह छथि ने?'

'हँ,' नैना उत्तर देलथिन। 'हम ओही कार्यालयमे काम करैत छी।'

'अच्छा। रतन बाबू शहरमे चिन्हल-परिचित लोक छथि। हुनकर संस्थाक माध्यमसँ गेल होयत तँ विवरण भेटि जाएत।'

‘हुनक परिचय छलासँ पता स्वतः नहि भेटत,’ नैना कहलीह। ‘आजु कार्यालय स्वयं लिखित विवरण नहि देलक अछि। एहि आवेदनक प्राप्तिक नकल अछि।’

भानु प्रतापक नजरि नैनाक हाथमे पकड़ल पन्नापर गेल। ओ एहि बेर ध्यानसँ पढ़लनि। ‘प्राप्ति अछि तँ नीक बात। अहाँ सभक बात लिखित रूपमे राखल अछि।’

ओ सिपाहीकेँ कहि संस्थाक कार्यालयसँ फोनपर प्रशिक्षणक अद्यतन विवरण मँगौलनि। कनेक देर बाद फोनपर पठाओल एकटा लिखित सूचना हुनका देखाओल गेल। ओहिमे कहल गेल छल जे सत्रह-बी समूहक सभ सदस्य निर्धारित प्रशिक्षण-व्यवस्थामे सुरक्षित छथि आ व्यवस्थापकक देखरेखमे काज चलि रहल अछि। सूचना पर जिम्मेवार व्यक्तिक पूरा नाम आ युवतीसभक वर्तमान पता नहि छल। भानु प्रताप पुछलनि, ‘एहि अनुसार तँ सभ ठीक अछि। अहाँ सभक अलग कथन अछि।’ नैना कहलीह, ‘कागज कहैत अछि सभ ठीक; पूनम स्वयं कहलीह जे बाहर नहि जएबा दैत छन्हि। एहि अन्तरक जाँच आवश्यक अछि। केवल कार्यालयक सन्देशसँ हुनक प्रत्यक्ष बातक विकल्प नहि भेटत।’ भानु प्रताप सूचना आ परिवारक कथन दुनू आवेदनक संग रखबाक निर्देश देलनि।

किछु समयक लेल कक्षमे नीरवता रहल। बाहर एकटा जीपक इञ्जिन चालू भेल। भानु प्रताप सिपाहीकेँ बजौलनि आ कहलनि जे पूनमक फोटो आ फोन नम्बरक नकल लऽ कागजक संग जोड़ि देब। सिपाही आवेदनक प्राप्ति देबाक प्रक्रिया शुरू केलक।

‘आवेदन दर्ज भऽ गेल?’ रामलाल पुछलनि।

‘आगत-पञ्जीमे लेल जा रहल अछि,’ भानु प्रताप उत्तर देलनि। ‘जाँचक बाद आवश्यक कानूनी कार्रवाई तय होयत।’

‘जँ ओ बन्धक बनाओल गेल छथि तँ?’ नैना पूछलथिन।

‘तखन विषय गम्भीर अछि। हम सोनापुरक सम्बन्धित थानासँ सूचना मिलायबाक प्रयास करब। मुदा अहाँ सभकेँ सेहो जकरा-जकरा नम्बर अछि, ओ दियौ।’

नैना तीनू परिवारक नम्बर, प्रशिक्षण केन्द्रक बदलल नाम आ नीला देवीक मोबाइलक जानकारी देलनि। भानु प्रताप एक बेर सिपाहीक दिस तकि कहलनि, ‘ई आवेदन अलग राखू।’ सिपाही चुपचाप फाइलमे लगौलक।

बाहर निकलैत रामलाल पुछलनि, ‘बेटी, अलग राखू कहलनि, से नीक बात अछि कि खराब?’

‘हम ककरो मनक बात नहि जनैत छी,’ नैना कहलीह। ‘एखन ई देखब जे सूचना पर की काज होइत अछि।’

बरामदामे एकटा महिला अपन छोट बच्चाकेँ गोदमे नेने बैसल छलीह। हुनक पति थानामे पहिने आएल छलाह। महिला सरकिकऽ रामलालकेँ बैसबाक ठाम देलथिन। ‘अहाँक बेटी लापता छथि?’ ओ धीरे पुछलथिन। रामलाल माथ हिलौलनि। महिला कहलथिन, ‘आवेदनक नकल जरूर लऽ लियौ। हमरा पहिने बेर बिना नकल लौटा देल छल।’ हुनक बातमे कोनो उपदेश नहि छल, अनुभव छल।

आधे घण्टाक बाद नकल भेटल। ताहिपर प्राप्तिक समय आ पञ्जी-संख्या लिखल छल। मुदा रामलाल पुछलनि जे प्रारम्भिक जाँचक अधिकारीक नाम के होयत तँ डेस्कपर बैसल आदमी कहलक, ‘साहेब बताएताह।’ नैना ओहि प्रश्नकेँ अपन कॉपीमे लिखि लेलनि। कागज भेटनाइ आवश्यक छल, मुदा कागजसँ पूनमक ठाम एखनो नहि खुलल छल।

बाहर अभय भेटलाह। हुनकर हाथमे छोट नोटबुक छल, मुदा नैनाकेँ देखितहि ओ ओकरा जेबमे राखि देलनि। ‘आवेदन लेल गेल?’

‘हँ। प्राप्ति अछि। मुदा तत्काल कोन कार्रवाई होयत, से स्पष्ट नहि।’

अभय रामलालकेँ प्रणाम केलनि। ‘हम पत्रकार छी, से अहाँ जनैत छी। मुदा अहाँक अनुमति बिना पूनमक नाम वा तस्वीर प्रकाशित नहि करब। एखन परिवारक शान्ति आ हुनक सुरक्षाक बात मुख्य अछि।’

रामलालक आँखि भरि आएल। ‘बाबू, जे साँच अछि, ओ सबकेँ बुझाउ। मुदा हमर बेटीक बदनामी नहि हो।’

‘हम एखन नाम छापबाक बात नहि करैत छी,’ अभय कहलनि। ‘पहिने उपलब्ध जानकारीक मिलान करब। ककरो दोषी कहब, तकर आधार चाही।’

ओ नैनासँ कार्यालयक आवेदन देखलनि, मुदा अपन फोनमे तस्वीर लेबाक पहिने अनुमति मँगलनि। नैना रामलालक दिस देखलनि। रामलाल सहमति देलनि। अभय नम्बर आ समय लिखलनि। ‘ई देखैत छी जे संस्था कोन नामसँ पञ्जीकृत अछि आ प्रशिक्षणक लिखित ठाम कोन अछि,’ ओ कहलनि। ‘जतए सरकारी सहायता चाही, ओहि ठाम परिवारकेँ स्वयं दर्ज करब आवश्यक अछि।’

नैना पुछलथिन, ‘अहाँकेँ थानामे एतेक बेर देखल अछि। भानु प्रतापक स्वभाव केहन अछि?’

‘केवल स्वभावसँ काजक निर्णय नहि होइत छैक,’ अभय उत्तर देलनि। ‘किछु शिकायतमे ओ तत्पर छलाह, किछुमे देरी भेल। एहि मामलामे लिखित प्रगति देखबाक अछि। व्यक्तिगत परिचयक आधारपर भरोसा अथवा आरोप, दुनूमे गलती भऽ सकैत अछि।’

रामलालकेँ बस अड्डा धरि छोड़ब आवश्यक छल। नैना ओकरा संग चललीह। बाटमे एकटा परीक्षाक तैयारी करयवला युवकसभक समूह भेटल। हुनका सभक हाथमे कागज छल—रद्द परीक्षा फेर करएबाक माँग। एक युवक कहैत छल, ‘दू वर्षक परिश्रमक बाद फेर आवेदन भरब? घरमे टका कतएसँ आएत?’ चन्दनक चेहरा नैनाकेँ मोन पड़ल। रोजगार पएबाक बाटमे कतबा लोक अपन घरक सम्पत्ति लगबैत अछि; पूनम सेहो एहनहि आशाक संग गेल छलीह।

घर पहुँचबासँ पहिने रामलालक फोन बजल। रीना छलीह। ‘बाबूजी, एकटा अपरिचित नम्बर सँ फोन आएल छल। कहैत छल जे पूनम प्रशिक्षणमे छथि, बेसी फोन नहि करू।’

‘ककर नाम कहल?’

‘नहि। हम पूछलहुँ तँ फोन काटि देलक।’

रामलाल गाड़ीक भीड़मे ठाढ़ भऽ गेलाह। ‘नम्बर लिखि लेबह?’

‘हँ। अहाँकेँ पठा रहल छी।’

नैना रीना पठौने नम्बर अपन कॉपीमे लिखलनि। ई नम्बर पहिनेवला नीला देवीक नम्बर नहि छल। ओ तुरन्त अभयकेँ सेहो बतौलनि, मुदा ककरो फोनक अनिश्चित स्रोतक कारण ओ नम्बरक सम्बन्धमे आरोप नहि जोड़लनि।

दुपहर ढलैत एकटा कर्मचारी थानासँ फोन केलक। ‘अहाँ सभक आवेदनमे तीनू युवतीक फोटो माँगल गेल अछि। जे नकल अछि, साफ नहि। मूल फोटोक इलेक्ट्रॉनिक प्रति पठा दिअ।’

नैना पुछलथिन, ‘सोनापुरक थानासँ बात भेल?’

‘एखन सूचना तैयार भऽ रहल अछि। फोटो पठाउ।’

ओ फोटो पठौलनि। ई छोट उत्तर छल, मुदा पहिल बेर थानासँ स्वयं फोन आएल छल। नैना ई बात रामलालकेँ बतौलनि। ललिता देवी कहलथिन, ‘ओ लोक खोजब तँ? हमर बच्ची जकर सङ्ग गेलीह, ओ सभ घुरि किएक नहि सकैत छथि?’

नैना हुनका साफ उत्तर नहि दऽ सकलीह। ‘खोज शुरू करएबाक प्रयास चलि रहल अछि,’ एतबे कहलीह।

साँझ अभयक समाचारपत्रक कार्यालयमे एकटा बैठक छल। ओ नैनाकेँ फोनपर बतौलनि जे शहरक सार्वजनिक पञ्जीमे रोजगार संस्थाक नाम भेटल अछि, मुदा प्रशिक्षणक ठामक विवरण स्पष्ट नहि। ‘हम कार्यालयसँ लिखित उत्तर माँगब,’ ओ कहलनि। ‘अहाँ अपन काजक बीच जे वैध रूपसँ देखैत छी, केवल ओही बातक सूचना राखू। कोनो गुप्त फाइल अनधिकृत रूपसँ नहि खोलब।’

‘हम ई बात बुझैत छी,’ नैना कहलीह। ‘हमर सहेली लापता छथि, मुदा एहि कारणेँ गलत काम करब तँ खोजकेँ हानि होयत।’

थानासँ आएबाक बाद रामलाल अपन आवेदनक नकल एकटा पुरान पोथीक बीच राखलनि। रीना पुछलथिन, ‘ई कागज अपन पुरान पोथीक बीच रखलासँ दीदी भेटि

जेतीह?’ रामलाल कहलथिन, ‘केवल कागजसँ नहि। मुदा खोजमे जे कहल जाएत, तकर हिसाब रहत।’

राति नैनाक घरमे सरस्वती देवी पुछलथिन, ‘थानामे की कहल?’

‘आवेदन लेलनि। साक्ष्य माँगलनि। मुदा पूरा पता नहि भेटल,’ नैना उत्तर देलथिन।

माय चूल्हिसँ उतराओल भातक हाँड़ीक ढकना रखलथिन। ‘दुआरि पार कएलहुँ, ई पहिल काज भेल। आब जे जिम्मेवारी लेने छथि, हुनका फेर-फेर पुछैत रहू।’

नैना अपन कॉपीमे थानाक पञ्जी-संख्या लिखलनि, आ ओकर नीचाँ अगिला दिनक दूटा काज—किरणसँ लिखित प्रशिक्षण विवरण माँगब; पूनमक नियुक्तिपत्र आ कार्यालयक पञ्जी एक्के रूपमे अछि कि नहि, से वैध काजक क्रममे जाँचब। बाहर राति उतरि रहल छल। मोबाइलक स्क्रीनपर पूनमक नाम एखनहुँ उत्तरविहीन छल। कागजपर भने हुनक नाम, फोटो आ सहायता माँगबाक समय स्पष्ट लिखल छल। खोज एखन शुरू भेल छल; समाप्त होयब दूर छल।

अध्याय १५ : बदलल नाम

अगिला दिन कार्यालय पहुँचैत नैना अपन मेजपर दूटा नब फाइल देखलनि। कुसुम पहिनेसँ बैसल छलीह। हुनक सोझाँ चाय ठण्ढा भऽ रहल छल। ओ नैनाकेँ देखितहि कहलीह, ‘काल्हि अहाँ छुट्टी लेने रही, तेँ प्रशिक्षण समूहक मिलान एखन बाकी अछि। किरण मैडम एगारह बजे धरि सूची चाहैत छथि।’

‘पूनमक घरक लोक काल्हि कार्यालय अएल छल, से अहाँ जनैत छी,’ नैना कहलीह।

‘जनैत छी। किरण मैडम फोनपर ककरोसँ देर धरि बात करैत छलीह। मुदा हमरा किछु नहि कहलनि।’

‘एहि फाइलमे पूनमक समूह सेहो अछि?’

कुसुम एकटा मोट रजिस्टरक पन्ना पलटलनि। ‘समूह सत्रह-बी। एहि सप्ताहक प्रशिक्षणक उपस्थिति आ नियुक्तिक विवरण मिलान करबाक अछि। अहाँकेँ सूची देल गेल अछि, तेँ देखबामे बाधा नहि। मुदा जे अन्तर भेटय, ओ लिखि मैडमकेँ देब।’

नैना अपन कुरसीपर बैसलीह। बाहर स्वागत-कक्षमे तीन युवक फॉर्म भरि रहल छल। एकटा युवतीक संग हुनक पिता आएल छलाह। ओ सभ पुछैत छलाह जे नियुक्ति कहिया होयत। कर्मचारीक दैनिक काज एखनहुँ सामान्य चलि रहल छल; तीनू युवतीक परिवारक भय कार्यालयक प्रत्येक कोठरी धरि पहुँचल नहि छल।

पहिल फाइल पञ्जीकरणक छल। प्रत्येक अभ्यर्थीक नाम, जन्मतिथि, घरक पता, जमा रकम आ रसीदक क्रमाङ्क लिखल छल। पूनम यादवक नाम ओहिमे स्पष्ट छल। जमा बारह हजार टका, पञ्जीकरण तीन सय पचास। आपातकालीन सम्पर्कमे रामलाल यादव आ नैना मिश्रक नम्बर छल। नैना एहि प्रविष्टिक संग पूनमक रसीद मिलौलनि। रकम आ क्रमाङ्क एक्के छल।

दोसर फाइल प्रशिक्षण समूहक छपल सूची छल। सत्रह-बीक पन्नापर ओहि रसीदक क्रमाङ्कक आगाँ 'पूनम देवी' लिखल छल। घरक ठाम 'नवगढ़' मात्र, पिताक नाम खाली। यात्राक तिथिसँ आगाँ प्रशिक्षण केन्द्र 'सोनापुर'क बदला 'भैरवपुर इकाई' छपल छल। नैना पहिने सोचलीह जे सामान्य लिपिकीय गलती होयत। रोजगार संस्थामे एक्के आदमीक नाम 'कुमारी', 'देवी' अथवा उपनामक संग अलग लिखल देखल गेल छल। मुदा नामक संग नियुक्तिक ठामो बदलल हो, तखन बुझब आवश्यक छल।

ओ कुसुमकेँ पुछलथिन, 'भैरवपुर इकाई कोन ठाम अछि?'

कुसुम गर्दनि उठौलनि। 'हम पहिने ई नाम नहि सुनने छी। किरण मैडमकेँ पुछू। कखनो अस्थायी केन्द्रक नाम बदलैत अछि।'

'बदलैत अछि तँ परिवारकेँ लिखित जानकारी किएक नहि देल जाइत अछि?'

कुसुम अपन कलम राखि देलथिन। 'अहाँक प्रश्न ठीक अछि। मुदा हम सूची टाइप करैत छी, स्थानक निर्णय नहि लैत छी। हम जे जनैत छी, से कहि रहल छी।'

नैना ई उत्तर सुनि चुप भेलीह। कुसुमक स्थिति सेहो सहज नहि छल। सात हजारक वेतनक आशामे काज करयवाली कर्मचारीसँ प्रत्येक गलत निर्णयक उत्तर माँगल जा रहल छल, जखन निर्णय लएनिहार अलग कोठरीमे बैसल छलाह।

तृतीय फाइल भुगतान-सङ्केतक छल। एहि फाइलमे प्रशिक्षण पूरा भेलाक बादक सम्भावित वेतन दर्ज छल। पूनमक रसीद नम्बरक आगाँ 'पी. यादव' लिखल छल, आ मासिक राशि 'आठ हजार पाँच सय'। नैनाकेँ पूनमक पहिल विज्ञापन मोन पड़ल —'अधिकतम पन्द्रह हजार'। विज्ञापनमे अधिकतम लिखल छल, निश्चित नहि। ई अन्तर स्वयंमे छलक प्रमाण नहि छल। मुदा पूनमकेँ प्रशिक्षणक पहिने कतेक राशि भेटबाक सम्भावना स्पष्ट कऽ कहल गेल छल? ओ जखन पुछने छलीह, तखन किरण अनुभवक अनुसार वेतन बदलबाक बात कहने छलीह। आब आठ हजार पाँच सयक प्रविष्टि पूनमक घरक लोककेँ शायद कखनो देखाओल नहि गेल छल।

एक्के रसीद क्रमाङ्क, तीन रूपमे नाम; दू तरहक प्रशिक्षण-ठाम; तीन स्तरक वेतनक चर्चा। नैना अपन मिलान-पन्नामे सभ विवरण अलग-अलग लिखलनि। ओ मूल अभिलेखकेँ न मोड़लनि, न फेर-बदल कएलनि। रजिस्टरक छपल पन्ना जखन कार्यालयक नियमित मिलानक लेल हुनका देल गेल छल, तखन ओकर अन्तर लिखनाइ हुनक काजक हिस्सा छल।

नरेश मण्डल अपन कोठरीसँ बाहर अएलाह। हाथमे बहीक छोट ढेरी छल। नैना हुनका प्रणाम कऽ पुछलथिन, ‘नरेश जी, एक्के रसीदक क्रमाङ्क अलग-अलग सूचीमे भेटय तँ मिलान कोना करैत छी?’

नरेश ठमकि गेलाह। ‘रसीदक क्रमाङ्क तँ बदलबाक नहि चाही। नामक अक्षर गलत हो सकैत अछि, मुदा रकम आ भुगतानक आधार मिलबाक चाही। कोन समूह?’

‘सत्रह-बी।’

नरेशक मुँहपर कोनो विशेष भाव नहि आएल। ‘ओहि समूहक हिसाब एखन पूरा बन्द नहि भेल अछि। किछु भुगतान प्रशिक्षण केन्द्रसँ पुष्ट भेला पर लेखामे चढ़ैत अछि।’

‘ठामो अलग लिखल अछि।’

‘तखन स्थानक लिखित आदेश देखबाक चाही,’ नरेश कहलक। ‘हम हिसाब जाँचि सकैत छी, मुदा केन्द्र बदलबाक निर्देश हमर हाथमे नहि।’

‘अहाँक लग आदेशक नकल अछि?’

‘नहि। अभिलेख शाखामे होयत। अहाँ मिलान-पन्नामे प्रश्न लिखू। जखन अधिकारी उत्तर देताह, तखन हिसाब मिलत।’

नैना अपन कागजमे ‘स्थान-परिवर्तनक आदेश उपलब्ध कराओल जाए’ लिखलनि। नरेश आगाँ बढ़ि गेलाह। ओहि समय हुनका सामान्य लेखापाल बुझाइत छलाह—संख्या, रसीद आ भुगतानक संग जीबैत आदमी। नैना नहि जनैत छलीह जे ओ अपन कोठरीमे की-किछु जानैत छथि। बिना आधारक कल्पना करबासँ प्रश्न पूछब बेसी उचित छल।

दस बजिकऽ पचास मिनटपर किरण अपन कोठरीसँ बाहर अएलीह। हुनक हाथमे मोबाइल छल। ‘मिलान भऽ गेल?’

‘किछु प्रश्न अछि,’ नैना उत्तर देलथिन।

किरण सूची लऽ पढ़लनि। ‘पूनम देवी आ पूनम यादव? एहन नामक रूप बदलैत रहैत अछि। एकरा पर एतेक ध्यान देबाक की आवश्यकता?’

‘केवल नाम नहि। प्रशिक्षणक ठाम सोनापुरसँ भैरवपुर लिखल अछि। भुगतान-सूचीमे अलग राशि अछि। परिवार पूरा पता माँगि रहल अछि।’

किरणक आँखिमे झुँझलाहट अएलनि। ‘अहाँ फेर ओही विषय उठा रहल छी। हम काल्हि कहने रही जे प्रभारीसँ विवरण मँगाओल जा रहल अछि।’

‘तँ आब उत्तर भेटल?’

‘अखन नहि। अहाँक काज मिलान करब अछि, अनुसन्धान नहि।’

नैना अपन स्वर सम्हारि कहलीह, ‘मिलान करैत छी, तेँ अन्तर लिखि रहल छी। एहि अन्तरकेँ दूर करब सेहो काजक हिस्सा अछि।’

किरण किछु क्षण नैनाकेँ तकलीह। ‘ठीक अछि। एकटा लिखित टिप्पणी बनाउ। मुदा कार्यालयक कागज बाहर नहि लऽ जाएब।’

‘हम कोनो मूल कागज बाहर नहि लऽ जाइत छी,’ नैना कहलीह। ‘पूनमक परिवारक अपन कागज हुनका लग अछि। कार्यालयक अन्तरक लिखित उत्तर चाहैत छी।’

किरण पन्ना सम्हारि अपन कोठरीमे चली गेलीह। कुसुम धीरे कहलीह, ‘अहाँ जे लिखैत छी, ओकरा तारिखक संग रखैत जाउ। काल्हि कियो कहि देत जे प्रश्न उठल नहि छल।’

‘अहाँकेँ सेहो ई अन्तर देखाइत अछि?’ नैना पुछलथिन।

‘हम पन्ना टाइप नहि केने छी। मुदा नाम बदलल अछि, से अन्हरो देखत। एकटा नाम गलत लिखनाइ आ पूरा ठाम नब कऽ लिखि देनाइ अलग बात अछि।’

दुपहरिया कार्यालयक टेलिफोन बजल। कुसुम उठौलनि। ओहि दिससँ केओ पूनम यादवक बैचक विषयमे पुछैत छल। कुसुम उत्तर देलथिन, 'जिम्मेवार अधिकारीसँ बात करू।' फोन राखि ओ नैनाकेँ कहलीह, 'अपरिचित पुरुष छल। पुछैत छल जे सत्रह-बीक सूची तैयार भऽ गेल?'

'नाम कहल?'

'नहि। कहलक, बादमे फोन करत।'

नैना एहि फोनकेँ बेसी अर्थ नहि देलथिन। संस्थामे ठीकेदार, कर्मचारी आ अभ्यर्थीक अनेक फोन अबैत रहैत छल। मुदा जकरा सूची चाही, ओकर नाम आ कामक सम्बन्ध बुझनाइ उचित छल। ओ कुसुमकेँ सलाह देलथिन जे अगिला बेर फोन आए तँ नाम आ सम्पर्क स्पष्ट पुछल जाए।

एहि बीच स्वागत-कक्षमे आएल युवती अपन आवेदनक प्राप्ति माँगि रहल छलीह। हुनक नाम उमा कर्ण छल। छओ मास पहिने ओ एकटा लघु उद्योगमे अस्थायी नोकरी पएने छलीह, मुदा तीन मासक बाद काम बन्द भऽ गेल छल। आब ओ पुनः आवेदन देब चाहैत छलीह। कुसुम हुनक पुरान प्रविष्टि ताकलनि।

'अहाँक पुरान नियुक्ति तखन विधिवत भेल छल ने?' कुसुम पुछलथिन।

'भेल छल। वेतन सेहो भेटल,' उमा कहलीह। 'मुदा जे काम समाप्त भेल, तकर लिखित सूचना हमरा देरिसँ भेटल। एखन नब ठाम आवेदन करब, तकर प्रक्रिया जानय अएल छी।'

उमा रहल विवरण देखबितहि अपन नामक आगाँ लिखल फोन नम्बर गलत देखलथिन। 'एहि नम्बरक अन्तिम दू अंक उल्टा अछि,' ओ कहलीह। कुसुम सुधारक फार्म बढ़ौलनि। उमा भरि कऽ हस्ताक्षर केलनि। आधा घण्टामे सुधारक प्राप्ति सेहो भेटि गेलनि। ओ प्रसन्न भऽ उठलीह।

नैना एहि सामान्य घटनाकेँ ध्यानसँ देखलीह। एकटा गलत फोन नम्बर सुधारब असम्भव नहि छल; अधिकारी उत्तर देत तँ अभिलेख ठीक भऽ सकैत छल। एहि कारणेँ

पूनमक विषयमे प्रत्येक गलतीकेँ अपराध मानब उचित नहि। मुदा उमा स्वयं उपस्थित छलीह, अपन नाम आ नम्बर ठीक करा सकैत छलीह। पूनम ककरो सोझाँ उपस्थित नहि छलीह, आ हुनक परिवारकेँ ठेगाना तक नहि बताओल जा रहल छल। ई दुनू स्थितिक अन्तर नैनाकेँ स्पष्ट बुझाइत छल।

उमा बाहर जएबाक पहिने नैनासँ पुछलथिन, 'अहाँ एतए नब नोकरी करैत छी?'

'हँ। किछुए मास भेल अछि।'

'हम पहिने अएल रही तँ अहाँ नहि छलीह। कर्मचारी बदलैत रहैत छथि, तेँ काजकेँ फेर बुझए पड़ैत अछि। अहाँ जँ रहब तँ हमर नब आवेदनक प्रश्न पूछब।'

'कार्यालयक नियम अनुसार जे जानकारी देबाक अछि, हम देब,' नैना उत्तर देलथिन।

उमा चली गेलीह। नैना सोचलीह जे रोजगार संस्था केवल कागजक ढेरी नहि अछि। किछु लोक एतयसँ सचमुच काम पबैत छथि, किछु निराश घुरैत छथि, किछु अपन जमा रकम छोड़ि दैत छथि। एहन मिश्रित अनुभवक कारणेँ संस्था पर भरोसा बनैत सेहो अछि आ ओकर गलत व्यवस्था पकड़ब कठिन सेहो भऽ जाइत अछि।

कुसुम एकटा पुरान रजिस्टरक पन्ना पलटैत कहलीह, 'अहाँ देखलहुँ, उमाक नम्बर सुधरल। सत्रह-बीक नामो सुधरि सकैत अछि। केवल जे बदललक, ओकरा लिखित रूपमे जनाउ पड़त।'

'आ जँ ठाम बदलबाक आदेशे नहि भेटय?' नैना पुछलथिन।

'तखन प्रश्न आओर गम्भीर होयत,' कुसुम उत्तर देलथिन। 'हम एकरा सामान्य लिपिकीय भूल कहि अपनेसँ काटि नहि देब।'

नैना हुनक बातपर ध्यान देलनि। नौकरीक विवशताक बीचो कुसुम एतबा स्पष्ट कहि रहल छलीह, से छोट बात नहि छल। दुनू अपन-अपन काजमे लगि गेलीह। कुसुम नब आवेदनक क्रमाङ्क लिखय लगलीह; नैना पुरान सूचीमे जे पाँति स्पष्ट छल तकरा 'मिलान भेल' लिखलनि, आ जकर उत्तर नहि छल तकरा अलग छोड़ि देलनि। ई छोट भेद रखब हुनका लेल महत्त्वपूर्ण छल।

दुपहरियासँ कनेक पहिने किरण नरेशकेँ अपन कोठरीमे बजौलथिन। दुआरि आधा बन्द छल। भीतर की बात भेल, से नैना नहि सुनि सकलीह। थोड़े देर बाद नरेश बाहर अएलाह तँ हुनक हाथमे दूटा पन्ना छल। ओ अपन मेजपर बैसि पहिने पन्नाक तिथि देखलनि, फेर कार्यालयक पुरान हिसाबक बही खोललनि। हुनक चेहरापर चिन्ता छल कि सामान्य कामक थकान, नैना नहि जनैत छलीह। जखन ओ अपन मेज लग अएलाह, तखन केवल नियमक बात कएलनि; नैना सेहो हुनकासँ अपुष्ट आशङ्का नहि पुछलनि।

बाहर घाम चढ़ि गेल छल। सड़कक पार चायवाला गिलास धोइत छल। एकटा बुढ़ लोक पर्चा पढ़ि रहल छल जे युवा बेरोजगारक लेल 'निश्चित नियुक्ति'क वचन दैत छल। नैना पर्चाक ओहि शब्दपर सोचलीह—निश्चित। जँ नोकरी निश्चित रहितैक, तँ पूनमकेँ अपन घरक चाँदीक गहना गिरवी रखबाक जरूरत नहि पड़ितैक। मुदा गरीब परिवारक लेल सम्भावना आ वचनक बीचक अन्तर बुझब प्रायः सबसँ महँग पाठ बनि जाइत अछि।

दुपहरियाक भोजनक समय नैना आ कुसुम कार्यालयक पाछाँ छोट आँगनमे बैसलीह। कुसुम अपन डिबियामे भात आ भुजिया लेने छलीह। नैना मायक देल रोटी खोललनि। कुसुम पुछलथिन, 'पूनम अहाँक के लगतीह?'

'विद्यालयक समयसँ सहेली छथि।'

'तेँ अहाँकेँ एतेक चिन्ता अछि।'

'जँ अपरिचित युवती होइतथि तैयो हुनका सहायता मँगबाक बात गम्भीर रहैत,' नैना उत्तर देलथिन। 'मुदा पूनमक स्वर सुनलाक बाद एक-एक घण्टा भारी लगैत अछि।'

कुसुम चुप रहलिह। थोड़े देर बाद कहलीह, 'हम एतए काज करैत छी। हमरा ई नहि चाही जे कार्यालयक गलतीक कारण ककरो हानि हो। मुदा एहि समय हमर घरक एक्के नियमित कमाइ ई अछि।'

'हम अहाँक विवशता बुझैत छी,' नैना कहलीह। 'साँच कहब आ बेबुनियाद आरोप लगएब अलग बात अछि। हम पहिल काज करब चाहैत छी, दोसर नहि।'

साँझ चारि बजे धरि किरणक लिखित उत्तर नहि आएल। नैना मिलान-पत्रक दू प्रति तैयार केलनि। एकटा अधिकारीक लेल जमा देलनि, दोसर कार्यालयक चलती पञ्जीमे प्राप्तिक रूपमे रखल गेल। मूल रजिस्टर ओहि अलमारीमे घुरा देल गेल, जतएसँ सुबह निकालल गेल छल। नैना कागजक नम्बर अपन निजी कॉपीमे केवल एतेक लिखलनि जे कार्यालयमे कोन पन्नापर प्रश्न उठाओल गेल; ओ गोपनीय अभ्यर्थीक पूरा विवरण अपने संग नहि नेलीह।

फेर ओ परिवारक सार्वजनिक सम्पर्कपर फोन केलनि। रामलाल फोन उठौलनि। ‘काका, संस्था एखनहुँ पूरा पता नहि देलक अछि। हम लिखित रूपमे प्रश्न जमा केलहुँ अछि। थानामे जे आवेदन देल अछि, ओकर क्रमाङ्क सुरक्षित राखब।’

‘पूनमक किछु खबरि?’

‘नहि। जखन भेटत, सबसँ पहिने अहाँकेँ कहब।’

‘हम बिहान फेर थानामे जाएब,’ रामलाल कहलथिन। ‘रीना राति भरि फोनक आगाँ बैसल रहैत अछि। ओ कहैत अछि जे जखन दीदीक फोन आएत तँ घरमे केओ तुरन्त उठाउ।’

नैनाक मुँहसँ उत्तर नहि निकलल। ओ केवल कहलथिन, ‘फोन चालू राखब। हम सेहो रखैत छी।’

कार्यालय बन्द होएबाक समय नरेश फेर नैनाक मेज लग अएलाह। ओ नीच स्वरमे पुछलनि, ‘अहाँ सत्रह-बीक मिलान-पत्र जमा केलहुँ?’

‘हँ। नाम, स्थान आ वेतनक अन्तर लिखल अछि।’

नरेश आँखि नीचाँ कऽ कहलनि, ‘जे अन्तर भेटल, ओकर लिखित उत्तर बिना ओहि प्रविष्टिक भुगतान सही नहि मानब। ई नियम सबहक लेल एक्के अछि।’

‘अहाँ स्वयं जाँचब?’

‘अपन हिस्साक हिसाब देखब,’ नरेश उत्तर देलनि। ‘बाकी निर्णय अधिकारीक अछि।’

ओ चलि गेलाह। नैना तखन धरि रजिस्टरक पन्नासँ नजरि नहि हटा सकलीह। एका दिस पूनम यादव, दोसर दिस पूनम देवी, तेसर पन्नापर पी. यादव। सम्भव छल जे तीनू एक्के युवतीक अपूर्ण परिचय हो। मुदा जँ कार्यालय अपने अभ्यर्थीक नाम, ठाम आ मजदूरी ठीकसँ नहि लिखि सकैत अछि तँ अनुपस्थित युवतीकेँ कोना खोजत? प्रश्नक उत्तर एखन कागजमे नहि छल।

साँझ अभय भेटलाह। नैना हुनका केवल ओहि बातक जानकारी देलथिन जे आधिकारिक उत्तर माँगल गेल अछि आ स्थानक विवरणमे अन्तर भेटल अछि। ओ कोनो मूल पन्ना वा अभ्यर्थीसभक निजी सूची नहि देखौलनि। अभय कहलनि, ‘ठीक अछि। जँ लिखित उत्तर भेटय तँ परिवार ओकर नकल माँगि सकैत अछि। एखन हम समाचारमे कोनो नब आरोप नहि जोड़ब।’

बस अड्डापर पहुँचैत नैना देखलनि जे एकटा नब रोजगार-विज्ञापन चिपकल अछि। नीचाँ लिखल छल—‘सीमित स्थान, तत्काल पञ्जीकरण’। ओकरा ठीक लग दू युवक विचार करैत छल जे प्रशिक्षणक शुल्क देब कि नहि। नैना ओहि पन्नाकेँ देखैत रहलिह। विज्ञापनक रङ्ग नव छल, मुदा प्रश्न पुरान—काज कतए, केकरा अधीन, कतेक मजदूरी, आ कोन कागजपर लिखित भरोसा? पूनम एही सभ प्रश्नक स्पष्ट उत्तर बिना यात्रा शुरू केने छलीह।

नैना अपन झोराक भीतरसँ पूनमक लिखल एकटा पुरान चिट्ठी निकाललनि। विद्यालयक समयमे दुनू एक-दोसराकेँ परीक्षा लेल प्रश्न लिखि दैत छलीह। ओहि चिट्ठीपर पूनम स्पष्ट अक्षरमे अपन पूरा नाम लिखने छलीह। नैना कागज घुरा देलनि। एखन पूनमक सही नाम एतबे नहि, हुनक सुरक्षित ठाम ठीक रूपमे जानब आवश्यक छल।

घर पहुँचि ओ कॉपी खोललनि। पहिल पन्नापर पूनमक अन्तिम फोनक समय, दोसरपर थानाक पञ्जी-संख्या, तेसरपर कार्यालयमे देल मिलान-पत्रक क्रम लिखल छल। नैना एखन कोनो निष्कर्ष नहि लिखलनि। केवल एकटा वाक्य जोड़लनि—‘अगिला काज: लिखित उत्तरक प्रतीक्षा नहि, उत्तर माँगबाक क्रम जारी।’ ओ मोबाइल अपन तकियाक

कात राखलनि। पूनमक नम्बरपर घण्टी एखनहुँ नहि जाइत छल, मुदा नैनाकेँ बुझा गेलनि जे ओकर खोजक बाट आब नाम आ पताक एहि बदलल पाँतिसभक बीचसँ सेहो जाइत अछि।

अध्याय १६ : झूठक कागज

नैना दोसर दिन कार्यालय पहुँचलिह तँ मुख्य दुआरि लग अजीब चहल-पहल छल। स्वागत-कक्षक मेजपर सामान्य आवेदनक ढेरीक संग तीनटा उज्जर लिफाफा राखल छल। कुसुम एकटा लिफाफाक ऊपर लिखल नाम पढ़ि रहल छलीह। बाहर ठाढ़ वृद्धा हाथमे कपड़ाक थैली नेने बारम्बार पुछैत छलीह, ‘बाबू, जे कागज परसू देलहुँ, ओकर उत्तर आइ भेटत ने?’ हुनक सङ्ग लगभग बीस वर्षक युवक छल, जे मायक बाँहि पकड़ि हुनका भीड़सँ कनेक अलग राखने छल।

नैना अपन झोरा मेजक नीचाँ रखलनि। कुसुम आँखिसँ इशारा कऽ हुनका कात बजौलथिन। ‘सत्रह-बीक विषयमे अधिकारीक उत्तर अएल अछि। मुदा एहि लिफाफामे जे सूची अछि, ओ काल्हिक पञ्जीसँ मेल नहि खाइत अछि।’

‘किरण मैडम देखलनि?’

‘हँ। हुनकेँ दियए पड़त। पहिने ओ कहने छलीह जे सूची जसक तस टाइप कऽ दिअ। मुदा अहाँक मिलान-पत्रक कारण हम फेर देखैत छी।’

नैना लिफाफा हाथमे लेबासँ पहिने पुछलथिन, ‘ई हमर दैनिक मिलानक फाइलमे जोड़बाक अछि?’

‘हँ। एखन आगत-पञ्जीमे नाम चढ़ाओल अछि। भीतरक सूची जँ सही हो, तँ भुगतानक अभिलेख सुधरत।’

लिफाफाक भीतर प्रशिक्षण-समाप्तिक एकटा प्रमाणपत्रक छपल नकल छल। ऊपर ‘भैरवपुर कौशल इकाई’क नाम, नीचाँ सत्रह-बीक अभ्यर्थीसभक सूची। पूनमक नाम फेर बदलल छल। एतय ‘पूनम कुमारी’ लिखल छल, पिताक नाम रामलाल ठीक छल, मुदा जन्मतिथिक महीना अलग छल। ओहि पाँतिक आगाँ प्रशिक्षण पूरा भेलाक तिथि लिखल छल—पूनमक नवगढ़सँ प्रस्थानक एक दिन पहिने।

नैना पन्ना फेर देखलनि। पहिने हुनका लागल जे अङ्क उल्टा छपि गेल होयत। मुदा एहि प्रमाणपत्रक अर्थ केवल तारीख नहि छल। जँ प्रशिक्षण पूनमक जाएबासँ पहिने पूरा देखाओल गेल अछि तँ कागज बनौनिहार केओ घटनाक वास्तविक क्रम नहि देखलक, अथवा देखियो गलत लिखलक। दुनूमे सँ कोन बात सत्य अछि, से एखन कहब कठिन छल।

‘कुसुम, अहाँ यात्राक तिथि पञ्जीमे देखलहुँ?’ नैना पुछलथिन।

कुसुम रजिस्टर खोललथिन। ‘ई देखू। बसक टिकटवला दिन। अहाँक सहेलीक पिताक लग मूल टिकट अछि। ओहि प्रमाणपत्रक तिथि दोसर अछि।’

‘की एहि समूहमे ककरो वास्तवमे प्रशिक्षण पूरा भेल अछि?’

‘हमरा एतबा नहि मालूम। सोनापुर सँ फोन आएल छल जे सूची पठाउ। प्रमाणपत्रक नकल आजु अएल अछि।’

नैना अपन मेजपर एकटा मिलान-पत्र खोललनि। लिखलनि—‘प्रशिक्षण-समाप्तिक तिथि आ यात्राक तिथिमे असङ्गति’। तकर नीचाँ नामक तीन रूप आ स्थानक दू विवरण जोड़लनि। सभ पाँतिक आगाँ प्रश्नचिह्न नहि लगौलनि; जतए प्रमाण मिलल छल, ओतए ‘मिलान आवश्यक’ लिखलनि। हुनका बुझाइत छल जे लिखित भाषा जतेक स्पष्ट रहत, ततेक कम लोक एकर अर्थ अपन सुविधासँ बदलि सकत।

एही बीच स्वागत-कक्षमे ठाढ़ वृद्धा भीतर अएलीह। हुनक नाम कमला देवी छल। ओ अपन बेटा मोहनक लेल प्रशिक्षणक जमा राशि वापस मँगि रहल छलीह। मोहनकेँ पन्द्रह दिन पहिने कहल गेल छल जे नियुक्ति निश्चित अछि; कागजक लेल डेढ़ हजार टका जमा कराओल गेल। आब फोनपर कहैत छथि जे पद भरि गेल अछि।

‘हम खेतमे मजदूरी करैत छी,’ कमला देवी कहलीह। ‘डेढ़ हजार कमाबयमे कतेक दिन जाइत अछि, अहाँ बुझैत छी? पद नहि अछि तँ टका घुरा दिअ।’

नैना हुनक रसीद देखलनि। रसीदपर संस्थाक नाम छल, मुदा जे दस्तखत छल से कार्यालयक निर्धारित रसीदक लेखासँ मेल नहि खाइत छल। 'ई अहाँकेँ कोन मेजसँ भेटल?' ओ पुछलथिन।

मोहन कहल, 'नीचाँ बरामदामे एक आदमी बैसल छल। कहलक जे प्रशिक्षणक नाम लिखि दैत छी। बादमे ऊपर जेता।'

'हुनक नाम?'

'अवधेश साह। नम्बर सेहो देने छल।'

कुसुम धीरे कहलथिन, 'अवधेश एतए नियमित कर्मचारी नहि छथि। कखनो अभ्यर्थी लऽ अबैत छथि।'

नैना कमला देवीकेँ कहलीह, 'अहाँक कागज हम आगत-पञ्जीमे दर्ज करा दैत छी। मुदा हमरा अपना हाथसँ टका घुरेबाक अधिकार नहि अछि। लिखित शिकायत दियौ; प्राप्ति लऽ जाउ। जकरा पैसा देलहुँ, ओकर नाम आ तारीख सेहो लिखू।'

कमला देवी थैलीसँ मोड़ल कागज निकाललनि। मोहन ओहिपर लिखय लागल। नैनाकेँ हुनक हाथक काँपब देखाइत छल। ओ केवल बेरोजगार युवकक लज्जा नहि छल; मायक मेहनतक धन लौटाउ नहि सकबाक विवशता छल।

किरणक कोठरीसँ घण्टी बजल। कुसुम लिखित उत्तरक पन्ना नेने भीतर गेलीह। थोड़े देर बाद किरण स्वयं बाहर अएलीह। हुनक साड़ीक पल्लू बेसी सुघरि राखल छल, मुदा आँखिमे राति कम सुतबाक छाप छल। ओ नैनाक मेजक सोझाँ ठाढ़ भऽ कहलीह, 'एहि प्रशिक्षण प्रमाणपत्रमे अहाँ फेर गलती देखलहुँ?'

'यात्रासँ पहिने प्रशिक्षण पूरा देखाओल गेल अछि। ई तिथि सुधरबाक चाही। स्थानक पूरा पता सेहो नहि अछि।'

'कम्प्यूटरमे पुरान ढाँचा रहि गेल होयत। एहन बात कार्यालयमे होइत रहैत अछि।'

'तखन सुधरल प्रमाणपत्र मँगाउ। पूनमक घरक लोक हुनक पता पूछैत छथि।'

किरण हाथक कागज मोड़ि देलथिन। ‘सुनू नैना, अहाँ कर्मचारी छी। हम अहाँकेँ पहिने सेहो कहलहुँ जे अपन काजक सीमा बुझू। परिवारक चिन्ता हमरो बुझाइत अछि। मुदा जँ प्रत्येक गलतीपर अहाँ पूरा कार्यालयक काम रोकि देब तँ बाकी लोकक नियुक्ति के करत?’

‘हम ककरो काज रोकि नहि रहल छी,’ नैना कहलीह। ‘जहि कागजपर भुगतानक पुष्टि होयत, ओहि कागजमे तिथिये गलत अछि। लेखा विभाग सेहो एकर पुष्टि माँगत।’

‘नरेशजी हिसाब देखताह। हुनका छोड़ि दिअ।’

‘नरेशजी काल्हि स्पष्ट कहलनि जे लिखित उत्तर बिना भुगतान सही नहि मानताह।’

किरणक चेहरापर पहिल बेर कठोरता आएल। ‘हुनका जे कहबाक अछि, हम सुनब। अहाँ लिखित प्रश्न दऽ चुकल छी। आब ओकर उत्तरक प्रतीक्षा करू।’

नैना जानैत छलीह जे किरणक बातमे पदक अधिकार अछि। ओ बहस बढ़ौलनि नहि। केवल पुछलथिन, ‘पूनमक परिवारकेँ प्रशिक्षणक पूरा पता कहिया देल जाएत?’

‘अखन प्रभारीसँ सम्पर्क चलि रहल अछि।’

‘एहि उत्तरक तारीख लिखि देब, तँ परिवारकेँ कामक स्थिति बुझा सकब।’

किरण सीधे उत्तर नहि देलथिन। ‘हम रतन बाबूसँ बात करब,’ कहि ओ भीतर चली गेलीह।

किरणक कोठरीक दुआरि बन्द भेलाक बाद कार्यालयक चपरासी हरि नारायण दास एकटा मोट फाइल नैना लग राखि देलक। ‘मैडम कहलथिन जे समूह सत्रह-बीक उपस्थिति-पत्रक नकल आजु तैयार हो। मुख्य प्रति कार्यालयमे रहत,’ ओ कहलक। नैना फाइल खोललनि। एक पन्नापर प्रशिक्षणक सात दिनक हाजिरी छपल छल। प्रत्येक दिनक आगाँ नाम आ खाली हस्ताक्षरक कोठरी। अन्तिम पन्नापर छपल निर्देश छल जे मुख्य कार्यालयकेँ समूहक उपस्थिति प्रमाणित कऽ पठाओल जाए।

‘हाजिरीक पुष्टि के करत?’ नैना पुछलथिन।

‘हमरा की बुझल? अहाँक मेजपर पठेबाक कहल गेल,’ हरि नारायण कहलक।

नैना पहिल पन्ना देखलनि। पूनमक नाम ओही तरह ‘पूनम कुमारी’ छल, मुदा दू दिनक आगाँ छोट अङ्कमे ‘उपस्थित’ लिखल छल। ओहि दू दिन पूनम सोनापुरक बाटमे छलीह। नैनाकेँ हुनक बस-यात्राक दिन आ अन्तिम फोनक समय स्पष्ट मोन छल। ओ लिखित सत्यापन बिना कोनो नब उपस्थितिक सङ्केत जोड़बाक स्थिति मे नहि छलीह।

कुसुम नजदीक आबि कहलीह, ‘ई छपल पन्ना ककरो हस्ताक्षर बिना तैयार भेल अछि। प्रशिक्षकक नाम सेहो नहि अछि।’

‘तखन जखन धरि केन्द्रक मूल हाजिरी नहि भेटय, मुख्य कार्यालयसँ पुष्टि कोना होयत?’ नैना कहलथिन।

हरि नारायण अपन हाथ झाड़ैत बजल, ‘अहाँ सभ अधिकारीसँ पुछू। हमरा तँ कागज पहुँचाबय देल गेल छल।’ ओ आगाँ बढ़ि गेल।

नैना एकटा अलग टिप्पणी लिखलनि—‘केन्द्रक प्रमाणित उपस्थिति-पञ्जी उपलब्ध नहि। अधोलिखित अवधि मुख्य कार्यालयसँ सत्यापित नहि भेल।’ ओहि टिप्पणीपर अपन नामक आद्याक्षर आ दिनाङ्क लिखलनि। छपल उपस्थितिक पाँति ओ काटलीह नहि। जे लिखल अछि, ओ प्रमाण अछि कि नहि, एहि बातक फैसला ओ अपन मनसँ करबाक पक्षमे नहि छलीह।

कुसुम पुछलथिन, ‘किरण मैडमकेँ ई टिप्पणी रुचतनि?’

‘रुचबाक प्रश्न नहि। हम जे दिन नवगढ़क कार्यालयमे बैसल रही, ओहि दिन भैरवपुरमे पूनम उपस्थित छलीह कि नहि, एतबाक जानकारी हमरा नहि अछि।’

एहि वाक्यक बाद दुनू किछु देर चुप रहलीह। बाहरोड़पर घण्टी बजल। एकटा नव अभ्यर्थी पुछैत छल जे आठ हजार पाँच सय मासिक वेतनवला काममे भोजन आ रहबाक व्यवस्था अलगसँ भेटत कि नहि। कुसुम ओकरा लिखित शर्त माँगबाक सलाह देलथिन। युवक कहल, ‘विज्ञापनमे तँ रहबाक सुविधा लिखल अछि।’ कुसुम बुझौलथिन जे विज्ञापन

आ नियुक्तिपत्रक वचनमे अन्तर होइछ; खर्च कटत कि नहि, से लिखित रूपमे देखनाइ आवश्यक अछि।

नैना सुनैत रहलीह। पूनमक कागजमे पन्द्रह हजार धरि आमदनीक आश्वासन छल, हिसाबमे आठ हजार पाँच सयक प्रविष्टि, आ आब प्रशिक्षण-समाप्तिक तिथि पहिनेसँ लिखल। ओ सोचलीह—जखन एकटा युवती काज लेल घर छोड़ैत अछि, तखन ओकरा केवल वेतन नहि, सुरक्षित ठाम आ सही सूचना सेहो चाही। एहि तीनूमे सँ एको बात निश्चिन्त नहि हो तँ ओकर परिवार कोना निश्चिन्त रहत?

दुपहरियामे नरेश मण्डल कार्यालयक पाछाँक कोठरीसँ हिसाबक बही नेने बाहर अएलाह। नैना हुनका मिलान-पत्र देखेबाक अनुमति माँगलनि। नरेश प्रमाणपत्रक तिथि पढ़लनि, फेर अपन बहीमे एकटा प्रविष्टि ताकलनि। ‘ई भुगतान प्रशिक्षण शुरू होएबाक बादक कहल गेल अछि,’ ओ धीरे बजलाह। ‘जँ समाप्तिक प्रमाणपत्र पहिने बनल अछि तँ एकटा विसंगति अछि। मुदा कोना बनल, से हम नहि जनैत छी।’

‘ई कागजपर हस्ताक्षर केकर अछि?’

‘भैरवपुर इकाईक प्रभारीक नाम लिखल अछि। हम हुनकासँ कखनो भेंट नहि केने छी। केवल छपल नामसँ हस्ताक्षरक सत्यापन नहि होयत।’

‘तखन प्रमाणपत्र झूठ अछि?’ नैना पुछलथिन।

नरेश नैनाक दिस सीधा तकलनि। ‘असङ्गति आ झूठक बीच जाँचक दूरी होइत अछि। तिथि गलत किएक अछि, ई बुझबाक चाही। जँ जानि-बूझि गलत कागज बनाओल गेल अछि तँ बात बहुत पैघ अछि। एखन हम खातामे प्रश्न उठायब।’

नैना हुनक उत्तर मनसँ सुनलनि। जखन स्वयंक मन भयभीत हो, तखन प्रत्येक सन्दिग्ध बात अपराधक पूरा प्रमाण लगैत अछि। मुदा जाँच एही तरह नहि चलैत अछि। ओ नरेशकेँ धन्यवाद देलथिन।

तहि बीच कुसुम एकटा कागज लऽ अएलीह। ‘मोहनक रसीद जकरा लग अहाँ दऽ रहल छलहुँ, ओकर क्रमाङ्क अभिलेखमे नहि भेटल। अवधेशक नाम कर्मचारी-पञ्जीमे सेहो नहि अछि।’

नरेश कहलनि, ‘ई अलग शिकायत अछि। जँ संस्था अपन नामपर बनल रसीदक उत्तरदायित्व नहि लेत तँ अभ्यर्थीकेँ लिखित जानकारी देबय पड़त। रसीद असली कि नकली, से जाँचि कऽ कहू।’

नैना चकित भेलीह। एक्के दिन दू तरहक सन्दिग्ध कागज सोझाँ छल—एकटा संस्थाक नियमित फाइलमे, दोसर गरीब मायक हाथमे। दुनूक सम्बन्ध सीधा-सीधा प्रमाणित नहि छल। मुदा दुनू कागजक कारण लोकक जीवनमे ठोस हानि भऽ रहल छल। पूनमक पता नहि भेटैत छल; मोहनक जमा धन अटकल छल।

दुपहरियाक भोजनक समय कुसुम कहलथिन, ‘आइ अहाँ बहुत प्रश्न पुछलहुँ। नौकरीपर असर पड़त तँ?’

‘डर तँ लगैत अछि,’ नैना स्वीकार केलथिन। ‘घरमे मायक औषधि, चन्दनक ऋण आ रोजक खर्च अछि। पहिल वेतनसँ सभ ठीक नहि भेल। मुदा पूनमक घर जाइत समय काकाक आँखि देखैत छी तँ प्रश्न दबा नहि सकैत छी।’

कुसुम अपन डब्बा बन्द करैत कहलीह, ‘हमरो घरक हालत बहुत नीक नहि। तेँ जे बात पञ्जीमे स्पष्ट अछि, केवल ओतेक कहब। झूठपर हस्ताक्षर नहि करब।’

‘एतबे बहुत पैघ बात अछि,’ नैना कहलीह।

साँझसँ पहिने कमला देवी फेर अएलीह। प्राप्तिक छाप लागल कागज देखिकऽ कने राहत अनुभव कएलथिन, मुदा पुछलथिन, ‘बेटा, ई कागजसँ टका भेटत?’

नैना झूठ आश्वासन नहि देलथिन। ‘एखन नहि कहि सकैत छी। मुदा अहाँक शिकायत दर्ज भेल अछि। जँ उत्तर नहि भेटय तँ सक्षम कार्यालयमे ई प्राप्ति देखेबाक अधिकार अहाँकेँ अछि।’

कमला देवी मोहनक दिस तकलीह। 'देखह, कागज अबैत-जाइत रहैए। काम कखनो हाथमे नहि अबैत अछि। तोहर बाबूजी अस्वस्थ छथि। घरक रुपैया खतम अछि।' मोहन नीचाँ देखैत रहल। बाहर निकलैत ओ नैनाकेँ नमस्कार केलक। धन्यवाद देबाक स्वरमे अपन स्थितिक संकोच छल।

कार्यालयक आगत-पञ्जीमे शिकायतक एकटा स्तम्भ खाली रहि गेल छल—'उत्तर देबाक अधिकारी'। नैना कुसुमसँ पुछलथिन जे कमला देवीक आवेदन कोन अधिकारी लग पठाओल गेल। कुसुम प्राप्तिक क्रमाङ्क देखाकऽ बतौलथिन जे फाइल किरणक कार्यालयमे गेल अछि। नैना एहि बातकेँ अपन मिलान-पत्रसँ अलग रखलनि। दुनू शिकायतकेँ जबरदस्ती एक्के घटनाक रूप देब तर्कसंगत नहि छल। कमला देवीक रसीदक विषय धन वापसी आ पहचानक जाँच छल; पूनमक विषय अनुपस्थित युवतीक सुरक्षा। दुन्नू प्रश्नक समय अलग छल, मुदा दुनू लेल उत्तरदायी अधिकारीक नाम लिखित रहब आवश्यक छल।

सन्ध्यामे अभय कार्यालयक बाहर नैनासँ भेटलाह। नैना हुनका कहलीह जे प्रशिक्षणक तिथि आ यात्राक तिथिमे अन्तर भेटल अछि आ कार्यालय लिखित सुधार नहि देलक। ओ प्रमाणपत्रक गोपनीय नकल नहि देलथिन। अभय पुछलनि, 'पूनमक पिताक लग जे यात्रा-पत्र अछि, ओकर प्रति हम देखब? ओ स्वयं अनुमति देने छथि।'

'देखू। हम काल्हि हुनका फोन कऽ देब। मुदा एकटा नया विषय सेहो अएल अछि—रसीदपर कार्यालयक नाम रहितो कर्मचारीक पञ्जीमे एक व्यक्तिक नाम नहि भेटल।'

'एहि विषयमे अलग-अलग पक्षसँ जानकारी लेब,' अभय कहलनि। 'रसीदक धारक, संस्था आ जकर नाम कहल गेल अछि, तकर बात बिना समाचारमे सीधा दोष नहि जोड़ब।'

'अहाँ समाचार लिखब?'

'नियुक्ति-ठगीक शिकायतपर लिखब। पूनमक खोजपर एखन सावधानी चाही। पीड़ितक सुरक्षासँ पैघ कोनो शीर्षक नहि।'

नैना घर पहुँचलिह तँ चन्दन आँगनमे खाता खोलि बैसल छल। ओकरा लग बकाया मजदूरीक दूटा सादा पन्ना छल। ओ दीदीकेँ देखिकऽ पुछलक, 'पूनम दीदीक किछु पता?'

'नहि। संस्था गलत तिथिक कागज पठौने अछि। सुधार माँगलहुँ।'

चन्दन कनेक समय तकलाक बाद कहलक, 'गलत कागजक कारण गाड़ी सेहो रोकल जाइत अछि। मनोज बाबू ओहि राति खूब क्रोधमे छलाह। मुदा कागज जेकरा हाथमे अछि, ओकरा पर बादमे दोष राखल जा सकैत अछि।'

नैना ओकरा ध्यानसँ देखलनि। 'तोहर अपन ढुलाईक कागज ठीक छौ?'

'सभ नहि। जे भाग ठीक नहि छल, तकरा हम अलग लिखि लेने छी।'

'सावधान रहिह। थोड़बे मजदूरीक लेल अपन नाम ओहि काजमे नहि जोड़िह, जकरा तँ बुझितो नहि छह।'

चन्दन कोनो उत्तर नहि देलक। नैना ओकर मौनक कारण नहि जनैत छलीह। ओ अपन कॉपी खोलि दिनक तीनटा घटना लिखलनि—भैरवपुरक प्रमाणपत्रक गलत तिथि, कमला देवीक सन्दिग्ध रसीद आ किरणक लिखित उत्तरक अभाव। तकर बाद पूनमक नम्बर मिलौलनि। फोन एखनो बन्द छल।

सरस्वती देवी नैनाक मुख देखिकऽ बुझि गेलीह जे कार्यालयमे किछु कठिन भेल अछि। ओ पुछलथिन, 'तोर अपन नोकरीपर किछु आँच तँ नहि?' नैना कहलीह, 'एखन नहि। प्रश्न पुछने छी।' माय कहलथिन, 'साँच प्रश्न पुछ, मुदा लेखा आ कागजक नकल सही ठाम राखिह। गरीबक भरोसा सदिखन ओहीपर टिकैत अछि।'

रातिमे सरस्वती देवी कहलथिन, 'कतेक कागज देखैत रहबह? भोजन ठण्ढा भऽ गेल।' नैना कॉपी बन्द कऽ उठलीह। कागजसभ झोरामे राखल गेल, मुदा प्रश्न सभ भीतर रहल। एकटा संस्था जँ अपन लिखल तिथि आ नामक उत्तर नहि दऽ सकैत अछि तँ परिवार विश्वास कोन आधारपर करत? ओहि प्रश्नक उत्तर आब ककरो व्यक्तिगत सफाइ नहि, विधिसम्मत जाँचसँ भेटबाक छल।

अध्याय १७ : अभयक समाचार

अभय पासवानक मेजपर तीनटा अलग रंगक फाइल राखल छल। पहिलमे प्रतियोगिता परीक्षाक सूचना आ रद्द भेल परीक्षा सम्बन्धी विभागीय पत्र, दोसरमे नियुक्तिक नामपर जमा कराओल रकमक रसीद, तेसरमे श्रमिकक बकाया मजदूरीक विवरण। कार्यालयक पङ्खा घुरैत छल, मुदा ओकर नीचाँ राखल कागजक कोना उधिया रहल छल। अभय एकटा पुरान अखबारसँ भारी पाथर उठा कऽ कागजक ऊपर रखलनि। सम्पादक काल्हिये कहने छलाह—‘केवल लोकक क्रोध नहि, जे सत्यापित हो सकैत अछि, से लिखू।’

भोरे सविता कुमारी फोन केने छलीह। ‘आइ पुस्तकालयक आगाँ अभ्यर्थीसभक बैठक अछि। ज्ञापन देबाक निर्णय भेल अछि। अहाँ आबि सकैत छी?’ अभय पुछने छलाह जे बैठकक आयोजक के छथि आ आधिकारिक परीक्षा रद्द होयबाक पत्रक नकल उपलब्ध अछि कि नहि। सविता सभ जानकारी देलथिन। तखन ओ कैमरा, नोटबुक आ कलम लऽ निकललाह।

पुस्तकालयक बरामदामे चालीस-पचास युवक-युवती बैसल छलाह। ककरो हाथमे हिन्दी व्याकरण, ककरो हाथमे सामान्य विज्ञानक पुस्तक। बीचमे चन्दन मिश्र सेहो छल। सविता ओकरा देखि कहलीह, ‘प्रश्नपत्रक तस्वीर छिड़िया गेल छल, तकर जाँच होइत रहल। मुदा विभाग जे परीक्षा रद्द कएलक, तकर सूचना आब आधिकारिक अछि। हम सभ नब तिथि आ जाँचक स्थिति जानय चाहैत छी।’

अभय विभागीय पत्र पढ़लनि। ओहिमे परीक्षा रद्द भेलाक जानकारी छल, मुदा प्रश्नपत्र वास्तवमे कतए सँ बाहर आएल, के दाम लेल देलक अथवा कतेक अभ्यर्थी खरीदलक, तकर विवरण नहि छल। अभय ई अन्तर नोटबुकमे लिखलनि। सविता कहलीह, ‘हम सभ नहि चाहैत छी जे अफवाहक आधारपर ककरो दोषी कहि देल जाए। मुदा जे अपन खेत बेचि तैयारी केलक, ओकर वर्षक हिसाब के देत?’

पाछाँ बैसल एक युवक उठि कहलक, ‘हमर पिताक मृत्यु भेल, बहिनक विवाह रोकि पढ़ैत छी। परीक्षा फेर होएत तँ शुल्को फेर लगत? जे गलती केलक ओ भरत कि हम भरब?’ दोसर युवती ओकरा सँ पूछलथिन जे ओकरा तैयारी छोड़बाक अछि कि नहि। युवक कहलक, ‘छोड़ब तँ घरमे आमदनी कतएसँ आएत? नहि छोड़ब तँ घर चलत कोना?’

अभय ई बातसभ लिखलनि। ओ कोनो भावुक शीर्षक लेल मात्र नहि सुनि रहल छलाह। प्रत्येक प्रश्नक पाछाँ एकटा पारिवारिक हिसाब छल। जखन सविता ज्ञापनक मस्यौदा पढ़लथिन तँ पहिल माँग निष्पक्ष जाँच, दोसर घोषित नब तिथि आ तेसर अभ्यर्थीसभक अतिरिक्त व्ययक सम्बन्धमे स्पष्ट नीति छल। ओ सभ जिलाक सम्बन्धित कार्यालयमे प्रतिनिधि पठेबाक निर्णय कएलनि।

चन्दन कनेक अलग ठाढ़ छल। अभय ओकरा पुछलनि, ‘अहाँक घरक स्थिति की कहैत अछि?’

‘दीदी नोकरी शुरू केने छथि। हम परीक्षा देबाक तैयारीमे डेढ़ वर्ष लगौलहुँ। आब गोदाममे काज करैत छी,’ चन्दन उत्तर देलक। ‘एहि काजमे कमाइ बहुत निश्चित नहि अछि। तैँ किताब सेहो छोड़ि नहि सकैत छी।’

‘अहाँक परीक्षा-पत्रक लीक होयबाक समाचार कोना भेटल?’

‘मोबाइलपर तस्वीर अएल छल। हम ओकर सत्यापन नहि करि सकलहुँ। बादमे विभाग परीक्षा रद्द कएलक। ई दुनू बात एक्के नहि अछि,’ चन्दन उत्तर देलक।

अभय चन्दनकेँ देखिकऽ प्रसन्न भेलाह जे ओ अनुमान आ तथ्यक अन्तर बुझैत अछि। मुदा ओकर देहक थकान आ भुरभुरी जूतासँ कामक दबाव सेहो स्पष्ट छल। ‘गोदामक काजक समय कतेक?’

‘जतेक माल रहैत अछि, ओतेक। कखनो दिनमे, कखनो साँझ। एखन स्थायी नियुक्ति नहि अछि।’

अभय अपन नोटबुक बन्द कएलनि। चन्दनक नाम समाचारमे देबाक पहिने अनुमति पुछलनि। चन्दन कहलक जे बेरोजगारीक अनुभव लिखि सकैत छथि, मुदा गोदामक मालिकक नाम एहि प्रसङ्गमे नहि जोड़ल जाए; ओकर व्यक्तिगत शिकायत एखन नहि।

अभय सहमत भेलाह। समाचार लेल ककरो नाम लेब आ ओकर सुरक्षाक जिम्मेवारीक विषयमे सोचब हुनका अपन काजक हिस्सा बुझाइत छल।

पुस्तकालयसँ निकलैत अभय बाजारक ओहि भवनमे गेलाह जतए किछु लोक रोजगार संस्थाक विरुद्ध शिकायत दयल जमा केने छलाह। एकटा सादा कोठरीमे मोहन अपन माय कमला देवीक रसीद नेने ठाढ़ छल। नैना काल्हिये फोनपर बतौने छलीह जे लिखित शिकायत जमा भेल अछि। अभय कमला देवीकेँ परिचय देलनि आ पुछलनि जे हुनक बात प्रकाशित करबाक अनुमति अछि कि नहि।

कमला देवी कहलीह, 'हमरा नाम लिखू, कोनो बात नहि। मुदा जे आदमी टका लेलक, ओकरा कहियो पकड़ब? हम गवाही देब।'

'अहाँ जे स्वयं देखलहुँ, ओ कहू,' अभय विनम्रतासँ कहलनि।

'बरामदामे बैसल आदमी कहलक जे मोहनक नाम प्रशिक्षणमे चढ़त। डेढ़ हजार टका लेल, ई कागज देलक। आब ओकर फोन नहि उठैत अछि। ऊपरवला कर्मचारी कहैत छथि जे ओ नियमित कर्मचारी नहि।'

'रसीदपर कम्पनीक छाप अछि?'

'छैक। मुदा हम छापक सही-गलत की बुझब?'

अभय रसीदक तस्वीर कमला देवीक अनुमतिसँ लेलनि। पन्नापर नाम आ रकम स्पष्ट छल। ओ दोकानक एकटा कोना लग मोहनसँ अलगसँ पुछलनि, 'अहाँ काजक लिखित प्रस्ताव देखलहुँ?' मोहन नकारमे माथ हिलौलक। 'केवल कहल गेल छल जे पैसा जमा करू, तुरन्त मौका भेटत।'

अभय अपन मोबाइलमे रसीदक क्रमाङ्क नोट कएलनि, मुदा समाचारमे व्यक्तिगत फोन नम्बर छपेबाक विचार नहि केलनि। शिकायतक तथ्य छापब सम्भव छल; नकली रसीदक निर्णय एखन हुनका करबाक नहि छल।

दुपहरिया ओ 'नई दिशा रोजगार केन्द्र' पहुँचलाह। स्वागत-कक्षमे कुसुम हुनका देखलथिन। 'अहाँ पत्रकार छी ने?' ओ पुछलथिन।

‘हँ। संस्थाक आधिकारिक उत्तर चाहैत छी। भर्ती-शुल्क आ प्रशिक्षण-रसीदक विषयमे किछु शिकायत भेटल अछि।’

कुसुम आगत-पञ्जी आगाँ कएलथिन। ‘अपन नाम आ उद्देश्य लिखू। अधिकारी भेटतीह तँ बात करब।’

नैना अपन मेजसँ ई सभ देखैत छलीह। अभय हुनका मात्र प्रणाम कएलनि। कार्यालयक काज आ व्यक्तिगत परिचयकेँ अलग रखबाक आवश्यकता दुनू बुझैत छलाह। किरणक कोठरीसँ सन्देश आएल जे पत्रकार एकटा लिखित प्रश्नावली दऽ सकैत छथि। अभय पहिनेसँ तयार पाँचटा प्रश्न लिखि देलनि—अभ्यर्थीसँ शुल्क लेबाक स्वीकृत नियम, बाहरी दलालक संस्था सँ सम्बन्ध, नियुक्ति असफल भेलापर धन वापसी, प्रशिक्षण केन्द्रक सत्यापित पता, आ शिकायतक निराकरणक प्रक्रिया।

किरण पन्ना पढ़ि कहलीह, ‘हमरा सभक संस्था अनेक बेरोजगारकेँ प्रशिक्षण आ रोजगारक अवसर देलक अछि। कोनो व्यक्ति संस्था सँ बाहर गलत आश्वासन देलक हो, तँ ओकरा लेल संस्था स्वतः जिम्मेवार नहि मानल जा सकैत अछि।’

‘अहाँक ई पक्ष हम दर्ज कऽ रहल छी,’ अभय कहलनि। ‘मुदा रसीदपर संस्थाक नाम छपल अछि। जँ ओ अनधिकृत अछि तँ संस्था लिखित रूपमे स्पष्ट करबाक व्यवस्था किएक नहि करैत?’

‘जाँच चलि रहल अछि।’

‘कतेक दिनमे उत्तर भेटत?’

‘एखन निश्चित समय नहि कहि सकैत छी।’

अभय दोसर प्रश्न कएलनि—‘पूनम यादव आ अन्य प्रशिक्षणार्थीसभक परिवार अपन बेटीक सुरक्षा आ ठेगाना माँगि रहल अछि। की संस्था हुनका सभकेँ सत्यापित पता देलक?’

किरणक चेहरा कनेक बदलल। ‘एहि विषयमे सम्बन्धित अधिकारी सँ बात भऽ रहल अछि। सुरक्षा सम्बन्धी जानकारी पुलिसकेँ देल जाएत।’

‘पुलिसकेँ कखन देल जाएत?’

‘हम एहि समय विवरण नहि दऽ सकैत छी।’

अभय उत्तर जसक तस नोट केलनि। पूनमक नाम समाचारमे छापब कि नहि, एहि विषयमे हुनका परिवारसँ स्पष्ट अनुमति लेबाक छल। एहि विषयक मुख्य उद्देश्य पीड़ित लड़कीक सुरक्षित खोज छल, विज्ञापनक लेल भीड़ बढ़ेबाक नहि।

रतन सिंह कार्यालयमे नहि छलाह। अभय हुनक आधिकारिक नम्बरपर बात करबाक अनुरोध छोड़लनि। एक घण्टाक बाद रतन स्वयं फोन केलनि। हुनक स्वर संयत छल। ‘अभयजी, नगरक युवकसभ लेल हम जे सेवा कएलहुँ, से अहाँ जानैत छी। किछु शिकायत होयत तँ जाँच करायब। मुदा प्रमाण बिना संस्थाकेँ बदनाम नहि करू।’

‘हम एखन ककरो अपराधी नहि कहि रहल छी,’ अभय उत्तर देलनि। ‘लिखित शिकायतक आधारपर प्रश्न उठबैत छी। अहाँ शुल्कक नियम आ दलालक भूमिका पर लिखित उत्तर देब?’

‘किरण देखतीह। अहाँ समाचारमे हमरा पक्ष सेहो दिअ।’

‘निश्चित। जँ विस्तृत उत्तर आइ साँझ धरि पहुँचत तँ ओहो जोड़ब।’

रतन फोन राखि देलनि। अभयक कानमे हुनक विनम्र स्वर रहि गेल, मुदा एतबा विनम्रतासँ तथ्यक प्रश्न समाप्त नहि होइत छल।

कार्यालयसँ निकललाक बाद अभय नगरक श्रम-सहायता कक्षमे गेलाह। ओतय एकटा सूचना-पट्टपर पञ्जीकृत सेवा-संस्थासभक सूची टाँगल छल। कतिपय नाम पुरान रङ्गसँ लिखल छल, किछु नामपर सुधारक कागज सटल छल। कक्षमे बैसल कर्मचारी कहलनि जे केवल पञ्जीकरणसँ नियुक्तिक प्रत्येक वचन प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि। ‘केओ संस्था सामान्य प्रशिक्षण देबाक लेल पञ्जीकृत हो, तकर अर्थ ई नहि जे सरकारी नोकरी देबाक अधिकार ओकरा भेटि गेल,’ ओ स्पष्ट कएलनि।

अभय पुछलनि, ‘जँ अभ्यर्थी शुल्क जमा कऽ नियुक्ति नहि पाबथि तँ शिकायत कोन ठाम करथिन?’

कर्मचारी दूटा अलग प्रक्रिया बुझौलनि—सेवाक लिखित शर्तक विवाद आ जानि-बूझि छल कएल जएबाक आरोप। 'पहिने रसीद, विज्ञापन आ जे वचन लिखित अछि, ओकर नकल सुरक्षित राखू। उचित अधिकारी तथ्य देखताह,' ओ कहलनि। अभय एहिमे सँ कोनो प्रक्रियाकेँ निश्चित सफलताक आश्वासनक रूपमे नहि लिखलनि। कार्यालयक दीवालपर लगल सूचना सेहो बता रहल छल जे प्रत्येक विवादक निपटारा तर्क आ प्रमाणपर निर्भर करैत अछि।

ओतयसँ बाहर अएलाह तँ हसीना खातून नामक एक युवती रोकलथिन। 'अहाँ पत्रकार छी? हमरा सेहो रोजगार केन्द्रसँ नियुक्ति भेटल छल। हमर अनुभव नीक छल। मुदा हमर संगीक जमा राशि अटकल अछि। की दूनू बात अहाँ लिखब?'

अभय अपन परिचय देलनि। हसीना कहलीह जे हुनका एकटा सिलाइ इकाइमे तीन मासक अस्थायी नोकरी भेटल छल। समयपर पारिश्रमिक भेटल, मुदा अनुबन्ध समाप्त होएबाक बाद नब काज नहि भेटल। हुनक संग गेल जमीला खातून प्रशिक्षणक पहिल दिनसँ पहिने ओ बीमार पड़लीह आ जमा रकम वापस नहि पाबि सकलीह। 'हमरा जतेक दिन काज भेटल, ओकरा गलत नहि कहि सकैत छी। मुदा जमीला अपन टका माँगैत थाकि गेलीह,' हसीना बजलीह।

अभय जमीला सँ स्वयं बात करबाक अनुमति माँगलनि। फोनपर जमीला कहलथिन जे प्रशिक्षणक प्रारम्भिक रकमक प्राप्ति हुनका लग अछि, मुदा धन वापसीक शर्त पढ़य लेल कोनो स्पष्ट पत्र नहि भेटल। अभय कहलनि, 'अहाँ दुनूक अनुभव अलग अछि। हम एकटा आधारपर दोसरक निर्णय नहि लिखब।'

हसीना निश्चिन्त भेलीह। 'बस ई बात लिखू जे गरीब लोककेँ कोनो कागजपर हस्ताक्षर करबाक पहिने ओकर अर्थ बुझबाक अवसर चाही। हम पढ़ल छी, तइयो कतेको बात बुझल नहि छल।'

एहि भेंटक बाद अभयक पहिल मसौदामे एकटा आवश्यक परिवर्तन भेल। ओ केवल फँसल लोकक कथा नहि लिखलनि; जकरा वास्तविक अल्पकालिक रोजगार भेटल छल, ओकर अनुभव सेहो जोड़लनि। एहि कारणेँ प्रश्न आरो सटीक भेल—जँ किछु अभ्यर्थीकेँ

उचित सेवा भेटि सकैत अछि, तँ दोसरसभक जमा राशि आ सम्पर्कक उत्तर स्पष्ट करबाक व्यवस्था किएक नहि? प्रमाणक भिन्नता नजरिअन्दाज कऽ सभकेँ एक्के कोटिमे राखब अन्याय होयत।

समाचारपत्रक कार्यालय पहुँचैत सम्पादक पुछलथिन, 'सामग्री कतेक तैयार अछि?'

'परीक्षा रद्द होयबाक सरकारी पत्र अछि, अभ्यर्थीसभक ज्ञापन अछि, रोजगार-शुल्कक दूटा लिखित शिकायत अछि, आ संस्थाक प्रारम्भिक पक्ष सेहो। प्रमाणक सीमा अलग लिखल अछि।'

सम्पादक कागज उलटि-पलटि देखलथिन। 'पूनमक मामलाकेँ एही समाचारमे जोड़ब?'

'नहि। परिवारक अनुमति बिना परिचय नहि छापब। ओ मामलामे सुरक्षाक प्रश्न अछि। एखन रोजगारक नामपर वसूली आ परीक्षा रद्द होयबाक प्रभावपर लिखब।'

'ठीक अछि। परीक्षा रद्द होयब प्रमाणित अछि, मुदा पेपर के लीक केलक, से एखन स्पष्ट नहि। शीर्षकमे एहि अन्तरक ध्यान राखू।'

अभय समाचार लिखय बैसलाह। पहिल अनुच्छेदमे परीक्षा रद्द होयबाक आधिकारिक सूचना राखलनि। दोसरमे सविताक कथन—छात्रसभ स्पष्ट नब तिथि आ निष्पक्ष जाँच चाहैत छथि। तेसरमे किराया, कोचिंगक शुल्क आ घरक ऋणसँ जूझैत अभ्यर्थीसभक बात। ओकर बाद अलग खण्डमे रोजगार-शुल्कक रसीद आ लिखित शिकायतक प्रसङ्ग। संस्थाक उत्तर सेहो शब्दशः अर्थ सुरक्षित राखि लिखलनि—जाँच चलि रहल अछि, बाहरी व्यक्तिक अनधिकृत आश्वासनक विषयमे स्पष्टता बाकी अछि।

तखन समाचार कार्यालयक फोन बजल। सविता कहलीह जे ज्ञापन लेबाक अधिकारी कहने छथि—विभागीय परीक्षाक नब तिथि घोषणा होएबामे समय लागत। 'अहाँ ईहो लिखू जे हम सभ तैयारी छोड़ने नहि छी,' ओ अनुरोध केलथिन। अभय कहलनि, 'ई बात छपब। अभ्यर्थीसभक आन्दोलन केवल विरोध नहि, पुनः परीक्षा देबाक आशाक विषयमे सेहो अछि।'

सम्पादकक सहकर्मी समाचारक पन्ना बनबैत समय पुछलथिन, 'अभ्यर्थीसभक तस्वीर छापी?' अभय कहला, 'बैठक सार्वजनिक छल, मुदा जे लोक चेहरा नुकाबय चाहैत छलाह,

हुनका सभक अनुमति बिना नहि। सविता अपन नाम देबाक सहमति देने छथि। चन्दनक अनुभव लिखल अछि, ओकरा नोकरी देनिहारक नाम एहि समाचारमे नहि जोड़ब।' सहकर्मी सहमत भेलीह।

दोसरा पृष्ठक कोनामे पहिनेसँ एकटा विज्ञापन लागल छल—'प्रशिक्षणक बाद रोजगारक अवसर'। सम्पादक विज्ञापन पढ़ि कहलथिन, 'ई सामान्य प्रचार अछि। एहि संस्थाक सम्बन्धमे समाचार नहि अछि। पाठककेँ भ्रम नहि हो, तेँ विज्ञापन आ समाचारक रूप अलग राखू।' अभय देखलनि जे कागजक एक्के पन्नापर आश्वासन आ जाँच दुनू छपैत अछि। समाचारक जिम्मेवारी एतबे छल जे पाठक दुनू बातमे भेद बुझि सकथि।

दोसरा दिनक संस्करणक लेल समाचार तय भेला पर मुद्रणक कर्मचारिसभ पन्ना जाँचय लगलाह। अभय नाम आ तिथि फेर पढ़लनि। हुनका लग एकटा गलती सेहो ककरो बेरोजगार जीवनमे नब अपवाद उत्पन्न कऽ सकैत छल। ओ परीक्षा रद्द होयबाक तिथि विभागीय पत्रसँ मिलौलनि, शुल्कक रकम रसीदसँ, आ संस्थाक उत्तर अपन नोटबुकसँ। तखन पन्ना मुद्रण लेल देल गेल। एहि सावधानीक लेल हुनका अतिरिक्त पारिश्रमिक नहि भेटैत छल; ई हुनक कामक सामान्य उत्तरदायित्व छल।

साँझ समाचारक पहिल प्रति निकसल। शीर्षक छल—'परीक्षा रद्द, युवा बेरोजगारक व्यय बढ़ल; रोजगार-शुल्कक शिकायतपर उत्तरक प्रतीक्षा'। कोनो पैघ चटकीला शब्द नहि छल। तकर बादो ई समाचार पढनिहार अनेक लोककेँ अपन घरक बात बुझाएत, से अभय जनैत छलाह। ओ चाय लऽ कार्यालयक बरामदामे अएलाह।

नैनाकेँ फोन केलनि। 'आइ समाचार छपल अछि। अहाँक नाम नहि अछि। पूनमक परिचय सेहो नहि।'

'नोकरीक शिकायतपर लोकक प्रतिक्रिया की भेल?' नैना पुछलथिन।

'एखनहि किछु फोन अएल अछि। मुदा पहिने ककरो बयान जाँचब। अहाँ कार्यालयमे अनावश्यक विवाद नहि करब। लिखित प्रश्नक प्राप्ति सुरक्षित राखू।'

'हम बुझैत छी,' नैना कहलीह। 'पूनमक घर आइ फेर फोन केने छल। हुनका सभकेँ साँच पता चाही, समाचारक शीर्षक नहि।'

अभय किछु देर चुप रहलाह। ‘हमरो एहि बातक चिन्ता अछि। काल्हि जकर अधिकारीसँ सम्भव होयत, लिखित स्थिति पुछब।’

अभय मुद्रणालयसँ बाहर निकलैत सड़कक दोसरा पार पुलिसक चौकी देखलनि। पूनमक परिवारक आवेदनक पञ्जी-संख्या हुनका याद पड़ल। अपराधक विषयमे खबरि छपेनाइ आ कोनो लापता व्यक्तिक खोज करब अलग काज छल; एकर सीमाकेँ ओ बुझैत छलाह।

घर घुरैत अभय बस अड्डाक कात देखलनि जे कोचिंगक छात्रसभ अपन-अपन पुस्तक लऽ पानि भिजल सड़क पार करैत छलाह। दोकानक शीशापर रद्द भेल परीक्षाक सूचनाक फोटो चिपकल छल। ओहि फोटो लग दोसर कागज छल—‘निश्चित रोजगार, सीमित अवसर’। दुनू पन्नाक बीच केओ रेखा नहि खींचने छल, मुदा बेरोजगार युवकक जिनगीमे एकटा पन्ना सँ दोसर पन्ना धरि पहुँचबाक बाट बहुत छोट भऽ गेल छल।

राति भोजन करैत अभयक माय पुछलथिन, ‘आइ फेर देरि भेल। ककरो आरोपक समाचार लिखैत छथि तँ अपन सावधानी राखू।’

अभय कहलनि, ‘आरोप आ प्रमाण अलग लिखल अछि, माय। मुदा जे लोक प्रश्न पुछैत अछि, ओकरा सभसँ सदिखन सभ प्रसन्न नहि होइत अछि।’

माय थारीमे दाल बढ़बैत कहलीह, ‘प्रश्न पुछू, मुदा मनुष्यमे विश्वासो राखू। नहि तँ अहाँ अपन कामसँ ऊबि जाएब।’

अभय मुसुका देलाह। नैनाक स्वर हुनका मोन पड़ल—पूनमक घरकेँ साँच पता चाही। समाचार प्रकाशित भऽ गेल छल, मुदा जे युवतीक फोन बन्द छल, ओकर खोज एक इञ्चो अपनेसँ आगाँ नहि बढ़ल। ई बात मोनमे रखैत ओ अगिला दिनक लेल सम्बन्धित कार्यालयक सम्पर्क क्रम लिखलनि।

अध्याय १८ : गामक बदनामी

पूनमक गाममे बुधदिन हाट लगैत छल। पोखरिक कातसँ बजार धरि जाइत कच्ची बाटपर भोरेसँ ठेला आ साइकिलक भीड़ बढ़ि गेल छल। रामलाल यादव घरक दुआरिपर ठाढ़ छलाह। हुनक हाथमे पुरान गमछा छल। तीन दिनसँ ओ ठीकसँ खेत नहि गेल छलाह। जे व्यक्ति गुजरैत छल, कियो सलाम करैत छल, कियो पूनमक समाचार पुछैत छल, आ किछु लोक आँखि चोराकऽ आगाँ बढ़ि जाइत छल। पहिने ई सभ परिचित व्यवहार छल; आब प्रत्येक व्यवहारमे रामलालकेँ अनकहल प्रश्न बुझाइत छल।

ललिता देवी आँगनमे चाउर बीनि रहल छलीह। हाथ चलैत छलनि, मुदा आँखि दुआरि दिस उठैत रहैत छल। रीना अपन बहिनक मोबाइल नम्बर फेर मिलौलक। एक्के उत्तर आएल—फोन बन्द अछि। ओ फोन राखि मायक लग बैसि गेलीह। ‘दीदीक विषयमे बजारमे उल्टा-पुल्टा कहैत छथि,’ ओ धीरे कहलक।

‘के कहलक?’ ललिता पुछलथिन।

‘विद्यालयसँ घुरैत दूटा लड़की कहैत छल जे पूनम दीदी ककरो सङ्ग भागि गेलीह। हुनका सभक गामक नाम खराब भऽ रहल अछि।’

ललिता देवी हाथक चाउर धरि रखलथिन। ‘जे नहि देखलक, ओ बात कोना कहैत अछि? तोहर दीदी अपन मेहनतसँ घर चलाबय चाहैत छलीह। फोनपर मदति मँगलीह, से बात तँ सभकेँ मालूम होबाक चाही।’

रीना कहलक, ‘हम हुनका सभसँ झगड़ा नहि केलहुँ। घर आबि गेलहुँ।’

‘नीक केलह। मुदा जँ फेर कियो पुछय, तँ कहिह जे खोज लेल थानामे आवेदन देल गेल अछि। बिना जानने अनुमान नहि लगाबथि।’

रामलाल एहि बातक अन्तिम पाँति सुनलनि। ओ भीतर आबि कहलक, ‘हम एहि गाममे चालीस बरखसँ रहैत छी। ककरो दुःखमे गेलहुँ तँ संग बैसलहुँ। आब हमर अपन बेटीक दुःख पर लोक हँसत?’ हुनक स्वरमे रोष छल, मुदा थकान ओकरा ढाँकि रहल छल।

दुपहरियासँ पहिने नैना बससँ उतरिकऽ पूनमक घर पहुँचलिह। हुनक झोरामे थानाक प्राप्तिक नकल, फोनक समयक विवरण आ रामलाल लेल लिखल किछु प्रश्न छल। ओ कोनो नब समाचार अनने नहि छलीह। ओहिना पहुँचि गेलीह जाहि तरह कठिन समयमे परिचित लोक एक-दोसराक घर जाइत अछि—खाली हाथ रहितो संग बैसब लेल।

रामलाल पुछलनि, ‘संस्था पता देलक?’

‘एखनहुँ नहि। मुदा ओहि कागजक तिथि गलत भेटल अछि। हम सुधार मँगने छी। अभय सेहो लिखित प्रश्न देने छथि,’ नैना उत्तर देलथिन।

ललिता देवी नैनाकेँ बैसबाक आसन देलथिन। ‘पूनम जखन छोट छलीह तँ ककरो घरमे खोंइछा भरबाक गीत जल्दी सिखि लैत छलीह। विद्यालयमे पहिल क्रमाङ्क अबैत छलनि। आब लोक कहैत अछि जे ओकर चालि-चलन ठीक नहि छल। केओ हमरा पुछए नहि अबैत जे हमरा राति नीन्न किएक नहि होइत अछि।’

नैना हुनक हाथ थामलनि। ‘काकी, ओ मेहनत कऽ नोकरी खोजैत छलीह। लोकक अफवाहसँ हुनक जीवनक सत्य नहि बदलत। पुलिसकेँ हुनक अन्तिम फोनक बात लिखित देल गेल अछि। हम सभ ओकर जाँच आगाँ बढ़ेबाक प्रयत्न करैत छी।’

‘अहाँ पर सेहो बात आएत,’ रीना कहलक। ‘कियो कहैत अछि जे दीदी अहाँक कहने बाहर गेलीह।’

नैना रीना दिस तकलीह। ‘हमरा पूनमक कागज देखलाक बाद सावधानी रखबाक सलाह देने रही। अन्तिम निर्णय पूनम स्वयं केने छलीह, परिवारक सहमतिक संग। जँ कियो हमपर आरोप लगबैत अछि तँ हम उत्तर देब। मुदा सबसँ आवश्यक अछि जे हुनका सुरक्षित भेटाओल जाए।’

बाहर हाटसँ घुरैत दुइ महिला दुआरि लग ठाढ़ भेलीह। एक गोटे पुछलीह, 'पूनमक खोज कोन ठाम धरि पहुँचल?' दोसर हुनक हाथ पकड़ि फुसफुसा कऽ कहलीह, 'इतबा बाहर गेलीह तँ अपन इच्छा सेहो होयत ने!' ललिता देवी उठि ठाढ़ भेलीह।

'बेटी जँ सहायता मँगैत अछि तँ ओकर बात सुनू,' ओ स्पष्ट स्वरमे कहलीह। 'ओहिपर अपवाद नहि लगाउ। जँ अहाँ सभक लग कोनो सत्य सूचना अछि तँ कहू, नहि तँ गलत बात नहि फैलाउ।'

पहिल महिला लजाइ गेलीह। दोसर बिना उत्तर देने चलि गेलीह। नैनाकेँ बुझा गेलनि जे पूनमक परिवार लेल लड़ाइ केवल अधिकारीक दुआरि धरि नहि, अपन गामक चौक धरि पसरल अछि।

नैना उठबाक तैयारी करैत छलीह तँ गामक प्राथमिक विद्यालयक शिक्षिका मालती देवी दुआरिपर अएलीह। ओ रीना केँ पहिनेसँ पढ़बैत छलीह। हाथमे दूटा अभ्यास-पुस्तिका छल। 'रीना चारि दिनसँ विद्यालय नहि अएल छलीह। हम पुछय अएल छी,' ओ कहलीह।

रीना भीतरसँ निकलल। 'दीदीक खोजमे घरक काज बढ़ि गेल अछि। माय अकेली रहैत छथि।'

मालती देवी ओकरा कात बैसौलथिन। 'घरक चिन्ता स्वाभाविक अछि। मुदा पढ़ाइ छोड़ब तँ पूनमक मेहनतक अपमान होयत। जे गृहकार्य नहि भेल, ओकरा धीरे-धीरे पूरा करिह। हम विद्यालयमे बुझा देब।'

ललिता देवी पुछलथिन, 'गाममे जे गलत बात चलि रहल अछि, ओकरा की करब?'

मालती देवी उत्तर देलथिन, 'जकरा तथ्य नहि, ओकरा अफवाह कहब। विद्यालयमे बच्चासभकेँ स्पष्ट कहब जे कोनो युवतीक अनुपस्थितिपर ओकर चरित्रक फैसला करनाइ अनुचित अछि। शिक्षकक काज पढ़ेनाइ मात्र नहि, बच्चाक मनमे न्याय-बुद्धि राखब सेहो अछि।'

रामलाल कुर्सीक कात बैसि गेलाह। 'अहाँ आएलहुँ, एतबासँ घरक लोकक मन मजबूत भेल।'

मालती देवी हुनका आश्वासन नहि देलथिन जे पूनम तुरन्त भेटि जेतीह। ओ केवल कहलीह जे जँ प्रशासनकेँ विद्यालयक परिचयपत्र, पढ़ाइक कागज अथवा फोटो चाही, तँ विधिवत प्रति देल जाएत। रीना अभ्यास-पुस्तिका लऽ राखलनि। नैनाकेँ बुझा गेलनि जे संकटमे सही सहायता प्रायः छोट कामक रूपमे अबैत अछि—कियो आवेदन लिखि दैत अछि, कियो बच्चाकेँ विद्यालय घुरेबाक साहस दैत अछि।

गामसँ घुरबाक समय नैना माधवी देवीकेँ देखलनि। ओ गामक किछु घरमे काम कऽ नवगढ़ घुरि रहल छलीह। माथपर तरकारीक टोकरी, हाथमे पुरान झोरा छल। नैना पुछलथिन, ‘काकी, एतय कोना?’

‘हमर बहिनक घर एहि गाममे अछि। ओकर तबियत देखय अएल रही,’ माधवी कहलीह। ‘अहाँ पूनमक घरसँ घुरैत छी?’

‘हँ। परिवार बहुत चिन्तित अछि। ऊपरसँ लोकक बात।’

माधवी ठमकि गेलीह। ‘गरीबक बेटी घरसँ बाहर कमाइ करय जाए, तँ पहिने लोक कहैत अछि नोकरी कर। किछु अनिष्ट होय तँ ओही लोक कहैत अछि बाहर गेलीह किएक। दुनू दिस दोष ओकरिये माथपर।’

नैना हुनक सङ्ग किछु दूर धरि चललीह। सड़कक कात एकटा चाय-दोकान लग किछु मजदूर बैसल छल। हुनकामे एक आदमी लड़खड़ाइत स्वरमे ककरोसँ टका मँगि रहल छल। माधवी ओकरा चिन्हि गेलीह। ‘ई रामवृक्ष अछि। पहिने शराबबन्दी भेल छल तँ एक वर्ष धरि घरक हाल सुधरल छल। आब फेर पीबैत अछि।’

‘एतए शराब कतएसँ अबैत अछि?’ नैना पुछलथिन।

‘केओ पक्का नहि कहैत। कियो कहैत अछि सीमाक कातसँ, कियो कहैत अछि गोदामसँ। हमरा जे देखाइत अछि, से घरक टुटल बासन आ बच्चाक खाली बस्ता,’ माधवी उत्तर देलथिन।

माधवी अपन घरक पुरान बात बतबय लगलीह। ‘शराबबन्दी शुरू भेल तँ हमरा सभकेँ भरोसा भेल छल जे साँझक कमाइ घर पहुँचत। जे घरमे हम बासन माँजैत रही, ओतुक्का

दाइ, नोकरानी, खेतमे काम करयवाली महिला सभ एक-दोसराकेँ कहैत छलहुँ—आब रोटी लेल झगड़ा कम होयत। किछु घरमे सचमुच एना भेल।'

ओ कनेक मुसुकैलीह। 'एक दिन हमर पतिक संगी हुनका पुछलक—कोना छेँ? ओ उत्तर देलनि—कने मोन तेहेन नै, मुदा जेबीमे आब टका रहैए। हम सुनि हँसल रही। ओही टकासँ बड़की बेटी लेल पुस्तक किनने रही। महीनाक अन्तमे पहिल बेर अनाज उधार नहि लेबाक पड़ल।'

'फेर की भेल?' नैना पुछलथिन।

'पहिल वर्षक भीतर नुकाकऽ शराब बिकय लागल। दाम बेसी, भय बेसी। जे छोड़ि देने छल, ओकरामे किछु फेर पीबय लागल। हमर पति बहुत दिन धरि बचलाह; बादमे संगीक संग फेर एक-दू बेर पीबए लागलाह। हम विरोध केलहुँ, ओ समय फेर घरमे खर्चक झगड़ा भेल। आब ओ कोशिश करैत छथि जे छोड़ि देथि, मुदा घरक विश्वास एक बेर टूटय तँ आसानीसँ नहि जुड़ैत अछि।'

माधवीक स्वरमे कोनो बड़े निर्णयक दावा नहि छल। हुनका अपन जीवनक हिसाब मालूम छल—शराबबन्दी शुरू भेला पर बाँचल टका, बच्चाक किताब, बन्द भेल मारपीट; तकर बाद फेर बढ़ल खर्च, नुकाए बिक्री आ रातिक भय। ओ कहलीह, 'सबर घरक कथा एक्के नहि अछि। किछु पुरुष एखनो नहि पीबैत छथि। मुदा जिनका सभक घरमे ई संकट घुरल, हुनका लेल घोषणा मात्रसँ पेट नहि भरैत अछि।'

माधवीक सङ्ग बाटमे एकटा पानिक नल लग चारि महिला भेटलीह। कियो घरक काज करैत छलीह, कियो खेतमे मजदूरी। हुनकामे रज्जो देवी अपन बेटाक फाटल कमीज सिलयवाली सुई माँगि रहल छलीह। ओ माधवीकेँ देखि पुछलथिन, 'अहाँक घरमे आब शान्ति अछि ने?'

माधवी कहलीह, 'पहिने जतेक छल, ओतेक नहि। मुदा पूरा बिगड़ल सेहो नहि। दिन-प्रतिदिन बुझा कऽ चलबाक अछि।'

रज्जो देवी कहलथिन, ‘हमर पतिक शराब छुटल तँ मासक अन्तमे दू सय टका बचैत छल। अहाँ सभ हँसब नहि, ओ दू सयसँ बेटीकेँ जूता कीनने रही। आब फेर नुकाकऽ पीबैत छथि, तँ जूताक पैसा नहि बचैत अछि।’

दोसर महिला, जे लोकक घरमे कपड़ा धोबैत छलीह, कहलीह, ‘हमर घरमे शराबबन्दीक बाद झगड़ा कम भेल आ एखनहुँ कम अछि। सभ पुरुष फेर नहि पीबैत छथि। मुदा जे शराब बेचैत छथि, हुनका रोकबाक जरूरत अछि।’

नैना सुनलीह जे अनुभव एकरूप नहि अछि। कोनो महिला पहिल वर्षक राहत एखनो बचौने छलीह, कोनो घरमे पुरान भय घुरि आएल छल। सभक बातक बीच समान चिन्ता बच्चाक भोजन, शिक्षाक खर्च आ घरक सम्मान छल। सामाजिक निर्णयक वास्तविक प्रभाव एही सभ छोट खर्च आ सम्बन्धमे बुझाइत छल।

गामक मोड़पर पुलिसक एकटा मोटरसाइकिल रुकल। सिपाहीसभ चायक दोकान लग ककरोसँ किछु पुछलनि, फेर आगाँ बढ़ि गेलाह। माधवी ओहि दिस तकैत कहलीह, ‘लोक कहैत अछि जे किछु व्यापारी, नेता आ ठीकेदारक संरक्षण बिना एतेक माल नहि चलि सकैत। मुदा हम जे नहि देखलहुँ, ओकरा सत्य कहि नहि सकैत छी। जँ अधिकारी चाहथि तँ जाँच करथि।’

नैना ई बात ध्यानसँ सुनलनि। चन्दनक गोदामक अस्पष्ट कागज हुनका मोन पड़ल, मुदा केवल संयोगसँ निष्कर्ष निकालब सही नहि छल। ‘जँ ककरो लग प्रमाण हो, तँ देबाक उचित बाट होयत,’ ओ कहलीह।

‘प्रमाण गरीब महिला कोना जुटाउ?’ माधवी पुछलथिन। ‘दिन भरि दोसरक घरमे काम करू, साँझ अपन घर सम्हारू। हमर बातक मूल्य तखन बढ़त जखन अधिकारी सुनबाक इच्छा रखताह।’

बस अड्डापर माधवी उतरबाक तैयारी करैत कहलीह, ‘पूनमक मायकेँ कहिह जे ओ अकेली नहि छथि। हम काल्हि हुनका घर जाइब। ककरो खराब बातक डरें दुआरि बन्द नहि

करथि।' नैना हुनक हाथ पकड़ि धन्यवाद देलथिन। एहन सहायता समाचारक पैघ पाँतिमे नहि छपैत अछि, मुदा दुखी घरमे एकटा पड़ोसीक उपस्थिति बहुत आवश्यक होइत अछि।

नवगढ़ घुरैत नैना देखलनि जे अभयक समाचारक प्रतिलिपि चायक दोकानपर पढ़ल जा रहल अछि। युवकसभ परीक्षाक नब तिथि पुछैत छल। ककरो नजरि रोजगार-शुल्कक समाचारपर छल। ओहि ठाम एक वृद्ध कहैत छलाह, 'बेरोजगारीमे लोक का नहि करैत अछि।' दोसर उत्तर देलक, 'मजबूरी बुझू, मुदा अपराधकेँ उचित नहि कहू।' नैना मनमे एहि दुनू वाक्यक अन्तर राखलनि। आर्थिक संकट मनुष्यकेँ गलत निर्णयक कात धकेलि सकैत अछि, मुदा निर्णयक परिणामक जिम्मेवारी सेहो रहैत अछि।

घर पहुँचि ओ देखलनि जे सरस्वती देवी चन्दनक लेल भोजन ढाँकि देने छलीह। चन्दन एखन गोदामसँ नहि घुरल छल। नैना मायक संग पूनमक घरक बात कएलनि। माय कहलीह, 'लोकक मुँह बन्न करब कठिन अछि। मुदा रामलालक घरमे लोक जाइत रहत, तँ झूठक आवाज कने घटत।'

'माधवी काकी काल्हि हुनका सभसँ भेटय जेतीह,' नैना कहलीह।

'नीक करतीह। ओ अपन दुःख देखि चुकल छथि, तेँ दोसरक दुःख बुझैत छथि।'

राति रीना फोन केलक। 'दीदी, गामक दूटा महिला आइ मायक सङ्ग बहुत देर बैसलीह। मायक मोन कने हलुक भेल। मुदा पूनम दीदीक फोन एखनो नहि अएल।'

'हमरा एखन कोनो नब पता नहि भेटल,' नैना कहलीह। 'काल्हि फेर सम्बन्धित अधिकारीसँ बात होयत। अहाँ मोबाइलक अनचिन्हार नम्बर लिखैत रहू। बिना प्रमाण ककरो बात नहि मानू।'

रीना धीरे उत्तर देलक, 'हम सभ खोज छोड़ब नहि।'

रीना बहिनक पुस्तकक बीच कापी भेटलनि। पहिल पन्नापर पूनम लिखने छलीह —'नोकरी भेटत तँ माय लेल चश्मा किनब।' रीना ओ पाँति पढ़ि मायक हाथमे कापी देलक। ललिता देवी ओकरा छातीसँ लगौलथिन, मुदा रोइबाक बदला कहलीह, 'ओ घुरतीह तँ हम चश्मा अपने किनब, पहिने हुनक सुरक्षा।'

रामलालकेँ राति अपन खेतक चिन्ता सेहो भेलनि। जे बटाईदार अगिला दिन सिंचाइक लेल आबयवला छल, ओकरा खबरि देब जरूरी छल। पूनमक खोजमे ओ खेत नहि जा सकलाह। ललिता देवी कहलीह, 'खेती छोड़लासँ घर चलत कोना? हम रीना सङ्ग रहब। अहाँ कामक समय खेत जाइत रहू।' रामलाल पुछलनि, 'आ जँ ओहि बीच पूनमक फोन अएल?' रीना उत्तर देलक, 'हम तुरन्त अहाँकेँ बजा लेब। मोबाइल परस्पर खुलल राखब।' परिवार अपन दुःखक बीच रोजक काजक नब व्यवस्था तय कएलक। ओहि समय ककरो लेल ई व्यवस्था सरल नहि छल, मुदा घरक अन्न आ आशाक दुनूकेँ एक सङ्ग बचेबाक जरूरत छल।

फोन राखलाक बाद नैना खिड़की खोलि बाहर तकलीह। गलीमे लोक अपन-अपन घरक दुआरि बन्द करि रहल छल। पूनमक घरमे दुआरि बन्द होएत, मुदा ओकर प्रतीक्षा बन्द नहि होयत। गामक बदनामीक डर पीड़ित परिवारक मुँह बन्न करबा चाहैत छल; नैना जनैत छलीह जे एखन सबसँ आवश्यक काज ओहि परिवारक आवाज सुनैत रहब अछि।

अध्याय १९ : गुप्त हिसाब

नरेश मण्डल भोरे कार्यालय पहुँचलाह तँ बरामदाक फर्श एखन पोंछायल जा रहल छल। सफाइक काज करयवाली आशा देवी हुनका देखि बाल्टी कातमे सरकौलथिन। ‘बाबू, आइ एतेक भोर?’ ओ पुछलथिन। नरेश कहलनि, ‘काल्हिक मिलान बाँकी रहि गेल अछि। लोक आबय लगताह तँ फेर कागजक ढेरी बढ़ि जाएत।’ आशा देवी अपन काजमे लागि गेलीह। नरेश लेखाक कोठरीक ताला खोललनि। भीतर रातिसँ बन्द खिड़कीक गन्ध छल।

लेखाक मेजपर तीनटा पञ्जी राखल छल। एकटामे अभ्यर्थीसभसँ वसूलल प्रशिक्षण-शुल्क, दोसरमे कार्यालयक खर्च, तेसरमे बाहरक कार्यस्थलपर पठाओल श्रमिकसभक यात्रा आ भत्ताक हिसाब। नरेश काल्हि नैना द्वारा बनाओल मिलान-पत्र देखले छलाह। पूनमक समूह सत्रह-बीक प्रशिक्षण पूरा भेलाक तारीख ओकर यात्राक तारीखसँ पहिने लिखल छल। ओ एतबे गलती मानि फाइल बन्न करि सकैत छलाह; मुदा ओहि समूहक नामपर जे भुगतान देखाओल गेल छल, से हुनका रोकि लेलक।

समूह सत्रह-बीक लेल सात दिनक भोजन, रहबाक व्यवस्था आ प्रशिक्षण-सामग्रीक धन निकालल गेल छल। रसीदपर भोजन देनिहारक नाम ‘सीमा सेवा आपूर्ति’ लिखल छल, मुदा कार्यालयक विक्रेता-पञ्जीमे एहि नामक कोनो स्थायी विक्रेता नहि छल। यात्राक खर्च दोसर शीर्षकमे चढ़ल छल। नरेश सभ रकम जोड़लनि। अधिक भुगतानक सन्देह भेल, मुदा हिसाबक स्वरूप बुझब कठिन छल। ओ मूल अनुमति-पत्र खोजय लगलाह।

मूल अनुमति-पत्र जे फाइलमे होयबाक चाही, ओतए केवल उज्जर पन्नाक एकटा पातर टुकड़ा छल। ऊपर लिखल छल—‘मूल प्रति प्रबन्धनक लग’। नरेश चिन्तित भेलाह। नियमअनुसार खर्च दर्ज होएबाक पहिने अनुमतिक लिखित प्रति लेखा विभागमे रहबाक चाही। संस्था निजी छल, मुदा ओकर अपन नियम ओ स्वयं बनौने छल। लिखित स्वीकृति बिना भुगतान करब पर बादमे कर्मचारीसँ प्रश्न पुछल जा सकैत छल।

चपरासी हरि नारायण चायक गिलास नेने अएल। नरेश ओकरा पुछलनि, 'एहि फाइलसँ अनुमति-पत्र के उठौलक?' हरि नारायण आश्चर्यसँ तकलक। 'हम तँ खाली काल्हि किरण मैडमक कोठरीसँ फाइल आनने रही। भीतर की छल, हम कोना जानब?' नरेश ओकरा दोष नहि देलथिन। 'ठीक अछि। जकरा कहने अनलह, से लिखित पर्चीमे रहबाक चाही। आगाँसँ फाइलक आवागमन लिखतह।' हरि नारायण माथ हिलौलक।

आठ बजे नरेशक मोबाइलपर घरसँ फोन अएल। हुनक बहिन रेखा कहलीह, 'भैया, पिता जीक दवा समाप्त भऽ रहल छन्हि। साँझ घुरैत आनि देब।' नरेश दवाक नाम पूछलनि आ कागजक कोनामे लिखलनि। 'आनब। आइ देरि हो सकैत अछि।' रेखा कहलथिन, 'देरि करू, मुदा भोजन समयपर खा लियौ।' फोन राखलाक बाद नरेश अपन पुरान थैलीसँ रोटी निकालि मेजक दराजमे रखलनि। घरक साधारण अनुरोध हुनका एतबे बुझबैत छल जे समयपर काज समाप्त करब सेहो आवश्यक अछि।

कुसुम कार्यालय पहुँचलिह तँ नरेश हुनका भेंट करबाक कहलनि। ओ अपन मेजसँ रसीदक क्रमाङ्क देखैत अएलीह। 'समूह सत्रह-बीमे कतेक लोक वास्तवमे प्रस्थान केने छथि?' नरेश पुछलनि। कुसुम सूची खोललथिन। 'बारह नाम लिखल अछि। टिकट आठ गोटेक नकल उपलब्ध अछि। चारिक लेल कहल गेल जे व्यवस्था केन्द्रीय कार्यालयसँ भेल।' नरेश पुछलनि, 'बारहू गोटेक भोजन आ रहबाक खर्च पूरा किएक चढ़ल अछि?' कुसुम उत्तर नहि दऽ सकलीह।

'ई घोटाला अछि?' कुसुम धीरे स्वरमे पुछलथिन। नरेश तुरन्त कहला, 'एखन एहन निष्कर्ष नहि निकालू। दस्तावेज अधूरा अछि। पहिने देखब जे चारि गोटे अलगसँ गेलाह कि कागज बादमे आयत। मुदा चुकता भेल धनक आधार चाही।' हुनक स्वरमे सावधानी छल; ओ जानैत छलाह जे लेखाक गलती आ जानि-बूझि कएल छलक बीच अन्तर प्रमाणसँ स्पष्ट होइत अछि।

नैना नोकरीक पञ्जी नेने लेखा-कक्षमे अएलीह। हुनका नरेशक पुछताछक जानकारी नहि छल। 'एहि तीन रसीदपर कर्मचारीक क्रमाङ्क अलग अछि,' ओ कहलीह। 'काल्हि

किरण मैडम कहने छलीह जे नरेशजी देखताह।' नरेश पन्ना पढ़लनि। कमला देवीक बेटा मोहनक जमा राशि एक रसीदमे प्रशिक्षणक नामपर छल, दोसरमे पञ्जीकरणक नामपर। नरेश पुछलनि, 'मोहनक मूल प्राप्ति अहाँ देखलहुँ?' नैना कहलीह, 'देखल अछि। हम तारीख आ क्रमाङ्क लिखि रखने छी। मूल प्रति हुनकेँ घुरा देने छी।'

नरेश एकटा कापी आगाँ बढ़ौलनि। 'अपन देखल तथ्य एतय लिखि दिअ। जे नहि देखलहुँ, ओकर अनुमान नहि। अहाँक हस्ताक्षर केवल एहि कथनपर होयत जे अहाँ एतेक कागज मिलौलहुँ।' नैना स्पष्ट शब्दमे लिखलथिन—मूल रसीद देखल; रकम आ तिथि नोट कएल; कार्यालयक स्थायी रसीद-पञ्जीसँ क्रमाङ्क नहि मिलल। नरेश कापी बन्न कएलनि।

दस बजे बैंकसँ मासिक विवरणक नकल अएल। कार्यालयक खाता आ बैंकक वास्तविक निकासक बीच दू दिनक अन्तर सामान्य छल; मुदा दूटा भुगतान एक्के दिन अलग-अलग नामसँ गेल छल। पहिल 'प्रशिक्षण-सहायता', दोसर 'वाहन सेवा'। दुनू रकम एकटा परस्पर सम्बद्ध खातामे पहुँचल देखाइत छल। प्राप्तकर्ताक नाम अलग छल, मुदा जमा कराओल कागजपर ठेगाना एक्के बजारक एक्के भवनक छल। नरेश ओहि ठेगानाक कोना लाल कलमसँ घेरलनि।

बैंकक कागज पढ़ैत हुनका चन्दनक नाम नहि भेटल। ई बात महत्त्वपूर्ण छल। बाहर ढुलाई करयवला युवकक नाम मात्रसँ ओकरा कोनो भुगतानक मुख्य लाभार्थी मानब अनुचित होयत। नरेश चालकसभक मजदूरी आ ठीकेदारकेँ देल रकम अलग-अलग लिखलनि। मजदूरीक भुगतान कतेको बेर देरीसँ भेल छल; ठीकेदारक अग्रिम धन समयपर निकलैत छल। एहि अन्तरमे केवल अङ्क नहि, ककर आवश्यकता महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि, से सेहो छिपल छल।

नरेश पुरान मासक पञ्जी खोलि देखलनि जे प्रशिक्षणार्थीसभक नामक आगाँ जमा राशि नित्य एक्के प्रकारेँ दर्ज नहि भेल अछि। ककरो नामक आगाँ 'पूरा', ककरो आगाँ 'आधा', आ तीन गोटेक आगाँ मात्र 'विशेष' लिखल छल। विशेषक अर्थ बतबयवला कोनो

टिप्पणी नहि। ओ पञ्जीक अगिला पन्नामे देखलनि तँ ओतए अवधेश साहक हाथक लिखल एकटा सूची सटल छल। सूचीमे सरकारी प्रतियोगिता परीक्षाक नाम छल, मुदा संस्था स्वयं सरकारी नियुक्तिक अधिकार रखैत नहि छल। नरेश ई कागज अलग नहि कएलनि; अपन प्रश्नक सूचीक क्रमाङ्क बढ़ौलनि।

कुसुम पुछलथिन, 'अवधेशजी बाहरे बैसि लोकसँ शुल्क लैत छथि, मुदा लेखामे हुनक नाम कखनो स्थायी कर्मचारीक रूपमे नहि अएल। हुनका देल रकमक हिसाब के राखैत अछि?' नरेश उत्तर देलनि, 'जँ संस्था हुनक माध्यमसँ रकम लेलक अछि तँ कार्यालयक अनुमति देखेबाक होयत। जँ ओ अपने लेल लेलनि तँ ओकर अलग प्रश्न अछि। एखन दुनू सम्भावना अलग राखू।' ओ कुसुमकेँ कहलनि जे जतए नब आवेदन आबय, ओतए रसीदक मूल प्रति बिना धनक भुगतानक पुष्टि नहि करथि। 'नहि तँ बादमे पीड़ित लोकक हाथमे प्रमाण नहि रहत,' ओ जोड़लनि।

कुसुम बतौलथिन जे काल्हि दूटा युवती अपन परीक्षाक पञ्जीकरणक खर्च लेल जमा कएल धन घुरेबाक आवेदन देने छलीह। हुनकामे एकटा अपन पिताक बीमारीक कारण कोचिंग छोड़ि रहल छलीह। नरेश हुनक आवेदनक प्रति देखलनि। रकम कम छल, मुदा आवेदनक वाक्य सीधा छल—'हम बिना सेवा प्राप्त केने अपन जमा राशि घुरेबाक अनुरोध करैत छी।' नरेश ओकर नीचाँ लिखल प्रमाणपत्रक क्रमाङ्क मिलौलनि। सही निकलल। ओ सोचलनि, जखन एकटा छोट रकमक वापसी लेल एतेक कागज चाही, तखन लाखक हिसाबमे प्रश्न उठेनाइ ककरो सनक नहि भऽ सकैत अछि।

दुपहरि किरण हुनका बजौलथिन। कोठरीमे प्रवेश केलाक बाद नरेश देखलनि जे रतन सिंहक कुर्सी खाली छल। किरण एकटा नब खर्च-पत्र आगाँ सरकौलथिन। 'भैरवपुर समूहक हिसाब बन्द करबाक अछि। महिनाक अन्त निकट अछि। अहाँ एहि नकलपर पुष्टि कऽ दिअ।' नरेश पुछलनि, 'मूल अनुमतिक प्रति?' किरण कहलीह, 'मुख्य कार्यालयमे अछि।' 'मूल कतय अछि, ओ लिखित भेटय; तकर बाद मिलान करब,' नरेश उत्तर देलनि।

किरणक स्वर कड़क भऽ गेल। ‘अहाँ छोट-छोट त्रुटिक कारण पूरा विभागक भुगतान रोकि देब?’ नरेश सभ्यतासँ कहला, ‘हम भुगतान नहि रोकि रहल छी; जकरा पुष्टि करबाक अधिकार अछि, ओकरा पूरा कागज चाही। जँ काल्हि पूछताछ भेल तँ ई हस्ताक्षर हमर होयत, मुख्य कार्यालयक नहि।’ किरण किछु पल चुप रहलीह। फेर कहलीह, ‘रतन बाबू सँ बात करू।’

रतन साढ़े बारह बजेला पर पहुँचलाह। हुनक सङ्ग ठीकेदार वीरेन्द्र राय छलाह। दुनू बरामदामे हँसैत भीतर गेलाह। वीरेन्द्रक हाथमे ठीका-कार्यक नब नक्शा छल। नरेश हुनका पहिने सार्वजनिक कार्यक्रममे देखने छलाह। एखन हुनका देखि ई विचित्र लगल जे जे नाम वाहनक भुगतानक कागजमे देखल गेल छल, ओही नामक व्यक्ति मालिकक सङ्ग सीधा भीतर जा रहल छथि। मुदा सम्पर्क होयब अपनेमे अपराधक प्रमाण नहि छल।

थोड़े देर बाद रतनक कोठरीसँ पुकार अएल। ‘नरेशजी, अहाँ हाजिर होउ।’ भीतर रतन मेजक कात बैसल छलाह, वीरेन्द्र खिड़की लग फोन देखैत छलाह। रतन पुछलनि, ‘हिसाबमे की अड़चन अछि?’ नरेश रकमक दूटा पन्ना खोलि रखलनि। ‘भोजन, रहबाक प्रबन्ध आ वाहनक मदमे जे खर्च देखाओल अछि, ओकर समर्थक कागज अधूरा अछि। दोसर बात, एक्के ठेगानाक दू खातामे धन गेल अछि। ई भुगतानक स्वीकृति के देने छथि?’

रतन कागज उठा कऽ एक नजरि देखलनि। ‘विकासशील संस्था अछि। कखनो एकटा ठीकेदार अनेक तरहक सेवा दैत छथि। एतय किछु अस्वाभाविक नहि।’ नरेश उत्तर देलनि, ‘हो सकैत अछि। मुदा सेवा कएलाक विवरण आ स्वीकृति चाही।’ वीरेन्द्र अपन फोन राखि कहलनि, ‘हमर कम्पनी माल ढुलाई करैत अछि। लेखापालकेँ शङ्का अछि तँ खुला हिसाब देखाओल जाएत।’ नरेश हुनका दिस तकैत कहला, ‘एहि फाइलमे अहाँक कम्पनीक बिल नहि, दोसर नाम अछि। हम ओही नामक हिसाब पूछैत छी।’

एहि उत्तरपर कोठरीमे किछु क्षण मौन रहल। रतन कागज मेजपर रखि कहलनि, ‘अहाँ ई सभ लिखित दऽ दिअ। प्रबन्धन उत्तर देत। मुदा ध्यान राखू, ककरो निजी कारोबारीक नाम आरोपसँ नहि जोड़ब।’ नरेश विनम्रतासँ माथ हिलौलनि। ‘हम आरोप नहि लगौने छी।

प्रश्नक क्रमाङ्क बनाकऽ दऽ देब।' रतनक चेहरा सामान्य छल, मुदा किरण जे दुआरि लग ठाढ़ छलीह, हुनका नरेशक उत्तर नीक नहि लागल।

बैठकक बाद नरेश कार्यालयक पाछाँक सँकुचित बरामदामे रोटी खयबाक लेल गेलाह। ओतय दू मजदूर बैसि अपन बकाया मजदूरीक बात करैत छलाह। एक कहैत छल, 'गाड़ी चलाओल दिन लिखल अछि आठ, पैसा भेटल पाँच दिनक।' दोसर उत्तर देलक, 'प्रबन्धक कहैत छथि, ठीकेदारसँ पुछू। ठीकेदार कहैत छथि, कार्यालयसँ पुछू।' नरेश हुनका बातमे नहि पड़लाह, मुदा मजदूरीक रजिस्टर फेर देखबाक मन बनौलनि।

रोटी खा चुकलाक बाद ओ मजदूरसभसँ नाम आ रसीदक तिथि पुछलनि। पहिल मजदूर अपन नाम नन्दकिशोर साह बतौलक। ओकरा आठ दिनक काजक बदला पाँच दिनक भुगतान भेटल छल। बाकी तीन दिनक लेल मौखिक आश्वासन छल। 'तँ लिखित आवेदन दिअ। प्राप्ति लऽ जाउ,' नरेश कहलनि। मजदूर हँसि पड़ल। 'बाबू, लिखि देब, मुदा फेर काज नहि भेटल तँ?' नरेश ओकर चिन्ताकेँ असत्य नहि कहलनि। 'ई भय बुझैत छी। मुदा हिसाबमे बाकी रकम देखायब बिना हम भुगतानक प्रश्न उठा नहि सकब।'

दुपहरिक बाद नरेश पुरान मासक बही निकाललनि। शराबबन्दीक बाद परिवहन ठेकाक रकममे असामान्य वृद्धि देखाइत छल। 'निर्माण-सामग्री'क नामपर जे गाड़ीसभक भाड़ा चढ़ल छल, ओकर कुल रकम मजदूरीक भुगतानसँ कतेको बेसी छल। ठेका काज बढ़ल होयत, ई सम्भव छल; मुदा गाड़ी चलबाक अनुमति-पत्र आ वास्तविक ढुलाईक विवरण उपलब्ध नहि छल। नरेश ककरो दोषी नहि ठहरौलनि। ओ हिसाबमे मूल अभिलेख नहि भेटबाक बात दर्ज कएलनि।

दिन ढलैत नैनाकेँ फेर लेखा-कक्षमे आएबाक पड़ल। 'पूनमक समूहक स्थानक नाम फेर बदलि गेल अछि,' ओ कहलीह। 'भैरवपुरक जगह सोनापुर लिखल अएल अछि। कोनो हस्ताक्षर नहि।' नरेश हुनका बैसबाक कहलनि। 'अहाँ जे देखलहुँ, ओकर प्रमाण राखू। कागजक मूल पन्ना अपन लग नहि लिअ। कार्यालयक फाइलमे उचित क्रमसँ राखू। जँ किछु ककरो द्वारा बदलल जाएत तँ पञ्जीमे फेर देखल जा सकत।'

नैना कनेक हिचकिचा कऽ पुछलथिन, ‘अहाँकेँ ई सभ सामान्य गलती लगैत अछि?’ नरेश कहलनि, ‘एकटा गलती सामान्य हो सकैत अछि। कतेको गलती एक्के दिशा दिस इशारा करय तँ प्रश्न बढ़ैत अछि। मुदा प्रश्नक उत्तर मिले बिनु हम फैसला नहि देब।’ नैना हुनक बात ध्यानसँ सुनलीह। हुनका पहिल बेर लगल जे कार्यालयमे कोनो व्यक्ति अपन पदक कारणेँ नहि, अपन विवेकक कारणेँ सेहो ठाढ़ अछि।

तखन रतनक व्यक्तिगत सहायक अएल। ओकर हाथमे एकटा बन्द लिफाफा छल। ‘साहब कहलनि, एहि फाइलक हिसाब आजु पूरा करू।’ नरेश लिफाफा खोललनि। भीतर एकटा नब स्वीकृति-पत्र छल, जाहिपर किरणक हस्ताक्षर आ रतनक नामक छपल मुहर छल। तारीख तीन सप्ताह पुरान छल, मुदा पन्नाक कागज आ छपाइक रूप एखन कार्यालयमे चलैत नब रूपसँ मेल खाइत छल। ई संयोग सेहो भऽ सकैत छल। नरेश पत्रक प्राप्तिक आजुक तारीख लिखि देलनि।

‘एहि पन्नापर प्राप्ति किएक लिखल?’ सहायक पुछलक। ‘आजु भेटल अछि, तेँ आजुक प्राप्ति लिखल,’ नरेश सहज स्वरमे कहलनि। ‘पत्रक ऊपरक तारीख हम नहि बदललहुँ।’ सहायक किछु उत्तर नहि देलक। ओ घुरि गेल। नरेश पत्रक नकल निर्धारित फाइलमे राखलनि आ अपन लिखित प्रश्नमे जोड़लनि—पुरान तिथिवला अनुमति-पत्र आजु प्राप्त।

साँझक कात कार्यालयक भीतर आवाज कम भऽ गेल। कुसुम अपन मेज बन्न कऽ चलि गेलीह। हरि नारायण झाड़ू नेने भीतर देखय अएल। नरेश ओकरा कहलनि, ‘ई कोठरीक झाड़ू काल्हि भोर करिह। कागज खुलल अछि।’ हरि नारायण कहल, ‘बाबू, आजु मालिकक चालक दोसर बेर पूछय अएल छल जे अहाँ कखन घर जाएब।’ नरेश मुसुका कऽ पुछलनि, ‘की कोनो कागज देबाक छल?’ ‘किछु नहि कहलक।’

नरेश घरक लेल निकललाह तँ गलीमे दवाक दोकान बन्द होमयवला छल। ओ दौड़ि कऽ पिता लेल दवा किनलनि। दवाक पर्ची पर नाम देखैत हुनका अपन पेशाक पर्चीसभ मोन पड़ल। घरक दवाक हिसाबमे गलती भेल तँ रोगी कष्ट पाओत; कार्यालयक हिसाबमे

गलत रकमक परिणाम बहुतो लोक भोगि सकैत छथि। ओ ई तुलना ककरो सुनौने नहि छलाह। अपन थैलीमे दवा राखि घरक बाट पकड़लनि।

रेखा दुआरि खोललथिन। 'देरि भेल। भोजन गरम करैत छी।' नरेश कहला, 'पहिने बाबूक दवा दिअ।' पिता बिछानपर बैसि समाचार सुनि रहल छलाह। हुनका दवा दैत नरेश बुझलनि जे परिवारक सामान्य दिनचर्या अखण्ड राखबाक प्रयत्न कतेक आवश्यक अछि। रेखा पुछलथिन, 'कार्यालयमे सब ठीक अछि ने?' नरेश सीधा उत्तर नहि देलनि। 'हिसाबमे किछु प्रश्न अछि। उत्तर भेटलाक बाद ठीक बुझायब।'

भोजनक बाद ओ निजी कापी खोललनि। कार्यालयक गोपनीय कागज घर नहि अनने छलाह। ओ केवल प्रश्नक सूची लिखलनि—समूह सत्रह-बीक वास्तविक उपस्थिति; दू अलग नामक एक्के ठेगाना; वाहन-भाड़ाक मूल विवरण; मजदूरक तीन दिनक बकाया; नब पत्रक पुरान तारीख। सूचीक अन्तमे एकटा प्रश्न अलग लिखलनि—'जे हिसाब लिखैत अछि, ओहि पर निर्णयक जिम्मेवारी केकर?'

राति ओ सूची बन्द करैत निश्चय कएलनि जे अगिला दिन प्रबन्धनकेँ औपचारिक लिखित प्रश्न देताह आ उत्तरक प्रति अपन कार्यालयी अभिलेखमे सुरक्षित राखताह। हुनका एखन एहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटल छल जे पूनम कतए छथि, अथवा वाहनसभमे की ढुआइल। मुदा एतबा स्पष्ट भऽ गेल छल जे कागजक खाली ठाम साधारण लापरवाही मानि छोड़ल नहि जा सकैत अछि।

अध्याय २० : अवैध सम्बन्ध

किरण घर पहुँचलिह तँ रातिक भोजन चूल्हिपर राखल छल। दिनेश बरामदामे प्लास्टिकक कुर्सीपर बैसि बिजलीक बिल देखैत छलाह। कोठरीक एकटा बल्ब टिमटिमा रहल छल। ‘आजु फेर देरि?’ ओ पुछलनि। किरण पर्स मेजपर राखि कहलीह, ‘महिनाक अन्तक हिसाब अछि। कर्मचारीसभक वेतन, प्रशिक्षणक भुगतान, सभ एक्के बेर।’ दिनेश कागजसँ आँखि नहि उठौलनि। ‘काल्हियो एही बात कहने रही। भोजन गरम अछि, खा लिअ।’

दुनूक विवाहकेँ बारह बरख भेल छल। दिनेश पहिने एकटा निजी औषधि-वितरण कम्पनीमे काम करैत छलाह। कम्पनी बन्द भेलापर किछु समय बेरोजगार रहलाह। आब बजारमे छोट मोटर-पुर्जा दोकान चलबैत छथि। आमदनी नियमित नहि अछि। किरणक वेतनसँ घरक किराया, बिजलीक बिल आ बैंकक किस्त चुकैत छल। एहि हिसाबसँ किरण स्वयंकेँ घरक मजबूत आधार मानैत छलीह; मुदा ओहि आधारक सङ्ग ओ अपन भीतर एकटा एहन गुप्त सम्बन्ध पोसने छलीह जकरा दिनेशक समक्ष स्वीकार करबाक साहस नहि छलनि।

दिनेश थारी लगौने समय पुछलनि, ‘काल्हि अस्पतालमे हमर मायक जाँच अछि। अहाँकेँ कहने छलहुँ।’ किरण कनेक ठमकलीह। ‘भोरे कार्यालयक बैठक अछि। अहाँ माए केँ लऽ जा सकैत छी?’ ‘हम लऽ जाएब,’ दिनेश उत्तर देलनि। ‘मुदा तिथि हम सभ एक सङ्ग तय केने रही। अहाँ एखन प्रत्येक बातमे कार्यालयक समय आगाँ राखैत छी।’ किरण भोजनक पहिल ग्रास लैत चुप रहलीह। हुनका दिनेशक शिकायतमे कठोरता कम, उपेक्षित होयबाक पीड़ा बेसी सुनाइत छल।

भोजनक बीच मोबाइलमे सन्देश अएल। किरण परदा पर तकलीह आ तुरन्त फोन उलटा कऽ रखलनि। दिनेश कनेक मुसुकौलनि, ‘कार्यालय एखनहुँ चलि रहल अछि?’

किरण कहलीह, 'कागजक उत्तर चाहैत छथि।' दिनेश आगाँ किछु नहि पुछलनि। ई मौन किरणकेँ राहत नहि देलक; ओहि मौनमे हुनका अपन झूठ आरो स्पष्ट सुनाइत छल।

सन्देश रतनक छल—'भोर दस बजेसँ पहिने भेटू। नरेशक प्रश्न बढ़ि रहल अछि।' छोट वाक्य छल, मुदा किरण एकर पाछाँक चिन्ता बुझैत छलीह। पाछिला दू बरखमे रतन हुनका अनेक बेर कार्यालयक कामसँ बाहर बजौने छलाह। आरम्भमे ओ पैघ ग्राहकसँ बातचीत, बैंकक आवश्यक कागज आ यात्राक व्यवस्थाक प्रसङ्ग छल। धीरे-धीरे निजी भोजन, उपहार आ एकान्त भेट हुनक दिनचर्याक हिस्सा बनि गेल। किरण अपन विवाहक समस्या रतनसँ कहय लगलीह; रतन अपन घरक असन्तोष सुनबैत छलाह। एक समय दयाक रूपमे आरम्भ भेल निकटता विवाहेतर सम्बन्धमे बदलि गेल छल।

किरण मोबाइलमे उत्तर लिखलथिन—'कार्यालयमे भेटब। अलग ठाम नहि।' लिखल उत्तर पठेबासँ पहिने फेर पढ़लथिन। रतनक उत्तर तुरन्त आएल—'ठीक अछि, मुदा एकान्तमे बात आवश्यक अछि।' किरण फोन बन्द कएलनि। हुनका लगल जे हुनक दूनू जीवन एखन एकटा पातर डोरिसँ जुड़ल अछि; जे दिन डोरी टूटत, दूनू घरमे किछु नहि बचत। तखन हुनका अपन विचारपर क्रोध आएल—दूनू घर एक-दोसरक विश्वासपर बनल अछि, कोनो गुप्त डोरिपर नहि।

अगिला क्षण किरणकेँ अपन मायक बात मोन पड़ल। दू दिन पहिने माय फोनपर कहने छलीह जे दिनेश हरेक सप्ताह औषधि पठबैत छथि, मुदा बेटी कतेको सप्ताहसँ भेंट करय नहि अएलीह। ओहि समय किरण व्यस्तताक बहाना बना देने छलीह। आब ओ सोचलीह जे व्यस्तता पूरा सत्य नहि छल। रतनसँ भेटबाक लेल ओ समय निकालि लैत छलीह; अपन परिवारक लेल नहि। दिनेशक आर्थिक कमजोरी पर क्रोध करैत-करैत ओ हुनक नियमित स्नेहकेँ मूल्यहीन मानि लेने छलीह। तखनहुँ रतनक निकटता केवल स्वार्थक सौदा नहि बुझाइत छलनि। एहि उलझनक कारणेँ ओ ककरो समक्ष स्पष्ट होयब टारैत रहलीह। ओ देखैत छलीह जे अपन निर्णयकेँ कारण बताबैत ओ दिनेश पर दोष राखि दैत छथि, मुदा विवाहेतर सम्बन्धक चुनाव हुनका स्वयं केने छलनि। ई सत्य मानब हुनका कठिन लगैत छल। ओ दोष कतहु थोपब नहि चाहैत छलीह।

ओहि राति रतन सिंहक घरमे सेहो शान्ति नहि छल। विभा सिंह भोजनक मेजपर दूटा थारी राखने छलीह। रतन घर घुरैत देरि केने छलाह। हुनक बेटी अनुष्का कोठरीमे परीक्षा लेल पढ़ि रहल छलीह। विभा पुछलथिन, 'आइ विद्यालयसँ फीसक सन्देश अएल अछि। अहाँ कहलहुँ बैंकसँ भुक्तान भऽ जाएत। एखनहुँ शेष देखाइत अछि।' रतन जूता खोलैत कहलनि, 'खाता देखब। कारोबारमे कतेको रकम अटकल अछि।'

विभा केवल गृहस्थीक खर्च नहि देखैत छलीह। विवाहक प्रारम्भिक वर्षमे ओ अपन मायसँ भेटल किछु धन रतनक पहिल दोकानमे लगौने छलीह। बादमे घरक हिसाब, बेटीक पढ़ाइ आ वृद्ध सासुक उपचार हुनक जिम्मे रहल। रतनक व्यवसाय बढ़ल, मुदा निर्णयक कागज हुनका सोझाँ आबय बन्द भऽ गेल। ओ ई परिवर्तनक अर्थ बुझबाक प्रयास करैत छलीह। घरमे धनक अभाव नहि, मुदा धन कतय सँ आबैत अछि आ कतय जाइत अछि, एहि प्रश्नक उत्तर अस्पष्ट छल।

'हमर नामवला खातासँ काल्हि एकटा भुगतान भेल अछि,' विभा कहलीह। 'बैंकक सन्देश अएल, मुदा हमरा नहि बुझल जे ककरा लेल।' रतन क्षणभर चुप रहलाह। 'कार्यालयक अग्रिम खर्च। हम बुझा देब।' विभा पुछलथिन, 'हमरा पुछने बिना हमर नामक खाता कारोबारमे किएक चलैत अछि?' रतन कहला, 'व्यवसायमे एहन व्यवस्था रहैत अछि। अहाँ चिन्ता नहि करू।' 'चिन्ता हम कखन करू, से निर्णय हमरा करय दिअ,' विभा संयत स्वरमे उत्तर देलथिन।

अनुष्का कोठरीसँ बाहर अएलीह। 'माय, पानि कतय अछि?' विभा ओकरा बोतल देलथिन। बेटी दुनूकेँ देखि बुझि गेलीह जे भोजनक मेजपर कोनो अप्रिय बात चलि रहल अछि। ओ बिना किछु पुछने घुरि गेलीह। विभा रतन दिस तकैत कहलीह, 'बच्चाक समक्ष झगड़ा नहि करब। मुदा हमरा लिखित हिसाब देखबाक अछि।' रतन उत्तर देबाक बदला भोजन उठौने भीतर चलि गेलाह।

राति विभा कपड़ाक आलमारी खोलैत एकटा कागजक लिफाफा देखलथिन। रतनक कोटमे होटलक बिल छल; बिलपर दुइ व्यक्तिक भोजन आ एकटा कोठरीक शुल्क लिखल

छल। तिथि ओही दिनक छल जहिया रतन व्यापारिक बैठकक लेल बाहर गेलाक बात कहने छलाह। बिल अपनेमे सम्बन्धक प्रमाण नहि छल; कोनो ग्राहक वा सहकर्मी सङ्ग बैठक सेहो भऽ सकैत छल। विभा कागज राखि देलथिन। हुनका एखन प्रश्न पूछबाक चाही कि चुप रहबाक, से निश्चय नहि छल।

दोसर दिन कार्यालयमे किरण नरेशक लिखित प्रश्न देखलथिन। पाँचटा बिन्दु—उपस्थिति, विक्रेता, वाहन, स्वीकृति आ बकाया मजदूरी। प्रत्येक बिन्दुक उत्तर लेल स्पष्ट कागज चाही। रतन दस बजेसँ पहिने पहुँचि गेलाह। ओ किरणकेँ कहलनि, ‘एहि प्रकारक पत्र बाहर गेल तँ लोक अनुमान लगबय लागत।’ किरण उत्तर देलथिन, ‘उत्तर दऽ दियौ। जँ सब कागज अछि तँ प्रश्न अपने समाप्त होयत।’ रतन हुनका आश्चर्यसँ देखलनि। ‘अहाँ एखन नरेशक पक्ष लैत छी?’

किरण खिड़की लग जा ठाढ़ भेलीह। ‘हम ककरो पक्ष नहि लैत छी। नौकरी पर छी। दिनभरि कर्मचारिसभ हमरा प्रश्न पुछैत छथि। हमरा उत्तर चाही।’ रतन हुनक कात जा धीरे कहलनि, ‘अहाँकेँ हमरा पर विश्वास नहि रहल?’ किरण हुनक दिस नहि तकलीह। ‘विश्वासक अर्थ ई नहि जे गलत कागजपर आँखि मूनि हस्ताक्षर करब। अहाँ हमरा एहन स्थितिमे राखि देने छी जे घरमे झूठ बाजैत छी, कार्यालयमे बहाना बनबैत छी।’

रतन अपन स्वर नरम कएलनि। ‘अहाँक जीवनमे हम सुख अनलहुँ। दिनेश कखन अहाँक परिश्रम बुझलनि? एहि संस्थामे अहाँ अपन क्षमता देखौने छी।’ किरणक चेहरा तमतमा उठल। ‘हम अपन परिश्रमसँ एतय पहुँचल छी। अहाँ अवसर देलहुँ, एकर अर्थ ई नहि जे हम अहाँक ऋणी भऽ कऽ अपन विवेक छोड़ि दिअ।’ रतन एक क्षण चुप रहलाह। फेर कहला, ‘जँ अहाँ एना सोचैत छी तँ हमरा दुख अछि।’

किरण अपन भीतरक विरोधाभास अनुभव करैत छलीह। रतनसँ हुनका स्नेह छल कि निर्भरता, एहि प्रश्नक सरल उत्तर नहि छल। रतनक सङ्ग बिताओल किछु घड़ी वास्तवमे सुखद छल; हुनक ध्यान, बात सुनबाक इच्छा आ उपहार किरणकेँ एक समय अपन जीवनक रिक्तता भरैत लगने छल। मुदा आब ओ देखैत छलीह जे व्यावसायिक निर्णय आ

निजी सम्बन्ध एक-दोसरामे उलझि गेल अछि। ओ चाहितो बिना रतनक अनुमति कोनो स्पष्ट उत्तर नहि दे सकैत छलीह।

बाहरक कोठरीमे नैना कुसुमसँ पूनमक समूहक सम्बन्धमे बात करैत छलीह। 'काल्हि परिवार फेर पुछत,' नैना कहलीह। 'दफ्तरक उत्तरमे कतहु वास्तविक ठेगाना नहि।' कुसुम पुछलथिन, 'किरण मैडमकेँ फेर लिखू?' नैना कहलीह, 'हँ, एहि बेर ई लिखब जे परिवार थानाक प्राप्ति-पत्र दऽ चुकल अछि। केवल प्रशिक्षणक नाम जानब पर्याप्त नहि।' किरण काँचक दुआरिक ओहि पारसँ बात सुनलीह। हुनका पूनमक नाम सुनिते आँखि झुकि गेल।

किरण अपन फाइलमे एकटा यात्रा-अनुमतिक नकल देखने छलीह, जाहिमे पूनमक समूहक अन्तिम गन्तव्य खाली छोड़ल छल। रतन कहलनि जे केन्द्रीय कार्यालय बादमे भरत। ओ एखन एहि कागजक अर्थ बुझबाक प्रयास करैत छलीह। हुनका एतबा नहि मालूम छल जे पूनमक सङ्ग की भेल, मुदा एतबा बुझैत छलीह जे वास्तविक ठेगाना नहि देनाइ सामान्य कार्यालयी त्रुटि नहि मानल जा सकैत अछि।

दुपहरि रतनक फोनपर वीरेन्द्र रायसँ बात भेल। किरण बैठकक कागज नेने कोठरीमे अएलीह तँ रतन कहलनि, 'ठीका-कार्यक नब भुगतान एखन रोकू नहि। वीरेन्द्रक मजदूरसभक हिसाब अलग अछि।' किरण पुछलथिन, 'नरेश एहि भुगतानक ठेगाना पूछने छथि। सीधा उत्तर नहि भेटत तँ फेर रुकत।' रतन फोन ढाँकि कहलनि, 'हम देखब। अहाँ बस पत्र तैयार राखू।' किरण बुझि गेलीह जे हुनका निर्णयमे सहभागी नहि, केवल आदेश पूरा करयवाली बनाओल जा रहल अछि।

साँझ दिनेश किरणक कार्यालयक बाहर मोटरसाइकिल नेने ठाढ़ छलाह। हुनका बाजौने नहि गेल छल। मायकेँ अस्पताल लऽ गेलाक बाद ओ बाजरसँ घुरि रहल छलाह। किरण बाहर निकललीह तँ दिनेश मुसुका कऽ कहलनि, 'सोचलहुँ एक संग घुरब। आइ मरीजक रिपोर्ट नीक अछि।' किरण पहिने चौंकलीह, फेर सामान्य बनबाक प्रयास कएलनि। 'अहाँ फोन कऽ देने रहितहुँ,' ओ कहलीह। दिनेश उत्तर देलनि, 'आइ मोबाइल बन्द छल। एतय सँ जाइत रही, तेँ ठमकि गेलहुँ।'

तखन रतनक गाड़ी फाटकसँ निकलल। गाड़ी किछु दूर जा रुकल। रतन शीशा नीचाँ कऽ किरण दिस तकलनि, फेर दिनेशकेँ देखि सामान्य अभिवादन कएलनि। दिनेश सेहो माथ हिलौलनि। 'साहब एखन घुरैत छथि?' ओ किरणसँ पुछलनि। 'हँ, बैठक छल,' किरण उत्तर देलथिन। गाड़ी आगाँ बढ़ि गेल। दिनेशक प्रश्न साधारण छल, मुदा किरणक भीतर ओ असाधारण भार बनि रहल।

बाटमे दिनेश मायक जाँचक विवरण सुनौलनि। चिकित्सक औषधि बदलने छलाह, अगिला सप्ताह फेर देखेबाक छल। दिनेशक स्वरमे थकान छल, मुदा संतोष सेहो। किरण धैर्यसँ सुनलीह। हुनका बुझाइत छल जे जे आदमीक संग ओ रोज भोजन करैत छथि, ओकरा पीड़ा आ परिश्रम सुनबाक समय ओ स्वयं कम देलनि अछि। एहि क्षण मात्र पछतावा भेलाक अर्थ ई नहि जे पुरान झूठ समाप्त भऽ गेल। ओ जानैत छलीह जे सत्य कहबाक निर्णय अबहुँ बाकी अछि।

घर पहुँचलाक बाद दिनेश आलमारीसँ पुरान फोटो निकाललनि। हुनक विवाहक समयक तस्वीर छल। 'माय आइ ई देखैत छलीह,' ओ हँसि कऽ कहलनि। तस्वीरमे किरणक माथपर सिन्दूर ताजा छल, दिनेशक चेहरापर संकोच। किरण फोटो हाथमे लैत बहुत दिन बाद अपन पहिल घरक कोठरी मोन कएलनि, जतए दुनू एकटा पंखाक नीचाँ गर्मीमे सुतैत छलाह। ओहि समय कम सुविधा छल, मुदा झूठ एतेक नहि छल।

दिनेश पुछलनि, 'अहाँ ठीक छी?' किरण उत्तर देलथिन, 'थाकल छी।' दिनेश तस्वीर घुरा लेलनि। 'आराम करू। काल्हि दोकानमे नया माल आएत। हम भोर निकलि जाएब।' ओ कोनो जिज्ञासा नहि देखौलनि। किरणकेँ ओकरा विश्वासक बोझ फेर अनुभव भेल।

रतन अपन घरमे देरि राति पहुँचलाह। विभा जागल छलीह। मेजपर विद्यालयक शुल्कक रसीद आ बैंकक विवरण छल। 'एहि दूटा कागजमे अन्तर अछि,' विभा कहलीह। 'भुगतान भेल कहलहुँ, मुदा बैंकमे अनचिन्हार निकासी देखाइत अछि।' रतन थाकल स्वरमे कहलनि, 'काल्हि लेखापालसँ मिलाइ लेब।' विभा पूछलथिन, 'अहाँक कारोबारक हिसाब हम जे दिन पुछैत छी, ओहि दिन अहाँ काल्हि कहैत छी। कतबा काल्हि बाकी अछि?'

रतन झुँझला गेलाह। ‘घरमे घुरिते पूछताछ शुरू होइत अछि।’ विभा संयत रहलीह। ‘ई घर अछि, कार्यालय नहि। एतय हम अहाँक अधीन कर्मचारी नहि छी। जे पैसा हमर नामपर चलैत अछि, ओकर बात पुछबाक हमरा पूरा अधिकार अछि।’ रतन किछु क्षण तकलनि। ओ अपन स्वर नीचाँ कएलनि। ‘ठीक अछि। रविदिन सभ देखाएब।’ विभा कागज मोड़ि राखलथिन। पहिल बेर हुनका लगल जे स्वीकृति भेटल अछि, मुदा भरोसा नहि।

राति किरणक मोबाइलमे रतनक फेर सन्देश आएल—‘आइ अहाँ हमरा सँ दूर लगलीहुँ।’ किरण देरि धरि परदा पर तकैत रहलीह। मनमे जवाबक कतेको वाक्य बनल। अन्तमे लिखलथिन—‘कार्यालयक प्रश्नक उत्तर कागजसँ दिअ। निजी बातक लेल एखन समय नहि।’ सन्देश पठा देने ओ फोन बन्द कएलनि। दिनेश बिछानक दोसर कात सुति गेल छलाह। किरणकेँ नीन्न नहि अएल। ओकरा भीतर प्रेम, अपराध-बोध आ भय अलग-अलग नहि रहि गेल छल। ओ जनैत छलीह जे अवैध सम्बन्धक वास्तविक मूल्य केवल दुनू व्यक्तिक असुविधा नहि, ओहि सभ लोकक विश्वास अछि जिनका अपन निर्णयक विषयमे किछु मालूम नहि।

दोसरा भोर विभा अपन बैंकक पुरान पासबुक निकालि किछु पन्ना अलग राखलथिन। ओ रतनक गोपनीय कागज नहि खोजि रहल छलीह; अपन नामपर भेल लेनदेनक हिसाब बूझय चाहैत छलीह। बेटी विद्यालय जाएबाक तैयारी करैत पुछलक, ‘माय, फीस भरि गेल?’ विभा उत्तर देलथिन, ‘आइ भरि देब।’ एतबा कहि ओ निश्चय कएलनि जे अपन घरक निर्णयमे आब प्रश्न पुछब छोड़तीह नहि।

दुपहरिक समय विभा विद्यालय गेलीह। शुल्क जमा करैत हुनका ज्ञात भेल जे पछिला मासमे विद्यालयक खातामे कोनो भुगतान आएल नहि छल। रतन जे सन्देश देखौने छलाह, ओ व्यवसायिक खातासँ भेल अलग निकासी छल। प्रधानाध्यापिकासँ भेटि विभा विनम्रतासँ कहलीह, ‘बेटीक पढ़ाइमे बाधा नहि आबय, हम भुगतान एखन करैत छी।’ विद्यालयक कर्मचारी रसीद देलनि। विभा ओकरा थैलीमे रखैत तय कएलनि जे घरक आवश्यक खर्च लेल अपन स्वतंत्र बचत अलग राखतीह।

घर घुरैत बाटमे हुनक पुरान सहेली आरती भेटलीह। आरती पूछलथिन, 'अहाँ बहुत दिनसँ विद्यालयक कार्यक्रममे नहि देखाइत छी।' विभा सामान्य मुस्कानसँ कहलीह, 'घरक काज बढ़ि गेल अछि।' आरती हुनक थाकल चेहरा देखलथिन, मुदा व्यक्तिगत प्रश्न नहि कएलनि। केवल कहलीह, 'जँ बैंकक हिसाब मिलेनाइ कठिन हो तँ हमर भाए ओही क्षेत्रमे काज करैत छथि; नियम बुझा सकताह।' विभा धन्यवाद देलथिन। हुनका सहायता स्वीकार करबमे संकोच छल, मुदा सभ काज अकेले बुझबाक जिद सेहो आब उचित नहि लगैत छल।

बजारक भीड़मे ओ एकटा नवविवाहित जोड़ी देखलथिन। लड़की हाथमे एकटा छोट पलंगपोश नेने छल, युवक दाम पूछैत छल। विभाकेँ विवाहक पहिल वर्ष मोन पड़ल, जखन रतन थाकलाक बादो दोकानक हिसाब हुनक सोझाँ खोलि बैसैत छलाह। ओ दिन बैंकमे कतेक शेष अछि, से दुनू मिलि देखैत छलाह। आब धन बेसी छल, मुदा साझेदारी कम। विभा अपन मनमे ई निर्णय नहि कएलनि जे पतिक प्रत्येक काज गलत अछि। ओ केवल एतबा निश्चय कएलनि जे संदेहक स्पष्ट उत्तर माँगब हुनक अधिकार अछि।

राति अनुष्का पढ़ाइ सँ उठि मायक लग बैसलीह। 'माय, विद्यालयमे मित्रसभ कहैत छल जे पापा बहुत पैघ आदमी छथि, तेँ हमरा चिन्ता नहि करबाक चाही।' विभा बेटीकेँ देखलथिन। 'पैघ होयब केवल टका होयब नहि। अपन काजक हिसाब देब सेहो जरूरी अछि,' ओ कहलीह। अनुष्का पुछलक, 'हम किछु गलती केलहुँ?' विभा ओकर माथ सहलौलथिन। 'नहि। तोँ अपन पढ़ाइ कर। ई बड़का लोकक बात अछि; ओकर जिम्मेवारी बड़का लोक पर रहत।' बच्चीक चेहरासँ भय उतरि गेल। विभा बुझलीह जे पतिक संग मतभेद रहलोपर बेटीकेँ असुरक्षाक बीच छोड़ब नहि चाही।

अध्याय २१ : पहिल धमकी

अभय पासवान समाचार कार्यालय पहुँचलाह तँ सम्पादक हुनक मेजपर एकटा मुड़ल समाचारपत्र राखि देने छलीह। जतेक स्थानपर अभयक समाचार छपल छल, ओकर चारू कात लाल कलमसँ रेखा खींचल छल। ऊपर छोट अक्षरमे लिखल छल—‘अपन सीमा बुझू।’ कागज सामान्य डाकसँ आएल छल; पठेनिहारक नाम नहि। अभय समाचारपत्र खोलि देखलनि। छपल समाचार पुरान छल, मुदा लाल रेखा ताजा।

‘ई भोर डाकिए देने छल,’ सम्पादक मञ्जरी झा कहलीह। ‘पत्रक लिफाफा हम सुरक्षित रखने छी। अहाँक मनमे कोनो व्यक्ति विशेषक शङ्का अछि?’ अभय कहलनि, ‘समाचारमे परीक्षा, शुल्क आ संस्थाक बात अछि। ककरा आपत्ति भेल, एखन निश्चित कहब कठिन।’ मञ्जरी कहलीह, ‘ठीक। पहिने ई कागजक फोटो आ प्राप्तिक समय लिखि राखू। एहन धमकीकेँ सामान्य मजाक बुझि नहि छोड़ब।’

अभय समाचारक फाइल खोललनि। एतय कोनो गोपनीय सरकारी कागज नहि छल; विभागीय सूचना, अभ्यर्थीक बयान आ संस्थाक लिखित उत्तर छल। जे लोक प्रकाशित तथ्यक उत्तर दऽ सकैत छथि, हुनका एकटा बन्द लिफाफाक सहारा किएक चाही, एहि प्रश्नक उत्तर हुनका नहि भेटल। ओ फोनक आवाज सुनैत अपन काम करय लगलाह।

पहिल फोन एकटा अनचिन्हार नम्बर सँ अएल। पुरुषक स्वर छल। ‘अभय बाबू, अहाँ खूब पढ़ल-लिखल छी। युवकसभक हितक बात लिखैत छी, ई नीक अछि। मुदा जे घर चलैत अछि, ओकरामे आगि नहि लगाउ।’ अभय पुछलनि, ‘अहाँ के बजैत छी?’ उत्तर आएल, ‘नामसँ की होयत? जे नौकरीक बात छापलहुँ, ओकरा भुलि जाउ। अगिला समाचारमे ककरो नाम अएल तँ अहाँकेँ पछतावा होयत।’ फोन कटि गेल।

अभय घड़ीक समय नोट कएलनि। मञ्जरीकेँ बात सुनौलनि। ओ कहलीह, ‘ई सीधा धमकी अछि। कॉलक विवरण सुरक्षित राखू। थानामे लिखित सूचना दियौ।’ अभय

पुछलनि, ‘तुरन्त समाचार छापब?’ मञ्जरी उत्तर देलथिन, ‘पहिने सुरक्षा आ शिकायत। समाचार लिखबाक जिम्मेवारी अलग अछि। जे बात सत्यापित होयत, से बादमे छपि सकैत अछि।’

दुपहरि धरि अभय अपन नियमित काज करैत रहलाह। सविता कुमारीक फोन अएल। ‘कल विश्वविद्यालयक फाटक लग अभ्यर्थीसभक शान्तिपूर्ण धरना अछि। नब परीक्षाक तिथि आ प्रश्नपत्र लीकक आरोपक निष्पक्ष जाँच चाहैत छी। अहाँ रहब?’ अभय कहलनि, ‘रहब। अनुमति आ ज्ञापनक प्रति तैयार अछि?’ सविता कहलथिन, ‘हम सभ प्रशासनकेँ सूचना देलहुँ अछि। ककरो रास्ता नहि रोकब।’ अभय ओकरा भीड़मे सम्भावित उकसावे सँ सावधान रहबाक सलाह देलनि।

सविता फेर कहलीह, ‘अवधेश साहक लोक पुस्तकालयक बाहर घुरैत छथि। काल्हि एक युवक कहल जे पैसा देल जाए तँ नब परीक्षा सँ पहिने प्रश्न उपलब्ध करा देत। हम ओकर बात नहि मानलहुँ।’ अभय पुछलनि, ‘नाम वा लिखित प्रमाण अछि?’ ‘नहि। दू गोटे सुनने छलीह।’ ‘तँ एखन सार्वजनिक आरोप नहि लगाउ,’ अभय उत्तर देलनि। ‘प्रलोभनक विवरण जँ लिखित भेटय तँ सम्बन्धित जाँच अधिकारीकेँ दिअ। परीक्षा निष्पक्ष होय, से माँग अपन ठाम अछि।’

पुस्तकालयक पिछिला बरामदामे सविता अपन पाँच संगीक सङ्ग बैसलीह। एक युवक क्रोधमे कहलक, ‘एखन धरि परीक्षा रद्द भेल, प्रश्न लीक भेलाक आरोप अछि, आ अधिकारी फेर जाँचक नामपर समय माँगैत छथि। हम सभ सड़क बन्न करब।’ सविता ओकर बात बीचमे नहि काटलथिन। सभकेँ कहय देलथिन। तकर बाद कहलीह, ‘बाट बन्न करबासँ एम्बुलेंस आ रोज कमायवला लोककेँ कष्ट होयत। हम ज्ञापन आ शान्तिपूर्ण सभा सँ अपन बात राखब। सत्य जाँचय लेल समय लागय सकैत अछि, मुदा निश्चित तिथि माँगब उचित अछि।’

रूबी नामक एकटा दोसर अभ्यर्थिनी कहलीह जे परिवार फेर कोचिंगक खर्च देबय तैयार नहि अछि। सविता सुझाव देलथिन जे पुस्तकालयमे पुरान पुस्तक साझा करबाक व्यवस्था

हो। ‘परीक्षा रद्द भेलाक दण्ड हम सभ एक-दोसराकेँ नहि देब,’ ओ कहलीह। सभ सहमत भेलाह। एकटा छात्र स्वयंसेवकक नाम लिखलक, दोसर विज्ञानक पुरान प्रश्नपत्र आनबाक जिम्मेवारी लेलक। आन्दोलनक तैयारीमे पढ़ाइक छोट व्यवस्था सेहो जुड़ि गेल।

नैनाक फोन पर फैलल झूठ सन्देशक विषयमे सविताकेँ सेहो खबरि भेटल। ओ तुरन्त नैना सँ पूछलथिन, ‘अहाँक नामक सङ्ग जे आरोप चलैत अछि, ओ सत्य?’ नैना उत्तर देलथिन, ‘हम अपन कार्यालयी काजक लिखित प्रति देखाए सकैत छी। मुदा जे आरोप लिखल अछि ओकर स्रोत हमरा नहि बुझल।’ सविता कहलीह, ‘हम ककरो बात परखने बिना नहि पसराएब। प्रश्नपत्रक अफवाहक कारण हम सभ पहिनेसँ नुकसानी भोगि रहल छी।’ एहि छोट निर्णयसँ नैनाकेँ थोड़े साहस भेटल।

सविता फोन राखलाक बाद अभय चिन्तित भेलाह। बेरोजगारीक नामपर चलैत दलाली केवल धन नहि हरैत छल; ओ परीक्षाक तैयारी करयवला लोकक आपसी विश्वासो हरैत छल। ककरो ई विश्वास नहि रहैत छल जे प्रश्न ईमानदारीसँ मिलत, कोनो अभ्यर्थी चयनित भेल तँ दोसर ओकर योग्यतापर शङ्का करय लगैत छल। सविताक आन्दोलनक मूल व्यथा ओही अविश्वासमे छल।

ओहि समय नैनाक कार्यालयमे असामान्य चहल-पहल छल। बाहर दू युवक जोर-जोरसँ कहैत छल जे जमा राशि घुरा दिअ। हरि नारायण हुनका भीतर बसबाक आग्रह करैत छल। नैना पुछलथिन, ‘अहाँ सभक रसीद अछि?’ एक युवक जेब सँ मुड़ल पन्ना निकाललक। ‘अवधेश कहलनि कि ई संस्था सरकारक भर्ती करबैत अछि। आब कहैत छथि कि प्रश्नपत्र लीक भेल, परीक्षा रद्द भेल, ताहिसँ काम रुकल अछि।’ नैना स्पष्ट कएलथिन, ‘ई निजी प्रशिक्षण संस्था अछि। सरकारी नियुक्तिक अधिकारक कोनो प्रमाण हमरा देखाइत नहि अछि। अहाँ लिखित शिकायत जमा करू।’

तेसर युवक मोबाइलक परदा आगाँ कएलक। ओहिपर नैनाक नाम लिखल एकटा सन्देश घूमि रहल छल—‘रोजगारक नामपर पैसा उठाबयवाली महिला कर्मचारी।’ नैनाक छाती धकसँ भेल। तस्वीर कार्यालयक सार्वजनिक कार्यक्रमक छल; ओकर नीचाँ आरोप

लिखल छल। ‘ई के पठौलक?’ नैना पुछलथिन। युवक कहल, ‘हमरा समूहमे अएल। बहुत लोक आगाँ पठा रहल छथि।’ नैना कहलथिन, ‘हम ककरो सँ पैसा नहि लेने छी। जँ कोनो रसीदपर हमर हस्ताक्षर अछि तँ देखाउ।’ युवकक लग एहन कोनो कागज नहि छल।

कुसुम ओकरा सभकेँ प्राप्ति-पुस्तिका देलथिन। ‘कर्मचारीक विरुद्ध शिकायत सेहो लिखि सकैत छी,’ ओ कहलीह। ‘मुदा जे बातक प्रमाण नहि, ओकरा आगाँ पठेबासँ ककरो नुकसान होइत अछि।’ युवकसभक एक गोटे कनेक लजायल स्वरमे कहलक, ‘हमरा एतबा बुझल जे टका डूबि गेल।’ नैना कहलीह, ‘टका डूबय नहि चाही। सही शिकायतक बाट पकड़ू।’ युवकसभ आवेदन भरय लगल।

किरण बाहरी मेज लग पहुँचलिह। ओ मोबाइलक सन्देश देखलथिन। ‘अहाँ एहन प्रचारक उत्तर अपनेसँ नहि दिअ,’ ओ नैनाकेँ कहलथिन। नैना पुछलथिन, ‘संस्था कर्मचारीक नामपर लगल झूठ आरोपक खण्डन करत?’ किरण किछु पल चुप रहलथिन। ‘हम मालिकसँ बात करब।’ नैनाकेँ ई उत्तर परिचित लागल। ओ अपन नामक सन्दर्भमे होअय वा पूनमक ठेगानाक, प्रत्येक प्रश्नक उत्तर ‘बात करब’ पर अटकि जाइत छल।

दुपहर बाद नैनाक मोबाइलपर अभयक सन्देश आएल—‘आजु अनचिन्हार नम्बर सँ धमकी भेटल। लिखित शिकायत देब। अहाँ अपना विषयमे कोनो विचित्र घटना देखू तँ दर्ज करू।’ नैना तुरन्त फोन केलथिन। ‘हमर तस्वीर लगा झूठ सन्देश फैलाओल जा रहल अछि,’ ओ कहलीह। अभय एक क्षण चुप रहलाह, फेर पुछलनि, ‘सन्देशक मूल प्रति अछि?’ ‘कुसुम देखलथिन। आवेदन देनिहार युवकक मोबाइलमे छल।’ अभय कहलनि, ‘हुनक अनुमति लऽ परदाक तस्वीर सुरक्षित राखू। कोनो आरोपक बदला आरोप नहि लगाउ। हम साँझ भेटब।’

नैना मायक चिन्ता कएलनि। सरस्वती देवीक लग स्मार्टफोन नहि छल, मुदा पड़ोसक लोकक लग छल। समाजमे नाम खराब होयबाक डर नैनाक अपन इज्जतक कारणेँ मात्र नहि छल; मायकेँ कोनो झूठ सुनाओल गेल तँ हुनक स्वास्थ्यपर असर पड़ि सकैत छल। नैना स्वयं घर फोन कऽ कहलीह, ‘माय, कियो कार्यालयक विषयमे उलटा बात कहय तँ

हमरा पुछिह। हम ठीक छी।' सरस्वती देवी पुछलथिन, 'की बात भेल?' नैना संक्षेपमे बतौलथिन। माय कहलीह, 'अहाँ अपन काज साँचसँ करैत रहू। मुदा अकेले झगड़ा नहि करिह।'

चन्दन ओहि दिन गोदाममे काम करैत छल। मनोज साह ओकरा एकटा नब ढुलाईक पर्ची देलक। पर्चीपर वाहनक सङ्ख्या लिखल छल, मुदा मालक विवरण केवल 'निर्माण-सामग्री' छल। चन्दन पुछलक, 'पहिने जे पर्चीमे गोदामक हस्ताक्षर नहि छल, ओकर हिसाब एखन धरि साफ नहि भेल। आब फेर एना किएक?' मनोज चढ़ल स्वरमे कहलक, 'तोरा काम करबाक अछि कि सभक बाबू बनबाक? पैसा चाही ने?'

चन्दन अपन ऋणक तारीख मोन कएलक। बैंकक किस्त देरीसँ जाए तँ दण्ड लगैत छल। निजी उधार देने व्यक्तिक व्यवहार सेहो कठोर भऽ गेल छल। किछु दिन पहिने परीक्षा रद्द भेला पर ओ सोचने छल जे एखन काज छोड़ि पढ़ाइपर ध्यान देत; मुदा जे दिन मजदूरी नहि भेटैत, ओ दिन घरमे आवश्यक खर्चक चिन्ता बढ़ैत। मनोज एहि विवशता कैं ठीकसँ जनैत छल।

'हम मालक कागज साफ चाहैत छी,' चन्दन फेर कहलक। मनोज ओकरा एकटा हस्ताक्षर कएल पन्ना दऽ कहल, 'एतबा काफी अछि। सभ बेरा पूछतह तँ दोसरा चालककैं देब।' चन्दन कागज देखलक। हस्ताक्षर छल, मुदा ककर, से स्पष्ट नहि। ओ मोटरसाइकिलक चाभी पर्समे रखि कहलक, 'आइ हम ई गाड़ी नहि लऽ जाएब। पहिने पूरा विवरण देखाउ।' मनोज ओकरा घूरि तकलक। 'ठीक अछि, एखन लेल जा। मुदा हमर सङ्ग काज करब तँ भरोसा करय पड़त।'

चन्दन घरक बाटे निकलल, मुदा आधा दूरी पर ओकरा मनोजक फोन अएल। 'तोहर दीदी कार्यालयमे बहुत प्रश्न पुछैत छथि। घरमे बुझा दिह।' चन्दन ठमकि गेल। 'दीदीक काजसँ हमर ढुलाईक सम्बन्ध की?' ओ पुछलक। मनोज उत्तर देलक, 'जतेक सम्बन्ध तूँ बुझैत छह, ओतेक नहि अछि। बुझल बात अपन घरमे रखिह।' फोन कटि गेल। चन्दनक हाथ काँपय लगल। ओ सड़कक कात मोटरसाइकिल रोकि बहुत देर धरि बैसल रहल।

नवगढ़क चाय-दोकानपर वीरेन्द्र राय अपन दू सहयोगीक सङ्ग बैसल छलाह। ओहि ठाम स्थानीय नेता जगदीश चौधरीक सार्वजनिक कार्यक्रमक पोस्टर टाँगल छल। सहयोगी कहैत छल, 'पत्रकारसभ बेसी प्रश्न पुछि रहल छथि। परीक्षा आ नौकरीक समाचारसँ कारोबारीसभकेँ बदनाम करैत छथि।' वीरेन्द्र चाय राखि कहलनि, 'समाचार छपब बन्द करेनाइ हमर काम नहि। जे कागज सही अछि, ओकरा देखाउ। मुदा जे लोक व्यावसायिक बात बुझैत नहि, ओकरा जँ सभ अधिकार देब तँ ठीका काज कोना चलत?' हुनक स्वर सुनि दोसर चुप भऽ गेल।

जगदीशक एकटा सहायक ओतय अएल। 'काल्हिक सभामे बेरोजगारी पर किछु कहबाक अछि। सविताक समूह सेहो ज्ञापन देत,' ओ बतौलक। वीरेन्द्र उत्तर देलनि, 'सभाक व्यवस्था हो। मुदा दोसरक विरोधकेँ हुल्लड़ नहि बनाउ। कैमरा सभक सामने रहत।' सहयोगी चलि गेल। वीरेन्द्र अपन फोनपर ककरोसँ कहलनि, 'ठेकेदारक नाम अफवाहमे नहि आबय। कार्यालयक हिसाब अलग सँ देखल जाए।' ओहि फोनक दोसर दिस के छल, से चाय-दोकानक केओ नहि सुनि सकल।

मञ्जरी साँझक संस्करणक पृष्ठ जाँचैत कहलीह, 'अहाँक धमकीक खबरि छापलासँ पाठककेँ बुझब जे एतय काज करयवला लोक सेहो संकट भोगैत छथि। मुदा के धमकी देलक, से लिखबाक स्थिति एखन नहि अछि।' अभय सहमत भेलाह। ओ चाहैत छलाह जे पत्रकारक भयक खबरि पूनमक खोज आ अभ्यर्थीसभक मूल प्रश्नकेँ ढाँकि नहि दिअय। सम्पादक कहलीह, 'अहाँ एखन अकेले राति देर धरि रिपोर्टिंग नहि करू। कोनो प्रत्यक्ष घटना होय तँ पहिने सुरक्षित ठाम जाउ।' अभय ई सावधानी स्वीकार कएलनि; बहादुरीक देखावा केलासँ प्रमाण नहि बढ़ैत अछि। हुनका अपन मायक कहने शब्द सेहो मोन पड़ल—साँच लिखबाक लेल जिनगी आ स्वास्थ्य दुनू बचा कऽ राखब आवश्यक अछि।

साँझ अभय थानामे लिखित आवेदन दऽ अएलाह। कर्तव्यपर बैसल कर्मचारी लिफाफा आ फोनक समय दर्ज कएलक। 'अहाँ धमकीक बात कहैत छी, मुदा व्यक्ति चिन्हल नहि अछि,' ओ कहलक। अभय उत्तर देलनि, 'एहि कारणेँ तऽ जाँचक अनुरोध अछि। जे बात

हम जानैत छी से लिखल अछि। जकर जानकारी नहि, से नहि जोड़ल।' कर्मचारी प्राप्तिक नकल देलक। अभय ओकरा फाइलमे राखलनि।

थानाक बाहर नैनासँ भेट भेलनि। नैनाक हाथमे छोट झोरा छल। दुनू सड़कक पार चायक एकटा शान्त दोकान लग बैसलाह। अभय ओकरा धमकीक कागज देखौलनि। नैना अपन फोनमे फैलल सन्देशक तस्वीर देखौलथिन। 'हमरा पहिल बेर बुझाइत अछि जे झूठ बहुत जल्दी घर पहुँचि जाइत अछि,' नैना कहलीह। 'सत्यक लेल आवेदन, रसीद आ जाँच चाही।' अभय उत्तर देलनि, 'सत्यक काम कठिन अछि, मुदा झूठक उत्तर केवल क्रोधसँ नहि देल जा सकैत।'

नैना कनेक देर चुप रहलीह। 'अहाँ हमरा कारणेँ संकटमे पड़ल छी?' ओ पुछलथिन। अभय धीरे कहलनि, 'हम पत्रकारक काज करैत छी। अहाँ संस्थामे नोकरी करैत छी। हमरा प्रश्नक कारण अहाँक परिवारक परेशानी बढ़ल अछि, ई बात हम स्वीकार करैत छी। मुदा जे धमकी देलक, ओकर जिम्मेवारी अहाँक नहि।' नैना हुनक आँखि दिस तकलीह। 'मोन होइत अछि ककरो सङ्ग बात नहि करी। सबकेँ दूर राखी।' अभय कहला, 'दूरी रखबाक निर्णय अहाँक होयत। मुदा डरक कारणेँ अकेल भऽ जाउ, ई हम नहि चाहब।'

चायक दोकानक मालिक दूटा गिलास रखि देलक। नैना पहिल बेर मुसुका सकलीह। 'अहाँ प्रत्येक बात समाचार जकाँ लिखैत छी,' ओ कहलीह। अभय हँसलाह। 'आ अहाँ प्रत्येक बातक रसीद माँगैत छी।' ई हलुक बातचीत दुनूक थकानकेँ किछु क्षण लेल कम कएलक। हुनका सभकेँ अपन सम्बन्धक विषयमे एखन किछु घोषित नहि करबाक छल; तखनहुँ दुनूक मौन एक-दोसराक कात बैसब चाहैत छल।

घर घुरलाक बाद नैना देखलनि जे चन्दन भोजन नहि केने छल। ओ आँगनक अन्हार कोनामे बैसल छल। 'की भेल?' नैना पुछलथिन। चन्दन पहिने कहलक, 'किछु नहि।' फेर पुछलक, 'दीदी, अहाँ कार्यालयमे ककरो हिसाबक बारेमे कतेक जानैत छी?' नैना चौंकलीह। 'हम जतेक काममे देखलहुँ, ओतेक। प्रश्न किएक?' चन्दन कहल, 'मनोज बाबू कहैत छलाह जे घरमे बुझा दिअ। अहाँ बेसी प्रश्न नहि पुछू।'

नैना गम्भीर भेलीह। 'ओ तोरा एना किएक कहलक? तोहर गाड़ीमे की ढुआइल अछि?' चन्दन दृष्टि हटौलक। 'हमरा सभ कागज नहि देखाओल जाइत अछि। जे मजदूरी भेटैत अछि, ओकरो पूरा हिसाब नहि।' नैना कहलथिन, 'तखन जे काजक विवरण स्पष्ट नहि, ओकरा नहि करिह। ऋणक चिन्ता हमरा सेहो अछि, मुदा एहन काजसँ मुक्ति नहि भेटत।' चन्दन किछु कहय चाहलक, फेर रुकि गेल। ओकरा मनमे पहिनुक एकटा राति, गोदामक बन्द दुआरि आ मनोजक सङ्ग गेल गाड़ीक बात छल; मुदा ओ एखन दीदीकेँ सभ नहि बतौलक।

सरस्वती देवी बरामदामे अएलीह। 'अहाँ दुनू भोजन करब कि नहि?' ओ पुछलथिन। नैना चन्दनक दिस तकलथिन। ओ उठि हाथ धोबय गेल। भोजनक समय माय घरक सामान्य बात करैत रहलीह—औषधि, बजारक भाउ, पड़ोसीक विवाह। नैना आ चन्दन उत्तर दैत रहल, मुदा दुनूक भीतर अपन-अपन प्रश्न छल। परिवारक दैनिक भोजन ओहि राति सेहो भेल; कोनो पैघ घटना घटल नहि, मुदा किछु शब्द आब घरक भीतर घुसि चुकल छल।

राति अभयक मोबाइलपर सम्पादकक सन्देश आएल—'काल्हि समाचार कार्यालयक मुख्य द्वारपर सुरक्षा-कर्मी रहत। धमकीक आवेदनक प्रति सुरक्षित अछि। सविताक कार्यक्रममे तथ्यक जाँच कऽ लिखू।' अभय उत्तर देलनि—'ठीक।' ओ खिड़कीक बाहर सड़क देखलनि। पुलिसक गाड़ी एक बेर निकलि गेल। ओकर पाछाँ मोटरसाइकिलसभक आवाज रहि गेल। हुनका नहि मालूम छल जे धमकी देनिहार कतय अछि; मुदा ओ जानैत छलाह जे एखन प्रत्येक अगिला खबरिक सङ्ग अपन सुरक्षा आ दूसरक गरिमाक प्रश्न सेहो उठत।

ओहि साँझ पूनमक बहिन रीना नैनाकेँ फोन केलक। 'एकटा अनचिन्हार नम्बर सँ कहल गेल जे थानाक चक्कर छोड़ि दिअ, नहि तँ दीदीक खबरि नहि भेटत।' रीना भयभीत छलीह। नैना हुनका सम्पूर्ण वाक्य फेर कहलाक अनुरोध कएलथिन, समय आ नम्बर लिखि राखलनि, मुदा फोन केने व्यक्ति के छल, से अनुमान नहि लगौलनि। 'अहाँ पिताजीसँ कहू

जे धमकीक सूचना सेहो पुलिसकेँ दिअथि,’ ओ कहलीह। रीना कहल, ‘हम सभ खोज बन्द नहि करब।’ ओकर स्वर काँपि रहल छल, मुदा वाक्य स्पष्ट छल।

नैना अपन मेजक दराजमे फोनक सन्देशक छपल प्रति आ कार्यालयमे देल लिखित शिकायतक प्राप्ति राखलथिन। पूनमक फोटो सेहो ओतए छल। ओ फोटो उठाकऽ देखलनि। पूनम हँसि रहल छलीह—जाहि दिन नियुक्तिक आशामे प्रमाणपत्रक फाइल बनौने छलीह। नैनाकेँ लगल जे झूठ सन्देश, धमकी आ हिसाबक उलझनक बीच सबसँ मूल प्रश्न एखनो अनुत्तरित अछि—पूनम कतए छथि? ओ फोटो फेर रखलथिन। अगिला भोर ओ एहि प्रश्नसँ घुरि नहि सकतिह।

अध्याय २२ : नरेशक निर्णय

भोरमे नरेश मण्डल घरक आँगनमे पानि भरि रहल छलाह। नलक हत्था छोड़िते धातुक खनखनाहट भऽ रहल छल। हुनक बहिन रेखा चूल्हिपर चाय चढ़ौने छलीह। पिता जी भीतरक खाटपर बैसि समाचारपत्रक पहिल पृष्ठ पढ़बाक प्रयास करैत छलाह; चश्माक एकटा डाँट टूटि गेल छलनि। नरेश पानि रखि भीतर गेलाह आ चश्मा हाथमे लऽ कहलनि, ‘साँझ घुरैत मरम्मत करबा देब।’ पिता पुछलथिन, ‘काल्हि राति किएक भेल?’ नरेश उत्तर देलनि, ‘हिसाबक कागज मिलबैत देरि भऽ गेल।’ घरक लोक एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट भऽ गेल, मुदा नरेशकेँ बुझाइत छलनि जे कागज आब हुनका कार्यालयसँ बाहर धरि पछुआ रहल अछि।

राति ओ ठीकसँ सुति नहि सकल छलाह। लेखाक पञ्जीमे देखल रकमक अन्तर मात्र हुनका नहि सता रहल छल। पूनम नामक युवतीक नियुक्तिक ठाम दू बेर बदलल गेल छल; चारि श्रमिकक यात्राक प्रमाणपत्र नहि छल; मजदूरीक देय रकमक सँग निर्माण-सामग्रीक नामपर पैघ भुगतान नियमित निकलैत छल। प्रत्येक प्रश्नक उत्तर अलग-अलग भेटि सकैत छल, मुदा सभ प्रश्नक उत्तर किएक एक्के लोकक अनुमति बिना नहि भेटैत छल, ई बात नरेशकेँ खटकैत छलनि। ओ कापीमे तारीख सहित अपन देखल विवरण लिखलनि। कोनो निष्कर्ष नहि, केवल जे कागज हुनक सोझाँ आयल छल ताहिक उल्लेख।

रेखा रोटी बेलैत पुछलथिन, ‘भैया, आइ साँझ अस्पताल चलब? पिताजीक साँस फूलैत छन्हि।’ नरेश कहलनि, ‘चलि जाएब। मुदा जँ कार्यालयसँ निकलि नहि सकलहुँ तँ अहाँ पहिने डॉक्टरकेँ देखबैत रहब।’ रेखा हँसलीह, ‘अहाँक कार्यालय एतेक जरूरी कखनसँ भऽ गेल?’ नरेश सेहो हलुक मुस्कान देलनि। ‘कार्यालय नहि, ओकर हिसाब जरूरी भऽ गेल अछि।’ रेखा हुनक स्वरमे किछु अनोखा सुनलथिन। ‘ककरो सँग विवाद भेल अछि?’ नरेश

कनेक थमकि कहलनि, ‘प्रश्न पुछला पर विवाद भऽ जाए तँ की प्रश्न नहि पुछब?’ रेखा उत्तर देलथिन, ‘प्रश्न पुछू, मुदा अपना बचाकऽ।’

कार्यालय दिस निकलैत नरेश बजारक छपाई-दोकानपर रुकलाह। हुनका किछु अपन लिखल पत्रक प्रति चाही छल। दुकानदार रामलाल हुनका पुरान परिचित छल। नरेश साधारण कार्यालयी पत्रक तीनटा प्रति बनबौलनि; मूल लेखा-बही वा कर्मचारिक निजी कागज ओ अपन सँग नहि अनने छलाह। पत्रमे पाँच प्रश्न छल—प्रशिक्षणार्थीक उपस्थिति, वास्तविक गन्तव्य, मजदूरीक बकाया, गाड़ीक बिल आ भुगतानक स्वीकृति। छठम प्रश्न आब जोड़ल गेल छल—प्रबन्धनक उत्तर कतेक दिनक भीतर उपलब्ध कराओल जाएत। दोकानदार पुछलक, ‘मासिक हिसाबक जाँच अछि?’ नरेश उत्तर देलनि, ‘हँ, लिखित हिसाब चाही।’ ओहि छोट उत्तरमे हुनक निर्णयक सम्पूर्ण गम्भीरता समाएल छल।

दोकानसँ निकलैत नरेशक भेंट सेवानिवृत्त शिक्षक शशिभूषण झासँ भेल। शिक्षक हुनका विद्यालयक समयसँ चिन्हैत छलाह। ‘चेहरा थाकल लगैत अछि,’ ओ कहलनि। नरेश मुस्कुरौलनि। ‘काज बढ़ि गेल अछि।’ शशिभूषण पुछलनि, ‘छुट्टी नहि लऽ सकैत छी?’ नरेश उत्तर देलनि, ‘छुट्टी लेब तँ हिसाब रुकत; कामकेँ ठीक करबाक लेल सेहो लोक चाही।’ शिक्षक किछु नसीहत नहि देलनि। केवल कहलनि, ‘जकर बात लिखल होइत अछि, ओकरा फेर जाँचल जा सकैत अछि। मुदा अपन स्वास्थ्यक हिसाब सेहो राखू।’ नरेश हुनक चरण छुइ विदा लेलनि।

आठ बजेसँ कनेक पहिने ओ कार्यालय पहुँचलाह। बरामदामे दू अभ्यर्थी बैसल छल, जिनकर जमा धन घुरयबाक आवेदन पछिला सप्ताहसँ अटकल छल। ओ नरेशकेँ पहचानि पुछलक, ‘बाबू, हमर रसीदक जाँच भेल?’ नरेश कहलनि, ‘हमरे भागक हिसाब मिला रहल छी। प्राप्ति-पत्रक नकल सुरक्षित राखू। कियो बिना लिखित सूचना मूल रसीद माँगय तँ नहि दिअ।’ युवक पुछलक, ‘टका घुरत?’ नरेश झूठ आश्वासन नहि देलनि। ‘एखन नहि कहि सकैत छी। मुदा जमा राशि लिखल अछि कि नहि, से स्पष्ट करब आवश्यक अछि।’ युवकक चेहरापर निराशा आ राहत एक्के बेर देखायल। ओकरा कमसँ कम एतबा बुझल जे बात सुनल गेल अछि।

लेखा-कक्षमे प्रवेश करिते नरेश देखलनि जे हुनक मेजक ऊपरवला दराज आधा खुलल अछि। राति ओ बन्न कऽ गेल छलाह। भीतर पञ्जी सभ सही छल, मुदा कागजक ढेरीक क्रम बदलल छल। नरेश चपरासी हरि नारायणकेँ बजौलनि। 'कियो एतय अएल छल?' हरि नारायण कहलनि, 'भोरमे सफाइ भेल। काल्हि साँझ किरण मैडम एकटा फाइल पूछने छलीह। हम कहलियनि जे अहाँ ताला लगा गेल छी।' 'ताला खोलल गेल?' 'हमरा सामने नहि।' नरेश बिना हड़बड़ीक दराज बन्द कएलनि। सम्भव छल जे ओ स्वयं जल्दीमे ठीकसँ नहि बन्न केने होथि। तथापि ओ आजुक तिथि लिखि राखलनि, जाहिसँ बादमे अपन स्मरणकेँ तथ्य नहि मानि लेथि।

साढ़े नौ बजे किरण अएलीह। हुनक चेहरापर कम नीन्नक चिन्ह छल। नरेश कार्यालयी पत्र हुनका देलनि। 'ई प्रश्नसभक प्राप्ति लिखि दिअ,' ओ कहलनि। किरण पत्र पढ़ैत-पढ़ैत थमकि गेलीह। 'अहाँ ई पहिनेसँ रतन बाबूकेँ देखौने छी।' 'मौखिक बात भेल छल। एखन लिखित उत्तर चाही,' नरेश कहलनि। किरण पुछलथिन, 'आ एकर प्रति ककरा देब?' 'कार्यालयक भीतर लेखाक अभिलेखमे एकटा रहत। जँ उत्तर नहि भेटल तँ नियमानुसार सम्बन्धित अधिकारीकेँ उपलब्ध कागजक विषयमे सूचना देब।' किरण हुनका ताकलीह। ई पहिल अवसर छल जखन नरेश मात्र सावधानी नहि, स्पष्ट अगिला कार्रवाईक बात कऽ रहल छलाह।

'अहाँ जानैत छी ने, एहि पत्रसँ कर्मचारीसभक नोकरीपर प्रभाव पड़ि सकैत अछि?' किरणक प्रश्नमे धमकीसँ बेसी चिन्ता छल। नरेश उत्तर देलनि, 'गलत हिसाबक प्रभाव तँ पहिनेसँ पड़ि रहल अछि। जकर मजदूरी बाँकी अछि, ओकर घरमे की होइत होयत? मुदा हम एखन ककरो दोषी नहि कहि रहल छी। हम एतबे कहैत छी—कागजक उत्तर कागजमे भेटय।' किरण क्षणभरि हुनका देखैत रहलीह। फेर पत्रक प्रतिपर तिथि आ प्राप्तिक हस्ताक्षर कऽ देलथिन। ओ सावधान रहबाक सलाह सेहो देलथिन। नरेश पुछलनि, 'कार्यालयी सावधानी कि व्यक्तिगत?' किरण उत्तर नहि देलीह।

नैना दिनक आवेदन सूची नेने अएलीह। ओ पूनमक समूह सत्रह-बीक नव उत्तरक प्रतीक्षा कऽ रहल छलीह। नरेश हुनका बतौलनि जे मूल नियुक्तिपत्रक प्रति एखनहुँ लेखामे

नहि भेटल अछि। ‘हम जखन सवाल करैत छी तँ लोक कहैत अछि प्रबन्धन देखत,’ नैना कहलीह। ‘पूनमक घरमे बूढ़ पिता प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। हुनका की कहब?’ नरेश धीरे उत्तर देलनि, ‘जे अहाँकेँ मालूम अछि, ओही कहू। झूठा ठेगाना दऽ हुनका फेर भटकाएब नहि। हम लिखित उत्तर माँगने छी।’ नैना हुनक स्वरक दृढ़ता अनुभव कएलथिन।

एगारह बजेला रतन सिंह हुनका अपन कोठरीमे बजौलनि। मेजपर नरेशक पत्र पड़ल छल। रतन पुछलनि, ‘अहाँ कार्यालयक बात बाहर पहुँचएबाक विचार किएक करैत छी?’ नरेश सोझाँ राखल कुरसीपर बैसि कहलनि, ‘हम पहिने कार्यालयेकेँ उत्तरक अवसर दऽ रहल छी। एखन कागज बाहर नहि गेल अछि।’ रतन कुर्सीमे पाछाँ झुकलाह। ‘एहन लिखल पत्रसँ संस्थाक प्रतिष्ठा नष्ट होइत अछि।’ नरेश उत्तर देलनि, ‘उत्तर देलासँ प्रतिष्ठा बचत। जे भुगतान सही अछि, ओकर स्वीकृति भेटि जायत। जकर गलती अछि, से सुधारल जाएत।’ रतनक मुखपर मुस्कान रहल, आँखिमे नहि।

रतन कहलनि, ‘हम अहाँकेँ एतय वर्षोसँ रखने छी। कखनो वेतन रोकलहुँ?’ नरेश अपन स्वर नीचाँ राखलनि। ‘नहि। ओकर लेल आभारी छी। मुदा जे वेतन भेटैत अछि, ताहिसँ हमर हस्ताक्षरक अर्थ नहि बदलैत अछि।’ ‘अहाँ चाहैत की छी?’ रतन पुछलनि। ‘जकर सेवाक बिल चुकता भेल, ओकर वास्तविक प्रमाण; जे लोक बाहर पठाओल गेल, हुनकर गन्तव्य; आ जकर मजदूरी बाँकी, ओकर हिसाब।’ रतन कहलनि, ‘सभ कागज एक दिनमे नहि जुटत। सात दिन दिअ।’ नरेश उत्तर देलनि, ‘सात दिनक समय लिखित देल जाए, तँ हम समयक उल्लेख राखि सकैत छी।’ रतन किरणकेँ बजा कऽ पत्रक नीचाँ ‘सात कार्यदिवस’ लिखबा देलनि।

बाहर निकलैत नरेशकेँ मनोज साह फाटक लग भेटल। मनोज सामान्य अभिवादन कएलक। ‘लेखा बाबू, एतेक माथ किएक खपबैत छी? गाड़ी चलैत अछि, लोककेँ मजदूरी भेटैत अछि।’ नरेश कहलनि, ‘मजदूरीक हिसाब हमरा देखबाक अछि।’ मनोज हँसल। ‘सब गाड़ीमे एक्के तरहक कागज नहि रहैत अछि। किछु माल ठीकेदारक, किछु कम्पनीक।’ नरेश पुछलनि, ‘तँ दूनूक अलग विवरण रहबाक चाही।’ मनोजक हँसी किछु कम भेल।

‘बहुत नियम मानब तँ काज रुकि जाएत,’ ओ कहलक। नरेश उत्तर देलनि, ‘नियम नहि मानब तँ गलतीक जिम्मेवारी ककर होयत?’ मनोज बिना उत्तर देने बाहर चलि गेल।

दोपहरि नरेशक बहिनक फोन अएल। पिता जीकेँ अस्पताल लऽ गेल छल। जाँचक बाद चिकित्सक नियमित औषधि आ आरामक सलाह देने छलाह। रेखा कहलथिन, ‘चिन्ता नहि करू। अहाँ देरि सँ आउ, मुदा दवा आनब बिसरब नहि।’ नरेश फोन रखि अपन पर्स खोललनि। दवाक पर्ची छोट कागजपर तह कएल रखल छल। ओ सोचलनि जे हुनक अनुपस्थितिमे रेखा कतेक काज अकेले सम्भारैत छथि। कार्यालयक मामलासँ पाछाँ हटब हुनका लेल सहज छल। ई नोकरी परिवारक स्थिर आमदनी छल। मुदा जे कागजपर असत्य लिखल रहत, ओ देखलाक बाद आँखि मूनि देब कठिन भऽ गेल छल।

दुपहरिक भोजनक समय नरेश पानि पीबय बाहर निकललाह तँ आशा देवी अपन मासिक मजदूरीक रसीद नेने बैसल छलीह। ‘हमरा दू दिनक पइसा कम भेटल,’ ओ कहलीह। ‘कहल गेल जे छुट्टी छले, मुदा ओहि दिन हम सफाइ कएने रही।’ नरेश पञ्जी देखबाक आश्वासन देलनि। आशा देवी अपन झोरा सम्हारैत कहलीह, ‘बाबू, ककरो कम पइसा हमरो लेल पैघ होइत अछि। एक दिनक मजदूरीमे चूल्हि जरैत अछि।’ नरेश बुझलनि जे हिसाबक शुद्धता केवल कार्यालयक नियम नहि, कतेको घरक अन्नक प्रश्न अछि।

दिनक दोसर पहरमे नरेश मजदूरी-पञ्जी फेर देखलनि। नन्दकिशोर साह आ ओकर दू साथी अपन बकाया लेल आवेदन देने छल। पञ्जीमे तीन दिनक मजदूरीक आगाँ ‘ठीकेदारक हिसाबमे’ लिखल छल, मुदा ठीकेदारक खातामे ओहि तीन दिनक मजदूरीकेँ पूरा भुगतान बताओल गेल छल। नरेश दू पन्नाक प्रमाणित नकल लेल लिखित अनुरोध तैयार कएलनि। कुसुम पुछलथिन, ‘एहिमे नाम बाहर जाएत?’ नरेश कहलनि, ‘जेकर अधिकारक प्रश्न अछि, ओकर गोपनीयता राखब। बिना आवश्यक कारण कर्मचारीक व्यक्तिगत विवरण सार्वजनिक नहि होयत।’ कुसुमक आँखिमे विश्वासक एकटा किरण देखायल।

साँझसँ पहिने कार्यालयक बाहर सविता कुमारीक नेतृत्वमे प्रतियोगिता परीक्षाक किछु अभ्यर्थी ज्ञापन देबाक लेल जमा भेलाह। ककरो लग रद्द परीक्षा सम्बन्धी सरकारी सूचना छल, ककरो लग प्रशिक्षण-शुल्कक रसीद। हुनका सभक आरोप छल जे अवधेश साह सरकारी नियुक्तिक आश्वासन दऽ धन वसूलने छल। नैना हुनका सभकेँ नियमित शिकायतक खिड़की दिस पठौलथिन। नरेश खिड़कीक भीतरसँ देखलनि। एकटा युवक सेहो अपन खर्चक हिसाब दऽ रहल छल; ओकर आवाज काँपि रहल छल। नरेशकेँ अपन युवावस्थाक बेरोजगारी मोन पड़ल। पहिल नोकरी भेटलासँ पहिने ओ दर्जनो आवेदन देने छलाह।

सविता कहलथिन, ‘हम सभ प्रश्नपत्र लीक भेलाक जाँच चाहैत छी। मुदा जकर प्रमाण नहि, ओकरा दोषी ठहराएब नहि चाहैत छी। संस्थाकेँ केवल एतबा कहू जे कोन सेवाक बदला धन लेने अछि।’ नरेश हुनक बात सुनि अपन पत्रक अर्थ फेर बुझलनि। लिखित प्रमाण माँगब कोनो विद्रोहक प्रदर्शन नहि, सामान्य न्यायसंगत प्रश्न छल। अभय सेहो ओहि ठाम समाचार लेल पहुँचलाह। ओ भीड़मे नरेशकेँ देखलनि, मुदा भीड़क सोझाँ हुनक सङ्ग बातचीत नहि कएलनि। नरेशक नोकरी आ सुरक्षा दुनू हुनका ध्यानमे छल।

भीड़ हटलाक बाद अभय कार्यालयक फाटकसँ कनेक दूर नरेशकेँ भेटलाह। ‘अहाँसँ किछु तथ्य पुष्ट करबाक छल,’ अभय कहलनि। नरेश हुनका स्पष्ट कएलनि, ‘लेखाक अधिकारीक हैसियतसँ हमरा जे कागज भेटल, ओकरा सार्वजनिक करबाक अधिकारक सीमा अछि। मुदा पीड़ित लोक अपन रसीदक विषयमे कहि सकैत छथि। हम जकरा नहि देखलहुँ, तकर बारेमे किछु नहि कहब।’ अभय उत्तर देलनि, ‘हमरा सेहो आरोप नहि, प्रमाण चाही।’ दुनू एतबे बात कएलनि। नरेश अपन पत्रक उल्लेख कएलनि, मुदा अभयकेँ कोनो गोपनीय सूची नहि सौंपलनि।

कार्यालय बन्द होयबाक बेरमे किरण फेर लेखा-कक्षमे अएलीह। ओ पुछलथिन, ‘अहाँ सचमुच अधिकारीकेँ सूचित करब?’ नरेश उत्तर देलनि, ‘प्रबन्धन सात दिनक समय देने अछि। मुदा गायब युवतीक विषयमे पुलिस पहिनेसँ जाँच कऽ रहल अछि। जँ पुलिस विधिवत् कागज माँगत तँ रोकब अनुचित होयत।’ किरणक मुखपर भय झलकल। ‘अहाँ

जानैत छी, एतय किछु लोक नाराज होइत छथि।' नरेश देखलनि जे ओ किछु आओर कहय चाहैत छथि। 'कोनो ठोस जानकारी अछि तँ लिखित दऽ दिअ,' ओ कहलनि। किरण माथ झुका लेलथिन। 'एखन नहि।'

नरेश अपन कार्यालयी पत्रक प्राप्ति-पत्र, बैंकक मिलान-विवरणक सूची आ अनुत्तरित प्रश्नक पञ्जी उचित फाइलमे रखलनि। कार्यालयक मूल बही ओतहि रहल। ओ अपन निजी कापीमे मात्र तारीख, फाइलक क्रमाङ्क आ ककरा कागज माँगल गेल, से लिखि लेलनि। घर लेल निकलैत पहिने ओ स्थानीय श्रम-अधिकारीक कार्यालयक सम्पर्क विवरण नोट कएलनि, आ गायब युवतीक सम्बन्धमे पुलिससँ सम्पर्कक विधि बुझबाक निश्चय कएलनि। हुनक मनमे भय छल, मुदा भयक कारणेँ प्रमाण लुकाएब चाहैत नहि छलाह।

फाटकपर साँझक रौद क्षीण भऽ गेल छल। मनोजक मोटरसाइकिल कातमे ठाढ़ छल, मुदा मनोज कतहु नहि देखायल। हरि नारायण पुछलक, 'बाबू, आइ ठामे जायत छी कि बजार?' नरेश पर्सक भीतरक दवा-पर्ची छुअलनि। 'पहिने औषधि लेब, फेर घर।' हरि नारायण कहलक, 'रास्तामे अन्हार भऽ जाएत। मुख्य सड़कसँ जइह।' नरेश साधारण सावधानी मानि माथ हिलौलनि। हुनका नहि बुझल जे हरि नारायण ई बात अपन अनुभवसँ कहलनि कि केवल स्नेहसँ।

औषधि-दोकानपर भीड़ छल। नरेश पर्ची जमा कऽ प्रतीक्षा करैत रहलाह। कतारमे ठाढ़ किछु लोक शराबबन्दीक बाद बढ़ल अवैध बिक्रीक बात करैत छलाह। एक गोटे कहलक, 'पहिने घरमे चैन भेल छल, आब चोरीसँ बिकयवला चीजक दाम दूना।' दोसर उत्तर देलक, 'कानून तखन उपयोगी होयत जखन रखवाली करयवला लोक सेहो ओकरा माने।' नरेश ई बात सुनि रहलाह, मुदा अपन प्रश्नकेँ एहि बातचीतसँ जोड़ि कोनो निष्कर्ष नहि कएलनि। हुनक काज हिसाबक अन्तर जाँचब छल; अफवाहसँ फैसला करब नहि।

दवा लेलाक बाद हुनका अनचिन्हार नम्बर सँ फोन अएल। 'नरेश बाबू? अहाँसँ एकटा गाड़ीक हिसाब बुझबाक अछि,' आवाज कहल। नरेश पुछलनि, 'अहाँ के?' उत्तर आएल, 'कार्यालयसँ परिचय अछि। दू मिनटक बात।' नरेश कहलनि, 'आइ कार्यालय बन्द भऽ

गेल। अहाँ अपन नाम आ कागजक विवरण देलियौ; काल्हि कार्यालयमे भेटब।' ओहि दिससँ उत्तर भेटल, 'काल्हि देरि भऽ सकैत अछि।' नरेश कहला, 'तखनहुँ सड़कपर हिसाब नहि होयत।' फोन कटि गेल। ओ समय आ नम्बर अपन कापीमे लिखलनि, मुदा ककर फोन छल, से अनुमान नहि लगौलनि।

घर जाएबासँ पहिने ओ रेखाकेँ फोन कएलनि। 'दवा लऽ लेलहुँ। आब चलि रहल छी।' रेखा पुछलथिन, 'भैया, भोजनमे की बनाबी?' नरेश कहलनि, 'जे अछि, से। पिताजीक औषधि समयपर दऽ दिह।' फोन राखलाक बाद एक क्षण ओ सड़कक कोनापर ठाढ़ रहलाह। मुख्य बाटे जएबामे कनेक घुमाव छल, मुदा हरि नारायणक सलाह मोन पड़लनि। ओ मुख्य सड़क दिस बढ़लाह। पाछूसँ अएबयवला गाड़ीक प्रकाशमे हुनक छाह लम्बा भऽ सड़कपर पड़ि रहल छल। नरेशक मनमे केवल एकटा बात स्पष्ट छल—बुझल तथ्यकेँ लिखित रूपमे राखलाक बाद आब ओ ओकरासँ मुकरी नहि सकताह।

अध्याय २३ : नहरक कात

भोरक पहिल इजोतमे नवगढ़क पच्छिम दिसक नहरक कात दू गोटे माछ धयबाक जाल समेटि रहल छलाह। रातिक वर्षासँ माटि नरम छल, आ घासपर ओस पड़ल छल। नहरक पुरान पुल लग छोट बाट मुख्य सड़कसँ फुटैत छल। ओहि बाटे खेती करयवला लोक भोरमे खेत जाइत छलाह। माछ धयवला गोकुल सहनी देखलनि जे पुलसँ कनेक हटि एकटा जुत्ता पड़ल अछि। ओ सोचलनि कोनो यात्रीक छूटि गेल होयत। मुदा जखन आगाँ बढ़लाह तँ झाड़ीक पछिला भागमे एकटा आदमी निश्चल पड़ल देखलनि। ओ घबरा कऽ साथी रामूकेँ बजौलनि।

रामू झाड़ीक लग नहि गेल। ओ दू हाथ दूर ठाढ़ रहि आवाज देलक, ‘बाबू, सुनैत छी?’ कोनो उत्तर नहि अएल। गोकुल माटिपर पड़ल थैली देखलक। थैलीक पट्टा छिन्न नहि छल, मुदा ओकर मुँह खुलल छल। दूनूकेँ डर भेल जे ककरो दुर्घटना भऽ गेल होयत। गोकुल कहलक, ‘छूअ नहि। पुलिसकेँ खबरि दिअ।’ रामू अपन फोनसँ सहायता नम्बर मिलौलक। ओ नहर, पुल आ पक्की सड़कक दिशा स्पष्ट बतौलक। पुलिसक कर्मचारी फोनपर कहलनि जे घटनास्थलपर कियो भीड़ नहि लगाबय आ किछु नहि हिलाबय।

आसपासक खेतसँ लोक आबय लगलाह। कोनो कहैत छल राति गाड़ी ठोकर मारि देलक, कोनो कहैत छल नहरमे गिरि गेल होयत। मुदा देह नहरक भीतर नहि, किनारसँ कनेक ऊपर छल। गोकुल भीड़केँ रोकैत कहलक, ‘हम सभ किछु नहि देखने छी। जे देखल, ओ पुलिसकेँ कहब। अनुमानक बात नहुँ कहू।’ एकटा युवक मोबाइल उठा तस्वीर लेबय लागल। रामू ओकरा हाथ रोकि कहल, ‘घरक लोककेँ खबरि भेटलाक पहिने एहन तस्वीर नहि पसारू।’ युवक असन्तुष्ट भेल, मुदा मोबाइल नीचाँ कऽ लेलक।

थानासँ पहिल गाड़ी पहुँचल तखन आकाश साफ भऽ रहल छल। कर्तव्यपर आएल अधिकारी लोककेँ कात हटबाक कहलनि। ओ गोकुल आ रामूक नाम, फोनक समय आ

पहिल देखल वस्तुक विवरण लिखलनि। देहक लग पड़ल थैलीक भीतर एकटा पुरान चश्माक डिब्बा, औषधिक पुड़िया आ किछु कागज छल। पुलिस वस्तुसभक स्थिति दर्ज कऽ अगिला जाँचक लेल सुरक्षित राखबाक व्यवस्था कएलक। खिस्सामे भेटल पहचान-पत्रपर नाम छल—नरेश मण्डल। पुलिस तुरन्त नामक आधारपर अन्तिम निष्कर्ष नहि निकाललक; परिवारसँ पहचान करब आवश्यक छल।

नरेशक घरमे ओहि समय रेखा चाय बनबैत छलीह। राति भैया नहि घुरला पर ओ फोन केने छलीह। पहिने घण्टी गेल छल, बादमे फोन बन्द भेटल। रेखा सोचने छलीह जे कार्यालयक कोनो आपात काजमे रुकल होथि, मुदा नरेश एना बिना खबरिक रात्रि नहि बितबैत छलाह। पिता जी राति दू बेर उठि पुछने छलाह, ‘नरेश अएल?’ रेखा दोसर बेर झूठ आश्वासन देने छलीह—‘अबिते होयताह।’ भोरमे पुलिसक फोन आएल तँ ओहि अपूर्ण आश्वासनक भार हुनक छातीपर पड़ल। नरेशक पत्नी सीमा बेटाकेँ लऽ कऽ दू दिन पहिने अपन अस्वस्थ मायक समाचार लेबय मायकेँ गेल छलीह। रेखा हुनका रातिए फोन करबाक सोचने छलीह, मुदा भैया घुरि एताह से आसमे रोकि लेने छलीह। भोरुक खबरि सुनिते सीमा बेटाकेँ संग लऽ नवगढ़ लेल निकलि पड़लीह।

‘अहाँक घरमे नरेश मण्डल छथि?’ अधिकारी पुछलनि। ‘हँ, हमर भैया,’ रेखा उत्तर देलथिन। ‘अहाँकेँ थानामे वा घटनास्थल लग आबय पड़त। एकटा व्यक्ति भेटल छथि, हुनक पहचान करबाक अछि।’ रेखाक हाथ काँपि गेल। ओ पुछलथिन, ‘की भेलनि? ठीक छथि ने?’ अधिकारी बिना पुष्टि कएल असत्य सान्त्वना नहि देलनि। ‘कृपया ककरो अपना संग लऽ कऽ आउ। हम विवरण समझाएब।’ रेखा पड़ोसी श्यामबाबूकेँ बजौलथिन। पिता जी लग बैसल रहबाक लेल दोसर पड़ोसीकेँ कहि दऽ ओ श्यामबाबूक संग निकललीह।

घटनास्थल धरि जाएबासँ पहिने रेखा अस्पतालक आपात-कक्ष पहुँचलीह, जतय पुलिसक निर्देशपर नरेशक देह आनल गेल छल। चिकित्सक मृत्यु भेलाक पुष्टि कऽ चुकल छलाह। औपचारिक पहचानक समय रेखा भाइक माथपर दृष्टि देलथिन आ हुनक नाम पुकारलथिन। उत्तर नहि अएल। ओ एक बेर उठय चाहलीह, मुदा घुटना जवाब दऽ देलक। श्यामबाबू हुनका सम्भारलनि। पुलिस अधिकारी हुनका समय देलनि; प्रश्न तत्काल नहि

पुछलनि। श्यामबाबू जलक गिलास आगाँ कएलनि। रेखा एक घूँट पानि पीलथिन, फेर कहलथिन, 'काल्हि दवा लऽ कऽ घर घुरबाक कहलनि। दवा आनलनि, मुदा घर नहि पहुँचलाह।'

पहिल खबरि बजारमे एहन पसरल जे नरेश सड़क दुर्घटनामे मरि गेलाह। किछु लोकक कहल छल जे राति नहरक पुलपर अन्हार रहैत अछि। किछु दोसर लोकक दावा छल जे नरेश शराबक अवैध गाड़ीक चपेटमे अएलाह। एहि दुनू बातक कोनो साक्ष्य एखन नहि छल। गोकुलकेँ पत्रकार पुछलक तँ ओ स्पष्ट कहलनि, 'हम मृतदेह देखलहुँ, दुर्घटना वा मारपीट नहि देखलहुँ।' एहि वाक्यक सादगीमे ओहि दिनक सबसँ उपयोगी जानकारी छल। नहरक कात पहुँचल प्रत्येक आदमी अपन कथा जोड़य चाहैत छल, मुदा वास्तविक घटनाक प्रत्यक्षदर्शी कियो सोझाँ नहि आएल छल।

औषधि-दोकानक मालिककेँ सेहो नरेशक मृत्युकेँ खबरि भेटल। ओ पिछला साँझक बिक्री-पञ्जी देखलक। नरेश सचमुच अपन पिताक औषधि लेने छलाह, आ पैसेक रसीद दऽ दोकानदार हुनका विदा केने छल। दोकानदारकेँ याद छल जे काउण्टरपर एक बेर नरेशक फोन बजल छल, मुदा फोनपर की बात भेल, से ओ नहि सुनने छल। ओ थानाकेँ ई जानकारी देबाक निर्णय कएलक। अपन देखल बातक सीमासँ बाहर जा कऽ ओकरा कोनो कहानी बनएबाक इच्छा नहि छल।

नैना कार्यालय पहुँचलिह तँ हरि नारायण फाटकपर ठाढ़ छल। ओकर हाथमे चाभीक गुच्छा छल, मुदा ओ दुआरि नहि खोलि रहल छल। 'की भेल?' नैना पुछलथिन। हरि नारायण धीरे कहलक, 'नरेश बाबू... नहरक कात भेटलाह। अस्पतालसँ खबरि अछि जे आब नहि रहलाह।' नैना एतबा सुनिते थमकि गेलीह। काल्हिये हुनका संग नियुक्ति-अभिलेखक विषयमे बात भेल छल। ओ अपन बैगक भीतर हाथ डालि मोबाइल निकाललथिन आ रेखाकेँ फोन करबाक प्रयास कएलथिन। फोन नहि उठल। हुनका बुझाइत छलनि जे एहि समय परिवारपर प्रश्नक बोझ राखब उचित नहि।

कुसुम अएलीह तँ कार्यालयक बीचवला मेज लग बैसि रोय लगलीह। ‘काल्हि हमरा कहलनि जे बिना प्रमाण ककरो दोष नहि देब,’ ओ कहलीह। ‘आइ स्वयं नहि छथि।’ किरण कोठरीसँ बाहर अएलीह। समाचार सुनलाक बाद ओ कुर्सी पकड़ि ठाढ़ रहलीह। हुनक आँखिक सोझाँ नरेशक लिखित प्रश्न छल, जाहिपर काल्हि प्राप्ति लिखने छलीह। रतन सिंहकेँ फोन कएल गेल। ओ पहिने विश्वास नहि कएलनि। ‘दुर्घटना?’ ओ पुछलनि। किरण उत्तर देलथिन, ‘एखन स्पष्ट नहि अछि। अस्पतालमे देह अछि।’ रतन कहलनि जे ओ तुरन्त पहुँचताह।

नैना लेखा-कक्षक दुआरि लग गेलीह, मुदा भीतर नहि अएलीह। मेजपर कलम, लाल धागासँ बान्हल फाइल आ पानिक गिलास छल। लोकक अनुपस्थितिसँ वस्तुसभक रूप बदलि जाइत अछि; काल्हि जे सभ काजक साधन छल, आइ ओहि सभपर नजरि पड़िते नैनाकेँ दुःख होइत छल। हरि नारायण पुछलक, ‘कोठरी बन्न राखी?’ नैना कहलीह, ‘हँ। कियो कागज नहि छुअय। पुलिसकेँ जे देखबाक होयत, देखत।’ किरण ई बात सुनि लेखाक कोठरीक चाभी अपन लग राखबाक निर्णय कएलथिन आ कुसुमकेँ ताला लगयबाक कहलथिन।

अभयकेँ समाचारक कार्यालयमे फोन अएल। मञ्जरी पहिने हुनका अस्पतालसँ पुष्टि करबाक कहलथिन। अभय नरेशक नाम सुनि किछु क्षण चुप भऽ गेलाह। काल्हि सविताक प्रदर्शनक बाद फाटक लग नरेशसँ भेट भेल छल। नरेश कहने छलाह—प्रमाण बिना आरोप नहि। एखन अभयक सोझाँ प्रश्न छल जे समाचारमे की लिखल जाए। ओ अस्पताल पहुँचलाह, पुलिसक आधिकारिक विवरण पुछलनि आ परिवारक अनुमति बिना कोनो तस्वीर नहि लेलनि। समाचारक पहिल पाँतिमे ओ लिखलनि जे नरेशक मृतदेह नहरक कात भेटल आ मृत्यु कारणक जाँच जारी अछि।

अस्पतालक गलियारामे एकटा कर्मचारी रेखाकेँ शव-परीक्षणक प्रक्रिया बुझौलक। कागजपर हस्ताक्षर करैत हुनक हाथ काँपि रहल छलनि। श्यामबाबू प्रत्येक पन्ना पढ़बाक लेल हुनका समय देलनि। रेखा एक बेर पुछलथिन, ‘ई सभ केलासँ भैया किएक मरलाह, से बुझि जाएब?’ कर्मचारी उत्तर देलक, ‘चिकित्सकीय कारणक विषयमे जानकारी भेटत।

घटना कोना भेल, से पुलिसक जाँचसँ स्पष्ट होयत।' रेखा हस्ताक्षर कएलथिन। ओ दुनू प्रक्रियाक अन्तर बुझलीह, मुदा ओहि अन्तरसँ दुःख हलुक नहि भेल।

दुपहर घटनास्थलपर जाँचक काज चलैत रहल। पुलक दुनू दिस माटिक पगडण्डी छल; राति वर्षा भेलासँ बहुत चिह्न अस्पष्ट भऽ सकैत छल। पुलिसक एक गोटे अधिकारी देखलनि जे नरेशक देह भेटल ठामसँ कनेक हटि घास कुचलल अछि। दोसर कात सड़कपर गाड़ीक टायरक निशान छल, मुदा ओहि बाटे नियमित माल-ढुलाई सेहो होइत छल। केवल निशान देखिकऽ ककरो वाहन चिन्हब सम्भव नहि छल। घटनास्थलक स्थिति, वस्तु आ तस्वीर क्रमसँ दर्ज कएल गेल। जाँच करयवला लोक कोनो निष्कर्ष आगाँ नहि बढ़ौलनि।

चिकित्सक प्रारम्भिक परीक्षणक बाद कहलनि जे देहपर किछु चोटक चिन्ह अछि, आ चोटक स्वरूपक कारणेँ केवल नहरमे खसि पड़बाक अनुमान पर्याप्त नहि होयत। विस्तृत शव-परीक्षणक प्रतिवेदनसँ मृत्यु कारण स्पष्ट करब आवश्यक छल। पुलिस एहि जानकारीकेँ लिखित रूपमे दर्ज कएलक। थानामे पहिनेसँ चलैत पूनमक गुमशुदगीक जाँचसँ नरेशक मृत्यु तुरन्त जोड़ि देब उचित नहि मानल गेल, मुदा हुनक कार्यालय आ हालक कामक विषयमे जानकारी सङ्कलित करबाक निर्णय भेल।

रतन सिंह अस्पताल पहुँचलाह। सफेद कुरता पहिरने हुनक संग ठीकेदार वीरेन्द्र राय सेहो छलाह। रतन रेखाकेँ ढाढ़स देबाक प्रयास कएलनि। 'नरेशजी पुरान कर्मचारी छलाह। संस्थाक दिससँ जे सहायता आवश्यक होयत, देब,' ओ कहलनि। रेखा एक बेर हुनका देखलथिन। 'हमरा एखन पैसा नहि चाही। हमरा ई बुझबाक अछि जे भैया काल्हि कतए गेल छलाह। ओ घर घुरबाक कहने छलाह।' रतन उत्तर देलनि, 'कार्यालयसँ तँ साँझ निकलि गेल छलाह। ओकर बादक बात हमरा नहि मालूम।' वीरेन्द्र एकटा कात ठाढ़ रहलाह। हुनका देखिकऽ अभय कोनो टिप्पणी नहि कएलनि; अस्पतालमे उपस्थित होयब अपराधक साक्ष्य नहि छल।

रतनक संग आएल वीरेन्द्र अस्पतालसँ निकलैत अपन चालककेँ गाड़ी लगाबय कहलनि। चालक पुछलक, 'नहरक रास्तासँ घुरब?' वीरेन्द्र उत्तर देलनि, 'मुख्य सड़क

लिअ।' दुनू सामान्य बात छल, मुदा कात ठाढ़ एकटा आदमी एकरा गोपनीय संकेत मानि दोसरकेँ कहय लगल। अभय ई फुसफुसाहट सुनलनि आ एकदम रोकि देलनि—'ककरो गाड़ी कोन बाटे गेल, तकरा प्रमाण बिना हत्यासँ जोड़ब अनुचित अछि।' ओ आदमी चुप भऽ गेल। दुर्घटनाक ठामसँ शुरू भेल अफवाह अस्पताल धरि पहुँचि गेल छल।

नरेशक मृत्युक समाचार साँझ धरि हुनक पिताकेँ देल गेल। ओ बहुत देर चुप रहलाह। रेखा हुनक कात बैसि कहलीह, 'भैया आब नहि घुरताह।' पिता जी खाटपर हाथ रखि पुछलथिन, 'ओ हमर चश्मा बनौने छथि?' रेखा उत्तर दऽ नहि सकलीह। पिता जी फेर किछु नहि पुछलनि। घरमे जे औषधि नरेश आनने छलाह, से पुलिसक कागजमे दर्ज भऽ अस्पतालमे राखल छल। रेखाकेँ ओ पुड़िया मोन पड़िते नरेशक अन्तिम फोनक स्वर सुनाइत छल।

साँझ ढलैत सीमा बेटाकेँ संग लऽ घर पहुँचलिह। बालक दुआरिपर ठमकि पुछलक, ''बाबूजी कतय छथि?'' सीमा उत्तर देबाक बदला ओकरा छातीसँ लगा लेलथिन। रेखा भौजीक हाथ पकड़ि भीतर लऽ गेलीह। वृद्ध पिता चश्मा उतारि देलनि। ओहि राति घरमे रेखाक संग सीमा सेहो जागैत रहलीह, आ बालक पड़ोसिनक देखरेखमे नीन्न पकड़बाक प्रयास करैत रहल।

कर्मचारिसभ दिनभरि आधा मनसँ काज कएलक। कुसुम नरेशक पञ्जीक कोना सम्हारैत कहलीह, 'हुनक वेतनक शेष हिसाब परिवारकेँ भेटबाक चाही।' किरण कहलीह, 'प्रबन्धनसँ एहि विषयमे लिखित निर्णय लेब।' कुसुम तखन पुछलथिन, 'आ हमरासभक बकाया मजदूरीक प्रश्न?' किरण उत्तर नहि देलथिन। शोकक दिनमे सेहो रोजीक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि। नरेशक खाली कुर्सी ओहि प्रश्नकेँ आरो कठोर बना देने छल।

नैना साँझ अस्पतालसँ घर घुरलीह तँ सरस्वती देवी दरवाजापर बैसल छलीह। समाचार हुनका सेहो भेटि चुकल छलनि। 'नरेश बाबू नीक लोक छलाह?' माय पुछलथिन। नैना उत्तर देलथिन, 'ओ जे नहि जनैत छलाह, से जानबाक बहाना नहि करैत छलाह। कार्यालयमे एहन लोक कम भेटैत छथि।' माय चुप रहलीह। किछु देर बाद कहलीह, 'मृतकक घरमे कखनहुँ

अकेले दुःख नहि अबैत। रोजीक चिन्ता सेहो आबि जाइत अछि।' नैना रेखाक बारेमे सोचलीह, जकर पिता जीक उपचार आ घरक खर्च नरेशक आमदनीपर निर्भर छल।

चन्दन ओहि राति असामान्य रूपसँ चुप छल। भोजनक समय समाचार सुनि ओकर हाथसँ चम्मच छूटि गेल। नैना ओकरा पुछलथिन, 'नरेशजीकेँ चिन्हैत छलह?' चन्दन कहलक, 'कंपनीक लेखापाल छलाह। कखनो गोदाममे देखने रही।' 'तकर बाद?' 'किछु नहि।' नैना अपन भाईक चेहरापर भय देखलथिन, मुदा ओहि भयक एक्के कारण होयत, से निश्चय नहि कएलथिन। हत्या, दुर्घटना आ अवैध ढुलाईक अफवाहक बीच चन्दनक मौनक अर्थ बुझबाक लेल एखन हुनका कोनो आधार नहि छल।

मनोज साह दिनभरि दू-तीन बेर गोदामक कार्यालयमे आएल-गेल छल। जे कर्मचारी नरेशक मृत्यु पर बात करैत छल, मनोज हुनका काजपर ध्यान देबाक कहैत छल। एकटा युवक पुछलक, 'साँझक गाड़ी सभक हिसाब नरेश बाबू देखैत छलाह ने?' मनोज उत्तर देलक, 'आब हिसाब दोसर देखत। गाड़ी खड़ा रखलासँ ककरो फायदा नहि।' ओकर स्वर सामान्य रखबाक प्रयास छल कि सचमुच सामान्य छल, ई सुनयवला लोक बुझि नहि सकल। चन्दन ओकरा दूरसँ देखलक आ अपन फोन जेबमे रखि लेलक।

नहरक पुल लग अन्हार पड़िते लोकक भीड़ कम भऽ गेल। पुलक नीचाँ पानि एक लयमे बहैत रहल, मुदा किनारपर भोरक घटना सँ उत्पन्न डर एखनहुँ बनल छल। पुलिस पहरेदारीक व्यवस्था राखलक, जाहिसँ जाँचसँ सम्बन्धित बचल ठाममे हस्तक्षेप नहि होय। गोकुल सहनी अपन माछक जाल घर लऽ जाइत पत्नीकेँ कहलनि, 'आइ नहरमे जाल नहि डालब।' पत्नी पुछलथिन, 'किएक?' गोकुल उत्तर देलक, 'एकटा घर उजड़ि गेल। मन नहि मानैत अछि।' ओ राति घरमे भोजन कएलक, मुदा नहरक किनारपर देखल दृश्य ओकरा नीन्न नहि आबय देलक।

साँझ गोकुल सहनीकेँ फेर किछु लोक पुछय आएल जे ओ रातिक मारपीट देखले छल कि नहि। गोकुल एकर उत्तरमे अपन पहिल कथन दोहरौलक—'हम भोरमे देह देखलहुँ। राति ओतय रही नहि।' एकटा युवक असन्तुष्ट भेल, 'एतेक कहला सँ की बुझाएत?'

गोकुल कहल, 'जे नहि देखलहुँ, ओकर बात कहि देब तँ झूठ होयत।' ओ अपन बेटाकेँ सेहो बुझौलक जे घरक भीतर सुनेल अफवाहकेँ विद्यालयमे सच कहि नहि सुनाबय।

समाचारपत्रक लेल अभय तीनटा वाक्य अलगसँ जाँचलनि—मृतदेह भेटबाक स्थान, परिवार द्वारा कएल पहचान, आ मृत्यु कारणक जाँच। एकटा सहयोगी कहलक, 'शीर्षकमे हत्या लिखी तँ लोक पढ़त।' अभय उत्तर देलनि, 'जाँचक तथ्य भेटलाक पहिने हत्या लिखब तँ पाठककेँ हम अपुष्ट बात देब। जँ हत्या भेल अछि तँ प्रमाणकेँ सामने आबय दिअ।' मञ्जरी सेहो एहि निर्णयसँ सहमत भेलीह। समाचारमे नरेशक कार्यालयमे हालमे उठाओल आर्थिक प्रश्नक उल्लेख सीमित रूपमे छल; दुनू घटनाकेँ निश्चित कारण-परिणाम नहि कहल गेल।

राति रेखा भाइक मेजक दराज खोलि हुनक लिखल सामान देखब चाहलीह। श्यामबाबू हुनका सावधानीसँ कहलनि जे पुलिस जँ जाँच लेल कागज माँगत तँ सभ यथास्थान सुरक्षित राखल जाए। रेखा हाथ रोकि लेलीह। मेजक ऊपर नरेशक पुरान कलम आ परिवारक खर्चक बही पड़ल छल। ओ कलम उठाओलथिन, फेर ओतहि रखि देलथिन। हुनका भाइक बचपनक बात मोन पड़ल—गामक विद्यालयमे ओ दूसरक कापी नहि छूअबाक शिक्षा दैत छलाह। आइ हुनका अपन घरक वस्तु सेहो जाँचक कारणेँ छूबा सँ डर भऽ रहल छल।

नैनाकेँ रेखाक सन्देश भेटल—'भैया काल्हि कार्यालयमे किछु बातसँ परेशान छलाह। जँ अहाँकेँ किछु मालूम हो तँ पुलिसकेँ बताउ।' नैना कागजपर अपन जानकारी लिखय बैसलीह। नरेशक द्वारा पूनमक समूहक हिसाब पूछब, मूल अनुमति-पत्र माँगब, आ लिखित उत्तरक आग्रह—एतबे बात ओ स्वयं देखलथिन। ओ ककरो हत्यारा नहि चिन्हैत छलीह। एकटा-एकटा वाक्य लिखैत हुनका बुझाइत छल जे सत्यक रक्षा करब लेल दुःखक बीच सेहो संयम चाही। ओ निश्चय कएलथिन जे अगिला भोर पुलिसकेँ अपन देखल बात बतौतीह।

नहरक कातक घटना आब एकटा परिवारक शोकमात्र नहि रहल छल। रोजगार संस्थाक कर्मचारी भयभीत छलाह, जमा राशि देनिहार अभ्यर्थीसभक प्रश्न बढ़ि रहल छल, आ पूनमक परिवारकेँ आशंका छल जे हुनक खोज कतहु पाछाँ नहि छूटि जाए। नरेशक मृत्यु कोना भेल, ई प्रश्नक उत्तर एखन नहि भेटल छल; मुदा एकटा बात स्पष्ट छल—जखन लोकक मृत्यु भेलाक बाद ओकरा सम्बन्धमे अफवाह, भय आ स्वार्थ अलग-अलग दिशा पकड़ैत अछि, तखन प्रमाण जुटेबाक काज आरो महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।

अध्याय २४ : हत्या आ अनुसन्धान

नवगढ़ थानाक प्रातःकालीन बैठकमे निरीक्षक सुजाता कुमारीक सोझाँ नरेश मण्डलक मृत्यु सम्बन्धी विवरण राखल गेल। ओ अहाँ-पाछाँक अफवाह पढ़बाक बदला घटनास्थलक विवरण पहिने देखलथिन। नहरक पच्छिम कात देह भेटल, पहिल सूचना गोकुल सहनी देने छलाह, पहचान परिवार द्वारा भेल, आ चिकित्सकीय जाँचक प्रतिवेदनक प्रतीक्षा छल। सुजाता पुछलथिन, ‘पहिल फोनक समय लिखल अछि? देह उठेबासँ पहिने स्थानक तस्वीर सभ सुरक्षित अछि?’ सहयोगी अधिकारी दूनू प्रश्नक उत्तर देलनि। ओ फेर पुछलथिन, ‘जे लोक देह देखलनि, हुनका सभक कथन आ जे लोक केवल सुनलनि, हुनकर बात अलग राखल गेल?’

सहयोगी कहलनि, ‘दू गोटे पहिल बेर देखलनि, बाँकी लोक बादमे पहुँचलाह।’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘तखन दू गोटेक कथन स्पष्ट लिखू। दोसरक अनुमान ओकरा सँग नहि मिलाउ।’ गोकुलकेँ पहिने कहला पर जे ओ मृतदेह देखलाह, मृत्युक कारण नहि, से एहि मामलामे महत्त्वपूर्ण छल। जाँचक आरम्भमे ओ कोनो नाम घोषित नहि करय चाहैत छलीह। सत्यक खोजमे धैर्यक आवश्यकता छल, विशेषकर तखन जखन मरयवला आदमी पहिने आर्थिक असङ्गतिक प्रश्न उठा चुकल होथि।

दोपहरसँ पहिने चिकित्सकीय प्रारम्भिक प्रतिवेदन पहुँचल। देहपर भेटल किछु चोट सामान्य खसि पड़बाक व्याख्यासँ मेल नहि खाइत छल; चिकित्सक चोटक स्वरूप आ अन्य उपलब्ध तथ्यकेँ देखैत हिंसक आक्रमणक आशङ्का व्यक्त केने छलाह। विस्तृत जाँचक किछु निष्कर्ष एखन बाकी छल। सुजाता प्रतिवेदन आ घटनास्थलक विवरण मिलाकऽ हत्याक आशङ्कापर औपचारिक अनुसन्धान आगाँ बढ़ेबाक निर्देश देलथिन। ओ सहयोगीकेँ स्पष्ट कहलनि, ‘हत्या मानि अनुसन्धान करब आ हत्यारा चिन्हि लेब दूटा अलग बात अछि। एखन पहिल काजक आधार अछि, दोसरक प्रमाण हमरा लग नहि।’

सविताक परीक्षा-आन्दोलनक समाचारक कारणेँ थानामे पहिनेसँ भीड़ छल। कियो नरेशक मृत्युकेँ तुरन्त प्रश्नपत्र-लीकसँ जोड़ैत छल, कियो अवैध शराबक गिरोहक चर्चा करैत छल। सुजाता सभ शिकायतक अलग नोंद रखबाक कहलथिन। 'एक्के संस्थाक नाम आबि रहल अछि, से सम्बन्धक सम्भावना देखब; मुदा सम्भावना लिखलासँ प्रमाण नहि बनैत अछि,' ओ कहलथिन। हुनका लेल नरेशक जीविका, कार्यालयक काम, घरक सम्बन्ध आ अन्तिम दिनक गतिविधि सभ जाँचक विषय छल। एकटा कथा चुनि बाँकी तथ्य ओकर भीतर ठेलब अपराधक अनुसन्धान नहि होइत अछि।

रेखा मण्डल श्यामबाबूक सङ्ग थानामे अएलीह। रातिक नीन्न नहि भेल छलनि, मुदा ओ भाइक अन्तिम दिनक बात क्रमसँ कहबाक तैयारी कऽ अएलीह। सुजाता हुनका पानि देलथिन, फेर पुछलथिन, 'भैया काल्हि घरसँ कखन निकललाह?' रेखा समय बतौलथिन। 'दुपहरि अस्पतालक बात भेल। साँझ ओ औषधि लऽ कऽ घुरबाक कहलनि। तकर बाद नहि अएलाह।' सुजाता अगिला प्रश्न धीरे पुछलथिन, 'कोनो विशेष चिन्ता छलनि?' रेखा उत्तर देलथिन, 'कहैत छलाह जे कार्यालयक हिसाबमे प्रश्न अछि। हम पुछलियनि जे विवाद भेल अछि कि? ओ कहलनि—प्रश्न पुछला पर विवाद भऽ जाए तँ प्रश्न नहि पुछब?'

सुजाता रेखाक शब्द जथावत लिखबाक प्रयत्न कएलथिन। ओ पुछलथिन, 'अहाँ स्वयं कार्यालयक हिसाब देखलहुँ?' रेखा माथ हिलौलथिन। 'नहि। भैया घरमे सब बात विस्तारसँ नहि कहैत छलाह। हँ, पछिला दू दिनसँ चिन्तित छलाह। राति कखनहुँ कापीमे किछु लिखैत छलाह।' 'कापी कतए अछि?' 'घरमे हुनक मेजपर कतेको कापी अछि। हम किछु नहि हटौने छी।' सुजाता कहलीह, 'ठीक केलहुँ। आवश्यकता भेलासँ विधिसम्मत जाँच कएल जाएत। अपन घरक सामान्य सामानक सूची बनाकऽ राखू, जकरा याद अछि।' रेखा पुछलथिन, 'भैया साँच बजलाह, तेँ मारल गेलाह?' सुजाता उत्तर देलथिन, 'एखन से कहबाक प्रमाण नहि अछि। मुदा हुनक प्रत्येक बात जाँचब।'

सुबोध नामक सहयोगी अधिकारी नरेशक फोनक सम्बन्धमे प्रारम्भिक सूचना अनलनि। फोन परिवारकेँ भेटल नहि छल; देहक लग भेटल सामानक सूचीमे सेहो ओकर स्पष्ट उल्लेख नहि छल। सुजाता गुम वस्तुक नोंद करबाक कहलथिन। 'फोन नहरमे खसल हो

सकैत अछि, कियो उठौने हो सकैत अछि, अथवा आन ठाम रहि गेल होयत। प्रत्येक सम्भावना अलग जाँचू,' ओ कहलथिन। फोनक प्रयोगक विवरण सम्बन्धित नियमक अनुसार प्राप्त करबाक प्रक्रिया शुरू भेल। रेखाकेँ याद छल जे राति फोन पहिने बजल आ बादमे बन्द भेटल, मुदा एहि घटनासँ अपनहि हत्या सिद्ध नहि होइत छल।

रेखाक बयानक बाद सुजाता औषधि-दोकानक मालिककेँ बजौलथिन। दोकानदार रसीदक समय बतौलक आ कहल जे नरेश सामान्य अवस्थामे दोकान छोड़ने छलाह। फोन बजबाक बात ओकरा याद छल, मुदा आवाज नहि सुनने छल। सुजाता पूछलथिन, 'नरेशकेँ कियो दोकानक बाहर प्रतीक्षा करैत देखलहुँ?' ओ कहलक, 'भीड़मे सभकेँ नहि चिन्हलहुँ।' सुजाता एही उत्तरकेँ दर्ज कएलथिन। आब नरेशक साँझक समयक्रममे औषधि-दोकान धरि एकटा पुष्ट ठाम भेटल छल; तकर बादक बाट एखन अज्ञात रहल।

थानासँ निकलैत रेखाकेँ अभय भेटलाह। ओ प्रश्नक ढेरी नहि लगा देलनि। 'अहाँकेँ जखन सुविधाजनक लगय, हम नरेशजीक काजक विषयमे पुछब,' ओ कहलनि। रेखा उत्तर देलथिन, 'भैया अहाँसँ एक दिन भेटल छलाह ने?' अभय कहलनि, 'हँ, कार्यालयक बाहर। ओ कहने छलाह जे बिना प्रमाण आरोप नहि लगायब।' रेखाक आँखि भरि अएल। 'ओ घरमे सेहो एहेन छलाह। ककरो बिना सुनने गलत नहि कहैत छलाह।' अभय हुनका ढाढ़स देलनि, मुदा ओहि भेंटकेँ समाचारक लेल भावुक बयानमे बदलल नहि।

नैना थानामे अपन देखल घटनाक लिखित विवरण नेने पहुँचलिह। ओ वर्णन कएलथिन जे पूनमक नियुक्तिस्थल बदलल, प्रशिक्षणक तारीखक बीच अन्तर देखायल, आ नरेश मूल अनुमति-पत्र माँगने छलाह। सुजाता पुछलथिन, 'नरेशजीकेँ ककरो धमकी देइत सुनलहुँ?' नैना कहलीह, 'प्रत्यक्ष नहि। किरण मैडम हुनका सावधान रहबाक कहने छलीह। ई बातक अर्थ हम नहि जानैत छी।' 'नरेशजी गुप्त कागज अहाँकेँ देलनि?' 'नहि। ओ तँ हमरो कहने छलाह जे जे तथ्य देखल, से लिखू; अनुमान नहि।' सुजाता नैना द्वारा देल विवरणक प्राप्ति दऽ कहलथिन जे आवश्यकता पड़ला पर फेर पुछताछ भऽ सकैत अछि।

नैना पूनमक विषय उठौलथिन। 'ओ एखनहुँ गायब छथि। हुनक बहिन रीना धमकीक फोनक जानकारी देने छथि। नरेशजी एहि समूहक हिसाब जाँचि रहल छलाह।' सुजाता सम्बन्धित पुरान शिकायत मँगौलथिन। ओ देखलथिन जे पूनमक नियुक्तिक ठाम संस्थाक अलग-अलग कागजमे अलग छल। 'एहि दुनू मामलामे संस्था एक्के अछि,' ओ कहलीह, 'मुदा एखन हमरा अलग-अलग साक्ष्य चाही। पूनमक खोज रुकब नहि चाही।' नैना कनेक आश्वस्त भेलीह। हुनका भय छल जे नरेशक मृत्यु पर सभक ध्यान गेलासँ पूनमक खोज फेर पाछाँ छूटि जायत।

थानाक बाहर अभय नैनाकेँ भेटलाह। अभय पुछलनि, 'अहाँ ठीक छी?' नैना उत्तर देलथिन, 'ठीक कहब कठिन अछि। जकरा काल्हि धरि हम प्रमाणक लेल पुछैत रही, ओ आइ जीवित नहि छथि। मुदा पुलिसकेँ जे बात जानैत छी, कहि देलहुँ।' अभय कहलनि, 'एही सँ जाँच आगाँ बढ़त। हमरा समाचारक लेल आओर पुष्ट तथ्यक प्रतीक्षा करबाक अछि।' नैना पुछलथिन, 'अहाँ नरेशजीक हत्या आ कार्यालयक घोटाला एक्के समाचारमे लिखब?' अभय उत्तर देलनि, 'दुनू तथ्यक सम्बन्ध जाँचक विषय अछि। पाठककेँ जाँचक स्थिति बतायब, फैसला नहि सुनाएब।'

एहि बीच पूनमक बहिन रीना थानामे अपन फोनपर आएल धमकीक विवरण लिखौलथिन। अधिकारी हुनका पुछलनि जे सन्देश कखन आएल आ कियो आवाज चिन्हलथि कि नहि। रीना कहलीह, 'आवाज नहि चिन्हलहुँ। ओ केवल कहल जे खोज बन्द करू।' रीना अपन आँखिमे पानि रोकैत फेर जोड़लथिन, 'भाइ-बहिन सभ डरि गेल छी, मुदा दीदीकेँ खोजब छोड़ि नहि सकैत छी।' सुजाता एहि धमकीक जाँचकेँ पूनमक मामला सँ जोड़लथिन, नरेशक हत्याक प्रत्यक्ष साक्ष्य मानि नहि।

निरीक्षक सुजाता दू सहयोगी अधिकारीक सङ्ग रोजगार संस्थामे पहुँचलिह। फाटकपर हरि नारायण हुनका कार्यालयक आगन्तुक-पञ्जी देलक। किरण अपन कोठरीसँ बाहर अएलीह। सुजाता परिचय दऽ कहलीह, 'नरेश मण्डलक कार्य-समय, उपस्थिति, हालक जिम्मेवारी आ हुनक लेखा-अभिलेखक स्थिति देखबाक अछि।' किरण उत्तर देलथिन, 'हम सहयोग करब। लेखा-कक्ष काल्हिसँ बन्द अछि।' सुजाता पुछलथिन, 'चाभी ककर लग

अछि?' 'हमर लग।' ओ चाभी आगाँ बढ़ौलथिन। सुजाता कक्ष खोलबासँ पहिने उपस्थित लोकक नाम आ समय दर्ज करौलथिन, जाहिसँ बादमे कियो ई नहि कहय जे कागज अनधिकृत रूपसँ बदलल गेल।

कक्षमे नरेशक कुर्सी खाली छल। कागजक ढेरी व्यवस्थित देखाइत छल, मुदा खुलल फाइलक भीतर किछु पन्ना गायब अछि कि नहि, ई केवल मेज देखि नहि बुझल जा सकैत छल। सुजाता लेखाक पञ्जीसभक सूची बनौलनि आ आवश्यक अभिलेख विधिसम्मत रूपसँ सुरक्षित करबाक निर्देश देलथिन। कुसुमकेँ पुछलथिन जे नरेशक हालक काममे कोन कर्मचारी सहायता करैत छल। कुसुम कहलथिन, 'हम भुगतानक सूची बनबैत रही। नैना आवेदनक रसीद मिलबैत छलीह। नरेशजी मूल अनुमतिक पत्र माँगैत छलाह।' सुजाता पूछलथिन, 'प्रबन्धन उत्तर देने अछि?' कुसुम कहलीह, 'सात दिनक समय लिखित देल गेल छल।'

किरण प्राप्ति-पत्रक प्रति देखौलथिन। सुजाता ओकर तारीख, हस्ताक्षर आ प्राप्तिक समय नोट कएलथिन। 'एहि पत्रक उत्तरक मसौदा बनल अछि?' ओ पुछलथिन। किरण कहलीह, 'किछु विभागसँ कागज मँगाओल जा रहल छल।' 'ककरा-ककरा सँ?' किरण तीनटा विभागक नाम देलथिन। सुजाता कहलीह, 'एहि जानकारीक सत्यापन करब।' ओ किरणसँ फेर पुछलथिन, 'नरेशजीक स्वभाव कोना छलनि?' किरण उत्तर देलथिन, 'नियम मानयवला। कखनहुँ बेसी प्रश्न पुछैत छलाह।' 'प्रश्न पुछब ककरो लेल असुविधाजनक भेल?' किरण चुप भेलीह। फेर कहलथिन, 'कागज जुटेबामे कठिनाइ होइत छल, मुदा व्यक्तिगत विवाद हमरा मालूम नहि।'

रतन सिंह ओहि समय कार्यालय पहुँचलाह। सुजाता हुनका नरेशक मृत्यु आ आर्थिक प्रश्नक विषयमे पूछताछक सूचना देलथिन। रतन कहला, 'हम पूर्ण सहयोग करब। नरेश पुरान कर्मचारी छलाह। दुर्घटनाक समाचारसँ हम स्तब्ध छी।' सुजाता कहलीह, 'मृत्युक परिस्थिति हत्याक आशङ्काक आधारपर जाँचल जा रहल अछि। अहाँक संस्थाक कागज महत्वपूर्ण भऽ सकैत अछि।' रतनक चेहरा तनिक कठोर भेल। 'ककरो शङ्का भेलासँ

संस्था दोषी नहि भऽ जाइत अछि।' सुजाता उत्तर देलथिन, 'हम एहेन बात नहि कहने छी। प्रश्नक उत्तर दऽ सहयोग करू।'

'नरेशजी अंतिम दिन कतबा बजे कार्यालयसँ निकललाह?' सुजाता पुछलथिन। रतन कहला, 'हम हुनका साँझ कनेक पहिने देखलहुँ। सही समय आगन्तुक-पञ्जी वा सुरक्षाकर्मी बताओत।' 'अहाँक संग कोनो विवाद?' 'हिसाबक विषयमे मतभेद छल। हम सात दिनक समय देने रही।' सुजाता पूछलथिन, 'मनोज साह आ वीरेन्द्र राय एहि कार्यालयसँ कोन प्रकारेँ जुड़ल छथि?' रतन उत्तर देलनि, 'मनोज ढुलाईक व्यवस्था देखैत छथि, वीरेन्द्र निर्माण-ठीकेदार छथि। अलग-अलग अनुबन्ध अछि।' सुजाता अनुबन्धक नकल मँगौलथिन। रतन अपन सहायककेँ कहि कागज उपलब्ध करबाक व्यवस्था कएलनि।

जाँचक समय विभा सिंह कार्यालयमे अएलीह। हुनका नरेशक मृत्युसँ दुख छल, मुदा अपन नामपर भेल पैसाक निकासक प्रश्न सेहो मोन छलनि। ओ सुजाताकेँ किछु कहय चाहलीह, फेर बुझलीह जे घरक वित्तीय कागजक अलग सूची बनाकऽ आएब आवश्यक होयत। सुजाता हुनका एकटा समय देलथिन जे जँ अपन जानकारी देबाक चाहथि तँ विवरण सहित भेटथि। विभा रतनक चेहरा देखलथिन; ओ अपन पत्नी दिस चुपचाप तकि रहल छलाह। कार्यालयक भीड़मे दुनूक बीच किछु बात नहि भेल।

मनोज साहकेँ सेहो पुछताछ लेल बजाओल गेल। ओ कहलक जे ओकरा गाड़ीक चालान आ गोदामक काजसँ मतलब अछि। 'नरेश बाबूसँ कखन भेटलहुँ?' सुजाता पुछलथिन। मनोज उत्तर देलक, 'काल्हि फाटक लग बात भेल छल। मजदूरीक हिसाब पुछैत छलाह।' 'बातमे झगड़ा भेल?' 'नहि। ओ हिसाब माँगैत छलाह, हम कहने रही जे कागज कार्यालयसँ भेटत।' सुजाता ओकर बताओल समय दर्ज कएलथिन। 'काल्हि राति कतय छलहुँ?' मनोज किछु ठाम आ समय बतौलक। सुजाता ओकर उत्तरक पुष्टि लेल सम्बन्धित लोकसँ अलग जानकारी लेबाक निर्देश देलथिन। ओहि उत्तरक सत्यापन बिना मनोजकेँ दोषी वा निर्दोष घोषित नहि कएल गेल।

नहरक बाटसँ गुजरयवला गाड़ीसभक विषयमे जाँच आरम्भ भेल। पुलक कात दूटा दोकान छल, जाहिमे एकटाक बाहर कैमरा लागल छल, मुदा ओकर दृष्टि मुख्य सड़कक एकटा भाग धरि सीमित छल। सुजाता मूल दृश्य सुरक्षित करबाक कहलथिन। दोकानदार कहलक, 'राति वर्षा भेल, प्रकाश सेहो कम छल।' 'तँ जे स्पष्ट नहि, ओकरा स्पष्ट मानि नहि चलब,' सुजाता उत्तर देलथिन। किछु वाहनक समय आ दिशा पुष्ट भऽ सकैत छल, मुदा कोन वाहन नरेशक मृत्युसँ सम्बन्धित छल, से एखन ज्ञात नहि छल। एकटा अपूर्ण दृश्यसँ पूरा घटना नहि बनाओल जा सकैत अछि।

सुजाता गाड़ीक चालानक विषयमे परिवहन कार्यालयसँ उपलब्ध विवरण माँगबाक निश्चय कएलथिन। अवैध शराबक चर्चा थानाक बाहर बहुत छल, मुदा नरेशक मृत्युसँ ओकर सम्बन्ध एखन प्रमाणित नहि छल। ओ एकटा सहयोगीकेँ कहलीह, 'राति ओहि बाटसँ सामान्य निर्माण-सामग्री सेहो जाइत अछि। सभ गाड़ीकेँ सन्दिग्ध कहब तँ वास्तविक गाड़ी चिन्हब कठिन भऽ जाएत।' ताहि लेल समय, दिशा, पञ्जीकृत विवरण आ प्रत्यक्ष साक्षीक बात क्रमसँ मिलाओल जा रहल छल।

नहरक पुल लग रातिक पथप्रकाशक दूटा बत्तीमे सँ एकटा बन्न छल। सुजाता नगर निकायक कार्यालयसँ रखरखावक पञ्जी मँगौलथिन। जँ बत्ती बहुत दिनसँ बन्न छल तँ रातिमे चलयवला लोककेँ बाट देखबामे कठिनाइ भऽ सकैत छल। जँ ओहि रातिए बन्द भेल तँ तकर कारण अलग जाँचबाक चाही। नगर निकायक कर्मचारी सही तिथि पञ्जी देखलाक बाद बतएबाक कहलनि। सुजाता स्पष्ट कएलथिन जे बत्ती बन्न होयब अपनेमे अपराधक प्रमाण नहि, मुदा घटनास्थलक परिस्थिति बुझबाक लेल ई जानकारी उपयोगी होयत।

अभय ओहि साँझ मञ्जरीसँ समाचारक योजना पर बात कएलनि। मञ्जरी पुछलथिन, 'अहाँ नरेशक परिवारक बात लिखब?' अभय कहलनि, 'रेखाक अनुमति बिना निजी शोकक विवरण नहि। हुनकर प्रश्न छापि सकैत छी—कार्यालयसँ घर घुरैत एकटा आदमी कतए आ कोना मरल?' मञ्जरी कहलीह, 'सरकारी अभिलेखमे जाँच हत्याक आशङ्कापर चलि रहल अछि, से स्पष्ट लिखू। पेपर-लीक, अवैध शराब आ पूनमक मामलाकेँ स्वतः

एक्के गिरोहक अपराध नहि कहू।' अभय सहमत भेलाह। समाचारमे हुनका सनसनी नहि, क्रमबद्ध तथ्य चाही छल।

नैना अपन कार्यालयक फाइल सम्हारैत नरेशक खाली कुर्सी दिस नहि तकबाक प्रयास करैत छलीह। कुसुम पुछलथिन, 'आब एहि कार्यालयमे हम सभ काज करी कि नहि?' नैना कहलीह, 'जकर रोजी एतयसँ चलैत अछि, ओकरा तुरन्त छोड़ि देब कठिन अछि। मुदा जे कागज शङ्कास्पद अछि, ओकरा सही कहि हस्ताक्षर नहि करब।' कुसुम नरेशक पुरान निर्देश याद कएलथिन—जे देखल, ओही लिखू। दुनू निर्णय कएलथिन जे नब जमा राशि लैत समय रसीद अवश्य देल जाएत, आ जे सेवाक स्पष्ट विवरण नहि, तकर आश्वासन नहि देल जाएत।

साँझक बाद सुजाता अपन मेजपर तीनटा पन्ना अलग रखलथिन। पहिलमे नरेशक अन्तिम दिनक समयक्रम, दोसरमे कार्यालयक लिखित प्रश्न, तेसरमे देह भेटल स्थानक विवरण। ओ कतेको प्रश्नक आगाँ खाली ठाम छोड़लथिन। नरेश साँझ ककरा भेटलाह? औषधि-दोकानसँ घर दिस निकललाक बाद कोन बाट पकड़लनि? हुनक फोन कतए अछि? कार्यालयक विवाद निजी शत्रुतामे बदलल छल कि नहि? एहि प्रश्नक उत्तर बिना जाँच आगाँ बढ़त, मुदा निष्कर्ष नहि देल जा सकैत छल।

मञ्जरी समाचारक पहिल संस्करण छपबासँ पहिने अभय सँ फेर पुछलथिन जे ककरो नाम बिना प्रमाण नहि लिखल गेल अछि ने। अभय एकटा पङ्क्ति हटौलनि, जाहिसँ पाठककेँ एहन भ्रम भऽ सकैत छल जे रतनक सार्वजनिक परिचय अपनेमे संदेहक पर्याप्त कारण अछि। ओकर बदला लिखलनि जे पुलिस संस्थाक आर्थिक अभिलेख आ कर्मचारीक हालक जिम्मेवारी जाँचि रहल अछि। समाचार छोट भेल, मुदा अधिक विश्वसनीय। अभय बुझैत छलाह जे मृतकक सम्मान राखबाक एकटा उपाय तथ्यक संग न्याय करब सेहो अछि।

रेखा घरमे पिताक कात बैसल छलीह। नरेशक अनुपस्थितिमे खर्चक हिसाब ओहि दिनसँ बदलब शुरू भऽ गेल छल। औषधि, किराना, बिजलीक बिल—सभ अपन समयपर

देबाक छल। रेखा पहिल बेर घरक खर्चक बही खोलि देखलथिन। नरेश छोट-छोट रकम सेहो साफ लिखैत छलाह। ओहि बहीक अन्तिम पन्नापर लिखल छल—‘डॉक्टरक अगिला जाँच।’ रेखाक आँखि भरि अएल। ओ बही बन्न करैत मनमे कहलथिन, ‘भैया, अहाँ जे अधूरा छोड़ि गेलहुँ, ओकर उत्तर हम खोजब।’ मुदा ओ जानैत छलीह जे उत्तर खोजब लेल एकटा व्यक्तिक साहस पर्याप्त नहि; न्यायिक जाँच आ दूसर लोकक साँच सेहो आवश्यक होयत।

चन्दन राति घर घुरल तँ नैनाकेँ थानाक कागज देखैत देखलक। ‘दीदी, पुलिस अहाँसँ फेर पुछत?’ ओ पुछलक। नैना कहलीह, ‘जँ पुछत, तँ जे जानैत छी से कहब।’ चन्दन चुप रहल। नैना पुछलथिन, ‘तोरा नरेशजीक विषयमे किछु याद अछि?’ चन्दन उत्तर देलक, ‘हम गोदाममे कखनहुँ देखने रही। ओकरा छोड़ि हमरा की मालूम होयत?’ नैना ओकर आँखि दिस तकलीह, मुदा बात आगाँ नहि बढ़ौलथिन। भाईक चेहरापर भय छल; ओ भय ऋणक छल, मनोजक धमकीक छल कि अन्य ककरो बातक, से एखन स्पष्ट नहि छल।

रातिक अन्तिम पहर अभय नैनाकेँ फोन कएलनि। ‘आइ सुजाता जी स्पष्ट कहलीह जे जाँच चलि रहल अछि। एतयसँ बेसी हम नहि लिखब,’ ओ बतौलनि। नैना कहलीह, ‘हमरा डर लगैत अछि, मुदा नरेशजीक घरक लोकक सँग ठाढ़ रहब।’ अभय उत्तर देलनि, ‘सङ्ग ठाढ़ रहबाक अर्थ प्रमाणक बाट नहि छोड़ब सेहो अछि।’ दुनू किछु देर चुप रहलाह। नहरक कात एकटा मनुष्यक मृत्यु भेल छल; ओकर उत्तर कागज, साक्षी आ कठिन प्रश्नसभक बीच कतहु छल। ओ उत्तर धरि पहुँचबामे समय लागत—आ एहि बेर समयक प्रत्येक दिन कोनो-ने-कोनो घरक लेल भारी पड़त।

तृतीय भाग

घृणा आ विश्वासघात

अध्याय २५–३६

अध्याय २५ : शोकसभा

नरेश मण्डलक घरक आगाँ ओहि दिन भोरेसँ लोकक आबा-जाही लागल छल। बड़का फाटक नहि, केवल लोहाक एकटा पुरान किवाड़, जकर एक पल्ला नीचाँसँ कनेक टेढ़ भऽ गेल छल। भीतर छोट आँगन, ओकर एक दिस तुलसीक चौरा, दोसर दिस पानिसँ भरल बालटी। आँगनमे बिछाओल दरीपर पड़ोसक महिला बैसल छलीह। कियो धीरे-धीरे बात करैत छल, कियो चुपचाप रेखा मण्डलक मुँह तकैत छल। रेखा रातिभरि जागल छलीह। आँखि लाल छलनि, मुदा जखन आगन्तुक पुछैत छलाह जे की भेल, ओ साफ आवाजमे कहैत छलीह, ‘हुनका घर पहुँचबाक छल। पहुँचला नहि।’ नरेशक पत्नी सीमा कोठरीक भीतर बेटाकेँ सम्भारैत छलीह। बालक बीच-बीचमे दुआरि दिस तकैत छल, मानू बाबूजी रोजुक जकाँ काजसँ घुरि एताह। रेखा भौजीकेँ भोजन करबाक कहलीह, मुदा सीमाक हाथमे राखल थारी बहुत देरि धरि ओहिना रहल।

नरेशक पिता हरिनारायण मण्डल खटियाक एक कोनपर बैसल छलाह। हुनक हाथमे पुरान चश्मा छल, जे ओ बेर-बेर पोछैत छलाह। बेटाक मृत्यु हुनक लेल केवल एकटा भयानक समाचार नहि छल; नरेश ओहि घरक आयक मुख्य आधार छलाह। रेखाक पढ़ाइ, पिताक औषधि, सीमाक घरेलू खर्च, बेटाक विद्यालयक शुल्क, महीनाक किराना, घरक किराया—प्रत्येक देनदारी ओहि वेतनसँ पूरा होइत छल। वृद्ध पिता कहलनि, ‘छौंड़ा बिहान निकलैत काल कहलक जे साँझ जल्दी घुरब। हम ओकर बाट देखैत रहलहुँ।’ कोनो उत्तर नहि देलकनि।

रेखा भीतरसँ एकटा लिफाफा अनलीह। एहिमे बिजलीक बिल, औषधिक रसीद आ दूकानक उधारक पर्ची रखल छल। पिता तिरछा नजरिसँ तकलनि। ‘आब ई सभ तोरा सम्हारय पड़त?’ रेखा लिफाफा अपन आँचरक नीचाँ राखि कहलीह, ‘आब जे अछि, हम देखब।’ वाक्य छोट छल, मुदा ओकर भीतर एकटा एहन भार छल जकर अनुमान आँगनमे बैसल सभ लोक नहि कऽ सकैत छल।

ओहि दुपहरि रेखाक पड़ोसिन सरिता एकटा पुरान कापी लऽ अएलीह। ‘‘एहिमे तोहर भैयाक किछु उधारी लिखल अछि,’’ ओ कहलीह। रेखा चौंकि गेलीह। सरिता तुरन्त जोड़लथिन, ‘‘हमरा देबाक नहि, हम हुनकासँ लेने रही। हमर बेटीकेँ विद्यालयक शुल्क जमा करबाक छल, तँ ओ बिना किछु पूछने दू हजार टका देने छलाह। आब घुरेबाक समय आबि गेल अछि।’’ रेखा कापी खोलि देखलथिन। नरेश छोट अक्षरमे लिखने छलाह—‘सरिताक बेटी : पाठशाला शुल्क; अगिला मास देखब।’ रेखा कहलथिन, ‘‘अहाँक घरमे सेहो आवश्यकता होयत। एखन राखू।’’ सरिता दृढ़ स्वरमे कहलीह, ‘‘नहि, बेटी पढ़ि रहल अछि, से हुनकर सहायता छल। आब हम अपन देनदारी पूरा करब।’’ ई पहिल टका छल जे शोकक घरमे कोनो दानक रूपमे नहि, बल्कि नरेशक ईमानदार व्यवहारक परिणामस्वरूप घुरल।

एकटा दोसर पड़ोसी, गंगाराम, हरिनारायणकेँ औषधि देबाक समय पुछलनि, ‘‘नरेश बाबूक महीनाक वेतन कतेक छलनि?’’ रेखा उत्तर देबाक स्थिति मे नहि छलीह। गंगाराम कहलनि, ‘‘हम सोचैत छी जे मोहल्लाक लोक महीनाभरि राशनक व्यवस्था कऽ सकैत अछि।’’ पिता पहिने अस्वीकार कएलनि। ‘‘हम अपन बेटाक श्राद्धक नामपर चन्दा नहि चाहैत छी।’’ गंगाराम धीरे कहलनि, ‘‘श्राद्धक चन्दा नहि। जहिना अहाँ सभ आनक बिपत्तिमे संग देलहुँ, तहिना आब लोक संग देत।’’ रेखा बीचमे कहलीह, ‘‘आब जे खर्च होयत, ओकर हिसाब लिखल जाएत। लोकक स्नेह स्वीकार करब, मुदा ककरो सामने हाथ पसारब नहि।’’ अपन भैयाक व्यवस्थित जीवनसँ ओ एतबे सीखनिहार छलीह—दुखोमे हिसाबक गरिमा होइत अछि।

नैना गलीक मोड़पर पहुँचलिह तँ हुनका अपन कार्यालयक दू सहकर्मी कुसुम आ महेश भेटलाह। कुसुम कहलीह, ‘काल्हि रतन बाबू सभ कर्मचारीकेँ शोकसभामे आबय कहने छथि।’ नैना उत्तर देलथिन, ‘हम एतय अपन मनसँ अएलहुँ, कार्यालयक कहलासँ नहि।’ कुसुम पहिने चुप भेलीह, फेर धीमे कहलीह, ‘सँच, मुदा सभकेँ डर अछि। नौकरीक कागजपर एखन तक मालिकक हस्ताक्षर अछि।’ नैना हुनक चिन्ता बुझैत छलीह। काज

छोड़ि देब नैतिक निर्णय कहब सरल छल, मुदा बिनु वेतन घर चलाएब कतेक कठिन, से ओ अपन जीवनमे रोज अनुभव करैत छलीह।

आँगनमे प्रवेश करैत नैना रेखाक लग बैसलीह। रेखा हुनक हाथ पकड़ि पुछलथिन, 'दीदी, भैया कार्यालयमे ककरो सँ झगड़ा कएने छलाह?' नैना हड़बड़ीमे उत्तर नहि देलथिन। 'हम झगड़ा नहि देखने छी। किछु हिसाब आ मूल कागजक विषयमे ओ प्रश्न केने छलाह। ओ लिखित उत्तर चाहैत छलाह।' रेखा फेर पुछलथिन, 'ओ प्रश्न एतेक पैघ छल जे भैया आब घर घुरि नहि सकलाह?' नैना कहलीह, 'ई हम नहि जानैत छी। पुलिसकेँ जे देखलहुँ से कहि देने छी। जँ आओर किछु याद पड़त तँ सेहो कहब।'

रेखाक एकटा मामी फुसफुसाइत कहलीह, 'बेसी पुछताछ कएलासँ की भेटत? लास तँ आबि गेल।' रेखा हुनका दिस तकलथिन। 'मामी, भैया दुर्घटनामे मरलाह कि हुनका मारल गेलनि, से नहि बुझब? जँ मारल गेलनि तँ किएक?' मामी आँचर सँ मुँह नुकौलनि। आँगनमे किछु क्षणक लेल ककरो आवाज नहि उठल।

अभय किछु देरीसँ पहुँचलाह। हुनका हाथमे कैमरा नहि छल, केवल छोट डायरी छलनि। ओ फाटकपर ठाढ़ रहि पहिने रेखाक अनुमति माँगलनि। 'हम एतय समाचार लेल नहि, शोकमे सहभागी होयब लेल अएल छी। अहाँ उचित बुझी तँ बादमे बात करब।' रेखा कहलीह, 'अहाँ बैसू। एकटा बात लिखू—भैया ककरो धन नहि खयलनि। आजीवन हिसाब लिखैत रहलाह।' अभय डायरी बन्द करैत कहलनि, 'ई अहाँक विश्वास अछि। एकरा सत्यापित करबाक कागज जुटेबाक काज सेहो आवश्यक अछि। हम बिनु जाँच ककरो दोषी आ ककरो निर्दोष घोषित नहि करब।'

अभय रेखाक लग बैसैत पुछलनि, ''जाँचक विषयमे पुलिस जे जानकारी देत, हम ओही लिखब। अहाँक घरक निजी बात समाचारमे नहि जायत।'' रेखा कहलीह, ''समाचारमे हमर भैयाक नाम रहत, मुदा ओ नामक संग ओहि काजक चर्चा नहि होअय जे ओ नहि केने छलाह।'' अभय अपन डायरी बन्न करैत कहलनि, ''जखन कोनो आदमी मरि जाइत अछि, तखन ओकरा अपन बचाव करबाक अवसर नहि रहैत छैक। एहन समय पत्रकारकेँ दोब्बर

सावधान रहबाक चाही।'' रेखा कनेक थमकि पुछलथिन, ''अहाँ सभ साँच खोजि सकब?'' अभय कहलनि, ''हम प्रश्न पुछि सकैत छी, दस्तावेज जाँचि सकैत छी। अन्तिम निर्णय अनुसन्धान आ न्यायालय करत। मुदा प्रश्नकेँ दबय नहि देब।'' रेखा पहिल बेर एहन उत्तर सुनलथिन जाहिमे असम्भव भरोसाक प्रदर्शन नहि छल।

फाटकक बाहर दू युवक गप्प करैत छल। एक कहैत छल जे नरेश अपने किछु टका लेने छलाह, दोसर कहैत छल जे हुनका किछु पैघ लोक मारि देलकनि। सुननिहार सभ अपन-अपन अनुमान जोड़ैत छल। नैना बाहर निकलि कहलीह, ''जँ अहाँसभक लग किछु देखल-सुनल तथ्य अछि, पुलिसकेँ दिअ। एना मृतकक नामपर मनमानी कथा नहि बनाउ।'' पहिल युवक सकुचाएल, मुदा दोसर पुछलक, ''तँ अहाँ बताउ की भेल?'' नैना स्पष्ट कहलीह, ''हम नहि जानैत छी। जे नहि जानैत छी, ओकरा नजानल कहबमे कोनो लाज नहि।'' ओहि क्षण हुनका बुझायल जे शोकसभाक कठिनाइ केवल आँसूक नहि; बिना साक्ष्य लोकक मुँहसँ निकलैत निर्णय सेहो एकटा चोट होइत अछि।

ओहि समय संस्था दिससँ रतन सिंहक गाड़ी पहुँचल। फाटकपर रतनक संग हुनक सहयोगी मनोज सेहो छल। रतन साफ उज्जर कुर्ता पहिरने छलाह। आँगनमे आबि ओ हरिनारायणक पयर छूलनि आ कहलनि, 'हमरा अपन परिवारक क्षति जकाँ लगैत अछि। नरेश बहुत दिनसँ हमर संग काज करैत छलाह।' हरिनारायण चश्मा उतारि कहलनि, 'तखन हमरा ई बताउ जे ओ कोन चिन्तामे छलाह। घरमे किछु नहि कहैत छलाह।' रतनक आँखि कनेक झुकल। 'हिसाबक काजमे दबाव होइते अछि। मुदा हमरा नहि बुझल जे एहन दुर्घटना भऽ जायत।'

नैना 'दुर्घटना' शब्द सुनि चौंकि गेलीह। चिकित्सकीय आशङ्का आ पुलिसक जाँचक बादो रतन एक्के शब्द बारम्बार किएक कहि रहल छथि? ओ कोनो आरोप नहि लगौलथिन। केवल रतनक बात मोनमे रखलथिन। रेखा स्पष्ट कहलीह, 'पुलिस हत्या मानि जाँच कऽ रहल अछि। अहाँ दुर्घटना किएक कहैत छी?' रतन उत्तर देलनि, 'हम अंतिम प्रतिवेदन नहि देखने छी। सुनल बात कहि देलहुँ।' मनोज फाटक दिस तकैत रहल।

रतन आर्थिक सहायताक प्रस्ताव देलनि। 'कार्यालयक तरफसँ परिवारकेँ एकटा राशि देल जाएत।' रेखा पुछलथिन, 'बाबूक बाँकी वेतन आ अन्य देनदारी सेहो?' रतन कहला, 'हँ, हिसाब देखाओल जाएत।' रेखा कहलीह, 'तकर लिखित विवरण चाही। आ भैयाक लिखित प्रश्नक उत्तर सेहो।' एहि बेर रतन तुरन्त उत्तर नहि देलनि। कहला, 'शोकक समय ई सभ बात बादमे।' रेखा धीरे कहलीह, 'हमरा लेल ई समय बादमे नहि आएत। घरक खर्च आइए सँ शुरू अछि।'

रतनक दानक प्रस्ताव सुनि हरिनारायणक माथपर बल पड़लनि। ''सहायता करब तँ लिखित हिसाब दिअ। हमर बेटाक वेतन अलग, मुआवजा अलग, आ अहाँक दान अलग,'' ओ कहलनि। रतन पहिने कनेक हड़बड़ा गेलाह। ''बाबूजी, एहन समयमे कागजक की आवश्यकता?'' रेखा उत्तर देलथिन, ''एहि घरमे कागजक कारणेँ भैया प्रश्न उठौने छलाह। आब कागजक बिना हम किछु नहि लेब।'' रतन एक पलक लेल चुप भेलाह, फेर कहला, ''ठीक अछि। कार्यालय विवरण पठाओत।'' मनोज दरबज्जाक कात ठाढ़ ओहि बातकेँ सुनैत छल। ओकर मुँहपर क्षणभरि एकटा अकड़ देखायल, फेर ओ गाड़ी दिस बढ़ि गेल।

रतनक गेलाक बाद रेखाक मामी कहलीह, ''एतेक सहायता भेटि रहल अछि, स्वीकार कऽ लिअ। संसार एखन एही चलैत अछि।'' रेखा उत्तर देलथिन, ''हम सहायता सँ भागैत नहि छी। मुदा जँ वेतनक देनदारीकेँ दानक नाम देल जाए, तखन भैया जे काज कएने छलाह तकर मूल्य घटि जायत।'' सरिता मामीक हाथ थामि कहलीह, ''छोड़ू। बेटी अपन बात बुझैत अछि।'' रेखा मनमे ठानलथिन जे अगिला सप्ताह एकटा अलग बही बनाओतीह—भैयाक बकाया वेतन, पिताक चिकित्सा, आ घरक नियमित खर्चक। शोकक भीतर एहन सूक्ष्म व्यवस्था करब हुनका क्रूर लगैत छल, मुदा आवश्यकता ककरो दुखक प्रतीक्षा नहि करैत अछि।

रतन गेलाक बाद आँगनक शान्ति फेर धीरे-धीरे घुरल। कुसुम नैना लग आबि कहलीह, 'रेखा बहुत साहसी छथि।' नैना कहलीह, 'साहस कहू कि बाध्यता। जखन घरक मुख्य लोक नहि रहैत छथि तँ बाकी लोककेँ एक दिनमे बहुत किछु सीखय पड़ैत अछि।' कुसुम

अपन पर्स खोलि किछु टका निकाललथिन। रेखा हाथ जोड़ि कहलीह, ‘एखन नहि, दीदी। जे आवश्यक होयत कहब। हम केवल सत्य चाहैत छी।’

रेखा दिनक अन्तमे थाकल छलीह, मुदा अपन कागज सम्हारि रखलथिन।

दुपहरि निरीक्षक सुजाता दू सिपाहीक संग पहुँचलिह। ओ घरमे प्रवेश करैत समाचारक प्रतीक्षा करयवला लोककेँ बाहर रहबाक विनती कएलथिन। रेखा हुनका नरेशक लिखल कापी देखौलथिन। एहिमे घरक खरचा, किछु कार्यालयक नाम, आ बीच-बीचमे प्रश्न लिखल छल। सुजाता कापीक एक-एक पन्ना पलटि देखलथिन। किछु प्रश्न नरेशक कार्यालयी जिम्मेवारीसँ सम्बन्धित लगैत छल, मुदा कापी अपनेमे हत्याक प्रमाण नहि छल। ओ रेखासँ पुछलथिन, ‘भैया ई कापी सामान्यतः कतए रखैत छलाह?’’ ‘बिछानाक कात, तकियाक नीचाँ।’ ‘आओर कोनो बही, फोन वा कागज याद अछि?’ ‘फोन घर नहि पहुँचल। ओहि बातक चिन्ता अछि।’

सुजाता कापीक पन्नाक फोटो उचित प्रक्रियासँ सुरक्षित करौलथिन आ मूल कापीक सम्बन्धमे आवश्यक अभिलेख बनौलनि। रेखाकेँ बुझौलनि जे जाँचमे जतेक समय लागत, ततेक समय धैर्य राखब कठिन होयत। ‘हम अहाँकेँ खोट आशा नहि देब,’ ओ कहलीह। ‘मुदा जे प्रमाण भेटत, ओकर जाँच होयत। ककरो दबावमे निष्कर्ष नहि लिखल जाएत।’

निरीक्षक सुजाता रेखाकेँ कापीक पन्नाक क्रम पूछलथिन। ‘‘ई सभ भैया घरमे लिखैत छलाह कि कार्यालयमे?’’ रेखा कहलीह, ‘‘किछु राति भोजनक बाद लिखैत छलाह। ओ कहैत छलाह जे कार्यालयक मूल बही घर आनब उचित नहि। अपन प्रश्न अलग लिखल जायत।’’ सुजाता पन्ना देखलथिन। किछु ठाम केवल तारीख आ रकमे रहली, किछु ठाम प्रश्नवाचक चिह्न। ओ कहलीह, ‘‘एहिसँ जाँचक दिशा भेटि सकैत अछि। मुदा जे नाम लिखल अछि, ओकर विरुद्ध अपराध सिद्ध भेल मानब नहि।’’ रेखा माथ हिलौलथिन। भैयाक अक्षर देखैत हुनका फेर रोना आबि रहल छल, मुदा ओ एहि बेर अपन मन सम्हारलथिन।

सुजाता घरक वातावरण देखलथिन। फाटकक कात उत्सुक लोक जमा छल; किछु मोबाइल उठाकऽ आँगनक छवि लेबाक प्रयास करैत छल। ओ सिपाहीकेँ कहलथिन जे परिवारक अनुमति बिना भीतर फोटो नहि लेल जाए। रेखा हुनका धीरे कहलीह, ‘‘मायकेँ हम बहुत पहिने हेरा देने छी। आब पिता रहि गेल छथि। भैयाक देहक फोटो जे बाहर पसरि गेल, ओ पिताजी राति आँखि मूनिते देखैत छथि।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘ककरो मृत्यु लोकक तमाशा नहि होइत अछि। अहाँ जँ कोनो धमकी वा दबाव अनुभव करी तँ सीधा सूचना दिअ।’’ रेखा एहि छोट प्रतिज्ञाकेँ ध्यानसँ सुनलथिन।

गलीक बाहर किछु युवक रतनक गाड़ी दिस देखैत चर्चा करैत छलाह। एकटा कहलक, ‘एतेक पैघ लोक आबि गेलाह, आब मामला शान्त भऽ जायत।’ दोसर कहलक, ‘पैघ लोक आबि गेलासँ प्रश्न समाप्त होइत अछि की?’ अभय ओहि दुनू वाक्य सुनलनि, मुदा समाचारमे नहि लिखलनि। अनुमानक बातकेँ तथ्य बनौने बिना सेहो ओ बुझि रहल छलाह जे शहरमे विश्वासक संकट कतेक गहिर अछि।

साँझक समय नैना रेखाक संग रसोईमे गेलीह। चूल्हि थोड़बे दिनसँ नेबौने पड़ल छल। पड़ोसक महिला भोजन बनाकऽ देलथिन। रेखा थारीमे भात परोसैत कहलीह, ‘भैया कहैत छलाह जे हर हिसाबक आगाँ आदमीक चेहरा देखब चाही। केवल अङ्क नहि।’ नैना रुकि गेलीह। नरेश कार्यालयमे सेहो एही बातक व्यवहार करैत छलाह; कतेको रसीदक पाछाँ पूनम जकाँ युवतीक मेहनतक धन छल।

रसोईमे भातक संग दालि परसल गेल, मुदा रेखा दू कौरसँ बेसी नहि खा सकलीह। नैना पाछाँसँ बासन धोबामे सहयोग कएलथिन। रेखा कहलीह, ‘‘आइ काल्हि घरमे जे लोक अबैत छथि, अधिकांश बड़का बात कहैत छथि। कियो पूछैत नहि जे पिताजी राति औषधि खाएलनि कि नहि।’’ नैना एकटा गिलासमे पानि भरि कहलथिन, ‘‘हम काल्हि फेर आएब। दवा आनबाक आवश्यकता होए तँ कहब।’’ रेखा हुनक हाथ पकड़लथिन। ‘‘अहाँ भैयाक सँग काज करैत रही, से हमरा अपन लगैत छी। मुदा अहाँपर सेहो संकट पड़ि सकैत अछि।’’ नैना कहलीह, ‘‘जे जानैत छी, ओ नहि नुकाएब। ताहिसँ बेसी दावा हम नहि करैत छी।’’

घर घुरबाक बाटमे नैना एकटा फल-दोकानपर ठमकि गेलीह। दुकानदार नरेशकेँ चिन्हैत छल। ओ एकाएक कहलक, ‘‘ओ बाबू दू दिन पहिने एतयसँ संतरा लेने गेल छलाह, कहैत छलाह पिताजी लेल।’’ नैना छोट बातकेँ सेहो ध्यानसँ सुनलीह। नरेशक जीवन पुलिसक कागजमे जतेक तारीख आ समयमे समाएत, ओतबामे समाप्त नहि छल। ओ पिता लेल फल किननिहार, बहिन लेल विद्यालयक शुल्क जोखनिहार, रोज संध्यामे घर घुरबाक इच्छा रखनिहार साधारण लोक छलाह। नैनाकेँ भेल जे एहि साधारण जीवनक रक्षा न भेल, तकर उत्तर खोजब केवल पुलिसक जिम्मेवारी नहि, समाजक स्मृतिक जिम्मेवारी सेहो अछि।

घर घुरैत नैना देखलथिन जे सड़कपर निजी बसक चालक यात्री बजा रहल छल। नवगढ़क सामान्य जीवन अपन गति पकड़ने छल। दोकान खुजल छल, तरकारी बिकि रहल छल, कार्यालय बन्द भऽ रहल छल। मुदा नरेशक घरक भीतर समय एखनहुँ ओहि रातिपर अटकल छल, जाहि राति ओ घुरि नहि सकलाह। नैना मोनमे निश्चय कएलथिन जे शोकक भयावहता नहि, नरेशक प्रश्न याद रखतीह। कोनो आदमीक मृत्युकेँ केवल एकटा अफवाह वा समाचारक शीर्षक बनि नहि रहय देब।

अध्याय २६ : दोषक बोझ

दोसर दिन नई दिशा रोजगार केन्द्रक मुख्य फाटकपर लगाओल सूचना देखैत कर्मचारीसभ ठाढ़ छलाह। सूचनामे लिखल छल जे नरेश मण्डलक मृत्यु उपरान्त लेखा-विभागक अभिलेखक आन्तरिक जाँच होयत, आ कोनो कर्मचारी बिना अनुमति पुरान फाइल नहि खोलत। नैना सूचना दू बेर पढ़लथिन। जे कागज काल्हि धरि जाँच लेल आवश्यक छल, से आब कर्मचारीसँ दूर राखल जा रहल छल। ओ कुसुमसँ पुछलथिन, ‘ई सूचना ककर हस्ताक्षरसँ निकलल?’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘रतन बाबूक कार्यालयसँ। किरण मैडम कहलनि जे सभकेँ मानय पड़त।’

कार्यालयमे सन्नाटा छल। नरेशक मेजपर फूल रखल छल, मुदा ओकर दराज पर ताला लागल छल। महेश कहलक, ‘आब ने लेखा पूछू, ने पुरान रसीद देखू। ककरो से बचल नहि जाय।’ नैना कहलीह, ‘जँ पुलिसक आदेश अछि तँ ओकरा मानब। मुदा केवल मालिकक कहलासँ तथ्य नुकाएब सही नहि।’ महेश घबराइत कहलक, ‘दीदी, अहाँ एतेक खुलि कऽ नहि बाजू। घरमे हमर दूटा बच्चा अछि।’ नैना चुप भेलीह; महेशक भय निराधार नहि छल।

महेश फाटकक सूचना दोसर बेर पढ़ि पुछलक, ‘‘जँ पुरान पञ्जी बन्द कऽ देल गेल तखन ग्राहक अपन पैसा केना घुराओत?’’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘‘रसीदक प्रति तऽ कार्यालयमे रहबाक चाही।’’ नैना कहलीह, ‘‘जकर लग मूल रसीद अछि, ओकर एकटा नकल ओकरा लगे रहबाक चाही। ग्राहककेँ केवल आश्वासन नहि, लिखित उत्तर चाही।’’ किछु आवेदक एहि समय फाटक लग पहुँचि गेल छलाह। हुनका सभक नियुक्तिक तारीख बीति गेल छल; ककरो फोन बन्द, ककरो प्रशिक्षण रद्द। सूचना पढ़ि ओ सभ असमञ्जसमे पड़ि गेलाह। महेश हुनका सभकेँ प्रतीक्षा करबाक कहलक, मुदा नैना आवेदनक क्रमाङ्क लिखि रखबाक सलाह देलथिन।

एकटा युवक, धर्मेन्द्र, अपन माँक संग आएल छल। माँक नाकमे चाँदीक छोट नथ छलनि आ हाथमे कपड़ाक थैला। ओ कहलीह, ‘‘हम बकरी बेचि बेटाक नियुक्तिक टका

जमा कएने रही। आब कहैत छथि हिसाब जाँच चलि रहल अछि। हमरा बकरी तुरन्त घुरत?'' कियो उत्तर नहि दऽ सकल। किरण दरबज्जा लग आबि कहलथिन, ''व्यवस्था होयत, भीड़ नहि करू।'' माय कहलीह, ''हम भीड़ करय नहि अएलहुँ। हमर बेटाक काजक दिन कहिया सँ शुरू होयत, बस ई बताउ।'' नैना समझलीह जे कार्यालयक प्रत्येक रसीदक पाछाँ कोनो परिवारक वास्तविक त्याग छिपल अछि।

दस बजे रतन सभ कर्मचारिक छोट बैठक बजौलनि। किरण हुनक दाहिना दिस बैसल छलीह। रतन कहला, 'हमर संस्था कठिन समयसँ गुजरि रहल अछि। नरेशक मृत्यु दुखद अछि। मुदा किछु लोक अवसरक लाभ उठाकऽ संस्थाक नाम खराब कऽ रहल अछि।' ओ कर्मचारीसभक आँखि परखलनि। 'लेखा विभागमे किछु रकमक मेल नहि बैठि रहल अछि। जाँचमे जे भेटत, से सामने आएत।'

कुसुम पुछलथिन, 'नरेश बाबू स्वयं जाँच चाहैत छलाह ने?' रतनक स्वर कठोर भऽ गेल। 'जे मरि गेलाह हुनका विषयमे हम अपमानजनक बात नहि कहब। मुदा अनियमितताक प्रश्न छल। पहिने हिसाब मिलत, तकर बाद निर्णय।' एतबा कहि ओ बैठक समाप्त करबाक सङ्केत देलनि। नैना उठलीह नहि। 'हिसाबक ई अन्तरक लिखित विवरण कर्मचारीसभकेँ भेटत? नरेशजीक परिवारकेँ जे राशि देबाक कहल गेल, तकर विवरण कहिया?' किरण बीचमे कहलीह, 'नैना, ई प्रश्नक उत्तर उचित माध्यमसँ भेटत। एखन सभ अपन काजपर जाउ।'

बैठक समाप्त भेलाक बाद किरण नैनाकेँ अलग बजौलथिन। 'अहाँकेँ कतेक बेर कहल अछि जे सभक आगाँ प्रश्न नहि करू।' नैना कहलीह, 'हम नरेशजीपर आरोप सुनलहुँ। ओ आब अपन बात कहि नहि सकैत छथि।' किरण थाकल स्वरमे कहलीह, 'कखनो-कखनो कार्यालय बचेनाइ सेहो जिम्मेवारी होइत अछि।' नैना उत्तर देलथिन, 'कार्यालय बचय, मुदा निर्दोषक नामपर दोष चढ़ाकऽ नहि।' किरण किछु क्षण मौन रहलीह। हुनका स्वयं बुझाइत छल जे रतनक कथनक अर्थ केवल लेखा-जाँच नहि छल; दोषक दिशा तय कएल जा रहल छल। मुदा ओ अपन पद, वेतन आ घरक गुप्त सम्बन्धक जालमे फँसल छलीह।

किरणक कोठरीसँ निकलिते नैना देखलथिन जे रसीद देबाक खिड़कीक आगाँ कुसुम अकेली ठाढ़ छलीह। दू नव आवेदक शुल्क जमा करय चाहैत छलाह। कुसुम हिचकिचाइत कहलीह, ‘‘प्रबन्धन कहलक जे नब आवेदन लेब बन्द नहि भेल अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘नियुक्तिक सत्यापनक प्रश्न एखन अनुत्तरित अछि। जँ सेवा आ शर्त साफ नहि, तँ धन ग्रहण करब उचित नहि।’’ कुसुमक स्वर काँपि उठल, ‘‘हम मालिक नहि छी, दीदी। नौकरी जाएत तँ घरमे किराया देब मुश्किल होयत।’’ नैना ओकर कठिनाइ बुझैत कहलथिन, ‘‘तँ लिखित आदेश माँगू। आदेश कागजपर भेटत तँ स्पष्ट रहत जे निर्णय ककर अछि।’’

साँझ हुनका सभक छोट कर्मचारी-बैठक भेल। महेश चाहैत छल जे सभ मिलि वेतन आ काजक स्पष्ट शर्त मँगथि। कुसुम डेराइत छलीह, मुदा जखन एकटा कर्मचारी बतौलक जे ओकर पिछला महीनाक अतिरिक्त समयक पारिश्रमिक एखन बाँकी अछि, तखन दोसर सभ सेहो बोलल। नैना कहलीह, ‘‘हमर उद्देश्य संस्थाकेँ बन्द कराबब नहि। मुदा जे काम होइत अछि, ओकर हिसाब सत्य होअय।’’ कर्मचारीसभ तय कएलनि जे व्यक्तिगत विरोधक बदला सामूहिक लिखित निवेदन दैत छथि। ओहि निवेदनमे ककरो अपराधी नहि कहल गेल; केवल वेतन, आवेदन-शुल्क आ नियुक्ति-स्थिति स्पष्ट करबाक माँग छल।

ओहि दोपहरि शहरक एकटा समाचारपत्रमे रतनक संक्षिप्त वक्तव्य छपल—संस्थाक आर्थिक अनियमितताक आन्तरिक जाँच जारी अछि। अभय ओहि समाचारक शब्द पढ़ि अपन सम्पादक मञ्जरीसँ कहलनि, ‘नरेशक मृत्यु आ लेखाक अन्तर दुनू अलग विषय अछि। जँ संस्था बिना प्रमाण नरेशक दोषक सङ्केत देत तँ ओकर परिवारपर भारी प्रभाव पड़त।’ मञ्जरी कहलीह, ‘तथ्यसँ उत्तर दिअ। रतनक वक्तव्य जथावत छापू, मुदा नरेशक परिवारक प्रतिक्रिया लेल अनुमति माँगू।’

रेखाकेँ समाचारक प्रति पड़ोसी नेने पहुँचल। ओ पहिल पाँति पढ़लथिन, फेर कागज मोड़ि देलथिन। ‘भैया जकर हिसाब मिलाबय चाहैत छलाह, आब ओहि हिसाबक दोष भैयापर?’ हुनक पिता पुछलनि, ‘की लिखल अछि?’ रेखा उत्तर नहि देलथिन। हरिनारायण अखबार लेलनि; अक्षर धुँधल देखाइत छल। ‘हमर बेटा वेतनक टकासँ बाहरो एक पाई घर

नहि अनैत छल,' ओ कहलनि। 'जँ ओकर गलती अछि तँ प्रमाण देखाउ। नहि तँ ई अपमान किएक?'

अभय फोनपर रेखासँ बात कएलनि। रेखा साफ कहलीह, 'हम सभक आगाँ बयान देब नहि चाहैत छी। हमर दुःख प्रदर्शनक वस्तु नहि अछि। मुदा लिखू जे परिवार निष्पक्ष जाँच चाहैत अछि।' अभय हुनक वाक्य ठीक ओही रूपमे डायरीमे उतारलनि। कियो ककरो स्मृतिकेँ अपन समाचारक अनुकूल बदलि देत, ई हुनका स्वीकार नहि छल।

रेखा समाचार पढ़बाक बाद अपन भैयाक पुरान सहकर्मी लक्ष्मणकेँ बजौलथिन। लक्ष्मण सेवानिवृत्त भेल छलाह, मुदा नरेशक सँग बरसों काज कएने छलाह। ओ कहलनि, ''हिसाबमे त्रुटि भेटय तँ जाँच होएब उचित। मुदा जे कर्मचारी मृत अछि, ओकरा दोषी कहि मुद्दा बन्द कऽ देब उचित नहि।'' रेखा पुछलथिन, ''हम की करब?'' लक्ष्मण कहलनि, ''दाखिल पत्रक प्रति राखू, देनदारी लिखू, जाँचक अधिकारीकेँ सभ कागज दिअ। जे कागज नहि देखल, ओकरा विषयमे बयान नहि दिअ।'' रेखा लिखि लेलथिन। हुनका ई सलाह पसिन पड़ल जेहिमे क्रोधक बदला काम करबाक बाट छल।

हरिनारायण पूछलनि, ''बेटाक प्रतिष्ठा बचत ने?'' लक्ष्मण धीरे कहलनि, ''प्रतिष्ठा बचबाक आरम्भ साँच जाँचलासँ होइत अछि। नामक बचाव लेल झूठक आवश्यकता नहि।'' वृद्ध पिता किछु बेर चुप रहलाह। फेर कहलनि, ''हम कागज नहि पढ़ि सकैत छी, मुदा बेटा केँ जानैत छलहुँ। ओ आठ आना तकक गलती राति उठि देखैत छल।'' रेखा पिताक हाथपर अपन हाथ राखलथिन। ओ नरेशक पक्षमे प्रश्न करबाक लेल तैयार छलीह, मुदा पुलिसक निर्णय अपन मनसँ लिखि देबाक लेल नहि।

साँझ घर घुरल चन्दन असामान्य रूपसँ चुप छल। सरस्वती देवी पुछलथिन, 'तोरा की भेल? आजुक भात सेहो ठीकसँ नहि खेलह?' चन्दन कहलक, 'काज कम छल।' नैना ओकर हाथपर खरोच देखलथिन। 'ई चोट कतयसँ?' 'गाड़ीक फाटकमे लागल।' नैना पुछलथिन, 'ओहि मनोज साहक लग एखनहुँ जाइत छह?' चन्दन नजरि फेरौलक। 'कतेको बेर जाय पड़ैत अछि। ऋण आबो शेष अछि।'

नैना बुझैत छलीह जे चन्दन केवल नोकरीक खोजमे नहि, पैसाक दबावमे सेहो परेशान अछि। ओकर प्रतियोगिता परीक्षा रद्द भेलाक बाद घरक खर्चक जतेक हिसाब बिगड़ल, तकर भार ओ अपन उमेरसँ पैघ मानि रहल छल। नैना कहलीह, 'ऋणक हिसाब हम दुनू बैसि देखब। मुदा कोनो एहन काज नहि करिह जे बादमे जीवनभरि पछताय पड़य।' चन्दन उत्तर देलक, 'सभ काज बाहरसँ जतेक साफ देखाइत अछि, भीतरसँ ओतेक नहि।' नैना चकित भेलीह। 'एहि बातक अर्थ?' 'किछु नहि।' ओ उठि गेल।

चन्दन अपन पुरान परीक्षा-प्रवेशपत्र निकालि देखलक। एतबे कागज लेल ओ तीन बेर दूर शहर गेल छल—फार्म भरबाक, प्रवेशपत्रक त्रुटि सुधरेबाक, आ परीक्षा देबाक। परीक्षा रद्द भेलाक बाद कोचिंगक शुल्क घुरल नहि; किरायाक घरक मालिक शेष किराया माँगने छल; मित्र विजय फोन उठेनाइ घटा देने छल। विजयक घरमे सेहो संकट छल, मुदा चन्दन अपन अकेलापनकेँ लज्जा मानि लेलने छल। एक दिन विजय कहलकेँ, ''फेर परीक्षा देब, नहि तँ किछु दोसर काज करब।'' चन्दन उत्तर देने छल, ''पहिने पुरान ऋणक पाछाँ सँ छुट्टी तँ भेटय।'' आब ओकरा ओहि वाक्यक कटुता अनुभव भऽ रहल छल।

परीक्षार्थीक आन्दोलनमे सविता एकटा छोट भाषण देने छलीह—''प्रश्नपत्र लीक भेलाक जाँच होउ, दोषीकेँ दण्ड भेटउ, मुदा सभ अभ्यर्थीकेँ चोर कहनाइ बन्द होउ।'' चन्दन ओ सभा मे गेल छल, मुदा बीचमे घुरि आएल। मंचक बात ठीक लगैत छल, मुदा ओकर जेबीमे बसक भाड़ा धरि नहि छल। एही विवशतामे मनोजक प्रस्ताव ओकरा अपन समयक एकमात्र अवसर लागल। आब ओ बुझि रहल छल जे अवसर आ फन्दा कखनो एक्के रंगक कागजमे लपेटल रहैत अछि।

राति चन्दनकेँ मनोजक फोन आएल। चन्दन बरामदामे निकलि गेल। आवाज नीचाँ छल, मुदा नैना 'पुरान गाड़ी', 'चालान' आ 'नहर' शब्द सुनि सकलीह। फोन बन्द भेलाक बाद ओ पुछलथिन, 'नहरक बात किएक होइत छल?' चन्दन कहलक, 'ओहि बाटसँ माल जाइत अछि। पुल बन्द छल कि नहि, से पूछैत छल।' नैना फेर पुछलथिन, 'कखन गेल छलह ओहि बाट?' चन्दन उत्तर टारि देलक। 'दीदी, हमरा थाकल अछि।'

रातिक फोनक बाद चन्दन सड़कपर निकलि गेल। दू गली पार कएलाक बाद ओकरा भेल जे कियो पाछाँ अबि रहल अछि। ओ घुरि देखलक—एकटा साइकिलपर दूध बेचयवला युवक छल, जे अपन खाली डिब्बा बजबैत घर जा रहल छल। चन्दन अपन भयपर स्वयं लाज अनुभव कएलक। मुदा भयक कारण कल्पना मात्र नहि छल। मनोज पहिने दू बेर कहने छल जे लिखित चालानक विषयमे प्रश्न करब आवश्यक नहि। चन्दनक मोबाइलमे ओहि ढुलाईक किछु सन्देश छल; ओ हुनका मेटाय देबाक बात सोचलक, फेर फोन जेबीमे राखि देलक। जतेक एखन मोन पड़ैत अछि, ओतबे याद रखब कठिन छल; सन्देश मेटाओल गेल तँ सत्य जाँचब आर कठिन होयत।

ओम्हर सविता अपन परीक्षार्थी साथीसँ भेटि एकटा ज्ञापन तैयार करैत छलीह। ओ चाहैत छलीह जे प्रश्नपत्र लीकक जाँचक निष्कर्ष सार्वजनिक होअय, परीक्षा फेर कहिया होयत तकर स्पष्ट समयसारिणी निकलय, आ अभ्यर्थीकेँ बारम्बार यात्राक खर्च नहि उठाबय पड़य। हुनक साथी देवेन्द्र कहलक, ‘‘जकर लग टका अछि ओ दोसर शहर जा तैयारी करि लेत; हमसभ कोचिंगक पुरान शुल्को नहि घुरा सकैत छी।’’ सविता उत्तर देलथिन, ‘‘हमरा सभक माँग कोनो विशेष छूट नहि, निष्पक्ष अवसर अछि।’’ रतनक संस्था एहन अवसरक नामपर टका लैत छल, से बात आब धीरे-धीरे सभक चर्चामे आबि रहल छल।

अभय मञ्जरीक संग अपन समाचारक अगिला कड़ीपर चर्चा करैत छलाह। मञ्जरी कहलथिन, ‘‘जतय आवेदन-शुल्क आ ठेकाक भुगतानक सम्बन्ध देखाइत अछि, ततय सीधा भ्रष्टाचारक निष्कर्ष नहि लिखू। पहिने अनुबन्धक तिथि आ वास्तविक भुगतान जाँचू।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘अखबारमे छपल आरोपसँ ककरो आजीविका आ प्रतिष्ठा प्रभावित होइत अछि। हम रेखाक शिकायतकेँ स्थान देब, मुदा कम्पनीक लिखित उत्तर सेहो मँगायब।’’ ओ निर्णय कएलनि जे अति शीघ्र छपबाक लोभमे नरेशक मृत्युकेँ प्रत्येक अनियमितताक प्रमाण नहि बताओत। पाठककेँ स्पष्ट प्रश्न देब, बनाओल उत्तर नहि।

रतन कार्यालय बन्द कएलाक बाद मनोजकेँ एकटा छोट बैठकमे बजौलनि। ‘‘गाड़ीक चालान मिलौने छी?’’ ओ पुछलनि। मनोज कहलक, ‘‘पुरान कुछ कागज एखन गोदाममे अछि।’’ रतन कहलनि, ‘‘जे अधिकारी मँगथि, विधिसम्मत कागज उपलब्ध होअय। मुदा

कोनो कर्मचारी अपन मनसँ बयान नहि देत।'' मनोज हँसि कहलक, ''लोक डरले चुप रहत।'' रतन ओहि उत्तरपर अप्रसन्न भेलाह। ''डरसँ जँ कियो उल्टा पुलिसक लग चलि जाए तँ?'' मनोज चुप भऽ गेल। दुनू अपन-अपन डरक कारण नुकाबैत छलाह, मुदा नरेशक रिक्त कुर्सी ओहि कार्यालयमे एखनहुँ छल।

दोसर दिस सुजाता रोजगार संस्थाक लेखा-सम्बन्धी अभिलेखक स्थिति जाँचि रहलीह। किछु पञ्जी, हस्ताक्षर आ जमा राशिक समयमे अन्तर भेटल छल। ओ अपन सहयोगीकेँ कहलीह, 'रतनक सार्वजनिक आरोपकेँ तथ्य मानिकऽ नहि चलब। नरेशक मृत्यु होयबासँ हुनक हिसाब सही वा गलत अपने नहि सिद्ध होइत अछि।' सहयोगी पुछलक, 'चन्दन मिश्रक नाम किछु गाड़ीक अभिलेखमे अछि।' सुजाता कहलीह, 'तँ पहिने ओकर काजक सीमा बुझू। चालकक नाम देखलासँ हत्यामे संलिप्तता प्रमाणित नहि होइत अछि।'

रतन अपन घरमे विभाक सोझाँ समाचारपत्र मोड़ि राखलनि। विभा पुछलथिन, 'नरेशक परिवारपर आरोप लगब उचित छल?' रतन कहला, 'हम ककरो नाम नहि लेने छी।' विभा कहलीह, 'नाम नहि लेने रहू, मुदा शहरमे सभ बुझि रहल अछि जे आरोप ककरापर अछि।' रतन आवाज ऊँच करैत कहला, 'कारोबारक बात अहाँ नहि बुझब।' विभा शान्त स्वरमे उत्तर देलथिन, 'हम कारोबार नहि बुझी, मुदा मरल आदमीक नाम खराब कएल जाए, से बुझैत छी।' रतन उठि गेलाह। विभा पहिल बेर नहि, अनेक बेर अनुभव कएने छलीह जे घरमे प्रश्न पूछलाक बाद दरबज्जा बन्द भऽ जाइत छल।

विभा पतिक आगाँ भोजन परसैत पुछलथिन, ''नरेशक परिवारकेँ देबाक रकमे लिखित विवरण किएक नहि दऽ दैत छी?'' रतन चम्मच राखि कहलनि, ''आब घरोमे कार्यालयक जाँच करब?'' विभा शान्त स्वरमे कहलीह, ''हम घरक बात पुछैत छी। जे घरक नामसँ दान करैत छी, ओकर हिसाब घरमे जानबाक अधिकार हमरा अछि।'' रतन भृकुटि चढ़ौलनि। ''सभ ठाम हमर नाम बदनाम भऽ रहल अछि। अहाँ सेहो दोसरा लोकक बात सुनैत छी?'' विभा उत्तर देलथिन, ''हम जे देखैत छी, तकर प्रश्न पुछैत छी।'' एहि बातपर घरक नोकर भोजनक थारी राखि निःशब्द बाहर चलि गेल।

रतन साँझ फेर कोठरीमे घुरलाह तँ विभा मेजपर एकटा जमा-खर्चक पुरान विवरण देखैत छलीह। हुनका अपन हस्ताक्षरक नकल सदृश किछु रेखा भेटल छल; ओ पूर्ण निश्चित नहि छलीह। ओ पन्ना अलग राखलथिन। ‘‘भोरमे बैंकसँ प्रमाणित विवरण मँगायब,’’ ओ अपनासँ कहलीह। रतनक फोनपर किरणक नाम उभरल। विभा देखलथिन, मुदा किछु नहि पुछलथिन। शककेँ सत्य घोषित करब ओ नहि चाहैत छलीह; मुदा आँखि मूनब सेहो आब सम्भव नहि छल।

ओहि राति नरेशक घरमे हरिनारायण पुरान लेखाबहीक आगाँ बैसल छलाह। रेखा हुनक लग चाय रखलथिन। पिता धीरे कहलनि, ‘जँ तोरा डर लगैत अछि तँ हम मामाक गाम चलि जायत छी।’ रेखा माथ हिलौलथिन। ‘गाम जा सकैत छी, मुदा भैयाक नामपर लागल दोष एतहि रहि जायत। हम जाँच पूरा होमय देब।’

एहि दिन कार्यालयक सन्दिग्ध लेखाक सम्बन्धमे सुजाता दूटा लिखित अनुरोध भेजलथिन। एकटामे पुरान स्वीकृतिपत्रक नकल, दोसरमे गाड़ीक चालानक क्रम मँगल गेल। ओ कहलीह जे कर्मचारिक बयानक संग कागजक मिलान जरूरी अछि। नरेशक मृत्युक कारणक जाँच अलग चलि रहल अछि; लेखाक प्रश्नक उत्तर भेटलाक बादो मृत्यु सम्बन्धी निष्कर्ष स्वतः नहि निकलत। एहि अन्तरकेँ स्पष्ट रखब ओ आवश्यक बुझैत छलीह। एहि प्रश्नक उत्तर भेटलासँ जाँचमे तारीख आ रकमक मिलान होयत, से सुजाता स्पष्ट कएलथिन।

नैना अपन कोठरीमे बैसल कार्यालयक सूचना फेर पढ़ि रहल छलीह। शब्द संयत छल, मुदा ओहिमे एकटा एहन आरोपक बीज छल जे जँ बिना प्रतिवाद पसारल जाए तँ नरेशक परिवारकेँ दोसर बेर चोट पहुँचा सकैत छल। ओ तय कएलथिन जे जखन अधिकारी फेर पूछताछ करथि, ओ नरेशक लिखित प्रश्न, रतनक सात दिनक आश्वासन आ बैठकमे कहल गेल बात अलग-अलग स्पष्ट बतौतीह। जे नहि देखने छथि से नहि कहतीह। दोषक बोझ ककरो माथपर अनुमानसँ राखब, ई हुनका स्वीकार नहि छल।

अध्याय २७ : चन्दनक मौन

भोरुक पहर सरस्वती देवी चन्दनक बिछान लग ठाढ़ छलीह। ओ राति भरि बेर-बेर उठैत रहल छल। तकियाक कात फोन राखल छल, मुदा प्रातः होइते ओ फोन बन्द कऽ देलक। सरस्वती पूछलथिन, ‘बाबू, ज्वर तँ नहि अछि?’ चन्दन कहलक, ‘नहि माय। नीन्न नहि भेल।’ माय ओकर कपार छूलथिन। देह गरम नहि छल, मुदा आँखिमे भय छल।

घरमे काल्हिक रोटीक संग आलूक तरकारी बचल छल। नैना रसोईमे चाय बना रहल छलीह। चन्दन भीतर आबि कुरसीपर बैसल। नैना हुनका सोझाँ थारी रखलथिन। ‘आइ काजपर जएबह?’ ‘नहि जानि।’ ‘मनोज फोन केने छल?’ चन्दन चौंकि गेल। ‘अहाँ किएक पूछैत छी?’ नैना चाय राखैत कहलीह, ‘राति ओहि फोनक बाद तँ सँ बेचैन छह। जँ किछु कठिनाइ अछि तँ कह।’

चन्दनक माय ओकरा किछु पूछबाक स्थानपर पुरान झोला सोझाँ राखलथिन। ‘‘पढ़ाइ लेल जे किताब किनने छलह, से बिछानक नीचाँ धूलि खा रहल अछि। किछु पुस्तक बेचब नहि। परीक्षा फेर होएत तँ काम आएत।’’ चन्दन झोला खोललक। मैथिलीक सामान्य ज्ञानक एकटा पुस्तकमे ओ अभ्यासक उत्तर नीक अक्षरमे लिखने छल। ओकरा अपन पुरान दिन याद पड़ल—भोरमे उठब, छतपर बैसि पढ़ब, नैनासँ कठिन प्रश्न पुछब। आब पहर-दू-पहर बिना मनोजक फोनक बीति नहि सकैत छल। माय कहलीह, ‘‘पढ़ाइ छोड़लह तँ छोड़, मुदा अपन मनक दरबज्जा बन्द नहि कर।’’ चन्दन माय दिस तकि चुप रहल।

ओहि दिन मुहल्लाक मित्र विजयकेँ भेटबाक चाहलक, मुदा सड़कक मोड़पर पहुँचि फेर घुरि आएल। विजय हालमे एगो छोट औषधि-दोकानमे काम पकड़ने छल। चन्दनक भीतर अनावश्यक ईर्ष्या उठल—ओ कम पगारपर सेहो व्यवस्थित काज करैत अछि, आ हम बेसी टकाक लोभमे की कऽ बैसलहुँ। फेर ओ समझलक जे विजयक काजक स्थिरता ओकर

गलतीक कारण नहि। साँच समस्या अपन निर्णय आ मनोजक दबाव अछि। ओ पुनः दरबज्जा तक गेल, मुदा एहि बेर बाहर निकलल नहि।

चन्दन थारी दिस तकैत रहल। ओकरा याद आबि रहल छल जे कोना परीक्षाक लेल दू बरख तैयारी कएने छल। पड़ोसक लोक कहैत छल, 'सरकारी नोकरी लागलाक बाद घर सुधरि जायत।' परीक्षा हॉलमे प्रश्नपत्र खोलेबाक दिन ओ अपन परिश्रमक भरोसा नेने बैसल छल। किछु सप्ताहक बाद प्रश्नपत्र लीक होयबाक चर्चा उठल, फेर परीक्षा रद्द भेल। छोट-छोट खर्च जोड़ल जाए तँ कोचिंग, बसक भाड़ा, किताब, आवेदन—सभमे टका गेल छल। ओ टका घुरि नहि सकैत छल। ओकरा लग बचल छल केवल घरक चिन्ता आ अपन असफलताक कटु अनुभव।

ऋण लेलाक आरम्भमे ओ सोचने छल जे दू-चारि मास ढुलाई करब, तकर बाद दोसर परीक्षा देब। मनोजक लोक कहने छल जे निर्माण-सामग्री आ गोदामक सामान लऽ जाएबाक काज अछि। पहिल यात्रा सहज छल। दोसर यात्रामे बोराक ऊपर लिखल नाम आ चालानक नाम अलग छल। चन्दन पूछने छल तँ चालक कहने छल, 'हमरा सभकेँ जतेक कहल जाए, ओतेक करबाक।' तखन चन्दन चुप भऽ गेल छल। मुदा मौनसँ शङ्का मेटाइत नहि छल; ओ भीतर जमैत गेल छल।

पहिल रातिक ढुलाई चन्दनकेँ सामान्य लागल छल। ट्रकमे ईंट आ लोहारक पाइप छल। मनोज भाड़ा तुरन्त दऽ देने छल। दोसर बेर सीलबन्द पेटी छल, जे चन्दन खोलल नहि। तेसर राति बोतलक आवाज सुनि ओ प्रश्न कएलक। मनोज कहलकेँ, ''तोरा ड्राइवरीक टका भेटैत अछि, निर्णयक नहि।'' ओही रातिसँ चन्दनक मनमे सन्देह बसि गेल छल। मुदा ऋणक सूद सप्ताहक अन्तमे देबाक छल। प्रत्येक बेर ओ सोचैत रहल—ई अन्तिम खेप अछि। जे काज पहिल दिन एकटा छोट सहारा लागल छल, से धीरे-धीरे ओकरा अपन निर्णयक स्वाधीनतासँ दूर कऽ देलक।

चन्दन अपन हाथक खरोचपर औषधि लगबैत रुकल। घाव लगभग सुखि गेल छल, मुदा ओ राति मनोजक नजरि एखनहुँ ओकरा याद छल। नहरक पुल पार करैत मनोज एकटा

फोन उठौने छल; ओकरा 'पहुँचलहुँ' आ 'रुकू' शब्द सुनाइ देने छल। चन्दन निश्चय नहि कऽ सकैत छल जे ई बात ओ दिनक घटना संग कोना जुड़ैत अछि। ओकरा अपन स्मृतिक खाली ठामसभपर डरक छवि भरय लगल। ओ अपनेकेँ रोकलक—जे शब्द सुनल, ओही कहब; जे अनुमान अछि, तकरा अनुमान कहब।

नैना ओहि दिन कार्यालय नहि गेलीह। नरेशक मृत्युक बाद कर्मचारीसभकेँ आधा दिनक छुट्टी देल गेल छल। ओ घरक खर्चक बही निकालि बैसलीह। 'तोहर ऋण कतेक शेष अछि?' चन्दन पहिने कहल, 'किछु नहि।' नैना बहीक खाली पन्ना खोलि कहलीह, 'हम गलती गिनाबय नहि बैसल छी। हिसाब बुझब, तखने सहायता कऽ सकब।' चन्दन धीरे-धीरे तीनटा नाम बतौलक—कोचिंगक शुल्क लेल देनदार, मोटरसाइकिलक किश्त आ मनोजसँ लेल अग्रिम।

'मनोजसँ अग्रिम किएक?' नैना पुछलथिन। 'गाड़ी चलायबाक काजक बदला।' 'कतेक?' चन्दन रकम बतौलक। नैना एकाएक बुझलीह जे ओ रकम केवल साधारण दैनिक मजदूरीक अग्रिम नहि छल। 'एतेक टका एक्के बेर किएक देलक?' चन्दन कहलक, 'पहिले किछु रातिक काज करबाक वचन देलहुँ।' 'कोन काज?' चन्दनक हाथ थरथरा उठल।

ओहिसँ पहिने सरस्वती भीतर अएलीह। 'दुनू की हिसाब करैत छी?' नैना बही बन्द कएलथिन। 'घरक खर्च। माय, अहाँ कनेक विश्राम करू।' माय दुनूक मुँह देखलथिन। 'किछु नुकबैत छी ने?' चन्दन तुरन्त कहलक, 'नहि माय।' मुदा स्वरमे एतेक घबराहट छल जे सरस्वती बहुते देरी धरि दुआरि लग ठाढ़ रहलीह। अन्तमे कहलनि, 'घरमे टकाक कमी अछि, से जानैत छी। मुदा टकासँ पहिने मनुष्य चाही।' ओ चलि गेलीह।

मायक बात चन्दनक भीतर कतहु अटकि गेल। ओ उठि दरबज्जा बन्द कएलक। 'दीदी, हम जे कहब, अहाँ क्रोध नहि करब?' नैना उत्तर देलथिन, 'साँच सुनि क्रोध हो सकैत अछि, मुदा पहिने सुनब। जँ अपराध भेल अछि तँ तकरा नुकाएब नहि।' चन्दन बहुत देरी धरि मौन रहल। फेर कहलक, 'हम ओहि राति मनोजकेँ गाड़ीमे लऽ गेल रही।'

नैनाक हाथ बहीपर स्थिर भऽ गेल। ‘कोन राति?’ ‘जाहि राति नरेश बाबू घर नहि घुरलाह।’ कोठरीमे बाहरक रिक्शाक घण्टी सुनाइ देलक। नैना एक-एक शब्द स्पष्ट बुझय चाहलीह। ‘कहाँसँ लऽ गेल छलह? कतए छोड़लह?’ चन्दन कहलक, ‘गोदामक पाछाँक सड़कसँ। मनोज दू आदमीक संग छल। एकटा पुरान गाड़ी छल। हमरा नहरक पुलसँ आगाँ एकटा मोड़ धरि जाएब कहल गेल।’

‘नरेश बाबू ओहि गाड़ीमे छलाह?’ नैना पुछलथिन। चन्दन तुरन्त उत्तर देलक, ‘हम नहि देखने छी। हम गाड़ीमे मनोज आ दू आदमीकेँ देखलहुँ। पाछाँ सामान रखने छल। एकटा बोरा नीचाँ लुढ़कल तँ मनोज हमरा हाथ नहि लगबय देलक।’ ओ अपन हाथक खरोच देखौलक। ‘फाटकक लौहामे नहि लागल छल। सामान सम्हारैत चोट लागल।’ नैना गहिर साँस लेलथिन। ‘तखन अहाँ हमरा झूठ कहलह।’ चन्दन नजरि झुका लेलक। ‘डर लगैत छल।’

नैना पुछलथिन, ‘कतेक बजे?’ चन्दन रातिक समय लगभग बतौलक। ‘घड़ी देखलह?’ ‘गाड़ीमे देखल रही। ठीक मिनटक भरोसा नहि।’ ‘गाड़ी ककर छल?’ ‘मनोजक लोकक। हम तकर नम्बर आधा याद अछि।’ नैना कागज अनलीह। ‘जतेक याद अछि, लिख। जे याद नहि अछि, ओकर आगाँ खाली छोड़।’ चन्दन पुछलक, ‘अहाँ पुलिसकेँ देब?’ नैना कहलीह, ‘एहि जानकारीक महत्त्व पुलिस बुझत। हमरा सभक काज सत्य नुकाएब नहि।’

नैना अपूर्ण नम्बर लिखि पुछलथिन, ‘‘गाड़ी रोकलाक बाद तूँ कोन दिस गेलह?’’ चन्दन कहलक, ‘‘हम अपना घर दिस घुरि आएलहुँ। ओ लोक एकटा दोसर गाड़ीमे आगाँ बढ़ल कि नहि, नहि देखलहुँ।’’ ‘‘कोनो पथप्रकाश छल?’’ ‘‘पुल लग एकटा बत्ती बन्न छल। दोसरक उजासमे कनेक देखलहुँ।’’ नैना तिथिक कात पुछलथिन, ‘‘जखन तूँ गोदामसँ निकललह, केकरो बोलैत सुनलह?’’ चन्दन माथ हिलौलक। ‘‘मनोज एकटा लोककेँ ‘खाली बाट’ कहलक। नाम नहि सुनलहुँ।’’ नैना प्रत्येक उत्तरक आगाँ ‘चन्दनक कथन’ लिखलथिन। प्रमाण जाँचब पुलिसक काज छल, मुदा सटीक स्मरण सहायता कऽ सकैत छल।

चन्दन पुछलक, ‘‘दीदी, जँ हम सभ बात कहि देब तँ मनोज कहत जे हम झूठ बाजि रहल छी।’’ नैना कहलीह, ‘‘तँ पुलिस दुन्नू कथन जाँचत। हम तोरा कोनो कथा कण्ठस्थ करय नहि कहैत छी। बिनु यादक कोनो रिक्त ठाम भरबाक प्रयास नहि करिह।’’ चन्दन फेर पुछलक, ‘‘अहाँ हमरा बचायब?’’ नैना किछु क्षण रुकि कहलीह, ‘‘हम तोहर संग रहब, कानूनी सहायता जुटाएब; मुदा जे गलती केलह, तकर परिणामसँ बचेबाक लेल झूठ नहि बाजब।’’ एहि उत्तरमे बहिनक स्नेह छल, मुदा स्नेहक आड़िमे अपराध नुकएबाक प्रतिज्ञा नहि छल।

चन्दनक मुँह फिक्का पड़ि गेल। ‘मनोज हमरा मारि देत, दीदी।’ नैना कहलीह, ‘तँ ई भय सेहो पुलिसकेँ स्पष्ट बतायब। हम तोरा एकटा एहन साहसक आश्वासन नहि देब जे हमरा हाथमे नहि अछि। मुदा मौन रहलासँ संकट समाप्त नहि होयत।’ चन्दन कहलक, ‘हम नरेश बाबूकेँ मारैत नहि देखने छी। ओहि राति गाड़ी चलौने रही, से सत्य अछि। हमरा नहि बुझल जे गाड़ीमे की छल।’ नैना उत्तर देलथिन, ‘जे नहि जानैत छह, नहि जानैत छह कहिह। जे देखलह, से नुकाबिह नहि।’

चन्दन फेर एकटा बात स्वीकार कएलक। ‘किछु सप्ताह पहिने एकटा ढुलाईक सामानमे बोतलक खनखनाहट सुनल रही। ओहि पर मनोजक आदमी हमरा चुप रहबाक कहलक। हम बुझि गेल रही जे सामान शराबसँ सम्बन्धित भऽ सकैत अछि। तकर बादो काज छोड़ि नहि सकलहुँ।’ नैना ओकरा दिस तकलथिन। ‘मजबूरी छल, मुदा निर्णय तोहर छल। जँ पहिने छोड़ि देने रहितह तँ एतेक संकट नहि अबितह।’ चन्दनक आँखिमे पानि भरि आएल। ‘हम सोचलहुँ जे ऋण चुकलाक बाद छोड़ि देब।’

एहि समय नैना सविताक आन्दोलनक बात स्मरण कएलथिन। प्रतियोगिता परीक्षा रद्द भेलाक बाद जे युवक घरमे मुँह देखेबासँ डरैत छथि, हुनका सभ लेल सहज धन कमेबाक लोभ कतेक प्रबल भऽ सकैत अछि। मुदा ओ ई विचार चन्दनक गलतीक बचावमे नहि राखलथिन। गरीब होयब अपराधक अनुमति नहि दैत अछि। गरीबक विवशताकेँ उपयोग करयवला लोकक अपराध सेहो छोट नहि होइत अछि। दुनू सत्य एक संग उपस्थित छल।

दुपहरि अभयक फोन आएल। नैना पहिने उठब नहि चाहलीह, मुदा चन्दन स्वयं कहलक, 'अभयजी भरोसाक लोक छथि। हुनका सँ सलाह ली।' नैना फोन उठौलथिन। अभय आवाज सुनि पुछलनि, 'सभ ठीक अछि?' नैना कहलीह, 'चन्दनक लग एकटा जानकारी अछि। ओहि राति मनोजसँ सम्बन्धित गाड़ी चलौने छल। हम चाहैत छी जे विधिसम्मत बयान हो।' अभय तुरन्त प्रश्नक वर्षा नहि कएलनि। कहलनि, 'समाचारक लेल नहि, पहिने निरीक्षक सुजातासँ सम्पर्क करू। जे सम्भव अछि, चन्दनक सुरक्षाक बात सेहो राखू। हम कोनो समाचार एखन नहि लिखब।'

चन्दन अभयक आवाज सुनि पहिल बेर कनेक शान्त भेल। मुदा तुरन्त ओकर फोन बजल। पर्दापर मनोजक नाम चमकि रहल छल। चन्दन फोनक दिस तकैत रहल। नैना कहलीह, 'बाजब आवश्यक नहि। सम्पर्कक समय सुरक्षित राख।' फोन कटि गेल। किछु क्षणक बाद सन्देश आएल—'काल्हिक काजक हिसाब लेब जरूरी अछि। फोन उठाउ।' शब्द साधारण छल, मुदा चन्दनक भय साधारण नहि छल। नैना सन्देश मेटेबासँ मना कएलथिन।

मनोजक सन्देश कटिते चन्दनक शरीरमे सिहरन दौड़ि गेल। ओ कहलक, ''एक दिन गोदामपर ओ कहने छल जे जे लोक बेसी पुछैत अछि, ओकरा काज नहि भेटैत छैक। हम ओकर बातकेँ हँसीमे उड़ा देने रही। आब ओहि वाक्यक अर्थ बुझाइत अछि।'' नैना ओकर फोन अपन हाथमे नहि लेलथिन। कहलीह, ''ई तोहर फोन अछि, सन्देश तोरे सुरक्षित राखय पड़त। हम केवल समय आ शब्द अपन कापीमे लिखि लैत छी।'' चन्दन फोनक पर्दा फेर देखलक। ई पहिल बेर छल जे ओकरा फोनपर आएल प्रत्येक सूचना अपन विरुद्ध साक्ष्य बनबाक भय नहि, सत्य बुझबाक सहायता सेहो लगल।

अभयक सलाहपर नैना सुजाताक कार्यालयक समय आ प्राथमिकीकेँ जोड़ल काजक क्रम पुछि लेलथिन। ओ चन्दनकेँ एहो कहलथिन जे थानामे ककरो कहानी दोहराएब जरूरी नहि, अपन वास्तविक अनुभव बतायब पर्याप्त अछि। चन्दनक मनमे दोसर भय उठल—पुलिस जँ नरेशक परिवारक सोझाँ ओकर नाम लऽ देत तँ? नैना उत्तर देलथिन, ''ओहि परिवारक संग न्याय होयब चाही। जँ तोहर जानकारी उपयोगी अछि, तँ ओहि न्यायमे

सहयोग करब। परिवारकेँ ई बात कखन आ केना बताओल जायत, से जाँचक परिस्थिति देखिकऽ तय होयत।''

सायंकाल सरस्वतीकेँ सभ बात बताओल गेल। ओ पहिले अचरजसँ चन्दनक मुँह देखलथिन। फेर खटियापर बैसि गेलीह। 'हम तोरा कहने रही जे टकासँ पहिने मनुष्य चाही,' ओ धीमे कहलीह। चन्दन मायक पयर लग बैसि गेल। 'माय, गलती भेल।' सरस्वती ओकर माथपर हाथ राखलथिन, मुदा कहलीह, 'गलती स्वीकार कएलासँ ओकर परिणाम नहि मेटायत। जे जानैत छह, कहि दे।'

सरस्वतीक बात सुनि चन्दन एकटा पुरान रसीद निकाललक। ओहि रसीदपर मनोजक लोकक हस्ताक्षर नहि छल, केवल माल उतारबाक ठामक नाम लिखल छल। ''ई रखब?'' ओ पुछलक। नैना कहलीह, ''सभ कागज जसकर तस राख। मुदा ककरो विरुद्ध जे आरोप अछि, तकर निर्णय ई एकटा रसीद अपने नहि करत।'' चन्दन रसीद सावधानीसँ पुरान लिफाफामे राखलक। पहिने ओ जे कागज बेकार बुझि फेँकि देबाक सोचैत छल, आब ओहि कागजकेँ समयक चिह्न मानि सम्हारि रहल छल।

राति नैना अपन नोटमे चन्दनक कथनक क्रम लिखलथिन—गोदामक पाछाँक सड़क, गाड़ीमे तीन लोक, नहरक पुलसँ आगाँ मोड़, अनुमानित समय, अपूर्ण नम्बर, सामानकेँ छूबासँ रोकब। ओ कोनो बातक आगाँ 'हत्या' शब्द नहि लिखलथिन, किएक तँ चन्दन हत्या देखल नहि छल। ओकर जानकारी महत्त्वपूर्ण छल, मुदा ओकर अर्थ जाँचसँ मात्र स्पष्ट होयत।

चन्दन अपन बहिनक लिखल विवरण पढ़लक। एकटा तिथि ओकरा गलत लगल। नैना तुरन्त सुधारि देलथिन। ''भूलक सुधार करब साँचकेँ कम नहि करैत अछि,'' ओ कहलीह। चन्दन धीरे माथ हिलौलक। नैना फोनक सम्पर्कक समय आ नम्बर अलग लिखलथिन।

चन्दन दुआरि लग ठाढ़ छल। 'दीदी, पुलिस हमरा पकड़ि लेत?' नैना कहलीह, 'ई निर्णय पुलिस आ कानूनक प्रक्रिया करैत अछि। हम तोरा झूठ आश्वासन नहि देब। जँ तोहर

काजमे दोष अछि तँ तकर उत्तर देबय पड़त। मुदा सत्य कहब, प्रमाण सुरक्षित राखब आ कानूनी सहायता लेब—एहि बाटसँ भागब नहि।'

राति भोजनक समय सरस्वतीक थारीमे भात ओतबे छल जेना रोज रहैत छल, मुदा ओ अन्नक एको ग्रास मुँहमे नहि राखि सकलीह। ''हम गरीब छी, मुदा घरमे ककरो मृत्यु करएवला काजक अन्न नहि चाहैत छी,'' ओ कहलीह। चन्दन माथ झुकौलक। ''माय, हम हत्या नहि कएने छी।'' सरस्वती उत्तर देलथिन, ''तूँ जे कहैत छह, से जाँचमे साफ होउ। मुदा शंका बुझितो एहन ढुलाई किएक केलह?'' चन्दनक उत्तर मे कोनो बड़का तर्क नहि छल। ''ऋण छल, डर छल, आ बेसी टका भेटैत छल।'' सरस्वतीक आँखि भरि गेलनि। ''बेसी टका आ कम बुझाइ—ई दुनू संग आए तँ घर उजड़ैत छैक।''

खानाक बाद नैना बहिन-भाइक बीच चलल बातक एकटा छोट सार अपन कापीमे लिखलथिन। सरस्वती मना कएलथिन जे अन्हारमे एकर घरक बाहर अकेले नहि निकलथि। नैना कहलथिन, ''भोरमे तोरा संग थानामे जाएब, चन्दन। माय, हम अहाँकेँ जानकारी दैत रहब।'' सरस्वती पुछलथिन, ''हमरो चलबाक चाही?'' चन्दन हड़बड़ीमे कहलक, ''नहि माय, अहाँ घरमे रहू।'' नैना धीरे कहलीह, ''पहिने सुजाताजीसँ बात करब। आवश्यक पड़ल तँ अहाँ चलब। घरमे ककरो अन्हारमे राखब उचित नहि।''

दुनू किछु देरी मौन रहल। बाहर सड़कपर मोटरसाइकिलक आवाज आएल, फेर दूर भऽ गेल। चन्दनक मोनमे भय एखनहुँ छल, मुदा पहिल बेर ओकर मौन टूटल छल। नैना बुझि गेलीह जे एखन परिवारक संकट आओर गहिर होयत। भोरमे सुजातासँ भेटबाक निर्णय भऽ चुकल छल। ओहि निर्णयक बाद घरक प्रत्येक लोककेँ अपन-अपन साहस जुटेबाक छल।

अध्याय २८ : विभाक सन्देह

प्रातः काल विभा सिंह बरामदाक चौकीपर बैसि पितराक घरसँ आएल पत्र पढ़ि रहलीह। बहिन सुमित्रा अपन छौड़ाक विद्यालयमे प्रवेशक विषयमे लिखने छलीह। पत्रक अन्तमे एकटा साधारण प्रश्न छल—‘अहाँ सभ कुशल छी ने?’ विभा ई प्रश्न पढ़ि बहुत देरी धरि कागज हाथमे लेने रहलीह। घरमे नोकर-चाकर छल, भोजन समयपर बनैत छल, गाड़ीक सुविधा छल; मुदा कुशल होयबाक उत्तर हुनका लग एखन स्पष्ट नहि छल। नरेश मण्डलक मृत्यु आ कार्यालयक झगड़ाक बाद रतनक व्यवहार बदलि गेल छल। पहिनेसँ अधिक फोन, कम बातचीत, आ रातिमे खसखसाइत दरबज्जा खोलि बाहर जाएब। विभा पहिने सोचैत छलीह जे कामक दबाव अछि। काल्हि मेजक कागजमे अपन नाम देखलाक बाद ओहि विश्वासमे पहिल दरारि पड़ल छलनि।

विभाक नामपर बैंकमे एकटा संयुक्त खाता छल, जे विवाहक किछु दिन बाद खोलल गेल छल। शुरु-शुरुमे ओहि खातासँ घरक खर्च चलैत छल, मुदा पछिला किछु बरखसँ अधिकांश लेनदेन रतनक कहने होइत छल। विभा प्रतिमासक विवरण कहियो-कहियो देखैत छलीह। नरेशक शोकसभाक बाद कार्यालयसँ आएल एकटा लिफाफामे हुनका अपन हस्ताक्षरक सदृश एकटा छाप देखायल। लिफाफामे निर्माण-सामग्रीक भुगतान सम्बन्धी कागज छल। विभा ओहि कागजकेँ पहिने गलत ठाम आएल बुझि अलग रखि देने छलीह। आब ओ पुनः निकाललथिन। रकम ओतबा नहि छल जे ठीकेदारक लेल असामान्य होअय, मुदा घरक खातासँ ओकर सम्बन्ध किएक देखायल छल, से बुझब आवश्यक छल।

ओ जेबीमे चाभीक छोट गुच्छा रखि बैंक दिस निकललीह। चालक गाड़ी निकालबाक लेल पुछलक तँ विभा कहलीह, ‘‘आइ रिक्शासँ जाएब।’’ ओ चाहैत छलीह जे बैंकमे काज ककरो जानकारी आ अनावश्यक चर्चा बिना होअय। मुदा गुप्त रहबाक इच्छा अपन पति सँ किछु गलत नुकएबाक नहि, अपन नामपर भेल काजक सत्य बुझबाक छल। बाटमे

विद्यालयक आगाँ विद्यार्थीसभक भीड़ देखायल। किछु माय अपन बच्चाकेँ छोड़ि काजपर जा रहलीह। विभाकेँ याद पड़लनि जे हुनक माय कहैत छलीह—पढ़ाइ स्त्रीकेँ अपन दस्तखतक अर्थ बुझबैत अछि। ओ अपन दस्तखतक अर्थ एखन फेर सँ सीखय जा रहलीह।

बैंकक शाखामे ग्राहकक पाँति छल। विभा क्रमसँ अपन आवेदन जमा कएलथिन। एकटा अधिकारी हुनका चिन्हैत छलाह। ओ मुस्कुरा कऽ कहलनि, ‘‘रतन बाबूक घरसँ एतए? फोन केने रहितहुँ तँ कागज पठा दैतहुँ।’’ विभा स्पष्ट कहलीह, ‘‘कागज हमर खाताक अछि। हम स्वयं देखब।’’ अधिकारी तत्काल कुर्सी देबाक आग्रह कएलनि। विभा कहलीह, ‘‘पाँतिमे जे सभ छथि, हुनकर काज पहिने सँ चलि रहल अछि। हमर क्रम आबि जाए तँ बजा लेब।’’ हुनक एहि उत्तरसँ काउन्टरपर बैसल युवक कनेक सकुचाएल, मुदा ओ कागजक विधिसम्मत प्रक्रिया बुझबैत रहल।

खाताक विवरण हाथमे अबिते विभा तारीख मिलौलथिन। तीन महीनामे दूटा पैघ भुगतान भेल छल। एकटा वीरेन्द्र राय सँ सम्बन्धित संस्थाक नामपर, दोसर एकटा सेवा-समितिक नामपर। विभा दुनू नाम पहिने सुनने छलीह, मुदा भुगतानक अनुमति देने हुनका स्मरण नहि छल। एकटा चेकक प्रति मँगाबय ओ आवेदन लिखलथिन। अधिकारी कहलनि, ‘‘अभिलेख विभागसँ मँगाबय पड़त। किछु समय लागत।’’ विभा कहलथिन, ‘‘जतेक नियम अछि, ओही अनुसार दिअ। हम प्रतीक्षा करब।’’ ओ कोनो अपराधक आरोप नहि केलथिन। खातामे पैसाक निकास भेला मात्रसँ ककरो दोष प्रमाणित नहि होइत अछि, ई बात ओ बुझैत छलीह। मुदा स्वीकृतिपर अपन हस्ताक्षर अछि कि नहि, एकरा छोड़ि देब सेहो सम्भव नहि छल।

बाहर निकलबाक पहिने अधिकारी हुनका पुछलनि, ‘‘घरमे ककरो कहब आवश्यक बुझैत छी?’’ विभा एक क्षण रुकलीह। ‘‘घरमे कहब कि नहि, ई निर्णय हम करब। बैंकक रेकर्ड देखबाक अधिकार हमर अछि ने?’’ ‘‘निश्चित,’’ अधिकारी उत्तर देलनि। ओ एहि विषयमे अनुरोधक पावती देलनि। विभा ओ पावती सुमित्राक पत्रक संग नहि, अपन अलग झोलामे रखलथिन। घर घुरैत रिक्शावला बारम्बार गाड़ी सँ बचैत चलि रहल छल। विभाकेँ

एहि साधारण यात्रामे एकटा अजीब शान्ति अनुभव भेल। पति वा घरक कोनो कर्मचारीक बताओल बाट नहि, अपन निर्णयक बाट अपन हाथमे छलनि।

रिक्शामे बैसल विभाकेँ अपन पहिल कमाइक दिन याद अएल। विवाहसँ पूर्व ओ विद्यालयमे किछु समय पढ़बैत छलीह। विद्यार्थीसभक शुल्क, पुस्तकक खरिद आ घरक छोट जमा-खर्च अपन कापीमे लिखैत छलीह। विवाहक बाद रतन व्यवसाय बढ़ौलनि आ विभा घरक प्रबन्धमे लागलीह। शुरु-शुरुमे ओ व्यवसायक हिसाब पुछैत छलीह; बादमे रतन कहैत छलाह, ‘‘एहि सभक चिन्ता छोड़ू।’’ विभा एकर अर्थ आराम बुझलथिन। आब हुनका बुझाइत छल जे प्रश्न नहि पुछबाक आदति धीरे-धीरे बनैत अछि। भरोसाक अर्थ जिम्मेवारी छोड़ि देब कखनो नहि होइत अछि।

घर पहुँचलाक बाद हुनका रतनक फोन आएल। ‘‘कहाँ गेल रही?’’ रतन पुछलनि। विभा कहलथिन, ‘‘बैंक।’’ ‘‘कोन कामसँ?’’ ‘‘अपन खाताक विवरण मँगाबय।’’ फोनक दोसर दिस किछु क्षण चुप्पी रहल। फेर रतन कहलनि, ‘‘ई सभ लेखा विभाग देखैत अछि। तोहर की आवश्यकता?’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘खाता हमर नामपर अछि। जतेक हम देख सकैत छी, देखब।’’ रतनक स्वर चढ़ल, ‘‘एखन कार्यालयक स्थिति देखैत नहि छह? हर एक आदमी प्रश्न लऽ कऽ घुमैत अछि।’’ विभा कहलीह, ‘‘हम प्रश्न घरमे उठौने छी; कोनो आरोप नहि। साँझ बात करब।’’ ओ फोन राखि देलथिन।

दुपहरि अपन पुरान संदूक खोलैत विभाकेँ विवाहक आरम्भिक फोटो भेटल। ओ फोटोमे रतन सरल हँसी हँसैत छलाह। ओहि समय दम्पतिक सँग पैघ घर नहि छल; दू कोठरीक भाड़ाक मकान, छोट व्यवसाय आ भविष्यक अनेक योजना छल। विभा अपन आभूषण बेचि रतनकेँ पहिल दुकानक अग्रिम राशि जुटेबामे सहायता देने छलीह। तखन रतन प्रत्येक राति कमाइ आ उधारक हिसाब बतबैत छलाह। हुनका ओहि दिनसभक अपन खुशीपर शङ्का नहि छल। मुदा ओ स्मृति आजुक प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकैत छल। कोनो आदमी पहिने स्नेह देलक, एहि कारण ओकर वर्तमान काज बिना जाँच सत्य नहि बनि जाइत अछि।

घरक काज करयवाली लक्ष्मी भोजन लेल बजेलथिन। लक्ष्मी पिछले दू बरखसँ घरमे काज करैत छलीह। ओ कहलथिन, ‘‘मालकिन, बाबूजी आइ फेर कार्यालयमे भोजन पठेबाक कहलनि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘ककर माध्यमसँ?’’ ‘‘किरण मैडमक आदमी आबि जाएत।’’ विभा साधारण ढङ्गसँ कहलथिन, ‘‘ठीक अछि। जेना रोज पठबैत छी, पठा दिअ।’’ लक्ष्मीक सोझाँ अपन शङ्का रखब उचित नहि बुझलथिन। श्रमिक महिला अपन मजदूरी लेल एहि घरमे अबैत छलीह, मालिक-पत्नीक निजी बातक भार उठेबाक लेल नहि। मुदा किरणक नाम घरक प्रत्येक निर्णयमे एतेक बेर अबैत अछि, ई बात विभाकेँ अखरैत छलनि।

लक्ष्मी थारी रखि चलबाक पहिने कहलथिन, ‘‘मालकिन, एहि मास हमर बेटीकेँ पढ़ाइ लेल नब किताब चाही। दू दिन अग्रिम भेटि जाए तँ नीक।’’ विभा तुरन्त रकम देबाक वचन नहि कएलथिन। ‘‘साँझ धरि हिसाब देखिकऽ बतायब। जकर मजदूरी बाँकी अछि, से पहिने देल जाएत,’’ ओ कहलीह। लक्ष्मी मुस्कुराइत चलि गेलीह। विभाक मनमे चुभल जे दूसर परिवारक रोजगार आ टकाक विषयमे ओ एतेक स्पष्ट रहि सकैत छलीह, मुदा अपन खाताक नामपर प्रश्न पुछिते झिझकि रहल छलीह। एहिसँ पहिने जे निर्णय लेलन्हि, ओ ओकरा बनौने रखबाक निश्चय कएलथिन।

दुपहरिक बाद विभा कार्यालय पहुँचलिह। स्वागत कक्षमे नैना आवेदकक पञ्जी जाँचि रहलीह। विभाकेँ देखि ओ उठि ठाढ़ भेलीह। ‘‘अहाँ रतनजीकेँ भेटय चाहैत छी?’’ नैना पुछलथिन। ‘‘हँ, मुदा हुनकासँ पहिने लेखा-विभागक पुरान कागजक बारेमे पूछबाक छल,’’ विभा कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘नरेशजीक मृत्यु उपरान्त कागजक जाँच चलि रहल अछि। जकर जानकारी हमरा अनुमतिमे अछि, तकर विषयमे बतायब। बाकी लेल लिखित अनुरोध देब उचित होयत।’’ विभा नैनाकेँ ध्यानसँ देखलथिन। एहि युवतीक बोलमे न अतिशय विनय छल, न मालिकक पत्नीकेँ खुश करबाक आतुरता। ओ हुनका अपन नामपर भेल भुगतानक सम्बन्धमे केवल उपलब्ध आवेदन-प्रक्रिया पुछलथिन।

नैना विभाकेँ लेखाक अभिलेखक प्रभारीसँ भेटबाक व्यवस्था कएलथिन। महेश कहलक जे नरेशक अनुपस्थितिमे किछु फाइल पुलिस जाँचक कारण अलग राखल गेल

अछि, मुदा लिखित आवेदन जमा हो सकैत अछि। विभा आवेदन देलथिन। ‘‘अहाँक नामपर कोन-कौन भुगतानक स्वीकृति दर्ज अछि, ओकर प्रमाण चाही,’’ ओ स्पष्ट लिखलथिन। महेश पावती दैत कनेक धीमे कहलनि, ‘‘हमर अधिकार सीमित अछि। मुदा जे कागज उपलब्ध अछि, तकर नकल देबाक प्रक्रिया रोकल नहि जा सकैत अछि।’’ विभा ओकर बात बुझलीह। कार्यालयमे लोक टका कमएबाक लेल रहल छल; हरेक आदमीक भीतर बराबर साहस खोजब उचित नहि।

महेश आवेदन-पञ्जी खोलि तिथि दर्ज करैत कहलक, ‘‘जकर नाम खाताक कागजपर अछि, ओकर पहिचानक जाँच सेहो आवश्यक होइत अछि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘अहाँ सभ पुरान स्वीकृतिपत्रक क्रमाङ्क रखैत छी?’’ महेश कहलक, ‘‘रखबाक नियम अछि। मुदा किछु कागज दोसर विभागसँ अबैत अछि।’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘नियम अछि तँ ओकरा लागू करबाक चाही। जे अनुपलब्ध अछि, स्पष्ट लिखि दिअ।’’ नैना दूरसँ ओहि बातचीतक किछु अंश सुनि रहल छलीह। हुनका लगल जे मालिकक पत्नी सेहो एखन ओही बुनियादी बात मँगि रहलीह जे नरेश बारम्बार मँगैत छलाह—लिखित उत्तर।

किरण अपन कोठरीसँ निकलैत विभाकेँ देखलथिन। क्षणभरि हुनक चेहरा बदलि गेल। फेर मुस्कुरा कऽ कहलथिन, ‘‘अहाँ बिना सूचना अएलहुँ? रतनजी तँ बाहर गेल छथि।’’ विभा कहलीह, ‘‘हम जानैत छी। आजुक काज हमर अपन छल।’’ किरण पुछलथिन, ‘‘किछु विशेष?’’ ‘‘खाताक कागज,’’ विभा उत्तर देलथिन। किरणक हाथमे रखल फाइलक कोना मुड़ि गेल। ओ तुरन्त कहलीह, ‘‘ओ सभ नरेशजी देखैत छलाह। एखन जाँच चलि रहल अछि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘तँ नरेशजीक मृत्यु पहिने सभ ठीक छल?’’ किरण कनेक हिचकिचाइत कहलीह, ‘‘हम एहि विषयमे पूरा नहि कहि सकैत छी।’’ विभा कहलथिन, ‘‘तखन अधूरा उत्तर सेहो एखन नहि चाही। सही कागज भेटलाक बाद बात करब।’’

कार्यालयक सीढ़ीसँ उतरैत विभाकेँ रतन आ किरणक बीचक किछु पुरान व्यवहार याद पड़लनि। घरमे जन्मदिनक भोज होअय तँ किरण अतिथिक स्वागत व्यवस्थित करैत छलीह; रतन हुनक कामक प्रशंसा करैत छलाह। एतबा वर्ष एहन व्यवहार हुनका केवल कर्मचारिक दक्षता बुझाइत छल। आब ओ प्रत्येक पुरान घटनाकेँ दोषक प्रमाण बनबय नहि

चाहैत छलीह। मुदा सम्बन्धक सीमा कतय अछि, से जानबाक अधिकार हुनका छल। घरक विश्वास केवल बाहरी मर्यादासँ नहि बाँचैत अछि।

सीढ़ीक मोड़पर कुसुम विभाकेँ प्रणाम कएलथिन। विभा पुछलथिन, ‘‘अहाँ सभक वेतन समयपर भेटैत अछि?’’ कुसुम असमञ्जसमे पड़ि गेलीह। ‘‘किछु दिन देरी भऽ जाइत अछि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘एहि मास?’’ ‘‘एखन पूरा नहि भेटल।’’ विभा हुनका सोझाँ वचन नहि देलथिन जे भोर धरि सभ ठीक भऽ जायत। ‘‘एहि विषयमे लिखित आवेदन दिअ। हम सेहो प्रश्न उठाएब,’’ ओ कहलीह। कुसुमक चेहरापर अविश्वास आ आशा दुनू छल। विभा जखन फाटकसँ निकललीह, तखन हुनका बुझाइत छल जे पैघ घरक भीतरक आर्थिक असमञ्जसक प्रभाव कतेक छोट वेतनपर निर्भर घरसभ धरि पहुँचैत अछि।

रतन साँझ घुरलाह तँ भोजन लगाइ देल गेल छल। विभा रातिक भोजनक समय बहस नहि चाहैत छलीह। ओ कहलथिन, ‘‘भोजनक बाद दस मिनिट बात करबाक अछि।’’ रतन ऊबले स्वरमे उत्तर देलनि, ‘‘आब कोन बात?’’ ‘‘हमर खाताक दूटा भुगतान आ कार्यालयमे अपन नामक स्वीकृति।’’ रतन चम्चा थारीपर राखि कहलनि, ‘‘वीरेन्द्रक ठेका घरक एकटा पुरान निवेशसँ चलि रहल अछि। लेखा विभाग गलती सँ नाम लिखने होयत।’’ विभा कहलीह, ‘‘जँ गलती अछि तँ कागज सुधारल जाएत। मूल अभिलेख देखब जरूरी अछि।’’ रतन कहलनि, ‘‘हम कहि रहल छी तँ भरोसा नहि?’’ विभा बहुत धीरे उत्तर देलथिन, ‘‘भरोसा राखबाक लेल जानकारी नुकेनाइ किएक आवश्यक अछि?’’

रतन कुर्सी पाछाँ धकेलि उठि गेलाह। ‘‘जतेक बात लोक बाहर करैत अछि, आब घरमे ओतबे सुनब?’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘लोक बाहर की कहैत अछि, से हम एखन नहि पुछैत छी। जे हमर नामसँ भेल अछि, से हमर प्रश्न अछि।’’ रतन कहला, ‘‘नरेशक मृत्यु सँ सभ विक्षिप्त भऽ गेल अछि।’’ विभा एहि उत्तरपर चुप नहि रहलीह। ‘‘नरेशक मृत्यु एकटा मनुष्यक मृत्यु अछि। ओकरा हमर खाताक प्रश्नक बहाना नहि बनाउ।’’ एतबा कहि ओ बरामदामे चलि गेलीह। रतन किछु बेर ठाढ़ रहलाह, फेर अपन फोन लऽ ऊपरक कोठरीमे बन्द भऽ गेलाह।

विभा रतनक पाछाँ नहि गेलीह। ओ भोजनक थारी समेटि रखैत देखलथिन जे रतन आधा भोजन छोड़ि गेलाह। पहिले एहन समय ओ तुरन्त हुनका मनाबय पहुँचैत छलीह। आइ ओ सोचलथिन जे झगड़ाक बाद शान्ति आवश्यक अछि, मुदा शान्तिक अर्थ अपन प्रश्न वापस लेब नहि। ओ कागजक एकटा प्रति अलग फाइलमे रखलथिन। जे पन्नापर तारीख स्पष्ट नहि छल, ओकर आगाँ प्रश्नचिह्न बना देलथिन। ओहि छोट काममे हुनका अपन मन व्यवस्थित लगल।

बरामदामे विभा सुमित्राकेँ फोन कएलथिन। बहिन पुछलथिन, ‘‘कुशल छी ने?’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘किछु बात साफ नहि अछि। ककरो संग झगड़ा नहि चाहैत छी। अपन नामपर भेल लेनदेन बुझबाक अछि।’’ सुमित्रा कहलथिन, ‘‘जे दस्तावेज अहाँक अछि, ओकर प्रति राखू। जल्दबाजीमे ककरो दोष नहि दिअ, मुदा अपन हस्ताक्षरक अर्थ जानू।’’ विभा हँसलथिन। ‘‘अहाँ हमरा आजुक दिन बैंकमे सुनल बात फेर कहलहुँ।’’ बहिन पुछलथिन, ‘‘घर अएब?’’ ‘‘एखन नहि। अपन घरक बात अपना घरमे पहिले सुलझेबाक प्रयास करब।’’ फोन रखलाक बाद विभा लम्बा साँस लेलथिन।

विभा सुमित्राक बात सुनि अपन विवाहक पहिले दिनक एकटा वचन स्मरण कएलथिन। रतन कहने छलाह जे ओ दुनू ककरो सोझाँ झूठक सहारा नहि लेताह। आदमी अपन वचन सदैव पूरा नहि कऽ सकैत अछि, मुदा वचनक स्मृति लोककेँ प्रश्न पुछबाक साहस दैत अछि। विभा अपन बहिनकेँ कहलथिन, ‘‘हम कोनो झगड़ाक हड़बड़ीमे नहि छी। बैंक जे बताओत, कार्यालय जे उत्तर देत, ओकरा अलग-अलग राखब। तकर बाद रतनसँ फेर बात करब।’’ सुमित्रा हुनक बात सुनि कहलीह, ‘‘यही क्रम ठीक अछि।’’ विभा फोन रखि किछु देर बरामदामे रहलथिन।

राति लगभग दस बजे रतनक फोन ऊपरक कोठरीमे बजल। विभा दरबज्जाक कातसँ गुजरैत किरणक नाम सुनलथिन। रतन दबले स्वरमे कहलनि, ‘‘एहि विषयमे काल्हि कार्यालयमे बात करब। कागज अहाँक लग अछि ने?’’ दोसर दिस सँ की उत्तर आएल, से विभा नहि सुनि सकलीह। ओ ठाढ़ नहि रहलीह। अपन कोठरीमे आबि बैंकक पावतीक प्रति राखलथिन, तिथि लिखलथिन आ दराज बन्द कएलथिन। पति ककरो संग फोनपर बात

कएलनि, एतबा अपनेमे विश्वासघातक प्रमाण नहि। मुदा जे प्रश्न ओ साँझ उठौने छलीह, ओकर बाद कागज विषयक एहन हड़बड़ी हुनक सन्देहकेँ बढ़बैत छल।

कोठरीमे रखल दर्पणक सोझाँ ठाढ़ भऽ विभा अपन चेहरा देखलथिन। बाहरी रूपमे किछु नहि बदलल छल—माथपर सिन्दूर, साधारण साड़ी, हाथमे काँचक चूड़ी। मुदा भीतर प्रश्नक स्वर आब दबि नहि रहल छल। ओ स्वयं सँ पुछलथिन, ‘‘जँ कागज गलत निकलत तँ?’’ उत्तर तुरन्त नहि आएल। पति सँ नाताक अर्थ दुनूक प्रतिष्ठा छल; मुदा प्रतिष्ठा रखबाक नामपर दोसरा लोकक हानि वा अपन नामक दुरुपयोग स्वीकार करब तकर समाधान नहि छल। एहि राति ओ निर्णय नहि, तथ्य जुटेबाक प्रतिज्ञा कएलथिन।

दोसर दिन प्रातः शाखासँ फोन आएल जे माँगल चेकक प्रति लेल आगाँक प्रक्रिया पूरा कएल जा सकैत अछि। विभा समय लिखि लेलथिन। ओहि दिन हुनका पहिल बेर बुझायल जे विवाहक भीतर अपन आर्थिक अधिकारक उपयोग करब कोनो घर तोड़बाक घोषणा नहि; घरमे सत्य रहबाक न्यूनतम शर्त अछि। ओ आइतक अपन पति सँ प्रेम केने छलीह। ओ प्रेम एखन पूर्ण रूपेँ समाप्त भऽ गेल, एहन किछु ओ नहि कहि सकैत छलीह। मुदा प्रेमक कारण अपन नामपर लिखल अनचिन्हार खर्चकेँ सदा लेल स्वीकार करब सेहो सम्भव नहि छल। खिड़कीसँ दिसि रहल सड़कपर लोक काम लेल दौड़ि रहल छल। विभा अपन अगिला काज लिखलथिन—‘बैंकक प्रति, कार्यालयक उत्तर, फेर निर्णय।’

अध्याय २९ : किरणक स्वीकार

ओहि भोर किरण अपन घरक रसोईमे दूध चढ़ा रहल छलीह। दिनेश बरामदामे खाटपर बैसि समाचारपत्रक पन्ना पलटि रहल छलाह। दुनू एक्के घरमे रहैत छलाह, मुदा पछिला किछु मासमे हुनक बातचीत खर्च, बिजलीक बिल आ दरबज्जाक चाभी धरि सीमित रहि गेल छल। किरणक कार्यालय पहुँचनाइ दिनेशक जागबाक पहिने सेहो भऽ जाइत छल; साँझ घुरब देरि सँ होइत छल। दिनेश पहिने अपन ठेकाक छोट काजमे व्यस्त रहैत छलाह। ओ काज मन्द पड़लाक बाद घरमे हुनक समय बढ़ल आ दुनूक बीचक दूरी स्पष्ट देखाय लगल। भोरक चाय दैत किरण पुछलथिन, ‘‘आजु बाजार जाएब?’’ दिनेश उत्तर देलनि, ‘‘जाएब। पहिने किछु बात करबाक अछि।’’

किरण चूल्हिक आँच कम कएलथिन। ‘‘एखन?’’ ‘‘कखन?’’ दिनेश पुछलनि। ‘‘राति कहैत छी तँ थाकल रहैत छह, भोर कहैत छी तँ देरि होइत अछि।’’ किरणक हाथ ठमकि गेल। दिनेश आगाँ कहलनि, ‘‘हमर नामपर जे ऋणक आवेदन गेल अछि, ओकर विषयमे कखन बतएब?’’ किरण चकित भेलीह। ओ आवेदन तीन सप्ताह पहिने कार्यालयक एकटा आपूर्तिकर्ताक माध्यमसँ तैयार भेल छल; ओ सोचने छलीह जे रतन बकाया भुगतानक व्यवस्था कऽ देताह। दिनेशक हस्ताक्षर लेल कोनो पन्ना हुनका देल गेल छल, मुदा पूरा व्यौरा ओ नहि पढ़ि सकल छलाह। ‘‘हम अहाँकेँ बतबय चाहैत छलहुँ,’’ किरण कहलीह। दिनेश कटु हँसी हँसलनि। ‘‘चाहैत छलहुँ—कखन? जखन बैंकसँ पत्र आबि जाए?’’

किरण बैठकीमे आबि बैसलीह। ‘‘हम एखनहुँ सभ कागज साफ नहि बुझि सकल छी। कार्यालयमे भुगतान अटकल अछि।’’ दिनेश बीचमे टोकलनि, ‘‘कार्यालयक पैसा आ हमर घरक उधारमे की सम्बन्ध? अहाँ हमर सहमति बिना कोनो जोखिम नहि लऽ सकैत छी।’’ किरण कहलीह, ‘‘सहमति लेल कागज देल गेल छल।’’ ‘‘मुदा काजक प्रकृति कहियो बताओल गेल?’’ दिनेशक प्रश्न सटीक छल। किरणक लग ओकर पूरा उत्तर नहि छल। ओ

स्वीकार कएलथिन जे ओ घरक आर्थिक सुरक्षा सँ सम्बन्धित विषयमे लापरवाही केने छलीह।

दिनेश पहिने कखनहुँ किरणक नौकरीकेँ अपन सम्मानक विरुद्ध नहि बुझने छलाह। बिपरीत, शुरुआती मासमे ओ स्वयं किरणकेँ कार्यालय छोड़य जाइत छलाह। मुदा पछिला बरख कारोबारमे घाटा भेलाक बाद किछु परिचित व्यङ्ग्य कएने छल—''आब घर श्रीमती चलबैत छथि।'' दिनेश हँसिकऽ बात टारि देने छलाह, मुदा ओहि व्यङ्ग्यक काँटा मोनमे अटकि गेल छल। किरण हुनक मौनक अर्थ बुझबाक प्रयास नहि केने छलीह। एहि गलतफहमिक बीच दिनेशक आत्मसम्मान आ किरणक आकांक्षा दुनू अपन-अपन दिशा खोजैत रहल। ई परिस्थिति सम्बन्धक टूटबाक पृष्ठभूमि बनल, मुदा ककरो छलक उचित कारण नहि बनि सकैत छल।

दिनेश खाट लग रखल पन्नासभमे सँ एकटा लिफाफा निकाललनि। ''ई कार्यालयसँ आयल फोनक विवरण अछि। कतेक बेर रतन सिंह रातिक ग्यारह बजे फोन करैत छथि? एकटा कामक विषयमे लोक एक-दू बेर पूछैत अछि, प्रतिदिन नहि।'' किरण कहलथिन, ''ओ हमर मालिक छथि, कार्यालयक काम कखनहुँ राति होइत अछि।'' दिनेश उत्तर देलनि, ''तकरा हम जानैत छी। मुदा रातिक फोन आ छुट्टीक दिन भेटब—एहि सभक बारेमे स्पष्ट बात चाही।'' किरण आँखि झुका लेलथिन। दिनेश अपन स्वर नियन्त्रणमे राखलनि, मुदा हुनक हाथ काँपि रहल छल।

किछु बरख पहिने दिनेश आ किरणक विवाह परिजनक सहमतिसँ भेल छल। प्रारम्भमे दुनू छोट कोठरीमे रहैत छलाह। दिनेश व्यापारमे लाभक समय किरणकेँ पढ़ाइ पूरा करबाक लेल प्रोत्साहन देने छलाह। किरण लेखा आ कार्यालय-प्रबन्धनक प्रशिक्षण लेलने छलीह। किरणक वेतन घरक नियमित खर्च सम्हारे लगल छल। रतन पहिने हुनक दक्षताक प्रशंसा कएलनि; कर्मचारीक सोझाँ विश्वास जतौलनि; कठोर समयमे कार्यालय सम्हारबाक जिम्मेवारी देलनि। ओहि सम्मानक बीच व्यक्तिगत निकटता कखन बढ़ल, किरण एखन पाछाँ घुरि देखैत छलीह।

सम्बन्धक आरम्भ कोनो पैघ घोषणासँ नहि भेल छल। रतन एकदिन किरणक पिताक चिकित्सा-खर्च लेल अग्रिम देलनि; किछु मासक बाद कार्यालयक यात्रा लेल संग गेलाह; एकटा साँझ कामक बाद देरि धरि बातचीत भेल। ओहि समय किरण अपनेकेँ उपेक्षित अनुभव करैत छलीह, दिनेश अपन असफल कारोबारक कारण चुप रहैत छलाह। किरण पतिक मौनकेँ उदासीनता बुझि लेने छलीह। रतनक ध्यान हुनका अपन मूल्यक प्रमाण लागल। मुदा ध्यान आ विश्वासक बीचक सीमा ओ स्वयं पार केने छलीह। एहि सीमाक निर्णय केवल परिस्थिति नहि केने छल; किरणक अपन इच्छा आ जिम्मेवारी सेहो छल।

किरणकेँ एकटा विशेष साँझ याद पड़ल। रतन हुनका कहने छलाह, ‘‘एहि कार्यालयमे हमरा अहाँ जकाँ भरोसाक लोक नहि भेटत।’’ किरण घर घुरि दिनेशकेँ ई बात बतौने छलीह। दिनेश हँसि कहलनि, ‘‘तखन मेहनतक उचित वेतन सेहो मँगू।’’ किरण तखन क्रुद्ध भऽ गेल छलीह। हुनका लागल छल जे पति हुनक प्रशंसा नहि सुनि सकैत छथि। पछाति ओ बुझलीह जे दिनेशक कथनमे आर्थिक सावधानी सेहो छल। मुदा अपन महत्वक खोजमे ओ ओहि सावधानीकेँ उपेक्षा मानि छोड़ि देने छलीह।

दिनेश पुछलनि, ‘‘सीधा कहू, अहाँक आ रतन सिंहक बीच कार्यालयक सम्बन्धक अतिरिक्त किछु अछि?’’ किरण पहिने पानि पीलथिन। एकटा झूठ कहि ओ तत्काल झगड़ा टारि सकैत छलीह। दिनेश शायद उत्तर सुनि शान्त भऽ जाइताह; मुदा फेर अगिला झूठ चाही पड़िते‍क। ओ नजरि उठा कऽ कहलीह, ‘‘हँ। हमर हुनकासँ विवाहेतर सम्बन्ध रहल अछि।’’ दिनेश अपन हाथक लिफाफा मेजपर राखलनि। घरक बाहर तरकारी बेचयवलाक आवाज अबैत छल; भीतर एकाएक ओ आवाज बहुत दूरक लगल।

‘‘कतेक दिनसँ?’’ दिनेश पुछलनि। किरण अवधि बतौलथिन। ‘‘घरमे जे झूठ बजलहुँ, से गलत छल।’’ दिनेश कहला, ‘‘गलत? अहाँ हमर घरमे रहि हमरा प्रत्येक दिन मूर्ख बनबैत रहलीह।’’ किरण तुरन्त अपन बचाव नहि कएलथिन। दिनेश आगाँ पुछलनि, ‘‘हमरा छोड़ि हुनक संग रहबाक निर्णय लेने छी?’’ किरण कहलीह, ‘‘एहन कोनो निश्चय नहि कएने छी। आब सम्बन्ध जेना चलि रहल अछि, तेना नहि चलि सकैत अछि।’’ दिनेश कड़ुआइल स्वरमे कहलनि, ‘‘तखन अहाँ दू घरक सुविधा चाहैत छलीह?’’ ई बात किरणकेँ चोट

पहुँचौलक, मुदा ओ बुझैत छलीह जे दिनेशक प्रश्न केवल क्रोधसँ नहि, टूटल विश्वाससँ निकलि रहल अछि।

दिनेश उठि भीतरक कोठरीमे चलि गेलाह। ओहि ठाम हुनक विवाहक छायाचित्र टँगल छल। ओ ओकरा उतारल नहि। कुर्सीपर बैसि बहुत देरी धरि एकटा खाली ठाम तकैत रहलाह। किरण दरबज्जाक कात पहुँचलिह, मुदा भीतर नहि गेलीह। ‘‘हम जे केलहुँ, ओकर जिम्मेवारी लैत छी,’’ ओ कहलीह। दिनेश बिना घुरने उत्तर देलनि, ‘‘जिम्मेवारी शब्दक अर्थ एखन बुझब कठिन अछि। कोनो बातक पछतावा ओकर परिणाम समाप्त नहि करैत अछि।’’ किरण कहलीह, ‘‘हम एहि घरसँ जाएब कि नहि, अहाँक सँग स्पष्ट निर्णय कऽ लेब। मुदा पहिने ऋणक कागज बुझनाइ आवश्यक अछि।’’

दिनेश एकाएक पुछलनि, ‘‘रतन सिंहकेँ हमर नामपर ऋणक बात मालूम अछि?’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘हँ, ओही कहलनि जे व्यवस्था थोड़े दिनमे ठीक भऽ जायत।’’ दिनेश उठि ठाढ़ भेलाह। ‘‘आब हम हुनका भेटब।’’ किरण आगाँ बढ़ि कहलथिन, ‘‘क्रोधमे नहि जाउ। बात बिगड़ि सकैत अछि।’’ दिनेश कहला, ‘‘हमर जीवन पहिनेसँ बिगड़ल अछि।’’ किरण कहलीह, ‘‘अहाँ जे प्रश्न पुछब, ओकर उत्तर लिखित कागजसँ मँगू। हल्ला करबासँ प्रमाण नहि भेटत।’’ दिनेश थमकलाह। ‘‘कागज अहाँक लग अछि?’’ किरण माथ हिलौलथिन। ‘‘किछु अछि। किछु कार्यालयमे।’’

बाहर आँगनमे पड़ोसक एकटा बच्चा गेंद उठेबाक लेल आयल। दिनेश दरबज्जा खोलि गेंद लौटा देलनि। बच्चा हँसैत दौड़ि गेल। दिनेश मुड़ि किरणसँ पुछलनि, ‘‘हमसभ कतेक बात पर आगाँक जीवनक योजना बनौने रही, याद अछि?’’ किरण माथ हिलौलथिन। विवाहक पहिल बरखमे दुनू घर किनबाक लेल बचत शुरू कएने छलाह। बादमे व्यापारक घाटामे ओ बचत घटल। दिनेश कहला, ‘‘आब जँ अलग रहब, घरक खर्च आ ऋणक उत्तरदायित्व सेहो अलग-अलग स्पष्ट करब। एहि सम्बन्धक बिगड़बाक दण्ड ककरो बिना जानकारीक ऋण सँ नहि देब।’’ किरण हुनक व्यावहारिक स्वरमे दुखक गहराइ अनुभव कएलथिन।

किरण ओहि दिन कार्यालय देरि सँ पहुँचलिह। स्वागतकक्षमे नैना किछु आवेदकक प्रश्नक उत्तर दऽ रहलीह। किरण हुनका मात्र एतबे कहलीह, ‘‘रतनजी अपन कोठरीमे छथि?’’ ‘‘एखन नहि,’’ नैना उत्तर देलथिन। किरण अपन कोठरीक दरबज्जा भीतरसँ बन्द कएलथिन। मेजक पहिल दराजमे घरक ऋणक मसौदा, वीरेन्द्रक सेवा-अनुबन्ध आ किछु भुगतानक स्वीकृति रखल छल। ओ पन्ना पलटैत छलीह। हुनक नाम कएक ठाम केवल कार्यालय-प्रबन्धकक रूपमे छल, मुदा दू ठाम एहन निर्णयक अनुमोदन छल जाहिमे वास्तविक जाँच हुनका स्मरण नहि छल। एखन निजी विश्वासघात आ आर्थिक जोखिम एक्के मेजपर राखल छल।

मेजपर रखल कार्यालयक एकटा पत्र खोलि किरण देखलथिन जे नरेश मण्डल अपन मृत्युसँ पहिने भुगतानक किछु स्वीकृति सम्बन्धी प्रश्न पठौने छलाह। ओहि पत्रमे किरणक नाम सेहो छल। नरेश व्यक्तिगत दोषक आरोप नहि केने छलाह; ओ पूछने छलाह जे कोन रकमक भुगतानक आदेश ककर स्वीकृतिसँ गेल। किरणक मोनमे अपराधबोधक दोसर धारा उठल—जे कर्मचारी कागजक अर्थ पुछैत छल, ओकरा ओ बारम्बार चुप रहबाक कहने छलीह। हुनका याद पड़लनि जे नरेशक प्रश्नक स्पष्ट उत्तर देल गेल रहितैक तँ कएक ठामक भ्रम पहिनेसँ दूर भऽ सकैत छल।

रतन दिउसो फोन कएलनि। ‘‘विभा बैंक गेल छलीह। कागजक विषयमे हुनका की जानकारी भेल?’’ ओ पुछलनि। किरण कहलीह, ‘‘हम नहि जानैत छी। हुनका स्वयं पुछू।’’ रतन अप्रसन्न भेलाह। ‘‘तूँ कार्यालयक अभिलेख देखैत छह, एहि लेल पुछैत छी।’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘कार्यालयक अभिलेखक विषयमे लिखित उत्तर देल जाएत। घरक विषयमे हमरा बीचमे नहि राखू।’’ रतन किछु क्षण मौन रहलाह। फेर कहलनि, ‘‘नरेश नहि रहल, आब सभ जवाबदेही तोरेपर पड़ि सकैत अछि।’’ किरणक छातीमे अजीब सिहरन दौड़ि गेल। ‘‘जकर आदेश अहाँ देने छी, तकर जिम्मेवारी अहाँपर सेहो रहत,’’ ओ उत्तर देलथिन।

दिनेश ओहि बीच अपन मामेर भाइ रविकेँ फोन कएलनि। ‘‘आजु साँझ तोहर लग रहि सकैत छी?’’ रवि कारण पुछलक। दिनेश कहला, ‘‘घरमे झगड़ा भेल अछि। एखन विस्तार नहि।’’ रवि कहलकेँ, ‘‘आबि जाउ। मुदा कोनो जल्दबाजी नहि करिह।’’ दिनेश घरक

आलमारीसँ दू जोड़ी कपड़ा निकाललनि। पुरान विवाहक फोटो एखनहुँ देवालपर छल। ओ बक्सा उठबैत रुकलाह। पति-पत्नीक सम्बन्धमे अन्तिम निर्णय तुरन्त लेब हुनका उचित नहि लगल, मुदा आजु राति एक्के घरमे रहब सेहो असह्य छल।

रविक फोन रखलाक बाद दिनेश अपन साथी नारायणकेँ भेटबाक सोचलनि, जे कागज-पत्तरक विषयमे जानकारी रखैत छल। मुदा तुरन्त ओ निर्णय बदलि देलनि। निजी दाम्पत्यक समाचार बजारेमे पसारि देब हुनका उचित नहि लगल। बैंकक कागजक लेल नियमसँ आवेदन करब आ जरूरत पड़ला पर पेशेवर कानूनी सलाह लेब—ई अधिक विश्वासयोग्य बाट छल। क्रोधमे रतनक घरक आगाँ पहुँचि गारि देनाइ सरल छल; तकर परिणाम अपन नौकरी, प्रतिष्ठा आ सम्भावित आपराधिक आरोप पर सेहो पड़ि सकैत छल।

दुपहरिक बाद विभा किरणकेँ भेटय अएलीह। पहिने किरण दरबज्जा खोलबाक साहस नहि जुटा सकलीह। विभा भीतर आबि कुर्सीपर बैसलीह। ‘‘हमर खातासँ दूटा भुगतानक विवरण चाही,’’ ओ कहलीह। किरण फाइल खोलि देखौलथिन, ‘‘एतय स्वीकृतिक प्रति अछि; मूल अभिलेख लेल आवेदन देल गेल अछि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘ई स्वीकृति अहाँ तैयार केने छलहुँ?’’ किरण कहलीह, ‘‘मसौदा हम देखलहुँ। अन्तिम अनुमति रतनजीक कहलापर भेजल गेल।’’ विभा कनेक थमकि पुछलथिन, ‘‘अहाँ हमरा आँखिमे तकि सभ बात कहि सकैत छी?’’ किरणक चेहरा तमतमाएल, फेर फिक्का पड़ि गेल।

विभा आगाँ कहलीह, ‘‘हम एतय अपमान करय नहि अएलहुँ। हमर नाम आ हमर सम्पत्तिक विषयमे स्पष्ट बात चाही।’’ किरण कहलीह, ‘‘जे दस्तावेज उपलब्ध अछि, ओकर प्रति लेबाक अहाँक अधिकार अछि।’’ विभा माथ हिलौलथिन। ‘‘आ घरक सम्बन्धमे?’’ ई प्रश्न किरणकेँ चुप करा देलक। किछु क्षण बाद ओ कहलीह, ‘‘हम गलती केने छी। हमरा हुनकासँ निजी सम्बन्ध रहल अछि।’’ विभा आँखि मूनि लेलथिन। ओ जे आशङ्का लेने छलीह, से आब शब्द बनि सोझाँ छल। ओ चिल्लेलीह नहि। पाछाँ रखल कुर्सीक हत्था कसि धयने रहलीह। ‘‘ई बात रतन अपना मुँहसँ किएक नहि कहि सकलाह?’’ हुनक स्वरमे घृणा सँ बेसी थकान छल।

किरण उत्तर देलथिन, ‘‘हम हुनक उत्तर नहि दऽ सकैत छी। अपन उत्तर देब आवश्यक बुझैत छी।’’ विभा कहलथिन, ‘‘अहाँकेँ ई बुझबाक समय नहि भेटल जे दोसर घर सेहो घर होइत अछि?’’ किरण आँखि नीचाँ कएलथिन। ‘‘भेटल छल। हम अनदेखी केलहुँ।’’ विभा उठि ठाढ़ भेलीह। ‘‘हमर नामपर कएल गेल भुगतानक दस्तावेज सही-सही दिअ। निजी सम्बन्धक पीड़ा अलग अछि, आर्थिक छल अलग। दुनूकेँ एक्के क्षमा मे नहि समेटब।’’ ओ दरबज्जा खोलि बाहर निकलि गेलीह। किरण हुनका रोकबाक प्रयास नहि कएलथिन।

विभाक गेलाक बाद किरण खिड़की लग ठाढ़ भेलथिन। फाटकपर नैना एकटा वृद्ध आवेदककेँ कुर्सी दऽ रहलीह। कार्यालयक सामान्य काज चलि रहल छल, मुदा किरणक लेल प्रत्येक परिचित वस्तु अपरिचित भऽ गेल छल। ओ अपन वेतनक पर्ची, छुट्टीक आवेदन आ पुरान नियुक्तिपत्र अलग रखलथिन। जँ जाँचमे कागज मँगल जाए तँ सही अभिलेख देबाक छल, अपन बचाव लेल ककरो नामपर झूठ नहि राखबाक छल। एहि निर्णयसँ हुनक गलती मेटायल नहि, मुदा आगामी गलती रोकबाक पहिल उपाय भेटल।

साँझ दिनेश कार्यालय पहुँचलाह। किरणक कोठरी लग हुनका देखिते कुसुम आश्चर्यसँ पुछलथिन, ‘‘ककरो बजाउ?’’ दिनेश कहला, ‘‘किरणकेँ कहू, हम अएल छी।’’ किरण बाहर अएलथिन। दिनेश दबले स्वरमे कहलनि, ‘‘रतन कतय छथि?’’ ‘‘बैठकमे,’’ किरण उत्तर देलथिन। ‘‘हम ओकरासँ प्रश्न करब।’’ किरण कहलीह, ‘‘अहाँ स्वतंत्र छी। मुदा झगड़ा कऽ अपनाकेँ अपराधमे मत फँसाउ।’’ दिनेश भनभनाइत कहलनि, ‘‘अपराध शब्द अहाँक मुँहसँ नीक लगैत अछि?’’ किरण उत्तर नहि देलथिन। दिनेश कार्यालयक फाटकसँ बाहर चलि गेलाह। ओ निर्णय कएलनि जे पहिने ऋणक अभिलेखक नकल लेताह, तकर बाद रतनसँ लिखित उत्तर मँगताह।

राति दिनेश रविक घर पहुँचलाह। रवि भोजन परसलक। दिनेश बहुत देरी धरि किछु नहि कहलनि। फेर एतबे कहला, ‘‘जकर संग घर बनेलहुँ, ओहि पर भरोसा नहि रहल।’’ रवि पुछलक, ‘‘किछु ऐसा भेल अछि जे तूँ अपनाकेँ हानि पहुँचएबह वा ककरो मारएबह?’’ दिनेश माथ हिलौलनि। ‘‘नहि। क्रोध अछि, मुदा हम ओहन काज नहि करब।’’ रवि कहलकेँ, ‘‘तँ आइ विश्राम कर। भोरमे ठण्ढा मोनसँ सोचिह।’’ दिनेश सोबय गेलाह, मुदा

ओछाइनपर आँखि मूनि भिन्न-भिन्न घटना देखैत रहलाह—किरणक पहिल वेतन, साझा बर्तन, विवाहक दिन, आ आजुक स्वीकार।

रविक घरमे दिनेशकेँ गामक बूढ़ मामा याद पड़लाह, जे प्रत्येक झगड़ाक बाद कहैत छलाह—''आगि पर तेल दिअ तँ घर नहि बाँचत।'' दिनेश एखन ककरो आशीर्वादक वाक्य सुनबाक मूडमे नहि छलाह। तथापि ओ बुझैत छलाह जे क्रोधमे हिंसा केलासँ ओकर अपमान घटत नहि। ओ रविक सँग बैठि ऋणक कागजक सूची बनौलनि। ''ई आर्थिक विषय सुलझेबाक लेल किरण सँ बात करब आवश्यक अछि,'' ओ कहलनि, ''बाकी सम्बन्धक निर्णय समय लऽ कऽ करब।'' रवि बिना उपदेश देने सहमति देलक।

किरण अपन घरमे अकेली रहि गेलीह। रसोईमे भोरुक आधा बनल तरकारी एखनहुँ छल। ओ ओकरा गरम नहि कएलथिन। मेजपर दिनेशक खाली कप देखलथिन; एकटा छोट सामानो एकाएक अर्थपूर्ण भऽ गेल छल। ओ रतनक फोन उठौलथिन नहि। अपन कार्यालयक पञ्जीमे जे लिखित आदेश हुनका याद छल, तकर तारीख अलग कापीमे लिखलथिन। ओहि काजमे अपन दोष कम नहि होइत छल, मुदा आगाँ आरो झूठ जोड़बाक बदला तथ्य सम्हारनाइ सम्भव छल। रतनक सम्बन्धमे व्यक्तिगत निर्णय ओ एखन नहि लेलीह, मुदा अपन पति आ विभासँ बजल साँच घुरा कऽ वापस नहि लऽ सकैत छलीह।

आँगनक कोनमे किरणक विवाहक समय रोपल अमरूदक गाछ छल। दिनेश प्रत्येक बरख ओकर डाँड़क छँटाइ करैत छलाह। एहि बरख गाछमे फल कम लागल छल, मुदा ओ ओकरा काटि फेँकबाक बात कहियो नहि केने छलाह। किरण गाछक नीचाँ गेलीह। हुनका अपन जीवनक तुलना गाछसँ करबाक मन नहि छल; मात्र ई याद पड़ल जे वर्षक पर वर्ष एकटा घर छोट-छोट काजक सहयोगसँ बनैत अछि। झूठक एकटा लम्बा सिलसिला एहि सहकार्यकेँ क्षति पहुँचौने छल। ओहि क्षतिक मरम्मत कियो कहलक वा चाहलक मात्रसँ नहि होयत।

रतनक एकटा पुरान सन्देश फोनमे देखाइत छल—कार्यालयक यात्रा लम्बा होयत, घरमे कोनो बहाना कहि दिअ। किरण ई पङ्क्ति पढ़लथिन। ओहि समय हुनका ई छोट छल

लागल छल। आब बुझाइत छल जे हरेक बहाना दोसर बहानाक बाट बनबैत गेल। ओ सन्देश मेटौलथिन नहि। कालक्रममे अपन काज बुझबाक लेल पुरान सचकेँ सुरक्षित राखब जरूरी छल। मुदा ई सन्देश अपन पति लेल तुरन्त देखाएब कि सम्बन्धित कानूनी विषयमे बादमे देब, से ओ एखन निर्धारित नहि केलथिन।

अगिला भोरक पहिले दिनेशसँ एकटा सन्देश आएल—‘किछु दिन अलग रहब। ऋणक पूरा कागज पठाउ। हम बिना झगड़ा अपन बात कहब।’ किरण उत्तर लिखलथिन, ‘कागज जुटा रहल छी। जे हमरा पता अछि, से नुकाएब नहि।’ भेजि देलाक बाद ओ बहुत देरी धरि पर्दा तकैत रहलीह। कार्यालयमे हुनका फेर लोकक प्रश्न सुनबाक छल, घरमे अपन निर्णयक परिणाम भोगबाक छल। विवाहेतर सम्बन्धक बात कहि देनाइ केवल पहिल काज छल; टूटल विश्वासक सामना करब आब आरम्भ भेल छल।

अध्याय ३० : प्रेमपर संशय

दोसर दिन नैनाक घरमे भोरक उजास भेलोपर सरस्वती चूल्हि नहि जरेलीह। राति चन्दनक स्वीकारोक्तिक बाद ओ देरि धरि जागल छलीह। नैना उठि रसोईमे गेलीह तँ माय दरबज्जाक कात बैसि तुलसीक चौरा दिस तकैत छलीह। नैना पुछलथिन, ‘‘नीकसँ सुतलहुँ?’’ सरस्वती माथ हिलौलथिन। ‘‘नीन ककरा अबैत अछि? तोहर भाइ जे काज केलक, तकर परिणाम एखन बुझय पड़त।’’ नैना मायक कात बैसि कहलीह, ‘‘आइ निरीक्षक सुजातासँ भेटब। जे जानैत अछि, से कहत। बाकी हमसभ अपन मनसँ निर्णय नहि देब।’’ सरस्वती पुछलथिन, ‘‘अभय संग जायत?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘ओ थानाक बाट बताओत। बयान चन्दन अपने देत।’’

चन्दन भीतरसँ निकलल तँ ओकर आँखि सूजल छल। फोन जेबीमे राखि ओ दरबज्जापर ठमकि गेल। नैना कहलीह, ‘‘नाश्ता करि लिअ। खाली पेट भय आरो पैघ लगैत अछि।’’ चन्दन दू कौर रोटी खा कऽ पानि पीबय लागल। सरस्वती ओकर माथ छू कऽ कहलीह, ‘‘जे गलत केलह, स्वीकार करिह। मुदा जे नहि केलह, डरक कारण अपने माथ मत लऽ लेब।’’ चन्दन मायक हाथ पकड़ि पुछलक, ‘‘जँ पुलिस हमरा हिरासतमे लऽ लेत तँ अहाँ सभ की करब?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘पहिने जे आवश्यक अछि, से करब। कानूनक विषयमे योग्य सलाह लेब। तोरा छोड़ि नहि देब, मुदा झूठो नहि बाजब।’’

थानाक बाहर अभय ठाढ़ छलाह। ओ काल्हि रातिए नैना कैँ कहने छलाह जे एहि भेटक विषयमे समाचार नहि लिखताह। नैना हुनका देखिते पुछलथिन, ‘‘अहाँ साँचमे कोनो बात पत्रकारिताक लेल उपयोग नहि करब?’’ अभय कनेक अचकचौलाह। ‘‘तोहर परिवारक व्यक्तिगत बयान बिना अनुमति प्रकाशित नहि करब। मुदा जे बात पुलिसक आधिकारिक अभिलेखमे सार्वजनिक होयत, ओकर समाचार लिहाजसँ देखब पड़त।’’ नैना कहलीह, ‘‘हमरा एखन दोसर बात सुनबाक मन नहि। चन्दनक जानकैँ खतरा अछि।’’ अभय उत्तर

देलनि, ‘‘ओकर सुरक्षा पहिने। पत्रकार रहब आ तोहर संग ठाढ़ रहब एक्के बात नहि; दुनूक सीमा बुझैत छी।’’ नैना हुनक उत्तरमे आश्वासन खोजलथिन, मुदा शब्दसभ हुनका कठोर लगलनि।

निरीक्षक सुजाता चन्दनसँ भेटबाक लेल अलग समय देने छलीह। ओ पहिले नाम, पता आ काजक सामान्य विवरण पुछलथिन। चन्दनक गला सुखि रहल छल। नैना बाहर प्रतीक्षा करैत छलीह। सुजाता स्पष्ट कएलथिन जे जँ ओकर कथन ओकरा विरुद्ध प्रश्न उठबैत अछि तँ विधिसम्मत अधिकार आ कानूनी सलाहक विषयमे जानकारी देल जाएत। चन्दन कहलक, ‘‘हम नरेश बाबूकेँ मारैत नहि देखने छी। मुदा ओहि राति मनोजकेँ गाड़ीमे लऽ गेल रही।’’ सुजाता ओकर कथनक समय, बाट आ गाड़ीमे रहल लोकक विवरण अलग-अलग दर्ज करैत गेलीह।

सवालक बीच चन्दन दुबारा कहलक जे ओकरा एकटा नम्बर आधा याद अछि। सुजाता ओकरा पूरा नम्बर याद करबाक दबाव नहि देलथिन। ‘‘जतेक निश्चित अछि, ओतबे कहू। किछु बादमे याद पड़त तँ अलग सँ बतायब।’’ चन्दन नहरक पुलक बत्ती आ मोड़क विषयमे जे देखल छल से बतौलक। ओहि रातिक सम्भावित समयमे अपन फोनक सन्देशक विवरण सेहो उपलब्ध करौलनि। सुजाता कहलीह, ‘‘ई जानकारी महत्वपूर्ण भऽ सकैत अछि। मुदा एहि सँ निष्कर्ष निकालबाक लेल अन्य प्रमाण चाही।’’ चन्दनक आँखि एक बेर पानि सँ भरि गेल। ओ कहलकेँ, ‘‘मनोज हमरा चुप रहबाक कहने छल।’’ सुजाता धमकीक वास्तविक शब्द आ समय पुछलथिन।

बाहर नैना घड़ी तकैत रहलीह। अभय एकटा दूरीपर बैसल छलाह। हुनका जे खबरक अगिला कड़ी लिखबाक छल, ओकर कागज झोलामे छल। ओ निकाललनि नहि। नैना पुछलथिन, ‘‘अहाँ केहन पत्रकार छी जे जकर घरमे संकट देखैत छी, ओकरो विषयमे लिखबाक बात मोनमे राखैत छी?’’ अभय कहला, ‘‘एहन पत्रकार जे सार्वजनिक अपराध पर मौन नहि रहय चाहैत अछि। मुदा आजु तकर विवरण नहि लिखब।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँक समाचारमे मनुष्य कखन पात्र बनि जाइत अछि, ई अहाँ बुझैत छी? हमर भाइ समाचारक शीर्षक नहि, हमर घरक लोक अछि।’’ अभय चुप भऽ गेलाह।

ओहि चुप्पीक भीतर दुनूकेँ अपन पुरान भेट याद पड़ल। विद्यालयक कार्यक्रममे अभय पहिल बेर नैना केँ कविता पढ़ैत देखने छलाह। तखन दुनूकेँ भविष्यमे एतेक कठिन प्रश्नक अनुमान नहि छल। फेर बरखक दूरी, अलग काज, घरक जिम्मेवारीक बीच पुनः भेंट भेल। अभय नैनाक स्पष्ट बातक मान रखैत छलाह; नैना अभयक अन्यायक विरुद्ध लिखबाक साहसकेँ पसिन करैत छलीह। आब ओही गुण संकट बनि सोझाँ ठाढ़ छल। नैना चाहैत छलीह जे अभय केवल हुनका अपन लोक मानि सभ जोखिम रोकि दथि। अभय बुझैत छलाह जे सत्यक सार्वजनिक महत्त्व अपन प्रियजनक दुःखसँ अलग नहि, मुदा सदैव एक्के रूप सेहो नहि होइत अछि।

सुजाता चन्दनक बयान पूरा कऽ हुनका बाहर पठौलथिन। नैना चन्दनक मुँह देखिते पुछलथिन, ‘‘सभ कहलह?’’ चन्दन माथ हिलौलक। ‘‘जे देखलहुँ से कहलहुँ। एकटा बात आब मन पड़ल, मुदा निश्चित नहि। ओहि विषयमे सेहो बतौलहुँ।’’ नैना राहतक साँस लेलथिन। सुजाता हुनका सभकेँ कहलीह जे जाँचमे सहयोग जारी राखथि, सम्पर्कक आवश्यक जानकारी सुरक्षित राखथि आ धमकी भेटला पर तुरन्त सूचित करथि। गिरफ्तारी होयत कि नहि, एकर कोनो अग्रिम निर्णय ओ नहि सुनौलथिन। चन्दन बाहर निकलैत पहिल बेर सड़कक सामान्य कोलाहल सुनि सकलक।

थानासँ बाहर अबिते चन्दन पुलिस-गाड़ीक नम्बर देखलक। ओ अपन पुरान काजक रातिसभ सँ सम्बन्धित नम्बरसँ एकर तुलना करबाक प्रयास कएलक, फेर स्वयं रुकि गेल। नहरक राति ओकरा जे आधा नम्बर मोन छल, ओहि विषयमे बयान देल चुकल छल। नव-नव अनुमान जोड़ैत रहलासँ साँच साफ नहि होयत। नैना पुछलथिन, ‘‘किछु और याद पड़ल?’’ चन्दन कहलक, ‘‘नहि। आब जतेक जानैत छलहुँ, देलहुँ।’’ नैना कहलथिन, ‘‘ठीक अछि। एखन विश्राम कर।’’

थानासँ घुरैत अभय संग चलबाक प्रयास कएलनि। नैना कहलीह, ‘‘हम चन्दनकेँ घर पहुँचा दैत छी। अहाँ अपन काज करू।’’ अभय पुछलनि, ‘‘साँझ भेटब?’’ ‘‘नहि जानि,’’ नैना उत्तर देलथिन। ‘‘आब हमरा घर सम्हारबाक अछि।’’ अभय कहला, ‘‘हम सहायता करब तँ?’’ नैना कठोर स्वरमे कहलीह, ‘‘सहायताक अर्थ समाचार नहि।’’ अभय एहि बेर

कोनो सफाइ नहि देलनि। ‘‘ठीक अछि। अहाँक बात बुझलहुँ।’’ दुनू अलग बाट पकड़लनि। चन्दन बहिनसँ पुछलक, ‘‘हमरा कारण अहाँ दुनू झगड़ा कएने छी?’’ नैना कहलीह, ‘‘तोहर कारण नहि; दुनू अपन-अपन डरक कारण।’’

घर पहुँचिते सरस्वती चन्दनक हाथ पकड़ि पुछलथिन, ‘‘कोनो बात बाँचल तँ नहि?’’ चन्दन कहलकैं, ‘‘जतेक जानैत छी सभ कहलहुँ।’’ माय चूल्हिपर भात चढ़ौलथिन। घरक साधारण काज फेर शुरू भेल, मुदा वातावरणमे पुरान निश्चिन्तता नहि घुरल। नैना अपन कोठरीमे गेलीह। मेजपर अभय देने पुस्तक पड़ल छल—समाचार लेखनपर एकटा पुरान संग्रह। पन्नाक भीतर हुनक लिखल छोट वाक्य छल: ‘जे देखैत छी, ओकरा बुझबाक धैर्य राखू।’ नैना पुस्तक बन्द कएलथिन। ओ वाक्य एखन ओ अपन लेल सेहो पढ़ि रहल छलीह।

दुपहरि नैनाक मामा रामप्रसादक फोन आएल। परिवारमे पूनमक मामला आ चन्दनक थानामे गेलाक चर्चा पहुँचि गेल छल। मामा पहिने मायक स्वास्थ्य पुछलनि, फेर कहलनि, ‘‘पत्रकार अभय तोहर बहुत लग किएक अबैत अछि?’’ नैना कहलीह, ‘‘ओ पुरान मित्र छथि। कठिन समयमे सहयोग करैत छथि।’’ मामा पुछलनि, ‘‘हुनकर जाति की अछि, से जानैत छह ने? परिवारमे एहन सम्बन्धक बात उठत तँ लोग की कहत?’’ नैना एहि प्रश्नपर तमतमा गेलीह। ‘‘अहाँ हमरा चन्दनक विषयमे पुछि सकैत छी, मायकेँ भेटि सकैत छी। मुदा मित्रक जाति पूछिकऽ हुनकर काजक मूल्य नहि जोखू।’’

मामा चुप नहि भेलाह। ‘‘हम तोहर भलाइ चाहैत छी। समाजक मर्यादा बुझब जरूरी अछि।’’ नैना कहलीह, ‘‘मर्यादा एतबे नहि जे केकर जन्म कतय भेल। जे संकटमे संग ठाढ़ रहैत अछि, ओकरो मान अछि।’’ मामा कहलनि, ‘‘तूँ एखन आक्रोशमे छह। बादमे बात करब।’’ फोन कटि गेल। नैना बहुत देरी धरि मोबाइल तकैत रहलीह। अभयसँ ओकर मतभेद छल, मुदा ककरो जन्मक आधारपर ओकरा छोट कहब एहन बात छल जाहिसँ नैना सहमत नहि भऽ सकैत छलीह। अपन निर्णय लेबाक अधिकारक मोल ओ पहिनेसँ जनैत छलीह; आब ओकरा घरक भीतर सेहो स्पष्ट करबाक छल।

फोन रखलाक बाद नैना मायक पुरान सन्दूकसँ बाबूक एकटा पत्र निकालि देखलथिन। पिता हुनका पढ़ाइ पूरा कएलाक बाद अपन निर्णय स्वयं लेबाक सलाह देने छलाह। ओहि पन्नामे जाति वा कुलक उपदेश नहि छल; केवल इमानदारी आ श्रमक बात छल। नैना सोचलथिन जे परिवारक सम्मानक अर्थ ककरो प्रति अपमान नहि होयब चाही। अभयसँ मतभेदक समाधान ओकर पत्रकारिताक प्रश्नक उत्तर सँ होयत; मामा जे जातिक बात उठौलनि, से दोसर अन्याय अछि। दुनू विषयकेँ एक-दोसरमे मिलाकऽ देखब अनुचित होयत।

अभय अपन कार्यालय पहुँचलाह तँ मञ्जरी मसौदा देखैत छलीह। ओ पुछलथिन, ‘‘चन्दनक थानामे गेलाक खबर भेटल अछि। अहाँ लिखब?’’ अभय कहला, ‘‘ओ व्यक्तिगत रूपसँ जानकारी देने अछि। आधिकारिक पुष्टि आ सम्बन्धित पक्षक उत्तर बिना हम ओकर नाम नहि लिखब।’’ मञ्जरी माथ हिलौलथिन। ‘‘पत्रकारिताक स्वतंत्रता आ मनुष्यक सुरक्षामे विरोध नहि होयबाक चाही। मुदा सार्वजनिक हितक प्रश्न छूटय नहि।’’ अभय कहला, ‘‘हमारा ई बात बुझैत देरी भेल जे मित्रक विश्वास आ समाचारक स्रोतक सम्बन्ध अलग होइत अछि।’’ मञ्जरी कहलीह, ‘‘तखन पहिने अपन मन साफ करू। समाचार सत्य होयत, मुदा ओ लिखबाक समय आ तरीका सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।’’

एहि बीच अभयक पिता फोन कएलनि। खेतमे पानीक मोटर खराब भेल छल। ‘‘रविवार घर अबैत छह?’’ ओ पुछलनि। अभय कहला, ‘‘प्रयास करब।’’ पिता कहलनि, ‘‘तोर माय नैनाक मायक विषयमे पुछैत छथुन। हुनकर स्वास्थ्य ठीक अछि ने?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘घरमे संकट अछि। हम आजु थोड़बे सहायता कऽ सकलहुँ।’’ पिता किछु देर चुप रहलाह। ‘‘जकरा सँग अपनापन अछि, ओकरा बात सुनबाक सेहो जगह दिअ। काजक हड़बड़ीमे लोकक बात बीचमे नहि काटिह।’’ अभय अपन पिताक सामान्य उपदेशमे एखन दिनक कटु बातचीतक उत्तर सुनि रहल छलाह।

साँझ नैना सरस्वतीक दवाइ आनय दोकानपर गेलीह। दोकानक सोझाँ सविता भेटलीह। ओ पुछलथिन, ‘‘अभयजीक समाचार पढ़लहुँ। परीक्षार्थीक माँग ठीकसँ छपल अछि।’’ नैना कहलीह, ‘‘ओ काज बहुत सावधानीसँ करैत छथि।’’ सविता हँसलीह।

‘‘अहाँक स्वर भारी लगैत अछि। सभ ठीक?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘घरसँ सम्बन्धित प्रश्न बेसी अछि।’’ सविता कहलीह, ‘‘आन्दोलनमे सेहो लोक कहैत अछि—अभी लिखू, अभी बोलू। मुदा ककरो निजी संकटक समय अलग होइत अछि।’’ नैना आ सविता किछु दूर संग चललीह। दुनूक काज अलग छल, मुदा सही निर्णयक समय चुनबाक कठिनाइ मिलैत-जुलैत छल।

सविता अपन झोलासँ परीक्षार्थीसभक ज्ञापन निकालि देखौलथिन। कागजपर अनेक हस्ताक्षर छल, मुदा किछु लोक अपन नाम लिखबाक साहस नहि जुटौने छल। ‘‘कोनो कहैत अछि फेर परीक्षा रद्द भऽ जायत; कोनो कहैत अछि नाम देल तँ रोजगारक अवसर घटत,’’ सविता बतौलथिन। नैना कहलीह, ‘‘चन्दन सेहो एहन भयमे फँसल अछि। मुदा ओकर समस्या आब आरो गम्भीर भऽ गेल।’’ सविता पूछलथिन, ‘‘सहयोग चाही तँ कहब।’’ नैना कहलीह, ‘‘अभी परिवारक आवश्यक काज करबाक अछि। अहाँक सद्भावना याद राखब।’’

साँझ उतरिते अभय नैनाकेँ छोट सन्देश पठौलनि—‘आइ अहाँक बात पूरा सुनि नहि सकलहुँ। ओहि लेल क्षमा। चन्दनक कथनकेँ प्रकाशित नहि करब। जाँचक आधिकारिक तथ्य भेटल तँ पहिने संवेदनशीलता आ कानूनक सीमा देखब। अहाँक संग बहस नहि, बातचीत करबाक इच्छा अछि।’ नैना सन्देश पढ़लथिन। तुरन्त उत्तर नहि देलथिन। अभय अपन सीमाक बात कहि रहल छलाह। ई छोट बात हुनका पहिल बेर स्पष्ट बुझायल।

रातिक भोजनक बाद नैना आ सरस्वती बरामदामे बैसलीह। चन्दन भीतर किताब खोलने छल, मुदा पढ़ाइमे मन नहि लगैत छल। सरस्वती पुछलथिन, ‘‘अभय फेर फोन कएलनि?’’ नैना कहलीह, ‘‘सन्देश आएल अछि।’’ ‘‘तोरा किछु कहबाक अछि?’’ ‘‘अछि, मुदा एखन मन शान्त नहि।’’ माय अपन हाथ ओकर माथपर फेरैत कहलीह, ‘‘प्रेम केवल नीक दिनक गप्प नहि होइत अछि। कठिन दिनमे दू लोक एक-दोसरक भय सुनि सकैत अछि कि नहि, से देखबाक होइत अछि। मुदा अपन विवेक छोड़ि नहि देब।’’ नैना मायक बात सुनि किछु देर चुप रहल।

पछिला किछु मासमे अभय नैनाकेँ कोनो पैघ वचन नहि देने छलाह। ओ बस आवश्यक समयमे उपस्थित रहलाह—पूनमक परिवारक संग, नरेशक घरमे, अस्पतालक बाटपर। नैना ओहि उपस्थिति के प्रेमक आरम्भ मानने छलीह। आब हुनका पूछबाक छल जे ओ उपस्थिति समाचारक जिज्ञासासँ अलग कतेक दूर धरि जा सकैत अछि। दोसरा दिस अभयकेँ ई बुझबाक छल जे पत्रकारक कर्तव्य निर्वाह करैत काल अपन प्रियजनक पीड़ाकेँ अनाम भीड़ नहि बना सकैत छथि। दुनूक जिदमे अपन-अपन साँच छल, मुदा एक-दोसरक आधा साँच सुनब प्रेम नहि।

सरस्वती अपन युवावस्थाक एकटा घटना कहलीह। ‘‘तोहर बाबूसँ हमर विवाहक पहिने बहुत लोक कई बात कहने छल। घरक अवस्था, कमाइ, रिश्तेदार—सभ प्रश्न उठल। मुदा हम दुनू अपन बात स्पष्ट कहने रही। बादमे समस्यासभ आयल, मुदा एक-दोसरसँ बात नुकएब नहि चाहलहुँ।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘सभ बात कहब सम्भव होइत अछि?’’ माय कहलीह, ‘‘सभ बात एक्के दिन नहि; मुदा जे आवश्यक अछि, ओकरा सदा लेल टारल नहि जा सकैत अछि।’’ नैनाकेँ एहिमे अपन आ अभयक अगिला बातचीतक बाट देखायल।

नैना अन्ततः लिखलथिन—‘आइ हमरा समय चाही। अहाँक सन्देश पढ़लहुँ। हम बातचीत करब, मुदा पहिने घरक स्थिति सम्हरय दिअ।’ अभय तुरन्त उत्तर नहि देलनि। देरि राति केवल एतबे आएल—‘ठीक अछि। जे सहायता चाही, बताउ। बिनु अहाँक कहने घर नहि आएब।’ नैना फोन राखि देलथिन। ओहि उत्तरमे दबाव नहि छल। खिड़की बाहर आकाश एकसमान अन्हार नहि छल; किछु घरमे दीप जरि रहल छल। अपन घरक भीतर सेहो ओ निश्चय कएलथिन जे अगिला दिन चन्दनक पढ़ाइ आ रोजगारक वैध बाटक बात फेर उठेब। घर बचाएब केवल अपराधसँ दूर रहब नहि, सम्भव जीवनक नब व्यवस्था खोजब सेहो अछि।

एहि बीच चन्दन कोठरीमे बैठि अपन प्रवेशपत्रक पुरान प्रति निकाललक। ओ मनमे हिसाब कएलक—जँ वैध काज भेटि जाए तँ ऋण चुका सकबाक अवधि लम्बा होयत, मुदा राति-राति नहरक बाट चलबाक भय नहि रहत। नैना पानि देबाक लेल भीतर गेलीह तँ ओ प्रवेशपत्र देखलथिन। ‘‘फेर पढ़बाक मन अछि?’’ ओ पुछलथिन। चन्दन कहलक, ‘‘पहिने

एहि सङ्कटसँ निकलि लिअ। मुदा पुस्तक फेँकब नहि।'' नैना ओकर एहि छोट निर्णयकेँ सेहो महत्त्व देलथिन।

दूसर बिहान अभय अपन डायरीक पहिल खाली पन्नापर लिखलनि—'समाचार लेल जे जानैत छी, तकर प्रमाण; सम्बन्ध लेल जे कहैत छी, तकर उत्तरदायित्व।' ओ पन्ना ककरो देखेबाक लेल नहि छल। नैना एहि बीच पूनमक मायक फोन उठौलथिन। ओ पुछैत छलीह जे बेटीकेँ खोजबाक काज कतय पहुँचल। नैना अपन निजी मतभेदक चर्चा नहि केलथिन। ''जाँच चलि रहल अछि। जे भरोसाक जानकारी भेटत, हम बतायब,'' ओ कहलीह। अपन परिवारक भयक बीच सेहो पूनमक परिवारकेँ विसरि नहि सकैत छलीह। प्रेमक संशयक बादो जीवनक काज रुकल नहि; प्रश्नसभ क्रमसँ अपन उत्तर मँगैत रहल।

अध्याय ३१ : झूठ आरोप

भोरमे नैनाक फोन लगातार बाजि रहल छल। राति ओ मोबाइलक आवाज बन्द कऽ सुतल छलीह। आँखि खुजलाक बाद देखलथिन तँ अठारहटा सन्देश छल। सविता, रीना, कार्यालयक महेश आ दूटा अपरिचित नम्बर। एकटा सन्देशमे केवल प्रश्न छल—‘ई साँच अछि?’ दोसरमे अखबारक कटिंग जकाँ बनाओल चित्र। नैनाक फोटो लग लिखल छल जे नई दिशा रोजगार केन्द्रक एक कर्मचारी परीक्षार्थीसभसँ धन वसूलि ठगी करैत छलीह आ पुलिस हुनक खोजमे अछि। तलमे नकली हस्ताक्षर आ संस्थाक चिह्न छल। नैना ओहि चित्रकेँ बड़का कऽ देखलथिन। हुनक फोटो रोजगार केन्द्रमे नियुक्तिक पहिल सप्ताह खींचल गेल छल। बाकी कागज ओ पहिल बेर देखैत छलीह।

रसोईमे सरस्वती देवी चाय चढ़ा रहल छलीह। नैनाक चेहरा देखि पुछलथिन, ‘‘की भेल?’’ नैना फोन देखौलथिन। सरस्वती चश्मा लगा कऽ अक्षर पढ़लथिन। ‘‘ई की लिखने अछि? तोरा नामपर टका लेबाक आरोप?’’ ‘‘माय, हम ककरोसँ एक पाइ नहि लेने छी।’’ सरस्वतीक स्वर कठोर भऽ गेल, ‘‘हम जनैत छी। मुदा जे नहि जनैत अछि, ओकर मुँह के रोकत?’’ चन्दन कोठरीसँ निकलि आएल। समाचार देखिते ओ कहलक, ‘‘मनोजक लोकक काज होएत। हमर कारण अहाँ सभकेँ—’’ नैना बीचमे रोकलथिन, ‘‘अभी अनुमान नहि। पहिने देखय दिअ जे ई कागज कतयसँ आएल अछि।’’

सविता फोनपर बतौलथिन जे परीक्षा रद्द होयबाक विरोधमे बनल समूहमे राति एगारह बजे ई चित्र पठाओल गेल। किछु मिनटमे दोसरा समूहसभमे पहुँचि गेल। चित्रक संग लिखल छल—‘बेरोजगारक नेता बननिहार सभ पहिने अपन हिसाब दिअ।’ जकरा नैना एक बेर अपन कार्यालयक शिकायतक कागज देखौने छलीह, ओ सभ सेहो प्रश्न करय लगल। सविता कहलीह, ‘‘हम समूहमे लिखि देने छी जे आरोपक स्रोत स्पष्ट नहि अछि। मुदा खाली हमर कहलासँ बात नहि थामत। अहाँक नामपर लिखल पन्ना आओर कतय जा

रहल अछि, से देखू।'' नैना हुनका धन्यवाद देलथिन आ ओहि चित्रक मूल प्रति आगाँ नहि पठेबाक अनुरोध कएलथिन।

दस बजेसँ पहिने नैनाकेँ कार्यालय पहुँचबाक छल। मुदा फाटकपर प्रहरी ओहि दिन रस्ता रोकि देलक। ''प्रबन्धकक आदेश अछि, अहाँ पहिने किरणजीसँ बात करू।'' पहिल बेर एहन व्यवहार भेल छल। भीतर प्रबन्धकक कक्ष लग किछु कर्मचारी ठाढ़ छलाह। हुनका सभक दृष्टि नैनापर गेल, फेर सभ अपन काजमे लगि गेलाह। महेश धीरेसँ कहलक, ''हमरा तँ बुझाइते नहि अछि, नैना जी। जँ सचमुच पुलिस खोजैत तँ कार्यालयमे सूचना आबित।'' नैना कहलीह, ''यही बात लिखित रूपमे कहबाक आवश्यकता अछि। ककरो कानाफूसीसँ हमरा निर्दोष साबित नहि होयत।''

किरण अपन मेजपर बैठल छलीह। सोझाँ दूटा रजिस्टर खुलल छल, मुदा ओ कागज नहि, नैनाक चेहरा देखि रहल छलीह। ''एहि सभक कारण संस्था बदनाम होइत अछि,'' ओ कहलीह। नैना शान्त स्वरमे पुछलथिन, ''कुन बातक कारण—झूठ आरोपक कारण कि हमर उपस्थिति कारण?'' किरण कनेक सकपका गेलीह। ''मालिक चाहैत छथि जे जाँच होयबाधरि अहाँ सार्वजनिक बयान नहि दिअ।'' ''हमरा विरुद्ध बयान आबि सकैत अछि, मुदा हम अपन सफाइ नहि देब?'' ''सफाइ देबाक उचित बाट अछि।'' ''तँ कृपया लिखित सूचना दिअ—कुन कागजक आधारपर आरोप अछि, आ हमर कार्यालयी स्थिति की रहत।''

नैना अपन नियुक्तिक पहिल दिनक कागज याद कएलथिन। ओतय हुनक काज आवेदनक क्रम लिखब, जमा रसीदक संख्या मिलाएब आ अभ्यर्थीकेँ कार्यालयक सम्बन्धित मेज धरि पठाएब छल। नगद राशि लेबाक अधिकार हुनका कहियो नहि देल गेल छल। एकाध बेर कियो रुपैया हुनका दिस बढ़ौने छल तँ ओ काउण्टरक नियम बतौने छलीह। एखन ओहि पुरान घटनाक महत्त्व बुझायल। जँ साँचक पक्षमे ठाढ़ होयब अछि तँ केवल 'हम एहन नहि छी' कहब पर्याप्त नहि; अपन काजक सीमा आ ओहि सीमाक पालनक तथ्य सेहो प्रस्तुत करबाक पड़त।

रतन सिंह दू मिनट बाद भीतर आएलाह। रातिक नीन्नक कमी हुनक आँखिक नीचाँ देखाइत छल, मुदा वेशभूषा सदिखन जकाँ व्यवस्थित छल। ‘‘नैना, हम अहाँकेँ अवसर देने रही,’’ ओ कहलनि, ‘‘एखन नाम खराब भेल अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अवसरक लेल आभारी छी। मुदा नियुक्ति आ कार्यक लेखा अलग प्रश्न अछि। अहाँक संस्थाक चिह्नसँ नकली कागज चलि रहल अछि। अहाँ स्वयं पुलिसकेँ सूचना देब?’’ रतन मेजपर हथेली राखि कहलक, ‘‘पहिने हम अपन वकीलसँ विचार करब। अहाँ घर जाउ। आजुक उपस्थिति सम्बन्धमे कार्यालय लिखित सूचना पठाओत।’’ नैना कहलथिन, ‘‘हम अपन द्वारा सम्पादित काजक विवरण लेब। मूल कागज नहि, केवल नियमसँ उपलब्ध प्रतिलिपि।’’ रतन ओहि पर कोनो उत्तर नहि देलनि।

कार्यालयसँ बाहर निकलैत नैना देखलथिन जे दूटा नव अभ्यर्थी फाटक लग परिचयपत्र हाथमे लेने ठाढ़ छथि। एक युवक पूछलक, ‘‘अहाँ नैना मिश्र छी?’’ नैना हँ कहलथिन। ‘‘हमर बड़ भाइ कहैत छथि जे अहाँ हमरासँ पचास हजार टका लेने छी।’’ ‘‘अहाँ स्वयं कखन हमरा देलहुँ?’’ युवक चुप रहल। ओकर दोसर साथी कहलक, ‘‘हम तखन एतय आएलो नहि रही। समूहमे नाम लिखल अछि।’’ नैना पूछलथिन, ‘‘जकरासँ टका लेब कहल जा रहल अछि, ओकर रसीद अछि? तिथि अछि?’’ युवक फोनमे फोटो खोजय लागल। किछु नहि भेटल। नैना कहलीह, ‘‘धन जँ गेल अछि तँ लिखित शिकायत करू। आरोपक स्रोत जाँचू। मुदा बिना भेटने हमर नामपर निर्णय नहि सुनाउ।’’

अभय ओहि समय अपने समाचारपत्रक कार्यालयमे छलाह। सम्पादकक टेबुलपर सेहो ओही चित्रक प्रति पहुँचि गेल छल। सम्पादक पुछलनि, ‘‘ई युवती अहाँक परिचित छथि?’’ अभय सत्य कहलक, ‘‘हँ, पुरान परिचय अछि। रोजगार संस्थासँ सम्बन्धित समाचारमे हुनकासँ जानकारी लेबाक अवसर भेटल अछि।’’ सम्पादक कहलनि, ‘‘तखन समाचारमे अहाँक निजी सम्बन्ध निर्णयपर प्रभाव नहि देबाक चाही। झूठ आरोप देखब तँ ओहो लिखल जा सकैत अछि, मुदा पुलिसक पुष्टि आवश्यक अछि।’’ अभय सहमति देलनि। बिना जाँच ओहि चित्रकेँ समाचारपत्रमे स्थान नहि देल गेल।

अभय नैनाकेँ फोन करबाक पहिने पिछला दिनक सन्देश याद कएलनि। नैना समय मँगने छलीह। ओ एकटा छोट सन्देश पठौलनि—‘अहाँक नामपर घूमि रहल कागज देखलहुँ। समाचारपत्रमे बिना पुष्टि छापल नहि जायत। सहायता आवश्यक हो तँ कहू।’ नैना किछु देर बाद उत्तर देलथिन—‘कागजक स्रोत जाँचबाक अछि। हम पहिले पुलिसक समक्ष आवेदन देब। अहाँ समाचारक काज अपन नियमसँ करू।’ एतेक सँ बेसी दुनू नहि लिखलनि। मुदा एहि छोट आदान-प्रदानमे पछिला दिनक तिक्तता कनेक कम भेल।

थानामे सुजाता कुमारी पहिने नरेशक हत्यासँ सम्बन्धित फाइल देखैत छलीह। नैनाकेँ देखिते ओ बैसबाक सङ्केत देलथिन। नैना अपन फोनमे सन्देशक समय, पठेनिहारक नाम आ उपलब्ध चित्र देखौलथिन। सुजाता पूछलथिन, ‘‘अहाँ एहि संस्थाक कर्मचारी छी। कोनो अभ्यर्थी अहाँकेँ व्यक्तिगत रूपसँ धन देने अछि?’’ ‘‘नहि।’’ ‘‘कियो एहन आरोपक लिखित शिकायत देने अछि?’’ ‘‘हमरा जानकारी नहि।’’ सुजाता स्पष्ट कएलथिन जे जाँचमे नैनाक नामक सम्बन्धमे एखन धरि कोनो आधिकारिक खोज सूचना जारी नहि भेल अछि। ‘‘मुदा सोशल मीडियापर कागज घुमब अपने आपमे जाँचक विषय अछि,’’ ओ कहलीह।

नैना लिखित आवेदन देलथिन। आवेदनमे ओ अपन निर्दोष कहबाक संग ई नहि लिखलथिन जे अमुक व्यक्ति निश्चित रूपसँ दोषी अछि। हुनका ज्ञात तथ्य छल—चित्र रातिमे प्रसारित भेल; संस्थाक चिह्न ओकरा पर छल; फोटो पुरान छल; लिखित आरोपक स्रोत अज्ञात छल। सुजाता आवेदनक प्राप्ति-स्वीकृति देलथिन आ कहलथिन जे सम्बन्धित डिजिटल अभिलेख सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। ‘‘कोनो सन्देश मेटाउ नहि। मुदा अपन बचावमे झूठक दोसर चित्र बनाएबो नहि। जे देखलहुँ, ओकर समय लिखि राखू।’’ नैना अपन कापीमे ई बात लिखलथिन।

सुजाता हुनका ई सेहो पुछलथिन जे पहिल बेर ई फोटो कखन आ कतय खींचल गेल छल। नैना कहलीह, ‘‘नियुक्तिक बाद कर्मचारीसभक समूह-चित्र लेल। बादमे ओहि चित्रसँ हमर चेहरा अलग कऽ लगाओल गेल अछि।’’ सुजाता मूल फोटो, ओकर सम्भावित स्रोत आ कार्यालयक प्रचार-सामग्रीक जानकारी लिखि लेलथिन। जखन कर्मचारीक व्यक्तिगत

विवरण कार्यालयक फाइलमे रहैत अछि, तखन कागजक दुरुपयोगक प्रश्न सेहो उठैत अछि। मुदा जाँचक पहिने ओ ककरो नाम नहि लिखलथिन। हुनका आरोप नहि, प्रमाण चाही छल।

थानासँ निकलि ओ नरेशक बहिन रेखाक घर दिस नहि गेलीह। रेखापर पहिने सँ दुःखक भार छल; अपन नब बदनामीक प्रश्नसँ हुनका ओहि दिन परेशान करब उचित नहि बुझलथिन। मुदा बाटमे पुरान तरकारी बजारक समीप माधवी देवी भेटि गेलीह। माधवी दू घरमे बासन माँजि आ एक घरमे भोजन पकबैत छलीह। नैनाक चेहरा देखि पुछलथिन, ‘‘आब की नब आफत?’’ नैना संक्षेपमे कहलीह। माधवी अपन झोरा जमिनपर राखि कहलीह, ‘‘लोकक मुँह तेज चलैत अछि। हमर पतिक नशा छुटलाक बाद एक बरख जे सुख भेटल, तखन सभ प्रशंसा करैत छल। फेर अवैध शराब आएल तँ लोक कहए लागल जे हम घर सम्हारि नहि सकैत छी। जे अपराध करैत अछि, ओकर बदला महिला पर प्रश्न उठैत अछि।’’

माधवीक बात सुनि नैना रुकि गेलीह। माधवी फेर कहलीह, ‘‘हम अहाँकेँ निर्दोष कहलासँ अदालतक निर्णय नहि बदलत। मुदा अहाँकेँ जे देखल अछि, से जानि कहैत छी— जँ गलत आरोप अछि, तँ ठीक बाटसँ लड़ू। घर जाएब, मायकेँ देखब।’’ माधवी अपन काम दिस बढ़ि गेलीह। नैनाकेँ बुझायल जे बदनामी केवल प्रतिष्ठाक प्रश्न नहि; ई रोजी-रोटी, घरक विश्वास आ स्त्रीक बाहर निकलबाक अधिकारपर सेहो चोट करैत अछि।

दुपहरमे सरस्वतीक एक दूरक सम्बन्धिनी फोन कएलथिन। ‘‘बेटीकेँ एहन संस्थामे किएक पठेलहुँ?’’ सरस्वती कहलीह, ‘‘नोकरी करबाक लेल। ओकरा विरुद्ध जे लिखल जा रहल अछि, तकर जाँच होएत। जाँचसँ पहिने दोष नहि लगाउ।’’ ओहि उत्तरक बाद फोन पर मौन पसरि गेल। सरस्वती स्वयं चकित छलीह जे ओ एतेक दृढ़ स्वरमे बोलि सकलीह। माय जँ घरक भीतर डेराएत, तँ नैनाक लेल बाहरी संसारक चोट आरो कठोर भऽ जाएत।

साँझसँ पहिने सविता नैनाक घरे आएलीह। हुनका संग परीक्षा-आन्दोलनक समूहक दू छात्रा छलीह। कियो फोटो नहि खींचलक, कियो सोशल मीडियापर आगि बुझएबाक

नामपर नब घोषणा नहि कएलक। सविता कहलीह, ‘‘हमर आन्दोलनमे सभकेँ क्रोध अछि। प्रश्नपत्र लीकक कारण नौकरीक आशा टूटि गेल। किछु लोक एहि क्रोधक लाभ उठा कऽ हर विरोध करनिहारकेँ दोषी साबित करबाक प्रयास करैत अछि। हमरा सभकेँ प्रमाण माँगबाक अभ्यास करबाक अछि।’’ नैना कहलीह, ‘‘अहाँक बातसँ हमर रक्षा हएत, मुदा पीड़ित अभ्यर्थीक असल शिकायत दबि नहि जाए। संस्था जे धन लेने अछि ओकर जाँच सेहो जरूरी अछि।’’ सविता कहलथिन, ‘‘दुनू प्रश्न एक्के संग उठत।’’

ओहि साँझ महेशक फोन आएल। ‘‘कार्यालयक चाभी जमा करबाक लिखित सूचना देल गेल अछि,’’ ओ बतौलक। ‘‘किछु दिन लेल घरसँ दूर रहबाक कहने छथि।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘वेतनक बारेमे की लिखल अछि?’’ महेश कहलक, ‘‘ओहि विषयमे स्पष्ट नहि अछि।’’ नैना कहलथिन, ‘‘जे सूचना अछि, ओकर प्रति नियमसँ भेजि दिअ। अहाँ अपन नोकरीक खतरा नहि उठाउ।’’ महेश कनेक देर चुप रहि कहलक, ‘‘नरेश बाबू रहलाह तँ रसीदक हिसाब स्पष्ट करबाक प्रयास करैत छलाह। आब सभ लोक चुप अछि।’’ नैना उत्तर नहि देलथिन। ओ जानैत छलीह जे महेशक चुप्पीमे सेहो रोजीक भय अछि।

राति चन्दन अपन कमरेमे बैसि फोनक पुरान बातचीत देखैत छल। मनोजक नामपर सँ किछु फोन आएल छल, मुदा ओ उठौने नहि छल। ओ पुछलक, ‘‘दीदी, जँ हमर नाम सेहो एना फैलत?’’ नैना कहलीह, ‘‘तोहर अपन काजक जिम्मेवारी तँ अछि। मुदा जे नहि केने छह, से स्वीकार करबाक नहि। पुलिसकेँ जे बतौने छह, ओकरा बदलब नहि।’’ चन्दन कहलक, ‘‘लोक दू बात जोड़ि एकटा तेसर बात बना दैत अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘सेहेतए कागज, समय आ साँचक महत्त्व अछि।’’

घरक पाछाँवला गलीमे दू पड़ोसी महिला नैनाकेँ देखिते चुप भऽ गेलीह। पहिने ओ सभ सरस्वतीक स्वास्थ्य पुछैत छलीह, एखन दृष्टि फेरि लेलथिन। नैनाकेँ चोट लागल, मुदा ओ रुकि झगड़ा नहि केलथिन। घरक भीतर आबि मायक औषधि समयपर देलथिन आ बुझलथिन जे दैनिक जीवनक छोट अनुशासन छोड़ि देलासँ झूठ आरोपक जीत सहज भऽ जायत। ओ अपन कपड़ा धोएलथिन, रसोईक बासन सहेजलथिन, फेर पुलिसक आवेदनक प्रति सुरक्षित लिफाफामे रखलथिन।

राति भोजनक समय सरस्वती थारीमे तरकारी कम परसलथिन। नैना ध्यान देलथिन जे घरमे आलू छल, मुदा तेल लगभग समाप्त। वेतनक अगिला दिन एखन दूर छल, आ कार्यालयमे काजपर रोक लगलाक बाद आयक भरोसा घटल। ओ अपन कापी खोलि खर्च लिखय लागलीह—धान, किराना, मायक औषधि, बिजली, चन्दनक परीक्षा-शुल्क। सामाजिक माध्यमपर फैलल आरोपक प्रत्यक्ष दण्ड एखन धरि कोनो अदालत नहि देने छल; मुदा ओकर असर घरक हिसाबमे आबि चुकल छल।

दोसर दिन भोरमे अभय अपन समाचारपत्रमे छोट समाचार प्रकाशित करौलनि। शीर्षक छल—‘रोजगार संस्थासँ सम्बन्धित अपुष्ट चित्रक प्रसार; पुलिसकेँ शिकायत’। समाचारमे नैनाक निजी पारिवारिक सम्बन्धक चर्चा नहि छल। पुलिसक आधिकारिक कथन, चित्रक असत्यापित स्थिति आ संस्था द्वारा स्पष्टीकरण नहि देल गेल होयबाक तथ्य मात्र छल। अभयक लेख पढ़ि नैना फोन हाथमे लेने किछु देर बैसलीह। ओ अभयकेँ धन्यवाद कहबाक सोचलीह, फेर लिखलथिन—‘प्रमाणक सीमा राखलहुँ, से नीक भेल।’ उत्तर आएल —‘एहिमे अहाँक व्यक्तिगत उपकार नहि; समाचारक ई नियम होयबाक चाही।’

नैना ओहि उत्तरकेँ फेर पढ़लथिन। अपन प्रिय लोकसँ न्याय मँगबाक अपेक्षा आ लोकक पेशाक स्वतन्त्रता दुनू अलग बात अछि। हुनका ओहि दिनक विवाद याद पड़ल। घरक आँगनमे सरस्वती धूपमे कपड़ा पसारि रहल छलीह। चन्दन बाहर नोकरी खोजबाक कहि निकलल छल। कार्यालय बन्द नहि छल; ओकर दरबज्जा केवल नैनाक लेल बन्द कएल गेल छल। पूनम एखनो लापता छलीह। नरेशक परिवार न्यायक बाट जोहि रहल छल। एहिमे नैनाक बदनामी एक नब गाँठ छल, मुदा ओ गाँठ खोलबाक लेल हुनका अपन साँच, कागज आ धीरज छोड़बाक नहि छल।

एहि बीच नगरक दोसर छोरपर रतन सिंह एकटा बैठकमे बैसल छलाह। हुनका संग ठीकेदार वीरेन्द्र राय छल। वीरेन्द्र कहलक, ‘‘लोकक ध्यान कर्मचारीक नामपर चलि गेल अछि।’’ रतन उत्तर देलक, ‘‘ध्यान बदलि सकैत अछि, मुदा पुलिसक कागज अपना बाट चलैत अछि।’’ वीरेन्द्र कहलक, ‘‘तखन जे फाइल माँगल गेल अछि, ओकर उत्तर?’’ रतन खिड़की दिस तकैत रहल। स्पष्ट आदेश नहि देलक। बाहर सड़कपर मजदूरसभ अपन

दिनभरक कमाइ लेने घर घुरि रहल छल। नगरमे जे लोकक नाम बदनाम भऽ रहल छल, ओहि लोकक भोजन आ औषधि एहि कमाइसँ जुड़ल छल। रतनक कक्षमे मात्र सम्बन्धक मूल्य कागजक गड्डी आ पहुँचसँ नापल जा रहल छल।

ओहि राति नैना अपन फोनमे पूनमक अन्तिम सहायता-सन्देश फेर पढ़लथिन। पूनमक खोज एखनहुँ समाप्त नहि भेल छल। नरेशक मृत्युकेँ सेहो न्याय नहि भेटल छल। अपन बदनामीक पीड़ामे एतबा ध्यान केन्द्रित कऽ लेब जे दोसरा पीड़ितक बात छूटि जाए, ई ओ नहि चाहैत छलीह। ओ कापीमे अगिला दिनक तीनटा आवश्यक काज लिखलथिन—पूनमक परिवारसँ सम्पर्क, कार्यालयक लिखित पत्रक प्रति सुरक्षित करब, आ सरस्वतीक औषधि आनब। पहिल दूटा बाहरी संसारसँ जुड़ल छल; तेसर घरक जीवित आवश्यकतासँ।

ओ कापीक पन्ना राखलथिन। काल्हि दुआरि खोलबाक अछि, अफवाहक आवाज एखनहुँ रुकल नहि हो। साँच लेल धैर्य चाही, आ घरक साहस सेहो।

साँझ नैनाकेँ कार्यालयसँ एकटा औपचारिक पत्र भेटल—आगाँक निर्देश धरि नियमित उपस्थिति स्थगित, सम्बन्धित विभाग द्वारा जानकारी माँगल जाए तखन उपलब्ध कराएब। पत्रमे आरोप निश्चित नहि लिखल छल। नैना ओ पत्र पढ़ि एकटा प्रति सुरक्षित रखलथिन। हुनका बुझायल जे अफवाहक चोटसँ बेसी कठिन होइत अछि ओहि पछातिक औपचारिक मौन। तखन ओ कापीक पहिल पन्नापर लिखलथिन—‘काज बन्द भेल अछि, अपराध सिद्ध नहि भेल अछि। दुनू बात अलग अछि।’ आगाँक दिनमे एहि भेदपर अडिग रहब हुनका लेल अनिवार्य होयत।

अध्याय ३२ : ऋणक दलदल

चन्दन भोरमे घरसँ निकलल तँ नैनाकेँ ई नहि बतौलक जे पहिने कतय जायत। कहलके केवल, ‘‘दूटा ठाम कामक बात करबाक अछि।’’ माय ओकर कपारपर हाथ राखि कहलीह, ‘‘खाइ लेलु?’’ ओ हँ कहलके, मुदा रोटी आधे रहि गेल छल। बाहर सड़कपर ठेला लगाबयवला सभ अपन सामान सजा रहल छल। चन्दन जेब टटोललक—सत्तासी टका। ओहिसँ बसक किराया, चाय आ साँझ घर घुरबाक खर्च करबाक छल। मोबाइलमे उधार माँगनिहारक पाँचटा सन्देश आएल छल। सभमे एक्के बात—‘‘कखन देबह?’’

पहिल ठाम छोट माल-ढुलाईक प्रतिष्ठान छल। मालिक पुछलक, ‘‘अनुभव?’’ चन्दन बतौलक जे गाड़ी चलबैत अछि, माल पहुँचेबाक काज केने अछि। मालिकक अगिला प्रश्न छल, ‘‘स्थायी चालकक परवाना आ पुरान मालिकक लिखित अनुशंसा अछि?’’ परवाना छल, अनुशंसा नहि। चन्दन मनोजक नाम नहि लेबय चाहैत छल। मालिक कहलक, ‘‘हमरा एहन चालक चाही जकरा पर भरोसा कऽ सकी।’’ चन्दन बाहर निकलि सोचलक—भरोसा एखन ओकरासँ बेसी ककरो नहि चाही, मुदा भरोसाक प्रमाण ओकर जेबीमे कम छल।

दोसर ठाम गोदाममे सामान गनबाक काज छल। मासिक वेतन ओकर पहिल कल्पनासँ कम, समय बिहान आठ बजेसँ राति आठ बजे धरि। एक दिनक अवकाश, अतिरिक्त समयक भुगतान अनिश्चित। चन्दन पुछलक, ‘‘नियुक्तिपत्र देब?’’ दुकानदार हँसि कहलक, ‘‘पहिने काज कर, पाछाँ कागज देखब।’’ ओकरा नैनाक बात याद आएल—कागज बिना नोकरीक भरोसा नहि। ओ नाम आ नम्बर लिखि रखलक, मुदा तुरन्त स्वीकृति नहि देलक। घरक भूख आ अवैध काजक भयक बीच वैध काजक अपमानजनक शर्त सेहो ओकरा सहबाक पड़ि रहल छल।

गोदामक मालिक अपन काजक कठिनाइ सेहो बतौने छल। ‘‘माल कम आएत तँ हमरा सभकेँ ओतेक आदमी राखब सम्भव नहि।’’ चन्दन सुनने छल। ओकरा लग सम्पूर्ण

बजारक समाधान नहि छल। मुदा ओ एतबा बुझलक जे वैध कम वेतनक काजमे श्रमिकक अवस्था खराब भऽ सकैत अछि, मुदा अवैध ढुलाईमे धन बेसी भेटितो भयक अन्त नहि। ई तुलना केवल नीतिक चर्चा नहि, ओकर अगिला भोजनक प्रश्न छल। कखनहुँ ओ सोचैत छल जे नोकरी भेटिते मान-सम्मान आपसँ आएत; आब बूझैत छल जे काजक शर्त सेहो पूछब आवश्यक अछि।

बस अड्डाक पाछाँ चाय-दोकानपर बैसि चन्दन अपन पुरान कापी निकाललक। ई कापी कखनहुँ प्रतियोगिता परीक्षाक सूत्र लिखबाक लेल छल। आब पहिल पन्नापर ऋणक हिसाब लिखल छल। कोचिंगक शुल्क, शहर जाइ परीक्षाक यात्राभाड़ा, आवेदन-पत्रक शुल्क, मायक इलाजक समय लेल गेल अल्प ऋण, मोटरसाइकिलक मासिक किस्त। किछु टका बैंकक, किछु परिचितक, किछु एहन लोकक छल जे ब्याजक नामपर मूलधनसँ बेसी माँगैत छल। चन्दन अङ्क जोड़लक। हिसाब कागजपर सरल छल, मुदा चुकएबाक बाट बहुत टेढ़ छल।

ओ अपन तीन बरखक तैयारी याद कएलक। प्रातः चारि बजे उठि पुस्तक पढ़ब, दू कोठरीक किराया बाँटि रहब, परीक्षा केन्द्र धरि भीड़मे गाड़ी पकड़ब। एक बेर अङ्क कम पड़ल; दोसर बेर रिक्त पद घटि गेल; तेसर बेर लिखित परीक्षा भेलाक बाद प्रश्नपत्र लीक होयबाक विवाद उठल। जाँचक घोषणा भेल आ परीक्षा रद्द भऽ गेल। चन्दनकेँ ई कहबाक अधिकार नहि छल जे सभ अभ्यर्थी भ्रष्ट छलाह; ओकरा ई मालूम छल जे अनेक लोक ईमानदारीसँ तैयारी केने छलाह। मुदा बेईमान दलालक कारण सभक श्रम फेर शून्यमे गनि देल गेल।

ओहि परीक्षा पछाति अवधेश साह नामक दलाल ओकरा फोन केने छल। ‘‘अगिला नियुक्तिमे मदति होयत,’’ कहि पैसाक बात उठौने छल। चन्दन स्पष्ट मना केने छल। अवधेश हँसि कहने छल, ‘‘पढ़लासँ सब नहि होइत छौ।’’ पहिने ई वाक्य ओकरा अपमान लागल; बादमे नोकरी नहि भेटैत ओकरा ई याद पड़ैत रहल। गामक किछु लोक कहैत छल जे बिना पहुँचक काज नहि होइत। मुदा चन्दन नीकसँ जनैत छल—एहि विचारकेँ सच मानि कऽ जँ ओ गलत बाट जाएत, तँ ओकर जीवनमे आओर बेसी अन्हार पसारत।

मनोजसँ ओकर भेंट पहिल बेर एकटा मोटरसाइकिलक मरम्मति-दोकानपर भेल छल। मनोज कहने छल, ‘‘दुइ घंटाक ढुलाई, पक्का भाड़ा। कागजक झंझट नहि।’’ पहिल चक्करमे कार्टन बन्द छल, गन्तव्य गोदामक नाम लिखल छल, आ भुगतान नकद भेल। चन्दन पुछलक नहि जे भीतर की अछि। दोसर चक्करमे सामानसँ कड़ा गन्ध आएल। मनोज मजाकमे कहलक, ‘‘तेल आ मसालाक मिश्रण अछि।’’ तेसर बेर गाड़ीमे कार्टन चढ़बैत एकटा पेटी टूटल, भीतर बोतलक गर्दनि देखाइत छल। चन्दन पहचानि गेल जे सामान वैध सामान्य किरानाक नहि। ओ विरोध केलक, मुदा मनोज ओहि दिनक भाड़ासँ बेसी टका ओकर हाथमे धऽ देलक।

माल-ढुलाईक पहिल चक्करक भाड़ासँ ओ घरमे चाउर आनने छल। सरस्वती पुछने छलीह जे एतेक टका कोना भेटल। ओ कहलके छल, ‘‘नब काज अछि।’’ माय प्रसन्न भेल छलीह। ओहि प्रसन्नताक स्मृति एखन ओकरा चोट दैत छल। शराबबन्दीक प्रारम्भिक महिनासभमे सरस्वती आ माधवी जकाँ अनेक महिला कहैत छलीह जे मर्दसभक जेबीसँ सभ टका दारूमे नहि जाइत। परिवारक भोजन सुधरल छल। एखन तस्करीक कारण वही धन नब रास्तासँ फेर घर छोड़ि रहल छल, आ चन्दन ओहि रास्ताक एकटा छोट चालक बनि गेल छल।

‘‘जतेक देखि लेलह, ओतेक जानि लेह,’’ मनोज कहने छल। ‘‘आब फेर काम करबाक आवश्यकता नहि। मुदा आजुक टका रख।’’ चन्दन टका लऽ लेने छल। पछाति अपन मनमे अनेक तर्क देलक—मायक औषधि, परीक्षा-शुल्क, कर्जक दबाव। मुदा राति ओ अपन तर्क पर भरोसा नहि कऽ सकल। बोतल देखलाक बाद माल पहुँचेबाक निर्णय ओकर अपन छल। मजबूरी ओकरा धकेलने छल, मुदा अन्तिम पएर ओ अपने उठौने छल।

नरेशक हत्याक राति ओ मनोजकेँ गाड़ीमे लऽ गेल छल। नहर दिसक रस्ता पूर्ण अन्हार नहि छल; सड़कक कात दूटा घरमे बत्ती जरैत छल। मनोज बाटमे ककरोसँ फोनपर बात करैत छल। चन्दन सभ शब्द नहि सुनि सकल। ओ केवल एतबा जनैत छल जे मनोज एकटा निश्चित मोड़पर उतरबाक कहल आ चन्दनकेँ आगाँ नहि बढ़बाक आदेश देलक। हत्याक सूचना भेटलाक बादसँ चन्दन ओहि रातिक प्रत्येक आवाजकेँ दोहरबैत रहल। कियो

ओकरा अपराधी कहैत तँ ओकर भीतर डर होइत; कियो निर्दोष कहैत तँ सेहो चैन नहि भेटैत।

चाय-दोकानपर मालिक पुछलक, ‘‘आओर चाय?’’ चन्दन माथ हिलौलक। एही बीच उधार देनिहार प्रभात साहक फोन आएल। प्रभात अनाजक थोक व्यापार करैत छल आ परिचितक कहबापर चन्दनकेँ धन देने छल। ‘‘बाबू, तिथि निकलि गेल। हमरा स्वयं भुगतान करबाक अछि,’’ ओ कहलक। चन्दन उत्तर देलक, ‘‘अगिला पन्द्रह दिन समय दिअ। काज खोजि रहल छी।’’ प्रभातक स्वर कठोर भेल, ‘‘काज खोजैत-खोजैत हमर पूँजी नहि चलत। साँझ धरि भेटब।’’ चन्दन कहलक, ‘‘घरपर नहि, बजारमे भेटब।’’ प्रभात फोन राखि देलक।

ओहि दिन एकटा छोट प्रशिक्षण संस्थाक कार्यालयमे सविता भेटि गेलीह। ओ परीक्षा रद्द भेल अभ्यर्थीसभ लेल निःशुल्क आवेदन-सहायता शिविरक सूचना बाँटि रहल छलीह। चन्दनकेँ देखिते पुछलथिन, ‘‘फेर परीक्षा देबाक विचार अछि?’’ ओ कहलक, ‘‘विचार अछि, मुदा घर चलयबाक अछि।’’ सविता कहलथिन, ‘‘दुनू काज कठिन अछि, मुदा एकर अर्थ ई नहि जे पढ़ाइ छोड़ि दिअ। सम्बन्धित प्राधिकरण नब तिथि देत तखन परीक्षा होएत। एखन अफवाहपर भरोसा नहि करू।’’ चन्दन चुपचाप पर्चा लऽ लेलक। सविता ओकरा नैनाक विरुद्ध फैलल झूठ आरोपक बारेमे सेहो पुछलथिन। चन्दन कहलक, ‘‘ओहि बातसँ घरमे बहुत दबाव अछि।’’

प्रभात साहक ऋणक पहिल किस्त देबाक समय चन्दन उपस्थित छल। प्रभात ओहि समय सम्बन्धक भाषा बोलने छल—‘‘अपन लोक छह, समयसँ देब तँ कोनो समस्या नहि।’’ आय बन्द होइत भाषा बदलि गेल। चन्दन बुझलक जे व्यावहारिक देनदारी आ व्यक्तिगत अपमानक बीच सीमा रहबाक चाही। ओ कागजपर लिखल ब्याजक हिसाब माँगि ककरो अपमान नहि करैत छल; केवल अपन देनदारी निश्चित करय चाहैत छल। किछु ऋणसँ वास्तवमे लाभ भेल छल—मायक इलाज चलल, परीक्षा देल गेल। मुदा जँ भुगतानक स्पष्ट योजना नहि हो तँ मदतिक नामपर शुरू भेल ऋण सेहो दलदल बनैत अछि।

दुपहरिया चन्दन थाना गेल। सुजाता कुमारी पहिने सँ भेटबाक लेल समय देने छलीह। पूछताछमे ओ फेर नहरक बाट, उतरबाक ठाम, भाड़ाक राशि आ फोनक समयक विवरण देलक। सुजाता पुछलथिन, ‘‘जखन बोतल देखलह, तखन ओहि ढुलाईक काज बंद किएक नहि केलह?’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘घरक ऋण छल। मुदा ई कोनो उचित कारण नहि। ओहि दिन हमरा मना करबाक छल।’’ सुजाता कहलथिन, ‘‘जतेक जनैत छह, ओतबे कह। जे नहि देखलह ओकर अनुमान कऽ बयान नहि दिअ।’’ ओ ओकर उपलब्ध सन्देश आ भुगतानक विवरण विधिपूर्वक जमा करौलथिन।

सुजाता कोनो आश्वासन नहि देलथिन जे बयान देलासँ चन्दनक दोष समाप्त भऽ जायत। ओ स्पष्ट कहलथिन जे अवैध ढुलाईमे सहभागिताक जाँच अलग विषय अछि, आ हत्यासँ सम्बन्धित ओकर जानकारी अलग। ‘‘गलत काज करब आ कोनो घटनाक साक्षी होयब एक्के बात नहि, मुदा दुनूक जाँच होयत,’’ ओ कहलीह। चन्दनकेँ ई कठोर सत्य सुनि राहत नहि भेटल; तथापि छलक आश्वासनसँ ई अधिक सहनीय छल। ओ थानासँ निकलैत अपन फोनक पुरान सन्देश फेर नहि मेटौलक।

साँझ बस अड्डाक कात प्रभात साह भेटल। ओकर संग एकटा मुनीम छल। प्रभात पुछलक, ‘‘एखन कतेक देब?’’ चन्दन कहलक, ‘‘आइ एक पाइ नहि। मुदा हिसाब बनौने छी। मूलधन आ ब्याज अलग-अलग लिखि दिअ, जे चुका सकी से तिथि पर देब।’’ प्रभातक चेहरा कठोर भेल, मुदा मुनीम कागज निकालि रकम लिखय लागल। ब्याजक दूटा मदमे चन्दन प्रश्न उठौलक। प्रभात कहलक, ‘‘बाजारमे एतबासँ कम पर कियो नहि दैत।’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘सहमति जे छल, ओकर कागज देखू। एखन नब रकम मौखिक रूपसँ नहि मानब।’’

प्रभात कहलक, ‘‘घरमे तोहर माय आ बहिन रहैत अछि। ओहि सभसँ सेहो बात करब पड़त।’’ चन्दन पहिल बेर आँखि उठा कऽ तकलक। ‘‘ऋण हम लेने छी। घरक लोककेँ धमकी देबाक आवश्यकता नहि। अहाँ कागज लिअ, हम भुगतानक व्यवस्था करब।’’ प्रभात चुप रहल, मुदा मुनीमक चेहरापर असन्तोष छल। चन्दन बुझि गेल जे घरक दुआरि

धरि बात पहुँचि सकैत अछि। एखन ऋण केवल आर्थिक प्रश्न नहि रहल छल; ई मायक शान्ति आ नैनाक प्रतिष्ठाक विरुद्ध दबावक साधन भऽ सकैत छल।

सुजाताक कक्षसँ निकलैत ओकरा एकटा युवा आरक्षी भेटल, जे पहिले नरेशक मृतदेह भेटल ठाम गेल छल। आरक्षी किछु नहि पुछलक, केवल रजिस्टरमे हस्ताक्षर करौलके। चन्दनकेँ ई सामान्य व्यवहार अचम्मा लगल। रातिक अन्हारमे ओ सोचैत छल जे थाना गेलाक बाद सभ कियो ओकरा अपराधीक दृष्टिसँ देखत। वास्तविक कार्यालयमे कागजक अपन नियम छल, कर्मचारी अपन-अपन काज करैत छलाह। एहिसँ ओकर भय समाप्त नहि भेल, मुदा ओ बुझलक जे अनुमानसँ बेसी महत्त्व प्रश्नक स्पष्ट उत्तरक अछि।

घर घुरबाक बाटमे चन्दन एकटा विद्यालयक आगाँ ठमकि गेल। भीतरसँ बच्चासभक छुट्टी भेल छल। शिक्षक ककरो कहि रहल छलाह, ‘‘कतारमे निकलू।’’ चन्दन अपन स्कूलक दिन याद कएलक। तखन प्रत्येक वर्षक परीक्षा आगेक कक्षाक बाट खोलैत छल। आब परीक्षा स्वयं एकटा अनिश्चित प्रतीक्षा बनि गेल छल। ओ सड़कक कात बड़का विज्ञापन देखलक—‘निश्चित नियुक्ति, सम्पर्क करू’। किछु वर्ष पहिने एहन लिखल देखैत ओ आशावान भऽ उठित। एखन ओकरा ओकर वाक्यक पाछाँ सम्भावित ठगी देखाइत छल।

माय दरबज्जा खोलिते पुछलथिन, ‘‘काजक की भेल?’’ चन्दन कहलके, ‘‘एक ठाम कम वेतनपर काज अछि। कागज माँगलहुँ, तखन बात पूरा नहि भेल।’’ सरस्वती कहलीह, ‘‘कम वेतन भेलोपर जँ काज ठीक अछि तँ करिह। हम सभ खर्च घटा लेब।’’ ओ उत्तर देलक, ‘‘कमाइ कम रहय तँ चलेत, मुदा काम स्पष्ट होयबाक चाही।’’ नैना बरामदामे बैसि कार्यालयक पत्र देखैत छलीह। चन्दन हुनका प्रभातसँ भेटक बात कहलके। नैना पुछलथिन, ‘‘कतेक मूलधन बाँकी?’’ चन्दन कापी बढ़ा देलक। पहिल बेर ओ अपन पूरा ऋणक हिसाब बहिनसँ नुकौलक नहि।

नैना लेखा देखलथिन। दूटा छोट ऋण चुकबासँ बाकी रकमक ब्याजक दबाव घटि सकैत छल। मुदा परिवारक हाथमे एखन पर्याप्त टका नहि छल। ओ कहलथिन, ‘‘अभी

ककरोसँ दोसर कर्ज लऽ पहिल कर्ज नहि चुकायब। पहिने वैध आयक ठोस व्यवस्था, फेर लिखित भुगतान-सूची।'' चन्दन कहलक, ''दीदी, अहाँक वेतनक अनिश्चितता हमरा मालूम अछि। हम अपना लेल अहाँसँ टका नहि लेब।'' नैना उत्तर देलथिन, ''घरक समस्या अलग-अलग कोठरीमे नहि बाँटल रहैत अछि। मुदा अपन गलतीक परिणाम तोरा सेहो उठेबाक पड़त।''

राति चन्दनक फोन फेर बजल। अपरिचित नम्बर। ओ उठौलक। ओम्हर सँ आवाज आएल, ''मनोजजी कहने छथि, दू दिन लेल बाहर रह। पुलिसक संग बेसी बात करब ठीक नहि।'' चन्दन पुछलक, ''अहाँ के?'' उत्तर नहि आएल; फोन कटि गेल। ओकर हाथ काँपि उठल। ओ तुरन्त नैनाकेँ आवाज देलक। नैना सन्देशक समय नोट कएलथिन आ कहलथिन, ''एहि बातक सूचना सुजाताकेँ देब। एखन ककरो भेटबाक, ककरो पीछा करबाक नहि।'' चन्दन पहिल बेर बिना बहाना बनौने सहमत भेल।

घरसँ बाहर आबि चन्दन पुरान मोटरसाइकिलक कागज देखलक। गाड़ी बेचि देलासँ ऋणक छोट हिस्सा चुकि सकैत छल, मुदा वैध ढुलाई वा दूरक काज पर जाएब कठिन भऽ जायत। ओ नैनासँ ई प्रश्न उठौलक। नैना कहलीह, ''आब निर्णय जल्दबाजीमे नहि करब। पहिले कतबा आय सम्भव अछि, कतेक दिनक किस्त बाँकी, आ गाड़ी रखबाक खर्च कतेक —सभ लिखब।'' चन्दन पहिल बेर एकटा वस्तु बेचबाक बदला ओकर उपयोगक मूल्य सोचलक। पैसाक दबावमे लोक तुरन्त जे बेचि दैत अछि, ओही चीजक आवश्यकता अगिला सप्ताह पड़ि सकैत अछि।

ओहि राति घरक भोजनमे दाल पातर छल, मुदा सभ एक संग बैसल। सरस्वती चन्दनकेँ पुछलथिन, ''कतेक दिनसँ ठीकसँ सुते नहि छह?'' चन्दन कहलक, ''बहुत दिन भेल।'' माय ओकर हाथ दबौलथिन। ''एकटा बात बुझ। गरीबक बेटा होयब अपराध नहि। बेरोजगार होयबो अपराध नहि। मुदा जे गलत काज कऽ बैसल छह, ओकरा फेर नहि दोहराबिह।'' चन्दन माय दिस तकैत रहल। ओ चाहैत छल जे मायक विश्वास तुरन्त घुरि आए। मुदा ओकरा बुझल छल—विश्वास उधारक रकम नहि, जे कागजपर एक दिनमे चुकि जाए।

दोसर बिहान प्रभात साहक मुनीम घरक बाहर आबि ठाढ़ भेल। सरस्वती दरबज्जा लग पहुँचल छलीह। मुनीम ऊँच स्वरमे ऋणक रकम बताबय लागल। पड़ोसी दूटा लोक बाहर तकय लगल। नैना भीतरसँ निकलि कहलीह, ‘‘बात करब अछि तँ शान्त स्वरमे करू। देनदारीक लिखित हिसाब दिअ। अपमान कऽ ऋण नहि चुकैत।’’ मुनीम कनेक पाछाँ हटलक। सरस्वतीक चेहरापर पीड़ा स्पष्ट छल। ओ केवल कहलथिन, ‘‘हमर बेटा गलत काज नहि करत, ई हमरा भरोसा अछि। मुदा घरक दुआरिपर हल्ला किएक?’’

मुनीम कागज देलाक बाद चलि गेल। सरस्वती भीतर आबि चौकीपर बैसि गेलीह। नैनाकेँ हुनक श्वास कनेक तेज बुझायल। ओ पानि दऽ कहलथिन, ‘‘माय, चिन्ता नहि करू। हिसाब साफ करब।’’ सरस्वती मुस्कुरेबाक प्रयास कएलथिन, मुदा कपारपर पसीना छल। चन्दन आगाँ बढ़ि मायक हाथ पकड़लक। ओ मनमे फेर अपन परीक्षा रद्द भेलाक दिन याद कएलक। जँ नोकरी भेटल रहित तँ ई ऋण एतेक भारी नहि लगित। मुदा एखन प्रश्न केवल एकटा नोकरीक नहि छल; मायक स्वास्थ्य, बहिनक मान आ अपन सत्य बोलबाक साहस एक संग दाँवपर लागल छल।

राति लेल बिछाओन बिछबैत सरस्वती अपन पुरान सन्दूक खोललथिन। भीतर चन्दनक विद्यालयक प्रशस्तिपत्र राखल छल। ओ कखनहुँ सोचने छलीह जे ई सभ प्रमाणपत्र हुनका बेटाकेँ नोकरी धरि पहुँचाओत। एखन प्रमाणपत्र सन्दूकमे सुरक्षित छल, मुदा घरक शान्ति नहि। चन्दन मायक हाथसँ कागज लऽ कहलक, ‘‘माय, ई सभ व्यर्थ नहि भेल। पढ़ब फेर शुरू करब। मुदा आब झूठ भरोसा नहि देब।’’ माय उत्तर देलथिन, ‘‘भरोसा शब्दसँ नहि, रोजुक काजसँ घुरैत अछि।’’

अगिला दिनक खर्चक विचार करैत चन्दनकेँ अपन मोटरसाइकिलमे डालल पेट्रोलक हिसाबो याद आएल। पहिने सवारी मिललाक आनन्दमे ओ दैनिक कमाइसँ ई खर्च काटैत नहि छल। मनोजक ढुलाईमे नकद टका भेटैत छल, मुदा गाड़ीक घिसाइ, तेल आ रास्ताक भोजनक खर्च बादमे अलग निकलैत छल। कागजमे बचत बहुत देखाइत छल, हाथमे टका कम रहैत छल। आब ओ बुझलक जे कमाइक रकम आ बचल रकम एक नहि। जँ छोट वैध काम शुरू करत, तँ भाड़ाक एक-एक मद लिखबाक पड़त। रस्ता कठिन छल, मुदा

कमसेकम हिसाब ओकर अपन हाथमे रहत। वैध काममे कम आमदनी रहितो श्रमक मूल्य निश्चित होयत; ओ घरमे ठाढ़ भऽ सकत।

चन्दन बरामदाक कोनमे बैसि कापीक अन्तिम पन्नापर तीनटा बात लिखलक—'माल-ढुलाईक अवैध काज नहि। पुलिससँ किछु नहि नुकायब। जे कर्ज अछि, ओकर हिसाब लिखित राखब।' ओ पन्ना फाड़लक नहि। पहिले सेहो अनेक सङ्कल्प लिखने छल, मुदा दोसर दिन भय आ टकाक लालच ओकरा डिगा देने छल। एखन एकरा निभेबाक बाट कठिन छल। भीतर सरस्वती आँखि मूनि कऽ पड़ल छलीह। नैना पानि गरम करैत सोचैत छलीह जे मायक ई थकान केवल रातिक कम नीन्नसँ अछि कि आओर किछु। ओ तय कएलथिन जे जँ आरामसँ ठीक नहि होयत तँ विलम्ब नहि कऽ चिकित्सककेँ देखौतीह।

अध्याय ३३ : अस्पतालक राति

दुपहरिया सरस्वती देवीक कपारक पसीना नहि सुखल। नैना सोचने छलीह जे मुनीमक हल्लासँ माय घबरा गेलीह; कनेक आराम करिते ठीक भऽ जेतीह। मुदा भोजनक समय सरस्वती थारी दिस देखियो नहि सकलीह। ओ कहलीह, ‘‘माथ घुरैत अछि, छातीमे भारीपन लगैत अछि।’’ चन्दन तुरन्त पानि आनलक। नैना मायक हाथ छू कऽ देखलथिन; हथेली ठंढा छल, चेहरा पीयर पड़ल छल। ओ पड़ोसक प्रभा काकीकेँ बजौलथिन। प्रभा कहलीह, ‘‘बैसल-बैसल अनुमान नहि लगाउ। चिकित्सककेँ देखाउ।’’

घरक कात एकटा छोट औषधालय छल, मुदा ओतय चिकित्सक साँझमे अबैत छलाह। नैना कागजक थैलीमे मायक पुरान पर्ची, चलि रहल औषधि आ किछु रुपैया रखलथिन। चन्दन सड़कपर सवारी खोजय गेल। सरस्वती कहलथिन, ‘‘एतबा तमाशा किएक? कनेक नीन्न आएत तँ उठि जाएब।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ अपन शरीरक बात कहि रहल छी; तकर जाँच कराएब तमाशा नहि।’’ मायक स्वर कमजोर पड़ि रहल छल। ओहि समय नैनाकेँ कार्यालयक बदनामी आ अपन नौकरीक अनिश्चितता सभ गौण लगल।

पहिल ऑटोवाला नगरक सरकारी अस्पताल जाएब सुनि भाड़ा बेसी कहलके। चन्दनक चेहरा तमतमा गेल, मुदा बहस करबाक समय नहि छल। दोसर सवारी भेटल। प्रभा काकी सरस्वतीकेँ सँभारि गाड़ीमे बैसौलथिन। नैना मायक बगलमे छलीह, चन्दन आगाँ चालकक कात। गाड़ी बजारक भीड़मे अटकि गेल। रास्ताक कात खेलौना बेचयवला लोक, फाटक लग ऊभल विद्यार्थी आ कार्यालयसँ घुरैत मजदूर देखाइत छलाह। नगरक हरेक मनुष्य अपन काजमे छल, मुदा नैनाकेँ लागल जे समय केवल ओकर घर लेल रुकि गेल अछि।

अस्पतालक आपातकालीन कक्षमे कर्मचारी सरस्वतीकेँ भीतर लऽ गेल। परिचय लिखबाक लेल नैनासँ नाम, आयु, ठाम आ पुरान रोगक जानकारी पुछल गेल। ओ कागज भरैत छलीह, चन्दन बगलमे ठाढ़। नैनाकेँ मायक औषधिक नाम साफ याद नहि पड़ि रहल

छल। सौभाग्यसँ ओ पुरान पर्ची आनने छलीह। ड्यूटीपर रहनिहार चिकित्सक पर्ची देखलथिन, रक्तचाप आ अन्य प्राथमिक जाँच करौलथिन। ओ कहलथिन, ‘‘एखन अवलोकनमे राखू। जाँचक परिणाम देखिकऽ आगाँक निर्णय करब। डराइब नहि, मुदा असावधान सेहो नहि होइब।’’

सरस्वती खाटपर पड़ल छलीह। हुनक आँखि खुलल छल, मुदा बात करब कम कऽ देने छलीह। नैना सिरहानी लग बैसि पुछलथिन, ‘‘माय, पानि चाही?’’ परिचारिका बतौलथिन जे चिकित्सकक सलाहक अनुसार पानि आ भोजन देल जाए। नैना अपन हाथ रोकि लेलथिन। घरमे माय पहिने सभकेँ खुएबाक चिन्ता करैत छलीह; एखन हुनका लेल निर्णय दोसर लोक लऽ रहल छल। सरस्वती धीमे कहलथिन, ‘‘चन्दन बाहर अछि?’’ ‘‘हँ, पर्ची जमा करैत अछि।’’ ‘‘ओकरा डाँटिह नहि।’’ नैना मायक हाथ धऽ कहलथिन, ‘‘एखन अहाँ ठीक होउ। बाकी बात पाछाँ।’’

काउण्टरपर जाँचक पर्चीक संग शुल्कक विवरण देल गेल। किछु जाँच अस्पतालमे उपलब्ध छल, किछु लेल प्रतीक्षा करबाक छल। चन्दन अपन जेबीक सत्तासी टकाक स्थानपर आब घरसँ आनल किछु रुपैया गनैत छल। नैना अपन बैगक तहमे राखल आपातकालीन बचत निकाललथिन। ओ बचत मायक औषधिक लेल छल, मुदा एतेक पैघ आवश्यकता एक्के दिन आबि जायत, से नहि सोचने छलीह। चन्दन कहलक, ‘‘दीदी, हमर कर्जक कारण ई सभ भेल।’’ नैना कठोर स्वरमे कहलीह, ‘‘एखन दोष गनबाक नहि, काज करबाक समय अछि। पर्ची जमा करू, ओकर बाद भीतर आउ।’’

पैसाक व्यवस्था करैत नैना देखलथिन जे सविता द्वारा देल परीक्षा-आन्दोलनक छोट लिफाफा बैगमे छल। ओहिमे लोकक हस्ताक्षरक सूची छल, धन नहि। नैनाकेँ क्षणभर लागल जे नगरमे सार्वजनिक प्रश्न आ अपन निजी प्रश्न दू पृथक् बाट नहि; परीक्षा रद्द होइत घरक बचत खर्च होइत अछि, नोकरी रुकैत औषधिक भुगतान कठिन होइत अछि। मुदा अस्पतालक काउण्टरपर एहि सम्बन्धक व्याख्या ककरो उपयोगी नहि छल। ओ गनल टका देलथिन, रसीद लेलथिन आ अगिला जाँचक क्रम पुछलथिन।

साँझक सात बजे एकटा जाँचक परिणाम आएल। चिकित्सक पुनः परीक्षणक आवश्यकता बतौलथिन। सरस्वतीक स्थिति तत्काल स्थिर रहलोपर राति भरि निरीक्षण उचित बुझल गेल। नैना रहबाक अनुमति मँगलथिन। चन्दन कहलक, ‘‘हम सेहो रहब।’’ परिचारिका कहलथिन जे रोगीक कात एकटा परिजन रहि सकैत अछि; दोसर बाहर प्रतीक्षालयमे बैसत। नैना भीतर रहबाक निर्णय कएलथिन। चन्दन चाय आ आवश्यक सामान लेल बाहर गेल।

अस्पतालक बरामदामे अलग-अलग घरक चिन्ता एक-दोसरसँ टकरा रहल छल। एक पुरुष अपन बच्चाक लेल औषधि खोजैत दौड़ैत छल, एक वृद्धा उपचारक पर्ची बुझबाक प्रयास करैत छलीह, दूटा महिला आपसकेँ कहैत छलीह जे गामसँ सवारी मँगब कठिन भेल। नैना एहि चेहरासभमे अपन घरक समानता देखलथिन। ककरो समस्या केवल रोगक नहि छल; भाड़ा, छुट्टी, कमाइ आ उपचारक खर्च सभ संग चलैत छल। ओ सोचलथिन जे बेमारीक राति गरीब परिवारक लेल दिनक कमाइ सेहो बन्द भऽ जाइत अछि।

माधवी देवीकेँ प्रभा काकी सँ समाचार भेटल। ओ राति अपन काजसँ मुक्त भऽ अस्पताल पहुँचल छलीह। हाथमे एकटा साफ गमछा आ छोट डब्बामे घरक बनल सत्तू छल। ‘‘रोगी लेल नहि, अहाँ सभ लेल आनलहुँ,’’ ओ कहलीह। नैना हँसलथिन, मुदा ओ हँसी थाकल छल। माधवी अस्पतालक बरामदामे बैसि अपन अनुभव कहलीह, ‘‘हमर पतिक शराब छुटल छल तखन अस्पतालक रस्ता घटि गेल छल। किछु बरख बाद अवैध दारू फेर आएल, खर्चो फेर बढ़ल। रोगी होयब मात्र नहि, घरक सब व्यवस्था बिगड़ि जाइत अछि।’’

नैना पुछलथिन, ‘‘एखन अहाँक घरक स्थिति?’’ माधवी कहलीह, ‘‘हम काज छोड़ने नहि छी। बेटीक शुल्क समयपर भरबाक कोसिस करैत छी। पतिक स्वास्थ्य फेर बिगड़ल छल, आब उपचार लेइत अछि। सभ दिन एक्के जकाँ नहि रहैत।’’ हुनक स्वरमे शिकायत छल, मुदा आत्म-दया नहि। ओ नैनाकेँ दू सौ रुपैया देबाक प्रयास कएलथिन। नैना लेबासँ मना कएलथिन। माधवी कहलीह, ‘‘धन नहि लिअ तँ ठीक। काल्हि भोरमे घरक चाभी देब,

हम सरस्वती दीदीक रसोई साफ कऽ देब। ककरो घर चलैत रहबाक चाही।'' नैना हुनक हाथ पकड़ि कृतज्ञता व्यक्त कएलथिन।

अभयकेँ घटनाक समाचार सवितासँ भेटल। ओ थोड़ेक समय सोचलनि जे नैना पछिला दिन दूरी चाहने छलीह। बिना पूछने अस्पताल पहुँचब हुनक आग्रहक विरुद्ध होयत कि नहि? अन्ततः ओ छोट सन्देश पठौलनि—'मायक स्वास्थ्यक समाचार भेटल। अस्पतालमे कोनो काज, औषधि वा रक्तक जाँच सम्बन्धी सहायता आवश्यक हो तँ बताउ। हम बाहरसँ व्यवस्था करि सकैत छी।' नैनाकेँ सन्देश पढ़बाक समय भेटल तँ राति नौ बजि चुकल छल। ओ उत्तर देलथिन—'अस्पतालमे छी। अभी चिकित्सक देखैत छथि। काउण्टरक औषधि-दोकान बन्द भेल तँ कठिनाइ होएत। आवश्यकता पड़ल तँ फोन करब।'

अभय उत्तरमे पुछलनि, ''कुन अस्पताल?'' नैना नाम लिखि देलथिन। अभय आगाँ किछु नहि कहलनि। आधा घण्टाक बाद नैना प्रतीक्षालयमे चन्दनसँ भेटय बाहर आएलीह तँ अभय दरबज्जाक कात ठाढ़ छलाह। ओ भीतर घुसबाक प्रयास नहि केलनि। ''हमर परिचित एकटा औषधि-दोकानदार राति धरि उपलब्ध रहैत छथि। जे पर्ची चाही, उपलब्धता पता कऽ देब,'' ओ कहलनि। नैना एक क्षण चुप छलीह। ''अहाँक एतय आबब हमरा नीक लगल, मुदा अभी हम बहुत थाकल छी,'' ओ कहलीह। ''हम बात बढ़ेबाक लेल नहि आएल छी,'' अभय उत्तर देलनि।

चन्दन अभयकेँ देखिते संकोचमे पड़ि गेल। ओकरा अपन पिछला व्यवहार याद छल। अभय कहलनि, ''चन्दन, पर्ची राखि दिअ। जँ औषधि उपलब्ध अछि तँ काउण्टरसँ नियमक अनुसार लिअ। हम बाहर प्रतीक्षा करब।'' चन्दन कहलक, ''हमरासँ गलती भेल अछि। दीदीकेँ—'' अभय बीचमे रोकलनि, ''गलतीक बात पुलिसक समक्ष साँच कहि चुकल छह। एखन मायक उपचार प्राथमिक अछि। अपना प्रति दयाक बात हम नहि कहब; अगिला दिन की करबह, ओ महत्त्वपूर्ण अछि।'' चन्दन माथ झुका लेलक।

प्रतीक्षालयक खिड़कीसँ बाहर एकटा भोजनालय देखाइत छल। भोरमे ओहि ठाम मजदूरसभ चाय पीबय अबैत छथि, राति अस्पतालक परिजन। चन्दन सोचलक जे

अस्पतालक भीतर उपचार करनिहारक श्रम, बाहर भोजन बनौनिहारक श्रम आ घरमे रहि रोगी लेल कपड़ा सहेजनिहारक श्रम बिना ककरो राति कटब कठिन अछि। ओकर पढ़ाइक पुस्तकमे सामाजिक अर्थव्यवस्थाक अध्याय छल, मुदा एहन प्रत्यक्ष पाठ कहियो नहि भेटल छल। ओ अपन जेबीक पैसा फेर गनलक आ तय केलक जे राति अनावश्यक चाय नहि पीत।

राति दस बजे सरस्वतीक जाँचक दोसर विवरण भेटल। चिकित्सक कहलथिन जे तत्काल चिन्ताजनक परिवर्तन नहि देखाइत अछि, तथापि औषधि, आराम आ नियमित परीक्षण आवश्यक अछि। किछु संकेतक पुनः परीक्षण भोरमे होयत। नैना प्रश्न कएलथिन जे पुरान औषधि जारी राखब कि बदलाव होयत। चिकित्सक लिखित परामर्श देलथिन। ‘‘दबाव आ चिन्ता शरीरपर असर करि सकैत अछि, मुदा कारणक पूरा निर्धारण जाँचसँ होयत,’’ ओ कहलीह। नैना एहि सावधानीकेँ ध्यानसँ सुनलीह। मायकेँ केवल ‘घबराहटक रोगी’ कहि सान्त्वना देब उचित नहि छल।

राति बढ़ल। अस्पतालक बरामदामे बिजलीक उजास निस्तेज लगैत छल। चन्दन प्लास्टिकक कुरसीपर ऊँघैत रहल, फेर जागि अपन फोन देखलक। प्रभातक मुनीमक सन्देश फेर आएल छल। ‘‘काल्हि भेटू।’’ चन्दन उत्तर लिखलक—‘माय अस्पतालमे छथि। लिखित हिसाब भेटल अछि। तिथि निश्चित करि भेटब।’ ओकर भीतर प्रबल इच्छा भेल जे मनोजक लोककेँ फोन कऽ एक बेर पैघ रकम माँगि ले। अस्पतालक खर्चक ठोस कारण ओकर सोझाँ छल। मुदा ओ फोन खोलि फेर बन्द कऽ देलक। तत्काल टका भेटब आ फेर अपराधक भयमे फँसब एक्के संकटकेँ लम्बा करब छल।

अभय अस्पतालक बाहर सड़कपर ठाढ़ रहलाह, मुदा राति भरि रहबाक आग्रह नहि केलनि। ओ नैनाकेँ कहलनि, ‘‘दोकानक नम्बर भेजि देलहुँ। चिकित्सक जे लिखताह, सेहे औषधि लेब। हम आब घर जाएब, भोरमे फोनपर समाचार पूछब, जँ अहाँ अनुमति दिअ।’’ नैना कहलीह, ‘‘भोरमे सन्देश पठा देब।’’ अभय एक बेर सरस्वतीक स्थिति पुछलनि, फेर हाथ जोड़ि चलि गेलाह। नैना देखलथिन जे ओ बिना नब वचन देलने आ बिना पुरान विवाद उठौने मददक सीमा बुझि रहल छलाह।

रातिक बारह बजे सरस्वती हलक स्वरमे पुछलथिन, ‘‘घरमे ताला लागल अछि ने?’’ नैना कहलीह, ‘‘प्रभा काकी देखैत छथि।’’ ‘‘चन्दन भोजन केलक?’’ ‘‘केलक।’’ ‘‘तौँ?’’ नैना हँ कहलीह, जखन कि ओ केवल माधवीक आनल सत्तू कनेक खौने छलीह। माय धीरेसँ कहलथिन, ‘‘झूठ नहि कहिह, बेटी। हमरा सभ बातक चिन्ता नहि करबाक कहैत छह, मुदा अपने खाली पेट रहैत छह।’’ नैना मायक आँखि दिस तकलथिन। बीमारीमे सेहो सरस्वतीक चिन्ता अपन सन्तानक अन्नपर अटकल छल।

किछु देर बाद सरस्वती कहलीह, ‘‘घरक बाहर लोक की कहैत अछि, से हमरा सभ सुनाइत अछि। तोहर नामपर जे लिखल गेल अछि, ओकरा पढ़ि हम घबरा गेल रही। चन्दनक ऋणक बात सुनि आओर। मुदा तौँ ई नहि बुझिह जे हमरा बेटा-बेटीसँ घृणा भऽ गेल अछि। भय लागैत अछि। जे अपने हाथसँ बनौने घर छल, ओकरा हिलैत देखैत छी।’’ नैना मायक हाथ पकड़ि कहलीह, ‘‘हम अहाँसँ किछु नहि नुकायब। मुदा सभ समस्या एक्के दिन नहि सुलझत। हम अपन काजक बात स्पष्ट करब, चन्दन अपन बयानपर अडिग रहत।’’

‘‘अभय आएल छलाह?’’ सरस्वती पुछलथिन। नैना आश्चर्यसँ कहलीह, ‘‘अहाँकेँ के कहलक?’’ ‘‘चन्दन भित्तर आबि कहलके।’’ नैना हँ कहलीह। सरस्वती धीमे मुस्कुरैलीह। ‘‘लोककेँ परखबाक समय नीक दिन नहि, एहेन दिन होइत अछि। मुदा खाली एक रातिक मदतिसँ सब निर्णय मत करिह। अपन मन बुझि कऽ करिह।’’ नैना मायक बात सुनि हँ कहलथिन। ओ जानैत छलीह जे सहायता आ प्रेम एक-दोसरकेँ बल दऽ सकैत अछि, मुदा एकर बदला एकर प्रमाण नहि।

भोरक उजास देखैत सरस्वती पुछलथिन, ‘‘आइ कोन दिन?’’ नैना दिन बतौलथिन। मायक आँखि बन्द होमय लागल, मुदा स्वर स्पष्ट छल। ‘‘तोहर बाबू रहिताह तँ एखन बहुत चिन्ता करिताह,’’ ओ कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘हम सभ तीनू छी। आ बाहर सहयोग करयवला सेहो छथि।’’ सरस्वती धीरेसँ माथ हिलौलथिन। ओहि छोट सहमतिक भीतर पैघ सान्त्वना छल। घरक पुरान सहारा नहि रहलाक बाद अपन सहारा बनेबाक जे कठिन

अभ्यास ओ सभ करैत आएल छल, ओही अभ्यासक एकटा नब परीक्षा एहि राति भेल छल।

भोर लग परिचारिका मायक रक्तचाप फेर जाँचलथिन। परिणाम पहिलासँ नीक छल। नैना राहतक श्वास लेलथिन, मुदा चिकित्सकक अन्तिम सलाहसँ पहिने घर लऽ जाएब उचित नहि मानलथिन। चन्दन काउण्टरक कागज ठीक करैत छल। दुरसँ सूर्यक हलुक रोशनी बरामदामे पड़ि रहल छल। अस्पतालक राति समाप्त भऽ रहल छल, मुदा नैनाक घरक आर्थिक संकट समाप्त नहि भेल छल। चिकित्सकक लिखित परामर्श, जाँचक बिल आ आगाँक औषधिक हिसाब कापीमे जोड़बाक छल।

सकाले सविता फोन कएलथिन। मायक स्थिति पुछबाक बाद ओ कहलथिन जे परीक्षा-आन्दोलनक बैठक स्थगित नहि भेल अछि; मुदा नैना उपस्थित नहि रहथि तँ कियो ओकर नामसँ भाषण नहि देत। नैना कहलथिन, ‘‘एहि लेल आभारी छी। एखन हम अस्पतालमे छी। पूनमक परिवारक फोन आए तँ हमरा सूचना दिअ।’’ सविता कहलीह, ‘‘देब। मुदा अहाँ पहिने अपन भोजन करू।’’ फोन राखिते नैना कनेक हँसलीह। नगरक विभिन्न लोक अपन-अपन कामक बीच ओकर घर लेल थोड़ेक स्थान बनौने छलाह।

चन्दन घरसँ अतिरिक्त कपड़ा आनबाक लेल निकलल। रस्तामे ओहि ऋणक कापीकेँ फेर देखलक। एखन ओकर भीतर एकटा बात स्पष्ट छल—मायक उपचारक खर्चक समाधान मनोजक नब ढुलाई नहि होयत। कम वेतनक वैध काज स्वीकार करबाक विचार ओकरा पहिल बेर अपमान नहि लगल। ओ तय कएलक जे अस्पतालसँ घुरिते ओहि गोदामक मालिकसँ फेर भेटत, मुदा नियुक्तिक शर्त लिखित माँगत। बहिनक नोकरी पर रोक लागल अछि; एखन परिवारक आय लेल ओकरा सेहो उत्तरदायी बनबाक चाही।

दुपहरसँ पहिने चिकित्सक सरस्वतीकेँ किछु दिन विश्राम, नियमित औषधि आ नियत समयपर पुनः परीक्षणक परामर्श देलथिन। अस्पतालसँ छुट्टीक प्रक्रिया शुरू भेल। बिलक राशि गनैत नैनाक हाथ काँपल, मुदा ओ पर्ची आ रसीद सभ एक स्थानमे राखलथिन। प्रभा काकी फोनपर घरक समाचार देलथिन—रसोई साफ अछि, पानि भरि देल गेल अछि।

माधवी कहलथिन जे साँझकेँ हलुक भोजन बना देत। अस्पतालमे एकराति रहबासँ नैनाकेँ बुझायल जे परिवार केवल खूनक सम्बन्धसँ नहि, परस्पर श्रम आ सहायतासँ सेहो टिकैत अछि।

प्रभा काकी घरक चाभी साड़ीमे बान्हि लेने छलीह। फोनपर ओ कहलथिन जे कोठरीक खिड़की बन्द कऽ देने छथि, मुदा रसोईमे हवा जाइत रहय, से एकटा रोशनदान खुजल राखने छथि। नैनाकेँ हुनक सावधानी अप्रत्याशित सहारा जकाँ लगल। अस्पतालमे रहितो घर बेसहारा नहि छल, से बुझायल।

सरस्वती गाड़ीमे बैसैत पुछलथिन, ‘‘घर घुरि रहल छी ने?’’ नैना कहलीह, ‘‘हँ माय, घर घुरि रहल छी। मुदा अहाँकेँ आराम करबाक अछि।’’ चन्दन दरबज्जा सम्हारलक। अस्पतालक फाटकसँ बाहर निकलैत ओ अपन फोनपर अभयक छोट सन्देश देखलक —‘मायक स्वास्थ्यक खबर भेटल। शुभ हो। किछु आवश्यक भेल तँ कहू।’ नैना ओहि समय उत्तर नहि लिखलथिन; मायक माथ अपन काँधपर टिकबैत छलीह। घरक बाट ओहि दिन पहिने सँ बेसी लम्बा लगल, मुदा गाड़ीमे तीनू एक संग छलाह। एखन ओकरा सभकेँ भोरक उजासमे फेर जिनगीक कठिन हिसाब शुरू करबाक छल।

अध्याय ३४ : सहयोगक हाथ

अस्पतालसँ घुरलाक बाद सरस्वती देवीकेँ घरक ओसारामे बिछाओन देल गेल। सड़कक झटका एखनहुँ हुनका देहमे अनुभव होइत छल। नैना पर्ची खोलि-खोलि औषधिक समय देखैत छलीह। एकटा गोली भोजनक बाद, दोसर भोरमे; रक्तचापक जाँचक अगिला दिन लिखल छल। चन्दन गिलासमे पानि भरि सिरहानीपर रखलक। माय कहलथिन, ‘‘तोरा सभकेँ एतेक दौड़धूप करौने छी।’’ नैना तकिया ठीक करैत उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ ककरो दौड़ौने नहि छी। जे काज अहाँ सभ दिन हम सभ लेल करैत रहलहुँ, आइ ओहि काजक पालि हमर अछि।’’ सरस्वती आँखि मूनि लेलीह, मुदा हुनक चेहराक थकान एखन नहि उतरल छल।

माधवी देवी भोरमे पहुँचि गेलीह। हुनक हाथमे दूटा स्वच्छ बरतन आ तरकारी छल। ओ बिना पैघ बात केने रसोईक चूल्हि पोछलथिन, चाउर चुनलथिन आ सरस्वती लेल पातर खिचड़ी चढ़ौलथिन। नैना मना कएलथिन जे माधवीक अपन काजमे देरि भऽ जायत। माधवी कहलीह, ‘‘जहिया हमर घरमे विपत्ति छल, सरस्वती दीदी बिना पूछने हमर बेटीक पुस्तकक पैसा देने छलीह। ककरो सहायता कएलाक हिसाब ओ नहि रखलथिन। हम सेहो हिसाब चुकाबय नहि आएल छी।’’ नैना चुप भेलीह। सहायता आ उपकारक बीचक अन्तर ओ दिन स्पष्ट बुझायल। माधवी जाते-जाते कहलथिन जे साँझक भोजन बना देबि; नैना मना कएलथिन आ कहलीह जे काज बँटि गेल अछि, अहाँ अपन घरक चिन्ता सेहो करू।

ओहि दिन कार्यालयक उपस्थिति स्थगित रहबाक पत्र फेर पढ़ल गेल। पत्रक भाषा कठोर नहि छल, मुदा ओकर परिणाम कठोर छल। कतेक दिन वेतन बन्द रहत, ई लिखल नहि छल। नैना कापीमे अगिला पन्द्रह दिनक खर्च जोड़लथिन। मायक औषधि, दूध, चिकित्सक लग जाएबाक भाड़ा, घरक किरासन, चन्दनक आवश्यक यात्रा—सभ लिखल

गेल। ओ अपन जमा रकम देखलथिन। एतेक कम टकामे धैर्य रखब कठिन छल; मुदा बिना योजना बनौने खर्च करब आओर कठिन होयत।

घरक कोनमे राखल पुरान सन्दूकमे सरस्वतीक किछु साड़ी तह कऽ राखल छल। चन्दन कहलक, ''माय कहैत छलीह जे दूटा साड़ी बेचि औषधिक खर्च निकालि सकैत छी।'' नैना तुरन्त मना कएलथिन। ''जे चीज माय कठिन दिनमे सेहो बचा कऽ रखलथिन, ओकरा बेचबाक निर्णय माय स्वयं आरामसँ करथिन। पहिने जे हाथमे अछि, ओकर हिसाब करब।'' चन्दन किछु बाजल नहि। घरक सामानपर अधिकार ककर अछि, ई प्रश्न पहिने हुनका सभक ध्यानमे नहि आएल छल। संकट आबि गेलापर परिवारक सभ वस्तु साझा बुझाइत अछि, मुदा ओकरा बचेबाक पाछाँ ककर श्रम अछि, ई बिसरि जाएब सहज होइत अछि। चन्दन कापी देखिते कहलक, ''हम आजु पहिल ठाम पर फेर काज पूछय जाएब।'' नैना कहलथिन, ''जाहि काजक कागज साफ रहय, ओतहि जा।''

अभयक फोन आएल। ओ पहिने मायक स्वास्थ्य पुछलनि। नैना बतौलथिन जे घर आबि गेलीह, नियमित जाँच होयत। ओ पुछलनि, ''चिकित्सकक पर्चीमे जे औषधि लिखल अछि, सभ भेटि गेल?'' नैना हँ कहलीह। अभय थोड़ेक चुप रहि पूछलनि, ''हम आबि सकैत छी? घरमे कोनो जरूरी बात करबाक नहि; मायक समाचार बुझि चलि जाएब।'' नैना कहलथिन, ''साँझमे आउ। भोरसँ घर अस्तव्यस्त अछि।'' फोन काटलाक बाद ओ अपन स्वरक सहजता अनुभव कएलथिन। पछिला किछु दिनक दूरीक बावजूद अभयसँ बात करैत हुनका आडम्बर नहि करय पड़ल।

दुपहरिया सविता कुमारी पहुँचल छलीह। परीक्षा रद्द भेलाक बाद अभ्यर्थीसभक लिखित प्रतिनिधिमण्डल जिलाक कार्यालयमे ज्ञापन देने छल। सविता बतौलथिन जे किछु लोक सभ छात्रकेँ प्रश्नपत्र किननिहार सिद्ध करबाक प्रयास करैत अछि। ''जिनका दिन-राति पढ़िते बीतल, हुनका सेहो बदनाम करैत अछि,'' ओ कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ''जिनका विरुद्ध जाँचक ठोस आधार अछि, हुनक नाम अलग होअय; हजारो परीक्षार्थीक परिश्रमपर एक्के बेर शङ्का करब अन्याय अछि।'' सविता मायक पायतिर बैसि हुनक

स्वास्थ्य पुछलथिन। सरस्वती अपन थाकल स्वरमे कहलीह, ‘‘पढ़ाइ छोड़िह नहि। परीक्षा फेर होयत, मुदा श्रमक आदति छूटि गेल तँ दोसर हानि होयत।’’

सविताक संग एकटा छोट प्रस्तावो छल। मोहल्लाक दू परिवार अपन बच्चाकेँ गणित आ भाषाक पढ़ाइ लेल भरोसाक शिक्षिका खोजि रहल छल। नैना पढ़ाबय सकैत छलीह, मुदा मायक स्वास्थ्यक कारण घरसँ बहुत दूर जाएब उचित नहि बुझैत छलीह। सविता कहलीह, ‘‘बच्चासभ साँझ अहाँक घरपर आबि सकैत अछि। शुल्क कम रहत, मुदा नियमित रहत।’’ नैना प्रस्ताव लिखि लेलथिन। हुनका अपन डिग्रीक कागज याद आएल, जाहि लेल माय कतेक खर्च घटौने छलीह। बेरोजगारीक बीच शिक्षाक काज छोट नहि छल। ओ कहलथिन, ‘‘पहिने बच्चाक अभिभावकसँ समय आ पाठ्यक्रम स्पष्ट करब।’’

साँझ अभय आएलाह तँ हाथमे महँग फल वा मिठाइ नहि छल। ओ अस्पतालक पर्ची लिखबाक एकटा छोट फाइल आनने छलाह, जाहिमे दिनाङ्क अनुसार जाँचक कागज राखि सकल जाए। सरस्वती फाइल देखिकऽ हँसलीह। ‘‘पत्रकार बाबू, आब हमर बेमारीक सेहो समाचार बनायब?’’ अभय हँसि कहलनि, ‘‘ई समाचार नहि, कागज बचाबयक व्यवस्था अछि। जखन चिकित्सक पुरान पर्ची पुछथिन, तँ खोजय नहि पड़त।’’ सरस्वती कहलथिन, ‘‘एतबा बात हमरा बेटा-बेटीकेँ कहि दिअ। सब कागज एक्के थैलीमे भरि दैत अछि।’’ चन्दन फाइल खोलि अलग-अलग खण्ड देखय लागल।

चाय बनैत रहल। बरामदामे अभय आ नैना दूटा कुर्सीपर बैसलाह। सड़कपर सँ सब्जी बेचयवला आवाज दैत जा रहल छल। किछु देरि दुनू मायक चिकित्सा पर चर्चा कएलनि। फेर अभय धीरे कहलनि, ‘‘हम अहाँसँ दूटा बात साफ करय चाहैत छी। समाचार लेल जे सामग्री भेटैत अछि, ओकरा अहाँक परिवारसँ अलग राखब। आ अहाँक परिवारक कष्टकेँ समाचारक साधन नहि बनायब।’’ नैना हुनका दिस तकलथिन। ‘‘हमरा अहाँपर संशय एहि लेल भेल छल जे जँ चन्दनक बयान छपि गेल तँ पुलिससँ पहिने गिरोह ओकरा निशाना बनाओत।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘ओ भय उचित अछि। हमरा अपना काजमे सावधानी आरो बेसी चाही।’’

नैना पहिल बेर स्पष्ट कहलीह, ‘‘हम अहाँसँ दूर रहबाक निर्णय कोनो घृणासँ नहि लेने छलहुँ। हमरा लागल जे अहाँक निकट रहि हम अहाँपर अनावश्यक दबाव देब, आ अहाँ हमरा कारण अपन समाचार रोकब।’’ अभय किछु काल धरि हुनक बात सुनैत रहलाह। ‘‘हमर स्नेहक अर्थ अहाँक प्रत्येक बात मानि लेब नहि,’’ ओ कहलनि, ‘‘आ अहाँक स्नेहक अर्थ हमर प्रत्येक समाचारपर अधिकार नहि। हम सभ एक-दोसरकेँ सत्य बाजबाक स्थान दऽ सकैत छी ने?’’ नैना माथ हिलौलथिन। ई कोनो प्रेमक अलङ्कृत प्रतिज्ञा नहि छल, मुदा ओहिसँ बेसी भरोसाक बात छल।

चन्दन भीतरसँ दवा देबाक समय बताबय आएल। ओ अभयकेँ देखिकऽ संकोचमे ठाढ़ रहल। अभय पुछलनि, ‘‘आजु काजक खोज कतय धरि पहुँचल?’’ चन्दन कहलक, ‘‘एकटा छपाई-दोकानमे सामान पहुँचएबाक छोट काजक बात भेल अछि। मालिक कहलनि, कागज देब आ भाड़ा लिखित होयत। काल्हि फेर भेटब।’’ अभय ओकरा बधाइ नहि देलनि। केवल कहलनि, ‘‘जे वचन मिले, पहिने ओकर शर्त पढ़िह। जल्दी टकाक नामपर जे रास्ता भेटल, ओकर दाम हम सभ देखिए रहल छी।’’ चन्दन कहलक, ‘‘एखन बुझि रहल छी।’’

सरस्वती भीतरसँ बजौलथिन, ‘‘अभय बेटा, एकटा बात पुछी?’’ अभय लग गेलाह। ‘‘एहि घरक लोक सभ अपन-अपन चिन्तामे एतेक उलझल अछि जे सामान्य बातो कहयमे डरैत अछि। अहाँ नैनाकेँ समझाउ जे काज बन्द भेलासँ लोकक मूल्य नहि घटैत।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘ई बात नैना हमरा बेसी नीकसँ जनैत छथि। मुदा हम हुनक संग बात करैत रहब।’’ सरस्वती फेर कहलथिन, ‘‘चन्दनक विषयमे जे सत्य अछि, से हम सहब। मुदा हमर बेटीकेँ झूठ आरोपसँ बचयबाक काज ई कागजसभ करैत कि नहि?’’ अभय कहने छलाह, ‘‘सही कागज, सही समयपर देल बयान आ धैर्य—एहि सभक आवश्यकता अछि। केवल समाचारसँ कोनो निर्दोषक न्याय नहि होइत।’’

भोजनक बाद अभय उठबाक तैयारी कएलनि। नैना दरबज्जा धरि छोड़य अएलीह। गलीमे बिजलीक खम्भाक बत्ती दू बेर टिमटिमाएल। अभय पुछलनि, ‘‘काल्हि पूनमक पिता लग जेब?’’ नैना कहलीह, ‘‘पहिने फोन करब। रीना पढ़ाइक समय छोड़ि प्रत्येक फोन

उठबैत अछि। हुनका बेकार आशा नहि देबाक अछि।'' अभय बतौलनि जे सोनापुरक ठाम-सम्बन्धी पुरान नियुक्ति-विज्ञापनक स्रोत जाँचि रहल छथि, मुदा एखन कोनो विश्वासयोग्य नब सूचना नहि अछि। नैना कहलथिन, ''जखन प्रमाण भेटत, तखन कहब।'' दुनू एक्के बातपर सहमत छलाह।

रातिमे नैनाकेँ पूनमक मायक फोन आएल। ललिता देवी पुछलथिन, ''बेटीक फोटो फेर देबय पड़त?'' नैना उत्तर देलथिन, ''थाना पहिने सँ फोटो राखने अछि। जँ नब प्रति चाही तँ हम बनबायब।'' ललिता कहलीह, ''रीना दिनमे तीन बेर स्टेशनक नम्बर मिलबैत अछि। कियो कहैत अछि, लड़की सभ शहरमे अपन मनसँ रहि जाइत अछि। हमरा ई बात सुनि नीन्न नहि अबैत।'' नैना धीरे कहलीह, ''आइ धरि एहन कोनो प्रमाण नहि अछि जे पूनम अपन मनसँ सम्पर्क तोड़ने छथि। अहाँ अफवाहकेँ सत्य नहि मानू।'' फोनक दोसर कात लम्बा मौन रहल।

ललिता फेर पुछलथिन, ''बेटी अपन कपड़ाक मशीन लेल टका जोड़ब कहने छलीह। ओ एहन बेटी अछि जे खबरि दिए बिना कतहु रहत?'' नैना कहलीह, ''हम ओकर स्वभाव जनैत छी, काकी। एहि लेल खोज छोड़ने नहि छी। मुदा ओ एखन कतय छथि, तकर अनुमान देब उचित नहि।'' ललिता कहलीह, ''रीना किताब खोलैत अछि तँ बहिनक नाम लिखल पन्ना देखैत रहैत अछि। ओकर परीक्षा लग अछि।'' नैना आश्वासन देलथिन जे रीना चाहथि तँ गणितक कठिन प्रश्न फोनपर पुछि सकैत छथि। पूनमक अनुपस्थितिमे सेहो रीनाक पढ़ाइ रुकय नहि, ई दूनू महिलाक छोट साझा चिन्ता बनल।

दूसर भोर सरस्वतीक रक्तचाप देखबाक लेल मोहल्लाक एकटा प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी आएलीह। ओ पर्ची देखिकऽ समय लिखलथिन आ जँ लक्षण फेर बढ़य तँ तुरन्त चिकित्सकसँ सम्पर्क करबाक सलाह देलथिन। नैना पुरान जाँच आ नव मापक विवरण फाइलमे रखलथिन। सरस्वती कहलथिन, ''देखू, पत्रकार बाबूक फाइल काज आएल।'' ओहि छोट बातपर घरमे हँसी उठल। किछु दिनसँ घरक भीतर जे हँसी दबि गेल छल, ओ फिनु सुनायल।

सरस्वती कहलथिन, ‘‘हम अपन औषधिक समय याद रखने छलीह, मुदा एहि तीनू पर्चीमे नामक अक्षर पढ़ब कठिन अछि।’’ नैना प्रत्येक औषधिक नाम चिकित्सकक पर्चीसँ मिलाकऽ अलग कागजपर पैघ अक्षरमे लिखलथिन। माधवी कहलीह, ‘‘हमर घरमे सेहो बूढ़ मायकेँ पैघ अक्षर चाही।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘एहि काजमे कोनो विशेष विद्या नहि, मुदा सावधानी चाही। नाम गलत लिखल तँ हानि होयत।’’ ओ फेर औषधि-दोकानक मुद्रित पर्चीसँ मिलान कएलथिन। सामान्य घरेलू सतर्कतामे ओहि दिन ककरो कृपा नहि, परिवारक एकसाथ काज करबाक बुद्धि देखाइत छल। चन्दन गिलास धोइत मुस्कुराएल, मुदा ओकर आँखिक चिन्ता एखन शेष छल।

साँझ पहिल दूटा बच्चा पढ़य अएला। एकटा सातम वर्गक, दोसर आठमक। बच्चाक माय पहिने पुछलथिन, ‘‘हम सभ बहुत शुल्क नहि देबि सकब।’’ नैना कहलीह, ‘‘पाठ्यक्रम देखबाक बाद जे उचित होयत, से लिखि लेब। बीच मासमे बदलि कऽ कोनो असुविधा नहि होयत।’’ ओ दुनूक कापी देखलथिन। गणितक एकटा सामान्य प्रश्नपर बालक प्रश्न पुछलक, ‘‘मैडम, ई उत्तरक रास्ता एतबा लम्बा किएक?’’ नैना हँसलीह। ‘‘पहिने कारण बुझू, छोट रास्ता तकर बाद देखब।’’ पढ़बैत-बढ़बैत हुनका अपन चिन्तासँ क्षणभरक राहत भेटल।

पढ़ाइक समय पूरा भेल तँ बच्चाक अभिभावक अगिला मासक तिथि तय कऽ गेलाह। नैना पहिल शुल्कक कागज अलग पन्नापर लिखलथिन। वेतनक तुलना मे रकम बहुत कम छल; मुदा ई साफ श्रमक कमाइ छल। सरस्वती नैनाक कापी तकैत कहलीह, ‘‘छोट नोकरी होअय कि पैघ, ईमानदारीसँ कमायल टका घरक चूल्हिक आँच जकाँ होइत अछि। धीरे जरैत अछि, मुदा अपन होइत अछि।’’ नैना मायक बात सुनि पुरान कार्यालयक लाल रसीद याद कएलथिन, जाहिमे जमा देनिहारक नामो बदलि सकैत छल। अपन एहि छोट कापीमे ओ एहन कोनो अस्पष्टता नहि चाहैत छलीह।

अभय अगिला दिन पत्रिकाक कार्यालयमे सम्पादकसँ चर्चा कएलनि। नरेशक मृत्यु आ रोजगार संस्थाक अभिलेखसम्बन्धी समाचारक नब किस्त लिखबाक प्रस्ताव छल। सम्पादक पुछलनि, ‘‘चन्दनक गाड़ी नहरक कात गेल छल, ई बात लिखब?’’ अभय कहने

छलाह, ‘‘जाँचमे गाड़ीक भूमिका एखन स्थापित नहि। केवल परिचितक कथनसँ छापब तँ बयान प्रभावित भऽ सकैत अछि।’’ सम्पादक असन्तुष्ट भए कहलनि, ‘‘तखन खबरमे नब की?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘प्रमाणक सीमा सेहो खबरक मर्यादा अछि। पीड़ित परिवारक पुष्टि भेल सूचना छपि सकैत अछि, अनुमान नहि।’’ अन्ततः समाचार स्थगित राखल गेल।

ओहि साँझ अभय किछु पुरान प्रकाशन-पत्र उलटैत देखलनि जे नई दिशा संस्थाक विज्ञापनमे सम्पर्कक दूटा अलग पता छल। एकटा नवगढ़क कार्यालयक, दोसर सोनापुरक प्रशिक्षण-सम्बन्धी। विज्ञापनक तिथि पुरान छल; हुनका समझ नहि आएल जे दोसर पता एखन चालू अछि कि नहि। ओ नैनाकेँ सन्देश नहि पठौलनि। पहिने विज्ञापनक अङ्क, कार्यालयक पञ्जीकरण आ मूल स्रोतक पुष्टि करबाक विचार कएलनि। ओ जानैत छलाह जे छोट अपुष्ट सूत्र सेहो पूनमक परिवार लेल पैघ आशा बनि सकैत अछि। आशा तोड़बाक अधिकार हुनका नहि छल।

घरमे नैना देखलथिन जे चन्दन अपन पुरान परीक्षाक पुस्तक खोलने छल। ओ पढ़ि नहि रहल छल; पृष्ठक कोनपर छोट-छोट हिसाब लिखैत छल। नैना पुछलथिन, ‘‘पढ़ाइ फेर शुरू करबह?’’ चन्दन कहलक, ‘‘घण्टा भरि। काज भेटल तँ शेष समयमे। दोसर परीक्षा देब कि नहि, एखन तय नहि।’’ नैना कहलीह, ‘‘निर्णय तोहर रहत। मुदा तैयारीक नामपर पुनः कोनो दलालकेँ धन नहि देबह।’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘एहि बेर विज्ञापनक पाछाँ नहि दौड़ब। पहिले नियम देखब।’’ नैना हुनक कापीपर साफ लिखल दैनिक खर्च देखि बुझलीह जे परिवर्तन छोट काजसँ शुरू होइत अछि।

सप्ताहक अन्तमे सरस्वती अपन बिछाओनसँ उठि आँगनमे बैसबाक इच्छा व्यक्त कएलथिन। चिकित्सकक सलाहक सीमा ध्यानमे राखि नैना हुनका कुर्सी देलथिन। दुपहरक धूप दीवारक आधा भागपर पड़ल छल। माधवी देवी काजसँ घुरैत रुकलीह। सरस्वती पुछलथिन, ‘‘अहाँक बेटी पढ़ाइ करैत अछि ने?’’ माधवी कहलीह, ‘‘हँ, मुदा फीसक चिन्ता अछि।’’ नैना कहलथिन, ‘‘जँ दू दिन सहायता चाही तँ पठा दिअ। शुल्कक बात बादमे।’’ माधवी तुरन्त कहलीह, ‘‘बेटीक काजक मूल्य अहाँ बिना शुल्क नहि घटाउ। जतेक बनत, देब।’’ सरस्वती दुनू दिस तकैत मुस्कुरैलीह।

एहि सामान्य बातचीतमे नैनाकेँ बुझायल जे लोक एक-दोसरकेँ केवल धन दऽ सहायता नहि करैत अछि। कियो अस्पतालक पर्ची सहेजि दैत अछि, कियो रसोईक काज करैत अछि, कियो बच्चाकेँ पढ़बाक समय दैत अछि, आ कियो कठिन सत्य सुनि बिना आरोप लगाने संग रहैत अछि। अभयक संग हुनक सम्बन्धमे सेहो आब एही छोट-छोट काजक भरोसा बनि रहल छल।

नैना अपन मायक पुरान कापीमे पहिल मासक वेतनक लेखा देखलथिन। ऊपर साफ लिखल छल—'घरक खर्च'। ओहि पन्नामे मायक हाथसँ किनारापर लिखल एकटा वाक्य भेटल—'देनिहारक हाथ छोट नहि करब।' नैना एहि वाक्यक अर्थ पुछलथिन। सरस्वती कहलीह, ''गरीब लोक जतेक दैत अछि, ओहि रकमसँ ओकर मान नापिह नहि। कखनहुँ आधा घण्टा समय देब, पाँच सौ टका देबासँ कठिन होइत अछि।'' नैना कापी बन्द कएलथिन। अभय, माधवी आ सविताक छोट सहयोगक बात सोचि हुनका बुझायल जे घरक एहि साधारण सीखक आवश्यकता एखन सभसँ बेसी छल। मुदा ओ जानैत छलीह जे विश्वासक अर्थ संकट समाप्त होयब नहि। पूनम एखन गायब छलीह; नरेशक हत्यारा चिन्हायल नहि छल; चन्दनक बयान जाँचमे छल।

राति अभयक फोन आएल। ''मायक स्वास्थ्य आब?'' ओ पुछलनि। ''बेसी नीक,'' नैना कहलीह। किछु बातक बाद अभय कहलनि, ''हम अहाँसँ कहय चाहैत छलहुँ—जँ अहाँ तैयार होइ तँ हम अपन सम्बन्धकेँ केवल संकटमे भेटब तक सीमित नहि राखय चाहैत छी। सामान्य दिनमे सेहो अहाँक संग समय बितायब चाहैत छी।'' नैना खिड़की दिस तकलथिन। ''हमरो एही बातक इच्छा अछि,'' ओ उत्तर देलथिन, ''मुदा एखन घरमे जे चलि रहल अछि, ओकरा नुकाकऽ कोनो खुशी नहि बनायब।'' अभय कहने छलाह, ''नुकाएब नहि। मिलि कऽ सामना करब।''

फोन रखलाक बाद नैना छोट कापीमे अगिला दिनक काज लिखलथिन—मायक औषधि, दूटा बच्चाक पाठ, कार्यालयक पत्रक उत्तर, पूनमक घर फोन, आ सुजातासँ भेटबाक समय। ओ अन्तिम पाँतिमे अभयक नाम नहि लिखलथिन। किछु सम्बन्ध कापीक कार्यसूचीमे नहि, दिनचर्याक भरोसामे बसैत अछि। मुदा भोरमे उठितहि ओ अभयकेँ अपन

मनसँ सन्देश पठेबाक निर्णय कएलथिन। बहुत दिन बाद अपन इच्छाकेँ एतेक स्पष्ट रूपेँ स्वीकार करब हुनका कठिन नहि लगल। बाहर गलीमे फेरीवालाक आवाज सुनाइत छल; भीतर सरस्वतीक साँस एखन अपेक्षाकृत सहज चलि रहल छल।

अध्याय ३५ : बदलैत गवाही

थानाक प्रतीक्षालयमे ओहि दिन भीड़ कम छल। सुजाता कुमारी अपन मेजपर नरेशक मृत्यु सम्बन्धी कागज अलग कऽ रखलथिन। किछु बयान पहिने सँ दर्ज छल, मुदा दूटा कथनमे समयक अन्तर देखाइत छल। नहरक कात मृतदेह देखनिहार गोकुल सहनी पहिले कहने छलाह जे भोरमे सात बजय सँ कनेक पहिने ओ ओतय पहुँचल छलाह। दोसरा बेर ओ सातक बादक समय बतौने छलाह। कागजमे ई अन्तर छोट बुझाइत छल, मुदा घटनास्थलपर के कखन आएल, से निर्धारित करबाक लेल महत्त्वपूर्ण छल। सुजाता सहयोगीकेँ कहलथिन, ‘‘लोकक स्मृति घड़ी नहि होइत अछि। मुदा समय बदलल तँ कारण बुझबाक पड़त।’’

गोकुलकेँ फेर बजाओल गेल। ओ पुरान गमछासँ कपारक पसीना पोछैत भीतर आएलाह। सुजाता हुनका डरायल देखलथिन। ‘‘अहाँ पहिल दिन जे कहने छलहुँ, से फेर अपन शब्दमे कहू,’’ ओ कहलीह। गोकुल बतौलनि जे नहरक पुल लग हुनक जाल रखल छल। एकटा गाय सड़कक पार गेलाक समय ओ पुलपर ठाढ़ छलाह। पानि दिस तकलापर देह देखलनि आ लगक लोककेँ बजौलनि। ‘‘घड़ी देखल रही?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘नहि। बसक हॉर्न सुनल रही। ताहिसँ अन्दाज लगौने रही,’’ गोकुल उत्तर देलनि।

सहयोगी अधिकारी पूछलनि जे बसक कोन फेरि छल। गोकुलक स्मरण फेर बदलि गेल। ओ कहलनि, ‘‘पहिने बुझने रही जे विद्यालयक बस होयत। बादमे लोक कहलक जे ओ दिन विद्यालय बन्द छल। तखन सात बजे कहने रही।’’ सुजाता हुनका रोकि स्पष्ट कएलथिन, ‘‘दोसर लोक जे कहलक, से अहाँक देखल घटना नहि। जे स्वयं सुनलहुँ, देखलहुँ, ओतबे बताउ।’’ गोकुल किछु आश्वस्त भेलाह। बयानमे बसक हॉर्न सुनबाक बात रहल, निश्चित घड़ीक समय नहि। पहिल आ दोसर अनुमान दुनू अलग टिप्पणीक रूपमे दर्ज भेल।

थानासँ बाहर निकलैत गोकुलकेँ अभय भेटलाह। अभय समाचारक लेल पूछबाक सोचलनि, मुदा गोकुलक चेहराक घबराहट देखिकऽ अपन प्रश्न रोकि लेलनि। गोकुल स्वयं कहलनि, ‘‘हम हत्या नहि देखलहुँ। हम देह देखलहुँ। सभ कियो हमरा जेना हत्यारा चिन्हबाक जिम्मा दऽ देने अछि।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘अहाँ जे नहि देखलहुँ, से कहबाक आवश्यकता नहि।’’ गोकुल दीर्घ श्वास लेलनि। समाचारक संसारमे कतेक बेर एकटा साधारण साक्षीकेँ एहन लोक बुझि लेल जाइत अछि जे घटनाक प्रत्येक रहस्य खोलि सकैत अछि; अभयकेँ ई बात अपन पेशाक सीमा बुझा रहल छल।

ओही दिन दुपहरिया एकटा अपरिचित महिला सुजाताक कार्यालयमे पहुँचल छलीह। ओ अपन नाम अमिता कर्ण बतौलथिन। नई दिशा रोजगार केन्द्रमे लगभग डेढ़ वर्ष कार्यालय-सहायकक काज केने छलीह। छह मास पहिने हुनक अनुबन्ध नब नहि कएल गेल छल। आरम्भिक जाँचमे पुलिस हुनक घर सम्पर्क केने छल, मुदा ओ कहलथिन जे नियुक्ति-सम्बन्धी अभिलेखक विशेष जानकारी नहि अछि। आब ओ अपन ओहि कथनकेँ सुधारबाक लेल आएल छलीह। सहयोगी अधिकारी हुनक परिचयक कागज देखलनि आ हुनक पुरान बयान निकाललनि।

सुजाता पुछलथिन, ‘‘पहिने अहाँ एतबा सीमित बात किएक कहने छलहुँ?’’ अमिता अपन झोरामे हाथ डालि एकटा मोड़ल सन्देश देखौलथिन। ओहिमे लिखल छल जे पुरान कार्यालयक बात करबासँ हुनक नव नोकरीपर असर पड़ि सकैत अछि। भेजनिहारक नाम नहि छल। ‘‘हमरा बेटी अछि,’’ अमिता कहलीह, ‘‘ओकर विद्यालयक फीस भरबाक अछि। हम एकटा सिलाइक दोकानक हिसाब रखैत छी। काज गेल तँ घर कोना चलत, ई सोचि डरि गेलहुँ। मुदा पूनमक मायक रोदन देखलाक बाद चुप रहब कठिन भेल।’’ हुनक आवाज काँपल, मुदा ओ अपन निर्णयसँ पाछाँ नहि हटलिह।

अमिता बतौलथिन जे हुनक नियुक्तिक समय कार्यालयमे तीन प्रकारक पञ्जी रखल जाइत छल—आवेदन, जमा राशि आ प्रशिक्षण-प्रेषण। पहिने सभ पञ्जीक क्रमसँ मिलान होइत छल। बादमे किछु प्रविष्टि कम्प्यूटरपर अलग कएल जाए लागल। किरण मौखिक निर्देश दैत छलीह जे प्रशिक्षण लेल बाहर गेल व्यक्तिक नाम कार्यालयक सामान्य सूचीसँ

हटाउ। अमिता एक बेर प्रश्न केने छलीह जे शुल्क जमा करनिहारक रसीद तखन ककर नामपर रहत। उत्तर भेटल जे ई 'प्रबन्धकीय समायोजन' अछि, कर्मचारीकेँ एतबा प्रश्न नहि पूछबाक चाही।

सुजाता तुरन्त पुछलथिन, ''पूनम यादवक नाम अहाँ स्वयं बदलिएलहुँ?'' अमिता कहलीह, ''जखन पूनम आवेदन देने छलीह, हम कार्यालयमे नहि छलहुँ। हम छोड़ि चुकल रही। मुदा पहिले किछु लोकक प्रविष्टि एही प्रकारेँ बदलैत देखने छलहुँ।'' सुजाता ई भेद स्पष्ट दर्ज करौलथिन। पुरान पद्धति देखनिहार साक्षी आ पूनमक विशेष प्रविष्टि बदलनिहार व्यक्ति एक नहि छल। ''आगाँ जे कहब, अपना देखल वा अपना सुनल बात अलग-अलग कहू,'' सुजाता स्मरण करौलथिन। अमिता सहमत भेलीह।

अमिताकेँ एकटा बात विशेष याद छल। एक बेर नरेश मण्डल हुनका बोलाकऽ दूटा रसीदक प्रतिलिपि मिलएबाक कहलनि। एकही आवेदकक धन एक पञ्जीमे प्रशिक्षण शुल्क आ दोसरमे वाहन-भाड़ा लिखल छल। ओ कहने छलाह, ''कागज गलती करैत अछि तँ ओकर सुधारक निशान रहबाक चाही। पुरान प्रविष्टि मेटि देबासँ जाँच करनिहार की बुझत?'' अमिता उत्तर देने छलीह जे ओ सुधारक अधिकार नहि रखैत छथि। ताहिपर नरेश अपन हस्ताक्षरक संग टिप्पणी लिखि राखने छलाह। अमिता ओ टिप्पणीक रूप याद करैत छलीह, मुदा कागजक मूल प्रति हुनका लग नहि छल।

सुजाता पुछलथिन, ''ओहि टिप्पणीक दिनाङ्क?'' अमिता सोचलथिन। हुनका पूरा दिनाङ्क स्मरण नहि छल, मुदा ओ महिनामे हुनक पतिक आँखिक उपचार भेल छल आ ओ एक दिन छुट्टी लेने छलीह। ओ घरक पुरान पर्ची देखिकऽ सम्भावित सप्ताह बता सकैत छलीह। सुजाता सहायककेँ ई सूचना जाँचबाक लेल अलग लिखबाक कहलथिन। स्मृतिक सहारा देनिहार घरेलू घटना उपयोगी भऽ सकैत छल, मुदा ओकरा बिना मिलान प्रमाण मानल नहि जा सकैत छल। अमिताकेँ कहल गेल जे पुरान कागजात जँ व्यक्तिगत अधिकारसँ हुनका लग उपलब्ध हो तँ सुरक्षित राखथि; कार्यालयसँ चोरि-छिपे कोनो अभिलेख निकालबाक आवश्यकता नहि अछि।

दुपहरिया रेखा थानामे एकटा सामान्य जानकारी लेल आएलीह। ओ नरेशक बहिन छलीह। हुनक हाथमे पिताक औषधिक पर्ची आ नरेशक मृत्यु प्रमाणपत्रक नकल छल। घरेलू आवश्यकताक लेल एकटा दावाक प्रक्रिया बुझबाक छल। प्रतीक्षालयमे ओ अमिताकेँ देखलथिन। एक क्षण हुनक चेहरापर पहिचानक सङ्केत आएल। ‘‘अहाँ दादाक कार्यालयमे रहैत छलीह ने?’’ रेखा पुछलथिन। अमिता हँ कहलीह। ‘‘ओ बराबर कहैत छलाह जे नरेशजी हिसाब ठीक सँ रखैत छथि।’’ रेखाक आँखि भरि आएल। ‘‘हिसाब रखैत-रखैत अपन घरक हिसाब अधूरा छोड़ि गेलाह,’’ ओ कहलीह।

अमिता किछु कहबाक स्थिति मे नहि छलीह। रेखा हुनक हाथ पकड़ि केवल पूछलथिन, ‘‘हमर दादा ककरो नुकसान केने छलाह?’’ अमिता उत्तर देलथिन, ‘‘हम जे देखल अछि, ओहि आधारपर एहन किछु नहि कहि सकैत छी। मुदा जे अनियमितता देखलहुँ, ओकर बात आइ पुलिसकेँ कहि देलहुँ।’’ रेखा माथ झुका देलथिन। हुनका कोनो आश्वासन नहि चाही छल; प्रमाणक बात चाही छल। सुजाता दूरसँ बातचीत देखैत छलीह, मुदा दू परिवारक दुःखकेँ जाँचक औपचारिक कागज बनाबय नहि चाहलथिन।

थानाक कर्मचारी अमिताक बयान लिखित रूपमे पढ़ि सुनौलनि। एकटा पाँतिमे लिखल छल—‘पूनम यादवक प्रविष्टि बदलल जाइत छल।’ अमिता तुरन्त रोकलथिन। ‘‘ई हम नहि कहलहुँ। हम कहने छलहुँ जे पहिले दोसर आवेदकसभक प्रविष्टि बदलैत देखलहुँ। पूनमक समय हम नौकरीमे नहि छलहुँ।’’ सुजाता गलत पाँति सुधारबाक कहलथिन। ओ स्पष्ट कहलीह, ‘‘साक्षी जे नहि जनैत छथि, से हुनक मुँहसँ लिखल जायत तँ असल बातो कमजोर भऽ जायत।’’ सुधारल बयान पढ़ि अमितासँ हस्ताक्षर लेल गेल। हुनका प्रति उपलब्ध करबाक प्रक्रियाक जानकारी देल गेल। ओहि सुधारेसँ बयानक अर्थ आ जिम्मेवारी स्पष्ट रहल।

साँझक एकटा समाचार-पृष्ठपर अमिताक उपस्थितिक चर्चा छल। नाम नहि छल, मुदा ‘पूर्व महिला कर्मचारी’ लिखल छल। समाचारमे बिना प्रमाण नरेशक हत्याक रहस्य खुलबाक दावा छल। अभय सम्पादकसँ कहलनि, ‘‘बयान बदललासँ हत्या सिद्ध नहि होइत। पुरान कार्यालयक पद्धति आ हत्याक बीच सम्बन्ध जाँचबाक अछि।’’ सम्पादक

पुछलनि, ‘‘तखन की छापी?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘जाँच चलि रहल अछि। साक्षीक पहचान आ परिवारक सुरक्षा जरूरी अछि।’’

नैना ओ खबरि देखिकऽ अभयकेँ फोन कएलथिन। ‘‘अहाँ लिखने छी?’’ ओ पुछलथिन। ‘‘नहि,’’ अभय कहलनि। नैना किछु काल मौन रहलीह, फेर कहलीह, ‘‘हम बुझैत छलहुँ जे अहाँ बिना पुष्टि कोनो खबरि नहि देब। मुदा एहन खबरि निकललासँ पूनमक परिवारकेँ फेर आशा होयत।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘ओहि कारण हम ओकरा सुधारबाक प्रयास करैत छी।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘पुलिस कोनो नब सूचना देलक?’’ अभय कहने छलाह, ‘‘औपचारिक रूपसँ नहि। अनुमानसँ आगे नहि बढ़ब।’’ ओहि उत्तरमे निजी भरोसा आ पत्रकारक मर्यादा एक संग छल।

दूसर दिन सविता संग नैना पूनमक घर गेलीह। ललिता देवी दरबज्जामे बैसल छलीह। रीनाक परीक्षा लग आएल छल, मुदा ओ बहिनक विषयमे आएल प्रत्येक समाचार पढ़बाक प्रयास करैत छलीह। रीना पुछलथिन, ‘‘पूर्व कर्मचारी गवाही बदलबय अएलीह, से सुनलहुँ। ताहिसँ पूनमक पता भेटत?’’ नैना सरल उत्तर देलथिन, ‘‘एखन एहन किछु नहि कहल जा सकैत अछि। पुलिसक जाँचमे किछु पुरान बात स्पष्ट होयत, मुदा बहिनक ठाम अलगसँ खोजबाक अछि।’’ रीना चेहरा घुमा लेलीह। हुनक आँखिक निराशा देखिकऽ नैना मनमे सोचलथिन जे अस्पष्ट सान्त्वनासँ बेसी कठिन साँचक छोट उत्तर होइत अछि।

पूनमक पिता रामलाल आँगनक कात टुटल कुर्सी ठीक करैत छलाह। ओ कहने छलाह, ‘‘प्रत्येक भेटनिहार कहैत अछि, काल्हि शुभ समाचार भेटत। काल्हि अबैत अछि, खबरि नहि।’’ सविता हुनका लग बैसि कहलीह, ‘‘हम सभ आजु कोनो तिथि नहि देब। मुदा लिखित पूछताछक जे मार्ग अछि, ओकरा छोड़ब नहि।’’ रामलाल कापी निकालि थानाक पुरान आवेदनक नम्बर देखौलनि। नैनाकेँ खुशी भेल जे परिवार अपन कागज व्यवस्थित रखैत अछि। ओ रीना लेल आवेदनक नकलक दोसर प्रति बनाबयक प्रस्ताव कएलथिन। रीना कहलथिन, ‘‘हम स्वयं लिखब। हमरा सीखबाक अछि।’’

ओहि समय पड़ोसक एक पुरुष आँगन लग ठाढ़ भऽ गेल। ओ कहलक, ‘‘एतेक दिन भेल; लड़कीक कतहु पता नहि। लोक सभ किछु कहैत अछि।’’ रामलाल उत्तेजित होमय लगलाह। नैना बीचमे कहलीह, ‘‘जतय कोनो प्रमाण नहि अछि, ओतय अफवाह फैलाबय सँ ककरो लाभ नहि। अहाँ जँ कोनो ठोस सूचना जनैत छी तँ पुलिसकेँ दिअ।’’ पुरुष बिना उत्तर देने चलि गेल। ललिता देवी धीरे कहलीह, ‘‘एहि डरें हम दुआरि नहि खोलय चाहैत छी।’’ सविता हुनक कात बैसि रहलथिन। सुनबाक धैर्य सेहो एक प्रकारक सहारा छल।

एहि बीच सुजाता अमिता द्वारा बताओल पुरान पञ्जीक प्रकारक तुलना संस्थासँ पहिने प्राप्त कागजातसँ करौलथिन। एकटा सूचीमे सुधारक तिथि छल, मुदा सुधार ककर आदेशसँ भेल, से अस्पष्ट। दोसरमे समान रकमक अलग मद छल। अधिकारी सभ तय कएलनि जे सम्बन्धित प्राधिकृत अधिकारीक माध्यमसँ कार्यालयक सुरक्षित अभिलेखक परीक्षण होयत। निजी कर्मचारीक कथनकेँ अकेले पर्याप्त मानबाक कोनो आधार नहि छल। सुजाता कहलीह, ‘‘गवाही बाट बतबैत अछि; ओहि बाटपर प्रमाण खोजबाक दायित्व हमर अछि।’’

रतन सिंहक कार्यालयमे ओहि दिन अलग बेचैनी छल। किरणकेँ कहल गेल जे पूर्व कर्मचारीक सम्बन्धमे ककरोसँ बात नहि करथि। महेश फाइल लऽ ओतय पहुँचलाह तँ रतन पुछलनि, ‘‘अमिता एखन कतय काज करैत अछि?’’ महेश कहने छलाह, ‘‘हमरा नहि मालूम।’’ रतनक स्वर कठोर भेल, ‘‘एतबा पुरान कर्मचारीक हाल-चालो नहि जनैत छह?’’ किरण महेशक चेहराक भय देखलथिन। ओ विचार कएलथिन जे कार्यालयक भीतर कर्मीसभसँ केवल आदेश मानबाक अपेक्षा होइत छल, मुदा जखन पुरान आदेशक हिसाब माँगल जाए तँ दोष कर्मचारीपर देल जा सकैत छल।

किरण दिनेशक पठाओल पत्र खोललथिन। दिनेश अपन नामपर तैयार ऋण-अनुबन्धक स्पष्ट प्रति माँगने छलाह। किरण कागज सँभारि राखलथिन। हुनका बुझायल जे मौखिक आश्वासनक लिखित उत्तर देब कठिन होइत अछि। अमिता कखनहुँ हुनका सोझाँ स्पष्ट प्रश्न पुछने छलीह; ओ दिन किरण ओकरा चुप कऽ देने छलीह। एहि स्मृतिसँ किरणक मनमे पश्चात्ताप उठल।

साँझ थानासँ फोन आएल तँ अमिताक हाथ फेर काँपि उठल। अधिकारी बतौलनि जे अगिला दिन पुरान नियुक्ति-अनुबन्धक विवरण देखाबय पड़ि सकैत अछि। अमिता अपन घरक सन्दूकसँ अनुबन्ध निकाललथिन। बेटी पुछलक, ‘‘माय, अहाँ फेर थाना जाएब?’’ अमिता कहलीह, ‘‘हँ, जे देखलहुँ से साफ बताबय।’’ बच्ची कहलक, ‘‘तँ काज छूटि जायत?’’ अमिता उत्तर देबाक पहिने ठहरलीह। ‘‘हम कोशिश करब जे नहि छूटय। मुदा डरक कारण गलत बात कहब तकरो मूल्य होइत अछि।’’ बच्ची कोनो गम्भीर उत्तर नहि देलक, केवल मायक कात बैसि गृहकार्य करय लागल।

अगिला भोर गोकुल सहनी स्वयं पुलिसकेँ एकटा नब बात बतबय आएलाह। हुनका याद आएल जे मृतदेह देखबाक पहिने पुलक कात एकटा नील रंगक सामान ढोबयवला गाड़ी देखल छलाह। सुजाता पुछलथिन, ‘‘पहिने ई बात किएक नहि कहने छलहुँ?’’ गोकुल कहने छलाह, ‘‘हमरा लागल साधारण गाड़ी छल। रातिक बाद गाममे लोक बहुत बात कहलक। आब स्मरण होइत अछि।’’ सुजाता विवरण लिखलथिन, मुदा साफ टिप्पणी करौलथिन जे ई बादमे याद आएल कथन अछि आ ओकर स्वतन्त्र पुष्टि आवश्यक अछि। गोकुल सँ गाड़ीक नम्बर पुछल गेल; ओ स्पष्ट रूपसँ नहि कहि सकलाह।

थानाक बाहर गोकुल अभयकेँ फेर देखलनि। एहि बेर ओ किछु नहि कहलनि। अभयो कोनो प्रश्न नहि कएलनि। गोकुलक बदलैत स्मृतिक अर्थ एखन अनिश्चित छल। अभय अपन डायरीमे लिखलनि—‘गवाहक भय, समयक अनुमान, बादमे याद पड़ल विवरण: तीनू अलग विषय।’ ओ पत्रकारक लेखमे एखन ई बात शामिल नहि करब ठानलनि। तखन फोनपर नैनाक सन्देश आएल—‘माय ठीक छथि। रीना आवेदनक प्रति बनौने छथि। पूनमक कोनो सत्यापित खबरि नहि।’ अभय उत्तर देलनि, ‘एहि बातकेँ हम साफ रखब।’

रेखा अपन घरमे नरेशक पुरान सन्दूक देखैत छलीह। दादाक मृत्यु पछाति एखन तक ओ कागजसभ व्यवस्थित नहि कऽ सकलीह। पिताक औषधिक बिल, घरक बीमाक विवरण, किरायक रसीद आ किछु बन्द लिफाफा ओकरा भीतर राखल छल। ओहि दिन नरेशक नब घटनाक चर्चा सुनि हुनका दादाक एकटा वाक्य स्मरण भेल—‘‘जे हिसाब घरमे राखैत छी, ओ घरक काज लेल। कार्यालयक जे प्रति अलग अछि, ओकरा बिना पूछने नहि

फेकिह।'' तखन रेखा बातक अर्थ नहि बुझने छलीह। आब ओ सन्दूकक नीचाँ राखल पुरान कपड़ाक पोटरी अलग करबाक विचार कएलथिन।

साँझ सुजाता अपन लिखित टिप्पणीमे दूटा बात अलग राखलथिन। गोकुलक समय आ गाड़ीक विवरण पुष्टि माँगैत अछि; अमिताक बयान कार्यालयक पुरान प्रविष्टि-पद्धतिक सम्भावित अनियमितता देखबैत अछि। एखन नरेशक हत्यामे कोन व्यक्ति सहभागी छल, ओकर निष्कर्ष निकालबाक समय नहि आएल अछि। मुदा पहिने बन्द बुझायल किछु बाट फेर खुलल छल। ''कल्हि रेखासँ परिवारक कागजक विषयमे सामान्य बातचीत करब,'' ओ सहयोगीकेँ कहलथिन। ओहि बातचीतमे रेखाक अपन दुःख आ घरक अधिकारक सम्मान राखल जाए, ई बातो जोड़लथिन।

नैना रातिमे अभयसँ कहलीह, ''एकटा लोक बयान बदललक तखन कतेक हो-हल्ला मचि गेल। जे लोक झूठ साक्ष्य बनबैत अछि, ओकरा ककर डर नहि लगैत?'' अभय उत्तर देलनि, ''डर सभकेँ लगैत अछि। ककरो नोकरी जाएबाक, ककरो बदनामीक, ककरो सजाक। जँ हम ई फरक नहि देखब तँ गलत निष्कर्ष लिखि देब।'' नैना कहलथिन, ''हम पूनमक मायक आँखि देखलहुँ। आब अनिश्चित बात ओकरा सभकेँ नहि कहब।'' अभय मानललनि। दुनू जानैत छलाह जे साँच केवल पैघ खुलासाक समय नहि, छोट-छोट वाक्यमे सेहो बचाबय पड़ैत अछि।

घर घुरि रेखा पोटरी खोललथिन। भीतर दादाक हस्ताक्षरक दूटा पुरान प्रति आ एकटा कागजक खोल छल। खोलपर नरेशक लिखावटमे छोट अक्षरमे 'लेखा मिलान—व्यक्तिगत प्रति' लिखल छल। रेखा खोलकेँ खोलेनाइ चाहलथिन, मुदा पिताक औषधि देबाक समय भऽ गेल छल। ओ कागज अलग रखि घड़ी देखलथिन। मनमे उठल प्रश्नक उत्तर भोर धरि प्रतीक्षा करबाक छल। नरेशक अनुपस्थितिमे घरक जिम्मेवारी आ हुनक अपूर्ण काज दुनू रेखाक सोझाँ पड़ल छल।

अध्याय ३६ : नरेशक कागजात

रेखा भोरमे उठलथिन तँ पिता एखन सुतल छलाह। ओ चूल्हिपर पानि गरम करैत काल्हि खोलल कपड़ाक पोटरी दिस तकलथिन। नरेशक कागज ओहि पोटरीमे वर्षसभसँ नहि छल; मृत्यु सँ किछुए दिन पहिने दादा स्वयं ओतय राखने छलाह। रेखाकेँ मोन पड़ल जे ओ दिन ओ घर घुरला पर बहुत थाकल छलाह। भोजनक बाद कहने छलाह, ‘‘किछु कागज अलग रखल अछि। अपन व्यक्तिगत नकल अछि। जँ हमरा कार्यालयमे नहि भेटबह तँ ई सभ बिना देखल फेकिह नहि।’’ रेखा तखन हँ कहि देने छलीह। एखन ओ वाक्य हुनका छातीमे भारी लगैत छल।

पिताकेँ औषधि देलाक बाद ओ ओसाराक एकटा साफ मेजपर कागज पसारलथिन। पहिल खोलमे तीनटा सारणी छल। एकटामे आवेदन देनिहारक क्रमाङ्क, दोसरमे जमा भेल शुल्क, तेसरमे प्रशिक्षण आ बाहरी नियुक्तिक भुगतानक लेखा। प्रत्येक सारणीक कोनमे नरेशक हस्ताक्षर वा आरम्भिक अक्षर छल, मुदा सभ पन्नापर नहि। दूटा पन्ना फोटोप्रतिक जकाँ छल, एकटामे नीला स्याहीसँ टिप्पणी। रेखा लेखापाल नहि छलीह; ओ सभ मदक अर्थ नहि बुझि सकैत छलीह। मुदा एकहि क्रमाङ्कक आगाँ दू अलग रकम लिखल अछि, से सहज देखाइत छल।

एकटा नामपर हुनक आँखि अटकि गेल—‘पूनम यादव’। ओ नाम आब घर-घरमे सुनाइत छल। नामक आगाँ पहिल सूचीमे प्रशिक्षण शुल्कक रकम छल। दोसर सूचीमे ओही क्रमक आगाँ ‘प्रेषण व्यय’ लिखल छल, मुदा नामक स्थानपर कोड छल। रेखा पन्ना पलटि देखलथिन जे कोडक अक्षर साफ नहि अछि। ओ अपन मनसँ कोड जोड़ि निष्कर्ष निकालबाक प्रयास नहि कएलथिन। अपन दादाक कागजमे जे लिखल छल, ओकरा सुरक्षित राखब हुनक पहिल जिम्मेवारी छल; व्याख्या करब जाँचक काज होयत।

दूटा लिफाफामे बैंकक भुगतानक छपल विवरण आ हस्तलिखित हिसाब छल। किछु रकम रोजगार संस्थाक खातासँ बाहरक आपूर्तिकर्ताक नामपर गेल देखाइत छल। एकटा भुगतानक विवरणमे 'वीरेन्द्र निर्माण सेवा' लिखल छल, दोसरमे माल-ढुलाईक मद। ओहि मदक आगाँ वास्तविक मजदूरक नाम नहि छल। रेखा सोचलथिन जे दादा एही अन्तरकेँ लऽ चिन्तित छलाह। मुदा बिना मूल बैंक विवरणक जाँच कएल केवल छपल प्रति देखिकऽ ई निश्चित नहि होयत जे धन कतए गेल। रेखा ओ पन्नासभ फेर मूल क्रममे रखलथिन।

ओ छोट कापी निकालि कागजक संख्या आ खोलक क्रम अलग लिखलथिन। पहिल खोलमे छह पन्ना, दोसरमे चारि, तेसरमे तीनटा ढीला कागज। ओ किछु दिन पहिने सोचने छलीह जे दादाक जे कागज उपयोगी नहि, ओकरा रद्दीमे बेचि देल जाए; घरमे तिल धरबाक ठाम नहि अछि। आब ओ अपन ओहि विचारसँ घबरा उठलीह। घरक कोठरीमे अनेको कागज असलमे केवल पुरान सामान होइत अछि, मुदा कखनहुँ एकटा पन्ना ककरो परिश्रम आ जीवनक अपूर्ण प्रश्नक प्रमाण बनि जाइत अछि। एहन महत्त्व पहिने बुझब सभक लेल सम्भव नहि।

पिता उठलाह तँ बेटी कागजक बीच बैसल देखलनि। ''नरेशक पोथी देखैत छह?'' ओ पुछलनि। रेखा कहलीह, ''हँ, किछु कागज अछि। पुलिसकेँ देखेबाक अछि।'' पिता दीर्घ श्वास लेलनि। ''ओ कार्यालयमे दिन-राति खटैत छल। कहैत छल, हिसाब मेल नहि खाइत। हम सोचैत रही, लेखाक सामान्य चिन्ता होयत।'' रेखा चुप रहलीह। पिता फेर कहलनि, ''जे साँच अछि, ओ छिपेबाक नहि। मुदा दादाक नामपर झूठ बातो नहि कहिह।'' रेखा उत्तर देलथिन, ''हम जे जानैत छी, से कहब; जे नहि जानैत छी, से जाँचमे छोड़ि देब।''

ओ सुजाताकेँ फोन कऽ जानकारी देलथिन जे घरमे नरेशक राखल किछु कागज भेटल अछि। निरीक्षक पुछलथिन जे कागज के-के देखलनि, आ ओ कखन सँ घरमे छल। रेखा जतबा याद छल, स्पष्ट बतौलथिन। सुजाता कहलीह, ''कागजकेँ जेहन अवस्था मे भेटल, ताहि क्रममे राखू। जँ सम्भव हो तँ घरक लोकक सामने सीलबन्द थैलीमे आनू; थाना पहुँचला पर जमा करबाक लिखित रसीद भेटत।'' रेखा सहमत भेलीह। सुजाता हुनका निश्चिन्त करौलथिन जे घरक व्यक्तिगत दस्तावेज जाँचसँ बाहर अलग राखल जाएत।

थानापर रेखा एकटी नहि गेलीह। पड़ोसक वृद्ध शिक्षिका मनोरमा देवी हुनक संग गेलीह। मनोरमा नरेशक बाल्यकालसँ परिवारकेँ जनैत छलीह। रास्तामे ओ किछु प्रश्न नहि पुछलथिन; बस रेखाक हाथमे राखल थैलीक भार देखैत रहलीह। रेखा कहलीह, ‘‘ई सभ कागज सुरक्षित रहल, मुदा हमर दादा नहि रहलाह।’’ मनोरमा उत्तर देलथिन, ‘‘एखन जँ कागज साँच स्पष्ट करयमे सहायक होयत, तँ ओकरो मूल्य अछि। मुदा साँचक निर्णय कागज देखनिहार अधिकारीक श्रमसँ होयत।’’

थानाक कक्षमे सुजाता पहिने रेखाक बयान लिखलथिन—कागज राखल गेलाक स्मृति, सन्दूकक ठाम, खोल भेटबाक दिन, बीचमे के-के हाथ लगौने छल। रेखा बतौलथिन जे ओ स्वयं पन्नासभ खोलि देखने छलीह आ पिताकेँ सेहो सार बतौने छलीह। सुजाता कहलथिन, ‘‘ई बात लिखब आवश्यक अछि। श्रृङ्खला साफ रहत तँ पछिला जाँचमे शङ्का कम होयत।’’ कागज सभक संख्या गनल गेल, प्रत्येक पन्नाक सामान्य विवरण बनल आ रेखाकेँ प्राप्ति-रसीद देल गेल। मनोरमा साक्षीक रूपमे उपस्थित छलीह।

रेखा रसीदपर लिखल पन्नाक संख्या फेर गनलथिन। एकटा कागज छोट भऽ मोड़ल छल, ताहि कारण अधिकारी पहिने ओकरा दूटा पन्ना बुझि लेने छलाह। रेखा ई भेद बतौलथिन। सुधार कऽ संख्या दुरुस्त लिखल गेल। सुजाता कहलीह, ‘‘एहि छोट बातक ध्यान रखबाक लेल धन्यवाद। बादमे जँ संख्या नहि मिलत तँ अनावश्यक प्रश्न उठत।’’ रेखा उत्तर देलथिन, ‘‘हमरा दादाक लेखा बुझाइत नहि, मुदा जे अपने हाथसँ देलहुँ तकर संख्या तँ बुझि सकैत छी।’’ एतबा कहिते हुनका अपन स्वरमे किछु दृढ़ता अनुभव भेल।

पहिल निरीक्षणमे सुजाता एकटा पन्ना अलग देखलथिन। ओकर ऊपर नरेशक लिखावटमे ‘एक आवेदक—दू मद’ लिखल छल। ओहि पन्नामे पाँचटा क्रमाङ्कक सामना दू-दू प्रविष्टि छल। सुजाता सहयोगीकेँ पुरान रसीदक नमूना आनबाक कहलथिन। नैना जे प्रशिक्षणक रसीद आ दोसर अभिलेखक भिन्नता पहिने बतौने छलीह, ओकर उल्लेख जाँच-पञ्जीमे छल। मुदा रेखाक पन्ना ओहि बातक स्वतन्त्र पुष्टि करैत अछि कि नहि, से लेखा-परीक्षणक बादे स्पष्ट होयत। सुजाता जल्दबाजीमे कोनो कोष्ठकपर लाल घेरा नहि बनौलथिन।

एकटा कागजक पाछाँ नरेशक छोट लिखावट छल—‘मूल पञ्जी उपलब्ध होय तँ १२, १७, २२ क्रम मिलाउ।’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘अहाँकेँ एहि अङ्कक अर्थ मालूम अछि?’’ रेखा माथ हिलौलथिन। ओ कहलीह, ‘‘दादा कखनहुँ घर आबि कापीमे हिसाब करैत छलाह, मुदा कार्यालयक गोपनीय बात हमरा नहि बतबैत छलाह।’’ सुजाता कहलथिन, ‘‘एहि तीनू क्रमाङ्कपर अलग जाँच होयत।’’ ओ कागजक फोटोप्रति प्रमाणित पद्धतिसँ सुरक्षित करौलथिन; मूल पन्ना सामान्य मेजपर छोड़ि नहि देल गेल।

कागजक दोसर भागमे श्रमिकक मजदूरी आ गाड़ीक भाड़ाक शीर्षक छल। एकटा महिनाक लेल ‘मजदूरी भुगतान’ नामपर जे रकम खर्च देखाओल गेल छल, ओहि महिनाक हस्ताक्षरित प्राप्ति-पञ्जीक प्रति ओतय नहि छल। दोसर तरफ माल-ढुलाईक नामपर साप्ताहिक भुगतान बढ़ैत देखाइत छल। एही वृद्धिसँ वास्तविक अवैध कारोबार सिद्ध नहि होइत, मुदा नरेशक चिन्ता किएक बढ़ल होयत, तकर आधार बुझाइत छल। सुजाता आर्थिक अपराधक जाँचसँ सम्बन्धित अधिकारीक सहयोग लेल लिखित अनुरोध तैयार करौलथिन।

एहि बीच नैना मायक औषधि लऽ दवाखानासँ घुरैत छलीह। रेखाक फोन आएल। रेखा बतौलथिन जे किछु कागज पुलिसकेँ सौंपल अछि। ‘‘अहाँकेँ पहिने किएक नहि कहलहुँ, से नहि बुझू,’’ रेखा कहलीह। ‘‘हमरा स्वयं ओकर महत्त्व काल्हि बुझायल।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ जे उचित बुझलहुँ, से केलहुँ। हम ओकर विवरण सुनबाक आग्रह नहि करब। पुलिस जँ हमरा पूछत तँ जे जानैत छी, से कहब।’’ रेखाकेँ एहि उत्तरसँ राहत भेटल। अपराधक जाँचमे पीड़ित परिवारपर सबसँ बेसी दबाव कखनहुँ परिचित लोकक जिज्ञासासँ सेहो पड़ैत अछि।

दुपहरिया सुजाता नैनाकेँ औपचारिक सूचना पठौलथिन। किछु पुरान रसीदक विवरण फेर मिलाएबाक छल। नैना थानामे अपन सुरक्षित नकल आ कार्यालय द्वारा देल उपस्थिति स्थगितक पत्र लऽ गेलीह। सुजाता पहिने स्पष्ट कएलथिन जे कागज जाँचब अलग बात अछि आ नैनाक विरुद्ध फैलल आरोप अलग। ‘‘अहाँ पहिने जे विवरण देने छलहुँ, ओकरा

फेर देखब,'' ओ कहलीह। नैना अपन पासक पन्ना क्रमसँ रखलथिन। ओ ककरो नाम जोड़ि निष्कर्ष निकालबाक प्रयास नहि कएलथिन।

एकटा रसीदमे भुगतानक दिनाङ्क आ पञ्जीमे प्रविष्टिक दिनाङ्क दू दिनक अन्तरपर छल। नैना बतौलथिन जे कार्यालयमे कखनहुँ नकद जमा भेलाक बाद कम्प्यूटर प्रविष्टि दोसर दिन होइत छल। ''तखन ई अन्तर मात्र गलत काजक प्रमाण नहि,'' सुजाता कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ''हँ, मुदा जँ मद बदलल गेल आ पुरान पन्ना हटाओल गेल, से अलग बात अछि।'' सुजाता हुनक बात लिखलथिन। ई छोट अन्तर महत्त्वपूर्ण छल—सामान्य कार्यालयी देरी आ जानि-बुझि लेखा बदलनाइ एक अर्थ नहि रखैत अछि।

नैना एकटा जमा राशि रसीद चिन्हलथिन, जाहि तरहक रसीद पूनमकेँ देल गेल छल। ओ पूनमक रसीदक प्रति स्वयं पहिने सुरक्षित कऽ देने छलीह। सुजाता पुछलथिन जे ओ मूल प्रति कतय अछि। नैना बतौलथिन जे पूनमक परिवार लग अछि, पुलिसकेँ पहिने नकल देल गेल अछि। ''मूल प्रति परिवारक संरक्षणमे रहय, जँ जाँच लेल आवश्यक हो तँ विधिपूर्वक प्राप्त कएल जाए,'' सुजाता कहलीह। नैना सहमत भेलीह। पूनमक खोजमे कागजक एहि सूक्ष्म स्थानक एखन लाभ स्पष्ट नहि छल, मुदा कमसँ कम जमा राशि नकारबाक प्रयास कमजोर पड़ि सकैत छल।

रेखाक कागजमे 'वीरेन्द्र निर्माण सेवा'क नाम देखिकऽ सुजाता एकटा पुरान सूचना याद कएलथिन। रोजगार संस्थाक सार्वजनिक कार्यक्रममे एकटा निर्माण-ठीकेदार रतनक संग मंचपर देखल गेल छल। ओहि तस्वीरक आधारपर अपराध सिद्ध नहि होइत, मुदा आधिकारिक भुगतान आ ठीकेदारक संस्थाक सम्बन्ध जाँचबाक कारण भेटैत छल। सुजाता एकटा पृथक् प्रश्नावली बनौलथिन—भुगतान ककर अनुबन्ध पर, कोन काज लेल, कोन तिथिमे, आ भुगतानक बाद की वस्तु वा सेवा प्राप्त भेल। एहि प्रश्नक उत्तर कागजसँ मिलबाक छल, सार्वजनिक तस्वीरसँ नहि।

जाँचक कक्षमे भानु प्रतापक नाम आबि गेल। ओ दोसर प्रशासनिक काजसँ थानामे छल। रेखाक कागजक चर्चा सुनिते ओ सहज स्वरमे कहलनि, ''ई सभ हिसाबक झमेला

होयत। व्यापारमे मद बदलैत रहैत अछि।'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''हो सकैत अछि। तकर जाँच बिना हम दोष नहि मानब, आ बिना जाँच खारिज सेहो नहि करब।'' भानु किछु क्षण ठाढ़ रहल, फेर अपन कक्ष दिस चलि गेल। सुजाता ककरो सोझाँ हुनक भूमिका सम्बन्धी अनुमान व्यक्त नहि कएलथिन। मुदा एतेक संवेदनशील दस्तावेजक जानकारी अनावश्यक लोक धरि नहि पहुँचय, एकर निर्देश देलथिन।

चन्दन संझिया घर पहुँचल तँ नैनाकेँ कापीमे किछु क्रमाङ्क लिखैत देखलक। ओ पूछलक, ''नरेशजीक कागजमे हमर गाड़ीक नम्बर अछि?'' नैना माथ उठौलथिन। ''हमरा नहि मालूम। पुलिस जे गोपनीय बात अछि, ओकरा बाहर नहि कहत। तोहर जे जानकारी अछि, ओ पूरा देलह ने?'' चन्दन उत्तर देलक, ''जे याद छल, सभ देलहुँ। मनोजक फोनक समय आ भाड़ाक रकम सेहो।'' नैना कहलीह, ''तखन अपन उत्तर बदलबाक प्रयत्न नहि करिह। जे भिन्न बात याद पड़य, स्वतन्त्र रूपसँ लिखि सूचना दिअ।'' चन्दन एही बात पर टिकि रहल।

ओहि साँझ रेखा घर घुरलीह तँ पिता दरबज्जापर प्रतीक्षा करैत छलाह। ओ पुछलनि, ''सभ कागज दऽ एलह?'' ''जे दादाक लेखा-सम्बन्धी छल, से जमा कएलहुँ। घरक चिकित्सा आ बीमाक पन्ना अपना लग अछि। जमा कएल कागजक रसीद भेटल,'' रेखा कहलीह। पिता रसीद हाथमे लऽ देरि धरि देखैत रहलाह। हुनका अक्षर साफ नहि दिखैत छल; रेखा पढ़ि सुनौलथिन। पिता कहने छलाह, ''ई पन्ना सँभा कऽ रखिह। दादा जतबा कठिन हिसाब रखैत छल, ओकरा लेल एकटा सही रसीदो जरूरी छल।'' रेखाक आँखि भरि आएल।

रतन सिंह ओहि दिन नगरक एकटा कार्यक्रममे उपस्थित छलाह। समाचारपत्रक प्रतिनिधि रोजगार केन्द्रक विरुद्ध शिकायतक विषय पुछलनि। रतन उत्तर देलनि, ''जाँचमे सहयोग करब। नरेशजीक मृत्यु दुखद अछि। व्यापारक सामान्य लेखा-विवादकेँ अपराधक रूप देब उचित नहि।'' अभय भीड़मे ठाढ़ सुनैत छलाह। ओ रतनक कथन यथावत लिखलनि, मुदा अपन डायरीमे अलग टिप्पणी कएलनि जे जाँचक अभिलेख देखल बिना ककरो पक्षक निष्कर्ष छापब उचित नहि। कार्यक्रम समाप्त भेलाक बाद रतनक संग वीरेन्द्र

दू मिनट बात कएलक, मुदा अभय दूरसँ शब्द नहि सुनि सकलाह। ओहि मौन भेटकेँ समाचार नहि बनौलनि।

अभय कार्यालय घुरि नरेशक परिवारक विषयमे पहिले छपल समाचार फेर पढ़लनि। ओहि लेखमे रेखाक आर्थिक कठिनाइक चर्चा छल। आब किछु लोक हुनका 'गुप्त फाइलक रक्षक' कहि सनसनी बनाबय चाहैत छल। अभय निर्णय कएलनि जे रेखाक अनुमति बिना हुनक घरक ठाम वा कागजक संख्या नहि प्रकाशित करताह। सहयोगी पत्रकार कहलक, ''अहाँ सभ बात दबा रहल छी।'' अभय उत्तर देलनि, ''जाँचक विवरणकेँ दबेनाइ आ ककरो निजी सुरक्षा बचेनाइ अलग बात अछि। जे सिद्ध अछि, ओकरा छापब; जे गोपनीय रहबाक कारण जाँचमे हानि पहुँचाओत, ओकरा नहि।''

अगिला दिन सुजाताक कार्यालयमे आर्थिक अपराध सम्बन्धी एकटा अधिकारी पहुँचलाह। ओ कागजातक प्रारम्भिक मिलान करबाक बाद कहलनि जे एकटा शीर्षकमे लगातार आवेदकक जमा राशि बढ़ल अछि, मुदा प्रशिक्षण देबाक खर्च ओहि अनुपातमे नहि बढ़ल। दोसर शीर्षकमे माल-ढुलाईक भुगतान बहुत तेजी सँ बढ़ल देखाइत अछि। ''ई संकेत अछि,'' अधिकारी स्पष्ट कएलनि, ''अनियमितताक निर्णय नहि। खाताक मूल विवरण, करार आ सेवा प्राप्तिक साक्ष्य चाही।'' सुजाता एही अनुसार माँगल अभिलेखक सूची तैयार करौलथिन।

एकटा पन्नामे नरेशक हस्ताक्षरक कात लिखल छल—'जाँच लेल मूल बैंक प्रविष्टि प्राप्त करब।' सुजाता ई वाक्य देखिकऽ किछु काल चुप रहलीह। नरेश स्वयं कोनो अन्तिम आरोप लिखि नहि देने छलाह; ओ जाँचक आधार जुटा रहल छलाह। एही बातसँ हुनक सावधानी देखाइत छल, आ संगहि ई प्रश्न उठैत छल जे किनका एहि जाँचसँ भय छल। उत्तर एखन अज्ञात छल। सुजाता सहयोगीकेँ कहलथिन, ''जाँचक प्रश्नक उत्तर साक्ष्य दैत अछि। डरि रहल व्यक्ति कियो हो, तकर अनुमानसँ गिरफ्तारी नहि होयत।''

रेखाकेँ पुलिसक ओरसँ एकटा फोन आएल जे कागजमे रहल एकटा संक्षिप्ताक्षरक अर्थ पुछबाक छल। ओ कहलीह, ''हम निश्चयपूर्वक नहि कहि सकैत छी। दादा घरमे

कखनहुँ ई अक्षर बुझौने नहि छलाह।'' अधिकारी धन्यवाद देलनि। फोन रखलाक बाद रेखा बड़ राहत अनुभव कएलथिन। हुनका पहिने भय छल जे जँ कागज सौंपतीह तँ सभ प्रश्नक उत्तर हुनकेँ देबाक पड़त। आब बुझायल जे नहि जनबाक बात स्वीकार करब सेहो ईमानदारी अछि। ओ पिताक औषधिक समय देखलथिन आ खाना बनाबय चलि गेलीह।

सविता कुमारी बेरोजगार अभ्यर्थीसभक बैठकमे नैनाकेँ बजौने छलीह। नैना बैसकमे स्पष्ट कहलीह जे नियुक्तिक नामपर धन लेने लोक आ प्रश्नपत्र लीकक आरोपित एक्के व्यक्ति हो सकैत छथि, मुदा प्रमाण बिना दुनू अपराधकेँ मिला देब उचित नहि। एकटा युवक कहलक, ''हम सभक जिनगी गेल; कागज जाँचैत-जाँचैत बरख बीतत।'' नैना ओकर रोष बुझैत छलीह। ओ उत्तर देलथिन, ''जाँचमे देरीक विरुद्ध लिखित माँग करू। मुदा गलत लोककेँ दोषी कहि देलासँ असली जिम्मेवार बचि सकैत अछि।'' सविता आवश्यक कागजातक प्रतिलिपि व्यवस्थित करबाक प्रस्ताव रखलथिन।

बैसकसँ घुरैत नैना अभयकेँ भेटलीह। सड़कक कात पीपड़ि तर दुनू क्षणभर ठाढ़ रहलाह। अभय पुछलनि, ''मायक स्वास्थ्य ठीक अछि?'' ''आब थोड़ेक हँसैत छथि,'' नैना कहलीह। अभयक चेहरापर सहज प्रसन्नता आएल। फेर नैना कहलथिन, ''रेखाक घरमे जे कागज भेटल, ओकरा लऽ बहुत चर्चा अछि। अहाँ सावधान रहब।'' अभय उत्तर देलनि, ''हमरा कुछ निष्कर्ष मिलल नहि अछि। जतेक सार्वजनिक रूपेँ पुष्ट अछि, ओतबे लिखब।'' नैना कहलीह, ''एहि लेल अहाँपर भरोसा करैत छी।'' दुनू बेसी देरि नहि ठाढ़ रहलाह; घरमे औषधिक समय भऽ रहल छल।

राति सरस्वती नैनाकेँ अपन कात बैसबाकेँ कहलीह। ''आजु अभय भेटल?'' ओ पुछलथिन। नैना लजाइ नहि; शान्त स्वरमे कहलीह, ''हँ, बाटमे।'' सरस्वती किछु देरि चुप रहि कहलीह, ''मानुषक मनकेँ केवल संकट सँ नहि परखिह। जखन साधारण दिन आए, तखन सेहो देखिह जे ककर संग बात करिते अपन स्वर बदलब नहि पड़ैत।'' नैना मायक हाथ छू कऽ मुस्कुरैलीह। मायक वाक्यमे विवाहक दबाव नहि छल, जीवनक अनुभव छल। नैना सोचलथिन जे एखन भविष्यक निर्णयक समय नहि, मुदा अपन मनक सत्यक उपेक्षा करबो आवश्यक नहि।

सुजाता रातिक अन्तिम समीक्षा करैत एकटा विवरण तैयार कएलथिन। रेखाक जमा कएल पन्ना, अमिताक बदलल बयान, नैनाक पुरान रसीद आ गोकुलक अलग समय-विवरण—सभक स्रोत आ सीमा अलग-अलग लिखल गेल। किछु दस्तावेज रोजगार-ठगीक सम्भावना देखबैत छल, किछु भुगतानक असामान्य फेरबदल; ककरो सँ एखन हत्याक प्रत्यक्ष कर्ता चिन्हायल नहि छल। मुदा नरेशक आशङ्काक खाली कल्पना नहि छल, से जाँचबाक ठोस आधार भेटल छल। सुजाता फाइल बन्द करैत अगिला कार्रवाईक सूची तैयार कएलथिन।

रेखा ओहि राति पहिल बेर नरेशक खाली मेजपर बैसि भोजनक खर्चक कापी खोललथिन। दादा पहिने एहि कापीमे पिताक औषधि, घरक धान आ किरायक रकम लिखैत छलाह। किछु पन्ना अपूर्ण छल। रेखा अगिला पन्नापर अपन लिखावटमे पहिल पाँति लिखलथिन—‘आजुक दवा, दूध, बाजार’। ओ बुझलथिन जे नरेशक मृत्यु पछाति घरक जीवन ठहरि नहि सकैत अछि। दादाक अपूर्ण कार्यालयी प्रश्न पुलिस देखत; परिवारक दिनचर्या हुनका अपने सम्हारबाक अछि। दुनू काम एक-दोसरक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।

भोरमे सुजाता एकटा नब अनुरोधपत्रपर हस्ताक्षर कएलथिन। ओहि पत्रमे रोजगार संस्थाक मूल लेखा-पञ्जी, सम्बन्धित बैंक प्रविष्टि आ ठीकेदारक भुगतानक अभिलेख विधिसम्मत रूपसँ माँगल गेल छल। पत्र भेजल गेलाक बाद अधिकारी सभकेँ बुझल जे जाँच आब कागजक अनुमानसँ वास्तविक लेनदेनक परीक्षण दिस बढ़ि रहल अछि। नव विवरण देखलाक बाद सुजाता मूल कागज सभक अलग-अलग मिलान करबाक निर्देश देलथिन। हुनका लेल ककरो विरुद्ध तुरन्त आरोप लगेनाइ नहि, प्रत्येक भुगतानक वास्तविक आधार विशेष रूपसँ बुझनाइ आवश्यक छल। पूनम कतय छथि, एहि प्रश्नक उत्तर एखन बाँकी छल; नरेशक मृत्युकेँ ककरा संग निश्चित रूपसँ जोड़ल जाए, सेहो स्पष्ट नहि छल। मुदा रेखा द्वारा सौंपल कागजात साँचक खोजक लेल एकटा ठोस नब आधार बनल छल।

चतुर्थ भाग

साँचक दाम

अध्याय ३७–४८

अध्याय ३७ : नब पूछताछ

सवेरक इजोत थानाक पछिला आँगन धरि पहुँचि रहल छल, मुदा निरीक्षक सुजाता कुमारीक मेजपर राखल फाइलक भीतर रातिकेँ अन्हार एखनहुँ घेरने छल। नरेश मण्डलक बहिन रेखा जे कागज सौंपने छलीह, ओकर प्रत्येक पन्नाक प्रतिलिपि बनि गेल छल। मूल कागज अलग सुरक्षित छल। सुजाता एकटा सूचीपर नजरि दौड़ौलथिन—आवेदन शुल्क, प्रशिक्षणक खर्च, बाहरी नियुक्तिक अग्रिम, मजदूरी भुगतान आ माल-ढुलाई। पाँच शीर्षक, मुदा कतेको प्रविष्टिमे एक्के रकम दोसर नामसँ देखाओल गेल छल। केवल शीर्षक बदललासँ अपराध सिद्ध नहि होइत; मुदा बिना स्पष्टीकरण ओकरा सामान्य हिसाबो नहि कहल जा सकैत छल।

लेखा-जाँचमे सहयोग करय आएल अधिकारी अरुण कुमार फाइलक कात एकटा पन्ना रखलनि। ‘‘एहि तीन महिनाक बैंकक प्रविष्टि माँगने छी। संस्थाक दफ्तर सँ जे नकल आएल, ताहिमे भुगतानक रकम अछि, मुदा ककर अनुमति पर गेल, से पूरा नहि अछि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘रतन सिंहक हस्ताक्षर अछि?’’ अरुण कहलनि, ‘‘किछु ठाम हुनक, किछु ठाम प्रबन्धिकाक, आ दूटा ठाम केवल कार्यालयक मोहर। मोहरसँ धनक वास्तविक गन्तव्य नहि बुझाइत।’’ सुजाता खाली कोष्ठकमे प्रश्नचिह्न देलथिन। प्रमाणक ठाम प्रश्न लिखब हुनका उचित बुझाइत छल।

थानाक बरामदामे नैना मिश्र अपन पुरान झोला नेने बैसल छलीह। झोलामे नियुक्तिपत्रक प्रति, वेतनक विवरण आ कार्यालय द्वारा देल उपस्थिति स्थगितक पत्र छल। माय सरस्वतीक औषधि दऽ ओ घरसँ निकलल छलीह। चन्दनकेँ बासन धोबाक, जल गरम करबाक आ मायक भोजनक ध्यान रखबाक कहि आएल छलीह। जखन सुजाता बजौलथिन, नैना भीतर गेलीह आ मेजपर झोला नहि, केवल माँगल कागज रखलथिन।

‘‘अहाँ एतय काज शुरू कएलहुँ तखन लेखाक कोन पञ्जी देखैत छलीह?’’ सुजाता पुछलथिन। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘आवेदकक प्रवेश-पञ्जी आ प्रशिक्षण शुल्कक प्राप्ति।

बैंक भुगतान हमर जिम्मेमे नहि छल।'' ''पूनमक नाम बदलल देखलहुँ?'' ''नाम नहि; एकटा सूचीमे ओकर नियुक्तिक ठाम बदलल छल। दोसर सूचीमे ओहि क्रमाङ्कपर कोड छल। के बदललक, हम नहि देखलहुँ।'' सुजाता हुनक एहि अन्तिम वाक्यकेँ सेहो लिखलथिन। नैना अपन जानकारीक सीमा कहि रहल छलीह, अनुमानसँ रिक्त स्थान नहि भरि रहल छलीह।

सुजाता नैनाकेँ दूटा कागज देखौलथिन। पहिलमे पाँच आवेदकक प्राप्ति-राशि, दोसरमे तीन गोटेक प्रशिक्षण-व्यय छल। नैना पाँचमे सँ दू रसीदक रूप चिन्हलथिन। ''एहि हस्ताक्षरक विषयमे?'' अधिकारी पुछलनि। ''ई किरणजीक हस्ताक्षर जकाँ लगैत अछि, मुदा हम शत-प्रतिशत नहि कहि सकैत छी। ओ अपन नाम कखनहुँ पूरा लिखैत छलीह, कखनहुँ छोट। मूल कागज देखि कहब नीक होयत।'' सुजाता कहलीह, ''हम मूल मँगबैत छी। अहाँपर कोनो चिन्हानक दबाव नहि अछि।''

बाहर निकलैत नैनाकेँ पूनमक पिता भेटलाह। हुनक कपारपर पसीना छल; ओ गामसँ बस पकड़ि आएल छलाह। ''बेटीक कोनो समाचार?'' ओ पुछलनि। नैना हुनका ओतहि बैसय कहलथिन। ''नहि काका, एखन निश्चित ठाम नहि भेटल। मुदा जाँच बन्द नहि भेल अछि।'' बूढ़ आदमी झोलामे राखल पूनमक विद्यालयक प्रमाणपत्र निकालि देखेबय लगलाह। नैना हुनका मना नहि कएलथिन; केवल कहलथिन जे पुलिस लग पहिले सँ प्रति अछि, मूल प्रमाणपत्र सँभा कऽ राखथि। ओ फेर झोलामे रखि लेलनि। हुनक आँखिमे निराशाक संग किछु भरोसा बचल छल।

दस बजिते रतन सिंहक वकील लिखित उत्तर नेने उपस्थित भेलाह। उत्तरमे कार्यालयक अभिलेख लेल समय माँगल गेल छल। कहल गेल छल जे पुरान फाइल एकटा गोदाममे अछि आ किछु कर्मचारी नौकरी छोड़ि चुकल छथि। सुजाता उत्तर स्वीकार कएलथिन, मुदा प्राप्तिक तिथि लिखि देलथिन। ''समय देब कि नहि, से विधिक अनुसार तय होयत। मूल लेखा, अनुबन्ध आ भुगतानक आधार सुरक्षित रखबाक जिम्मेवारी एखन हुनका सभपर अछि,'' ओ स्पष्ट कएलथिन। वकील एकटा कागजपर हस्ताक्षर कऽ चलि गेलाह।

ओहि दिन किरणकेँ सेहो बजाओल गेल। कार्यालयक पहिनुक ठसक आब हुनक चालमे कम छल, मुदा चेहरापर भयकेँ ओ स्पष्ट होमय नहि दैत छलीह। सुजाता पुछलथिन, ‘‘आवेदकक सूची बदलबाक अधिकार केकरा छल?’’ किरण कहलीह, ‘‘कार्यालयमे तीन कर्मचारी प्रवेश कऽ सकैत छल। अन्तिम स्वीकृति हमर आ मालिकक रहैत छल।’’ ‘‘बदलावक लिखित रजिस्टर रहैत छल?’’ ‘‘रहबाक चाही। हम सभक सम्बन्धमे नहि कहि सकैत छी।’’ ‘‘पूनम यादवक कागज?’’ किरणक हाथमे राखल पर्स कनेक सरकल। ओ कहलथिन, ‘‘ओकर फाइल हमरा लग नहि अछि।’’

‘‘हम ई नहि पुछैत छी जे फाइल एखन अहाँ लग अछि कि नहि,’’ सुजाता धीमे स्वरमे कहलीह। ‘‘हम पुछैत छी जे पूनमक नियुक्तिक ठाम बदलल गेल तखन अहाँ कार्यालयमे छलीह कि नहि।’’ किरण किछु क्षण सोचलथिन। ‘‘हम ओ दिन कार्यालयमे रही। मुदा सभ सूची स्वयं नहि देखैत रही।’’ सुजाता कहलथिन, ‘‘ठीक अछि। अहाँक उपस्थितिक अभिलेख मँगाओल जाएत। बादमे बात फेर होयत।’’ किरण उत्तर देबाक लेल तैयार कएल भाषण मनमे घोखैत आएल छलीह; एहन छोट, ठोस प्रश्नक सामना करैत ओ थाकि गेलीह।

किरण बाहर निकललीह तँ सीढ़ीक कात रतनक गाड़ी ठाढ़ देखलथिन। चालक हुनका भीतर बैसबाक सङ्केत केलक। ओ गाड़ी दिस बढ़लीह, मुदा तुरन्त रुकि कऽ कहलथिन, ‘‘हम अपने घुरब।’’ चालक फेर किछु नहि पुछलक। रतनकेँ मोबाइलपर ओ केवल एतबे लिखलथिन जे पूछताछ भेल। हुनका ओकर उत्तर तुरन्त भेटल—‘‘वकीलक सलाह बिना एको कागज नहि देब।’’ किरण फोन बन्द कऽ सड़कक भीड़मे चलि गेलीह। घरमे दिनेश हुनक प्रतीक्षा करताह कि नहि, से हुनका एखन नहि मालूम छल।

दुपहरिया रतन स्वयं सुजातासँ भेटबाक आग्रह कएलनि। ओ साफ कपड़ा पहिरने, हाथमे कार्यालयक संक्षिप्त लेखा नेने आएलाह। ‘‘हम सभ कानून मानैत छी,’’ ओ कहलनि। ‘‘मुदा एकटा मृत कर्मचारीक निजी नोटसँ पूरा संस्थाक प्रतिष्ठा नष्ट होमय लागल अछि।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘प्रतिष्ठाक प्रश्न अपन ठाम अछि; हमरा एकटा मृत्यु आ अनेक शिकायतक तथ्य जाँचबाक अछि। अहाँ जे कागज लऽ आएल छी, ओकर प्राप्ति देल

जाएत।'' रतन पन्ना बढ़ौलनि। पहिल पन्नापर संस्थाक आय आ व्ययक मोटा-मोटी हिसाब छल, मुदा मूल रसीद वा बैंकक नकल नहि छल।

''वीरेन्द्र निर्माण सेवाकेँ एतेक भुगतान कोन काज लेल?'' सुजाता पुछलथिन। ''निर्माण-सामग्री, अस्थायी आवास आ गाड़ी,'' रतन उत्तर देलनि। ''अनुबन्ध?'' ''कार्यालयमे होयत।'' ''जे सामान आएल, ओकर प्राप्ति?'' ''प्रबन्धक देखैत छल।'' सुजाता आओर प्रश्न नहि बढ़ौलथिन। ''तखन मूल कागज उपलब्ध कराउ। अहाँक उत्तर एखन पूरा नहि अछि।'' रतनक कपारपर एकटा महीन रेखा उभरल। ''हमरा अपराधी जकाँ प्रश्न किएक?'' ''समान प्रश्न ककरो सँ पुछल जा सकैत अछि, जखन भुगतानक अभिलेख अस्पष्ट हो,'' सुजाता कहलीह।

रतन चलि गेलाक बाद भानु प्रताप कक्षमे अएल। ''व्यापारी लोक जँ नाराज भेल तँ नगरक काज प्रभावित होयत,'' ओ कहलक। सुजाता फाइल बन्द नहि कएलथिन। ''व्यापार बन्द करबाक आदेश नहि देल गेल अछि। दस्तावेज माँगल गेल अछि।'' भानु कहलक, ''ऊपर धरि फोन जा सकैत अछि।'' सुजाता ओकर दिस तकि कहलीह, ''फोन आवय तँ लिखित निर्देश माँगब। अनुसन्धानक कार्यवाही अभिलेखमे रहत।'' भानु बात बदलि एकटा दोसर शिकायतक चर्चा करय लगल। सुजाता ओकरा ओहि शिकायतक सम्बन्धित अधिकारी लग पठा देलथिन।

आधे घण्टाक बाद कार्यालयक दूरभाष बजल। फोन करयवला अपन परिचय स्थानीय नेता जगदीश चौधरीक सहयोगीक रूपमे देलक। ''नेताजी चाहैत छथि जे व्यापारिक प्रतिष्ठानक सम्मानक ध्यान राखल जाए।'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''जाँच विधिसम्मत चलि रहल अछि। ककरो लिखित सूचना देबाक हो तँ कार्यालयमे जमा करू।'' फोन रखने पर ओ प्राप्ति-पञ्जीमे समय आ बातचीतक संक्षिप्त विषय दर्ज करौलथिन। एतयसँ राजनीतिक हस्तक्षेप प्रमाणित करबाक कोनो जल्दबाजी नहि छल, मुदा अनौपचारिक आग्रहक उपस्थितिकेँ ओ अभिलेखसँ बाहर नहि छोड़य चाहैत छलीह।

कार्यालयक भित्तिपर लगल घड़ी ग्यारह बजा रहल छल, जखन अमिताक फोन आएल। ओ पूर्व कर्मचारी छलीह, जे अपन पुरान बयानमे किछु सुधार कएने छलीह। सुजाता हुनका बतौलथिन जे नब जाँचक दौरान किछु प्रश्न फेर उठि सकैत अछि। अमिता कहलीह, ‘‘हम प्रशिक्षणक सूची टाइप करैत रही, मुदा अन्तिम सूची किरणजीक मेजसँ जाए। कोन प्रविष्टि के बदललक, हम देखने नहि छी।’’ सुजाता एहि स्पष्टीकरणकेँ पुरान बयानसँ मिलौलथिन। बदलल कथनक आशय बुझब छल, गवाहीकेँ अपन पक्षमे ढालब नहि।

अमिता अपन घरमे सिलाइ-मशीनक कात बैसल छलीह। पति तीन मासससँ अस्पतालक आपूर्ति-सम्बन्धी अस्थायी काज करैत छलाह। ‘‘जँ हमर नाम समाचारमे आएत तँ नब नोकरी नहि भेटत,’’ ओ फोनपर कहलीह। सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘जाँचमे जे औपचारिक सुरक्षा सम्भव अछि, ओकर ध्यान राखल जाएत। मुदा हम अहाँकेँ झूठ आश्वासन नहि देब।’’ अमिता फोन रखि अपन बेटी लेल विद्यालयक कमीजक बाँह सिलय लगलीह। साँच बाजबाक साहसक संग घरक भविष्यक भय सेहो बैसल छल।

नैना थानासँ घुरैत बस-अड्डापर सविता कुमारीकेँ देखलथिन। सविता हाथमे कागजक गड्डी नेने प्रतियोगिता परीक्षाक अभ्यर्थीसभसँ हस्ताक्षर लऽ रहल छलीह। परीक्षा रद्द भेलाक बाद नव तिथि घोषित नहि भेल छल। एकटा युवक अपन किरायक रसीद देखबैत कहलक, ‘‘पछिला बेर इहाँ अएबामे एक हजार गेल; आब फेर कखन जाएब?’’ सविता ओहि शिकायतक संग आवेदनक क्रमाङ्क सेहो लिखलथिन। नैना हुनका एकटा खाली फॉर्म सम्हारबामे सहायता कएलथिन।

सविता पुछलथिन, ‘‘रोजगार केन्द्रक लोक पेपर-लीकक नामपर सेहो टका लेलक कि?’’ नैना कहलीह, ‘‘हमरा लग एहन पक्का प्रमाण नहि अछि। नियुक्ति दिलेबाक नामपर फीस लेनेक कागज अछि, मुदा परीक्षा-पत्रक अपराध अलग सँ जाँचबाक विषय अछि।’’ सविता उत्तर देलथिन, ‘‘ठीक अछि। आन्दोलनमे गलत आरोप जुड़ल तँ सही माँग कमजोर पड़त।’’ ओ दुनू भीड़क बीच एकटा पल ठाढ़ रहलीह। कोनो तुरन्त समाधान नहि छल, मुदा साँच प्रश्न स्पष्ट कएल जा सकैत छल।

नरेशक बहिन रेखाकेँ बैंकक पुरान पासबुकक नकल खोजबाक आवश्यकता पड़ल। पिता चश्मा पहिरि कहला, ‘‘दादा जे बचत केने छल, ओहिसँ अस्पतालक उधार चुकयबाक अछि।’’ रेखा पुछलथिन, ‘‘कागज पुलिसकेँ देलाक बाद हम अपना खर्चक हिसाब कोना देखब?’’ सुजाता कार्यालयक माध्यमसँ आवश्यक व्यक्तिगत प्रतिलिपिक प्रक्रियाक जानकारी देलथिन। जाँचक लेल सौंपल कागजक कारण परिवार अपन वैध काममे असहाय नहि हो, ई बात रेखाकेँ महत्त्वपूर्ण लगल।

रतनक दफ्तरमे ओहि दुपहरिया कर्मचारिक आधा वेतन रोकबाक चर्चा उठल। मुनीम कहलक, ‘‘खाताक जाँच चलि रहल अछि, भुगतान टालि दी?’’ रतन खिड़कीसँ बाहिर तकैत रहलाह। ‘‘जकर काम चलि रहल अछि, ओकर वेतन देब,’’ ओ अन्ततः कहलनि, ‘‘नहि तँ सभ लोक प्रश्न पुछत।’’ मुदा जे कर्मचारी नैनाक संग कार्यालयक शिकायत देबय गेल छलाह, हुनकर नामक कात मुनीम पेंसिलसँ चिह्न लगा देलक। रतन ओ निशान देखलक, मिटौलक नहि।

भानु प्रताप अपन कार्यालयमे बसल एकटा कर्मचारीसँ पुछलक, ‘‘कतेक कागज आओर माँगत सुजाता?’’ कर्मचारी उत्तर देलक, ‘‘अधिकृत लिखित अनुरोधक अनुसार सभ प्रतिलिपि जा रहल अछि।’’ भानु कहलक, ‘‘ठीक अछि, फेर हम देखब।’’ बाहर अएला पर कर्मचारीक चेहरापर असहजता छल। ओकरा बुझाइत छल जे सरकारी अभिलेख कार्यालयक वस्तु अछि, कोनो व्यक्तिक मनमानीसँ रोकल जाएबयवला सामान नहि। ओ फाइलक प्राप्तिक तिथि साफ अक्षरमे लिखि देलक।

संझिया नैनाक घरमे सरस्वती देवी चन्दनकेँ बजारक हिसाब पुछलथिन। चन्दन खाली हाथ नहि आएल छल; छोट रोजगारीक एकटा दुकानदार हुनका दोसर दिन भेटबाक कहने छल। ‘‘अग्रिम किछु टका माँगलक?’’ नैना पुछलथिन। ‘‘नहि, मुदा लिखित नियुक्ति सेहो नहि देत,’’ चन्दन कहलक। नैना ओकरा पुछबाक लेल किछु प्रश्न सुझौलथिन—कामक समय, मजदूरी, छुट्टी आ भुगतानक दिन। सरस्वती मुस्कुराइ कहलीह, ‘‘तोरा सभक जिनगी कागजमे घेराइल अछि, मुदा एहि बेर कागज सही कमाइ देअय।’’

साँझक ओझराइत इजोतमे वीरेन्द्र राय थानामे पहुँचल। हाथमे मोटगर घड़ी, सँभल-सँभलि बाजबाक ढङ्ग। ‘‘हम केवल ठीकेदार छी,’’ ओ पहिल वाक्य कहलक। ‘‘रतनजीक किछु भवनक मरम्मत केलहुँ।’’ अरुण ओकर सोझाँ भुगतानक सूची रखलनि। वीरेन्द्र पाँच प्रविष्टि चिन्हलक, मुदा सातम प्रविष्टिपर कहलकैं जे ई ओकर खाताक नहि। ‘‘तकरा जाँचबाक लेल अहाँक बैंक विवरण चाही,’’ अरुण कहलनि। वीरेन्द्र असहज भऽ गेल। ‘‘पहिने वकीलसँ बात करब।’’ सुजाता मानि लेलथिन, मुदा कागज सुरक्षित रखबाक निर्देश दैत लिखित सूचना थमा देलथिन।

वीरेन्द्रक बाहर निकललाक बाद जवान सिपाही नन्दू कहलक, ‘‘मैडम, ई लोक सभ एक्के बात कहैत अछि—कागज नहि भेटल।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘आब जे कागज भेटत, ओकर तुलना एहने उत्तरसँ होयत। हमरा असन्तोष नहि, तथ्य चाही।’’ ओ नन्दूकैं सरकारी निबन्धन कार्यालयसँ संस्थाक अधिकृत ठेकेदारक विवरण आ मालवाहक वाहनक सूची मँगएबाक काम देलथिन। वाहनक सूची पहिने किएक नहि मँगाओल गेल, तकर कारणो छला—नरेशक आर्थिक अभिलेख आब ओहि दिशामे ठोस प्रश्न उठौने छल।

घर घुरबाक बाटमे सुजाता बाजारक ओहि मुहानेसँ गेलीह जतय सांझ पड़िते दिहाड़ी मजदूर अपन कमाइक हिसाब गनैत छलाह। चाय-दोकानक मालिक कहलक, ‘‘किछु दिन पहिने मजदूरसभक मजदूरी रोकि देल गेल। ठीकेदार कहलक बैंकमे भेजल अछि।’’ सुजाता पुलिसक पदक परिचय दऽ आरोप पूछबाक बदला कहलथिन, ‘‘जकर मजदूरी रुकल अछि ओ लिखित शिकायत कऽ सकैत अछि। कागजक प्रति राखि आवेदन देब।’’ ओतए बैसल महिला माधवी कहलीह, ‘‘कागज तँ ओहि लोकक लग रहैत अछि जे टका दैत अछि; गरीबक हाथमे खाली नाम रहैत छैक।’’ सुजाता एहि वाक्यकैं गम्भीरतासँ सुनलथिन।

माधवी घर जा रहल छलीह। भोरसँ चारि घरमे काज कऽ थाकल देह, मुदा थैलीमे बच्चाक लेल दूटा केला राखल छल। शराबबन्दीक पहिल वर्ष हुनक पतिक नशा घटने छल आ घरमे किछु बचत भेल छल। आब मोहल्लामे अवैध शराबक चर्चा फेर सुनाइत छल। हुनक पति कहैत छल, ‘‘सस्ता नहि, मुदा भेटैत सभ ठाम अछि।’’ माधवी पुलिसक गाड़ी

जाइत देखलथिन तँ सोचलथिन जे कानूनक खबरिक असर ओकर आँगन धरि पहुँचैत किएक नहि। ओहि प्रश्नक उत्तर ओ सुजातासँ माँगि नहि सकलीह।

राति थानामे घुरि सुजाता वाहनक पुरान सूची देखलथिन। किछु नम्बर आधा मिटायल छल; किछु नामक आगाँ ‘‘हस्तान्तरण प्रक्रियाधीन’’ लिखल छल। हुनका चन्दनक बयान याद आएल, जाहिमे ओ मनोज आ दू अन्य पुरुषकेँ पुरान गाड़ीमे लऽ गेल होयबाक बात कहने छल। चन्दन नम्बरक किछुए अंश याद रखैत छल। सूचीमे किछु अङ्क मिलैत देखल गेल, मुदा ओहि आधारपर गाड़ी चिन्हब सम्भव नहि छल। सुजाता दूटा ठामसँ मूल पञ्जी मँगबाक आदेश देलथिन।

एहि बीच नैनाकेँ अभयक सन्देश आएल—‘‘मायक स्वास्थ्यक समाचार दिअ।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘औषधि चलि रहल अछि। थानासँ घुरि देरि भऽ गेल।’’ अभय ओकरा काजक विषय नहि पुछलनि। किछु बेरक बाद कहला, ‘‘पत्रकारिताक लेल जे जानकारी चाही, आधिकारिक स्रोतसँ लेब। तोहर बात सुरक्षित रहत।’’ नैनाकेँ एहि छोटे वाक्यमे अपन प्रेमक मर्यादा अनुभव भेल। घरे पहुँचलाक बाद ओ मायक थारीमे दलिया परोसि देलथिन आ थानाक घण्टा भरिक प्रश्नोत्तरीकेँ मनसँ हटेबाक प्रयास कएलथिन। मुदा नरेशक बहिनक चेहरा बारम्बार मोन पड़ैत रहल।

थानाक पछिला कोठरीमे सुजाता नरेशक अंतिम फोनक विवरण खोललथिन। अनचिन्हार नम्बर सँ आएल फोनक समय कापीमे लिखल छल, मुदा ओ नम्बर ककर नामपर अछि, तकर उत्तर नहि भेटल छल। ओ सम्बन्धित सेवा प्रदातासँ विधिसम्मत जानकारी मँगबाक निर्देश देलथिन। कियो एखन कहि नहि सकैत छल जे फोन लेनिहार व्यक्ति हत्यासँ जुड़ल छल कि हिसाब पूछय चाहैत छल।

अगिला भोर अरुण एकटा नब कागज नेने अएलाह। ‘‘वाहन भाड़ाक सूचीमे दू बेर एक्के गाड़ीक नम्बर अछि,’’ ओ कहलनि। ‘‘एक बेर संस्थाक नामपर, दोसर बेर वीरेन्द्रक निर्माण सेवाक नामपर भुगतान। तिथि अलग अछि, मुदा मालिकक नाम बदलि गेल अछि।’’ सुजाता पन्ना हाथमे लऽ देखलथिन। वाहन पुरान छल; निबन्धनक अवस्था

अस्पष्ट। चन्दनक अपूर्ण स्मरणक संग एक्के अंश मेल खाइत छल। ओ लाल घेरा नहि लगौलथिन। अलग नोटपर लिखलथिन—''मूल पञ्जी, वास्तविक स्वामित्व, चालक आ सम्बन्धित तिथिक सत्यापन।'' तखन दूटा कर्मीकेँ परिवहन कार्यालय पठौलथिन। जाँचक अगिला बाट एकटा पुरान गाड़ीसँ खुलबाक सम्भावना देखाइत छल।

अध्याय ३८ : पुरान गाड़ी

नवगढ़ परिवहन कार्यालयक बाहर पुरान बस, मोटरसाइकिल आ ट्रकक पाँति लागल छल। बरामदाक दीवारपर रङ्ग उतरि गेल छल, मुदा भीतर कम्प्यूटरक पाछाँ बैसल कर्मचारी निबन्धनक पुरान पोथी सेहो सँभालि रखने छलाह। सुजाता कुमारीक पठाओल दू पुलिसकर्मी अनुरोधपत्र नेने पहुँचलाह। अधिकारी पत्र पढ़ि कहलनि, ‘‘नाम बदलि गेल हो तँ कम्प्यूटरमे देखाइत अछि। मुदा पुरान गाड़ीक निबन्धनक किछु प्रविष्टि एखन कागजक पोथीमे अछि। दूनू मिलाएब पड़त।’’

जाहि गाड़ीक नम्बर दू अलग भुगतान-पञ्जीमे भेटल छल, ओकर नामपर पहिने हाशिम अन्सारीक निबन्धन छल। सात मास पहिने हस्तान्तरणक आवेदन देल गेल, मुदा आवश्यक कागज अपूर्ण रहबाक कारण प्रक्रिया पूर्ण नहि भेल छल। आवेदनमे दोसर पक्षक नाम ‘‘वीरेन्द्र निर्माण सेवा’’ लिखल छल। पुलिसकर्मी पूछलनि, ‘‘अन्तिम स्वामीकेँ कोन मानब?’’ अधिकारी कहलक, ‘‘कागजपर पहिनेवला नाम रहि सकैत अछि; व्यवहारमे के चलबैत छल, से अलग प्रश्न अछि। निश्चित नहि कहि सकैत छी।’’ हुनका प्रमाणित नकल देबाक प्रक्रिया शुरू भेल।

हाशिम अन्सारी नगरक पूब दिस एकटा छोट मोटर-मरम्मत दोकान चलबैत छलाह। हुनक हाथमे सदिखन तेलक गन्ध रहैत छल। पुलिस पहुँचल तँ ओ पुरान गाड़ीक बात सुनि चौंकलाह। ‘‘नील रंगक मालवाहक?’’ ओ पुछलनि। ‘‘हँ, आठ वर्ष चलौलहुँ। पाछाँ एकटा पाँति लिखने छल—‘परिश्रमक फल’।’’ पुलिसकर्मी रङ्ग आ लिखावट नोट कएलनि, मुदा किछु देखाएल नहि। हाशिम आगाँ कहलनि, ‘‘इञ्जिन बारम्बार गरम होइत छल। घरक खर्च लेल बेचि देलहुँ। खरीदनिहार ठीकेदारक आदमी छल, अपन नाम मोहरिर कहलकेँ। पैसा बैंकमे आएल।’’

‘‘कागज?’’ पूछल गेल। हाशिम भीतरसँ पुरान फाइल अनलनि। खरीद-बिक्रीक लिखित समझौता, आंशिक भुगतानक विवरण आ हस्तान्तरण लेल देल आवेदनक रसीद छल। हुनक पत्नी शबनम कातमे ठाढ़ छलीह। ओ कहलीह, ‘‘गाड़ी बेचने छह मासँ अधिक भऽ गेल, मुदा ओहि पर पुरान नाम रहि गेल तँ फेर झंझट होयत ने?’’ पुलिसकर्मी स्पष्ट कएलनि जे जाँचमे वास्तविक उपयोगक समय महत्त्वपूर्ण अछि। हाशिम कहला, ‘‘हमरा जे जानकारी अछि, से देब। मुदा हमरा छोट दोकानक काज बन्द नहि होउ।’’ हुनका लिखित उपस्थितिक समय देल गेल।

गाड़ीक खोजक सूचना सुजाता तुरन्त सार्वजनिक नहि कएलथिन। पहिने बैंकक भुगतान, वाहनक रखरखाव आ गाड़ी राखबाक ठाम जाँचबाक छल। दुपहरिया मनोजक पुरान चालक परिचित पवनसँ पूछताछ भेल। पवन कहलक जे ओ किछु मास पहिने वीरेन्द्रक गोदाममे माल उतारने छल, मुदा नरेशक मृत्युक राति ओ नगरसँ बाहर छल। ‘‘कहाँ?’’ सुजाता पुछलथिन। ओ अपन बहिनक विवाहक नाम लेलक। सुजाता तिथि, टिकट आ सम्पर्कक विवरण माँगलथिन; कथन सत्य अछि कि नहि, ई अलग सँ जाँचबाक छल।

एहि बीच चन्दनकेँ थानामे दोसर बेर बजाओल गेल। ओकर मन फेरी काँपि उठल। नैना ओकर संग गेलीह, मुदा पहिल बेरक जकाँ बयानक भीतर बसबाक आग्रह नहि कएलथिन। चन्दन सुजाताक समक्ष बैसल तँ ओ कहलथिन, ‘‘हम अहाँक पुरान बयान पढ़ि सुनाएब। जँ कोनो शब्द गलत लिखल गेल अछि तँ बताउ। नब जानकारी अलग लिखल जाएत।’’ चन्दन ध्यानसँ सुनलक—गोदामक पछिला बाट, मनोज आ दू पुरुष, नहरक पुलक मोड़, पुरान गाड़ी, आधा याद रहल नम्बर।

‘‘गाड़ीक रंग केहन छल?’’ सुजाता पुछलथिन। चन्दन कहलक, ‘‘राति छल। गहिर नील बुझा रहल छल, मुदा धूरिसँ मलिन।’’ ‘‘पाछाँ लिखल किछु पढ़ने छलह?’’ चन्दन कपार सिकोड़लक। ‘‘किछु अक्षर देखल रही, पूरा नहि पढ़ि सकलहुँ। बत्ती कमजोर छल।’’ सुजाता ककरो कागजमे लिखल ‘परिश्रमक फल’ वाक्य नहि देखौलथिन। स्मरणक खाली

ठाममे दूसरक सूचना नहि भरबाक छल। ‘‘गाड़ी छोट मालवाहक छल कि ट्रक?’’ ‘‘छोट मालवाहक, पाछाँ सामान राखबाक खुलल ठाम।’’

चन्दन फेर अपन हाथक पुरान खरोच देखौलक। ‘‘पाछाँक लोहेमे ई घाव भेल छल।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘इञ्जिनक आवाजमे कोनो विशेषता?’’ चन्दन कहलक, ‘‘एक बेर चढ़ाइपर रुकल छल, फेर मनोज गाली देलक। गाड़ी गरम भेल छल कि नहि, हम नहि जनैत छी।’’ अधिकारी ओकर वाक्य ठीक ओहने लिखलनि। चन्दनकेँ तखन बुझायल जे जे बात ओ पहिने व्यर्थ मानने छल, से सामान्य विवरणक रूपमे उपयोगी भऽ सकैत अछि; मुदा ओहि बातसँ हत्या देखबाक दावा नहि बनैत।

पूछताछक बाद चन्दन बाहर नैना लग आबि बैसल। ‘‘दीदी, ओ सभ पुरान गाड़ीक विषयमे पूछलक,’’ कहिते नैना पुछलथिन, ‘‘किछु नया बात कहबाक लेल दबाव देलक?’’ ‘‘नहि। जे याद छल, से कहलहुँ।’’ नैना ओकर हाथमे पानिक बोतल देलथिन। ओ पानि पीबैत कहलक, ‘‘हमरा लगैत छल जे हमर एकटा रातिक काजकेँ सभ कियो पूरा अपराध बुझत। आब लगैत अछि जे रातिक एको बात जाँचि देखल जा रहल अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘तूँ जे केलह, तकर जबाबदेही तोहर अछि। मुदा जे नहि केलह, तकर दोष स्वीकार करबो ठीक नहि।’’

शहरक पच्छिम मुहाने पर एकटा मरम्मतखाना छल, जतए भारी वाहनक चक्का आ पुरान पाट-पुर्जा रखल रहैत छल। मालिक मङ्गल पासवान छज्जाक नीचाँ बैसि हिसाब लिखि रहल छलाह। पुलिसकर्मी नील गाड़ीक विषयमे पुछलनि तँ ओ कहलनि, ‘‘एहन गाड़ी कतेको अबैत अछि। नम्बर बिना कठिन अछि।’’ पुरान मरम्मत-पञ्जी खोलेलाक बाद दू माह पहिनुक एक प्रविष्टि भेटल—पाछाँक बत्ती बदलल गेल, पाट कनेक टेढ़ छल, ग्राहकक नाममे केवल ‘‘वीरेन्द्रक लोक’’ लिखल छल। ओहि प्रविष्टिक तिथि नरेशक मृत्युसँ पहिनुक छल, मुदा मरम्मतक बाद गाड़ी फेर ओतए आएल कि नहि, तकर विवरण नहि छल।

मङ्गल एकटा बात स्मरण कएलनि। ‘‘ओहि गाड़ीक चालक कहने छल जे लम्बा बाट जाइत थाकि गेल अछि। हम ओकर नाम नहि पूछलहुँ। काज भऽ गेल तखन पैसा नकद देलक।’’ पुलिस पूछलनि, ‘‘पुरान पाट-पुर्जा बचल अछि?’’ मङ्गल हँसि कहलनि, ‘‘भङ्गारमे कखनक कखन गेल।’’ तखन हुनका पुरान मरम्मत-पञ्जी सुरक्षित रखबाक लिखित अनुरोध देल गेल। मङ्गलक पत्नी बाहरसँ सुनि कहलीह, ‘‘घटना घटला पर हर छोट हिसाबक कीमत बढ़ि जाइत अछि।’’ मङ्गल अपन लिखल अस्पष्ट अक्षर दिस तकि चुप रहलाह।

हाशिमकेँ पुलिसक बुलाहट भेटलाक बाद हुनक पुत्र नदीम दोकानक हिसाब देखय बैसल। एकटा ट्रकक पाट-पुर्जाक बिलक भुगतान एखन धरि नहि भेटल छल। नदीम पुछलक, ‘‘अब्बा, गाड़ी जकरा बेचने छी, ओकरा एखन धरि पूरा पैसा भेटल?’’ हाशिम पासबुक खोलि देखौलनि। ‘‘एक किश्त छुटल छल। बबलू कहने छल जे पाछाँ देत।’’ नदीमक मुँह उतरि गेल। ‘‘जकरा बेचने छलहुँ, ओहि गाड़ी लेल फेर थानामे जाएब पड़त?’’ हाशिम कहला, ‘‘साँच कागज अछि तँ डर किएक? मुदा अधूरा हिसाबक पछतावा अछि।’’

बैंकक जमा-पर्चीमे भुगतान करयवला खाताक नाम पूर्ण देखाइत नहि छल। हाशिम अपन दोकानदारक ढङ्गसँ पुछलनि, ‘‘हमरा जे टका भेटल, ओहि खातासँ कियो अपराध कएल होयत तकर उत्तर हम कोना देब?’’ पुलिस अधिकारी कहलनि, ‘‘अहाँक गाड़ी बेचनाइ अपराध नहि। हम ई बुझय चाहैत छी जे ओकरा बाद के उपयोग करैत छल।’’ हाशिम पासबुकक प्रमाणित प्रति उपलब्ध करबाक लेल आवेदन देबाक निश्चय कएलनि।

मरम्मतखानाक नौजवान सहायक पिन्टूकेँ नील गाड़ी याद पड़ल। ओ कहलक, ‘‘पाछाँक बत्ती खोलैत काल्हि जकाँ याद अछि जे लोहेक पट्टा एक दिस मुड़ल छल।’’ मङ्गल ओकरा टोकलक, ‘‘पहिने कागज देख। तोहर स्मृति कतबा पुरान अछि?’’ पिन्टू सोचलक। ‘‘तिथि याद नहि। मुदा ओ दिन हम खाटपर बीमार पड़ल छोट भाइक औषधि लऽ एतए आएल रही।’’ घरक औषधिक रसीद खोजल गेल तँ मरम्मत-पञ्जीक दिनसँ मेल देखाएल। ई छोट पुष्टि छल, मृत्युक रातिक साक्ष्य नहि।

नहरक बाटे चलयवला बसक परिचालककेँ सेहो पुछल गेल। ओ कहलक, ‘‘पुरान नीली गाड़ी बहुत चलैत छल। हमर बस आ ओकर एक बेर तङ्ग मोड़पर आमने-सामने भेल छल।’’ ‘‘कोन दिन?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘दशहरा सँ पहिने, ठीक तिथि नहि।’’ ओहि स्मृतिसँ गाड़ीक सामान्य उपस्थिति बुझायल, हत्याक रातिक यात्रा नहि। सुजाता ओकर नाम लिखि पाछाँ आवश्यकता पड़ला पर फेर सम्पर्क करबाक कहलथिन। ओ लोकक याददाश्तकेँ घड़ीक सुइसँ बेसी निश्चित नहि मानैत छलीह।

चन्दन थानासँ घुरि अपन पुरान मोबाइलक सन्देश देखलक। मनोजक किछु सन्देश एखनहुँ छल, मुदा कतेको फोनक समय मेटि गेल छल। ओ घबराकऽ नैना लग गेल। नैना कहलीह, ‘‘जे बचल अछि, ओकरा ज्योंक त्यों राख। स्वयं किछु जोड़ि नहि लिख।’’ चन्दन पुछलक, ‘‘हमरा कियो एहन प्रश्न पुछत जेकर उत्तर नहि भेटत?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘तखन कहिह जे नहि मालूम। अपन गलतीक कारण सभ बात जानबाक दावा करब जरूरी नहि।’’

पूनमक मायक घरमे ताहि दिन डाकिए एकटा पुरान आवेदनक रसीद देने छल। रीना ओ रसीद खोलि देखलथिन। ताहिमे बहिनक नामपर नियुक्ति-प्रक्रिया चालू रहबाक पुरान सूचना छल, जे कइ मास देरीसँ पहुँचल। पूनमक माय क्षणभर सोचलथिन जे सम्भवतः बेटी सुरक्षित होयत। रीना तारीख देखिकऽ कहलीह, ‘‘ई बहुत पुरान पत्र अछि। एकरा आजुक खबरि नहि मानू।’’ माय पत्र छातीसँ सटौने बैसलीह। आशा आ प्रमाणक बीचक भेद हुनका लेल सबसँ कठिन छल।

साँझ नगरक पुस्तक-दोकानपर सविता कुमारी प्रवेशपत्रक नकल करबा आएल छलीह। युवकसभ रद्द परीक्षाक नब विज्ञापनक प्रतीक्षा करैत छलाह। चन्दन दवा लऽ घुरैत हुनका भेटलक। सविता पुछलथिन, ‘‘फेर तैयारी शुरू केलह?’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘काजक खोजमे छी; पढ़ाइ बिना छोड़ने छी।’’ सविता कहलीह, ‘‘परीक्षा फेर होयत कि नहि, एखन स्पष्ट नहि। मुदा जकर पास किछु पुस्तक अछि, ओकरा पढ़बाक दिन चोराबय नहि चाही।’’ चन्दन ओहि बातपर तुरन्त उत्तर नहि देलक।

मञ्जरी झा अभयकेँ पुरान प्रकाशित समाचारक शीर्षक देखौलीह। एकटा अनलाइन पृष्ठ ओकर लेखक नाम हटा कऽ लिखने छल—''हत्या करयवली गाड़ी पुलिसक हाथ लागल।'' अभय तुरन्त आपत्ति-पत्र लिखलनि; हुनक मूल समाचारमे एहन दावा छलै नहि। मञ्जरी कहलीह, ''दूसरक गलत शीर्षकक उत्तरमे हम फेर अपुष्ट खबरि नहि छापब।'' अभय आपत्ति भेजलनि, आ अपन पाठक लेल छोट स्पष्टीकरण तैयार कएलनि जे जाँचमे वाहनक कागज देखल जा रहल अछि, न कि अपराध सिद्ध भेल अछि।

गाड़ीक खोजक बीच एकटा गलत सूचना सेहो आएल। कियो फोन कऽ कहलक जे ओ नील गाड़ी नदीक कात राखल देखलक। पुलिस पहुँचल तँ ओ दोसर गाड़ी निकलल; नम्बर आ बनावट अलग। जवान सिपाही झुँझला गेल। सुजाता कहलथिन, ''गलत सूचना जाँचबाक समयो लगैत अछि। मुदा एकरा जाँचने बिना छोड़ि देने रहितहुँ तँ पछि प्रश्न रहैत।'' ओ झूठ सूचना देनिहारकेँ तुरन्त अपराधी घोषित नहि कएलथिन; पहिने ई निश्चित करबाक छल जे व्यक्ति भूलसँ देखलक कि जानि-बुझि भ्रामक बात कहल।

वीरेन्द्र राय अपन ठेकेदारक कार्यालयमे बैसल छल। पुलिसक कागज अएलाक बाद ओकर सहायक बबलू कहलक, ''पुरान गाड़ीकेँ कहीं आओर राखि दी?'' वीरेन्द्र तिखा स्वरमे उत्तर देलक, ''तोरा जे कहल जाए, ओतबे कर।'' कनेक देरि बाद ओ स्वयं संभलि कहलक, ''जे कागज माँगल जाए, वकीलक माध्यमसँ देब। बेकार हड़बड़ी नहि।'' बबलू बुझि नहि सकल जे ओकर मालिक चिन्तित छथि कि क्रुद्ध। कार्यालयक भित्तिपर मंत्रीक संग खिचाओल तस्वीर लागल छल, मुदा ओहि तस्वीरक सोझाँ बैसल वीरेन्द्रकेँ अपने मेजक दराज बेसी भारी लगैत छल।

साँझ अभय पत्रकारिता कार्यालयमे एकटा कापी खोलि बैसलाह। नगरमे चर्चा उठल छल जे नरेशक हत्याक गाड़ी भेटि गेल। समाचार छापबाक लेल एकटा स्थानीय वेबसाइट हुनका फोन कएलक। अभय कहला, ''गाड़ी भेटबाक पुष्टि नहि अछि। परिवहनक कागजक जाँच चलि रहल अछि, से आधिकारिक रूपेँ सुनलहुँ। एकरा गिरफ्तारीक समाचार नहि बना सकैत छी।'' मञ्जरी झा हुनक उत्तर सुनि कहलीह, ''शीर्षक तेज बनब तँ लोक पढ़त, मुदा गलत सूचना परिवारक पीड़ा बढ़ाओत।'' अभय समाचारक मसौदा छोट कऽ देलनि।

ओहि राति रेखा पिता लग बैसि नरेशक पुरान फोटो देखैत छलीह। पिता पुछलनि, ‘‘गाड़ी भेटल?’’ रेखा कहलीह, ‘‘सभ कियो बात करैत अछि, मुदा पुलिससँ स्पष्ट खबरि नहि अछि।’’ पिता मुँह घुमा लेलनि। ‘‘हमरा बेटाक प्राण घुरि नहि आएत। मुदा जे भेल से ठीकसँ बुझि जाए, एतबा चाहैत छी।’’ रेखा हुनक पाँजरा लग हाथ राखलथिन। पिताकेँ दवा देबाक समय भऽ रहल छल। सचेत रहबाक दैनिक कठिनाई शोकसँ अलग नहि छल; ओही शोकक भीतर जीबाक काज छल।

दोसर दिन अरुण कुमार मरम्मत-पञ्जीक तिथि आ वाहन-भाड़ाक सूची मिलौलनि। एकटा भुगतानमे ‘‘अस्थायी माल परिवहन’’ लिखल छल। रकम सामान्य दूरीक भाड़ासँ बेसी छल, मुदा रातिक अतिरिक्त काजक कारणेँ हो सकैत छल। ओ एकरा स्वतन्त्र प्रमाण नहि मानलनि। परिवहन विभागसँ आएल नकलमे वीरेन्द्रक नामक संग ओहि वाहनक हस्तान्तरण-अनुरोध भेटल। सुजाता कहलथिन, ‘‘एखन वाहनक वास्तविक वर्तमान ठाम चाही। मालिकक विवरण मात्रसँ हत्याक समयक उपयोग सिद्ध नहि होयत।’’

भोरक पहर एकटा सूचना भेटल—वीरेन्द्रक पुरान गोदामक पछिला आँगनमे किछु दिन धरि नील गाड़ी देखल गेल छल। सूचना देनिहार पड़ोसक दूध-विक्रेता भरत छलाह। सुजाता हुनक समय आ दृश्य सम्बन्धी प्रश्न पुछलथिन। भरत कहलनि, ‘‘हम दिनमे दूध देबय जाइत छलहुँ। गाड़ी देखैत छलहुँ, मुदा कोन राति बाहर गेल, से नहि जनैत छी।’’ एहि स्वीकारोक्तिसँ सूचना कम उपयोगी नहि भेल; ओकर सीमा स्पष्ट भऽ गेल।

सुजाता भरतकेँ दोसर वाहनक तस्वीर नहि देखौलथिन। पहिने ओ एतबा तय कएलथिन जे गोदामक स्वामित्व आ उपयोगक कागज प्राप्त हो। ‘‘जँ गाड़ी ओतए रहैत छल,’’ अरुण कहलनि, ‘‘तँ मरम्मतक सामान वा आवन-जावनक विवरण भेटि सकैत अछि।’’ सुजाता सहमत भेलीह। ‘‘मुदा कोनो गोदाममे प्रवेश नियमक अनुसार होयत। पहिने आवश्यक अनुमति आ स्वतन्त्र साक्षीक व्यवस्था।’’

साँझक समय नैना कार्यालयसँ निष्कासनक धमकीक पत्र फेर पढ़लथिन। ओहि पत्रमे लिखल छल जे जाँचक अवधि धरि हुनक उपस्थिति आवश्यक नहि। एखन एहि निर्णयक

आर्थिक चोट ओकर घरपर स्पष्ट पड़ि रहल छल। सरस्वतीक औषधि, चन्दनक देनदारी, घरक किराया। अभय पुछलनि, ‘‘नब काजक प्रयास केलहुँ?’’ नैना कहलीह, ‘‘दू ठाम आवेदन देने छी। पहिने पगारक भरोसा छल; आब आवेदनक पाँतिमे फेर ठाढ़ छी।’’ अभय कहला, ‘‘हम सिफारिस नहि, सही सूचना जुटा कऽ दऽ सकैत छी।’’ नैना मुस्कुरैलीह। ‘‘ओतबे चाही।’’

शहरक पुरान माल-ढुलाई अड्डापर एकटा हस्तलिखित रजिस्टर राखल रहैत छल, जाहिमे चालकसभ अपन पालि लिखबैत छलाह। पुलिसकर्मी ओहि रजिस्टरक मालिकसँ भेटलाह। ओ कहलक जे हफ्ताक अन्तमे कतेको चालक अपन नाम भरि दैत छल, कतेको बिना लिखने निकलि जाइत छल। नील गाड़ीक नामक आगाँ एकटा रातिक प्रविष्टि भेटल, मुदा वास्तविक समयक कोष्ठक खाली छल। मालिक सहमति देलक जे मूल रजिस्टर सुरक्षित राखत। सुजाता सूचना पाबिकऽ कहलथिन, ‘‘रिक्त समयकेँ अनुमानसँ भरब नहि; जे दर्ज अछि, ओतबे जाँचब।’’

रातिमे सुजाता फाइलक दोसर खण्ड खोललथिन। एक दिस पुरान गाड़ीक निबन्धन, दोसर दिस चन्दनक बयान, तेसर दिस मरम्मतक तिथि। सभ बात एक-दोसराक कात अबैत छल, मुदा एखन कोनो एकटा रेखासँ नरेशक मृत्युक पूरा चित्र नहि बनैत छल। ओ लिखलथिन—‘‘वाहनक भौतिक जाँच आवश्यक; उपयोगक अभिलेख सुरक्षित करब; मालवाहकक अन्य चालकक पहचान; सम्बन्धित गोदामक कानूनी स्थिति।’’ अगिला पृष्ठपर गोदामक पत्ता छल। नहरक कातक बाट ओतयसँ बहुत दूर नहि छल, मुदा दूरी मात्र अपराधक प्रमाण नहि।

अध्याय ३९ : गोदामक भीतर

नवगढ़क पच्छिम छोरपर पुरान चाउर-मिलक बगलमे एकटा लम्बा गोदाम छल। टीनक छप्परक कात वर्षाक पानिसँ कारी पड़ि गेल छल। मुख्य फाटकपर फीका रंगमे ‘‘वीरेन्द्र निर्माण सेवा’’ लिखल छल। एतयसँ किछु दूर नहर दिस जाएबयवला सड़क फुटैत छल। भोरुक समय गोदामक आसपास चाय-दोकान खुलि रहल छल; मजदूरसभ मजदूरीक आशामे हाथमे गमछा लपेटने ठाढ़ छलाह। रोजक दिनक जकाँ ओ सभ फाटक खुलबाक प्रतीक्षा करैत छलाह, मुदा आजु फाटकक सोझाँ पुलिसक दू गाड़ी देखिते भीड़मे फुसफुसाहट उठल।

निरीक्षक सुजाता कुमारी सम्बन्धित विधिक अनुमति आ लिखित आदेश नेने पहुँचल छलीह। हुनका संग आबकारी विभागक अधिकारी, आर्थिक अभिलेखक जाँचक कर्मचारी आ दू स्वतन्त्र स्थानीय साक्षी छलाह। गोदामक मुनीम बबलू फाटक खोलैत हाथ काँपि गेल। ‘‘मालिक नहि छथि,’’ ओ पहिल बात कहलक। सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘जाँचक आदेश एहि परिसर लेल अछि। अहाँ जिम्मेवार कर्मचारी छी; आदेश पढ़ि लिअ। जे कक्ष खोलल जाएत, ओकर विवरण अहाँक उपस्थितिमे बनत।’’ बबलू कागज पढ़बाक प्रयास कएलक, फेर चश्मा माँगलक।

पहिल कक्षमे ईंटक नमूना, लोहेक पाइप, रंगक डिब्बा आ लकड़ीक पटरा छल। किछु मजदूर एही सामानक ढुलाई करैत रहैत छलाह; हुनक रोजीक सम्बन्धमे कोनो शङ्का नहि छल। सुजाता स्पष्ट कहलथिन जे सामान्य निर्माण-सामग्रीक काज रोकि निर्दोष लोककेँ परेशान नहि करबाक अछि। जाँचक कर्मचारी प्रत्येक वस्तुक कोन भाग खोलल अथवा देखल, ओकर संक्षिप्त विवरण लिखैत रहल। स्वतन्त्र साक्षी फूलचन्द साह आ शिक्षिका सीमा देवी उपस्थित छलीह। सीमा देवी प्रश्न पुछलथिन, ‘‘ई सभ लिखल बात हमरा पढ़ि

सुनाओल जाएत ने?'' सुजाता कहलीह, ''हँ, हस्ताक्षरसँ पहिने पूरा पढ़बाक अधिकार अछि।''

दोसर कक्षक ताला बबलू अपन चाभीसँ खोललक। भीतर राखल पेटीसभपर सामान्य सामानक नाम लिखल छल, मुदा किछु पेटीमे काँचक बोतल देखाइत छल। आबकारी अधिकारी अधिकृत जाँच करैत बतौलनि जे बोतलक सामग्री आ वैधता जाँचब आवश्यक अछि। सुजाता ककरो सोझाँ ''सभ अवैध शराब अछि'' नहि कहलथिन; नमूना, गिनती आ कागजातक विधिसम्मत परीक्षणक व्यवस्था कएलथिन। बबलू कहलक, ''ई सभ हमरा आवक-पञ्जीमे नहि अछि।'' सुजाता पुछलथिन, ''तखन ककर आदेशपर एतए राखल गेल?'' बबलू मुँह बन्द कऽ लेलक।

गोदामक फर्शपर पुरान वर्षाक पानिक दाग छल। टीनक छप्परसँ उजास भीतर झरैत छल। एकटा कोनमे तीनटा खाट आ दूटा चूल्हा राखल छल। खाटक तलमे चप्पल आ एकटा फाटल कापी भेटल। सीमा देवी कापीक पन्ना देखिकऽ कहलथिन, ''एहि पर लोकक नाम लिखल अछि।'' सुजाता बिना छुए पहिने कापीक स्थिति दर्ज करौलथिन, फेर अधिकृत कर्मचारी सँभालि लेलनि। पन्नापर मजदूरक नामक आगाँ कामक दिन गनल छल, मुदा कतेको ठाम भुगतानक कोष्ठक खाली छल।

एकटा युवक फाटक बाहर ठाढ़-ठाढ़ ई दृश्य देखैत छल। ओकर नाम इमरान छल। ओ मजदूरीक लेल तीन सप्ताह पहिने एतए आएल छल। पुलिसक कर्मचारी पुछलनि तँ ओ कहलक, ''हम पाइप उतारैत रही। बीस दिनक मजदूरी एखन धरि पूरा नहि भेटल।'' ''काजक कागज अछि?'' ''एहने पञ्जीमे नाम लिखबैत छलहुँ। अपन लग किछु नहि।'' सुजाता ओकरा अलग ठाम बैसाकऽ सुनलथिन। इमरानक कथन श्रमिकक देय मजदूरीसँ सम्बन्धित छल; तस्करीक आरोपक स्वतन्त्र प्रमाण नहि। मुदा हुनक कथनसँ गोदामक श्रम-व्यवस्थाक जांच आवश्यक बुझायल।

आबकारी अधिकारीक जाँच चलिते पुलिसक एकटा सिपाही पछिला आँगन दिस गेल। ओतए पुरान तिरपालक नीचाँ गाड़ीक ढाँचा झलकैत छल। सिपाही तुरन्त वस्तु छूअय नहि

गेल। सुजाताकेँ खबरि देलक। तिरपाल हटेबासँ पहिने उपस्थित लोकक नाम आ समय लिखल गेल। नीचाँ गहिर नील रंगक छोट मालवाहक गाड़ी छल। पाछाँक लोहेपर किछु अक्षर धुँधला पड़ि गेल छल। ‘‘परिश्रमक फल’’क आधा भाग एखनहुँ पढ़ल जा सकैत छल। सुजाता हाशिम अन्सारीक कथन याद कएलथिन, मुदा केवल लिखावट देखिकऽ ओ गाड़ीकेँ नरेशक हत्यासँ जोड़ि नहि देलथिन।

गाड़ीक निबन्धन-संख्या दस्तावेजमे दर्ज संख्यासँ मिलैत छल। ओकर पाछाँक एकटा बत्ती अपेक्षाकृत नब देखाइत छल। मरम्मतखानाक पञ्जीमे बत्ती बदलल होयबाक उल्लेख छल, तकर स्वतंत्र मिलान बाकी छल। सुजाता कहलीह, ‘‘जे अवस्थानमे भेटल अछि, ओहने अभिलेख बनाउ। फोटो, माप आ यान्त्रिक परीक्षणक लेल सम्बन्धित विशेषज्ञक सहायता ली।’’ बबलू तखन कहलक, ‘‘एहि गाड़ीपर बहुत लोक बैसैत अछि। हम नहि जनैत छी कोन दिन के चलौलक।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘जे नहि जनैत छह, से कह। मुदा उपलब्ध आवागमन-पञ्जी देब आवश्यक अछि।’’

मुख्य कार्यालयक छोट कोठरीमे दूटा लोहेक आलमारी छल। एकटामे निर्माण-सामग्रीक बिल आ मजदूरीक पर्ची छल; दोसर पर तालाबन्दी छल। बबलू कहलक, ‘‘एहि चाभी मालिक लग अछि।’’ विधिसम्मत आदेशक दायरामे प्रक्रिया दर्ज कऽ अलमारी खोलल गेल। भीतर कागजक तीन गड्डी, एकटा पुरान रजिस्टर आ अस्थायी नियुक्तिक फॉर्म भेटल। किछु फॉर्मपर रोजगार संस्थाक नाम लिखल छल, जखन कि गोदाम निर्माण-ठीकेदारक नामपर चलैत छल। सुजाता एहि सम्बन्धक कारण पुछलथिन। बबलू उत्तर देलक, ‘‘हमरा कहल गेल जे अस्थायी मजदूरसभक कागज एतए राखू।’’

आर्थिक जाँचक अधिकारी अरुण एकटा रजिस्टर पलटलनि। पहिल पन्नापर सामानक आवक-जावक, दोसर भागमे श्रमिकक नाम आ तेसर भागमे अक्षर-अङ्कक सङ्केत छल। ‘‘ई ककर लिखावट?’’ ओ पुछलनि। बबलू दू प्रविष्टि अपन मानलक, बाकी नहि। अरुण एकटा पन्नापर ‘‘पी-१७’’ लिखल देखलनि। ओहि सङ्केतक सोझाँ एकटा यात्राक तिथि आ खर्चक रकम छल। नरेशक कागजमे पूनमक क्रमाङ्कक कात मिलैत-जुलैत सङ्केत

भेटने छल, मुदा एहि पन्नासँ ई निश्चित नहि भऽ सकैत छल जे ‘‘पी’’ सँ पूनम बुझाओल गेल। अरुण अलग नोट बनौलनि।

सीमा देवी एकटा फॉर्म उठल देखिकऽ कहलीह, ‘‘एहि पर स्त्रीक नाम अछि।’’ अधिकारी पढ़ि सुनौलनि—‘‘नसीमा खातून, अस्थायी सिलाइ-कर्मचारी।’’ ओहि नामक आगाँ कोनो हस्ताक्षर नहि छल। सीमा देवी पुछलथिन, ‘‘ई महिला एतए काम करैत छलीह?’’ बबलू उत्तर नहि देलक। सुजाता कहलथिन, ‘‘पहिने नामक व्यक्ति खोजल जाए। बिना भेटने कियो पीड़ित वा कर्मचारी घोषित नहि कएल जा सकैत अछि।’’ ई सावधानी महत्त्वपूर्ण छल; कागजपर लिखल नाम आ वास्तविक जीवनक अनुभवक बीच बहुत दूरी रहि सकैत छल।

गोदामक बाहर भीड़ बढ़ि गेल छल। कियो कहैत छल पूरा शहरक शराब एतयसँ जाएत, कियो कहैत छल नरेशकेँ एही ठाम मारल गेल। सिपाही लोककेँ स्पष्ट कहलनि जे जाँच चलि रहल अछि आ अपुष्ट बात नहि पसारथि। चाय-दोकानक मालिक अपन चूल्हि सम्हारैत कहलक, ‘‘कागज भेटलासँ हत्या ककरा केल, से तुरन्त बुझाइत अछि कि?’’ फूलचन्द उत्तर देलनि, ‘‘नहि। एहि लेल तँ अलग जाँच होयत।’’ ई साधारण बातचीत भीड़मे उठल तेज आवाजसँ अधिक भरोसामन्द लगैत छल।

फाटक बाहर बैसल वृद्ध मजदूर जगदीश महतो एखनहुँ अपन मजदूरीक प्रतीक्षा करैत छलाह। ओ कहलनि, ‘‘हमरा सभकेँ कहल गेल छल जे गोदाममे निर्माणक सामान छाँटबाक अछि। पहिल सप्ताह पैसा समयपर भेटल, तकर बाद आधा।’’ पुलिसक कर्मचारी हुनका ओहि ठाम आवेदन लिखबाक सुविधा देलक। जगदीश कहला, ‘‘हम लिखि नहि सकैत छी, मुदा अपन नामक अक्षर चिन्हैत छी।’’ सीमा देवी हुनक बात सुनि साफ शब्दमे लिखलथिन; पढ़ि सुनौलाक बाद मात्र ओ अँगूठाक निशान देलनि।

इमरान अपन साथीक नाम याद करबाक प्रयास करैत छल। ‘‘रशीद दू सप्ताह काज केलक, फेर अन्य ठाम पठाओल गेल। ओ कहैत छल जे बाहरी नोकरी भेटल अछि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘कोन शहर?’’ ‘‘हम नहि जनैत छी। बस एक बेर सुनल छल जे सीमा

लगक बाटसँ जाएत।'' अधिकारी ओकरा दोबारा स्पष्ट कएलथिन जे सुनी-सुनाओल बातकेँ देखल घटना जकाँ दर्ज नहि कएल जाएत। इमरान कहलक, ''हम ओहि बेर डरलहुँ, मुदा हमर पास ओकर परिवारक नम्बर नहि छल।''

गोदाममे भेटल श्रमिक-पञ्जीक किछु पन्ना भिजल छल। अरुणकेँ ओहि पन्नाक अक्षर बचएबाक लेल सावधानी बरतबाक पड़ल। ''एहि कागजकेँ भिजायल कियो जानि-बुझि?'' एक सिपाही पुछलक। सुजाता उत्तर देलथिन, ''छप्परसँ पानि झरैत अछि। पहिने वास्तविक अवस्था दर्ज करू, फेर परीक्षण होयत।'' बिनु प्रमाण षड्यन्त्रक कल्पना करब सहज छल, मुदा ओहि कल्पनासँ तथ्य बदलि जाइत नहि छल। भिजल पन्नाक कात राखल सूखल रजिस्टरक क्रम अलग नकल कएल गेल।

बबलूकेँ कार्यालयक कोठरीमे बैसि पानि देल गेल। ओ कहलक, ''जँ मालिक बुझत जे हम चाभी खोललहुँ तँ नोकरी खतम।'' सुजाता कहलथिन, ''विधिक आदेशक पालन लेल अहाँकेँ दोष देबाक आधार नहि अछि। जँ कियो धमकी देत तँ लिखित सूचना दिअ।'' बबलूकेँ अपन घरक चिन्ता याद पड़ल—पिता बीमार छथि, बहिनक पढ़ाइ चलि रहल अछि। ओ किछु देरिपछि स्वयं बतौलक जे दूटा रजिस्टर राति रतनक कार्यालयसँ एकटा गाड़ीमे आएल छल। तिथि ओकरा याद नहि छल।

किरण ओहि दुपहरिया अपन कोठरीमे बैसि कम्प्यूटरक पुरान सन्देश पढ़ैत छलीह। गोदामपर पुलिस गेल, ई खबरि भेटिते रतनक तीन बेर फोन अएल। किरण एक बेर उठौलथिन। रतन पुछलनि, ''ओतए जे फाइल अछि, तकर बारेमे अहाँ की कहने छी?'' किरण कहलीह, ''जे पुछल गेल, से कहने छी। हम सभ फाइलक रक्षक नहि रही।'' रतनक स्वर कठोर भऽ गेल। ''हमरा सामने ई बात नहि कहब।'' किरण फोन राखि देलथिन। दिनेशक संग हुनक सम्बन्ध टूटबाक कात छल; आब अपन काजक अतीतो हुनका घेरि रहल छल।

विभा सिंह घरक पुरान आलमारी खोलि बैंकक विवरण देखैत छलीह। हुनक नामपर किछु भुगतानक अनुमति दर्शाओल गेल छल, मुदा ओहि कागजपर हस्ताक्षर हुनका

अपरिचित बुझाइत छल। गोदामक समाचार सुनि ओ निर्णय कएलथिन जे मूल बैंकक कागज प्राप्त कऽ अपन वकीलसँ सलाह लेतीह। रतनसँ प्रतिशोध लेल झूठ आरोप देनाइ हुनक उद्देश्य नहि छल। ओ केवल ई चाहैत छलीह जे अपन नामक उपयोग कोन काजमे भेल, तकर स्पष्ट उत्तर भेटय।

गोदामक बगलमे रहनेवाली विधवा शान्ति देवी पुलिसक गाड़ी देखैत बाहर आएल छलीह। ‘‘राति एतए गाड़ी चलैत छल,’’ ओ कहलीह, ‘‘मुदा हम अन्हारमे लोकक चेहरा नहि देखलहुँ।’’ पुलिसक कर्मचारी तिथि पुछलनि। शान्ति देवी कहलीह, ‘‘हम जे राति ज्वरमे रही, ताहि दिन आवाज सुनल छल। चिकित्सकक पर्ची अछि, ओकरासँ दिन बुझि सकैत छी।’’ सुजाता हुनका अपन कागज सुरक्षित रखबाक कहलथिन। ‘‘जँ समय मिलत तँ फेर पुछब। याद नहि अछि तकरा याद करबाक दबाव नहि,’’ ओ कहलीह।

अभयक कार्यालयमे समाचारक मसौदापर चर्चा चलि रहल छल। एकटा सहयोगी कहलक, ‘‘एतेक पुलिस, एतेक बोतल, तैयो लेखमे प्रश्नचिह्न?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘आबकारी विभाग जखन जाँचक परिणाम देत, तखन वैध आ अवैधक भेद स्पष्ट लिखब। गोदाममे श्रमिक-पञ्जी भेटल, से लिखि सकैत छी; पूनमकेँ ओतए रखने छल, ई नहि।’’ मञ्जरी झा समाचारक अन्तिम पाँति देखैत कहलीह, ‘‘पाठककेँ तथ्य चाही। सनसनीक जिम्मेवारी हमरा किएक लेब?’’

दुपहरिया रतन सिंहक वकील गोदामपर अएलाह। हुनका आदेश देखाओल गेल। ओ कागजातक सूची देखबाक माँग कएलनि। सुजाता कहलीह, ‘‘विधिक प्रावधान अनुसार जे नकल उपलब्ध कराओल जाएत, से देल जाएत। निरीक्षणमे बाधा नहि होयब चाही।’’ वकील कहला जे किछु सामान निर्माण-काजक वैध सामग्री अछि। सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘जकर वैधता सिद्ध अछि, ओकरा अलग दर्ज कएल जा रहल अछि। अवैध मानबाक निर्णय सम्बन्धित परीक्षण आ अभिलेखक आधारपर होयत।’’ हुनक स्वरमे न क्रोध छल, न आत्मप्रदर्शन।

एहि बीच वीरेन्द्रक फोन बबलूक जेबमे बारम्बार बजैत छल। बबलू पहिने उठौल नहि, फेर सुजाताकेँ कहलके जे मालिक बात करय चाहैत छथि। सुजाता अपन सरकारी फोनपर आवश्यक औपचारिक सम्पर्क करबाक कहलथिन। किछु देरि बाद वीरेन्द्रक वकीलक माध्यमसँ लिखित सन्देश आएल जे ओ आवश्यक कागजात उपलब्ध कराओत। सुजाता एहि सन्देशकेँ फाइलमे जोड़लथिन, मुदा गोदामक जाँच एतेक भरिसँ स्थगित नहि कएलथिन।

दूर शहरमे नैना मायक संग अस्पतालक फेर जाँच लेल पहुँचल छलीह। औषधिक पर्चीमे किछु बदलाव भेल छल। प्रतीक्षालयक समाचारपटपर गोदाममे पुलिसक उपस्थितिक छोट समाचार चलि रहल छल। सरस्वती पुछलथिन, ‘‘ई ओहि ठीकेदारक गोदाम ने?’’ नैना कहलीह, ‘‘संभव अछि, मुदा समाचार पूरा नहि अछि।’’ सरस्वती चन्दनक बात मोन कऽ घबरा गेलीह। नैना हुनक हाथ सम्हारि कहलीह, ‘‘चन्दन जे जानैत छल, पुलिसकेँ कहि चुकल अछि। एखन डॉक्टरक बात सुनू।’’ माय धीरे सँ माथ हिलौलथिन। अपराधक जाँचक आवाज अस्पतालक नीरव गलियारामे सेहो पीछा नहि छोड़ि रहल छल।

चन्दन अपन छोट कोठरीमे पुरान प्रवेशपत्रक संग नव काजक आवेदन भरि रहल छल। ओकर मित्र विजय फोन कऽ खबरि देलक जे गोदामपर पुलिस गेल अछि। चन्दनक हाथ रुकि गेल। ओ पूछलक, ‘‘कोन गोदाम?’’ विजय ठाम बतौलक। चन्दन समझि गेल जे ओही बाटे ओ कतेको राति गेल छल। विजय कहलकेँ, ‘‘तोरा एखन कतहु जाएब नहि चाही।’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘हम पहिने अपन बयान देलहुँ। जँ पुलिस फेर बजाओत तँ जाएब। मुदा समाचार सुनि भागब नहि।’’ फोन राखि ओ आवेदनक रिक्त घर भरय लगल।

साँझक पहर गोदामक तलाशी पूरा भेल। जाँचमे भेटल कागजात, सामग्री आ वाहनक विवरण स्वतंत्र साक्षीसभक समक्ष पढ़ि सुनाओल गेल। सीमा देवी दूटा प्रविष्टिक लिखावट अस्पष्ट होयबाक आपत्ति उठौलथिन; अधिकारी तुरन्त फेर साफ लिखलनि। फूलचन्द एकटा पेटीक गिनतीपर प्रश्न कएलनि; पुनर्गणना भेल। सुजाता चाहैत छलीह जे बादमे कियो ई नहि कहय जे कागज पढ़बामे अथवा गिनतीमे साक्षीकेँ भागीदार नहि बनाओल गेल।

वाहनक विशेषज्ञ प्रारम्भिक निरीक्षण कऽ बतौलनि जे गाड़ी बहुत दिनसँ नियमित चालमे नहि रहल होयत, मुदा अंतिम उपयोगक निश्चित दिन तखनहि बताओल जा सकैत अछि जखन उपलब्ध यान्त्रिक साक्ष्य आ अभिलेख मिलाओल जाए। गाड़ीक भीतर भेटल सामान्य वस्तु सभक विवरण बनल। कोनो वस्तुकेँ तुरन्त हत्या-संबंधी वस्तु घोषित नहि कएल गेल। नरेशक मृत्युक राति गाड़ी वास्तवमे कतय गेल छल, एहि प्रश्नक उत्तर एखन खोजबाक छल।

गोदामक मजदूरसभ संझिया घर घुरबाक तैयारी करैत छलाह। इमरान अपन बकाया मजदूरीक आवेदनक प्रति हाथमे लेलनि। सीमा देवी हुनका कहलीह जे मजदूरीक प्रश्न अलग सँ श्रम-अधिकारीक समक्ष राखल जा सकैत अछि। इमरान पुछलक, ‘‘गोदाम बन्द भऽ गेल तँ हमर टका के देत?’’ सीमा देवी उत्तर देलथिन, ‘‘ई बात जाँच आ कानूनी प्रक्रिया सँ तय होयत। मुदा अहाँ अपन कामक दिन आ साथीसभक नाम लिखि राखू।’’ युवकक चेहरापर राहत नहि आएल, मुदा खाली हाथ घुरबाक बदला ओकरा एकटा प्राप्ति-रसीद भेटल।

जखन अन्तिम गाड़ी चलल तँ फाटकक पाछाँ टीनक छप्पर फेर शान्त भऽ गेल। सुजाता अपन नोटमे लिखलथिन जे प्राप्त वस्तुसभसँ अवैध शराबक सम्भावित कारोबार आ श्रमिकक नियुक्ति-अभिलेखमे अनियमितताक महत्त्वपूर्ण सूत्र भेटल अछि। मुदा अपराधक अलग-अलग आरोपक लेल अलग-अलग प्रमाण आवश्यक रहत। कोनो पेटी अपने नरेशक हत्यारा नहि चिन्हबैत छल; कोनो सूची अपने पूनमक वर्तमान ठाम नहि बतबैत छल। ओहि सूचीसभकेँ पढ़बाक, लोककेँ खोजबाक आ भुगतानक वास्तविक उद्देश्य बुझबाक काज आब आरम्भ भेल छल।

अगिला भोर रेखाक दरबज्जापर पुलिसक एकटा लिखित सूचना पहुँचल। नरेशक जमा कएल कागजमे उल्लिखित ठीकेदारक अभिलेखक किछु प्रतिलिपि भेटल छल; रेखाकेँ कोनो नब आरोप देबाक नहि, केवल दादाक लिखावटक पहचानमे सहयोग करबाक आग्रह छल। रेखा पिता केँ बात बतौलथिन। ओ कहलथिन, ‘‘दादाक मृत्यु एखनहुँ हमरा लेल अन्हार अछि, मुदा ओ जे कागज बचा कऽ रखलाह, ओकरा आब ध्यानसँ देखल जा रहल

अछि।'' पिता धीरे कहलनि, ''कागज ओहि लेल बचा कऽ रखल गेल छल जे जेकर हक छी, ओकरा साँच भेटय।'' रेखा पत्र मोड़ि अपन थैलीमे रखलथिन।

थानामे रातिक पहर सुजाता सामग्रीक दू अलग सूची मिलौलथिन। आबकारी विभागक नमूना आ श्रमिक-पञ्जीक कागज अलग-अलग सुरक्षित राखल गेल छल, जाहिसँ एक जाँचक वस्तु दोसरमे नहि मिसाए। नरेशक हत्याक फाइलमे गोदाम-जाँचक केवल सम्बन्धित अंश जोड़ल गेल। सुजाता सहयोगीकेँ कहलीह, ''जँ सभ अपराधक कागज एक्के गड्डीमे राखब, तँ असली सम्बन्धो अस्पष्ट भऽ जायत। प्रत्येक प्रश्नक अपन प्रमाण चाही। प्रत्येक बयानक तिथि सेहो अलग सँ लिखल गेल।''

गोदामसँ प्राप्त एकटा पुरान रजिस्टरक किनारपर अरुणक नजरि फेर गेल। ओतए दू नामक आगाँ एक्के यात्राक तिथि छल; तेसर स्तम्भमे केवल एकटा कोड। ओ पन्ना सुजाताकेँ देखौलनि। ''एहि कोडसँ किछु लोक बाहरी ठाम पठाओल गेल होयत,'' ओ कहलनि, ''मुदा ठामक नाम एखन स्पष्ट नहि।'' सुजाता कहलीह, ''एहि आधारपर पूनमक परिवारकेँ खबरि नहि भेजू। पहिने अन्य संस्थाक कागज आ सम्बन्धित लोकक बयान मिलाउ।'' अरुण पन्ना सुरक्षित कएलनि। गोदामक भीतर भेटल चीज सभ शहरक अपराधक रूप देखेबाक लेल पर्याप्त सङ्केत देने छल, मुदा एकटा गायब युवतीक खोज एखन अधूरी छल।

अध्याय ४० : किरणक भय

गोदाममे तलाशी भेलाक दोसर भोर किरण कार्यालय पहुँचलीह तँ फाटकपर पहिनेसँ बेसी लोक जमा छल। कियो अपन जमा राशि घुरेबाक बात कहैत छल, कियो दूरक शहरमे गेल बेटाक पता पुछैत छल। सुरक्षा-कर्मी सभकेँ बुझा रहल छल जे कार्यालय सामान्य रूपसँ खुलल अछि, मुदा भीतरक बरामदामे आधा कुरसी खाली छल। नरेशक मेजपर दोसर कर्मचारी बैसि गेल छल, तखनहुँ ओकरा लग राखल पुरान पञ्जीक ठाम खाली देखाइत छल। किरण अपन कोठरीमे पहुँचि खिड़की खोललथिन। बाहरक शोर भीतर आएल, मुदा ओकरासँ बेसी तेज हुनका अपन फोनक बन्द घण्टीक स्मरण सुनाइत छल। राति रतन चारि बेर फोन केने छलाह। ओ एक बेरो नहि उठौने छलीह।

मेजपर नब निर्देश राखल छल। शीर्षपर रतनक हस्ताक्षर आ नीचाँ लिखल—कार्यालयक सम्पूर्ण नियुक्ति अभिलेख प्रबन्धिका किरणक देखरेखमे तैयार भेल; जँ कोनो विवरणमे त्रुटि भेटल हो तँ ओकर जिम्मेवारी सम्बन्धित विभागक होयत। किरण पत्र दू बेर पढ़लथिन। ‘त्रुटि’ शब्दक भीतर कतेक बात समेटल जा सकैत छल—पूनमक बदलल नाम, प्रशिक्षणक अपूर्ण प्रमाण, ओहि लोकक भुगतान जे कखनो एतय कामे नहि केने छल। पत्रमे एको ठाम रतन अपन स्वीकृतिक चर्चा नहि केने छलाह। किरणकेँ याद आएल जे कतेको भुगतान हुनक लिखित विरोधक बादो ‘मालिकक आदेश’ कहि पास कराओल गेल छल। ओहि विरोधक प्रति कतय अछि, आब से प्रश्न हुनका छातीमे काँटाक जकाँ बाझि रहल छल।

कुसुम भीतर आबि पुछलथिन, ‘‘मैडम, ई पत्रसभपर हस्ताक्षर करब?’’ पाँचटा कर्मचारीक नामक आगाँ नब कार्यविभाजन छल। ओहि सूचीमे नरेशक पुरान कक्षसँ कागजात हटएबाक सेहो आदेश छल। किरण कहलथिन, ‘‘एखन कोनो पुरान कागज नहि हटत। जे सूची बनेल अछि, ओकर एक प्रति राखू।’’ कुसुम हिचकिचाइत कहलीह,

‘‘काल्हि मालिक कहलनि जे जाँचक कारण काम बाधित नहि होयबाक चाही।’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘काम चलत; प्रमाण हटाएब काज नहि होइत अछि।’’ अपन स्वर सुनि हुनका स्वयं आश्चर्य भेल। दिन धरि जे बात ओ मनमे कहैत छलीह, आब पहिल बेर कार्यालयमे साफ कहलथिन।

साढ़े दस बजे रतन पहुँचलाह। कपड़ा इस्त्री कएल, पयरक चाल पहिनेक जकाँ, मुदा आँखिक नीचाँ राति भरि नहि सुतबाक चिह्न छल। ओ किरणक कोठरीक दरबज्जा बन्द कऽ देलनि। ‘‘अहाँक फोन बन्द किएक छल?’’ किरण कहलीह, ‘‘बन्द नहि छल। हम बात नहि करय चाहैत छलहुँ।’’ रतन हँसबाक प्रयत्न कएलनि। ‘‘ई समय रूठबाक नहि अछि। गोदामक जाँचसँ सभ समाचारवाला तमाशा बनौने अछि।’’ किरण पत्र बढ़ौलथिन। ‘‘एहि पर हमर नाम किएक लिखल अछि?’’ रतन कागजपर सरसरी नजरि देलनि। ‘‘प्रबन्धिकाक नाम नहि रहत तँ ककर रहत?’’ ‘‘स्वीकृति देनिहारक नाम सेहो रहबाक चाही,’’ किरण कहलीह।

रतन कुरसी घसकाइ बैसि गेलाह। ‘‘हम अहाँकेँ विश्वास दैत रहलहुँ। अहाँ सभ कागज देखैत रही। आब जाँच भेल तँ जिम्मेवारीसँ पाछाँ हटब?’’ किरणक गला सुखा गेलनि। ‘‘हम दोषसँ पाछाँ हटबाक बात नहि करैत छी। जे कएलहुँ, से कहब। मुदा जे आदेश अहाँ देलहुँ, ओकर दोष केवल हमरा माथपर नहि पड़त।’’ रतनक स्वर कठोर भऽ गेल। ‘‘अहाँ विसरि रहल छी जे अहाँक हस्ताक्षर कतेक जगह अछि।’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘हस्ताक्षर हमर अछि। मुदा एहि कागजमे कतेक रकम मालिकक कहने बदलल, से पूछल जाएत।’’ रतन उठि खिड़की लग गेलाह। बाहर कर्मचारीक आवाज सुनाइत छल। ओ परदा तनिक आगाँ सरकौलनि।

‘‘दिनेश घर घुरलाह?’’ रतन एकाएक पुछलनि। किरण समझि गेलीह जे ई प्रश्न चिन्तासँ नहि उठल अछि। ‘‘ओ अलग छथि,’’ ओ कहलीह। ‘‘हम हुनका सभ बतौने छी।’’ रतन हुनका दिस घुरि तकलनि। ‘‘सभ? हमर नाम सेहो?’’ किरण चुप रहलीह। रतन फेर कहलनि, ‘‘अहाँ बुझैत छी जे घरक झगड़ा अलग, कारोबार अलग? अहाँ एक्के दिनमे दुनू बर्बाद कऽ रहल छी।’’ किरणक भीतर क्रोध उठल, मुदा ओ स्वर थामि कहलीह, ‘‘घरक

बात हम अपने नुकेने छलहुँ। कारोबारक बात ककरो नुकएबाक अधिकार नहि अछि।'' रतन टेबुलपर हाथ मारलनि। बाहर कुसुम ठमकि गेलीह।

बेर बाद रतन धीमा स्वरमे कहलनि, ''कानूनक जाँचमे सभ किछु अलग ढङ्गसँ देखाएल जा सकैत अछि। जँ अहाँ हमर संग रहब तँ व्यवस्था कऽ देब।'' किरण पुछलथिन, ''कोन व्यवस्था?'' ''अहाँक लेल दोसर नगरमे शाखा खोलि देब। पुरान कागज वकील देखताह।'' किरणकेँ शाखाक नाम सुनिते पूनमक फाइलक स्मरण भेल। बाहर भेजल कर्मचारीक नामपर एतय कतेक वचन देल गेल छल। ओ कहलीह, ''हम एखन कतहु नहि जाएब। पहिने अपन दस्तावेजक प्रति देखब।'' रतन कुर्सीसँ उठैत कहलनि, ''भरोसा समाप्त भेल तँ याद राखू, जिम्मेवारीकेँ कागज पहचानैत अछि, प्रेम नहि।''

ओ बाहर निकलि गेलाह। किरण ओतहि बैसल रहलीह। कतेको मास पहिने ओहि कोठरीमे रतन हुनका किमती घड़ी देने छलाह। तखन किरण समझने छलीह जे अपन जीवनक अपमान आ दिनेशक संग बढ़ैत दूरीक बीच हुनका कियो मूल्य दैत अछि। घड़ीक सूई चलि रहल छल, मुदा ओकर चमक देखिते हुनका अपन भूल बुझाइत छल। विवाहेतर सम्बन्धक आरम्भ स्वयं कएने छलीह; ओकर जिम्मेवारीक भार ओ रतनपर नहि राखि सकैत छलीह। मुदा निजी भूलकेँ बहाना बना कऽ आर्थिक अपराधक सम्पूर्ण दोष अपन माथपर लेबो उचित नहि छल। एहि दू बातक बीच भेद करब आब हुनक पहिल आवश्यकता छल।

दुपहरमे कुसुम एकटा पुरान फाइल नेने अएलीह। ''एहि मे दोसर शाखाक चिट्ठी अछि,'' ओ कहलीह, ''मालिकक सहायक एकरा लेबाक कहने छथि।'' किरण पन्ना पलटलथिन। दूटा पत्रक ऊपर हुनक हस्ताक्षर छल, मुदा संलग्न सूची ओहि समयक सूचीसँ अलग देखाइत छल। एकटा नाम पाछाँ जोड़ल बुझाइत छल; कागजक स्याहीक रंगो अलग छल। ओ कुसुमकेँ कहलथिन, ''एहि मे कोनो काट-छाँट नहि करब। जतेक फाइल अछि, सभ अपन स्थानपर रहत। जँ कियो लए जाए तँ लिखित पावती दए जायत।'' कुसुम मुड़ी हिलौलथिन। ''मैडम, हमरा नोकरीक डर अछि।'' ''हमरो अछि,'' किरण कहलीह, ''मुदा सभ किछु चुपचाप दऽ देलाक बादो नोकरी बचत, एकर भरोसा के देत?''

किरणक फोनपर दिनेशक छोट सन्देश आएल—ऋणक कागज कखन भेटत? ओ लिखलथिन, ‘‘आइ साँझ धरि जतबा प्रति अछि, पठा देब।’’ दिनेश लिखलनि, ‘‘निजी सम्बन्धपर एखन बात नहि करब। बैंकक कागज सही चाही।’’ ई पढ़ि किरणकेँ अजीब राहत भेल। दिनेश क्रुद्ध छलाह, मुदा अपन अधिकारक प्रश्न स्पष्ट रखैत छलाह। रतनक धमकीक बाद ई साधारण प्रश्न सेहो हुनका भरोसाक जकाँ लगल। ओ घड़ी खोलि दराजमे राखलथिन आ दिनेशक ऋणसँ सम्बन्धित कागजात अलग जुटेबाक काज शुरू कएलथिन।

कार्यालयक एक कर्मचारी रामबाबू दुआरिपर आबि धीरे कहलनि, ‘‘नरेश बाबू जखन एतय छलाह, एक बेर अहाँक लग गुप्त हिसाबक प्रति लेने अएल छलाह। हुनका घुरि पठा देल गेलनि।’’ किरण कहलथिन, ‘‘हम हुनका कहलियनि जे मालिकसँ स्वीकृति लेथि।’’ रामबाबू पुछलक, ‘‘ओहि दिन मालिक नगरसँ बाहर छलाह ने?’’ किरण ठमकि गेलीह। ई बात हुनका याद नहि छल। तिथि मिलाएब आवश्यक छल। रामबाबू अपन दैनिक पञ्जीक एक पन्ना देखौलक। ओहि दिन रतन कार्यालय आएल छलाह, मुदा बैठकीक दरबज्जा बन्द छल। किरणकेँ याद आएल जे रतन ओकरा किछु कागज ‘जाँचक बाद’ देबाक कहने छलाह। एखन ओ वाक्यक अर्थ बदलि रहल छल।

‘‘अहाँ ई पन्ना अपन लग राखू,’’ किरण कहलथिन, ‘‘आ कोनो आदेश भेटल तँ लिखित रूपमे माँगू।’’ रामबाबू कहलक, ‘‘सभ कहैत अछि जे नरेश बाबूक मृत्यु केसलहुँ अपघात छल। फेर कोनो कहैत अछि हत्या। हम अपन आँखिसँ किछु नहि देखलहुँ।’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘जे नहि देखलहुँ, ओकर गवाही नहि दिअ। जे देखलहुँ, ओकर तिथि विसरू नहि।’’ ई कहैत हुनक मोन काँपल। नरेश कार्यालयक सादा कर्मचारी छलाह, मुदा हुनक मृत्युक बाद सभ कियो अपन-अपन स्मृतिक हिसाब करैत छल। जकर स्मृति हानि पहुँचा सकैत छल, ओकरा चुप करेबाक दबाव सेहो बढ़ि रहल छल।

किरण कार्यालय घुरि अएलीह तँ कुसुम वेतनक पञ्जी नेने प्रतीक्षा करैत छलीह। दू कर्मचारीक महीनाक भुगतान रोकल गेल छल। ओ सभ नियुक्ति केन्द्रमे खाली कुरसी पर बैसल रहैत छलाह, कारण कार्यालयक बाहर भीड़ देखरेख करबाक आदेश ओहि दोघरसँ उठि गेल छल। ‘‘हिनक वेतन किएक रोकल?’’ किरण पुछलथिन। कुसुम कहलीह,

‘‘हिनका सभसँ कहने छथि जे जाँचमे कार्यालयक नुकसान भेल।’’ किरण पञ्जीक तारीख देखलथिन। नरेशक मृत्यु आ गोदामक तलाशी कर्मचारीक कमाओल मजदूरी नष्ट नहि करैत छल। ओ लिखित कारण माँगबाक सूचना तैयार करौलथिन। अपन नौकरीक भयक भीतर सेहो ओ बुझैत छलीह जे जे कर्मचारीक वेतन रोकल गेल, हुनक घरो चलबाक छल।

दुपहरक अन्तिम पहर कार्यालयक पुरान सफाइकर्मी श्यामली दुआरिपर अएलीह। ‘‘हमरा ई मासक टका देब कि नहि?’’ ओ पुछलथिन। ‘‘घरमे गैस समाप्त अछि।’’ किरण कहलीह, ‘‘अहाँक भुगतानक तारीख बीति गेल अछि। हम हिसाब पुछैत छी।’’ श्यामली पुछलथिन, ‘‘हमर नामो कोनो जाँचमे पड़ि गेल अछि ने?’’ किरणकेँ प्रश्न सुनि लाज भेलनि। जकरा लग कागजक अर्थ बुझब कठिन छल, ओ अपन कमाइपर सन्देहक भार उठा रहल छल। ‘‘अहाँ जे काम कएलहुँ, ओकर लिखित प्रमाण एतय अछि,’’ किरण कहलीह। ‘‘जँ भुगतान रुकल अछि तँ शिकायत लिखि सकैत छी। हम पावती देब।’’ श्यामलीक मुखपर निश्चिन्तता नहि आएल, मुदा ओ अपन कामक दिनक गिनती कहि गेलीह।

किरणक मनमे अपन नौकरीक पहिल वर्षक दृश्य उठल। दिनेश तखन किछु मासक लेल बेरोजगार छलाह। ओही समय किरण अतिरिक्त समय कार्यालयमे रहि वेतन बचौने छलीह। रतन पहिने हुनक परिश्रमक प्रशंसा करैत छलाह; बादमे निजी भेटक आग्रह बढ़ल। किरण अपन असन्तोष दिनेशसँ नहि कहि रतनसँ कहय लगलीह। निर्णय धीरे-धीरे बदलल, एक रातिमे नहि। एखन ओहि पुरान परिवर्तनक दोष ककरो माथपर रखब हुनका अनुचित लगैत छल। मुदा जखन व्यक्तिगत निकटताक भरोसापर कागजक अर्थ नहि पुछलथिन, तकर आर्थिक परिणाम कतेक लोकपर पड़ल, से देखि ओ पहिल बेर अपन भूलक पूरा आकार बुझैत छलीह।

ओ एकटा खाली रजिस्टर नेने काज शुरू कएलथिन। प्रत्येक पन्नापर तीनटा प्रश्न लिखल—आदेश ककर, हस्ताक्षर ककर, भुगतान ककरा। उत्तर जहिना-जाहि भेटत, तारीख संग दर्ज करतीह। कुसुम पुछलथिन, ‘‘एहि सूचीकेँ मालिक देखलाह तँ?’’ किरण कहलीह, ‘‘हम अपन जानकारीक लेखा बनबैत छी। कोनो मूल कागज बाहर नहि लऽ

जाएब, नहि काटब।'' कुसुम ओहि उत्तरपर आश्वस्त भेलीह, यद्यपि ओकर मनमे नौकरीक डर एखनहुँ छल। किरण बुझैत छलीह जे कर्मचारीकेँ अपन पक्ष चुनबाक दबाव देब दोसर अन्याय होयत। ओ कहलीह, ''तोरा जे देखल अछि, ओतबे याद राखिह; हमर लेल झूठ नहि बाजिह।''

खाली समयमे किरण अपन मायक फोन उठौलथिन। माय गाममे रहैत छलीह आ बेटी-पतिक बीचक विवादक खबरि पड़ोसीसँ सुनि लेने छलीह। ''की भेल? दिनेश ओतय नहि अछि?'' माय पुछलथिन। किरण कहलीह, ''हम हुनक भरोसा तोड़ने छी। ओ अलग रहबाक निर्णय केने छथि।'' माय किछु काल मौन रहलीह। ''जे करबाक छल से करि गेली, आब की चाहैत छी?'' किरणक आँखिमे नोर आएल। ''एखन ककरोसँ क्षमा माँगि सबटा मिटा देबाक आशा नहि। बस झूठ आरो नहि जोड़ब।'' माय कहलीह, ''क्षमा सभ दिन तुरन्त नहि भेटैत अछि। अपन काजक परिणाम देखब पड़ैत छैक।'' किरण हुनक बात मनमे रखि फोन राखलथिन।

किरण कुसुमसँ कहलथिन जे अखनसँ केवल लिखित आदेशपर पुरान अभिलेखक स्थान बदलल जाएत। ओकर बाद ओ श्यामलीक बकाया वेतनक विषयमे खाताक कर्मचारीसँ सम्पर्क कएलथिन। उत्तर भेटल—भुगतान रोकबाक कोनो लिखित आदेश नहि अछि; बैंकक प्रक्रियामे विलम्ब भेल। किरण कर्मचारीकेँ सही कारण लिखित देबाक कहलथिन। एतबा छोट सुधारसँ हुनका अपन अपराधक आशङ्का कम नहि लगलनि, मुदा कार्यालयमे जे छोट अन्याय हुनक सोझाँ छल, ओकरा सुधारेब हुनक हाथमे छल। ओथि काजक मध्य हुनका बोध भेल जे सत्यक पक्षमे ठाढ़ होयब केवल पैघ बयान नहि; दैनिक कागजपर अपन नाम सोचि-समझि लिखब सेहो अछि।

साँझसँ पहिले एकटा अपरिचित नम्बर फोन कएलक। पुरुषक स्वर कहलक, ''अहाँक लेल सलाह अछि—कागज कम राखू, परेशानी कम रहत।'' किरण पुछलथिन, ''अहाँ के?'' फोन कटि गेल। ओ नम्बर लिखि लेलथिन। भयक कारण हाथ काँपैत छल, मुदा ओ फोनक समय सेहो नोट कएलथिन। तुरन्त पुलिसकेँ सन्देश पठएबाक विचार भेलनि। ओ

सोचलथिन जे जँ आवाजक पहचान नहि अछि तँ आरोप ककरोपर किएक लगाउ। ओ केवल धमकीक विवरण लिखि, समय सहित सुरक्षित रखलथिन।

कार्यदिवसक अन्तमे किरण नगरक एकटा अधिवक्ताक कार्यालय पहुँचलथिन। अधिवक्ता मालती सिन्हा कार्यालयक पुरान विवादमे ककरो पक्ष नहि लेतीह, ई जानकारी हुनका सुमित्रासँ भेटल छल। किरण अपन विवाहेतर सम्बन्ध, नौकरीक पद, हस्ताक्षर कएल भुगतान आ सम्भावित अनियमितताक बात अलग-अलग कहलथिन। मालती बीचमे केवल आवश्यक प्रश्न पुछलथिन। ‘‘अहाँ कोनो कागज बदलने छी?’’ ‘‘नहि।’’ ‘‘ककरो बदलबाक कहने छी?’’ ‘‘दू-तीन बेर सूची सुधारबाक कहने छलहुँ, मुदा तखन हमरा असली तथ्य नहि मालूम छल।’’ ‘‘अहाँक लग अपन निर्देशक लिखित प्रति अछि?’’ ‘‘किछु अछि; सभ नहि।’’ मालती कहलथिन, ‘‘अपूर्ण जानकारी पर न त अपनेकेँ निर्दोष घोषित करू, न दोसरा पर आरोप लगाउ। जे सत्य अछि ओकरा लिखि राखू।’’

किरण पुछलथिन, ‘‘जँ मालिक सभ दोष हमरा माथपर राखि दैत छथि?’’ मालती उत्तर देलथिन, ‘‘तँ कागज, अधिकारक सीमा, निर्णयक स्रोत आ प्रत्येक हस्ताक्षरक परिस्थिति जाँचल जाएत। अहाँक गलती भएल हो तँ ओकर उत्तरदायित्व सेहो अहाँकेँ लेब पड़त। मुदा डरि कऽ किछु नष्ट करब वा झूठ बयान देब स्थिति खराब करत।’’ किरण देरि बाद प्रश्न कएलथिन, ‘‘हमरा पुलिससँ बात करबाक चाही?’’ ‘‘जँ जाँचमे सम्बन्धित जानकारी अछि, तँ कानूनक अनुसार सहयोग करू। लिखित तथ्य सम्हारू; बयान देबासँ पहिने दस्तावेज ठीकसँ पढ़ू।’’ ई सरल सलाह सुनि किरण बुझलीह जे बचबाक बाट कोनो गुप्त सौदा नहि, अपन कएल काजक सही हिसाब दऽ सकब अछि।

घर पहुँचलथिन तँ दुआरिपर दिनेशक पुरान जूता नहि छल। जे खूँटीपर ओ अपन झोरा टाँगैत छलाह, ओ खाली रहि गेल छल। किरण बत्ती जरौलथिन। रसोईक डिब्बामे चाउर कम छल; ओ कतेक दिनसँ घरक हिसाब नहि देखलनि, से सोचि शर्म भेलनि। प्रेमक नामपर बाहर बिताओल साँझसभकेँ याद कएलथिन। दिनेशक उपेक्षा कएने छलीह, अपन घरक सहज विश्वास तोड़ने छलीह। एहि सचसँ बचबाक लेल रतनक धमकी पर्याप्त बहाना

नहि बनि सकैत छल। ओ दिनेशकेँ माँगल कागजक छायाप्रति पठौलथिन आ लिखलथिन, ‘‘जँ कोनो पन्ना छूटल हो तँ बताउ। हम ओकरा सेहो जुटाएब।’’

राति विभाक फोन आएल। दू स्त्रीक बीचक सम्बन्ध आब पुरान आ नब अपमानसँ भरल छल। विभा सीधा पुछलथिन, ‘‘हमर नामपर भेल भुगतानक मूल स्वीकृति कहाँ अछि?’’ किरण उत्तर देलथिन, ‘‘किछु कागज कार्यालयमे अछि। अहाँक नामक भुगतानमे कतय हमर हस्ताक्षर अछि, तकर सूची बना रहल छी।’’ विभा कहलीह, ‘‘हमरा अहाँक निजी पछतावा नहि, कागज चाही।’’ ‘‘बुझैत छी,’’ किरण कहलीह। ‘‘मुदा जँ सूचीमे कोनो नाम बादमे जोड़ल गेल हो तँ से सेहो बतायब।’’ विभा किछु क्षण चुप रहलीह। ‘‘मूल कागज सुरक्षित राखू। हम अपन वकीलसँ बात करब।’’ फोन समाप्त भेल।

बिछौनापर बैसि किरण अपन डायरीक दू पन्ना खोललथिन। पहिलपर लिखलथिन—जे कागज पर हस्ताक्षर केलहुँ। दोसरपर—जकर निर्णय हमरा बिना भेल। दुनू सूची एखन अपूर्ण छल। रतनक एकटा नब सन्देश आएल—‘‘जँ सहयोग करब तँ सभ सम्हरि जाएत।’’ किरण उत्तर नहि देलथिन। ओ फोनक पर्दा बन्द कऽ देलथिन। भोरमे कार्यालयसँ किछु अभिलेखक वैध प्रति माँगबाक आ अधिवक्ता मार्फत जाँचक अधिकारीकेँ अपन उपलब्ध जानकारी देबाक निश्चय कएलथिन। भय समाप्त नहि भेल छल। मुदा ओहि राति पहिल बेर किरण भयक अनुसार नहि, तथ्यक अनुसार अगिला दिनक काज निश्चित केलथिन।

अध्याय ४१ : विभाक निर्णय

विभा बिहान बैंकक शाखामे गेलीह तँ हाथमे पुरान खाताक पोथी, पहचानपत्र आ दूटा आवेदन छल। घरसँ निकलैत समय ओ नौकरानीकेँ कहलथिन जे रतन पुछथि तँ केवल बैंक गेल होयबाक बात कहि देथिन। बात नुकेबाक इच्छा नहि छलनि, मुदा अपन आर्थिक कागजक विषयमे फेर बहस करबाक शक्ति ओहि भोर नहि छलनि। शाखाक बाहर आब दोसर लोकक जकाँ पाँतिमे ठाढ़ भऽ गेलीह। ओहि पाँतिमे वृद्ध किसान छलाह, छात्रवृत्तिक धन बुझय आएल छात्र छल, आ एकटा महिला अपन छोट बच्चाकेँ गोदमे लेने पावती भरि रहल छलीह। विभा एतेक वर्षमे बहुत कम बेर स्वयं बैंकक एहि पाँतिमे ठाढ़ भेल छलीह।

शाखा-प्रबन्धक ओहि नकलसभक एक भाग पहिनेसँ तैयार रखने छलाह। दूटा भुगतान हुनक संयुक्त खाते सँ भेल छल, मुदा अनुरोधक आरम्भिक विवरण ककरा द्वारा भरल गेल, से अलग देखबाक आवश्यकता छल। प्रबन्धक कहला, ‘‘एहि पर ककर हस्ताक्षर अछि, ओकर परीक्षण अहाँ स्वयं करू। जँ विवाद अछि तँ लिखित रूपेँ सूचित करू। बैंक नियमक अनुसार पड़ताल करत।’’ विभा पहिल पन्ना देखलथिन। एकटा हस्ताक्षर हुनके जकाँ छल, मुदा तारीख ओहि दिनक छल जहिया ओ सुमित्राक घरमे छलीह। दोसर पन्नापर हस्ताक्षर स्पष्ट नहि छल। ओ पन्ना अपन थैलीमे रखलथिन आ कहलथिन, ‘‘हम कोनो निष्कर्ष एखन नहि निकालब। ई बताउ, मूल अनुमति आ प्राप्तकर्ताक विवरण कोना मिलत?’’

बैंकसँ बाहर निकलैत हुनका अपन विवाहक पहिल वर्षक स्मरण भेल। तखन रतनक कारोबार छोट छल; दूकानक खाता दुनू मिलि देखैत छलाह। सायंकाल रतन टका गनैत छलाह आ विभा कापीमे बिक्रीक हिसाब लिखैत छलीह। घरमे धन कम छल, मुदा कोन सामान उधार आएल आ कोन देनदारी रहि गेल, दुनूकेँ पता रहैत छल। कारोबार बढ़लाक बाद रतन कहलनि—‘‘अहाँ घर देखू, बाहरी लेखा हम सम्हारि लेब।’’ ओ अपन समय

परिवार, सम्बन्धी आ सामाजिक काजमे लगौने छलीह। कखनो प्रश्न नहि उठलनि जे अपन हस्ताक्षरक अर्थ बुझबाक अधिकार ओ धीरे-धीरे दोसराक हाथमे दऽ रहल छलीह।

ओ सुमित्राक घर पहुँचलथिन। बहिन बिना अधिक प्रश्न कएल चाय रखलथिन। विभा नकल पसारि कहलथिन, ‘‘एकर तिथि हमर यात्राक दिनक अछि। हमरा नीकसँ याद अछि।’’ सुमित्रा कहलथिन, ‘‘तिथि याद रहब उपयोगी अछि; मुदा यात्रा कहाँ भेल, ओकर प्रमाण चाही। टिकट, औषधिक पावती, फोटो—जे किछु अछि।’’ विभा सोचलथिन जे ओहि दिन सुमित्राक बेटीक विद्यालयक कार्यक्रम छल। तस्वीर खिचाओल गेल छल, समय सेहो मोबाइलमे रहत। बहिन फोन खोलि तस्वीर देखौलथिन। विभा हतप्रभ भेलीह। विवाहमे भरोसा टूटबाक पीड़ासँ अलग ई पहिल ठोस बात छल जकर परीक्षण सम्भव छल।

‘‘अहाँकेँ रतनसँ अलग होयबाक अछि?’’ सुमित्रा पुछलथिन। विभा उत्तर देलथिन, ‘‘एखन ई प्रश्नक उत्तर नहि भेटल अछि। हम एतबा तय कएलहुँ जे अपन नामपर भेल काजक साँच बुझब। हुनक संग रहब कि नहि, ई निर्णय केओ हमरा भय देखा कऽ नहि कराओत।’’ सुमित्रा सहमत भेलीह। ‘‘तँ पहिने स्वतन्त्र सलाह लिअ। कागजक नकल अपना पास राखू, मूल जेकर अछि ओतहि सुरक्षित रहय।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘लोक की कहत?’’ बहिन उत्तर देलथिन, ‘‘लोक रतनक पुरस्कारक दिन सेहो कहल छल, आब जाँचक दिनो कहत। अहाँक धन, हस्ताक्षर आ जीवनक दायित्व लोक नहि उठाओत।’’

दुपहरमे विभा अधिवक्ता मालती सिन्हासँ भेंट कएलथिन। ओ नहि जनैत छलीह जे किरण सेहो ओतय परामर्श लेल आएल छलीह। मालतीक समक्ष विभा दुनू भुगतानक नकल, रतनक कथन आ बैंकसँ भेटल उत्तर रखलथिन। मालती पुछलथिन, ‘‘कागजक प्रतिलिपि लैत समय कोनो विवाद भेल?’’ ‘‘नहि।’’ ‘‘अहाँ अपना नामक स्वीकृति वास्तवमे कखन-कखन देलहुँ, ओकर अलग सूची बनाउ। जकरा नहि देलहुँ, ओकरा विवादित कहि बैंककेँ सूचित करू।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘जँ बैंकक खाते सँ अवैध धन गेल होयत तँ हम जिम्मेवार मानल जाएब?’’ मालती उत्तर देलथिन, ‘‘नाम खातेपर अछि, एहि कारणेँ प्रश्न उठि सकैत अछि। मुदा प्रत्येक लेनदेनमे जानकारी, अनुमति आ भूमिका देखल जाएत। अपन पक्ष तथ्यसहित राखू।’’

मालती फेर पुछलथिन, ‘‘अहाँकेँ घरमे ककरो सँ हानि पहुँचबाक भय अछि?’’ विभा थोड़े रुकि कहलीह, ‘‘रतन एखन धरि हमरा हाथ नहि उठौने छथि। मुदा प्रश्न उठेलापर अपमान करैत छथि, कहैत छथि जे पत्नीकेँ कारोबार बुझबाक काज नहि।’’ ‘‘अपमानकेँ सामान्य बात मानि सहैत रहब आवश्यक नहि,’’ मालती कहलीह। ‘‘अहाँ चाही तँ अलग ठाम रहबाक व्यवस्था सोचि सकैत छी; सम्बन्धक निर्णय जल्दबाजीमे नहि करब। आर्थिक दस्तावेजक सुरक्षा आ निजी सुरक्षाक प्रश्न दोसर अछि।’’ विभा पहिल बेर अपन परिस्थिति केओ एतेक साफ ढङ्गसँ अलग-अलग बुझबैत सुनलीह।

घर घुरलाक बाद रतन भोजनक कोठरीमे बैसल छलाह। ओ पुछलनि, ‘‘बैंक गेल छलहुँ?’’ विभा कहलथिन, ‘‘हँ।’’ ‘‘हमरा कहि देतहुँ तँ लोक भेजि देतहुँ।’’ ‘‘ई हमरा स्वयं करबाक काज छल,’’ विभा उत्तर देलथिन। रतन घड़ी दिस तकलनि। ‘‘सुनू, कार्यालयपर बहुत दबाव अछि। एहि समय घरक बात बाहर लेब ठीक नहि।’’ विभा कहलीह, ‘‘घरक बात बाहर तखन गेल जखन हमरा नामसँ भुगतान कार्यालयमे भेल।’’ रतन कहलनि, ‘‘बैंकक कर्मचारी क्या सभ ठीक बुझैत अछि? अहाँकेँ उकसा रहल अछि।’’ विभा अपन स्वर स्थिर रखलथिन। ‘‘हम कर्मचारीक राय नहि, लिखित नकल लेने छी।’’

रतन कागज देखि पहिल पन्नाक नाम चिन्हबाक प्रयास कएलनि। ‘‘ई वीरेन्द्रक निर्माण सेवाक अग्रिम अछि।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘हम ओकरा स्वीकृति कखन देलहुँ?’’ रतन उत्तर देलनि, ‘‘व्यवहारमे कतेको भुगतान चलैत रहैत अछि। अहाँकेँ प्रत्येक समय बताओल नहि जाइत।’’ ‘‘तँ हमर नाम किएक लागल?’’ विभा पुछलथिन। रतन मौन भऽ गेलाह। ई मौन स्वीकारोक्ति नहि छल, मुदा विभाक प्रश्नक उत्तर सेहो नहि छल। ओ कहलथिन, ‘‘हम विवादित लेनदेनक सूचना बैंककेँ लिखित देब। जँ ई सही अछि, तँ कागजसँ स्पष्ट भऽ जायत।’’ रतन उठि खिड़की लग चलि गेलाह।

थोड़े बेर बाद रतन कहला, ‘‘किरण सभ बात बिगाड़ि रहल छथि। ओ हुनक काज छल। हमरा जे सुनाएल गेल, ओहि पर हस्ताक्षर केलहुँ।’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘हम अपन नामक प्रश्न पुछैत छी; अहाँ किरणक नाम लैत छी। किएक?’’ रतन चिढ़ि कहला, ‘‘अहाँ सभकेँ एकजुट कऽ हमरा बदनाम करबाक इच्छा अछि ने?’’ विभा कहलीह, ‘‘कियो

बदनामीक निश्चय नहि केने अछि। हम केवल ई कहैत छी जे जँ हमर नामक उपयोग भेल अछि तँ जानकारी चाही।'' रतन एक बेर हुनका रोकबाक प्रयास कएलनि, मुदा विभा कागज समेटि अपन कोठरीमे चलि गेलीह।

ओहि राति घरक पुरान नौकरानी फूलो देवी पुछलथिन, ''मालकिन, संझिया भोजन अलग बनाबी?'' विभा कहलीह, ''जे सभ दिन बनैत अछि, से बनाउ। घरक झगड़ाक बोझ अहाँक काजपर नहि पड़बाक चाही।'' फूलो चुपचाप आटा गूँथय लगलीह। विभा हुनका पुछलथिन जे बेटी स्कूल जाइत अछि कि नहि। फूलो कहलीह, ''एखन जा रहल अछि। पहिले हमर पति साँझ पियैत छलाह, तँ कतेक बेर रोटी लेल टका नहि बचैत छल। शराब बन्द भेलाक पहिल साल घरमे झगड़ा घटल। आब गुपचुप महँग शराब भेटैत अछि, फेर डर लागैत अछि।'' विभा हुनक बात ध्यानसँ सुनलथिन। नगरक प्रतिष्ठित घर आ फूलोक छोट आँगन अलग छल, मुदा घरमे धनक उपयोग आ विश्वासक प्रश्न दुनू ठाम अलग रूपमे उपस्थित छल। ओहि साँझ अनुष्का पढ़ाइ सँ उठि मायक लग एलीह। ''अहाँ किछु दिन मौसीक घर रहब?'' ओ पुछलथिन। विभा कहलीह, ''सम्भव अछि। मुदा तोहर पढ़ाइ आ तोहर इच्छा बुझने बिना ठाम नहि बदलब।'' अनुष्का कनेक देरी सोचि कहलीह, ''हम परीक्षा एतहि देबय चाहैत छी। जँ मौसीक घरसँ विद्यालय जा सकब, तँ अहाँक संग रहब।'' विभा ओकरा आश्वासन देलथिन जे विद्यालयक बाट आ समय पहिने जाँचि लेतीह।

फूलो फेर कहलीह, ''मालकिन, अहाँ नोर नहि बहाउ।'' विभा हलुक मुस्की देलथिन। ''नोर बहाओल गलत नहि, फूलो। मुदा नोर बहबासँ कागज अपने ठीक नहि होयत।'' फूलो थारी उठौलथिन। विभा सोचलथिन जे घरक महिलासभ अनेक बेर अपन अधिकारकेँ घरक शान्तिक विरुद्ध मानि लैत छथि। ओ ककरो लागि उदाहरण बनबाक निश्चय नहि केने छलीह; केवल अपन सम्बन्धमे जे दस्तावेज छल, ओकरा बुझबाक काज करैत छलीह। एतेक छोट निर्णयमे सेहो समाजक घेराबन्दी अनुभव होइत छल।

विभा बैंकक दरखास्तक पावती बारम्बार देखैत छलीह। कागजमे साधारण अङ्क आ तारीख लिखल छल, मुदा हुनक लेल ई पहिल बेर अपन आपत्तिक आधिकारिक अस्तित्व छल। एतेक वर्ष ओ घरक कठिनाइमे रतनक निर्णयक प्रतीक्षा करैत छलीह। एखन कोनो

अधिकारी हुनक आवेदन प्राप्त कएल अछि, तकर मतलब तुरन्त न्याय नहि, मुदा अगिला प्रश्न पुछबाक दरबज्जा खुलल अछि। ओ सुमित्राकेँ कहलथिन, ‘‘हमरा डर अछि जे ई सभ कऽ हम घरक सुखक शेष अंशो नष्ट कऽ देब।’’ सुमित्रा उत्तर देलथिन, ‘‘जे सुख केवल चुप रहला पर बचैत अछि, ओकर कीमत सेहो बुझब आवश्यक अछि।’’

दोपहरक बाद पुरान परिचिता उषा भेटबय अएलीह। उषाक परिवार रतनक कारोबारसँ वर्षसभसँ परिचित छल। ओ कहलीह, ‘‘सभ गाममे बात चलि रहल अछि। अहाँ कोनो सलाहकारक कहने अत्यधिक कठोर निर्णय नहि लिअ।’’ विभा हुनका चाय देलथिन, फेर पुछलथिन, ‘‘जँ अहाँक नामसँ धन गेल रहय आ अहाँकेँ पता नहि होय, तँ की करब?’’ उषा हिचकिचैलीह। ‘‘पहिने पति सँ पुछब।’’ ‘‘हम पुछने छी,’’ विभा कहलीह। ‘‘उत्तरक बदला दोसरा नामक चर्चा भेटल। एखन लिखित हिसाब चाही।’’ उषा फेर किछु नहि कहलीह। विभाकेँ हुनक चुप्पी अपमान नहि लगल; बहुत लोक प्रश्नक वास्तविक आकार पहिल बेर सुनैत छल।

घरक भीतरी कोठरीमे एकटा पुरान सन्दूक छल, जकर भीतर विवाहक निमन्त्रण-पत्र, खाता-कापी आ किछु पुरान पत्र राखल छल। विभा ओहि कापीमे रतनक आरम्भिक कारोबारक हिसाब देखलथिन। तखन दू रुपैया बाँचि गेलापर रतन हँसि कहैत छलाह जे ‘अहाँ हमर सभसँ नीक लेखापाल छी।’ एहि स्मरणसँ विभाक मन नरम पड़ल, मुदा ओ कापी बन्द नहि कएलथिन। अपन जीवनक नीक समयकेँ असत्य मानि हटाओल नहि जा सकैत छल। आ नीक स्मृतिक कारण आजुक सन्दिग्ध कागजकेँ सत्य मानब सेहो सम्भव नहि। प्रेम आ प्रमाणक एहि अन्तरकेँ ओ अपन भीतर टिकाए रखबाक प्रयास कएलथिन।

एकटा राति रतनक कार्यालयक पुरान कर्मचारी घरक बाहर ठाढ़ भेटल। ओ अपन नाम बतबैत कहलक, ‘‘मालकिन, मालिकक विरोधमे हम नहि छी। मुदा किछु लोक हमरासँ कहैत अछि जे अहाँक हस्ताक्षरक बात सभकेँ बताउ। हम किछु नहि जनैत छी।’’ विभा कहलीह, ‘‘अहाँ जँ किछु नहि जनैत छी तँ कोनो पक्षक लेल बयान नहि दिअ। जे दस्तावेज अहाँक जिम्मामे अछि, ओकरा नियमक अनुसार सम्हारू।’’ कर्मचारी पुछलक, ‘‘हमर नोकरी बचत?’’ विभा ई वचन नहि देलीह जे हुनक हाथमे नहि छल। केवल कहलीह, ‘‘जँ

दबाव पड़ैत अछि, लिखित सूचना आ कानूनी सलाह लिअ।'' ओकर धन्यवाद सुनि विभाकेँ अपन असहायताक गहिराइ बुझायल।

सुमित्राक लग जाएबाक तैयारी करैत विभा फूलोकेँ कहलथिन जे घरक सामान्य खर्चक टका पहिलेक व्यवस्था अनुसार देल जाएत। फूलो पुछलथिन, ''अहाँ नहि रहब तँ हमर मासिक वेतनक की होयत?'' विभा कहलीह, ''हम स्पष्ट लिखि देब; जे काम अहाँ करैत छी ओकर भुगतान रोकल नहि जएबाक चाही।'' फूलो सभ बात नहि बुझलीह, मुदा मालिकिनक अनुपस्थितिमे अपन रोजगारक चिन्ता हुनका उचित छल। विभा ओहि राति पहिल बेर सोचलथिन जे बड़का घरक निजी विवादक छाया ओकर रसोईमे काज करयवाली स्त्रीक छोट कमाइ धरि पहुँचि सकैत अछि। ओ एहि भारकेँ अनदेखी नहि करय चाहैत छलीह।

अगिला दिन बैंकमे विभाक लिखित आपत्ति जमा भेल। पावतीक नकल ओ थैलीमे रखलथिन। अधिकारी कहलनि जे विवादित हस्ताक्षरक परीक्षण आ खाताक सुरक्षाक सम्बन्धमे बैंक अपन प्रक्रिया चलाओत। विभा एहि प्रक्रियाक परिणाम एखन नहि जनैत छलीह। ओ धन ककरा भेटल, किएक भेजल गेल, आ ओकरा कतेक जानकारी छल, एहि सभ प्रश्नक उत्तर अलग-अलग चाहैत छलीह। बैंकसँ निकलि ओ थानाक दिस गेलीह। बहुत वर्ष पहिने ओहि बाटसँ धार्मिक आयोजनमे गेल छलीह; आइ अपन नामक उपयोगक जानकारी देबाक लेल जाइत छलीह। बैंकमे आवेदन देलाक समय कर्मचारी हुनका ओकर प्रति सेहो रखने देलक, जाहिसँ आगाँ कोनो प्रश्न उठला पर कहि सकथि जे अपन आपत्ति कोन दिन दर्ज कएने छलीह। एहि छोट सावधानीसँ हुनका अपन बातक आत्मसम्मानक ठोस आधार भेटल।

निरीक्षक सुजाता कुमारी हुनका सुनलथिन। विभा कहलीह, ''हम रतन सिंहक पत्नी छी। ई नाम सँ एतय किछु लाभ नहि चाही। अपन खाताक दू भुगतानक प्रति देबय अएल छी। एकटा हस्ताक्षरक तिथि हमरा उपस्थितिक संग मेल नहि खाइत अछि।'' सुजाता सबटा कागजक सूची बनौलथिन। ''अहाँ जे स्वयं जनैत छी, ओतबे लिखू। पतिक कारोबारक विषयमे अनुमान न जोड़ू।'' विभा सहमत भेलीह। ओ ई सेहो स्पष्ट कएलथिन

जे कोनो भुगतानकेँ अपराध सिद्ध नहि करैत छलीह; ओकरा जाँच योग्य कहैत छलीह। पुलिस प्राप्ति-पावती देलक। विभाक हाथसँ कागज गेल, मुदा हुनक मनक बोझ तत्काल नहि घटल।

बाहर रेखा मण्डल ठाढ़ छलीह। अपन दादाक कागजक सम्बन्धमे फेर बजाओल गेल छलनि। विभा पहिने हुनका नरेशक शोकसभामे देखल छलीह। आँखि मिलला पर रेखा हलुक नमस्कार केलथिन। विभा आगाँ बढ़ि पुछलथिन, ‘‘पिताजी कोना छथि?’’ रेखा कहलीह, ‘‘औषधि चलैत अछि। दोकानक बकाया हिसाब देखबाक काज सेहो अछि।’’ विभा कहलीह, ‘‘नरेशजीक मृत्यु पर जे दुःख अछि, ओकरा लेल शब्द नहि भेटैत अछि।’’ रेखा चुप रहलीह। किछु क्षणक बाद कहलीह, ‘‘हमरा न्याय चाही। मुदा झूठ दोषारोपणसँ नहि। दादाक नामपर जे कहत, ओकर प्रमाण रहय।’’ विभाकेँ बुझायल जे रेखाक पीड़ा हुनक अपन अपमानसँ बहुत पैघ अछि; दुनूक बीच कियो सहज बराबरी नहि बनि सकैत अछि।

थानासँ घुरैत समय विभाकेँ समाचार-पत्रक प्रतिनिधि पुछलक जे रतनक विरुद्ध ओ की कहतीह। विभा रुकि कहलीह, ‘‘हम जाँचक अधिकारीकेँ अपन दस्तावेज देने छी। सार्वजनिक आरोप नहि करब।’’ प्रतिनिधि फेर पुछलक, ‘‘तँ अहाँ पतिक समर्थन करैत छी?’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘सत्यक पक्षमे ठाढ़ होयब ककरो अन्ध समर्थन वा अन्ध विरोध नहि अछि।’’ ओ गाड़ीमे बैसि गेलीह। ई उत्तर समाचारक पैघ शीर्षक नहि बनल, मुदा विभाकेँ अपन मोन स्पष्ट सुनाइत छल।

साँझ सुमित्रा घर अएलीह। बहिन पुछलथिन, ‘‘किछु दिन हमर लग रहब?’’ विभा घरक दीवारसभ दिस तकलथिन। एहि घरमे विवाहक पहिल पूजा भेल छल, कतेको प्रियजनक स्वागत भेल छल। तखनहुँ एखन ओतय रहब केवल स्मृतिक कारण सम्भव नहि लगैत छलनि। ‘‘हम किछु दिन तोहर लग रहब,’’ ओ कहलीह, ‘‘मुदा अपनो किछु वस्तु आ कागज बिना नष्ट कएल राखब। घर छोड़ब निर्णयक अन्त नहि, विचार करबाक ठाम बदलनाइ अछि।’’ सुमित्रा कहलीह, ‘‘जतबा समय चाही, रह।’’ विभा अपन आवश्यक कपड़ा, औषधि आ कागजक वैध नकल समेटि थैली बनौलथिन।

रतन घुरलाह तँ विभा हुनका सोझाँ कहलथिन, ‘‘हम किछु दिन सुमित्राक घर रहब। बैंक आ पुलिसमे जे जानकारी देलहुँ, ओ आधिकारिक अछि। अहाँकेँ उचित लगय तँ अपन कागजक उत्तर ओतहि दिअ।’’ रतनक चेहरापर पहिले आश्चर्य, फेर क्रोध आएल। ‘‘समाजमे हमर की इज्जत रहत?’’ विभा प्रश्न घुरौलथिन, ‘‘आ हमर नामक की अर्थ रहत जँ हम अपन हस्ताक्षर सेहो नहि बुझि सकी?’’ रतन किछु कहबाक प्रयत्न कएलनि, मुदा विभा बहस नहि बढ़ौलथिन। ओ घरक चाभी टेबुलपर नहि छोड़लथिन—अधिकारक प्रश्नक समाधान बिना अपन घरसँ सम्पूर्ण सम्बन्ध समाप्त करब हुनक निर्णय नहि छल। केवल सुमित्राक संग बाहर निकलि गेलीह।

गाड़ी चलल तँ फाटकक दू पार पुरान गुलमोहरक पात हिलि रहल छल। विभा काँचसँ घर दिस तकलथिन। ओ रतनक प्रति क्रोध, अपन पुरान प्रेम आ असुरक्षाकेँ एक्के बेर अनुभव करैत छलीह। ककरो विरुद्ध दोष सिद्ध करबाक शक्ति हुनका लग नहि छल; अपन बारेमे सत्य कहबाक अधिकार छल। सुमित्रा पुछलथिन, ‘‘आब किछु भोजन करबह?’’ विभा कहलीह, ‘‘हँ। भोरसँ केवल चाय पीलहुँ।’’ ई छोट उत्तर हुनका नब लागल। दुःखक बीच जीबाक दैनिक काज चलैत रहैत अछि। ओ तय कएलथिन जे आगाँ जेहो होय, अपन निर्णय डर वा लोकलाजसँ नहि, देखल तथ्य आ अपन सम्मानक आधारपर करतीह।

अध्याय ४२ : सीमापारक सूत्र

गोदामसँ भेटल श्रमिक-पञ्जीक पन्ना सुजाता कुमारीक मेजपर अलग-अलग क्रममे राखल छल। एकटा सूचीमे ‘बाहरी नियुक्ति’ लिखल छल, दोसरमे ‘निर्माण कार्य’, तेसरमे केवल नम्बर आ तिथि। अरुण कुमार एकटा नामपर आङुर रखलनि। ‘‘एहि युवकक नोकरीक आवेदन नवगढ़मे देल गेल, मुदा मजदूरीक पावती सीमाक ओहि पारक एकटा संस्थाक नामपर अछि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘पावतीमे प्राप्तकर्ताक हस्ताक्षर अछि?’’ ‘‘नहि। केवल संस्था द्वारा भुगतानक उल्लेख।’’ ‘‘तखन मजदूरी ओकरा भेटल, एहन नहि लिखब,’’ सुजाता कहलीह। ‘‘हमरा पहिने ई बुझबाक अछि जे लोक स्वयं गेलाह, ककर माध्यमसँ गेलाह, आ जे वचन देल गेल छल से पूरा भेल कि नहि।’’

दू दिनसँ गोदामक जाँचक समाचार शहरमे घुमि रहल छल। कियो कहैत छल जे सभ पेटीमे शराब भेटल; कियो कहैत छल जे सभ मजदूर बेचि देल गेलाह। दुनू बात एक्के घोषणामे कहि देनाइ सरल छल, मुदा पुलिसकेँ पृथक् तथ्य चाही छल। आबकारी विभाग अपन नमूनाक परीक्षण करैत छल। श्रम-विभाग बाँकी मजदूरीक आवेदन लेब शुरू केने छल। नरेशक हत्या अलग अनुसन्धानमे छल, आ पूनमक खोज लेल दोसर प्रदेश आ सीमा लगक कार्यालयसँ सम्पर्क आवश्यक भऽ रहल छल। सुजाता फाइलसभक ऊपर अलग-अलग रंगक चिट लगौलथिन। काम बढ़ि रहल छल, मुदा प्रत्येक प्रश्नक सही नाम रखनाइ आवश्यक छल।

अरुण एकटा खाताक प्रति देखौलनि। ‘‘वीरेन्द्र निर्माण सेवाक नामपर जे भुगतान गेल, ओकर बाद किछु धन बाहरी भर्ती कार्यालयसँ जोड़ल अछि। मुदा शराबक खेप लेल जे भुगतान अछि, ओकर लेखा दोसर मदमे अछि।’’ सुजाता कहलथिन, ‘‘दूनू शाखामे एक्के लोकक नाम भेटलासँ कारोबार एक्के होयत, एहन जरूरी नहि। हमर विषय मनुष्य आ ओकर श्रम अछि।’’ ओ पञ्जीक दू नाम घेरलथिन—रीता महतो आ सुरेश मुखिया। दुनू

गेलाक बाद घरक लोकसँ नियमित सम्पर्क नहि केने छलाह। हुनक परिजन थाना आबि शिकायत देने छलाह। पूनमक नाम एहि सूचीमे सीधे नहि छल; मुदा पूनम जे आवेदन देल छलीह, तकर क्रमाङ्क एकटा बाहरी नियुक्ति-रसीदक अंशसँ मेल खाइत छल।

सिपाही नन्दू सीमा लगक गामसँ आएल एकटा युवककेँ भीतर अनलक। ओकर नाम इमरान अली छल; ओ गोदाममे मजदूरी करैत छल आ जाँचक दिन अपन बकाया भुगतानक आवेदन देने छल। आइ ओ अपन संगीक विषयमे बताबय आएल छल। ‘‘हमरा नाम भर्तीमे राखल छल, मुदा हम गेलहुँ नहि,’’ ओ कहलक। ‘‘हमर संगी रवि गेल छल। कहैत छल जे भोजन आ रहबाक व्यवस्था मिलत। पहिल सप्ताह फोन आएल। तकर बाद दू मास धरि कुछ नहि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘अहाँ स्वयं ओकरा विदा करबय गेल छलहुँ?’’ ‘‘नहि। गामक चौराहापर बस पकड़ने छल।’’ ‘‘रविक परिवारक सम्पर्क अछि?’’ इमरान फोनक नम्बर दऽ देलक।

रविक माय, शान्ति देवी, दोपहरिया थानामे अएलीह। हाथमे बेटाक दूटा तस्वीर आ एकटा पुरान रसीद छलनि। रसीदक ऊपर लिखल छल—प्रशिक्षण आ आवासक अग्रिम। ‘‘बेटा कहैत छल जे चारि मासमे ऋण चुका देत,’’ ओ बतौलथिन। ‘‘हम बकरी बेचि टका जोड़ने रही। आब फोन कएलापर कियो कहैत अछि जे रवि दोसर काजमे गेल, कियो कहैत अछि घर घुरि गेल। घर तँ नहि आएल।’’ सुजाता फोटो ग्रहण करैत पावती देलथिन। ‘‘अहाँकेँ जे जानकारी भेटत, तिथि सहित देब। बिना पुष्टि कएल कोनो खबरि नहि देब।’’ शान्ति कहलीह, ‘‘बस एतबा जनैत रही जे हमर बेटा कतय अछि।’’

थानाक बाहर अभय पत्रकारक परिचय देखबैत जानकारी माँगय आएलाह। सुजाता कहलथिन, ‘‘जाँच चलि रहल अछि। आधिकारिक रूपेँ एतबा कहि सकैत छी जे भर्ती अभिलेखक सत्यापन लेल सम्बन्धित विभागसँ सहयोग माँगल गेल अछि। कोनो पीड़ितक वर्तमान ठाम वा पहिचान एखन प्रकाशित नहि होयबाक चाही।’’ अभय पुछलनि, ‘‘शराबक अवैध कारोबार आ मजदूरक नियुक्तिक पाछाँ एक्के समूह अछि?’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘किछु आर्थिक आ कार्यालयी सम्पर्क जाँचमे अछि। प्रमाण जुटय दियौ।’’ अभय नोटबुक

बन्द कएलनि। तेजी सँ प्रकाशित समाचारक लाभ ओ बुझैत छलाह, मुदा पूनमक परिवारक प्रतीक्षा सेहो हुनका मोन पड़ैत छल।

अभय थानासँ निकलि माधवी देवीक गलीमे गेलाह। ओहि गलीमे दिनभरि घरसभमे काज कएनिहार महिला साँझ घुरैत छलीह। कियो हाथमे तरकारीक झोरा, कियो बच्चाक पाठशालाक बस्ता। माधवी हुनका चिन्हलथिन। ‘‘पत्रकार बाबू, फेर शराबक खबरि लिखब?’’ अभय कहला, ‘‘लोकक घरमे की बदलल, से बुझबाक अछि।’’ माधवी चबुतरापर बैसि कहलीह, ‘‘शुरू-शुरू मे हमरा सभकेँ राहत भेल। हमर आदमी पहिने कमाइ नशामे उड़ा दैत छल। पाबन्दी भेल तँ कहलक—‘कोना छैँ, कने मोन तेहन नै, मुदा जेबीमे आब टका रहैए।’ हमरो आँखिसँ नोर निकलि गेल छल, मुदा एहि बेर खुशीक छल।’’

माधवी आगाँ कहलीह, ‘‘एक वर्ष बीतिते अन्हारमे बोतल पहुँचे लागल। दाम बेसी, डर बेसी। गरीबसँ जे टका बचल छल, फेर जाइत रहल। किछु पुरुष नशा छोड़ने रहि गेलाह—ओ सभक घर नीक भेल। मुदा जे फेर पिबय लगलाह, हुनक घरमे कर्ज आ झगड़ा दोसर रूपमे घुरि आएल।’’ बगलमे बैसल फूलमती कहलीह, ‘‘पहिने दोकानक ठाम पता छल; आब अफवाहक ठाम पता नहि। पुलिसकेँ कोना कहब, जँ कोनो भोर घरपर धमकी आबि जाए?’’ अभय दुनूक कथन सावधानीसँ लिखलनि। ओहि अनुभवकेँ पूरा प्रदेशक एकमात्र सच घोषित करबाक हुनक इच्छा नहि छल; ई गलीक लोकक जील परिस्थिति छल।

ओहि बीच एकटा छोट लड़का भागैत अएल। ‘‘माय, बाबा फेर उधार मँगैत छथि।’’ माधवीक चेहरा उतरि गेल। ‘‘ककरा सँ?’’ ‘‘पानक दोकानपर।’’ ओ उठि ठाढ़ भेलीह। अभय पुछबाक बदला अपन नोटबुक समेटलनि। माधवी कहलीह, ‘‘एहि बातकेँ समाचारमे नामसँ नहि लिखिह। हमर बच्चा स्कूल जाएत, लोक तकरा चिढ़ाओत।’’ अभय आश्वासन देलनि जे हुनक अनुमति बिना पहचान सार्वजनिक नहि करताह। सड़कपर अन्हार बढ़ैत छल। घरक भीतर आबि रहल संकट पर समाचार लिखब एक बात छल; ओहि संकटमे रहयवला लोकक सुरक्षा बनौने राखब दोसर।

दोसरा दिन सुजाता कार्यालयी आदेशक माध्यमसँ सीमा लगक सम्बन्धित पुलिस इकाई आ श्रम-सहायता केन्द्रकेँ आवेदन पठौलथिन। मामला दोसर देशधरि पहुँचबाक सम्भावना राखैत छल, तेँ औपचारिक समन्वय आवश्यक छल। पत्रमे पूनम सहित सन्दिग्ध रूपसँ भर्ती भेल लोकक पहचान सम्बन्धी विवरण गोपनीय रखल गेल। सुजाता सहायककेँ कहलीह, ‘‘जँ स्थानीय सम्पर्क केवल फोनपर कहि देत जे सभ कुशल अछि, तँ हम तकरा अन्तिम उत्तर नहि मानब। व्यक्तिक स्वतन्त्र बयान आ सुरक्षित सम्पर्कक व्यवस्था चाही।’’ सहायक स्वीकृति देलक।

सीमा लगक कार्यालयमे काम करैत महिला अधिकारी अर्चना झासँ सुजाताक आधिकारिक बातचीत भेल। अर्चना कहलथिन, ‘‘एतय किछु भर्ती दलाल पहिने नोकरीक भरोसा दैत छथि, फेर कामक ठाम बदलि जाइत अछि। किछु परिवार डरक कारण शिकायत नहि करैत अछि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘अहाँक कार्यालयमे नवगढ़क नामसँ कोनो पुरान निवेदन अछि?’’ अर्चना कहलथिन, ‘‘अछि, मुदा सभ अभिलेख एखन मिलान करब पड़त। एकटा नाम समान भेलासँ व्यक्ति समान नहि होइत।’’ सुजाता कहलीह, ‘‘हमरा खास कऽ पूनम यादव, रीता महतो आ रवि मुखियाक विषयमे पुष्टि चाही। जे नाम नहि भेटय, ओकरा खोजल बन्द नहि करब।’’

एहि जाँचक बीच वीरेन्द्र राय अपन वकीलक माध्यमसँ सूचना पठौलक जे गोदाम निर्माण सामग्रीक भण्डार छल आ ओकर नामपर कएल भुगतान नियमित कारोबारक हिस्सा छल। ओ अवैध शराब वा श्रमिक-तस्करीसँ सम्बन्ध अस्वीकार कएलक। पुलिस ओकर उत्तर अभिलेखमे राखलक। सुजाता कहलथिन, ‘‘प्रत्येक पक्षक कथन दर्ज होयत। जाँचक विरोध करब आ दोष सिद्ध होयब एक बात नहि।’’ मुदा आबकारी विभागक अधिकारी बतौलनि जे गोदामसँ लेल नमूनाक परीक्षणक प्रारम्भिक विवरण आबि गेल अछि; किछु सामग्री घोषित निर्माण-सामानसँ भिन्न अछि। अंतिम विधिक कार्रवाई सम्बन्धित नियम आ पूर्ण प्रतिवेदनक अनुसार होयत।

भानु प्रतापक नाम किछु भुगतानक पन्नामे सीधे नहि छल। मुदा सीमा लगक एकटा चौकीक रात्रि-पञ्जीक सम्बन्धमे प्रश्न उठल छल। एकटा गाड़ीक आवागमनक प्रविष्टि

अधूरी छल; कर्मचारी कहैत छल जे ओहि राति पुस्तक दोसर कोठरीमे छल। सुजाता सम्बन्धित वरिष्ठ अधिकारीकेँ लिखित सूचना देलथिन। पुलिसक भीतर भ्रष्टाचारक आशङ्काक जाँच लेल स्वतंत्र पर्यवेक्षण आवश्यक छल। ओ अपन सहकर्मी नन्दूकेँ कहलथिन, ‘‘बिना प्रमाण ककरो नाम दोषीसूचीमे नहि लिखब, मुदा वर्दी पहिरने व्यक्ति केवँ प्रश्नसँ मुक्त नहि रहत।’’ नन्दू पहिल बेर हुनका एतेक कठोर स्वरमे सुनलक।

एहि बीच नैनाकेँ पूनमक माय फोन कएलथिन। ‘‘कोनो खबरि अछि?’’ हुनक आवाजमे पहिनेक जकाँ अधीरता छल, मुदा आब थकान बेसी छल। नैना कहलीह, ‘‘सरकारी कार्यालयसभसँ जानकारी माँगल गेल अछि। पूनमक नामक पुष्टि एखन नहि भेल।’’ माय कहलीह, ‘‘हम अपन बेटीक किछु कपड़ा रखि देलहुँ। जँ अचानक घुरि आएत तँ बदलबाक कपड़ा चाही।’’ नैना उत्तर नहि पाबि सकलीह। ओ केवल कहलीह, ‘‘हम अहाँकेँ भुलल नहि छी।’’ फोन राखलाक बाद नैना अपन पुरान नियुक्तिपत्र देखलथिन। रतनक कार्यालय हुनक वेतन रोकेने छल; पूनमक घरक आशा सेहो ओहि संस्थाक कागजमे फँसल छल।

दुपहरमे अरुण सुजाताकेँ नब सूची देखौलनि। दू अलग भर्ती-पञ्जीमे एकटा छोट सङ्केत समान छल, मुदा नाम बदलल छल। ‘‘ई संकेतक अर्थ की?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘कियो कहैत अछि ठामक संक्षेप, कियो कहैत अछि रोजगार समूहक नम्बर,’’ अरुण उत्तर देलनि। ‘‘हम प्रमाणित जानकारी बिना निश्चय नहि करब।’’ सुजाता कहलीह, ‘‘अर्चनाकेँ केवल संकेत पठाउ। व्यक्तिक नाम आ परिवारक विवरण सुरक्षित माध्यमेँ अलग पठाओल जाए।’’ ई निर्णयसँ खोज तनिक धीमा होइत छल, मुदा गलत व्यक्तिक पहचानसँ पीड़ित आ परिवार दुनूकेँ हानि भऽ सकैत छल।

श्रम-विभागक कर्मचारी सीमा देवी एकटा छोट बैठक बजौने छलीह। गोदामक पाँच मजदूर, दू महिला आ एकटा किशोरक पिता ओतय बैसल छलाह। सीमा पुछलथिन, ‘‘आवेदन देबाक समय कोन वेतनक वचन देल गेल?’’ एक महिला कहलीह, ‘‘मासिक रकम कहल गेल छल, मुदा पहिल महीनामे भोजनक खर्च काटि लेल गेल।’’ दोसर मजदूर कहलक, ‘‘हमरा कहल गेल छल जे कागज बादमे बनत।’’ सीमा प्रत्येक उत्तरक संग समय

आ सम्बन्धित कागज पुछलथिन। जेकरा कागज नहि छल, हुनका हमरासँ शिकायत नहि हो सकत, एहन नहि कहलथिन। ओ प्रत्यक्ष देखल बात आ दोसरासँ सुनल बात अलग-अलग लिखलथिन।

बैठकक अन्तमे एकटा युवक पूछलक, ‘‘हमरा सभकेँ काम चाही। जँ एहि ठाम शिकायत करब तँ दोसर ठाम के राखत?’’ सीमा कहलीह, ‘‘काज चाहब आ अपन मजदूरी माँगब एक-दोसराक विरोधी नहि अछि। मुदा न्यायिक प्रक्रिया समय लऽ सकैत अछि। अहाँसभकेँ वैध रोजगारक सूचना सेहो देल जाएत।’’ युवक हँसलो नहि। ओकर घरमे पिताक दवाई आ बहिनक पढ़ाइ चलैत छल। जखन रोजक कमाइ निश्चय नहि होइत अछि, तखन उचित हकक लेल आवाज उठबो जोखिम लगैत अछि। सुजाताकेँ ओहि युवकक प्रश्न चन्दनक बयान याद दिअबैत छल—ऋणक दबावमे काजक साँच बुझबाक साहस कम पड़ि जाइत अछि।

अभय अपन समाचार लिखबाक पूर्व पूनमक गाम गेलाह। घरक दुआरिपर पूनमक माय पुरान कपड़ा सुखबैत छलीह। अभय भीतर प्रवेशक अनुमति माँगलनि। ओ कहलीह, ‘‘लोक समाचार बनाबय अबैत अछि, हमर बेटीकेँ कियो घुरा कऽ नहि अनैत।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘हम एखन कोनो नब दावा लऽ नहि अएल छी। बस अधिकारीक पुष्टि बिना कतहु नाम नहि छापब, से कहबय अएल छी।’’ माय कहलीह, ‘‘ओ जे सन्देश पठौने छल, ताहिमे ओकर आवाज काँपैत छल। हम फेर सुनैत छी तँ राति नीन्न नहि अबैत अछि।’’ अभय हुनक बात सुनि चुप रहला। सांत्वनाक लेल घड़ल सुखद समाचार कहब क्रूरता होयत।

घरक भीतर पूनमक पिता खाटपर बैसल छलाह। ओ पुछलनि, ‘‘जँ हमर बेटी अपन इच्छासँ गेल रहय तँ?’’ अभय प्रश्नक अर्थ बुझलनि। समाजमे फैलल अफवाह परिवारक मनोबल तोड़ने छल। ओ कहला, ‘‘नोकरी लेल बाहर जाएब अपराध नहि। जँ कियो ओकर श्रम वा स्वतन्त्रता पर बलपूर्वक नियन्त्रण कएने अछि तँ जाँच होयबाक चाही। एखन हमरासभकेँ प्रमाणक प्रतीक्षा करबाक अछि।’’ पिता कहला, ‘‘हम ओकरा कहने रही जे नोकरी भेटत तँ घरक ऋण चुकत। आब हम स्वयं ओकर प्रतीक्षा करैत छी।’’ ओहि वाक्यमे धनक आशा आ बेटीकेँ घरसँ दूर पठेबाक पछतावा दुनू छल।

रवि मुखियाक माय शान्ति देवी घर घुरलाक बाद पड़ोसीसँ कहलीह जे पुलिस कागज लेने अछि। पड़ोसी सलाह देलक जे ककरो नाम लऽ सोशल माध्यमपर लिखू, तहिये अधिकारी सुनत। शान्ति भयभीत भेलीह। गलत नाम लेला पर युवकक सुरक्षापर विपत्ति आबि सकैत छल। ओ अपन बेटाक फोटो बारम्बार देखैत छलीह। गामक आँगनमे ओकर लहान बाल्यकालक कथा सभकेँ याद छल, मुदा एखन ओकर वास्तविक वर्तमान ठाम ककरो पता नहि। एहि असहाय प्रतीक्षाकेँ सीमा लगक गोपनीय जाँचक समयसँ मिलाएब कठिन छल। दुनू घड़ी अलग गतिसँ चलैत छल।

सीमा लगक अधिकारी अर्चना अपन क्षेत्रक एकटा श्रमिक-सहायता समूहसँ बात कएलथिन। ओ साफ कहलथिन जे ककरो नामक आधारपर तुरन्त भेट कराएबाक वचन नहि देल जा सकैत अछि। जकरा सहायता चाही, ओकर स्वतन्त्र इच्छा आ सुरक्षा पहिने देखल जाएत। समूहक प्रतिनिधि बतौलनि जे किछु लोक अपन पहचानपत्र वापस पएबाक लेल प्रयासरत छथि। अर्चना विवरण लिखि रखने छलीह; जाँचक फाइलमे अनुमानसँ कोनो सीमा-पारक अपराधक निष्कर्ष जोड़ल नहि गेल। हुनका बुझल छल जे असावधान खबरिसँ जकरा बचएबाक चाही, ओकरा परोक्ष हानि पहुँचि सकैत अछि।

सुजाता नरेशक हत्याक फाइल फेर देखलथिन। गोदामक लेखाक दू प्रविष्टि हुनक सुरक्षित राखल पन्नासँ मेल खाइत छल। ई आर्थिक सम्बन्ध उपयोगी सूत्र छल, मुदा एकर आधारपर हत्याक रातिक घटना स्पष्ट नहि होइत छल। ओ अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘नरेश किछु भुगतानपर प्रश्न उठौने छलाह। आब ई जानब आवश्यक अछि जे हुनका ककरा सामने कोन बात कहल छल, आ कोन कागज वास्तवमे देखल छलाह।’’ अरुण पुछलनि, ‘‘सीमापारक दलालक नाम एहि फाइलमे जोड़ब?’’ ‘‘जँ नरेशक मृत्युसँ सम्बन्धित साक्ष्य भेटय तखन,’’ सुजाता उत्तर देलथिन। ‘‘अलग अपराधक जाल देखाइत अछि, मुदा प्रत्येक डोरक गाँठ परखब पड़त।’’

नैनाक घरमे ओहि दिन चन्दन समाचारपत्रक रोजगार-विज्ञापन देखैत बैसल छल। सविता प्रतियोगिता परीक्षाक नब तिथिक जानकारी पठौने छलीह। चन्दन पुछलक, ‘‘दीदी, जँ हम फेर परीक्षा दिअय चाही तँ खर्च कहाँसँ आएत?’’ नैना कहलीह, ‘‘पहिने पढ़बाक

समय आ वैध आवेदनक जानकारी देख। जे ऋण अछि, ओकर हिसाब अलग अछि।'' चन्दन अपन पुरान गलतीक चर्चा कएलक। ''मनोज कहने छल जे सभ लोक एहन काज करैत अछि। हमरा बुझबाक चाही छल जे हमर गाड़ीमे की जाइत अछि।'' नैना उत्तर देलथिन, ''बुझबाक अवसर फेर आएत। एहि बेर प्रश्न पुछबाक साहस नहि छोड़िह।'' पूनमक खोजक चिन्ता ओहि घरमे बसल छल, मुदा चन्दनक नब जीवनक प्रश्नोओ टारल नहि जा सकैत छल। एहि कारणेँ प्रत्येक संकेतक परीक्षण, व्यक्तिसँ सुरक्षित सम्पर्क आ आधिकारिक पुष्टि सर्वथा आवश्यक छल।

सीमा लगक श्रम-सहायता केन्द्रसँ आएल पहिल पत्रमे तीनटा नब तथ्य छल। एकटा कार्यस्थलपर किछु श्रमिकक पहचान-पत्र अस्थायी रूपसँ रखल गेल छल; दोसरमे मजदूरीक भुगतानक शिकायत दर्ज छल; तेसरमे सुरक्षित सम्पर्क मँगएवाली एकटा युवतीक अपूर्ण नाम छल। पत्रमे लिखल छल जे व्यक्तिक पूर्ण पहचान आ वर्तमान सुरक्षा-अवस्था एखन सत्यापित कएल जा रहल अछि। सुजाता पन्ना दोसर बेर पढ़लथिन। युवतीक अपूर्ण नाम पूनम हो सकैत छल, मुदा ओ एखन पत्रक आधारपर एहन घोषणा नहि करब चाहैत छलीह।

अर्चनाक दोसर फोन संझिया आएल। ''एकटा पूर्व श्रमिक हमर कार्यालयमे अएल अछि,'' ओ कहलीह, ''ओ अपन संगीक विषयमे जानकारी देबाक इच्छा रखैत अछि। ओकर बयान एखन पूरा नहि भेल।'' सुजाता पुछलथिन, ''ओ व्यक्ति सुरक्षित अछि?'' अर्चना उत्तर देलथिन, ''एखन केन्द्रक सम्पर्कमे अछि। बयानक प्रक्रिया समाप्त भेलापर आधिकारिक प्रतिवेदन पठाएब।'' सुजाता धन्यवाद देलथिन। फोन कटिते ओ पूनमक फाइल फेर खोललथिन। अंतिम सन्देशक तिथि, नियुक्तिक विज्ञापन, जमा राशि आ रसीदक नम्बर पहिने जकाँ ओतहि छल। कागज बढ़ल छल, मुदा पूनमक स्वर एखन प्रत्यक्ष नहि सुनाइत छल।

रातिमे अभय कार्यालयसँ घर घुरैत एकटा छोट समाचार लिखलनि—बाहरी भर्ती आ श्रमिक-भुगतानक अभिलेखक सत्यापन चलि रहल अछि; अधिकारीसभ औपचारिक सहयोग माँगने छथि। ओ कोनो नाम प्रकाशित नहि कएलनि। ओकर बाद नैनाकेँ फोन

कएलनि। नैना पूछलथिन, ‘‘किछु पक्का भेल?’’ अभय कहलनि, ‘‘एखन नहि। मुदा खोज पहिल बेर नगरसँ बाहर सही कार्यालयधरि पहुँचल अछि।’’ नैना खिड़की लग ठाढ़ छलीह। घरमे चन्दन मायकेँ औषधि दऽ रहल छल। ओ कहलीह, ‘‘जँ पूनम भेटि जाए तँ ओकरा पहिने सुरक्षित घर चाही, प्रश्नक भीड़ नहि।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘हँ, ओ बात पहिने रखब।’’

सुजाता देरि राति अन्तिम टिप्पणी लिखलथिन—शराबक अवैध कारोबारक जाँच आ श्रमिक-तस्करीक अनुसन्धानमे किछु व्यक्ति आ आर्थिक अभिलेख समान देखाइत अछि; तखनहुँ प्रत्येक आरोपक प्रमाण अलग सिद्ध करब आवश्यक अछि। पूनम यादवक वर्तमान ठाम सत्यापित नहि भेल अछि। बाहरी सहायता केन्द्रसँ प्रतीक्षित बयानक आधारपर अगिला कार्रवाई निर्धारित होयत। ओ फाइल बन्द कएलथिन। बाहर नहर दिससँ हवा आबि रहल छल। एखनहुँ कतेको लोकक घरमे दुआरि खुलल रहैत छल, जँ कहींसँ गुम भेल बेटा वा बेटी घुरि आए। एहि प्रतीक्षाक मूल्य सुजाता बुझैत छलीह; तेँ पहिल ठोस समाचार देबासँ पहिने ओकर साँच निश्चित करब चाहैत छलीह।

अध्याय ४३ : पूनमक पता

सीमा लगक श्रम-सहायता केन्द्रसँ अर्चना झाक फोन बुधक भोरमे आएल। सुजाता कुमारी कार्यालय पहुँचलहिए छलीह। मेजपर रातिकेँ मँगाओल वाहन-पञ्जी, पूनमक आवेदनक नकल आ रेखा द्वारा सौंपल कागज अलग-अलग रखल छल। अर्चना कहलथिन, ‘‘जे पूर्व श्रमिकक विषयमे काल्हि बतौने छलहुँ, ओकर बयान पूरा भेल। नाम रवि मुखिया। ओ किछु मास धरि ओहि कार्यस्थलमे छल जतय बाहरसँ आएल युवतीसभकेँ राखल जाइत छल।’’ सुजाता पहिने रविक स्वास्थ्य पुछलथिन। अर्चना उत्तर देलथिन जे युवक केन्द्रक संरक्षणमे अछि आ अपन घरवालाकेँ समाचार पठेबाक अनुमति देने अछि। ‘‘ओ अपन आँखिसँ पूनमकेँ देखल छल?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘नाम सुनने छल आ एक बेर चेहरो देखल छल। फोटो देखिकऽ पहचान करबाक प्रक्रिया चलि रहल अछि। बिना दोसर पुष्टि हम नाम घोषित नहि करब।’’ एहि सावधानीक कारण सुजाताकेँ राहत भेल। एकटा अनुमानक आधारपर पूनमक परिवारकेँ आशा देब आ फेर ओकरा तोड़ि देब कठिन अन्याय होइत।

रविक पहिचानक विषयमे अर्चना पहिले शान्ति देवीसँ पुष्टि केने छलीह। नवगढ़सँ जे फोटो मँगाओल गेल छल, ओकरा देखि शान्ति अपन बेटाक पुरान नाम आ जनमक वर्ष बतौने छलीह। बेटा जीवित होयबाक खबरि पाबि ओ पहिने सँ डेरायल छलीह जे कतहु फेर कोनो भूल नहि भेल हो। रवि अपन मायसँ फोनपर पूछने छल, ‘‘घरक बकरी बेचि देलहुँ कि एखन अछि?’’ माय उत्तर देने छलीह, ‘‘बकरी जायत तँ आनब, तौँ पहिने घर आबिह।’’ अर्चना एहि निजी बातचीतकेँ बयानक हिस्सा नहि बनौलथिन। ओकर महत्त्व केवल एतबा छल जे घायल युवक एखन स्वतंत्र रूपसँ परिवारसँ बोलि सकैत छल।

रविक बयानमे काजक ठामक नाम ‘सूर्य विहार वस्त्र परिसर’ लिखल छल। सीमा पारक एकटा औद्योगिक कस्बाक बाहरी भागमे पुरान भवनकेँ कार्यशाला बनाओल गेल छल। कामक विज्ञापनमे मासिक वेतन, भोजन आ रहबाक कोठरीक आश्वासन छल;

पहुँचला पर पहिल दू मासक वेतन ‘अग्रिम खर्च’क नामपर रोकल गेल। रवि गोदामक सफाइ आ माल चढ़ेबाक काज करैत छल। ओकरा सँ कहल गेल छल जे भवनक दोसरा भागमे महिला कर्मचारीसभ पैकिंग करैत छथि। दिन एक युवती पानि मँगबाक बहाने ओकरा लग अएलीह। ओ अपन नाम पूनम बतौने छलीह आ नवगढ़क चर्चा केने छलीह। रवि हुनका शहरक नाम सुनिते अपन गामक लगक कस्बा याद केने छल। मुदा ओकरा सन्देह छल जे पूनम अपन वास्तविक नाम कहलनि कि नहि; कार्यस्थलमे अनेक लोककेँ बदलब नामसँ बजाओल जाइत छल।

सुजाता फोनपर कहलथिन, ‘‘रविसँ पूछू, ओहि युवतीक कोनो अलग पहचान ओकरा मोन अछि?’’ अर्चना समय बाद फेर फोन कएलथिन। रविक अनुसार युवतीक दहिना हाथक कलाई लग छोट पुरान जलनक निशान छल आ ओ अपन सहेलीक नाम ‘नैना’ कहने छलीह। बात सुनिते सुजाताक ध्यान पूनमक अन्तिम सन्देश दिस गेल। ओ आरम्भमे नैनाकेँ फोन कऽ अपन भय सुनौने छलीह। मुदा छोट निशानक विवरण जाँचब आवश्यक छल। सुजाता नैनाकेँ बजौलथिन; फोनपर केवल एतबा कहलीह जे पहचानसँ सम्बन्धित एक प्रश्न अछि, आश्वासनक खबरि नहि। नैना कार्यालय पहुँचलाह तखन पूछल गेल जे पूनमक हाथमे किछु चिन्ह छलनि कि नहि। ‘‘बाल्यकालमे चूल्हिक गरम बर्तनसँ दहिना कलाई झरकि गेल छलनि,’’ नैना उत्तर देलथिन। ‘‘गोल निशान छल। हुनक मायो जानैत छथि।’’ सुजाता एहि कथनक तिथि आ स्रोत दर्ज कएलथिन।

नैनाक मुँहपर आशा आ भय एक संग देखाइत छल। ‘‘की ओ पूनम छथि?’’ ओ पुछलथिन। सुजाता कहलीह, ‘‘किछु लक्षण मेल खाइत अछि। एखन हुनक प्रत्यक्ष, स्वतन्त्र पहचान आ सुरक्षा सुनिश्चित होयब बाँकी अछि। अहाँक सहेली भऽ सकैत छथि; एखन पक्का नहि कहब।’’ नैना अपन आँखिमे भरि आएल पानि रोकि लेलथिन। सभ प्रश्न मनमे उठैत छल—ओ जीवित छथि कि नहि, कतेक कष्टमे छथि, हुनका कोनो चोट लागल अछि कि नहि। मुदा जखन ओ पुलिसक मेजपर पूनमक आवेदनक नकल देखलथिन, तँ बुझलीह जे एखन ई उत्तर अनुमानमे नहि, सही ढङ्गसँ जुटाओल जायत। ओ स्वीकृति देलथिन जे परिवार लग निशानक पुष्टि कराबय पुलिस स्वयं बात कऽ सकैत अछि।

सुझल बाटपर चलबाक लेल पुलिसकेँ पूनमक पुरान यात्रा-पथ सेहो फेर जाँचबाक छल। बसक टिकट पर स्पष्ट नाम नहि छल; मध्यस्थ द्वारा बनाओल यात्रा-सूचीमे क्रमाङ्क छल। नैना पहिने जे रसीद जमा केने छलीह, ओकर पाछाँ एकटा अपठित मुहर देखाइत छल। अरुण काँचक छोट आइना लऽ मुहरक धुँधला अक्षर देखलनि। ओहि अक्षरक आधारपर ककरो गन्तव्य निश्चित नहि कएल जा सकैत छल, मुदा बाहरी कार्यालयक नामक संग ओकर तुलना उचित छल। सुजाता पुरान कागजक फोटो प्रमाणित प्रतिक संग रखौलथिन। हुनक सहायक कहलक, ‘‘इतना छोट चिन्हक की मूल्य?’’ सुजाता कहलीह, ‘‘मूल्य एखन नहि जानल गेल अछि; ताहि लेल जाँच अछि।’’

एहि बीच अर्चना अपन कार्यालयमे रविक बयानक दोसर प्रति तैयार करबैत छलीह। रविक हाथमे पट्टी लागल छल। श्रम-सहायता केन्द्रक चिकित्सक सामान्य चोटक जाँच केने छलाह। ओ अर्चनाकेँ कहलनि, ‘‘हम लोकसभकेँ छोड़िकऽ भागलहुँ, ई बात बारम्बार मोन पड़ैत अछि।’’ अर्चना उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ पहिने स्वयं ओतयसँ निकललहुँ। आब जे याद अछि से स्पष्ट कहबो सहयोग अछि। जे बात नहि देखलहुँ से नहि जोड़ू।’’ रवि किछु समय धरि चुप रहल। फेर बतौलक जे कार्यशालामे काज करयवाली युवती पहिने दू बेर घर फोन करबाक अनुमति माँगने छलीह। दोसर बेर कर्मचारी ओकर फोन लऽ लेने छल। एकटा साँझ रवि हुनका जर्जर बरामदामे देखलक तँ ओ कहने छलीह, ‘‘जँ हम एतयसँ बाहर जाएब तँ पहिने मायक आवाज सुनब।’’ ई वाक्य रविक मोनमे रहि गेल छल, कारण ओ स्वयं अपन माय शान्ति देवीसँ बात नहि कऽ सकने छल।

अर्चना बयानक एहि अंशकेँ उद्धरणक रूपमे दर्ज कएलथिन, मुदा तकरा पूनमक निश्चित कथन नहि मानलनि। कागजपर स्पष्ट लिखल गेल—‘साक्षी द्वारा कथित, स्वतन्त्र पुष्टि अपेक्षित’। तखन ओ कार्यस्थलक वैधानिक परिचय आ वर्तमान अवस्थाक जानकारी सम्बन्धित अधिकारीक माध्यमसँ मँगौलथिन। कस्बाक स्थानीय श्रम निरीक्षण शाखाक अधिकारी उत्तर देलनि जे सूर्य विहारक पुरान परिसरमे दूटा अलग अनुबन्धक अन्तर्गत काज होइत छल। एक भागक पञ्जी उपलब्ध अछि, दोसर भागक ठीकेदार बदलिए गेल अछि। किछु श्रमिकक शिकायत ओहि कार्यालयमे पहिनेसँ दर्ज छल, मुदा कर्मचारीसभक वर्तमान

ठाम निश्चयपूर्वक नहि कहल जा सकैत छल। अर्चना तुरन्त स्थलीय सत्यापन आ सुरक्षित सम्पर्कक औपचारिक अनुरोध पठौलथिन।

रविक कथन सुनि अर्चना ओकरा कागजपर ओकर अपन बात फेर पढ़ि सुनौलथिन। ओ एकटा शब्द बदलएबाक आग्रह केलक—'बन्द'क बदला 'रोकल' लिखल जाए, कारण ओ अपन आँखिसँ कोठरीक दुआरि बन्द देखल छल, मुदा सभकेँ कोठरीमे कैद देखल नहि छल। अर्चना सुधार मानि लेलथिन। रवि पहिने डेराइत छल जे बयानक प्रत्येक शब्द ओकरा विरुद्ध घुमाओल जा सकैत अछि। एखन ओकरा लगल जे अनजान बातकेँ अनजान कहबासँ ओकर विश्वास घटैत नहि अछि। ओ अपन मायकेँ दोसर बेर फोन कऽ कहलक जे ओकर बयान पूरा भेल। शान्ति ओकरा केवल भोजन समयपर करबाक कहलथिन, कारण समाचारसँ पैघ अपन बेटाक देहक सुरक्षा छन्हि।

नवगढ़मे पूनमक मायक घरपर ओहि दिन रोजक जकाँ बिहान नहि छल। पूनमक छोट बहिन रीना आँगन बुहारैत-बुहारैत बेर-बेर दुआरि दिस देखैत छलीह। माय चूल्हिपर दालि चढ़ौने छलीह, मुदा हुनक ध्यान भातक हाँडीक बदला मोबाइलपर छल। फोन बजल तँ ओ तुरन्त उठौने छलीह; अनचिन्हार नम्बर कपड़ाक दोकानसँ छल। रीना कहलीह, ''माय, दिनभरि फोनक बाट देखिते काज छोड़ि देब तँ स्वास्थ्य बिगड़ि जायत।'' माय उत्तर देलथिन, ''काज नहि छोड़लहुँ, बेटी। काज करैत कानेँ तऽ बाट देखैत छी।'' रीना मायक झुर्री पड़ल हाथ देखैत चुप भऽ गेलीह। ओतए कोनो सनसनीक खबरि नहि छल; केवल प्रतीक्षाक एहन दिन छल जकर अन्तिम घड़ी ककरो मालूम नहि।

दुपहरिया नैना पूनमक घरे गेलीह। ओहि परिचित ओसारापर बैसबाक समय पहिल बेर हुनका शब्द चुनय पड़ल। झूठ आशा दऽ परिवारकेँ राति भरि जागबएब अनुचित छल; मुदा पूरा चुप रहब सेहो भारी। नैना कहलीह, ''जाँचमे नव सूचना भेटल अछि। किछु नाम आ चिन्हक मिलान चलि रहल अछि। अधिकारी एखन पक्का नहि कहने छथि।'' रीना प्रश्न कएलथिन, ''तखन दीदी भेटि गेलीह?'' नैना हुनक आँखिसँ आँखि मिलाकऽ उत्तर देलथिन, ''नहि, एखन नहि। मुदा खोजक ठाम संकुचित भेल अछि।'' पूनमक माय एकटा सन्दूक खोललथिन। भीतर पुरान ओढ़नी आ बचपनक फोटो राखल छल। ''कलाईक

निशान?'' ओ सोचि कहलीह। ''हँ, बड़ छोट रहै। चोट तखन लागल, जखन ओ कनी छलीह।'' नैना कहलीह जे जाँचक अधिकारी एहि विवरणक पुष्टि माँगने छथि। माय चुपचाप फोटो बाहर रखि देलथिन।

रीना मायक सोझाँ किछु नहि कहलीह। नैना विदा भेलाक बाद ओ सड़क धरि संग अएलीह। ''दीदी, गाममे सभ कहैत अछि जे जे गेल ओ अपने इच्छा सँ गेल,'' ओ धीरे सँ कहलीह। ''कोनो-कोनो कहैत अछि जे पूनम कहीं घर बसा लेलीह। ई बात सुनि मायक खाना बन्द भऽ जाइत छन्हि।'' नैना उत्तर देलथिन, ''जतबा जानकारी अछि, ताहिसँ ई आरोपक कोनो आधार नहि। अहाँ लोक अफवाहक उत्तर देबामे अपन शक्ति नहि लगाउ।'' रीना पुछलथिन, ''जँ पूनम घुरि एतीह आ लोक किछु पूछत?'' ''हुनका जे कहबाक इच्छा होयत, ओतबे कहतीह। कियो हुनका प्रश्नक घेरामे ठाढ़ नहि कऽ सकैत अछि,'' नैना कहलीह। रीना पहिल बेर तनिक निश्चिन्त भेल चेहरासँ विदा देलथिन।

अभय समाचारक कार्यालयमे अर्चनाक सहयोगसँ सम्बन्धित आधिकारिक सूचनाक प्रतीक्षा करैत छलाह। स्थानीय पत्रकारितामे आब प्रत्येक नव सुरागकेँ तात्कालिक 'खुलासा' कहबाक होड़ चलि रहल छल। एकटा चैनलक प्रतिनिधि फोन करैत पुछलक, ''पूनमक फोटो लगाकऽ लिखि दी जे ठाम भेटि गेल?'' अभय कहला, ''जँ ठाम सुनिश्चित नहि अछि, तँ खबरि गलत होयत। आ जँ भेटियो गेल हो तँ हुनक सुरक्षा पहिने देखबाक चाही।'' प्रतिनिधि उपहासपूर्वक कहलनि, ''अहाँ समाचारमे देरि करैत छी।'' अभय फोन राखि अपन सम्पादककेँ स्पष्ट लिखलनि जे सत्यापित सूचना आएबासँ पहिने नाम आ स्थानक प्रकाशन नहि कएल जाए। हुनका पूनमक मायक सन्दूकमे राखल ओढ़नी याद आएल; ओहि घरक लेल झूठ पाँति कोनो मामूली त्रुटि नहि होयत।

माय सन्दूकमे राखल पूनमक पुरान चिट्ठी बाहर निकाललथिन। ओहि चिट्ठीमे पूनम लिखने छलीह जे पहिल कमाइसँ रीना लेल एकटा नीक शब्दकोश किनतीह। रीना हँसि कहलथिन, ''अहाँ एखनहुँ ई चिट्ठी रखलहुँ?'' माय कहलीह, ''हम कागज नहि, ओकर लिखावट राखने छी।'' ओ ओहि दिन पहिल बेर बेटी घर घुरलापर की खुएतीह, तकर विषयमे सेहो सोचलथिन। फेर तुरन्त स्वयंकेँ रोकि लेलथिन। पक्का खबरि एखन नहि छल।

ओ चिट्ठी फेर सन्दूकमे रखि देलथिन, मुदा एहि बेर सन्दूक बन्द करैत हाथ नहि काँपल। रीना बुझि गेलीह जे माय आशाकेँ डर सँ पूरा ढाँपि नहि सकैत छथि।

साँझमे अर्चनाक कार्यालयसँ आधिकारिक पत्र आएल। स्थलीय अधिकारी सूर्य विहार परिसर पहुँचने छलाह, मुदा मुख्य भवनमे महिला श्रमिकसभक संख्या उपस्थिति-पञ्जीसँ मेल नहि खाइत छल। किछु लोक दोसर उपपरिसरमे पठाओल गेल होयबाक बात कहल गेल। महिला सहायता दलकेँ अलग सँ प्रवेशक व्यवस्था करबाक निर्देश देल गेल छल। पत्रमे दूटा नामक कात सन्देहसूचक टिप्पणी छल—'पी. यादव' आ 'मीना'। हस्ताक्षर मिलल नहि छल; केवल एकटा माटिक रङ्गक पुरान थैलीक भीतर रहल नियुक्ति-पावतीक नकलक चर्चा छल। सुजाता पुछलथिन, ''थैलीक मालकिन प्रत्यक्ष भेटलीह कि नहि?'' उत्तर छल—'एखन नहि।' सुजाता पत्रपर प्राप्तिक तिथि चढ़ा फेर फोन कएलथिन।

दोसरा भोर रविक पूर्व सहकर्मी अजीत नामक युवक सहायता केन्द्रमे उपस्थित भेल। ओ कहलक जे कार्यशालाक भीतरक कोठरीमे रहयवाली दू युवतीक नाम 'पूनम' आ 'ममता' सुनने छल। एकटा महिला जर आ कमजोरीक कारण पछिला सप्ताह बाहरक कोठरीमे भेजल गेल छलीह। अजीत अपन आँखिसँ केवल गाड़ीमे बैसल व्यक्ति देखल छल; चेहरा स्पष्ट नहि देखल। अर्चना पूछलथिन, ''अहाँकेँ कोन दिनक बात याद अछि?'' युवक दू संभावित तिथि बतौलक। अर्चना अभिलेख मिलाओलथिन। एतबा जानकारीसँ वर्तमान ठाम तय नहि होइत छल, मुदा ओहि गाड़ीक परिचालन-पञ्जी आ उपपरिसरक ठामक जाँच लेल नब दिशा भेटल। एक-एक झूठक पाछाँ दौड़बाक बदला ओ सभ साक्ष्यक क्रम बनाए राखि रहल छलीह।

सुजाता अगिला अनुरोधमे तीनटा बात विशेष रूपसँ लिखौलथिन—सन्दिग्ध रूपसँ रोकल गेल व्यक्तिसभक तत्काल सुरक्षा, स्वतन्त्र पहचानक अवसर आ इच्छानुसार अपन परिवारसँ सुरक्षित सम्पर्क। क्षेत्राधिकार अलग होयबाक कारण नवगढ़ पुलिस सीधे भवनमे प्रवेश नहि कऽ सकैत छल। अर्चना स्थानीय अधिकारप्राप्त दलक नेतृत्वमे निरीक्षणक व्यवस्था करैत छलीह। सुजाता कहलीह, ''ई केवल अपराधक फाइल नहि। एतय जे लोक छथि, हुनका सभकेँ अपन निर्णय कहबाक अवसर चाही।'' अर्चना उत्तर देलथिन, ''हमर

पहिल काज ओतयक स्त्रीसभसँ मालिकक उपस्थितिक बिना बात करब होयत।'' एहि सहमतिसँ अगिला दिनक योजना निश्चित भेल।

ओहि राति चन्दन अपन कोठरीमे देरि धरि जागल छल। नैनासँ ओ पुछलक जे पूनमक किछु समाचार आएल अछि कि नहि। नैना सीमित जानकारी देलथिन। चन्दन कहलक, ''हम जे गाड़ी चलौने रही, तकरा आब बेर-बेर मोन करैत छी। शायद कियो ओहि खेपमे मनुष्य सेहो लऽ गेल हो।'' नैना ओकरा रोकलथिन। ''तौँ जे देखलह से कहिह। जे नहि देखलह, ओकरा अपन अपराध-बोधसँ साँच नहि बना।'' चन्दन बहुत देरि बाद कहलका, ''हमरा भाड़ाक लालच छल। मुदा आब हमरा समुझि पड़ैत अछि जे कोनो अन्हार काजकेँ 'केवल ढुलाई' कहि छोड़ि देब कतबा खतरनाक अछि।'' नैना हुनक बात सुनलीह; अपराध-बोधक अर्थ साक्ष्यक स्थान लेब नहि, जिम्मेवारी स्वीकार करब छल।

भोरमे अधिकारप्राप्त दल सूर्य विहारक उपपरिसर पहुँचल। अर्चनाक लग पहिल सूचना मात्र एतबा आएल जे किछु महिला श्रमिक सुरक्षित अलग कक्षमे आनल गेल छथि। परिचयक सत्यापन चलि रहल अछि। एकटा युवती अपन घरक जिला नवगढ़क लगक बतौने छलीह। सुजाता सूचना पढ़िते नैनाकेँ फोन नहि कएलथिन। ओ पूछलथिन, ''युवतीकेँ अपन नाम, परिवारक विवरण आ सम्पर्कक अनुमति स्वयं देबाक अवसर भेटल?'' अर्चना उत्तर देलथिन, ''एखन चिकित्सकीय सहायता आ विश्राम देल जा रहल छन्हि। बयानक लेल दबाव नहि अछि।'' सुजाता कहलीह, ''उचित अछि। हम प्रतीक्षा करब।''

सहायता केन्द्रक निरीक्षणक दिन एकटा स्थानीय शिक्षिका स्वयं सम्पर्कमे अएलीह। ओ पूर्वमे ओहि परिसरक बच्चासभकेँ साँझ पढ़ेबाक काज करैत छलीह। शिक्षिका बतौलथिन जे किछु युवती लिखापढ़ी जानैत छलीह आ पावती पढ़बाक प्रयास करैत छलीह, मुदा ओकरा सभकेँ कागजक नकल नहि देल जाइत छल। ओ कहलीह, ''एकटा युवती अपन घरक पता लिखि छोट कागज देने छलीह। हम तखन डरि गेल रही, मुदा कागज फेकल नहि।'' अधिकारी ओ कागज विधिवत प्राप्त कएलनि। लिखावटक पहचान एखन करबाक छल। एहि सम्भावना सँ पुरान अनुमानकेँ पुष्ट घोषित नहि कएल गेल, मुदा प्रत्यक्ष सम्पर्कक बाट आरो खुलल।

दुपहरिया छोट सुरक्षित सन्देश आएल। ओहि युवती द्वारा कहलगेल तीनटा बात लिखल छल—मायक नाम, रीनाक नाम आ नवगढ़क पुरान घरक ओहि गलीक चिन्ह जतय सांझमे ठेला लागैत छल। ई विवरण पुलिसक पहिनेक कागजसँ मेल खाइत छल। अर्चना फोनपर कहलथिन, ‘‘युवती अपना नाम पूनम यादव बतौने छथि। ओ एखन सुरक्षित कक्षमे छथि। पहिचानक औपचारिक पुष्टि आ चिकित्सकीय देखरेख जारी अछि। हुनका परिवारसँ बात करबाक इच्छा अछि, मुदा थाकल छथि।’’ सुजाता कुर्सीसँ उठि खिड़की लग ठाढ़ भेलीह। माससँ बन्द एकटा बाट खुलि रहल छल। ओ पहिल बेर नैनाकेँ फोन उठौलथिन। ‘‘पूनमक पता भेटबाक ठोस सूचना अछि,’’ ओ कहलीह, ‘‘मुदा भेट-घाट आ घर घुरबाक व्यवस्था सुरक्षित ढङ्गसँ होयत।’’ फोनक ओहि पार किछु देरि मौन रहल, फेर नैनाक काँपैत आवाज आएल—‘‘हम हुनक मायकेँ संग लऽ अबैत छी।’’

अध्याय ४४ : जीवित भेटल पूनम

नैनाकेँ सुजाताक फोन भेटलाक बाद घरक ओहि एकटा कोठरीमे सभ ध्वनि एक क्षण लेल थमि गेल जकाँ लगल। सरस्वती देवी बिछौनापर बैसल छलीह। चन्दन पानीक गिलास लऽ भीतर आएल तँ देखलक जे नैनाक हाथमे फोन अछि, मुदा ओ बात नहि कऽ रहल छथि। ‘‘की भेल?’’ ओ पुछलक। नैना कहलीह, ‘‘पूनमक पता भेटल अछि। ओ जीवित छथि।’’ सरस्वतीक हाथसँ औषधिक पत्ता खसि पड़ल। ‘‘साँचे?’’ ‘‘अधिकारी कहलनि। हुनका सुरक्षित ठाम राखल गेल छन्हि, एखन भेंटक प्रक्रिया बाँकी अछि।’’ नैना पूरा बात कहि सकलीह तखनहुँ मन एक्के शब्दपर अटकि रहल छल—जीवित। एतेक माससँ जकर कल्पना करैत छलीह, ओ खबरि सुनबाक तैयारी ओ कखनहुँ कऽ नहि सकने छलीह।

सरस्वती नैनाक हाथ पकड़ि एकटा सावधानी कहलथिन। ‘‘खुशीमे एहन नहि कहिह जे आब सभ दुःख खतम। जे बेटी घुरि रहल छथि, हुनका कतेक बात अपन ढङ्गसँ कहबाक होयत।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘माय, हम जानैत छी।’’ सरस्वतीक अपन स्वास्थ्य सेहो एखन पूरा ठीक नहि छल; तखनहुँ ओ पूनमक मायक लेल एकटा छोट डिबियामे गुड़ आ भुजल चना रखौलथिन। ‘‘ओहि घरमे कियो आजु भोजनक मोन नहि करत,’’ ओ कहलीह। नैना डिबिया थैलीमे रखि लेलीह। अपन घरक दरबज्जा पार करैत हुनका एहिमे कोनो विशेष त्याग नहि, सामान्य पड़ोसक अपनापन बुझायल।

रीना आ पूनमक मायकेँ भेटबाक पहिने नैना अभयकेँ फोन कएलथिन। ‘‘खबरि भेटल अछि, मुदा समाचार छापबाक पहिने अधिकारीसँ बुझि लिअ,’’ ओ कहलीह। अभय उत्तर देलनि, ‘‘हमर पहिल प्रश्न हुनक सुरक्षा अछि, प्रकाशन नहि। अहाँ पूनमक परिवार लग जाउ, हम थानासँ आधिकारिक व्यवस्था बुझैत छी।’’ नैना कहलीह, ‘‘जँ कियो घर लग कैमरा लऽ आबि जाय तँ?’’ ‘‘हम अपन सम्पादककेँ पहिनेसँ कहि देब जे परिवारक ठाम आ विवरण प्रकाशित नहि होयत। दोसर समाचार माध्यम पर नियन्त्रण नहि अछि, मुदा

थाना सहायता कऽ सकैत अछि।'' ई छोट बातचीतक बाद नैना अपन घरक दुआरि बन्द कऽ पूनमक घर दिस निकललीह।

पूनमक माय ओहि समय चाउर चुनैत छलीह। नैनाकेँ देखिते पुछलथिन, ''एतेक जल्दी किएक एलह?'' नैना हुनक बगलमे बैसि कहलीह, ''पूनम भेटल छथि।'' माय पहिने बात बूझल नहि। ''कतय?'' ''सीमा लगक दोसर तरफक सहायता केन्द्रमे सुरक्षित छथि। अधिकारी कहने छथि जे ओ जीवित छथि।'' माय चाउरक थारी माटिपर राखि देलथिन। बहुत देरि सँ रोयबाक लेल जाहि मनकेँ रोकिने छलीह, ओ एकाएक खुलि गेल। रीना भीतरसँ दौड़ि अएलीह। माय हुनका पकड़ि कहलीह, ''तोहर दीदी भेटि गेलीह।'' रीना अवाक् ठाढ़ रहलीह, फेर नैनाकेँ प्रश्न करय लगलीह—''कतय छलीह? चोट तऽ नहि? आब घर कखन एतीह?'' नैना एक-एक उत्तर स्पष्ट देलथिन। सभ प्रश्नक उत्तर एखन हुनका लग नहि छल।

घरक दुआरिपर रीना पड़ोसिनसभक प्रश्न सुनि रहल छलीह। ककरो खबरि भेटि गेल छल, ककरो केवल अफवाह। एक महिला कहलीह, ''जँ भेटल छथि तँ फोटो देखाउ।'' रीना पहिल बेर स्पष्ट उत्तर देलथिन, ''पहिले दीदी आराम करतीह। फोटो हम ककरो नहि देब।'' दोसर पड़ोसिन तिरछा स्वरमे पुछलथिन जे एतेक मास कतय रहलीह। पूनमक माय भीतरसँ केवल एतबा कहलीह, ''अहाँ लोक खुशीक बात सुनि जाइ, बाकी प्रश्न बादमे।'' हुनक स्वर धीमा छल, मुदा स्पष्ट छल। रीना दुआरि बन्द करैत अनुभव कएलथिन जे बहिनक आगमनसँ पहिने हुनक निजता बचएबाक काज शुरू भऽ चुकल अछि।

ओहि पार सहायता केन्द्रमे पूनम अस्पतालसँ जाँच कराकऽ घुरलीह। हुनक देह दुबरा गेल छल, हाथक छाला रूखर होइ गेल छल, आ दू-तीन बेर उठि बैसबाक बाद थकान होइत छलनि। चिकित्सक शरीरमे पानीक कमी, कमजोरी आ अनियमित भोजनक प्रभाव देखलनि। तत्काल गम्भीर खतरा नहि छल, मुदा विश्राम, पोषण आ आगाँक जाँच आवश्यक छल। पूनमक लग महिला सहायता-कर्मी सीमा बैसलीह। ''अहाँ एखन कोनो प्रश्नक उत्तर देबाक बाध्य नहि छी,'' ओ कहलीह। ''भोजन करय चाही, सुतय चाही कि घर बात करय चाही?'' पूनम किछु सोचि उत्तर देलथिन, ''पहिने घर। मुदा माय रोतीह तँ हमरा

सहन नहि होयत।'' सीमा हुनका आश्वासन नहि, विकल्प देलथिन—''अहाँ चाही तँ हम पहिने बात कऽ लिअब, तकर बाद फोन अहाँकेँ देब।''

पूनम अपन आसपासक कक्ष देखलीह। एतय दुआरिपर ताला नहि छल। भीतर राखल पानीक जगसँ पानि स्वयं लऽ सकैत छलीह। ओहि छोट स्वतन्त्रताकेँ अनुभव करबाक समय हुनका अपन पिछला दिन याद आएल; केकरो अनुमति बिना बाहर जाएब, फोन करब अथवा वेतनक हिसाब पुछब कठिन छल। एखन सहायता-कर्मी दोसर कोठरीमे जाएबाक पहिने दरबज्जापर रुकि पुछैत छलीह जे किछु चाही कि नहि। पूनमकेँ एहन सामान्य व्यवहारो अजनबी लगैत छल। ओ चुपचाप कपड़ाक थैली सँ ओहि पुरान नियुक्ति-पावतीक कातरि निकाललीह जे कतेको दिनसँ भीतर नुकौने रखने छलीह। ओकरा देखिते आँखि भरि आएल। आवेदन करैत समय ओ एहि कागजकेँ भविष्यक बाट माननें छलीह।

चिकित्सक पूनमकेँ औषधि देबाक संग बुझौलनि जे थकानक कारण स्मरण आ निद्रामे कठिनाइ हो सकैत अछि। दोसर जाँचक तिथि लिखि देलनि। ''अहाँ एखन पोषक भोजन करू, पानि पिअ, अपन देहकेँ समय दिअ,'' ओ कहलनि। पूनम पुछलथिन, ''हम एखन काम करय सकैत छी?'' चिकित्सक उत्तर देलनि, ''आजुक काज विश्राम अछि। आगाँ स्वास्थ्यक आधारपर निर्णय होयत।'' पूनम अपन हाथक नाड़ी देखलीह। कतेक मास ओ एहि देहकेँ केवल कामक साधन बुझैत रहलीह; एखन ओकर देखभाल अपन अधिकारक रूपमे सुनैत छलीह। बाहरी बरामदामे एखन तेज धूप पड़ि रहल छल।

सहायता केन्द्रमे पूनम मात्र नहि, आरो पाँच श्रमिक अलग-अलग स्थानसँ आनल गेल छलाह। हुनका सभमे दू महिला आ तीन पुरुष छलाह। सभक अनुभव एक नहि छल; ककरो वेतन रोकल गेल छल, ककरो पहचानपत्र रखि लेल गेल छल, ककरो अनुबन्धमे वचन देल काजक बदला दोसर काज कराओल गेल छल। एकटा महिला, ममता, पूनमक संग किछु सप्ताह रहल छलीह। हुनक कमरमे पीड़ा छल। ओ कहलीह, ''हम घर घुरब, मुदा खाली हाथ गेलहुँ तँ लोक कहत जे विदेश जाएल आ किछु नहि कमा सकल।'' पूनम उत्तर देलथिन, ''हम पहिने जीवित घर पहुँची। पैसाक हिसाब बादमे होयत।'' ई वाक्य कहि ओ

स्वयं चकित भेलीह; अपन मनमे कतेक बेर ओ सोचने छलीह जे परिवारक जमा धन घुराबि नहि सकलीह तँ कोना मुँह देखाएब।

अर्चना झा पूनमसँ भेटय अएलीह। हुनक संग महिला अनुवाद-सहायिका सेहो छलीह, कारण स्थानीय कार्यालयक कागजक भाषा पूनम पूरा नहि बुझैत छलीह। अर्चना कहलीह, ‘‘अहाँक परिचयक किछु विवरण नवगढ़क शिकायतसँ मेल खाइत अछि। हम अहाँक अनुमति सँ परिवारकेँ समाचार देने छी। अहाँ आजु फोनपर बात करय चाहैत छी?’’ पूनम माथ हिलौलथिन। ‘‘मायकेँ। आ रीना केँ। नैना जँ ओतय रहथि तँ हुनक आवाजो सुनब।’’ अर्चना मुस्कुरैलीह। ‘‘हम समय निर्धारित कऽ व्यवस्था करब। एखन कोनो समाचार माध्यमसँ बातचीत आवश्यक नहि।’’ पूनम एकटा प्रश्न पुछलथिन, ‘‘की हमरा फेर ओहि कार्यशालामे भेजल जाएत?’’ अर्चना स्पष्ट स्वरमे कहलीह, ‘‘नहि। एखन अहाँ सुरक्षित सहायता केन्द्रमे छी। आगेक निर्णय प्रक्रिया अहाँकेँ बुझाओल जाएत।’’

ममता अपन घरक नम्बर कतेको बेर उलटा-पुलटा कहि रहल छलीह। केन्द्रक कर्मचारी हुनका जल्दबाजी नहि करौलथिन। एकटा पुरान कागजपर अङ्क लिखि ओ स्वयं पढ़लीह। फोन लगला पर हुनक पिता पहिने आवाज नहि चिन्हलनि। ‘‘हम ममता,’’ ओ कहलीह। उत्तरमे पिताक भारी साँस सुनाइत रहल। पूनम ओहि कोठरीक बाहरसँ ई बातचीत नहि सुनलीह; मुदा ममताक बादक मुस्कान देखि बुझलीह जे दोसर घरक बन्द दुआरियो आब खुलल अछि। सहायता-कर्मीक सूचीमे ममताक परिवारक सम्पर्कक विवरण गोपनीय रूपमे राखल गेल। सभ श्रमिकक परिवारकेँ एक्के समय आ एक्के रीति सँ सूचना देब सम्भव नहि छल।

नवगढ़क थानामे सुजाता परिवारकेँ बजौने छलीह। पूनमक माय पहिल बेर थानाक फाटकमे प्रवेश करैत अपन पएर सम्हारि नहि पाबि रहल छलीह। ई ठाम एतेक बेर निराशा सुनौने छल जे आजुक आशाकेँ ओ तुरन्त स्वीकार नहि कऽ पाबि रहल छलीह। सुजाता हुनका बैठाकऽ कहलीह, ‘‘अहाँक बेटी सुरक्षित स्थानमे छथि, चिकित्सकीय देखरेख भऽ रहल छन्हि। प्रत्यक्ष बातचीतक व्यवस्था थोड़े देरिमे होयत। जँ ओ आजु लम्बा बात नहि करय चाहथि तँ हमरा सभकेँ हुनक इच्छा मानबाक चाही।’’ माय पुछलथिन, ‘‘हम एक बेर

नाम लऽ बजा सकब?'' ''हँ। मुदा भेटब आ घर घुरबामे आवश्यक कानूनी कागज पूरा करब पड़त।'' माय स्वीकृति देलथिन; हुनका लेल एखन बेटीकेँ सम्बोधन करबाक अवसर सबसँ पैघ छल।

फोन लगबाक पहिने सुजाता पूनमक मायकेँ पानि देलथिन। ''बेटी बहुत थाकल छथि,'' ओ फेर कहलीह। ''अहाँ इच्छानुसार बात करू, मुदा ओकरा दोसर बेर सभ कहय लेल नहि कहिह।'' माय माथ हिलौलथिन। रीना अपन मोबाइलक पर्दा बन्द रखलीह, कारण ओ एहि पहिल भेंटक फोटो खींचबाक इच्छा रोकि लेने छलीह। हुनका दीदीक चेहरा फेर देखबाक छल, प्रमाणक तस्वीर बनएबाक नहि। नैना कनेक पाछाँ सरकलीह जाहिसँ माय-बेटीक बातचीतमे ककरो उपस्थितिक बोझ नहि हो। कक्षमे पंखा चलि रहल छल, आ बाहर थानाक आँगनमे कियो चाय पी रहल छल। जीवनक साधारण आवाजसभ एखन विचित्र रूपेँ स्पष्ट सुनाइत छल।

फोनक पर्दापर पहिने सहायता-कर्मीक चेहरा आएल। आवाज साफ करबाक प्रयासमे किछु समय लागल। तखन पूनम पर्दाक सोझाँ अएलीह। हुनक गाल पातर छल, माथपर रूखर कपालक लट झूलि रहल छल, मुदा आँखि पूनमक छल। माय अस्फुट स्वरमे कहलथिन, ''पूनम?'' पर्दाक ओहि पार पूनमक ओठ काँपल। ''माय।'' केवल दू शब्दक बाद दुनू ओर सिसकी उठल। रीना मायक काँध पकड़ि ठाढ़ छलीह। ''दीदी, हम छी।'' पूनम प्रयास कऽ मुस्कुरैलीह। ''पढ़ाइ छोड़लह नहि ने?'' रीना रोइत-रोइत हँ कहलीह। पूनम फेर पुछलथिन, ''घरक आमक गाछ एखन अछि?'' माय माथ हिलौलथिन। एहि छोट घरेलू प्रश्नसभक भीतर हुनक घर घुरबाक आकांक्षा छिपल छल।

नैना कनेक दूर ठाढ़ छलीह। पूनम हुनका देखिकऽ पुछलथिन, ''तोँ एतय छेँ?'' नैना आगाँ बढ़लीह। ''हम एतहि छी, पूनम।'' ''हम तोरा फोन केने रही। फेर फोन छीनि लेल गेल।'' ''हमरा सन्देश भेटल छल,'' नैना कहलीह। ''हम तोरा खोजब बन्द नहि केलहुँ।'' पूनम आँखि बन्द कऽ किछु समय चुप रहलथिन। फेर कहलीह, ''हमरा सभटा एखन नहि कहाएत।'' नैना उत्तर देलथिन, ''कहबाक जरूरत नहि। पहिने आराम कर।'' सीमा सहायता-कर्मी समयक सङ्केत देलथिन। पूनम स्वयं कहलीह, ''माय, हम फेर फोन करब।

हम एखन सुरक्षित छी।'' माय हाथ जोड़ि पर्दा दिस तकैत रहलीह, जाधरि फोन बन्द नहि भेल।

पूनम पर्दापर नैनाक चेहरा देखिते एकटा पुरान बात पूछबाक चाहने छलीह, मुदा समय कम छल। महाविद्यालयमे दुनू परीक्षा समाप्त भेलाक बाद एक-दोसराकेँ गामक मेलामे जाएबाक वचन देल छलीह। ओहि मेलाक दिन पूनम बाहरक नौकरीक कागज बनबैत व्यस्त छलीह। आब हुनका मोन भेल—नैनासँ कखनहुँ फेर केवल मेला, पुस्तक आ मौसमक विषयमे गप्प करब। ओ एतबा सोचि मुस्कुरैलीह। सहायता-कर्मी बुझलीह जे बात समाप्त होइत अछि; ओ कैमरा बन्द करबाक पहिने पूछलथिन, ''आरो किछु?'' पूनम कहलीह, ''मायकेँ कहू, हम ओकर बनाओल अचार खाएब।'' एहि वाक्यक बाद फोन बन्द भेल।

बातचीत समाप्त भेलाक बाद पूनमक माय थानाक बरामदामे किछु काल बैसलीह। हुनक रोदन धीरे-धीरे थमल, मुदा देह काँपि रहल छलनि। रीना पानि देलथिन। माय कहलीह, ''एहि दिनकेँ देखबाक लेल जीबि रहल रही।'' सुजाता हुनका कहलीह जे यात्रा, परिचयक कागज आ सम्बन्धित अधिकारीसभक समन्वयक व्यवस्था बिना जल्दबाजी नहि कएल जाएत। परिवारक अनुमति आ पूनमक इच्छाक अनुसार भेट-घाटक अगिला चरण निर्धारित होयत। रीना पुछलथिन जे पूनम अपन कपड़ा लऽ सकलीह कि नहि। सुजाता कहलीह, ''हुनका आवश्यक कपड़ा आ औषधि देल जा रहल छन्हि। अहाँ घरक फोटो वा संदेश सुरक्षित माध्यमसँ पठा सकैत छी।'' रीना तत्काल मायक संग खिचल एकटा फोटो चुनलीह, जाहिमे दुःखक दिन नहि, सामान्य बिहानेक हँसी छल।

अभय थानाक बाहर छलाह। एकटा स्थानीय संवाददाता पूनमक मायक तस्वीर लेबाक प्रयत्न करैत छल। अभय ओकरा धीरे सँ कहलनि, ''परिजनक अनुमति बिना फोटो नहि लिअ। लड़की एखन सुरक्षा केन्द्रमे छथि।'' संवाददाता कहलक, ''तखन जनताकेँ कोना पता चलत?'' अभय उत्तर देलनि, ''समाचारक तथ्य लिखू। परिवारक चेहरा देखाएब आवश्यक नहि।'' सुजाता बाहर आबि मीडिया लेल संक्षिप्त आधिकारिक विवरण देलथिन —गायब युवतीक खोजमे प्रगति भेल अछि; सम्बन्धित अधिकारीक सहयोगसँ पीड़ितक सुरक्षा आ पहचान सुनिश्चित कएल जा रहल अछि। ओ नाम, वास्तविक ठाम अथवा

व्यक्तिगत स्वास्थ्यक विवरण सार्वजनिक नहि कएलथिन। पत्रकारसभमे किछु निराश भेलाह, मुदा एहि मौनक कारण पूनमकेँ कमसँ कम पहिल साँझ भीड़क प्रदर्शनसँ मुक्ति भेटल।

कार्यशालाक प्रबन्धकसँ स्थानीय अधिकारीक पूछताछ अलग चलि रहल छल। ओ कहैत छल जे सभ कर्मचारी अपन इच्छासँ काज करैत छलाह आ परिचयपत्र केवल वेतन बाँटबाक लेल रखल गेल छल। अधिकारी कर्मचारीसभकेँ अलग-अलग स्थानमे बिना ओकर उपस्थितिक बयान देबाक अवसर देलनि। ममता बतौलथिन जे बाहर निकलबाक अनुरोध पर हुनका देनदार बताओल जाइत छल। रविक कथनमे बन्धक रखल मजदूरीक चर्चा छल। पूनम एखन विश्राम करैत छलीह, तेँ हुनक विस्तृत बयान अगिला दिन लेल स्थगित कएल गेल। एतेक प्रमाणक बादो प्रत्येक व्यक्तिक अनुभव अलग-अलग दर्ज होयत; ककरो कथा दोसरक स्थान नहि लेत।

पूनम भोजनक थारी सोझाँ रखने बैसल छलीह। दालिक गन्धसँ हुनका घरक चूल्हि याद आएल। पहिल ग्रास मुँहमे लेबामे कठिनाइ भेल; मन भऽ रहल छल जे मायक आवाज फेर सुनि ली। सीमा पूछलथिन, ‘‘किछु चाही?’’ ‘‘थोड़ेक नून,’’ पूनम उत्तर देलथिन। सीमा नूनक छोट डिबिया रखि देलथिन। एतबा साधारण बातपर पूनमक आँखि भरि आएल। हुनका मोन पड़ल जे ओहि कार्यशालामे भोजनमे की भेटत, से पूछबो झंझट बुझल जाइत छल। आब ओ अपन थारी अपने सोझाँ रखि बैसल छलीह। बगलमे ममता धीरे सँ खा रहल छलीह। दुनू एक-दोसराक चेहरा नहि देखलीह, मुदा संग बैसल रहब मात्रसँ बल भेटैत छल।

अर्चना अपन सहयोगीक संग घर घुरबाक औपचारिक काजक सूची बनबैत छलीह। स्वास्थ्यक सारांश, परिचयक प्रमाण, यात्राक सुरक्षा आ सम्बन्धित दफ्तरक स्वीकृति—सभक अलग व्यवस्था छल। एक कर्मचारी कहलक, ‘‘मामला समाचारमे आबि गेल अछि; आजुए लोककेँ पठा देब उचित रहत।’’ अर्चना उत्तर देलथिन, ‘‘समाचारक तेजी कागज आ सुरक्षाक स्थान नहि लऽ सकैत। जँ आधा तैयार यात्रामे फेर कोनो असुविधा भेल तँ ओकर जिम्मा ककर?’’ कर्मचारी सूची देखलनि आ शेष कामक तिथि लिखलनि। ई देरी ककरो मनक आशाकेँ हलुक नहि करैत छल, मुदा सुरक्षित घुरतीक तैयारीक आवश्यकता छल।

रातिकेँ नवगढ़मे पूनमक मायक घरमे पहिल बेर पूरा चूल्हि जरल। माय रीना सँ कहलीह, ‘‘दालि तनिक बेसी बनाउ।’’ रीना हँसि पड़लीह—‘‘दीदी एखन कहाँ खाएब एतय?’’ माय कहलीह, ‘‘हमरा लोक खाएब। एतेक दिनसँ पेटक भूख आ मोनक डर एक्के ठाम अटकि रहल छल।’’ नैना सेहो किछु देरि बैठलीह। ओ पूनमक पुरान तस्वीर देखैत छलीह, जाहिमे दू सहेली पुस्तक हाथमे लेने महाविद्यालयक फाटकपर ठाढ़ छलीह। ओहि दिन पूनम कहने छलीह जे अपन कमाइसँ घरक छप्पर मरम्मत करौतीह। छप्पर एखनहुँ टपकैत छल, मुदा पूनम जीवित छलीह। नैनाकेँ पहिल बेर बुझायल जे समयक कोनो-कोनो आशा पिछिला रूपमे घुरि नहि अबैत; ओकरा नब रूप देबाक पड़ैत अछि।

एहि रातिक भोजनक बाद रीना बहीमे पूनमक नामक कात खाली छोड़ल पन्ना खोललथिन। घरक खर्चक हिसाब लिखैत समय माय प्रत्येक मास पाँति खाली रखैत छलीह —बेटीक फोन, बेटीक बाटखर्च, बेटी लेल किछु बचत। रीना देखलीह जे खर्चक पाँति खाली रहितो मायक मन ओकरा भरने छल। ओ नब पन्नापर लिखलीह—‘पूनमक घर घुरबाक तैयारी’। माय पाँति पढ़ि कहलीह, ‘‘एखन तिथि नहि लिखिह।’’ रीना मुस्कुरा कऽ उत्तर देलथिन, ‘‘तिथि बादमे भरब।’’

सुजाता कार्यालयक अन्तिम नोंदमे आजुक घटनाक क्रम लिखलथिन—पहचानक प्रारम्भिक पुष्टि, चिकित्सकीय सहायता, पीड़ितक स्वीकृतिसँ परिवारक बातचीत, संरक्षणक व्यवस्था आ आगामी बयानक तैयारी। पूनमक मूल आवेदन, अन्तिम सन्देश आ कार्यस्थलमे भेटल अभिलेखक तुलना एखन बाँकी छल। रतनक संस्था आ सूर्य विहारक प्रबन्धनक बीच आर्थिक सम्बन्धक जाँच सेहो जारी छल। ओहि राति पुलिसक फाइलमे एहन किछु लिखल गेल जे एखन धरि नहि लिखाइत छल—‘पूनम यादव जीवित, सुरक्षित देखरेखमे’। सुजाता ई पाँति फेर पढ़लथिन। अपराधक सम्पूर्ण सत्य दूर छल, मुदा एकटा मनुष्य मृत्यु अथवा विस्मृतिक अन्हारमे नहि छुटि गेल छलीह।

अध्याय ४५ : घावक साक्षी

पूनमकेँ विस्तृत बयान देबाक समय ओहि दिन स्वयं चुनबाक कहल गेल। बिहान चिकित्सक हुनका देखलनि आ सहायता-कर्मी सीमा पुछलथिन जे ओ आगाँक प्रश्न सुनबाक अवस्थामे छथि कि नहि। पूनम खिड़कीक बाहर देखैत कहलीह, ‘‘आइ कहब। हमरा ई बात कहबाक अछि, मुदा बीचमे जँ रुकबाक मन भेल तँ रुकब।’’ सीमा उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ रुकि सकैत छी। जे बात याद नहि, ओकरा याद करबाक दबाव नहि रहत।’’ टेबुलपर पानि, रुमाल आ सरल भाषामे लिखल अधिकारक पन्ना राखल गेल। स्थानीय अधिकारप्राप्त महिला अधिकारी, अर्चना आ सहायता-कर्मी उपस्थित छलीह। कक्षमे कोनो आरोपित अथवा कार्यशालाक कर्मचारी नहि छल। पूनम अपन हाथक पुरान निशान छुअैत बैसलीह। ओ आजु पहिल बेर बुझि रहल छलीह जे हुनक कथन लिखल जायत, मुदा ओ स्वयं ओहि कागजक भीतर गुम नहि होएतीह।

पूनम बयान आरम्भ करबाक पहिने एकटा बात कहलीह, ‘‘हम जे नौकरी लेल घरसँ निकललहुँ, ताहिमे मायकेँ दोष नहि देल जाए। ओ हमरा पढ़ौलनि, भरोसा कएलनि।’’ अधिकारी हुनका बुझौलथिन जे बयानमे घटनाक क्रम लिखल जायत, परिवारक चरित्रक मूल्याङ्कन नहि। पूनम राहतक साँस लेलथिन। एतेक मास ओ कल्पना करैत रहलीह जे गाम घुरलाक बाद लोक पुछत—किएक गेलहुँ, किएक भरोसा केलहुँ? एखन कमसँ कम एहि कोठरीमे हुनक निर्णय सुनल जा रहल छल, हुनका कटघरामे ठाढ़ नहि कएल जा रहल छल। ओ अपन घुटनाक लग राखल हाथ सीधा कऽ उत्तर देब आरम्भ कएलथिन।

‘‘आवेदन कखन देने छलहुँ?’’ अधिकारी पुछलथिन। पूनम तिथि निश्चित करबाक पहिने अपन कापीक हिसाब याद कएलथिन। नवगढ़क नई दिशा रोजगार केन्द्रमे नोकरीक विज्ञापन देखलाक बाद ओ नैना संग गेल छलीह। कार्यालयमे कहल गेल छल जे बाहरक वस्त्र-उद्योगमे नियमित काज अछि, मासिक वेतन आ आवासक व्यवस्था रहत। प्रशिक्षण

शुल्क जमा करबाक लेल घरसँ बचत निकालल गेल। पूनमक माय अपन पुरान गहना गिरवी रखबाक चर्चा केने छलीह; अन्तमे रिश्तेदारसँ ऋण लऽ राशि जुटाओल गेल। पूनम कहलथिन, ‘‘हम अपन मेहनतसँ ऋण चुकायब चाहैत रही। घरक लोक हमरा रोकल नहि, कारण हुनका सभकेँ भरोसा छल जे लिखित रसीद भेटल अछि।’’ ओ एक क्षण रुकलीह। ‘‘आब सोचैत छी, कागज सही लगनाइ आ काज सही होयब दू अलग बात अछि।’’ अधिकारी हुनक एहि अन्तिम वाक्यकेँ अभिप्रायक रूपमे दर्ज कएलथिन, घटनाक प्रमाणक स्थानपर नहि।

पूनम बतौलथिन जे प्रस्थानक दिन बसमे सात लोक छलाह। दू महिला, किछु युवक आ एकटा मध्यस्थ। रास्तामे हुनका सभकेँ कहल गेल जे मूल नियुक्तिक ठाम बदलिए गेल अछि; आब काज दोसर कारखानामे भेटत। विरोध करैत काल एकटा कर्मचारी कहलक जे यात्रा आ आवासक खर्च आब चुकाओल नहि जाए तँ घर घुरब असम्भव अछि। ‘‘हमरा तखन सोचलहुँ जे पहुँचि देखब,’’ पूनम कहलथिन। ‘‘जे धन जमा कएने रही, ओ फेर देबाक सामर्थ्य नहि छल।’’ ओ यात्रा-तिथि, बस अड्डाक नाम आ सम्भावित सहयात्रीक विवरण अलग-अलग बतौलथिन। अधिकारी अपन कापीमे प्रश्न करैत छलीह, मुदा ओ विवरणक निश्चय करबाक लेल पुरान कागजक तुलना बादमे करब निश्चित भेल।

यात्राक एकटा ठाम पूनमकेँ याद पड़ल जे बससँ उतारि सभकेँ पुरान गोदामक बगलमे बैसाओल गेल छल। एकटा युवक चाय आनने छल। ओहि युवकक मुँहपर किछु दिनक दाढ़ी छल, मुदा नाम याद नहि। पुलिसक अधिकारी पुछलथिन जे बसक रङ्ग, नम्बर अथवा चालकक पहिचान याद अछि कि नहि। पूनम बसक रङ्ग बतौलथिन, नम्बर नहि। अधिकारी किछु लिखि फेर कहलीह जे गलत नम्बर अनुमानसँ बतएबाक आवश्यकता नहि। पूनम सोचलीह जे अनेक स्मृति चमकैत दृश्य जकाँ मनमे अछि, मुदा कतेको आवश्यक अङ्क ओहि समय देखबे नहि केने छलीह। एहि अभावक कारण हुनक देखल घटनासभ असत्य नहि भऽ जाइत छल।

कार्यशालामे पहुँचला पर हुनका सभक परिचयपत्र ‘सुरक्षित राखबाक’ नामपर लेल गेल। पहिल सप्ताह भोजन आ सुतबाक ठाम उपलब्ध छल, मुदा वेतन नहि भेटल।

कर्मचारी कहैत छल जे प्रशिक्षणक घाटा काटल जा रहल अछि। दोसर सप्ताहसँ कामक समय बढ़ल, आ साँझमे दरबज्जा बन्द भऽ जाए लागल। पूनम कहलथिन, ‘‘हमरा कहने छल जे हम एतेक घंटा काज नहि कऽ सकब। उत्तर भेटल जे पहिने देनदारी पूरा करू।’’ अधिकारी पुछलथिन, ‘‘देनदारीक कोनो लिखित हिसाब देखाओल गेल?’’ ‘‘नहि। केवल कहैत छल जे यात्रा, भोजन आ ठामक टका बाँकी अछि।’’ पूनमक कथनमे रोकल मजदूरी, बदलिए गेल काज आ बाहर जाएबापर नियन्त्रण अलग-अलग रूपमे दर्ज भेल।

ओहि भवनक खिड़कीसँ साँझमे बजारक एकटा छोट टुकड़ा देखाइत छल। लोक तरकारी लऽ घर घुरैत छल, बच्चासभ दौड़ैत छल। पूनमकेँ पहिने लगैत छल जे किछु दिनमे स्वयं बजार जा सकतीह। मुदा जखन दोसर कर्मचारीसँ पूछलीह जे बाहरसँ साबुन किनि आनी, तखन उत्तर भेटल जे सामान भीतरक दोकानसँ देल जायत आ ओकर दाम वेतनसँ काटल जायत। पूनम कहलथिन, ‘‘हमरा साबुनक कीमतसँ बेसी ई बात अखरल जे अपना टकासँ अपन जरूरतक वस्तु सेहो स्वयं नहि किनि सकैत रही।’’ अधिकारी एही बातकेँ स्वतन्त्र आवागमनक कथनक संग जोड़ि लिखलथिन।

पहिल महीनामे पूनम अपन मायकेँ फोन कऽ सकने छलीह। दोसर बेर नैनाकेँ फोन करबाक अवसर भेटल, मुदा बातचीत पूरा नहि भऽ सकल। ओ कहलीह, ‘‘हम जल्दी-जल्दी बोलैत रही। लगमे ठाढ़ महिला कर्मचारी बुझि गेलीह जे हम मदति माँगि रहल छी। फोन हाथसँ लऽ लेल गेल। तकर बाद हमर नम्बर बन्द कऽ देल गेल कि फोन कतय गेल, से नहि जनैत छी।’’ अधिकारी पुछलथिन, ‘‘अहाँ अपना आँखिसँ फोन तोड़ैत देखलहुँ?’’ ‘‘नहि। हम केवल एतबा देखलहुँ जे फोन लऽ गेल।’’ पूनमक एहि सावधान उत्तरसँ बयान स्पष्ट बनल। ओ बेसी आरोप लगाकऽ अपन पीड़ा सिद्ध करबाक प्रयास नहि कऽ रहल छलीह; जे भेल से कहि रहल छलीह।

पूनम एकटा महिला कर्मचारीक सम्बन्धमे किछु कहब चाहलीह, फेर रुकि गेलीह। अधिकारी प्रश्न नहि बढ़ौलथिन। थोड़ेक देरि बाद पूनम स्वयं बतौलथिन जे ओ कर्मचारी कखनहुँ कठोर व्यवहार करैत छलीह, मुदा एक बेर बुखारक समय पानि आ कपड़ा सेहो देने छलीह। ‘‘हम हुनका पूरा खराब कहि नहि सकैत छी,’’ पूनम कहलथिन। ‘‘मुदा ओ हम

सभकेँ बाहर जाएबो नहि दैत छलीह।'' अधिकारी दुनू बात दर्ज कएलथिन। ककरो एकटा दयालु क्षण ओकर अधिकारहीन व्यवहारकेँ सही नहि बनबैत छल, आ खराब व्यवहारक विवरणमे कएल वास्तविक सहयोगकेँ मेटाबो उचित नहि छल। पूनम अपन स्मृतिक जटिलता सुरक्षित देखिकऽ कने सहज भेलीह।

किछु देरि बाद पूनम पानि पीलथिन। हुनक हाथ काँपि रहल छल। सीमा पुछलथिन जे विश्राम चाही कि नहि। पूनम कहलीह, ''दस मिनट।'' कक्षसँ बाहर निकसि ओ बरामदामे बैसलीह। सोझाँ नीमक गाछ छल, जकर पात हवा सँ हिलैत छल। ममता हुनका लेल चादर नेने अएलीह। ''एखनहुँ सभ कहबाक अछि?'' ममता धीरे सँ पुछलथिन। ''जे याद अछि, से,'' पूनम उत्तर देलथिन। ममता अपन हाथ हुनक काँधपर रखलथिन, फेर चुपचाप घुरि गेलीह। एहि मौनमे कियो दोसरक अनुभव अपन मुँहसँ बतएबाक प्रयास नहि कएलक। पूनम पुनः भीतर गेलीह तँ हुनक स्वर एखनहुँ थकानसँ भरल छल, मुदा ओ कहबाक निर्णय अपन रखलीह।

पूनम बतौलथिन जे कार्यशालाक भीतर किछु महिला बीमार पड़लाक बादो काम करैत छलीह। ममताक कमरमे चोट लागल छल; हुनका नियमित आराम नहि भेटैत छलनि। एकटा युवतीकेँ परिवारक फोन उठेबाक लेल धमकाओल गेल छल जे ककरो बाहरक व्यक्ति सँ बात कएल तँ बचल मजदूरी काटि लेल जाएत। पूनम स्पष्ट कहलीह, ''हम सभक अनुभव एक नहि अछि। ककरो पिटाइ देखल नहि, मुदा डर आ रोकबटोक देखलहुँ। हमर अपन देह कमजोर होइत गेल।'' अधिकारी अलग सँ पूछलथिन जे ककरा द्वारा की कहल गेल, कोन दिन, आ कियो उपस्थित छल कि नहि। पूनम किछु नाम कहलीह, किछु ठाम केवल चेहरा याद छल। ओतय 'नहि जनैत छी' लिखल गेल, अनुमानित नाम नहि।

एकटा साँझ बाहरी कक्षमे सफाइ करैत काल पूनमक भेट रविसँ भेल छल। ओ तरासल स्वरमे पानि मँगने छलीह। रवि अपन बोतल देलक आ पूछलक जे ओ कतयसँ छथि। पूनम नवगढ़क नाम कहने छलीह। हुनका लगने छल जे परिचित स्थानक नाम कहला पर कियो बाहर खबरि पहुँचा सकत। मुदा रवि सेहो रोकल मजदूरी आ गुम परिचयपत्रक चिन्तामे छल। ''हम ओकरा अपन सहेली नैनाक नाम कहने रही,'' पूनम बतौलथिन। ''ओ कहलक

जे गामक लोककेँ भेटल तँ जानकारी देब। हमरा बुझल नहि जे ओ सचमुच बाहर निकलत।'' अधिकारी रविक पूर्व बयानसँ एहि विवरणक मिलान लेल अलग टिप्पणी कएलथिन। पूनमकेँ एहि मिलानक परिणाम एखन नहि बताओल गेल, कारण दू साक्षीक कथन स्वतन्त्र रहबाक चाही।

''कार्यशालासँ सुरक्षित कक्ष धरि कोना अएलहुँ?'' अधिकारी पूछलथिन। पूनम कहलीह जे किछु दिन पहिने हुनका जर भेल छल। तखन एकटा बाहरी कोठरीमे काज कम कराओल गेल। ओतय एकटा महिला कर्मचारी हुनका दवा देबाक समय पुछने छलीह जे घरक नम्बर अछि कि नहि। पूनम हुनका भरोसा करबाक साहस तुरन्त नहि जुटा सकलीह। बादमे जखन अधिकारप्राप्त निरीक्षण दल आएल, तखन महिला सहायता-कर्मी बिना प्रबन्धकक उपस्थितिक हुनक बात सुनलीह। ''हम पहिने सोचलहुँ जे ई लोक सेहो ओहि सभक लोक छथि,'' पूनम कहलथिन। ''मुदा ओ हमरा बाहर जाएबाक विकल्प देलनि आ कहलनि जे अपन नाम अपने कहू। तखन हम नैनाक, मायक आ रीनाक नाम कहने रही।''

पूनम ममताक हाथक चोटक प्रसङ्ग लिखेबाक समय विशेष आग्रह कएलथिन। अधिकारी कहलीह, ''ममताक अपन बयान सेहो होयत। अहाँ जे प्रत्यक्ष देखलहुँ से कहू।'' पूनम बतौलथिन जे ममता पैकिंगक भारी बोर उठा रहल छलीह आ झुकलाक बाद उठि नहि सकलीह। तखन हुनका किछु समय आरामक अनुमति भेटल, मुदा मजदूरी काटबाक बात कहल गेल। पूनम नहि जानैत छलीह जे वास्तवमे तकर पैसा काटल गेल कि नहि। ई आखिरी बात स्पष्ट दर्ज भेल। बादमे ममताकेँ अपन इलाज आ श्रमिक अधिकारक सहायता देल गेल। पूनम अपन अनुभवक भरोसा ममताक अलग कथनपर निर्भर नहि रखलीह।

बयानक बीच अधिकारी आर्थिक हिसाबक प्रश्न उठौलथिन। ''अहाँकेँ कोनो वेतन नगद भेटल?'' पूनम याद कऽ कहलीह जे पहिल सप्ताह थोड़े भोजन-खर्चक नामपर रकम देल गेल छल, मुदा ओ वेतन नहि कहल गेल। पछिला समयमे केवल हिसाबक आश्वासन छल। नियुक्तिक कागजमे जे मासिक वेतन लिखल छल, ओकर पावतीपर हुनक हस्ताक्षर नहि छल। ''एक बेर हमर हाथ पकड़ि कागजपर अङ्गूठा लगेबाक कहल गेल,'' ओ कहलीह, ''हम मना कएलहुँ। तकर बाद कागज लऽ गेल।'' अधिकारी पूछलथिन, ''ओ पन्ना एखन

अहाँ लग अछि?'' ''नहि।'' पूनम अपन पुरान नियुक्ति-पावतीक नकल निकालि देखौलथिन। मूल रसीद माय लग सुरक्षित होयबाक बात सेहो कहलथिन। ओहि दूनू कागजक सत्यापन अलग सँ होयत।

नवगढ़मे रतनक कार्यालयक बाहर रोजगार पाबयवला पुरान आवेदकसभ फेर जमा छलाह। कियो पूनम भेटलाक समाचार सुनि अपन बेटाक पता मँगैत छल, कियो जमा राशि घुरेबाक। नैना ओहि ठाम नहि गेलीह, मुदा अभय जानकारी देलनि जे किछु परिवारक आशा नब कऽ जगल अछि। नैना कहलीह, ''एकटा पूनम भेटलीह, एहि बातसँ दोसर सभ अपने-आप नहि भेटि गेलाह।'' अभय सहमत भेलाह। ओ अपन समाचारमे सहायता केन्द्र आ शिकायतक वैध रास्ताक जानकारी देलनि, मुदा कोनो घरक नाम वा पीड़ितक निजी बयान नहि छापलनि। ओहि नब सावधानीक लाभ कतेको परिवारकेँ भेटबाक आशा छल।

नवगढ़मे सुजाता पूनमक प्रारम्भिक बयानक आधिकारिक सारांश प्राप्त कएलथिन। क्षेत्राधिकारक कारण मूल बयान स्थानीय अधिकारीक अभिलेखमे सुरक्षित छल; सुजाता प्रमाणित प्रति प्राप्त करबाक प्रक्रिया शुरू कएलथिन। ओ रेखाक कागज, नैनाक रसीद आ पूनमक कथनमे समान तिथि देखलथिन। एकटा शीर्षक छल—'बाहरी प्रशिक्षण खर्च'। नरेशक लिखावटमे ओही मदक हिसाब पर प्रश्न छल। सुजाता अरुणकेँ कहलीह, ''एहि स्थानपर लेखाक परीक्षण महत्त्वपूर्ण अछि। पैसा ककरा गेल, किएक गेल, आ नियुक्ति वास्तवमे ककर माध्यमसँ भेल—तीनू प्रश्न अलग रखू।'' अरुण उत्तर देलनि, ''मूल बैंकक कागज आ अनुबन्धक प्रति मँगब।''

पूनमक बयानक विषयमे नैना अत्यल्प जानकारी पएलीह। सुजाता कहलीह जे पूनम अपन अनुभव दर्ज कऽ रहल छथि, मुदा विवरण सार्वजनिक करब उचित नहि। नैना सहमत भेलीह। ओ अभयकेँ केवल कहलीह, ''पूनम बोलबाक अवस्था मे छथि।'' अभय पुछलनि, ''अहाँ बात केलहुँ?'' ''परिवारक सामने छोट फोनपर। बादमे समय भेटत।'' अभय अपन नोटबुक बन्द कएलनि। ''जँ लिखब तँ संस्था आ अनुसन्धानक प्रमाणित तथ्य लिखब। पूनमक निजी कथन हुनक अनुमति बिना नहि।'' नैनाकेँ एहि बातसँ भरोसा भेटल। हुनका डर छल जे पूनमकेँ भेटते सभ लोक ओकरा 'अपना संग की भेल' पूछय लगत।

सन्ध्यामे सहायता-कर्मीसँ पूनम परिवारक फोटो प्राप्त कएलथिन। मायक चेहरापर थकान छल, रीना कनेक मुस्कुरा रहल छलीह, आ पाछाँ पुरान आमक गाछ देखाइत छल। पूनम फोटो बहुत देरि धरि देखलीह। ओ सीमा सँ पुछलथिन, ‘‘जखन घर घुरब तखन हमरा काज भेटत?’’ सीमा कहलीह, ‘‘एहि विषयमे सहायता-पत्र आ योजनाक जानकारी देल जाएत। मुदा अहाँ आजुए भविष्यक सभ निर्णय नहि करू।’’ पूनम उत्तर देलथिन, ‘‘हम फेर ककरो अन्हार कागजपर भरोसा नहि करब। मुदा हम काज करब छोड़बो नहि चाहैत छी।’’ ई हुनक अपन निश्चय छल। ओकरा पर दया देखेबाक बदला सही विकल्प सुनाओल गेल।

ओहि राति पूनमकेँ एकटा दुःस्वप्न आएल। ओ जागिते दरबज्जा दिस देखलीह। कोठरीक बाहरी गलियारा उज्जर छल, ताला नहि छल। सहायता-कर्मी पानि लऽ अएलीह आ पूछलथिन जे कोनो सहायता चाही कि नहि। पूनम कहलीह, ‘‘हमरा थोड़ेक देरि नींद नहि आएत।’’ सहायता-कर्मी ओहि ठाम बैसबाक प्रस्ताव रखलथिन, मुदा पूनम अकेले रहबाक इच्छा प्रकट कएलथिन। दरबज्जा आधा खुलल रखि ओ खिड़कीक लग बैसलीह। दूरसँ कोनो रेलक सीटी सुनाइत छल। हुनका पुरान घरक निकट रेलक पटरी याद आएल, जतय ओ आ नैना छात्रावस्थामे परीक्षा देबाक लेल गाड़ी पकड़ैत छलीह। एक दिन पुनः सामान्य यात्रामे रेल पकड़ब, ई विचार हुनका बल देलक।

दोसरा भोर पूनम अपन बयानक लिखित प्रति सरल भाषामे सुनलीह। दू ठाम तिथि सुधरौलथिन; एकटा कर्मचारीक नामक स्थानपर ‘‘चेहरा याद अछि, नाम नहि’’ लिखेबाक कहलथिन। अधिकारी सुधार दर्ज कऽ प्रति सुरक्षित कएलथिन। पूनम चाहलीह जे हुनक पावतीक नकल सेहो केसक अभिलेखमे रहय। ओहि कागजक किनार घिसि गेल छल, मुदा लिखल रकम साफ देखाइत छल। बयान पूरा भेलाक बाद सीमा पुछलथिन, ‘‘एखन अहाँ की चाहैत छी?’’ पूनम उत्तर देलथिन, ‘‘मायसँ फेर बात करब। आ ममताक इलाज ठीक सँ हो।’’ अपन पीड़ाक बयान दैत-दैत ओ दोसरो पीड़ितक चिन्ता करैत छलीह, मुदा आब हुनका एहन चिन्तामे स्वयंकेँ बिसरायब आवश्यक नहि छल।

आधिकारिक लेखिका पूनमकेँ बतौलथिन जे बयानक प्रति सुरक्षित रहत आ अगिला जाँचमे हुनका आवश्यकता भेल तँ कहल जाएत। पूनम पुछलथिन, ‘‘हम फेर कहि सकब जे

कोनो बात गलत लिखल अछि?'' अधिकारी कहलीह, ''हँ, अपन बात स्पष्ट करबाक अवसर रहत।'' पूनम कागजपर तकलथिन। एखन शब्द हुनक अनुमति सँ लिखल जा रहल छल।

पूनमक मायक घरे फोन आएल तँ रीना हँसैत कहलीह, ''दीदी आइ बहुत दिन बाद अपन आवाजमे बोलि रहल छलीह।'' पूनम पुछलथिन, ''आमक गाछमे एहि साल फल लागल?'' माय कहलीह, ''लागल, मुदा आधा आँधीमे खसि गेल। जे बचल अछि, तोरा लेल ओकर अचार रखब।'' पूनम छोट स्वरमे हँसलीह। रीना पुछलथिन, ''तोरा दू-चारि दिनमे आनब?'' ''अधिकारी व्यवस्था करैत छथि,'' पूनम उत्तर देलथिन। ''हम हड़बड़ी नहि करब। हमरा बाट सुरक्षित चाही।'' माय कहलीह, ''बेटी, आब तोहर कहब सबसँ पहिने सुनब।'' कतेको माससँ जे नाता भय आ अनिश्चिततामे अटकल छल, ओ साधारण घरेलू बातचीतमे फेर साँस लेबय लगल।

बयानक बाद पूनम अपन औषधि समयपर लेने रहलीह। दुपहरिया ओ एकटा कापी मँगलीह। सहायता-कर्मी खाली पन्नावाली कापी देलथिन। पूनम पहिल पन्नापर तीनटा बात लिखलीह—घरक लोकक नाम, बाँचल प्रमाणपत्रक सूची, आ अपन मनक एकटा इच्छा। ओहि इच्छाक सोझाँ लिखलीह—'फेर पढ़ब, फेर काज करब; मुदा अपन शर्त पढ़ि।' ओ कापीकेँ सिरहानी तर राखलथिन। एखन सभ बात पूरा होयबाक नहि छल, आ भविष्यक बाट एखनहुँ अनिश्चित छल। मुदा काल्हि धरि जकर हाथसँ फोन, कागज आ समय छीनि लेल गेल छल, ओ आइ स्वयं अपन अगिला दिनक पहिल पाँति लिखि सकैत छलीह।

दिनक अन्तमे सुजाता अपन फाइलमे लिखलथिन जे पूनमक बयान रोजगारक झूठ आश्वासन, वेतन रोकब, परिचयपत्र पर नियन्त्रण आ स्वतन्त्र आवागमनमे बाधाक आरोपकेँ विशिष्ट रूपेँ सोझाँ अनैत अछि। एहि प्रत्येक विषयपर दस्तावेज आ अन्य साक्षीक पुष्टि आवश्यक अछि। नरेशक हत्या आ अवैध शराबक कारोबारक फाइलसभ अलग जाँचक अधीन रहत, यद्यपि किछु आर्थिक सम्बन्ध परस्पर मेल खाइत अछि। पूनमक सुरक्षा आ पुनर्वास अपराधक अनुसन्धानसँ कम महत्त्वपूर्ण नहि छल। सुजाता फाइल बन्द कऽ रेखाक

कागजक सूची फेर देखलथिन। कार्यालयक निर्जीव अङ्कसभक पाछाँ आब पूनमक अपन स्वर छल। ओहि स्वरकेँ सही न्यायिक स्थान देबाक संघर्ष एखन आरम्भ भेल छल।

अध्याय ४६ : बेईमान प्रस्ताव

पूनमक बयानक समाचार नगरमे फैललाक दोसर दिन नैनाक घरक सोझाँ भोरहिए सँ लोकक आवागमन बढ़ि गेल। कियो अपन बेटी लेल बाहरक नोकरीक पूछताछ करैत छल, कियो रतनक संस्थामे जमा कएल धन घुरेबाक बाट जानय चाहैत छल। नैना बारम्बार एक्के उत्तर दैत छलीह—जे रसीद अछि ओकर नकल राखू, तिथि लिखू आ अपन नामसँ शिकायत करू। ओ ककरो एहन आश्वासन नहि देलीह जे काल्हि धरि रुपैया वापस भऽ जायत। सरस्वती देवी बरामदामे बैसि ई सभ सुनैत छलीह। हुनका लगैत छलनि जे बेटी अपन घरक चिन्ताक बीच कतेको अनजान घरक चिन्ता उठा लेने अछि।

ओहि दिन पहिने पहर एकटा अपरिचित कार गलीक मोड़पर रुकल। बाहर निकलल पुरुष सादा कुर्ता पहिरने छल, हाथमे चमड़ाक झोरा। ओ नैनाक घरक फाटकपर आबि विनम्र स्वरमे पुछलक, ‘‘नैना मिश्रक घर एतहि अछि?’’ चन्दन आगाँ बढ़ल। पुरुष अपन परिचय देलक—रतन सिंहक कार्यालयसँ आएल सलाहकार अजीत कुमार। ओ कहलक जे मालिक किछु भूल-सुधारक प्रस्ताव पठौने छथि आ नैनासँ एकान्तमे बात करबाक इच्छा छन्हि। चन्दनक मुँह तनिक तानल। ‘‘जँ कोनो लिखित बात अछि तँ यतहि राखू,’’ ओ कहलक। सलाहकार मुस्करायल, मुदा भीतर बैसबाक आग्रह फेर कएलक।

नैना बाहर अएलीह तँ ओ पुरुष उठि ठाढ़ भऽ गेल। ‘‘अहाँसँ कोनो झगड़ा नहि,’’ ओ कहलक, ‘‘हमर काज केवल प्रस्ताव बुझाएब अछि।’’ नैना दरबज्जा खुलल रखलथिन। सरस्वती देवी आ चन्दन कनेक दूर बैसल रहलाह। सलाहकार झोरासँ एकटा मोड़ल कागज निकाललक। ओकरा अनुसार नैनाकेँ संस्थाक दोसर शाखामे नियमित पद, पहिनेक बकाया वेतन आ परिवारक चिकित्सकीय खर्चमे सहायता देल जा सकैत छल। एकटा मोट रकम ‘विशेष क्षतिपूर्ति’क नामपर देबाक सेहो बात लिखल छल। कोनो आधिकारिक नियुक्तिपत्र

नहि, केवल प्रस्तावक मसौदा। नैना कागज उठबासँ पहिने पूछलथिन, ‘‘एहि पर केकर हस्ताक्षर अछि?’’

‘‘मालिकक अनुमति अछि,’’ अजीत कहलक। ‘‘हस्ताक्षर बादमे भऽ जायत। अहाँ पहिने सहमति दिअ।’’ नैना पन्नाक अन्तिम अनुच्छेद पढ़लथिन। ओतय लिखल छल जे नौकरीक विषयमे आरम्भिक शिकायत गलतफहमी पर आधारित छल, आ नैना एखन कोनो अतिरिक्त दावा नहि राखतीह। हुनक आँखि ओहि पाँतिपर ठमकि गेलनि। ‘‘एहि वाक्यक अर्थ ई भेल जे हमर पुरान शिकायत झूठ छल,’’ ओ कहलीह। अजीत कनेक असहज भेल। ‘‘वकीलसभक भाषा अछि। व्यवहारमे कोनो नुकसान नहि होयत।’’ नैना शान्त स्वरमे उत्तर देलथिन, ‘‘भाषा बदललासँ तथ्य नहि बदलैत अछि।’’

चन्दन कागज देखबाक लेल हाथ बढ़ौलक, मुदा नैना पहिने पूरा पढ़ि लेलथिन। दोसर पाँतिमे ई बात सेहो छल जे ओ आगाँक ‘अनावश्यक पुलिस-जाँच’मे सहयोग नहि करतीह। नैना कागज मेजपर राखि देलथिन। ‘‘पुलिस हमर निजी नौकर नहि अछि जे हमर मना कएलापर जाँच बन्द कऽ देत,’’ ओ कहलीह। ‘‘आ हम जे देखलहुँ से पुछल गेल तँ कहब।’’ अजीत अपन स्वर नरम रखैत कहलक, ‘‘अहाँ युवा छी, भविष्य पड़ल अछि। घरमे रोगी छथि, भाइक विषयमे सेहो प्रश्न उठि रहल अछि। निर्णय करैत समय ई सभ सोचबाक चाही।’’ ई बात सलाहसँ बेसी धमकीक समान सुनाइ देलक।

सरस्वती देवी ओहि समय पहिल बेर बोललीह। ‘‘बाबू, बेटीकेँ नोकरी चाही, मुदा ओकर मुँह बन्द करय लेल धन चाही एना किएक?’’ अजीत हुनका दिस तकैत उत्तर देलक, ‘‘माताजी, हम गलत अर्थमे नहि कहने छी। पारिवारिक भलाई लेल समझौता होइत अछि।’’ सरस्वती कहलथिन, ‘‘रोजक दवाईक दाम हम जानैत छी। मुदा जे बच्ची पूनमकेँ घर घुरेबाक बाट देखौलक, ओकरा हम रुपैयाक बदला चुप रहबाक नहि कहब।’’ नैना मायक स्वरमे कोनो भाषण नहि, बल्कि पछिला माससभक थकान सुनलीह। हुनका अपन निर्णयक भार कनेक हलुक बुझायल।

अजीत दोसर तरकीब अपनौलक। ‘‘देखू, संस्थामे सैकड़ो कर्मचारी रहलाह। सभ दोष मालिकपर देब न्याय नहि। नरेश बाबूक मृत्युक विषयमे तऽ अलग अनुसन्धान अछि। अहाँ जेहि विषयमे प्रत्यक्ष जनैत छी, केवल ओतबे कहू।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘हम सेहो एतबे कहैत छी। पूनमक नियुक्तिक कागजमे जे अन्तर देखलहुँ, से कहने छी। नरेश बाबूक हत्याके कएलक, से हमरा नहि बुझल अछि।’’ अजीत तुरन्त कहलक, ‘‘तँ फेर समस्या की?’’ ‘‘समस्या ई अछि जे अहाँ हमर साँच कथनकेँ सेहो गलतफहमी लिखेबाक प्रस्ताव देने छी,’’ नैना कहलीह।

सलाहकार एकटा बन्द लिफाफा मेजपर राखलक। ‘‘एहि मे अग्रिम सहायता अछि। एहिकेँ निर्णयक दबाव नहि बुझू।’’ नैना लिफाफा हाथो नहि लगौलथिन। ‘‘जँ कोनो बकाया वेतन अछि, संस्थाक लेखासँ बैंकमे पठाउ। जँ अधिकारक किछु भुगतान अछि, ओकर लिखित कारण दिअ। बिना विवरणक ई रकम हमरा नहि चाही।’’ अजीत लिफाफा उठबैत कहलकर, ‘‘एतेक कठोर रहला पर पछतावा होयत।’’ चन्दन उठि ठाढ़ भेल। नैना ओकरा हाथक इशारासँ बैसबाक कहलीह। ‘‘अहाँ अपन बात कहि चुकल छी। आब कृपा कऽ जाउ,’’ ओ सलाहकारकेँ कहलीह।

कार चलि गेलाक बाद चन्दनक धैर्य टूटल। ‘‘दीदी, हमर नाम एतेक सरलतासँ किएक लेल गेल? ओ सभ बुझैत अछि जे हमरा डर देखाओत तँ तोँ मानि जएबह?’’ नैना कहलीह, ‘‘हमरा सेहो से बुझाइत अछि। मुदा एहि बातक अनुमानकेँ साक्ष्य नहि बनायब।’’ चन्दन अपन पुरान ऋणक बही निकालि कहलकर जे ओ वैध वकीलसँ एक बेर बात करय चाहैत अछि। ‘‘हम जे काज कएलहुँ, ओकर परिणाम भोगब। मुदा जकरा नहि कएलहुँ, ओकर दोष नहि लेब।’’ नैना माथ हिलौलथिन। पहिले एहि घरमे चन्दनक असावधानीपर केवल क्रोध छल; आइ ओकर भीतर जिम्मेवारीक पहिल निश्चित वाक्य सुनाइ देल।

नैनाक फोनपर अभयक सन्देश आएल। ओ समाचार कार्यालयसँ लौटैत भेंट करबाक कहलनि। नैना उत्तर देलथिन जे एकटा व्यक्ति समझौता लेल आएल छल आ कागज देखेबाक अछि। अभय तत्काल फोन कएलनि। ‘‘कागज अपन लग अछि?’’ ‘‘नहि। ओ मसौदा लऽ गेल। मुदा हम मूल पाँति पढ़ने छी, समय आ नाम लिखि लेने छी।’’ अभय

कहलनि, ‘‘जे याद अछि से आजुए लिखि राखू। हमर समाचारमे एखन एहि बातक उल्लेख अहाँक अनुमतिसँ आ जाँचक बादे होयत।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘अहाँ पहिने दोस्त छी कि पत्रकार?’’ अभय कनेक रुकि कहलक, ‘‘दुनू काजक सीमा अलग बुझबाक प्रयास करैत छी।’’

दुपहरिया नैना अपन पुरान नियुक्तिपत्र आ वेतनक बैंक-विवरण खोललथिन। रतनक कार्यालयक प्रस्तावमे जे ‘बकाया’ लिखल छल, ओ वास्तविक वेतनसँ बहुत बेसी छल। एतेक धन बिना काजक कारण किएक? ओ कापीमे तीनटा शीर्षक बनौलथिन—पेश कएल पद, आर्थिक प्रस्ताव आ बयान वापसीक शर्त। समयक संग अजीतक पूरा नाम, गाड़ीक रङ्ग आ बातचीतमे कहल मुख्य वाक्य लिखलथिन। ओ जानैत छलीह जे स्मरणमे भूल होइत अछि; तँ जे बात ठीक-ठीक याद छल केवल ओतबे दर्ज कएलथिन। अलङ्कार जोड़ि घटना पैघ बनएबाक हुनका आवश्यकता नहि छल।

साँझक समय अभय अएलाह तँ सरस्वती देवी हुनका चाय देलथिन। घरमे ओहि दिन पाँजिक दवाईक पत्ता फेर समाप्त होयवाला छल। अभय चुपचाप एकटा पर्चीपर दवाईक नाम देखलनि, मुदा बिना पुछने धन देबाक प्रयास नहि कएलनि। नैना हुनका प्रस्तावक विवरण सुनौलथिन। अभय पुछलनि, ‘‘जँ सचमुच नियमित नोकरी भेटत आ कोनो शर्त नहि रहत, तखन?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘तखन योग्यता आ शर्त पढ़ि निर्णय करब। जीविका छोड़ि देबाक शपथ नहि लेने छी। मुदा पूनमक विषयमे गलत बयान देब, से कोनो नोकरीक दाम नहि।’’

अभय अपन नोटबुक नहि निकाललनि। ओ पहिने घरक बात सुनैत रहलाह। चन्दन कहलक जे रतनक कार्यालयसँ कतेको बेर मनोजक नाम सुनल, मुदा मनोज आब कोन ठाम अछि से ओकरा नहि बुझल। अभय कहलनि, ‘‘एहि विषयमे जे जानकारी पुलिसकेँ देने छैँ, ओकरा बदलिह नहि। पत्रकारक सामने नब अनुमान कहलासँ लाभ नहि।’’ चन्दनकेँ एहि उत्तरसँ कनेक अचरज भेल। ओकरा लगने छल जे अभय समाचार लेल किछु सनसनीखेज बात चाहताह। मुदा अभय केवल पूछलनि जे ऋण चुकएबाक वैध बाट खोजल गेल कि नहि। चन्दन कहलक, ‘‘एखन गिनती शुरू केने छी।’’

ओही साँझ कार्यालयक कर्मचारी कुसुमक फोन आएल। ‘‘दीदी, अहाँक नामपर नब नियुक्तिक फाइल खोलबाक आदेश छल,’’ ओ कहलीह। नैना पुछलथिन, ‘‘हम कोनो आवेदन नहि देने छी।’’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘‘तँ हम स्वीकृति नहि लिखलहुँ। कार्यालयमे किछु लोक कहैत छथि जे अहाँ घुरि आबि रहल छी।’’ नैना हुनका धन्यवाद देलथिन। ‘‘अहाँ अपन कामक अभिलेख सही राखू। हमर नामपर किछु गलत लिखल देखब तँ लिखित सूचना दिअ।’’ कुसुम कहलीह, ‘‘नरेश बाबूक बाद सभ डरैत अछि। कागजमे एकटा शब्द बदलब सेहो अपराध होयत कि नहि, से सब नहि बुझैत अछि।’’ नैना कहलथिन, ‘‘जे नहि बुझैत छी, ओकरा पुछब आवश्यक अछि।’’

दोसरा दिन नैना निरीक्षक सुजातासँ भेटबाक लेल थानामे समय मँगलथिन। आवेदनमे ओ अजीतक आगमन आ प्रस्तावक मुख्य शर्त लिखि सौंपलथिन। सुजाता पुछलथिन, ‘‘कियो साक्षी छल?’’ नैना मायक आ चन्दनक नाम बतौलथिन। ‘‘कागजक नकल अछि?’’ ‘‘नहि। हमरे लग नहि छोड़ल गेल।’’ सुजाता एतबे नोंद कएलथिन। ‘‘ई शिकायत जाँचक विषय बनत। जकरा वचन देल गेल ओकरा प्रमाणक रूपमे स्थापित करब आवश्यक अछि। अहाँ कोनो अपरिचित धन स्वीकार नहि करलहुँ, ई ठीक कएलहुँ; मुदा डरक कारण घरसँ निकलनाइ बन्द नहि करू।’’

नैनाकेँ थानाक बरामदामे रेखा भेटलीह। नरेशक बहिनक हाथमे कागजक फोल्डर छल। ओ अपन भाइक मृत्यु प्रमाणपत्रक प्रति लेल अएलीह। ‘‘अहाँक घरमे आब सभ ठीक अछि?’’ रेखा पुछलथिन। नैना कहलीह, ‘‘ठीक कहब कठिन अछि। पूनम भेटलीह, एहि बातसँ कनेक साँस भेटल।’’ रेखा कहलीह, ‘‘हमर भैया नहि घुरताह। मुदा ओ जतेक बात लिखि गेलाह, तकरा नष्ट नहि होमय देब।’’ दुनू किछु काल एक्के बेंचपर बैसलीह। हुनका बीच दुःखक प्रकार अलग छल, मुदा सत्यक प्रतीक्षा एक्के जकाँ थकाएवाली।

रेखा कहलीह जे नरेशक पुरान सहकर्मी रामबाबू हुनका एक बेर भेटबाक इच्छा कहने छथि। ‘‘ओ डरैत छथि। कहैत छथि जे भैया एकटा दिन बहुत विचलित छलाह,’’ रेखा बतौलथिन। नैना हुनका कहलथिन, ‘‘रामबाबू जे देखलनि, से पुलिसकेँ सीधे कहथि। हमरा सभकेँ बीचमे अनुमान जोड़बाक नहि चाही।’’ रेखा सहमति देलथिन। नरेशक कागजातसँ

पुलिसकेँ नब बाट भेटल छल, मुदा प्रत्येक पाँतिक अर्थ बुझबाक लेल अपन-अपन साक्षी जरूरी छल। रेखा भाइक पुरान चश्माक डिबिया फोल्डरमे रखने छलीह; तकरा ओ ककरो नहि देलीह।

घर घुरैत समय नैना बजारसँ माय लेल दवाई आ चन्दन लेल एकटा साधारण हिसाबक कापी कीनलथिन। दवाईक दाम देलाक बाद थैलामे कम टका बचल। अभयक सन्देश आएल जे पूनमक उद्धारक सरकारी सूचना प्रकाशित भेल अछि, मुदा नाम आ ठाम गुप्त राखल गेल अछि। नैना लिखलथिन—''एहि सावधानीक लेल धन्यवाद।'' कनेक आगाँ दू नवयुवक स्टेशनरीक दोकानपर आवेदनपत्र भरि रहल छल। एक कहैत छल, ''परीक्षाक तिथि फेर बदैल गेल।'' दोसर उत्तर देलक, ''दोसरो काज देखब पड़त।'' नैना क्षणभर रुकलीह। जे संकट हुनक जीवनकेँ एतय अनने छल, ओ एखन नगरसँ समाप्त नहि भेल छल।

सन्ध्याक घुरलाक बाद एकटा लिफाफा डाकसँ आएल। ओहिमे संस्थाक नामवाला छपल पत्र छल—नैनाकेँ स्वेच्छासँ नौकरी छोड़ल मानल गेल अछि आ हुनका बकाया कोनो रकम नहि अछि। पत्रक तिथि अजीतक भेटसँ एक दिन पहिनुक छल। नैना ओकरा पढ़ि चुप रहलथिन। एक दिस नौकरीक नब प्रलोभन, दोसर दिस पुरान वेतनक निषेध; दुनू बात एक्के कार्यालयसँ आबि रहल छल। ओ पत्रक फोटो खींचि मूल लिफाफा सहित सुरक्षित रखलथिन। सरस्वती पुछलथिन, ''फेर की करबह?'' ''जे लिखल अछि ओकर हिसाब माँगब,'' नैना उत्तर देलथिन।

रातिक भोजनपर चन्दन पहिने जकाँ बहस नहि कएलक। ओ नैनाकेँ अपन ऋणक बही देखौलक—केकरा कतेक देबाक अछि, कोना चुकएबाक सम्भव अछि। किछु रकमक स्रोत पर प्रश्न एखनहुँ छल। नैना ओकरा कहलथिन जे जँ कोनो रकम अवैध ढुलाईसँ भेटल छल तँ ओकर विषयमे वकील आ जाँच अधिकारीसँ स्पष्ट बात कर। चन्दन कहलक, ''हम एखन नहि कहब जे सबटा ठीक भऽ गेल। मुदा आगाँ झूठ नहि जोड़ब।'' माय दालि परोसैत कहलीह, ''घर टकासँ चलैत अछि, मुदा झूठक भरोसापर टिकैत नहि।'' ई वाक्य राति भरि नैनाक मोनमे रहल।

अजीतक प्रस्तावक विषयमे बात सुनि माधवी देवी सेहो दुपहरिया अएलीह। ओ सरस्वतीक घरमे सप्ताहमे दू दिन काज करैत छलीह। आजु चुल्हिक कात बैसि ओ कहलीह, ‘‘मालिक लोक धनक बलपर बात रोकि दैत अछि, हमरा सभ लग ने ई धन अछि, ने चुप रहबाक सुख।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘अहाँक घरमे एखन की हाल अछि?’’ माधवी कहलीह, ‘‘शराबबन्दीक पहिल सालमे पतिक कमाइ घरमे रहैत छल, बेटीकेँ नब चप्पल कीनि देने रही। आब गलीक पाछाँ फेर महँग दामपर अवैध शराब भेटैत अछि। हमर पति नब कर्जा कऽ बैसल छथि। मुदा सभ पुरुष एक्के नहि, ई सेहो कहब। किछु गोटे नशा छोड़ि घर सम्हारि रहल छथि।’’ नैनाकेँ ई स्पष्टता महत्त्वपूर्ण लगल। समाजक पीड़ा कहबाक लेल प्रत्येक व्यक्तिक अनुभव एक्के बनायब जरूरी नहि छल।

माधवी अपन छोट बहिनक बेटाक विषयमे सेहो बतौलथिन। ओ दू वर्षसँ सरकारी परीक्षाक तैयारी करैत छल, मुदा एक बेर प्रश्नपत्र बाहर निकललाक हल्लामे परीक्षा रद्द भऽ गेल। आब ओ मोटरसाइकिलसँ पार्सल पहुँचबैत छल। ‘‘कहैत अछि, काकी, जे कागजपर योग्य छलहुँ से घरमे भात नहि बनौलक,’’ माधवी कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘काज छोट-बड़ नहि, मुदा बिना जाँचक नोकरीक भरोसा महँग पड़ैत अछि।’’ माधवी नैनाक हाथमे पुरान विज्ञापनक पर्ची राखलथिन। ‘‘ई कहैत अछि कि एक सप्ताहमे बाहर नोकरी। तोँ देखिह, असली अछि कि फेर ओही जाल।’’ नैना ओ पर्ची पढ़ि कहलीह जे संस्थाक पंजीकरण आ शर्त देखला बिना कोनो रकम नहि देल जाए।

नैना बुझलीह जे सही नोकरीक समाचार भेटबो नगरक गरीब परिवारक लेल पैघ संघर्ष छल।

दोसरा भोर नैना अपन लिखित आवेदनक प्रति लेल सुजाताक कार्यालय गेलीह। अधिकारी बतौलथिन जे प्रस्तावक विषयमे संस्थासँ औपचारिक जानकारी माँगल जाएत, आ अजीतक परिचयक सत्यापन सेहो कएल जाएत। सुजाता जोडिलथिन, ‘‘अहाँ अपन घरवालासँ कहू जे फोनपर कोनो धमकी भेटत तँ समय सहित नोंद करथि। मुदा ककरो दोषी घोषित करबाक काज न्यायिक प्रक्रियाक अछि।’’ नैना माथ हिलौलथिन। ओ फेर पूछलथिन जे पूनमकेँ एहि विषयक कोनो दबाव पहुँचत कि नहि। सुजाता उत्तर देलथिन,

‘‘हुनक सुरक्षा अलग देखल जा रहल अछि; अहाँक शिकायतसँ हुनका अनावश्यक रूपेँ जोड़ब नहि।’’

थानासँ बाहर निकलैत नैनाकेँ अनुभूति भेल जे प्रस्ताव ठुकराएब एकटा क्षणक निर्णय छल, मुदा ओकर परिणामक संग रोज जीबय पड़त। नोकरी नहि छलनि, घरक खर्च कम नहि भेल छल, आ रतनक प्रभाव समाप्त नहि भेल छल। फेरो ओ अपन नामक संग झूठ लिखेबाक स्वीकृति नहि देने छलीह। सड़कक किनार एकटा रिक्शावाला ग्राहकक प्रतीक्षामे बैसल छल। नैना ओकरा भाड़ा पुछलथिन, फेर जेबीमे बचल रकम देखि पैदल चलबाक निर्णय कएलथिन। ई अभाव हुनका अपरिचित नहि छल। आजुक कठिनाइमे बस एतेक फरक छल जे अपन उत्तर ओ स्वयं चुनने छलीह।

अध्याय ४७ : मनोजक गिरफ्तारी

नरेश मण्डलक मृतदेह नहरक कात भेटलाक बादसँ सुजाता कुमारीक मेजपर रखल गाड़ीक फाइल दिनानुदिन मोट होइत गेल छल। पहिने एकटा गाड़ीक नम्बर छल, फेर मरम्मतिक बिल, ढुलाईक पावती, चालकक नाम आ रातिक चौकी-पञ्जीक प्रविष्टि जोड़ल गेल। आइ अरुण कुमार तीनटा अभिलेख क्रममे राखलनि। ‘‘जाहि राति नरेश बाबू घर नहि घुरलाह, ओहि राति ई गाड़ी पहिने गोदामसँ निकलल आ भोरसँ पहिने फेर ओही दिशामे देखल गेल,’’ ओ कहलनि। सुजाता पूछलथिन, ‘‘देखल गेल—ककर बयानमे? आ नम्बर कतेक स्पष्ट?’’ अरुण उत्तर देलनि जे दू साक्षीक कथनक मिलान एखन पूरा नहि भेल अछि।

पहिल साक्षी नहरक पुल लगक चाय-दोकानदार बिनोद छल। ओ राति दोकान बन्द करैत समय एकटा पुरान हलुक मालवाहक गाड़ी ठाढ़ देखल छल। चालकक चेहरा ओकरा स्मरण नहि छल, मुदा गाड़ीक पाछाँ बायाँ बत्ती टूटल छल आ सामानक ऊपर नील तिरपाल पड़ल छल। दोसर साक्षी पुल लगक चौकीदार छल, जकरा ओही राति किछु समयक लेल गाड़ी घुमबाक आवाज सुनाइ देने छल। सुजाता अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘दू व्यक्तिक अधूरा स्मरण मिलि एकटा पूरा घटना नहि बनि जाइत अछि। मरम्मतिक बिल आ पञ्जी देखू।’’

वाहनक मालिकाना कागजमे पुरान नाम छल, मुदा बीमाक हालुक विवरणमे वीरेन्द्र निर्माण सेवाक उपयोग दर्ज छल। गाड़ी चलएवला मजदूरसभक सूचीमे चन्दनक नाम किछु दिनक लेल लिखल छल, मनोज साहक हस्ताक्षर ढुलाईक स्वीकृतिपर छल। एकटा बिल पर बायाँ बत्ती बदलबाक तिथि हत्याक दू दिन बादक छल। बिल देनिहार मिस्त्रीकेँ पुछबाक लेल पुलिस लिखित सूचना पठौलक। सुजाता कहलथिन, ‘‘मिस्त्रीक याददाश्त आ वास्तविक भुक्तानीक अभिलेख मिलत तखने ई तिथि उपयोगी होयत।’’ ओ कागजक संख्या निश्चय करैत छलीह, कथाक नाटकीयता नहि।

चन्दन अपन बयानक अगिला जाँच लेल थानामे अएल। ओकर संग अधिवक्ता छथि, ई पहिने सूचना देने छल। सुजाता पुछलथिन जे हत्याक राति ओ मनोजकेँ कखन आ कतय छोड़ने छल। चन्दन कहलकर, ‘‘राति साढ़े नौक आसपास गोदामसँ निकलल रही। मनोज पुलसँ पहिने उतरबाक कहलनि। हमरा आगाँ काज नहि देल गेल।’’ ‘‘तखन अहाँ गाड़ी कतय नेलहुँ?’’ ‘‘पुरान चक्की लग मालवाहक ठाममे छोड़लहुँ। तकर बाद अपन बाइकपर घर घुरलहुँ।’’ ओकरा पहिल बयानमे घड़ीक अनुमान दोसरे छल। सुजाता फरक दर्ज कएलथिन, मुदा डाँटि जबरन एक तिथि मनबेबाक प्रयास नहि कएलथिन।

‘‘अहाँकेँ गाड़ीमे की छल से बुझल छल?’’ सुजाता पुछलथिन। चन्दन नजरि नीचाँ कएलक। ‘‘किछु पेटी छल। मनोज कहलक निर्माणक सामान। पहिनेसँ शंका छल जे सभटा वैध नहि। मुदा खोलि नहि देखलहुँ।’’ सुजाता फेर कहलथिन, ‘‘शंका आ प्रत्यक्ष जानकारी अलग बात अछि। अहाँ जँ कोनो प्रतिबन्धित सामानक ढुलाई जानि कऽ केने छी तँ से विषय अलग जाँचमे आएत। एखन नरेश बाबूक मृत्युक रातिक तथ्य बताउ।’’ चन्दन स्वीकृति देलक। ओ बुझि गेल छल जे अपन डरक कारण एकटा अस्पष्ट बात फेर-फेर दोहरेबासँ साँच स्पष्ट नहि होयत।

ओही दिन मरम्मतिक दोकानदारक उत्तर आएल। बिल वास्तवमे ओही गाड़ीक छल; मिस्त्री कहलक जे बत्ती टूटल होयबाक शिकायत एकटा पुरुष अनने छल जकरा ओ मनोजक नामसँ चिनैत छल। मुदा ओ बत्ती हत्याक राति टूटल छल कि पहिनेसँ, से नहि कहि सकल। भुक्तानी नकद भेल छल, रसीदपर ग्रहणकर्ताक सामान्य हस्ताक्षर छल। सुजाता एतबा जानकारीकेँ पक्की तिथि मानि नहि लिखलथिन। पहिने मनोजक वास्तविक आवागमनक प्रमाण जरूरी छल। मिस्त्रीकेँ हस्ताक्षरक सत्यापनक लेल पावतीक मूल प्रति सौंपबाक निर्देश देल गेल।

आर्थिक जाँचमे एकटा नब सूत्र भेटल। नरेशक सुरक्षित कागजातमे मनोजक नामपर ‘विशेष ढुलाई खर्च’क एकटा प्रविष्टि छल। ओहि रकमक आधा हिस्सा नरेशक मृत्युसँ दू दिन पहिने निकालल गेल छल; शेष रकम तेसर दिन एकटा सहयोगी खातामे पठाओल गेल। खाताक स्वामित्वक जानकारी बैंकसँ विधिवत् माँगल गेल। अरुण कहलक, ‘‘ई

भुक्तानी हत्या लेल छल हो सकैत अछि।'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''हो सकैत अछि, मुदा साबित करबाक अछि। कम्पनी अपन मनसँ सेहो खर्च लिखैत अछि। कहिया, ककर आदेश पर, कोन काम लेल—तीनू प्रश्नक उत्तर चाही।''

दोपहरमे नरेशक बहिन रेखा अएलीह। ओ एकटा पुरान कापी नेने छलीह जाहिमे भाइक हाथक लिखल किछु नम्बर छल। ''ई घरक हिसाब नहि अछि,'' ओ कहलीह, ''भैया एहन कापी कार्यालयसँ घुरलाक बाद रखैत छलाह।'' सुजाता कापीक पृष्ठ गिनलथिन, लिखित प्राप्ति देलथिन, फेर रेखासँ पूछलथिन जे ई कापी कखनसँ हुनक लग छल। रेखा कहलथिन जे मृत्यु पछाति अलमारी साफ करैत भेटल छल, मुदा ओ बुझि नहि सकलीह जे एकरामे की उपयोगी अछि। सुजाता स्पष्ट कएलथिन जे कापीक प्रत्येक पाँतिक स्रोत जाँचब पड़त।

कापीमे एकटा छोट वाक्य छल—'पुल लग मनोजसँ हठात् भेंट, मूल पावती नहि देत।' ओकर पाछाँ कोनो तिथि नहि छल, केवल सप्ताहक दिन लिखल छल। रेखा कहलीह, ''भैया ओहि सप्ताह घरमे कहने छलाह जे किछु कागज हराओल जा रहल अछि।'' सुजाता हुनका अपन स्मरणक बात लिखबाक कहलथिन। ''जँ तारीख ठीक नहि याद अछि तँ एतबा लिखू जे सप्ताहक आसपास छल।'' रेखा सहमत भेलीह। सुजाता कापीमे लिखल वाक्यकेँ हत्या-पूर्वक सम्भावित सम्पर्क मानलथिन, हत्या देखबाक प्रमाण नहि।

पुलिस मनोजकेँ पुछताछ लेल पहिने दू बेर लिखित सूचना पठौने छल। पहिल नोटिस ओकर घरक ठेगानापर वापस आएल; दोसरपर परिवार कहलक जे ओ काजसँ बाहर गेल अछि। वीरेन्द्रक कार्यालय कहैत छल जे मनोज आब नियमित कर्मचारी नहि। बैंकक एकटा लेनदेन आ परिवहन विभागक नब आवेदनसँ ओकर वर्तमान ठामक सम्भावना भेटल। सुजाता वरिष्ठ अधिकारीक अनुमति लेल आवश्यक कागज तैयार करौलथिन। ''ओ बाहर अछि, ई बातसँ अपराधी सिद्ध नहि होइत,'' ओ अरुणकेँ स्मरण करौलथिन। ''मुदा जाँचक बोलाहटसँ बचबाक कारण पुछब उचित अछि।''

मनोज एहि बीच नगरक दोसर छोरक ट्रान्सपोर्ट आँगनमे एकटा छोट कार्यालय खोलबाक तैयारी करैत छल। ओकर लग पुरान संगीक दूटा गाड़ी छल, मुदा ओहि गाड़ीक

मालिकाना सेहो स्पष्ट नहि छल। एक दिन चाय पिबैत ओ वीरेन्द्रकेँ फोन कएलक। ‘‘जतेक कागज माँगैत अछि, सभ तोहर कम्पनीक अछि। हमरा अकेले किएक देखब पड़त?’’ फोनक ओहि पारसँ उत्तर आएल, ‘‘अहाँ अपन वकीलसँ बात करू। कम्पनीक बात कम्पनी देखत।’’ मनोज फोन काटि देलक। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे जे लोक कठिन समयमे संग देबाक वचन दैत छल, से सभ अपन-अपन दुआरि बन्द करैत अछि।

पुलिस दल दोसर दिन भोरमे ओहि ट्रान्सपोर्ट आँगन पहुँचल। मनोज ओतय उपस्थित छल। सुजाता अपन परिचय दैत गिरफ्तारीक कारण बतौलथिन आ आवश्यक लिखित प्रक्रिया आरम्भ करौलथिन। मनोज पहिने कहलक, ‘‘हम कतहु भागल नहि छी। जाँच लेल स्वयं आबि जइतहुँ।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँकेँ पहिने सूचना पठाओल गेल छल। जे साक्ष्य एखन उपलब्ध अछि, ओकर आधारपर कारबाही कएल जा रहल अछि। अहाँकेँ अपन परिवार आ वकीलकेँ जानकारी देबाक अधिकार अछि।’’ मनोज चुप भऽ गेल। आसपासक मजदूरसभ भीड़ लगएबाक प्रयास कएलक, मुदा पुलिस सभकेँ दूर रहने कहलनि।

मनोजक भाइक नम्बर लिखल गेल। गिरफ्तारीक समय, स्थान आ कारण लिखित दर्ज भेल। जे कागजात ओकर लगसँ विधिसम्मत रूपेँ लेल गेल, ओकर सूची बनल आ पावती देल गेल। मनोज एकटा नीला फाइलक विषयमे कहलकर, ‘‘ई निजी कारोबारक अछि, नरेशसँ किछु सम्बन्ध नहि।’’ सुजाता कहलीह, ‘‘तकर जाँच भऽ जायत; अहाँक कथनो लिखल जाएत।’’ दल ओकरा थानामे अनलक। रास्तामे मनोज बारम्बार पुछैत रहल जे रतन की कहने छथि। कियो ओकर प्रश्नक अनुमानसँ उत्तर नहि देलक। ओकरा लगैत छल जे अपन समर्थकक नाम उच्चारण करिते किछु बदलि जायत; मुदा थानाक फाटकपर गाड़ी रोकलाक बाद एहन कोनो परिवर्तन नहि भेल।

गिरफ्तारीक समाचार पसरिते स्थानीय समाचार माध्यममे अलग-अलग दावा उठल। कियो लिखलक जे ‘हत्यारा पकड़ायल’, कियो लिखलक जे ‘सम्पूर्ण तस्करी गिरोहक भण्डाफोड़’। अभय अपन सम्पादककेँ कहलक जे शीर्षकमे ‘हत्याक अनुसन्धानमे मनोज गिरफ्तार’ लिखब अधिक उचित अछि। सम्पादक पुछलनि, ‘‘लोक एतेक सपाट शीर्षक

पढ़त?'' अभय उत्तर देलनि, ''मृत व्यक्तिक परिवारक लेल ई मनोरञ्जन नहि अछि। गिरफ्तारी आ दोषसिद्धि दू बात अछि।'' अन्ततः छोट समाचार छपल, जाहिमे गिरफ्तारीक आधिकारिक पुष्टि, जाँचक अवस्था आ आरोपीक कानूनी अधिकारक उल्लेख छल।

नरेशक घरमे समाचार पहुँचल तँ रेखा थकानसँ कुरसीपर बैसि गेलीह। माय पुछलथिन, ''आब तोहर भैयाक न्याय होयत?'' रेखा कनेक देरि बाद कहलीह, ''एखन एकटा आदमी पकड़ायल अछि। न्याय तखन कहब जखन जे कएलक से प्रमाणित होयत।'' हुनक ई उत्तर सुनि माँक आँखिसँ नोर खसि पड़ल। ओ पूछलथिन, ''जँ ई आदमी नहि रहल तँ?'' रेखा हुनक हाथ पकड़लथिन। हुनका डर छल जे परिवार फेर एक बेर आशामे ठाढ़ होयत आ फेर खसि पड़त। मुदा सत्यक जाँच छोड़बाक कोनो दोसर बाट हुनका नहि देखाइत छल।

नैनाकेँ समाचार अभयसँ नहि, बल्कि पड़ोसक दोकानदारसँ भेटल। ओ तुरन्त चन्दनकेँ देखबाक लेल भीतर गेलीह। चन्दन खिड़कीक लग बैसल छल। ''मनोज गिरफ्तार भऽ गेल,'' नैना कहलथिन। चन्दन माथ हिलौलक। ''हमरा बुझल अछि।'' ''डर लगैत छौ?'' ''हँ। ओ कहि सकैत अछि जे गाड़ी हम चलौने रही। से साँच अछि। मुदा हमर हाथसँ नरेश बाबूकेँ किछु नहि भेल।'' नैना कहलीह, ''अपन बयान नहि बदलिह। जतेक जानैत छेँ, ओतबे कहिह।'' चन्दन पुछलक, ''तोरा हमरा पर विश्वास अछि?'' नैना उत्तर देलथिन, ''तोहर बात जाँचसँ मेल खाए, हम ई चाहैत छी। विश्वासक अर्थ अन्हर समर्थन नहि।''

थानामे मनोज वकीलसँ भेटबाक आग्रह कएलक। ओकरा अवसर देल गेल। पहिल औपचारिक पूछताछमे ओ स्वीकार कएलक जे विशेष ढुलाईक आदेश ओकर हस्ताक्षरसँ निकलैत छल, मुदा प्रत्येक खेपक सामग्रीक जानकारी ओकरा नहि रहैत छल। नरेशक संग एकटा दिन हिसाबपर बहस भेल छल, से सेहो ओ मानलक। ''हमरा ऊपर मारपीटक आरोप लगएबाक की आधार अछि?'' ओ पुछलक। सुजाता कहलथिन, ''हत्याक रातिक वाहनक उपयोग, आर्थिक लेनदेन आ साक्षीक कथनक जाँच चलि रहल अछि। अहाँ अपन उत्तर दऽ सकैत छी।'' कियो ओकरा बलपूर्वक कबुलनामा देबाक प्रयास नहि कएलक।

अरुणकेँ आरोपीक कथनक किछु भाग पहिनेक कागजसँ मिलैत देखाइ देलक। मनोज कहैत छल जे हत्याक राति गाड़ी गोदाममे छल; मुदा वाहनक पञ्जीमे ओकर निकलब दर्ज छल। ओ कहलक जे पञ्जी गलत भरल हो सकैत अछि। सुजाता आदेश देलथिन जे पञ्जी लिखनिहार कर्मचारीक अलग बयान लेल जाए। ‘‘जे कागज ओकर विरुद्ध अछि, तकर स्रोत जाँचब; जे ओकर पक्षमे अछि, तकरो जाँचब,’’ ओ कहलीह। अभियोग मजबूतीसँ टिकय, ताहि लेल विरोधी सम्भावनासभकेँ पहिने परखब आवश्यक छल।

दुपहरक बाद मनोजक भाय थानामे पहुँचल। ओ क्रुद्ध छल। ‘‘हमर भायकेँ रतनक नामक कारण पकड़ल गेल अछि,’’ ओ कहलक। सुजाता पूछलथिन, ‘‘अहाँकेँ ओकर गिरफ्तारीक लिखित सूचना भेटल?’’ ‘‘भेटल, मुदा लोकसभ हमर घरक बाहर जमा अछि।’’ सुजाता आवश्यक सूचना देलथिन आ धमकी वा भीड़क शिकायत लेल लिखित आवेदन करबाक कहलथिन। मनोजक भाय कहलक, ‘‘हम अपराधक पक्ष नहि लैत छी, मुदा ओकरो कानूनी अधिकार अछि।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘अछि। आ ओ अधिकार सुरक्षित रहब जरूरी अछि।’’ ई बातचीतसँ थाना बाहरक कोलाहल कम नहि भेल, मुदा भीतरक काज नियमानुसार चलैत रहल।

साँझमे एकटा आन्तरिक प्रतिवेदनसँ जानकारी भेटल जे ढुलाईक खातामे जकरा ‘रात्रि सुरक्षा खर्च’ कहल गेल छल, ओकर भुगतान मनोजक नियमित मजदूरीसँ कतहु बेसी छल। वीरेन्द्रक कार्यालय कहैत छल जे गाड़ी आ मालक अतिरिक्त जोखिम लेल ई रकम छल। नरेश अपन कापीमे ओहि भुगतानक कारण पुछने छलाह। सुजाता अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘ई आर्थिक सम्बन्ध उद्देश्यक सम्भावना देखबैत अछि, मुदा हत्या के कएलक तकर प्रत्यक्ष प्रश्न एखन बाँकी अछि।’’ ओ नहर लगक निरीक्षण-प्रतिवेदन आ उपलब्ध चिकित्सकीय निष्कर्ष फेर पढ़लथिन। मृत्युक परिस्थितिक जाँच एकाएक समाप्त नहि भेल छल।

रतनकेँ पूछताछ लेल नब सूचना पठाओल गेल। ओकर वकील लिखित उत्तर देलक जे मालिकक रूपमे प्रतिदिनक ढुलाईक संचालन ओ स्वयं नहि देखैत छलाह। कर्मचारीक निजी विवादक विषयमे सेहो जानकारी नहि। सुजाता पत्रक पावती नोंद कएलथिन आ नरेशक कापीमे लिखल आदेशक तारिखसँ मिलान करबाक कहलथिन। एकटा सार्वजनिक प्रतिष्ठित

व्यक्तिक नामक कारण जाँच रोकब अनुचित छल; ओहिना बिना पर्याप्त आधार ओकर विरुद्ध तत्काल निष्कर्ष निकालब सेहो अनुचित छल। रतनक पत्र एकटा नब दस्तावेज छल, जकर सत्यता परखब आवश्यक छल।

एहि बीच विभा अपन घरक बड़का बैठकमे एकान्त बैसल छलीह। बाहर दू पत्रकार फोटो खींचबाक प्रयास करैत छलाह। सेविका पूछलथिन जे फाटक बन्द कऽ देल जाए कि नहि। विभा कहलीह, ‘‘फाटक बन्द करू, मुदा ककरो संग झगड़ा नहि।’’ फोनपर रतन केवल एकटा वाक्य कहलथिन—‘‘मनोज पकड़ा गेल। घरक कागज ककरो नहि देबह।’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘जे हमरा नामपर अछि आ जाँचमे माँगल जाएत, ओकरा कानूनसँ नुकेब नहि।’’ रतनक स्वर ऊँच भेल, मुदा विभा फोन काटि देलथिन। विवाहक पछिला वर्षसभक अविश्वास एखन आर्थिक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनि गेल छल।

किरणकेँ मनोजक गिरफ्तारीक समाचार अधिवक्ता मालती सिन्हाक कार्यालयमे भेटल। ओ अपनेँ हस्ताक्षर कएल फाइलसभक सूची लऽ गेल छलीह। मालती कहलथिन, ‘‘एहि गिरफ्तारीक अर्थ ई नहि जे अहाँक जिम्मेवारी समाप्त। अहाँक जानकारी जे जरूरी अछि, से सही क्रममे दियौ।’’ किरण पुछलथिन, ‘‘जँ हमर कथनसँ मालिक हमरा धमकी देथि?’’ मालती उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँकेँ सुरक्षाक माँग करबाक उपाय अछि। भयक कारण झूठ जोड़ब वा तथ्य नुकाएब उचित नहि।’’ किरण अपन डायरीक पन्ना फेर पलटलथिन। रतनक प्रस्तावित शाखा, बदलल सूची आ नरेशक माँगल मूल पावती—सभकेँ तिथि सहित सँजोएब आवश्यक छल।

गिरफ्तारीक बाद ट्रान्सपोर्ट आँगनमे जे मजदूरसभ बचल छलाह, हुनका सभमे कियो मनोजक दामन निर्दोष मानैत छल, कियो ओकर कठोर व्यवहारक चर्चा करैत छल। बुजुर्ग कर्मचारी फकीरा कहलक, ‘‘हमर दू मासक मजदूरी एखनहुँ बाँकी अछि। मालिक बदलत कि नहि, से हमरा नहि बुझल, मुदा घरक चूल्हि काल्हियो जरबाक अछि।’’ युवा कर्मचारी इमरान उत्तर देलक, ‘‘जाँचक लोग हमरा पावतीक नकल मँगने छथि। हम देब। मुदा नौकरी छोड़ि देब तखन माँक दवाई के आनत?’’ हुनका सभक एहि प्रश्नक उत्तर कोनो गिरफ्तारीक समाचारमे नहि छल।

राति कार्यालयसँ घुरैत सुजाताकेँ अपन पिताक कहब स्मरण भेल—''जेकरा नाम थानामे लिखल जाएत, ओकर परिवार सेहो राति भरि जागैत अछि।'' ओ अभियुक्तक प्रति सहानुभूतिक कारण कानून ढीला नहि करय चाहैत छलीह, मुदा परिवारक दुखक कारण ककरो दोषी ठहराएब सेहो नहि। नरेशक बहिनक हाथमे कापी, चन्दनक काँपैत बयान आ मनोजक भाइक क्रोध—तीनू दृश्य हुनका एक्के बात स्मरण करबैत छल। अधिकारीक काज न्याय लेल प्रमाण जुटाएब अछि, निश्चयक स्थानपर निजी भाव रखब नहि। ओ भोरक प्रश्नक सूची फेर बनौलथिन।

दोसरा भोर सुजाता मनोजकेँ न्यायिक प्राधिकारीक समक्ष नियत समयमे प्रस्तुत करबाक व्यवस्था जाँचलथिन। हिरासतक अवधि आ अगिला कानूनी प्रक्रिया लिखित रूपमे दर्ज भऽ रहल छल। मनोजक वकील आवश्यक आवेदन देने छलाह। सुजाता अभियोजनक अधिकारीसँ कहलथिन जे उपलब्ध साक्ष्यक बल आ कमजोरी दुनू साफ लिखथि। ''हमरा न्यायालयसँ एहन निर्णय नहि चाही जे समाचारक दबावपर बनल हो,'' ओ स्पष्ट कएलथिन। ''नरेशक परिवारक दुःखक आदर न्यायसंगत जाँचसँ होयत।'' मनोजक अटकल उत्तर कागजमे रहि गेल, मुदा ओकर आधारपर कोनो स्वतः दोषसिद्धि नहि भेल।

ओहि दिन नरेशक माय अपन घरक छोट देवघरमे दीप जरौलथिन। रेखा हुनका समाचारक कटिंग देखेबाक प्रयास कएलनि, मुदा माय कहलीह, ''पढ़ब नहि। तोँ बस सही बात कहिह।'' रेखा कटिंग मोड़ि कापीक बीच राखलथिन। बाहर विद्यालयसँ घुरैत बच्चासभक आवाज आबि रहल छल। भायक नहि रहबाक खालीपन एखनहुँ ओतबे पैघ छल, मुदा दुआरिपर आब पुलिसक पावती आ दस्तावेजक नकल व्यवस्थित रूपसँ राखल छल। एक दिन एहि कागजक महत्त्व अदालतमे जाँचल जाएत, ई विश्वास हुनका ठाढ़ रखैत छल।

सन्ध्यामे सुजाता अपन सहायककेँ नब काजक सूची देलथिन—वाहनक मूल पञ्जीक सत्यापन, खाताक भुगतानक स्रोत, साक्षीसभक बयानक तुलना, नरेशक कापीक हस्तलिपिक परीक्षण आ किरणक उपलब्ध अभिलेखक विधिसम्मत प्राप्ति। अरुण सूची पढ़ि पुछलनि, ''की आब रतनपर कार्रवाई होयत?'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''जतेक साक्ष्य

भेटत, ओकर आधारपर निर्णय होयत। नरेशक मृत्यु आ पूनमक शोषण दुनू कथामे जे कियो जिम्मेवार अछि, ओकर भूमिका अलग-अलग स्थापित करब पड़त।'' बाहर अँधारि उतरि रहल छल। थानाक फाटक लग भीड़ कम भेल, मुदा जाँचक असली कठिनाइ एखन आगाँ पड़ल छल।

अध्याय ४८ : मजिस्ट्रेटक समक्ष

किरण राति भरि कम सुतलीह। अधिवक्ता मालती सिन्हा सँ भेटलाक बाद ओ अपन घरक टेबुलपर दूटा ढेरी बनौने छलीह—जाहि कागजपर स्वयं हस्ताक्षर केने छलीह आ जाहि आदेशक विषयमे केवल मौखिक जानकारी भेटल छल। तेसर छोट फोल्डरमे रतनक सन्देश, अपरिचित फोनक समय आ नरेशक माँगल पावतीक विषयमे लिखल नोट राखल छल। ओ जानैत छलीह जे अपन निजी सम्बन्धक लाजसँ बचबाक लेल कतेको बेर कागज नहि पढ़ने छलीह। आब कानूनी जाँचमे ओहि असावधानीक मूल्य सेहो चुकएबाक पड़ि सकैत छल। तथापि मनमे एकटा निर्णय स्पष्ट छल—आब कोनो दोसर व्यक्तिक कहबापर झूठ नहि बोलतीह।

भोरमे दिनेशक सन्देश आएल। ‘‘ऋणक मूल प्रति भेटल कि नहि?’’ ओ पुछने छलाह। किरण उत्तर देलथिन जे बैंकसँ प्रमाणित नकल मँगाओल गेल अछि, किछु दिन लगत। दिनेश दोसर प्रश्न लिखलनि—‘‘आइ पुलिसक लग जा रहल छी?’’ किरण बहुत देरि तक पर्दापर तकैत रहलीह। अन्ततः लिखलथिन—‘‘हँ। अपन जानकारी दर्ज करएबाक अछि।’’ दिनेश उत्तर नहि देलनि। एखन हुनक बीच दाम्पत्य मेल-मिलापक कोनो आश्वासन नहि छल। किरण बुझैत छलीह जे अधिकारक प्रश्नपर सही उत्तर देब विवाहक टूटल भरोसा फेर जोड़बाक गारन्टी नहि, मुदा झूठसँ दूरी बनायब पहिल आवश्यक कदम अछि।

मालती सिन्हाक कार्यालयमे किरण समयसँ पहुँचलथिन। अधिवक्ता पहिने साफ कएलथिन जे पुलिसक पूछताछ, साक्षीक बयान आ मजिस्ट्रेटक समक्ष स्वेच्छासँ दर्ज होयवला कथनक कानूनी स्वरूप अलग-अलग होइत अछि। ‘‘अहाँ अपन भूमिका कम कऽ नहि बताउ, बेसी सेहो नहि। जे प्रत्यक्ष देखलहुँ, से अलग; जे ककरोसँ सुनलहुँ, से अलग,’’ मालती कहलीह। किरण पुछलथिन, ‘‘जँ हमर अपन हस्ताक्षरवला कागज अपराधक हिस्सा निकलत?’’ ‘‘तँ तकर तथ्य आ परिस्थितिक जाँच होयत,’’ अधिवक्ता उत्तर देलथिन। ‘‘साँच कहला मात्रसँ स्वतः निर्दोष घोषित नहि भऽ जायत, मुदा गलत बात कहब स्थिति आरो जटिल बनाओत।’’

किरण अपन पुरान डायरी खोललथिन। एक पन्नापर रतनक नामक कात लाल स्याहीमे 'नरेश—मूल पावती माँगल' लिखल छल। तिथिक कात ओहि दिनक उल्लेख छल जखन कार्यालयमे रतनक उपस्थिति लुकाओल गेल छल। किरण कहलीह, ''हम ओहि समय सचमुच नरेश बाबूकेँ मालिकसँ स्वीकृति लेबाक कहलियनि। मालिक कार्यालयमे छलाह, मुदा कर्मचारीसभकेँ बाहर बताओल गेल जे नगरसँ बाहर गेल छथि।'' मालती पुछलथिन, ''अहाँ अपन आँखिसँ हुनका देखलहुँ?'' ''हँ। ओ पाछाँक कोठरीमे छलाह।'' अधिवक्ता ओहि विवरणकेँ अलग निशान लगौलथिन।

थानामे सुजाता कुमारी हुनका आगमनक लिखित नोंद करौलथिन। मालती संग छलीह। किरणक चेहरापर थकान छल, मुदा ओ स्वयं बैसबाक ठाम चुनि पानि माँगलथिन। सुजाता स्पष्ट कएलथिन जे हुनक विरुद्ध सम्भावित आर्थिक अनियमितताक विषयमे सेहो जाँच चलि रहल अछि; तेँ हुनका जे किछु कहबाक अछि, ओकर कानूनी महत्त्व बुझि कऽ बोलू। किरण कहलथिन, ''हम अपन कएल काजक जिम्मेवारीसँ नहि भागब। मुदा मालिक जे निर्देश देने छथि, ओकर दस्तावेज कहाँ अछि, से बतायब।'' सुजाता आदेश देलथिन जे हुनक पुरान नियुक्ति, पदक अधिकार आ हस्ताक्षरक नमूना विधिवत् प्राप्त कएल जाए।

पहिल प्रश्न छल पूनमक नियुक्तिक बारेमे। किरण बतौलथिन जे पूनमक आवेदन आरम्भमे कार्यालयक सामान्य प्रशिक्षण-सूचीमे छल। बादमे रतनक विशेष निर्देशपर बाहरी कार्यस्थलक सूचीमे स्थानान्तरित कएल गेल। ''अहाँ स्थानान्तरणक निर्णय केने छलीह?'' सुजाता पुछलथिन। ''नहि,'' किरण उत्तर देलथिन, ''मुदा आदेशक पत्र कार्यालयमे पहुँचला पर हम सूची आगे पठौने छलहुँ। मूल पत्रपर हम मालिकक हस्ताक्षर देखलहुँ, मुदा मूल कागज अपन लग नहि राखलहुँ।'' ''ओ पत्र एखन कतय अछि?'' ''संस्थाक अभिलेखमे होयबाक चाही। जाँचमे जे प्रति भेटल, ओकरा मूलसँ मिलान करब पड़त।''

सुजाता नरेशक कापीमे लिखल बाहरी प्रशिक्षण खर्चक प्रविष्टि देखौलथिन। किरण शब्द चिन्हलथिन। ''एहि मदक स्वीकृति कहिया भेटल?'' किरण कहलीह जे तीनटा अलग भुगतानकेँ एक्के शीर्षकमे देखेबाक आदेश रतन देने छलाह। एकटा रकम वास्तविक प्रशिक्षण लेल, दोसर राहदारी आ आवास लेल बताओल गेल छल, तेसरक विषयमे कोनो स्पष्ट पावती नहि छल। ''अहाँ ओहि तेसर रकमपर हस्ताक्षर कएलहुँ?'' ''कएलहुँ। हमरा

तखन प्रश्न उठेबाक चाही छल। हम मालिकक कहब मानि लेलहुँ।'' ई स्वीकारोक्तिपर किरणक आवाज भारी भऽ गेलनि। ओ अपन वास्तविक भूमिका छोट नहि बनौलथिन।

कुसुमक नाम आएल तँ किरण तुरन्त कहलीह, ''ओ कार्यालयक सामान्य कर्मचारी छथि। अपन वेतन लेल काम करैत छलीह। हुनका सभ निर्णयक जानकारी नहि रहैत छल।'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''हम हुनक बयान अलग लेब। अहाँ मात्र जे स्वयं जानैत छी, से बताउ।'' किरण कहलथिन जे एक बेर कुसुम मूल सूची मेँ नब नाम जोड़बाक मौखिक आदेशपर प्रश्न केने छलीह। तखन किरण स्वयं बिना मूल आदेश देखल नाम जोड़एबाक अनुमति देलथिन। ''से गलती हमर छल,'' ओ कहलीह। ''मालिकक नाम लेलहुँ, मुदा सत्यापन नहि कएलहुँ।'' कोठरीमे किछु काल मौन रहल।

मालती सुनैत रहलथिन, मुदा किरणक स्थानपर उत्तर नहि देलथिन। जखन प्रश्न निजी सम्बन्ध दिस घुमल तँ ओ केवल कानूनी प्रासङ्गिकता स्पष्ट करबाक आग्रह कएलथिन। किरण बिना घुमाव कहलीह जे रतनक संग विवाहेतर सम्बन्ध छलनि आ एही कारण ओ कार्यालयक आदेशपर पर्याप्त प्रश्न नहि उठबैत छलीह। ''ई हमर निजी भूल अछि,'' ओ कहलीह। ''मुदा एहि सम्बन्धसँ ककरा हत्या करबाक निर्देश भेटल, से हम प्रत्यक्ष नहि देखलहुँ।'' सुजाता माथ हिलौलथिन। ''निजी सम्बन्ध उद्देश्यक सम्भावित पक्ष बुझबा लेल सन्दर्भ हो सकैत अछि; हत्या सम्बन्धी अलग साक्ष्य चाही।''

मनोजक सम्बन्धमे किरण एकटा महत्त्वपूर्ण घटना याद कएलथिन। नरेशक मृत्यु सँ किछु दिन पहिने मनोज रतनक पाछाँक कोठरीमे बन्द दरबज्जाक भीतर गेल छल। बाहर निकलैत समय ओकर हाथमे नील फोल्डर छल। किरण नील फोल्डर देखलथिन, मुदा भीतर की छल से नहि जानैत छलीह। मनोज कहने छल, ''नरेश बाबू बहुत प्रश्न करैत छथि।'' रतनक उत्तर स्पष्ट नहि सुनाइ देल छल। किरण कहलीह, ''हम ओहि वाक्यकेँ बादमे खतरनाक बुझलहुँ। तखन हमरा लगल जे लेखाक विवाद अछि।'' सुजाता पुछलथिन, ''अहाँ कियो पर हाथ उठबैत देखलहुँ?'' ''नहि।''

बयानक दौरान सुजाता एक बेर किरणकेँ विश्रामक अवसर देलथिन। ओ बरामदामे आबि ठाढ़ भेलीह। बाहर कर्मचारीसभक छोट भीड़ छल; एकटा युवती अपन बकाया वेतनक आवेदन देबाक अएलीह। किरण हुनका चिन्हलथिन—श्यामलीक भतीजी, जे कार्यालयमे सफाइक काज करैत छलीह। युवती किरणकेँ देखिकऽ कनेक पाछाँ हटल।

किरण बुझि गेलीह जे ओकर परिवारक लग ओ केवल अपराधक चर्चामे आएल प्रबन्धिका नहि, वेतन रोकल जाएवला संस्थाक प्रतिनिधि छथि। ‘‘अहाँक आवेदन जमा भऽ रहल अछि?’’ किरण धीरे पुछलथिन। युवती कहलीह, ‘‘हँ, मुदा हमर टका कखन भेटत?’’ किरणक लग कोनो सुनिश्चित उत्तर नहि छल।

दुपहरक बाद सुजाता उपलब्ध अभिलेखक प्रतिलिपि मिलाएबाक प्रक्रिया शुरू करौलथिन। किरण जतेक सूचीक विषयमे कहलीह, सभक स्रोत लिखल गेल। बैंकक कागज, हस्ताक्षरक प्रतिरूप आ बदलल नियुक्ति-सूचीकेँ एकटा-एकटा कऽ पहिचानल गेल। किरणक स्मरणसँ किछु तिथि अस्पष्ट छल; ओ स्पष्ट कएलथिन जे सप्ताह याद अछि, निश्चित दिन नहि। सुजाता आदेश देलथिन जे ओहि ठाम अनुमानित तिथि लिखल जाए, निश्चित दिन घोषित नहि। ओ बुझैत छलीह जे अपराधक अनुसन्धानमे आत्मविश्वाससँ कहल गलत तिथि कखनहुँ सही प्रमाणसँ बेसी नुकसान पहुँचबैत अछि।

किरण पुलिसकेँ बतौलथिन जे रतनक ओरसँ हुनका दोसर नगरमे शाखाक जिम्मेवारी देबाक प्रलोभन भेटल छल। पछिला सप्ताहमे एकटा अपरिचित फोन धमकीक समान शब्द कहने छल। ‘‘अहाँ आवाज चिन्हलहुँ?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘नहि। पुरुषक स्वर छल, बस एतबे कहि सकैत छी।’’ फोनक समय आ नम्बरक नोंद हुनका लग छल। सुजाता विवरण ग्रहण कएलथिन, मुदा कोनो व्यक्तिक नाम अनुमानसँ नहि जोड़लथिन। ‘‘एहि बातक तकनीकी सत्यापनक अपना सीमा अछि,’’ ओ कहलीह। ‘‘जँ नब धमकी भेटय तँ तुरन्त सूचना दिअ।’’

दोसरा दिन किरणकेँ न्यायिक दण्डाधिकारीक समक्ष कथन दर्ज करएबाक सम्बन्धमे औपचारिक जानकारी देल गेल। मालती पुनः हुनका बुझौलथिन जे एहन कथन स्वेच्छासँ होयबाक चाही, ककरो उपदेश वा दबावक उत्तर नहि। ‘‘अहाँ जँ कोनो बातपर निश्चित नहि छी तँ निश्चित नहि छी कहू,’’ ओ दोहरौलथिन। किरण पुछलथिन, ‘‘की हमरा अपन गलतीक बात सेहो कहब?’’ मालती उत्तर देलथिन, ‘‘जे कानूनी रूपसँ प्रासङ्गिक अछि आ अहाँक जानकारीमे अछि, ओकरा नुकेबाक सलाह हम नहि देब। अहाँक अधिकार आ सम्भावित दायित्व बुझि अगिला निर्णय करू।’’

न्यायालयक बरामदामे अनेक लोक अपन-अपन मामिलाक प्रतीक्षामे छलाह। किरण पाँतिमे बैसि प्रवेशक सूचना सुनैत रहलीह। हुनका बुझाइत छलनि जे एखन अपन बात स्वयं कहबाक अछि।

प्रारम्भिक प्रक्रियाक बाद दण्डाधिकारी किरणसँ पुछलथिन जे ओ अपन इच्छा सँ कथन देबाक चाहैत छथि कि नहि। कथनक सम्भावित कानूनी परिणाम आ दबावक अभावक विषयमे स्पष्टता कएल गेल। किरण उत्तर देलथिन जे ओ अपन जानकारी बतएबाक इच्छुक छथि। हुनका जल्दबाजी नहि कराओल गेल। जखन रतनक नाम आएल तँ ओ कनेक रुकलीह। दण्डाधिकारी ओकरा समय देलथिन। किरण कहलीह, ‘‘हमरा डर अछि जे हमर कएल गलतीक दोष हमर माथपर रहत, मुदा जे आदेश हमरा नहि देल गेल, ओकर दोष सेहो कियो हमरा देत। हम दुनू बात अलग करबाक चाहैत छी।’’

कथनमे किरण पूनमक मूल आवेदनक बदलल सूची, अलग-अलग भुगतानक मद, नरेश द्वारा माँगल मूल पावती आ रतनक मौखिक आदेशक विषयमे अपन प्रत्यक्ष जानकारी देलथिन। ओ कहलीह जे मनोज आ नरेशक बीच बहस हुनका देखल नहि छल, मुदा मनोजक मुखसँ नरेशक प्रश्न उठेबाक उल्लेख सुनने छलीह। नील फोल्डरमे की छल, से अज्ञात छल। रतन नरेशक मृत्यु चाहैत छलाह, एहन कोनो स्पष्ट कथन ओ कखनो नहि सुनने छलीह। कोनो रिक्त स्थान अनुमानसँ नहि भरल गेल। ओहि सावधानीसँ बयानमे जे कम छल, ओकर सीमा साफ देखाइत छल।

एकटा प्रश्नपर किरण अपन हस्ताक्षरक विषयमे कहलीह जे किछु भुगतान स्वीकृति ओ बिना पूरा संलग्नक पढ़ने केने छलीह। ‘‘एहि काजमे अहाँक भूमिका की छल?’’ दण्डाधिकारी पुछलथिन। किरण उत्तर देलथिन, ‘‘हम प्रबन्धिका रही। कागज जांचब हमर काज छल। हम भरोसाक नामपर जिम्मेवारी पूरा नहि कएलहुँ।’’ ओ कोनो दोसरपर अपन पूरा दोष नहि दऽ सकलीह। दण्डाधिकारी कथन दर्ज करएबाक प्रक्रिया नियमानुसार चलौलथिन। समाप्तिपर किरण जे वाक्य सुधारेबाक चाहलीह, ओकरा ध्यानपूर्वक देखल गेल। एक ठाम ‘आदेश देलाह’क बदला ‘मौखिक रूपसँ कहलनि’ स्पष्ट कएल गेल।

न्यायालयसँ निकलला पर मालती कहलथिन जे बयान देनाइ जाँचक अन्त नहि, प्रारम्भक एकटा महत्त्वपूर्ण चरण अछि। ‘‘अहाँक कथनक स्वतन्त्र पुष्टि खोजल जाएत। अहाँपर जे आर्थिक प्रश्न अछि, तकरो उत्तर देब पड़त,’’ ओ कहलीह। किरण पुछलथिन,

‘‘हमरा गिरफ्तार कएल जा सकैत अछि?’’ मालती उत्तर देलथिन, ‘‘कानूनी कारबाही तथ्य आ साक्ष्यक आधारपर निर्धारित होयत। हम अहाँक अधिकारक रक्षा लेल उपलब्ध छी, मुदा पहिनेसँ परिणामक निश्चितता नहि देब।’’ किरण कने देरि बरामदामे बैसलीह। हुनका राहतक संग भय सेहो छल; ई दुनू अनुभूति एक दोसरा कैं समाप्त नहि करैत छल।

ओही दिन पूनमक बयानक प्रमाणित अभिलेखक किछु भाग नवगढ़क जाँच दलकैं विधिवत् प्राप्त भेल। सुजाता ओकरा नरेशक कागजात आ किरणक जानकारीक संग मिलौलथिन। पूनम जे तिथिपर यात्रा आरम्भ कएने छलीह, ओहि सप्ताह एकटा बाहरी आवास-व्ययक भुगतान दर्ज छल। राशिक पावतीमे हस्ताक्षर अस्पष्ट छल। सुजाता अरुणकैं पुछलथिन, ‘‘पूनमक कथन ककरा विरुद्ध कोन आरोपकैं समर्थन दैत अछि?’’ अरुण सूची बनौलनि—झूठ नियुक्ति, वेतन रोकब, आवागमनपर नियन्त्रण। ‘‘हत्याक प्रश्न?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘एहि बयानसँ सीधे नहि,’’ अरुण उत्तर देलनि।

पूनम अपन सहायता केन्द्रमे ओहि दिन फेर चिकित्सकसँ भेटलीह। बयानक बात पूरा भेलाक बादो देहक कमजोरी आ अनिद्रा कखनहुँ-कखनहुँ घुरि अबैत छल। सीमा कहलथिन जे यात्रा लेल आवश्यक स्वास्थ्यक अनुमतिक व्यवस्था आगाँ बढ़ि रहल अछि। पूनम पुछलथिन, ‘‘हमरा परिवारकैं कतेक बात कहल गेल अछि?’’ ‘‘अहाँ जे अनुमोदित केलहुँ, ओतबे,’’ सीमा उत्तर देलथिन। पूनम निश्चिन्त भेलीह। ओ अपन बयानकैं न्यायिक प्रक्रियाक हिस्सा बनएबाक चाहैत छलीह, मुदा अपन जीवनक प्रत्येक दुःखकैं नगरक लोकक गप्पक विषय नहि।

नवगढ़मे अभयकैं किरणक न्यायालय पहुँचबाक खबरि भेटल, मुदा बयानक गोपनीय विवरण नहि। एकटा सहकर्मी कहलक जे कियो दावा करैत अछि—किरण मालिकक विरुद्ध सभ किछु खोलि देलनि। अभय उत्तर देलनि, ‘‘जतेक आधिकारिक रूपेँ ज्ञात अछि, से लिखू। अनुमानित बयानक उद्धरण नहि।’’ ओ समाचारमे एतबा लिखलनि जे आर्थिक अपराधक जाँचमे नब न्यायिक कारबाही भेल अछि आ सम्बन्धित व्यक्तिसँ पूछताछ जारी अछि। सम्पादक पहिने विस्तृत शीर्षक चाहैत छलाह, मुदा अभय स्पष्ट कएलनि जे अनधिकृत कथन छपलासँ साक्षीपर दबाव पड़ि सकैत अछि।

नैना समाचार पढ़ि कुसुमकैं फोन कएलथिन। ‘‘किरण मैडम ठीक छथि?’’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘‘आजु कार्यालय नहि अएलीह। सभ कहैत अछि जे हुनका पुलिस पकड़ि लेत।’’

नैना कहलीह, ‘‘ककरो अटकल बात नहि दोहराउ। यदि वेतनक कागजक जाँच चलि रहल अछि तँ अपन काजक प्रमाण सुरक्षित राखू।’’ कुसुमक आवाज काँपल। ‘‘हमर नामो दू सूचीमे अछि, दीदी।’’ ‘‘ताहि लेल तऽ अहाँ जे जानैत छी, से सही बताउ। हुनका सभक दोष अपना माथपर निअ नहि, आ अपन कएल बात लुकाउ सेहो नहि,’’ नैना कहलीह।

विभाकेँ बैंकसँ प्रमाणित भुगतानक दूटा नकल प्राप्त भेल। पहिल पर हुनक वास्तविक स्वीकृतिक हस्ताक्षर छल, दोसरक तिथिपर ओ नगरसँ बाहर छलीह। ओ अपन यात्रा सम्बन्धी कागज मिलौलथिन। रतनक फोन फेर आएल। ‘‘घरक कागज पुलिसकेँ देबाक कोनो आवश्यकता नहि,’’ ओ कहलनि। विभा उत्तर देलथिन, ‘‘कागजमे हमर नाम अछि। हम स्वयं अपन आर्थिक अधिकारक रक्षा करब।’’ रतन कहलक, ‘‘अहाँ हमरा शत्रु बुझि रहल छी।’’ विभा शान्त स्वरमे कहलीह, ‘‘हम अहाँक पत्नी रही, मुदा ओहि कारणसँ गलत स्वीकृति सही नहि भऽ जायत।’’ फोनक बाद ओ आवश्यक नकल वैध माध्यमसँ देबाक तैयारी कएलथिन।

नरेशक बहिन रेखा केँ सुजाता सूचना देलथिन जे किछु नब आर्थिक अभिलेखक सत्यापन चलि रहल अछि। रेखा पुछलथिन, ‘‘की हत्याक कारण आब स्पष्ट अछि?’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘प्रमाण देखबैत अछि जे नरेश हिसाबपर प्रश्न उठौने छलाह आ किछु लोक ओहि प्रश्नसँ असहज छल। मुदा हत्या करबाक निर्देश, घटनाक वास्तविक क्रम आ सहभागी व्यक्ति सभक भूमिका अलग स्थापित करबाक अछि।’’ रेखा कहलीह, ‘‘हम प्रतीक्षा करब। मुदा भैयाक नामपर झूठक दाग नहि रहय।’’ सुजाता हुनका भरोसा देलथिन जे प्रत्येक दस्तावेजक सत्यापनक नोंद राखल जा रहल अछि।

एहि बीच मनोजक वकील पुलिसक आर्थिक आरोपक किछु आधारपर आपत्ति दर्ज कएलनि। ओकर कहना छल जे रकम कम्पनीक नियमित ढुलाईक भुगतान छल, ओहिमे अपराधक उद्देश्य जोड़ब जल्दबाजी होयत। जाँच दल ओहि आपत्तिकेँ अभिलेखमे रखलक। सुजाता अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘जँ कम्पनीक नियमित भुगतान छल तँ कुन काम लेल, कोन ग्राहकक, कोन पावतीक आधारपर? एकर उत्तर देखब।’’ ओहि दिन एकटा बैंक-अधिकारी तिथिक मिलानक लेल नब प्रमाणित विवरण देलक। ओ विवरण किरणक कथनक एक भागसँ मेल खाइत छल, मुदा सम्पूर्ण योजना एखन ओकरासँ सिद्ध नहि होइत छल।

साँझक लग सुजाता, अरुण आ सरकारी विधिक अधिकारी बैसि तीनटा फाइल अलग-अलग देखलनि। पहिलमे नरेशक हत्या—वाहन, सम्भावित उद्देश्य, गवाही आ चिकित्सकीय निष्कर्ष। दोसरमे रोजगार-ठगी आ श्रमिक-शोषण—पूनम सहित पीड़ितक बयान, नियुक्तिपत्र आ भुगतान। तेसरमे अवैध शराब आ आर्थिक संरक्षणक शक—गोदाम, पावती, चौकी-पञ्जी आ तस्करीक प्रवाह। सुजाता कहलीह, ‘‘एक्के नाम अलग फाइलमे आएब सम्भव अछि, मुदा एक फाइलक कमजोरी दोसरक अनुमानसँ नहि भरब।’’ एहि अनुशासनसँ जाँच धीमा लागैत छल, मुदा मुकदमाक असली मजबूती एही मे छल।

विधिक अधिकारी किरणक कथनक विश्लेषण करैत कहलनि जे तकर स्वतन्त्र पुष्टि लेल मूल स्वीकृतिपत्र, कार्यालयमे उपस्थितिक अभिलेख आ बैंकक भुगतानक श्रृंखला चाही। सुजाता कहलीह, ‘‘एहि सभक विधिसम्मत प्राप्ति लेल जे आदेश चाही, से तैयार करू। विभाक कागजक सूची सेहो जोड़ू।’’ अरुण पूछलनि, ‘‘रतनक अगिला बयान कखन?’’ ‘‘जखन प्रश्नसभ तैयार भऽ जाएत आ कानूनी प्रक्रिया पूरा होयत,’’ सुजाता कहलीह। ‘‘प्रसिद्धि वा दबाव जाँचक समय निर्धारित नहि करत।’’ एखन एकटा व्यक्तिक गिरफ्तारी भऽ चुकल छल, मुदा दोसरा व्यक्तिक विरुद्ध कार्रवाईक आधार बनबामे प्रत्येक नब कागजक महत्त्व छल।

किरण घर घुरलीह तँ साँझक रोशनी ओहि खूँटीपर पड़ि रहल छल जतय दिनेश अपन झोरा टाँगैत छलाह। ओहि ठाम एखन किछु नहि छल। किरण रसोईमे चुल्हि जरौलथिन, दू लोकक बदला एक लोकक लेल भात चढ़ौलथिन। दिनेशक फोन करबाक मन भेलनि, मुदा ओ अपन सफाइक लम्बा सन्देश नहि पठौलथिन। केवल ऋणक कागजक स्थिति लिखलथिन—‘‘प्रमाणित प्रति भेटतहि पहुँचा देब।’’ हुनका एखन बुझाइत छल जे सम्बन्धक अपराध-बोधक भरपाइ एकटा बयानसँ नहि होयत। मुदा आजु ओ अपन निजी लज्जाकेँ सार्वजनिक तथ्य छिपेबाक साधन नहि बनौने छलीह।

नैनाक घरे अभय अएलाह तँ सरस्वती देवी पूछलथिन, ‘‘एतेक कागज आ थाना-कचहरीक बाद न्याय भेटत कि नहि?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘एखन कहब कठिन अछि, काकी। मुदा जकर कथन दर्ज भऽ रहल अछि आ जकर कागज जाँचल जा रहल अछि, ओ सभ एक दिन अदालतमे परखल जाएत।’’ नैना कहलीह, ‘‘हमरा ई जानि कऽ सन्तोष अछि जे पूनमकेँ अपन बात अपन स्वरमे कहबाक अवसर भेटल।’’ चन्दन चुपचाप सुनैत

छल। ओकर मनमे सेहो अपन बयानक कारणक चिन्ता छल, मुदा ओ बुझि रहल छल जे एहि घरक कियो न्यायकेँ केवल अपन लाभक रूपमे नहि देखैत अछि।

देरि राति सुजाता घर जाएबाक पहिने मेजपर नब दस्तावेजक सूची फेर पढ़लथिन। मनोजक गिरफ्तार भेलाक बाद सूचना देनिहार लोकक संख्या बढ़ल छल; किछु सही तथ्य दैत छल, किछु सुनल गप्प। किरणक न्यायिक कथनसँ किछु तिथि आ आदेशक स्रोत स्पष्ट होयबाक सम्भावना बनल। विभाक बैंक अभिलेख, नरेशक कापी आ पूनमक बयान अलग-अलग दिशा सँ एक्के आर्थिक व्यवस्थाक किछु हिस्सा देखबैत छल। तथापि सुजाता अन्तिम पाँतिमे लिखलथिन—‘आरोपीक भूमिकाक पुष्टि लेल स्वतन्त्र प्रमाण आवश्यक।’ ओ फाइल बन्द कएलथिन। अगिला दिन रतन सिंहसँ सम्बद्ध नब कारबाहीक प्रश्न सोझाँ छल।

पंचम भाग

बाँचल लोक

अध्याय ४९–६०

अध्याय ४९ : रतनक गिरफ्तारी

भोरक पहर सुजाता कुमारी अपन कार्यालयमे पहुँचलथिन तँ मेजपर राखल तीनू फाइलक ऊपर लाल कागजक एकटा पर्ची छल। अरुण रातिए किछु बैंक-विवरणक प्रमाणित नकल आनने छलाह। नरेश मण्डलक लिखल हिसाबमे जाहि भुगतानक आगाँ केवल ‘बाहरी सुविधा’ लिखल छल, ओकर वास्तविक प्राप्तकर्ताक नाम अलग निकलल। रतनक संस्थासँ निकलल रकम पहिने वीरेन्द्र निर्माण सेवाक खातामे गेल छल, तकर बाद किछु भाग मनोजक देखरेखवला ढुलाई-व्यवस्थामे पहुँचल छल। एकटा भुगतान पूनम आ अन्य श्रमिकक यात्राक तिथिसँ मेल खाइत छल। सुजाता अङ्कसभक बगलमे कियो जल्दबाजीमे लिखल ‘प्रमाण’ शब्द काटि देलथिन। अङ्कसँ सम्बन्ध देखाइत छल, उद्देश्यक पुष्टि एखन शेष छल।

अरुण कहलथिन, ‘‘किरणक बयानमे जे विशेष स्वीकृतिक उल्लेख अछि, बैंकक एहि पन्नापर ओही तिथि भेटैत अछि।’’ सुजाता पुछलथिन, ‘‘मूल आदेश पर केकर हस्ताक्षर अछि?’’ ‘‘कार्यालयक फाइलमे रतन सिंहक संक्षिप्त हस्ताक्षर अछि; बैंकक नकल प्रमाणित अछि।’’ ‘‘दुनूकेँ मिलायब। हस्ताक्षरक सम्बन्धमे जाँचक प्रतिवेदन एखन नहि आयल अछि,’’ सुजाता कहलीह। अरुण एकटा दोसर पन्ना आगाँ बढ़ौलनि। ओहिमे नरेश द्वारा भुगतान रोकबाक लिखित आग्रह छल। ओकर नीचाँ प्रबन्धनक टिप्पणी—‘भुगतान जारी राखू’। सुजाताकेँ याद पड़ल जे रेखा अपन भायक कापी देबाक समय कहने छलीह, ‘भैया कागज नहि छोड़ैत छलाह।’ आब ओहि सावधानीक महत्त्व धीरे-धीरे स्पष्ट भऽ रहल छल।

एकटा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन वाहनक जाँचसँ आएल। नहरक पुल लग देखल गेल पुरान मालवाहक गाड़ीक पाछाँक बत्ती बदलने मिस्त्री अन्ततः मूल बिलक रजिस्टर सहित उपस्थित भेल। ओकर कहब छल जे मनोजक आदमी गाड़ी रातिए दुरुस्त करएने छल, मुदा बिल दोसरा दिन लिखाओल गेल। मिस्त्रीक स्मरणक पुष्टि भुगतानक प्रविष्टि आ समानक

बिलसँ कएल गेल। गाड़ीक भीतरक परीक्षणमे नरेशक कपड़ासँ सम्बन्धित किछु सूक्ष्म सामग्रीक तुलना लेल प्रयोगशालाकेँ नमूना पठाओल गेल छल। ओकर निष्कर्षक सीमा स्पष्ट छल; एकटा गाड़ी घटनास्थल लग गेल, एतबामात्रसँ कियो हत्यारा नहि ठहरैत अछि। तथापि वाहनक विषयमे मनोज द्वारा देल पूर्व कथन आ अभिलेखक बीच अन्तर बढ़ल।

बैंकक शाखामे जे कर्मचारी रकमक विवरणक प्रमाणित प्रति देने छल, ओ जाँचदलसँ एकटा आवश्यक बात कहलक। कम्पनीक नियमित खातासँ भुगतान होयबाक अर्थ ई नहि जे प्रत्येक भुगतानक अन्तिम प्राप्तकर्ता कम्पनीक काजमे संलग्न छल। किछु रकमक स्रोतक अनुवर्ती हिसाब अलग बैंकमे छल। अरुण अन्य शाखासँ कागज मँगएबाक वैधानिक प्रक्रिया शुरू कएलनि। एतहि स्पष्ट भेल जे ‘ठीकेदारकेँ भुगतान’ लिखल एक पाँति बहुतो छोट-छोट लेनदेनक भीतर बँटल अछि। नरेश एहि बँटवारेक हिसाब मिलाएबाक प्रयत्न करैत छलाह। ओहि जिद्दकेँ कोनो सामान्य कार्यालयी झगड़ाक नाम देब आब कठिन होइत गेल।

सुजाता कानूनी अधिकारीक संग बैसलथिन। सोझाँ मनोजक गिरफ्तारीक कागज, किरणक न्यायिक कथनक उपलब्ध विधिसम्मत अंश, विभाक बैंक-सामग्री आ पूनमक बयानक पुष्टि करैत किछु बाहरी अभिलेख छल। ‘‘रतनक विरुद्ध गिरफ्तारीक आधार अलग शब्दमे लिखबाक अछि,’’ ओ कहलीह। ‘‘व्यवसायी होयब, किनकोसँ निजी सम्बन्ध राखब अथवा समाचारमे नाम आएब अपराधक प्रमाण नहि। मुदा जे आदेश आ भुगतानक स्रोत भेटल अछि, ओकर सम्बन्ध जाँचक विषय अछि। कागज नष्ट होयबाक आशङ्का आ साक्षीकेँ धमकी देबाक प्रयत्न सेहो अभिलेखमे अछि।’’ विधिक अधिकारी आवश्यक कानूनी प्रक्रिया आ अधिकारक सूची जाँचलनि। ओ सभ निर्णय लेलथि जे आधिकारिक अनुमति, समुचित नोंद आ प्रक्रिया पूरा कएलाक बादे कार्रवाई कएल जाए।

ओही समय रतन सिंह अपन घरक भीतरक कार्यालयमे बैसल छलाह। भित्तिपर पुरस्कार आ अभिनन्दनपत्र सजल छल; टेबुलपर आजुक अखबार खुलल छल। मुख्य समाचारमे हुनक संस्थाक नाम फेर आएल छल। ओ अखबार मोड़ि देलथिन। फोनपर वीरेन्द्र कहि रहल छल, ‘‘कागज सभ पुलिस लग पहुँचि गेल अछि। हम अपन हिसाब अलग रखब।’’ रतन स्वर कठोर कएलथिन, ‘‘अहाँक गाड़ी चलैत छल। ताहि हिसाबक उत्तर

अहाँकेँ देब पड़त।'' वीरेन्द्र थोड़े देरि चुप रहल, फेर कहलक, ''गाड़ी हमर, आदेशक लिखित प्रति अहाँक। दुनू अलग बात अछि।'' फोन कटि गेल। रतन पहिल बेर बुझलनि जे जकरा संग लाभ बाँटल छल, संकटमे ओही लोक अपन-अपन दुआरि बन्द कऽ रहल अछि।

विभा बैठकक दोसरा कात बैसल छलीह। रतन हुनका कहलथिन, ''बैंकक जे कागज अहाँ देने छी, ओकरा घुरेबाक व्यवस्था करू।'' विभा आँखि उठौलथिन। ''कागज हम बनौने नहि छी। हमर नामक उपयोग भेल, तकर उत्तर जानबाक हमरा अधिकार अछि।'' ''घरक बात बाहर पहुँचलाक दाम बुझैत छी?'' रतन पुछलथिन। ''घरक बात तखन रहैत जखन घरमे कहल जाइत,'' विभा उत्तर देलथिन। ''हमरा हस्ताक्षर जकरा पर नहि अछि, ओकरा पर हमर नाम किएक?'' रतन एहि प्रश्नक सोझ उत्तर नहि देलथिन। बरामदामे दुनूक बीच चुप्पी पसरि गेल। विभा उठि अपन कोठरी दिस चलि गेलीह। ओ पतिक गिरफ्तारी चाहैत नहि छलीह; ओ केवल अपन नाम आ जीवनपर फेर अपन अधिकार चाहैत छलीह।

विभा अपन कोठरीमे पुरान अलमारी खोललथिन। विवाहक आरम्भमे रतन जे छोट व्यापार चलबैत छलाह, ओकर प्रथम खाताबही ओ एखनहुँ सम्भारि रखने छलीह। ओहि समय दुनू मिलि दुकानक रोजक बिक्री गनैत छलाह। बादमे व्यापार बढ़ल, घरक कागज बढ़ल, मुदा विभाकेँ प्रत्येक निर्णयसँ दूर कएल गेल। हुनक हस्ताक्षर केवल औपचारिक मानि मँगल जाइत छल। आब अपन नामपर निकलल रकमक नकल देखि हुनका ई दूरीक अर्थ बुझायल। ओ सोचलथिन, पति जेल जएताह कि जमानतपर छूटताह, से अदालतक बात; मुदा भविष्यमें अपन हस्ताक्षर बिना पढ़ने कतहु नहि करब। एहि निर्णयमे क्रोधसँ बेसी लम्बा अपमानक थकान छल।

दुपहरसँ पहिने पुलिसक वाहन फाटक लग आएल। सुजाता स्वयं उपस्थित छलीह; संगमे महिला अधिकारी आ अन्य कर्मचारी छलाह। रतन बाहर निकललाह तँ पहिने अपन वकीलकेँ फोन कएलनि। सुजाता हुनका कार्रवाईक आधार आ अधिकारक विषयमे स्पष्ट सूचना देलथिन। ''एहि मामलेमे आवश्यक विधिक प्रक्रिया पूरा कऽ अहाँकेँ गिरफ्तार कएल जा रहल अछि। अहाँ अपन अधिवक्तासँ सम्पर्क रखि सकैत छी; चिकित्सकीय आवश्यकता होय तँ बताउ,'' ओ कहलीह। रतन पूछलनि, ''अहाँ हमरा अपराधी मानि लेने

छी?'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''गिरफ्तारी आ दोषसिद्धि अलग बात अछि। अदालत निर्णय करत। एखन जाँचक आधारपर कानूनक अनुसार ई कार्रवाई अछि।''

गिरफ्तारीक प्रक्रिया आरम्भ होयबासँ पहिने एकटा कर्मचारी घरक पिछिला बरामदासँ दौड़ैत अएल। ओकरा सुनल गेल छल जे कार्यालयक किछु कागज सुरक्षित ठाम पठाएबाक अछि। सुजाता शान्त स्वरमे पुछलथिन, ''के कहने छल?'' कर्मचारी अनिश्चित छल, मुदा ओकर कथन दर्ज कएल गेल। अधिकारी स्पष्ट कएलथिन जे जे अभिलेखक विषयमे वैधानिक आदेश जारी अछि, तकरा नियमानुसार प्रस्तुत करब आवश्यक अछि। रतन तत्काल विरोध करैत कहने छलाह, ''एतय हमर निजी चीज सेहो अछि।'' सुजाता उत्तर देलथिन, ''निजी वस्तुक अधिकारक सम्मान रहत। प्रत्येक प्राप्त वस्तुक सूची, कारण आ पावती बनत।'' एहि सावधानीसँ घरक लोकक भय थोड़े घटल।

फाटकक बाहर किछु कर्मचारी आ पड़ोसी जमा भऽ गेलाह। कियो मोबाइल उठा लेलक, कियो अपन बच्चाकेँ भीतर बजा लेलक। रतनक सुरक्षाकर्मी हल्ला करबाक प्रयास केलक, मुदा सुजाता ओकरा शान्त रहबाक कहलथिन। ''कारबाहीमे बाधा नहि दिअ; ककरो अपमान करबाक सेहो आवश्यकता नहि,'' ओ कहलीह। रतन अपन कागजक छोट झोरा वकीलकेँ देबाक चाहलथिन, मुदा अधिकारी विधिसम्मत परीक्षणक विषयमे पहिले बतौलथिन। आवश्यक वस्तुक सूची बनल, प्राप्तिक पावती देल गेल। विभा एकटक देखैत रहलीह। हुनका आश्चर्य नहि, बल्कि भीतर किछु टूटि गेल होएबाक अनुभूति भेल। एतेक दिन परिवारकेँ बचेबाक नामपर जे-जे बात चुप रहि सहने छलीह, से सभ आब सार्वजनिक दुआरिपर आबि ठाढ़ भेल छल।

रतन गाड़ीमे बैसबाक समय एक बेर घरक ऊँच फाटक दिस तकलथिन। एहि फाटकपर नगरक नेता, व्यापारी आ अधिकारी स्वागत लेल अबैत छलाह। आइ एतहि कानूनी सूचनाक आवाज छल। ओ विभाकेँ कहबाक चाहलथिन—'सब ठीक भऽ जाएत'—मुदा विभाक चेहरा देखि शब्द रोकि लेलथिन। ओ ककरो आश्वासन नहि चाहैत छलीह, जकर आधार फेर झूठ हो। फाटक बन्द भेलाक बाद विभा सेविकासँ कहलीह, ''भीतरक सभ

कागज क्रमसँ राखू। ककरो किछु नष्ट नहि करबाक अछि।'' घरक भित्तिपर पुरस्कार एखनो चमकि रहल छल, मुदा ओहि चमकसँ घरक कठिन प्रश्नक उत्तर नहि भेटैत छल।

थानामे रतनक उपस्थितिक समय दर्ज कएल गेल। वकील आएलाह आ गिरफ्तारीक कारण, अभिलेखक उपलब्धता आ अभियोगक विषयमे जानकारी माँगलनि। सुजाता हुनका वैधानिक प्रक्रियाक अनुसार उत्तर देलथिन। मनोजक संग रतनकेँ आमने-सोझाँ बैसाकऽ अनौपचारिक दबाव बनएबाक प्रस्ताव कियो देलक, मुदा सुजाता अस्वीकार कएलथिन। ''जे पूछबाक अछि, व्यवस्थित रूपमे पूछू; साक्षी आ अभियुक्तक अधिकारक उल्लङ्घनसँ सत्य नहि भेटत,'' ओ कहलीह। रतन अनेक भुगतानक निर्णय अपन कर्मचारीक जिम्मेवारी बतौलथिन। जखन मूल अनुमोदनक विषय उठल, ओ कहलीह जे कागज देखला बिना उत्तर नहि देब। हुनक एहि आग्रहक नोंद कएल गेल।

भानु प्रतापक चौकीसँ आएल एकटा पुरान पञ्जीक नकलकेँ अरुण फेर जाँचलनि। ओकर दू पन्नापर समयक सुधार अलग कलमसँ कएल गेल छल। चौकीक कर्मचारीक कहब छल जे रातिक गश्तक समय बादमे ठीक कएल गेल। सुजाता कहलथिन, ''सुधारक कारण लिखित मँगाउ। केवल अलग स्याही देखिकऽ भ्रष्टाचार घोषित नहि करब।'' ओहि चौकीसँ सम्बन्धित नेता जगदीशक फोनक विषयमे सेहो अफवाह चलैत छल। सुजाता अलग अनुसन्धानी प्राधिकारकेँ आवश्यक अभिलेख उपलब्ध करएबाक प्रक्रिया परामर्शसँ तय कएलथिन। जाँचक सीमा बढ़ैत छल, मुदा प्रत्येक नब नामक संग उत्तरदायित्वक माँग सेहो बढ़ैत छल।

बाहर समाचारक भीड़ बढ़ि गेल छल। अभय अपन समाचारक पहिल पाँति लिखैत रुकलाह। अखबारक सम्पादक फोनपर पूछलनि, ''बड़का शीर्षक चाही। शहरक दानवीर पकड़ायल—ई चलत?'' अभय उत्तर देलनि, ''गिरफ्तार भेलाह लिखू। 'दानवीर' आ 'अपराधी' दुनू शब्द अदालतक निर्णय नहि। जाँचमे की आरोप अछि, ओहि बारेमे स्पष्ट लिखब।'' सम्पादक अधैर्य भेलाह, मुदा अभय प्रमाणित सूचना छोड़ि नाटक नहि बनौलनि। ओ अपन समाचारमे मनोजक पूर्व गिरफ्तारी, श्रमिकक बयान आ संस्थाक वित्तीय जाँचक सम्बन्ध बतौलनि; पूनमक व्यक्तिगत चिकित्सकीय विवरण प्रकाशित नहि कएलनि।

अभयक सहकर्मी एकटा सन्देश देखौलनि जाहिमे नैनाक फोटो जोड़ि लिखल छल जे ओ रतनक कार्यालयसँ धन लऽ चुप भऽ गेलीह। अभय सन्देश पढ़ि हँसलाह नहि। ‘‘ई सरासर झूठ अछि,’’ ओ कहलनि। ‘‘सामाजिक माध्यममे जे चलैत अछि, ओकर मूल स्रोत जानि कऽ मात्र समाचार बनाउ।’’ सहकर्मी पूछलनि जे नैनासँ प्रेमक सम्बन्ध हुनक निष्पक्षतापर प्रश्न उठाओत कि नहि। अभय स्वीकार कएलनि जे व्यक्तिगत सम्बन्धक कारण अपन समाचारक सत्यापन दोसर सम्पादकीय सहयोगीसँ सेहो करब आवश्यक अछि। ओ नैनाक नामक रक्षा लेल तथ्य नुकेबाक नहि चाहैत छलाह; हुनका चाही छल जे समाचारक विश्वसनीयता ककरो निजी सम्बन्धपर निर्भर नहि रहय।

नैनाकेँ समाचार कुसुमक फोनसँ भेटल। कुसुम कहलीह, ‘‘एखन कार्यालयमे सभ हल्ला करैत अछि। कियो कहैत अछि वेतन आब नहि भेटत, कियो कहैत अछि मालिक दोसरा नामसँ फेर दोकान खोलताह।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘अहाँ सभक नियुक्तिपत्र, वेतनक पावती आ उपस्थितिक प्रमाण अछि?’’ ‘‘किछु अछि, किछु मालिकक अलमारीमे,’’ कुसुम कहलथिन। नैना हुनका तुरन्त कोनो ताला खोलबाक वा कागज चोरेबाक सलाह नहि देलथिन। ‘‘जे अपन वैध प्रति अछि, ओकरा सुरक्षित राखू। बाँकी लेल लिखित माँग करू। गिरफ्तारीसँ कर्मचारीक अधिकार समाप्त नहि होइत अछि,’’ ओ कहलीह। फोन कटिते सरस्वती देवी पुछलथिन, ‘‘रतन पकड़ा गेलाह?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘हँ, मुदा मामला एखन अदालतमे जायत।’’

चन्दन एहि समाचारपर चुप रहल। ओकरा याद आएल जे ओहि राति मनोज कहने छल, ‘गाड़ी खाली अछि, चल।’ खाली गाड़ीक अर्थ ओ नहि पुछने छल, मुदा बादक घटनासँ अपन मौनक भार बुझि रहल छल। ‘‘दीदी, हम पुलिसक लग फेर जाउ?’’ ओ पुछलक। नैना कहलीह, ‘‘जे किछु नब याद पड़ल अछि, सही रूपमे बताउ। मुदा अपना बचाव लेल अनुमान नहि जोड़िह।’’ चन्दन अपन पुरान डायरी खोललक। ओहिमे एकटा स्थानक नाम अपूर्ण लिखल छल। ओकरा याद नहि छल जे ओ गाड़ीक मार्ग छल कि मनोजक फोनपर सुनल ठाम। ओ ओकरा स्पष्ट अनिश्चितता सहित अलग पन्नापर लिखलक। पहिने ओ

अपराधक डरमे सत्य नुकबैत छल; आब सत्यक नामपर कल्पना जोड़बासँ सेहो बाँचय चाहैत छल।

चन्दनक ऋणदाता ओहि दिन फेर फोन केलक। ‘‘तोहर मालिक पकड़ा गेल, हमर पैसा कोना भेटत?’’ ओ पुछलक। चन्दन उत्तर देलक जे जे ऋण व्यक्तिगत रूपसँ लेने अछि ओकर हिसाब अलग अछि; अपराधक जाँचक कारण ओ ऋणसँ मुक्त नहि भऽ सकैत। ऋणदाता दोसर काज करबाक सलाह देलक, मुदा ब्याजक हिसाब घटेबाक बात नहि मानलक। चन्दन नैनाकेँ कहल, ‘‘हम कखनो सोचने नहि रही जे एकटा गलत ढुलाईक असर एतेक दिन रहत।’’ नैना ओकरा सहारा देलीह, मुदा स्पष्ट कएलथिन जे पुनः कामक खोजकेँ स्थगित कऽ देब समाधान नहि। मायक औषधिक खाली पत्ता टेबुलपर राखल छल; घरक वास्तविक समय ककरो अदालती समयक प्रतीक्षा नहि करैत छल।

नरेशक बहिन रेखाकेँ एकटा सहकर्मी दौड़ैत आबि गिरफ्तारीक खबरि देलक। रेखा ओहि समय माय लेल भात परोसि रहल छलीह। सहकर्मी कहलनि, ‘‘आब तऽ न्याय भेटि गेल।’’ रेखा थारी रखैत उत्तर देलथिन, ‘‘भैया फेर नहि घुरताह। आ मामला एखन सिद्ध होयबाक अछि।’’ माय पुछलथिन, ‘‘हमर बेटाक नाम सभ कागजमे ठीक लिखल अछि ने?’’ रेखा माथ हिलौलथिन। हुनका लग जीतक कोनो उत्सव नहि छल। बस एतबा राहत छल जे नरेशक उठाओल प्रश्नकेँ आब कियो कार्यालयक सामान्य झगड़ा कहि नहि टारि सकत।

रेखा अपन भायक पुरान सहकर्मी शान्तिसँ बात कएलथिन। शान्ति कहलीह जे नरेश कार्यालयक नाम खराब करबाक लेल प्रश्न नहि उठबैत छलाह। ‘‘ओ कहैत छलाह—नोकरीक नामपर जमा भेल पैसा केकर अछि, एक-एक हिसाब स्पष्ट रहबाक चाही,’’ ओ सुनौलथिन। रेखा पुछलथिन जे ई बात पुलिसकेँ कहने छी कि नहि। शान्ति उत्तर देलीह जे औपचारिक बयान लेल बोलाओल गेल तँ प्रत्यक्ष सुनल बात कहतीह। रेखा हुनका भायक पक्षमे बढ़ा-चढ़ाकऽ किछु कहबाक आग्रह नहि कएलथिन। भायक स्मृति बचएबाक ई एकटा कठोर तरीका छल—ओहिमे झूठक सहारा नहि लेब।

पूनमकेँ सहायता केन्द्रमे महिला अधिकारी खबरि देलीह। ‘‘जाँचमे एकटा गिरफ्तारी भेल अछि,’’ ओ कहलीह, ‘‘अहाँक बयानक बाद किछु दस्तावेजक पुष्टि सेहो भऽ रहल अछि।’’ पूनम पुछलथिन, ‘‘की ताहिसँ हमरा सभक बकाया मजदूरी भेटि जायत?’’ अधिकारी स्पष्ट कहलीह जे क्षतिपूर्ति आ बकाया वेतनक प्रक्रिया अलग अछि। पूनम माथ झुकौलथिन। ‘‘हमरा ई नहि चाही जे हमर नामपर उत्सव करथि,’’ ओ कहलीह, ‘‘हमरा घर घुरबाक सुरक्षित बाट आ अपन कागज चाही।’’ सीमा हुनका नियत चिकित्सकीय भेटक सूचना देलीह। पूनमक लेल दूर बैसल रतनक गिरफ्तारीसँ बेसी महत्त्वपूर्ण आजुक ई साधारण निश्चितता छल।

साँझमे सुजाता तीनू जाँचदलकेँ फेर बैसलथिन। श्रमिक-शोषणक कागज, नरेशक हत्याक फाइल आ अवैध शराबक वित्तीय सूत्र अलग-अलग टेबुलपर रहल। वीरेन्द्रक नाम निर्माण-व्यवसायक वैध खातामे सेहो छल; ओकरा केवल परिचयक आधारपर अभियुक्त बना देबाक प्रश्न नहि छल। नेता जगदीश चौधरीसँ सम्बन्धित किछु फोन-सम्पर्कक उल्लेख आयल, मुदा ओहि सम्पर्कक विषयवस्तु स्पष्ट नहि छल। भानु प्रतापक चौकीक पञ्जीमे अनियमित प्रविष्टि परखब जरूरी छल। सुजाता कहलीह, ‘‘रतनक गिरफ्तारीसँ हमर काज आधा नहि घटल; आब हरेक आरोपक स्वतन्त्र परीक्षण आवश्यक अछि।’’ अरुण सहमति देलनि।

राति रतनक अधिवक्ता जमानतक प्रक्रिया आ आरोपक दस्तावेजक विषयमे आवश्यक सलाह देलनि। रतन एक बेर पुछलथिन, ‘‘जँ किरण अपन बात बदलिए देतीह?’’ अधिवक्ता उत्तर देलनि, ‘‘ककरो बयान बदलएबाक दबाव देबाक बातो नहि सोचू। अहाँक बचाव उपलब्ध प्रमाण आ कानूनसँ होयत।’’ रतन चुप भऽ गेलाह। एखन हुनका चारूकात जतेक कागज छल, ताहिमे किछु ओ स्वयं हस्ताक्षर केने छलाह, किछु लेल कर्मचारिक नाम आगाँ केने छलाह। सार्वजनिक सम्मानक पुरान फोटो हुनक स्मृतिमे चमकल, मुदा आजुक प्रश्न साधारण छल—के आदेश देने छल आ ओकर परिणाम की भेल। ओहि प्रश्नक उत्तर देब कठिन होइत गेल।

दोसरा भोर नवगढ़क सड़क पर पहिनेक जकाँ बस चलल, ठेला खुलल, बेरोजगार युवक पाँतिमे लगलाह। समाचारक पोस्टर पर रतनक चित्र छल, मुदा नई दिशा रोजगार केन्द्रक बाहर जमा आवेदकसभ अपन रसीदक रकम पुछैत छलाह। एकटा महिला कहलीह, ‘‘मालिक जेल गेलाह, हमर तीस हजार कतय गेल?’’ ओकर प्रश्न सुनि एकटा वृद्ध कर्मचारीक आँखि नम भऽ गेल। नगरकेँ गिरफ्तारीक समाचार भेटि चुकल छल, न्याय आ जीवनक रोजक हिसाब एखन बाँकी छल। सुजाता अपन कार्यालयमे अगिला दिनक जाँचक सूची खोललथिन। एहि सूचीमे पहिल पाँतिमे नरेशक हत्याक घटनाक्रमक प्रमाणक प्रश्न छल।

अध्याय ५० : हत्याक वास्तविकता

रतनक गिरफ्तारीक दोसर दिन सुजाता कुमारी नरेशक हत्याक फाइल अलग खोललथिन। रोजगार-ठगी आ अवैध ढुलाईक अभिलेखसँ हत्या करबाक सम्भावित कारण बुझाइत छल, मुदा ओ एखन घटनाक पूरा चित्र नहि छल। नरेश कखन घरसँ निकललाह, ककरा संग भेंट भेलनि, चोट कतय लागल, आ मृतदेह नहरक कात कोना पहुँचल—एहि चारि प्रश्नक उत्तर बिना मामला अदालतमे कमजोर पड़ि सकैत छल। सुजाता अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘अभियुक्त गिरफ्तार अछि, मुदा अपन जाँच एखन पहिले सँ बेसी सावधान होयबाक चाही। अनुमान जेतेक आकर्षक हो, तकरा प्रमाणक जगह नहि देब।’’ अरुण पहिल पन्नापर समयक क्रम बनएबाक शुरू कएलनि। नरेशक परिवारक प्रश्नक उत्तर खोजबाक क्रममे अनुसन्धानक कठिनाइ सोझाँ आबि रहल छल।

नरेशक बहिन रेखाकेँ फेर बजाओल गेल। एहि बेर पुलिस हुनकासँ कोनो सनसनीखेज विवरण नहि, सामान्य दिनचर्याक सूक्ष्म जानकारी माँगलक। रेखा बतौलथिन जे भैया ओहि सन्ध्या घर घुरबाक बात कहने छलाह, मुदा दुपहरमे एकटा फोनक बाद हुनक स्वर बदलि गेल छल। ‘‘ओ कहलनि जे भुगतानक मूल पावती लऽ कऽ ककरोसँ भेटबाक अछि,’’ रेखा कहलीह। ‘‘केकरा?’’ सुजाता पुछलथिन। ‘‘नाम नहि कहलनि। हम दोहराकऽ पुछलहुँ तँ कहलनि, ई कार्यालयक बात अछि।’’ रेखा अपन स्मरणक सीमा स्पष्ट रखलथिन। हुनका लग भाईक ओहि दिन पहिरल कमीजक रङ्ग याद छल, मुदा फोन पर बोलल प्रत्येक शब्द नहि। सुजाता एकरो लिखलथिन।

कम्पनीक पुरान चौकीदार दीनानाथ महीनासँ डेरायल छल। नरेशक मृतदेह भेटलाक बाद ओ अपन बयानमे केवल गाड़ीक आवाज सुनबाक बात कहने छल। आब मनोजक गिरफ्तारीक बाद ओ स्वयं थाना अएल। हाथमे मुड़ल गमछा छल; कियो देखत से भय। ‘‘हमर बेटा ओहि कम्पनीमे ठेका पर काज करैत अछि,’’ ओ पहिने कहलनि। ‘‘जँ हम

कहब तँ ओकर नोकरी चलि जायत।'' सुजाता कहलथिन जे गवाही दैत व्यक्तिक सुरक्षाक उपाय आ उपलब्ध कानूनी व्यवस्था हुनका बुझाओल जाएत, मुदा झूठ संरक्षणक आश्वासन नहि देल जा सकैत अछि। दीनानाथ बहुत बेर चुप रहल, फेर कहलक, ''हम जे देखलहुँ, से पहिने नहि कहलहुँ। हमर ई गलती छल।''

दीनानाथ थाना पहुँचबाक पहिने अपन घरमे बहुत देरि बैसल छल। पत्नी पुछने छलीह, ''एखन किएक जा रहल छह? घटना भेलाक ओतेक दिन बीत गेल।'' दीनानाथ उत्तर देलक, ''तखन हम डरि गेल रही। आब मुइल लोकक बहिन रोज थाना जाएत, आ हम देखल बात छिपा राखब?'' पत्नी ओकरा रोकिनी नहि, मुदा बेटाक काजक चिन्ता स्पष्ट कएलथिन। दीनानाथ गमछामे बाँधल पुरान ड्यूटी-पर्ची निकालयल, जाहिमे ओहि रातिक समय लिखल छल। ओ जानैत छल जे कागज सभ प्रश्नक उत्तर नहि, मुदा स्मरणक संग मिलान होयबाक एकटा आधार जरूर अछि।

दीनानाथक कथन छल जे ओहि राति गोदामक पिछिला कोठरीक बत्ती देरि धरि जरैत छल। नरेश भीतर गेल छलाह, हाथमे फाइल छल। किछु समयक बाद जोर आवाज आ ककरो 'पावती फिर्ता दिअ' कहबाक स्वर सुनाइ देलक। ओ दरबज्जाक कात पहुँचलक, मुदा मनोज ओकरा धक्का दऽ बाहर हटौललक। ''जखन हम फेर लग गेलहुँ, नरेश बाबू फर्शपर पड़ल छलाह,'' दीनानाथ कहलनि। ''मनोज कहलक—फिसलि पड़लाह, बाहर जा। हम चोट लगल माथ देखलहुँ।'' सुजाता पुछलथिन, ''की अहाँ मनोजकेँ मारैत प्रत्यक्ष देखलहुँ?'' दीनानाथ माथ झुकौलक। ''नहि। आवाज सुनलहुँ, पाछाँ चोट देखलहुँ। हमला आँखिसँ नहि देखल।''

एहि बयानक महत्त्व छल, मुदा सावधानी सेहो। पुलिस पुरान घटनास्थलक नमूना फेर जाँचक लेल प्रयोगशालाकेँ पठौलक। गोदामक पिछिला कोठरीमे रङ्ग फेर पोतल गेल छल, मुदा एकटा भारी अलमारीक पाछाँ भित्ति आ फर्शक जोड़मे पुरान जैविक चिह्न भेटल। वैज्ञानिक परीक्षण बिना ओकर स्रोत निश्चित नहि कएल जा सकैत छल। सुजाता कहलीह, ''जतय स्मरण अधूरा अछि, ओतय वैज्ञानिक निष्कर्षक प्रतीक्षा करू।'' दीनानाथक पूर्व बयान आ नब बयानक अन्तर सेहो दर्ज कएल गेल, जाहिसँ बचाव पक्ष ओकर

विश्वसनीयतापर प्रश्न उठा सकय। सत्यक पक्षमे ठाढ़ होयबक अर्थ कठिन प्रश्नसँ भागब नहि छल।

मनोजक अधिवक्ता उपस्थित छलाह जखन पुलिस नब अभिलेखसँ सम्बन्धित प्रश्न पूछलक। मनोज पहिने कहलक जे नरेशकेँ ओहि राति देखल नहि छल। किछु समयक बाद वाहन-पञ्जी आ दीनानाथक बयानक बात सुनि ओ कहलक, ‘‘ओ स्वयं गोदाम अएल छल, हमरा हिसाब देबाक छल।’’ सुजाता एहि दू कथनक अन्तर लिखौलथिन। ओ मनोजकेँ धमकी दऽ उत्तर नहि मँगलथिन। ‘‘कुन हिसाब?’’ ओ पुछलथिन। ‘‘रोजक ढुलाई,’’ मनोज कहलक। ‘‘कागज कहाँ अछि?’’ ‘‘कार्यालयमे होयत।’’ मूल फाइलक तिथि आ भुगतानक नाम देखौलाक बाद मनोज चुप रहल। ओकर चुप्पी अपराध-स्वीकार नहि छल; तथापि लिखित विवरणक अन्तर जाँचक दिशा तय करैत छल।

मनोजक भाय थाना बाहर प्रतीक्षा करैत छल। ओकरा लगैत छल जे पुलिस पैघ मालिककेँ बचएबाक लेल छोट आदमीपर सभ दोष देत। जखन रतनक गिरफ्तारीक बात ओ सुनलक, तबो ओकर शंका दूर नहि भेल। ओ अभयकेँ कहलक, ‘‘हमर भाय गलत काज केने हो तऽ सजा हो, मुदा जे आदेश देलक ओकर नामो सामने आबय।’’ अभय पूछलनि, ‘‘अहाँक लग प्रत्यक्ष जानकारी अछि?’’ भाय माथ हिलौलक। ‘‘नहि, ई हमर सन्देह अछि।’’ अभय ओहि बातकेँ समाचारमे आरोपक रूपमे नहि लिखलनि। न्याय केवल एकटा नाम चुनि सन्तोष पएबाक प्रक्रिया नहि छल।

ओही दिन नरेशक मृत्युक चिकित्सकीय प्रतिवेदनक पूरक व्याख्या जाँचदलकेँ भेटल। चिकित्सक स्पष्ट कएलथिन जे माथपर चोट मृत्युकारक होयबाक सम्भावना प्रबल अछि; मृतदेह नहरक कात भेटलाक अर्थ ई नहि जे पानीमे डूबि मृत्यु भेल। चोटक समय आ स्वरूपक सीमित वैज्ञानिक आकलन उपलब्ध छल, मुदा एकटा सटीक घड़ी नहि। सुजाता अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘एहि निष्कर्षकेँ दीनानाथक कथनक संग पढ़ू। जँ चोट गोदाममे लागल हो तँ नहर तक पहुँचाएबाक हेतु वाहनक भूमिका देखबाक पड़त।’’ अरुण गाड़ीक यात्रा-अभिलेख फेर खोललनि। एखन घटना टुकड़ा-टुकड़ामे जुड़ि रहल छल।

गाड़ीक बत्ती बदलने मिस्त्रीक बयान फेर सुनल गेल। एहि बेर ओकर सँग एकटा पुरान सहायता-कर्मी आएल जे ओहि दिन कारखानामे गाड़ी पहुँचने छल। ओ बतौलक जे नील तिरपालक किनारपर माटि आ पानीक दाग छल। ‘‘अहाँ किछु उठाकऽ देखलहुँ?’’ अरुण पुछलनि। ‘‘नहि। हम केवल बत्ती बदलबामे सहायता केने रही,’’ ओ उत्तर देलक। सुजाता ओहि साक्ष्यक सीमा स्पष्ट लिखौलथिन। गाड़ीक जाँचमे भेटल सामग्रीक प्रयोगशाला-प्रतिवेदन पूरा होयबाक समय निर्धारित कएल गेल। न्यायालयमे कियो कहि नहि सकय जे गाड़ीक रङ्ग आ तिरपालक आधारपर सम्पूर्ण घटना कल्पना कएल गेल।

सभ सँ कठिन प्रश्न रतनक आदेशक छल। किरण पहिने कहने छलीह जे नरेश लगातार मूल पावती माँगैत छलाह आ मालिक अप्रसन्न छलाह। मुदा अप्रसन्नता हत्याक आदेश नहि। रतनक व्यावसायिक फोनक जाँचमे ओहि सन्ध्या मनोजसँ लगातार तीन बेर सम्पर्कक समय भेटल। फोनक बातचीतक शब्द उपलब्ध नहि छल। भुगतानक सूचीमे रातिक ढुलाईक नामपर अप्रत्याशित अतिरिक्त रकम दर्ज छल। अरुण कहलथिन, ‘‘ई रकम हत्याक दाम भऽ सकैत अछि।’’ सुजाता रोकलथिन, ‘‘भऽ सकैत अछि, मुदा सिद्ध करबाक अछि।’’ ओ बिल बनौनिहार कर्मीक स्वतन्त्र बयान आ रकमक वास्तविक उपयोगक जाँचक आदेश देलथिन।

रतनक निजी वाहन चलबैत हरिहरकेँ भुगतान-पञ्जीक आधारपर पुलिस बजौलक। ओ कहलक जे नरेशक मृत्यु सँ एक दिन पहिने रतनक कोठरीमे मनोज उपस्थित छल। दरबज्जा आधा खुलल छल। हरिहर रतनक ई वाक्य सुनने छल—‘‘नरेशकेँ एखन चुप करा दिअ। ओ काल्हि जिअते ई कागज लऽ बाहर नहि जएबाक चाही।’’ सुजाता पूछलथिन, ‘‘अहाँ पूरा वाक्य सुनलहुँ?’’ हरिहर कहलक, ‘‘हँ। हम डरा कऽ हटि गेल रही।’’ ओहि सन्ध्या हरिहर अपन भायकेँ ‘मालिक बहुत बिगड़ल’ लिखि सन्देश पठौने छल। मूल सन्देशक तिथि जाँचल गेल। स्वतन्त्र सत्यापन बाँकी छल।

एहि बीच कम्पनीक पूर्व चालक चन्देश्वर महतो अपनेँ लिखित आवेदन देलक। पूर्वमे ओ भयक कारण किछु बात नहि कहने छल। आब ओकर बयानक अनुसार नरेशक गायब होयबाक राति ओ बकाया भाड़ाक हिसाब लेबय गोदामक बरामदामे ठाढ़ छल आ मनोजक

फोनपर किछु शब्द सुनने छल—‘मालिकक आदेश अछि, नरेशक फाइल बाहर नहि जाए’। चन्देश्वर स्पष्ट कएलक जे रतनक आवाज ओ स्वयं नहि सुनने छल। सुजाता ओकरा कहलथिन, ‘‘अहाँ जे मनोजक मुखसँ सुनलहुँ, ओतबे कहू। ‘मालिकक आदेश’ सही छल कि मनोज झूठ कहलक, ई जाँचक अलग प्रश्न अछि।’’ चन्देश्वर अपन पुत्रक नाम सुनि फेर डेरायल, मुदा बयानपर हस्ताक्षर कएलक।

चन्दनकेँ सेहो पुनः पुछल गेल। ओ अपन पुरान डायरीक अपूर्ण नाम पुलिसकेँ देखौलक। ‘‘ई नाम हम ओहि राति लिखने रही, मुदा किएक लिखने रही, निश्चित नहि,’’ ओ कहलक। सुजाता ओकरा अपन अज्ञान स्वीकार करबाक लेल दोष नहि देलथिन। फेर पुछलथिन, ‘‘मनोज अहाँकेँ कहिया गाड़ी छोड़बाक कहल?’’ चन्दन स्मरण कएलक जे ओ सड़कक मोड़ धरि गेल छल आ तकर बाद मनोज स्वयं गाड़ी लऽ गेल। ओकर कथनमे समयक किछु अन्तर छल; चौकीक पञ्जी आ मोबाइलक स्थानसम्बन्धी अभिलेखसँ ओहि अन्तरक जाँचक निर्णय भेल। चन्दन घर घुरैत समय अनुभव केलक जे अपन पुरान गलतीक साँच कहब सहज नहि, मुदा झूठ कहब आरो भयानक होयत।

नैनाकेँ चन्दनक फेर बयान देबाक बात जानि चिन्ता भेल। सरस्वती देवी पूछलथिन, ‘‘हमर बेटाकेँ अपराधी मानि लेत कि?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘ओ जे काज केलक, तकर जाँच होयत। मुदा जखन पुलिसकेँ गलत नहि कहत, तखन ओकरा अपना स्थितिक साँच बुझेबाक अवसर रहत।’’ अभय ओहि समय अएलाह। हुनका नैनासँ अलग बैसि बात करबाक इच्छा छल, मुदा परिवारक चिन्ता देखि चुप रहलाह। चन्दन कहल, ‘‘भैया, अहाँ अखबारमे हमर नाम नहि देब।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘तोर बयानक गोपनीयता आ मामला जाँचक अवस्था बुझैत छी। सनसनी लेल तोरा बेचब नहि।’’ एहि वाक्यसँ चन्दनक आँखिमे पहिल बेर किछु भरोसा आएल।

रतनक अधिवक्ता पूछताछमे दलील देलनि जे कम्पनीक अध्यक्ष प्रत्येक भुगतानक उद्देश्य नहि जानि सकैत छथि। सरकारी पक्ष मूल स्वीकृतिपत्र आ कर्मचारीक कथन प्रस्तुत करबाक तैयारी कएलक। एकटा कागजमे हस्ताक्षरक जाँचक निष्कर्ष, दोसरमे बैंकसँ निकलल रकमक क्रम, तेसरमे विशेष गोदामक पहुँचसम्बन्धी आदेशक जानकारी छल।

सुजाता विशेष कऽ ई जाँचलथिन जे कतहु पुलिसक अनुमानकेँ कागजक तथ्य बताकऽ नहि लिखल गेल अछि। ‘‘जँ आरोप होयत जे रतन हत्या करएबाक निर्देश देने छलाह, तँ निर्देशक भरोसेमन्द आधार चाही,’’ ओ कहलीह। ‘‘मनोज अपराधी होयबाक मात्र सँ मालिक स्वतः हत्याराक आदेशदाता नहि बनि जाइत छथि।’’

एकटा नब साक्ष्य अप्रत्याशित रूपसँ नहि, निरन्तर कागजी जाँचसँ भेटल। नरेशक छोट कापीमे एकटा नम्बरक कात लिखल ‘स्वीकृति रद्द’ शब्दक तिथि कार्यालयक मुख्य पञ्जीमे अनुपस्थित छल। कुसुम याद कएलथिन जे नरेश ओहि दिन मूल फाइल लऽ कऽ रतनक कोठरीमे गेल छलाह। कुसुम बैठकक भीतर नहि छलीह, मुदा बाहर निकलैत नरेशक मुख लाल देखल छल। रतन कहने छलाह, ‘‘एकटा कागज लेल हमरा सामने एतेक प्रश्न नहि उठाउ।’’ ई प्रत्यक्ष सुनल वाक्य छल। कुसुमक बयानसँ विवादक पुष्टि होइत छल, मुदा हत्याक आदेश एखनहुँ स्वतंत्र रूपेँ सिद्ध होयबाक छल।

गोदामक अलमारीक पाछाँसँ भेटल जैविक नमूनाक प्रारम्भिक परीक्षण नरेशक सम्बन्धित सन्दर्भ-नमूनासँ मेल खायबाक सङ्केत देलक; अन्तिम पुष्टिक आवश्यक परीक्षण शेष छल। सुजाता एकर महत्त्व बिना बढ़ौने अभिलेखमे लिखौलथिन। दीनानाथकेँ कहल गेल जे ओकर बयानक बारेमे ककरोसँ अनावश्यक चर्चा नहि करय। ओ थानासँ निकलैत कहलक, ‘‘नरेश बाबू हमरा बेटाक इलाजक समय एक बेर वेतन आगाँ दिलौने छलाह। हम ओकरा बचा नहि सकलहुँ।’’ सुजाता उत्तर देलथिन, ‘‘जे नहि देखलहुँ, तकर बोझ नहि उठाउ। जे देखलहुँ, ओ सही कहब आवश्यक अछि।’’ दीनानाथक आँखिसँ पानि बहि गेल।

प्रयोगशालाक अधिकारी फोनपर कहलथिन जे नमूनाक शृंखला सुरक्षित राखल गेल अछि, मुदा पुरान ठामसँ भेटल चिह्नक सम्बन्धमे दू प्रकारक जाँच अलग आवश्यक अछि। सुजाता तत्काल समाचार देबाक आग्रह नहि कएलथिन। ओ अरुणसँ पुछलथिन जे नमूना उठेबाक समयक फोटो आ हस्ताक्षरक रजिस्टर पूरा अछि कि नहि। अरुण सभ पन्ना मिलौलनि। ‘‘अदालतमे वैज्ञानिक सत्यक शक्ति तखन रहत जखन नमूना प्राप्ति आ

संरक्षणक बाट स्पष्ट हो,'' सुजाता कहलीह। एहि सूक्ष्म काजमे दुपहरक कतेको घंटा बीत गेल, जखन कि बाहर टीवीपर गिरफ्तारीक त्वरित निर्णय सुनाओल जा रहल छल।

रेखाकेँ जाँचक प्रगतिक सूचना भेटल। ओ पिताकेँ सभ तकनीकी बात नहि सुनौलथिन; केवल कहलथिन जे भायक मृत्युक घटनाक क्रम स्पष्ट होमय लगल अछि। पिता पुछलनि, ''ओ राति हमरा फोन किएक नहि केलनि?'' ई प्रश्नक उत्तर रेखा लग नहि छल। ओ पिताक कात बैसि हुनक काँपैत हाथ पकड़ि लेलथिन। घरक मेजपर नरेशक पुरान चश्मा राखल छल। मृत्युकर कारणक वैज्ञानिक विश्लेषणसँ हुनक चश्मा पहिरि अखबार पढ़बाक आदत घुरि नहि सकैत छल। मुदा साँचक आवश्यकता एतबे लेल छल जे ककरो दोसर घरमे एहन हत्या फेर सामान्य दुर्घटनाक नामपर नुकाएल नहि जाए।

विधिक अधिकारी हत्याक घटनाक सम्भावित क्रमक लिखित विवेचन बनौलनि। नरेश आर्थिक कागजात लेल गोदाम पहुँचलाह; ओतय विवाद भेल; माथपर हिंसक चोट लागल; मनोजक नियन्त्रणवाली गाड़ी मृतदेह नहरक कात पहुँचएबाक प्रयुक्त भेल; रतनक हिंसक आदेश हरिहरक प्रत्यक्ष बयानसँ सोझाँ आएल, जकर पुष्टि लेल फोन आ भुगतानक अभिलेख जुटाओल गेल। प्रत्येक कथनक बगलमे प्रमाणक प्रकार लिखल गेल—प्रत्यक्ष बयान, परिस्थितिजन्य तथ्य, प्रयोगशाला-जाँच अथवा एखन जाँचाधीन। अरुण पुछलनि, ''की एहि क्रमपर आरोप तय भऽ सकत?'' अधिकारी कहलीह, ''न्यायालय निर्धारित करत। हम अपन प्रकरण प्रमाणसहित रखब।''

विवेचनक बीच अरुण एकटा सावधानीक प्रश्न उठौलनि। ''दीनानाथ माथपर चोट देखल, मुदा नरेश मृत छलाह कि जीवित, ओ नहि जानैत छल। जँ चोटक बाद अस्पताल पहुँचेबाक प्रयास भेल हो तँ?'' सुजाता तत्काल चिकित्सकीय समय-सीमा आ उपलब्ध कॉल-अभिलेखक मिलान करबाक कहलथिन। पञ्जीमे कोनो आपातकालीन उपचारक सूचना नहि भेटल, मुदा एहि अनुपस्थितिसँ अपनेँ अन्तिम अर्थ निकालल नहि गेल। जाँचदल प्रत्येक विकल्प जाँचैत रहल। एहि क्रममे हत्या करबाक उद्देश्य, कर्ता आ मृतदेह हटएबाक प्रयासक व्याख्या क्रमशः मजबूत भेल, मुदा एकरेखीय कल्पना पर निर्भर नहि रहल।

साँझमे सुजाता रतनक पूछताछक नोट फेर पढ़लथिन। रतन कहने छलाह जे नरेशक संग मतभेद जरूर छल, मुदा ओकर मृत्यु चाहने नहि छलाह। मनोज सेहो हत्या अस्वीकार करैत छल। अभियुक्तक इन्कार दर्ज रहनाइ जरूरी छल। तहिना दीनानाथक डेराएल मौन आ चन्देश्वरक देरिसँ सोझाँ आएल कथनक कारण सेहो अभिलेखमे छल। एहि विरोधक बीच सुजाता धीरे-धीरे अपराधक वास्तविकता बुझि रहल छलीह, मुदा न्यायिक निर्णयसँ पहिने घोषणा करबाक अधिकार हुनका नहि छल। हत्याक बात आब खाली अफवाह नहि रहल, तथापि अन्तिम न्याय लेल लम्बा बाट छल।

अभय समाचारमे लिखलनि जे जाँच गोदाम, वाहन आ वित्तीय अभिलेखक बीच सम्बन्ध स्थापित करबाक दिशा मे बढ़ि रहल अछि। ओ मृत्युक सम्भावित क्रमक अति सूक्ष्म विवरण सार्वजनिक नहि कएलनि, जाहिसँ साक्षीक सुरक्षापर सङ्कट नहि आए। सम्पादक फेर पूछलनि, ‘‘लोक स्पष्ट उत्तर चाहैत अछि।’’ अभय कहलनि, ‘‘स्पष्ट उत्तरक अर्थ अनुमानक अंतिम घोषणा नहि।’’ ओ लेखक अन्तमे नरेशक परिवारक एहि प्रश्नकेँ स्थान देलनि जे कम वेतन पर हिसाब करयवाला कर्मचारीक सुरक्षा ककर जिम्मेवारी छल। पाठककेँ हत्या केवल रहस्य नहि, श्रम आ शक्तिक असमान सम्बन्धक घटना रूपमे देखबाक अवसर भेटल।

देरि राति अरुण सुजाताकेँ एकटा अंतिम सूची देखौलनि। हत्याक दिनक फोन-सम्पर्क, गोदामक पहुँच, नरेशक माँगल मूल भुगतान, वाहनक रवानगी आ चिकित्सकीय प्रतिवेदन —सभक पुष्टि समान गम्भीरतासँ कएल जा रहल छल। सुजाता कहलथिन, ‘‘आब आगाँक जाँचमे कोनो साक्षीकेँ अपन भयक कारण बयान बदलबाक स्थिति नहि होयबाक चाही।’’ पाछाँक फाइलमे पूनमक बयान सुरक्षित छल। नरेश हिसाबक भेद खोलबाक प्रयास करैत छलाह; पूनम नोकरीक नामपर शोषण सहने छलीह। दुनू घटना अलग छल, मुदा ओहि व्यवसायिक जालक भीतर लोकक जीवनकेँ साधन मानबाक प्रवृत्ति एक्के छल। सुजाता दीपक बन्द कऽ बाहर निकललीह।

अध्याय ५१ : बन्द कार्यालय

नई दिशा रोजगार केन्द्रक फाटकपर जे दिन ताला लागल, ओ दिन भोरसँ लोक जमा होमय लागल छल। फाटकक भीतर सूचना-पट्टपर पुरान विज्ञापन एखनो टाँगल छल—प्रशिक्षण, नियुक्ति, सुनिश्चित भविष्य। ओकर ठीक नीचाँ नब कागज चिपकल छल जे सम्बन्धित जाँच आ प्रशासनिक कारबाहीक कारण कार्यालयक नियमित संचालन स्थगित अछि। कागजमे शिकायत देबाक स्थान आ समय लिखल छल, मुदा जमा कएल धन कखन भेटत तकर कोनो वचन नहि। एकटा युवक विज्ञापन पढ़ि कहलक, ‘‘जखन टका लेलक तखन दू दिनमे नौकरी कहने छल। आब कागज कहैत अछि प्रतीक्षा करू।’’ ओकर संग आयल पिता बगलक भित्तिपर हाथ रखि चुप भऽ गेलाह।

कुसुम सबेरे फाटकपर पहुँचल छलीह। हुनक हाथमे उपस्थितिक फोटोकॉपी, तीन मासक वेतन-पर्ची आ एकटा छोट थैला छल। ओहि थैलामे ओ अपन दोसर कर्मचारीक नामक सूची राखने छलीह। पुलिसक जाँचमे किछु अभिलेख विधिसम्मत सुरक्षित कएल गेल छल; भवनक मालिक सेहो भाड़ाक बकायाक कारण भीतरक सामान्य काज रोकि देने छल। कुसुम फाटक लगक पहरेदारसँ पुछलथिन, ‘‘हमर वेतनक कागज जे भीतर अछि, ओकर प्रमाणित नकल ककरासँ माँगू?’’ पहरेदार स्पष्ट उत्तर नहि दऽ सकल। ओ केवल लिखित आवेदनक विषयमे कहलक। कुसुम पहिल बेर बुझलीह जे नौकरी समाप्त होयबाक सूचना आ बकाया मजदूरीक प्रमाण जुटाएब दू अलग संघर्ष अछि।

फकीरा सेहो आएल छल। ओकर दू मासक मजदूरी अटकल छल आ घरमे छोट पोतीक विद्यालय-शुल्क देबाक समय आबि गेल छल। ओ कुसुमकेँ कहलक, ‘‘हमर उमेरमे दोसर कारखाना ककरा लग भेंटत? हम कोनो झूठ नियुक्तिपत्र नहि बनौने रही। गोदाम झाड़ैत रही, बोझ उठबैत रही। आब मालिकक नाम सुनि कियो काजो नहि दैत अछि।’’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘‘हम सभ अपन-अपन वेतनक कागज मिलाबी। जँ एकटा लोक अकेले

जायत तँ सुनब कठिन होयत।'' फकीरा अपन पुरान पावती जेबीसँ निकाललक। किनारपर तेलक दाग छल, मुदा ओकर नाम आ देबाक रकम साफ लिखल छल।

इमरानक स्थिति भिन्न छल, कठिनाइ एक्के। ओ गोदाममे सामानक गिनती करैत छल; नरेशक हत्या होयबाक बादसँ ओ पुलिसकेँ ढुलाईक सामान्य प्रविष्टि देबाक लेल तैयार छल। ''हमरो पुछैत अछि जे पुलिसकेँ की कहने छी,'' ओ कुसुमसँ कहलक। ''आब हर दोकानदार सोचैत अछि जे हम अपराधक संग रही।'' कुसुम पुछलथिन, ''तोँ जे देखलह, से लिखित देने छह ने?'' ''हँ। मुदा काज लेल दोसर ठाम जखन जाउ, तखन पहिने पुरान कम्पनीक नाम सुनि दरबज्जा बन्द कऽ दैत अछि।'' फकीरा कहल, ''साँच कहबासँ नाम खराब नहि होयबाक चाही, मुदा दुनियाँमे नामक हावा बेसी चलैत अछि।'' तीनू फाटकसँ हटि सड़कक कात बैसि आवेदनक तरीका सोचलनि।

दुपहर धरि ठगीक शिकार आवेदकसभक पाँति लम्बा भऽ गेल। सविता कुमारी अपन पुरान कापी लऽ अएलीह। ओ स्वयं प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी करैत छलीह; परीक्षा रद्द भेलाक बाद घरक खर्च चलएबाक लेल एक बेर एहि रोजगार केन्द्रमे आवेदन देने छलीह, मुदा शुल्क देबाक पहिने शर्त जाँचि रुकि गेल छलीह। आब ओ दोसरा अभ्यर्थीसभकेँ रसीद, विज्ञापन, बैंकक भुगतान आ प्राप्त सन्देशक नकल अलग-अलग राखबाक सलाह दैत छलीह। एकटा वृद्ध अपन बेटाक फोटो देखबैत पूछलनि, ''जे कोनो कागज हमरा लग नहि अछि, ओकर की होयत?'' सविता कहलथिन, ''जे प्रमाण अछि से सुरक्षित करू; जे नहि अछि, ओकर विषयमे साँच लिखू। झूठ रसीद बना लेब सँ स्थिति बेसी बिगड़त।''

पाँतिमे ठाढ़ एकटा महिला अपन कागजक गड्डी नैनाकेँ देखौलथिन। हुनक बेटा सिलाई-कारखानामे नौकरीक आशामे पाँच बेर नगर गेल छल, प्रत्येक बेर नब परीक्षा वा प्रशिक्षणक नामपर अतिरिक्त खर्च भेल। ''एतबा रकम हम सूदपर लेने रही,'' महिला कहलीह। ''आब जे ठगी कएलक, ओ जेलमे जायत, मुदा साहूकार हमर दुआरि रोज बजाओत।'' नैना हुनका समीपक वैधानिक सहायता-केन्द्रक पता लिखि देलथिन। ओ आर्थिक सहायता देबाक सामर्थ्य नहि रखैत छलीह, मुदा महिला अपन दुःखक कागज बिना अपमानक देखेबाक ठाम पाबि थोड़ेक शान्त भेलीह।

नैना ओहि भीड़मे पहुँचलथिन तँ कतेको लोक हुनका घेरि लेलक। कियो पूनमक समाचार पुछैत छल, कियो जमा राशिक हिसाब। नैना कहलीह, ‘‘हम कम्पनीक मालिक नहि रही। नियुक्ति आ रसीदमे जे असङ्गति देखलहुँ, ओकर जानकारी दऽ चुकल छी। एखन आवेदन देबाक प्रक्रिया बुझा सकैत छी, मुदा धन घुरेबाक दिन नहि बता सकैत छी।’’ एकटा युवक रोषमे कहलक, ‘‘अहाँ भीतर काज करैत रही, हम सभ बाहर ठाढ़ रही। तखन किएक नहि रोकलहुँ?’’ नैना ओकर आवाज सुनि विचलित भेलीह। ‘‘जे बात हम जानैत छलहुँ से समयपर कहलहुँ कि नहि, ओकर प्रश्न अहाँ उठाउ,’’ ओ उत्तर देलथिन। ‘‘मुदा जे झूठ हमर नामपर कहब, ओ नहि स्वीकार करब।’’ युवकक क्रोध तुरन्त नहि घटल; तथापि ओकरा पंजीकरणक सही ठामक जानकारी भेटल।

अभय एकटा कात ठाढ़ नोट लिखि रहल छलाह। समाचारक लेल ओ केवल भीड़क संख्या नहि, बेरोजगार कर्मचारी आ ठगीक शिकार आवेदकक अन्तर बुझबाक प्रयास करैत छलाह। फकीरा कहल, ‘‘हमरा सभक चेहरा छापब तँ दोसर मालिक फेर डरि जायत।’’ अभय पूछलनि, ‘‘अहाँ चाहैत छी जे नाम नहि आए?’’ फकीरा माथ हिलौलक। अभय बिना अनुमति तस्वीर नहि लेलनि। ओ नामक बदला कार्यक प्रकार आ बकाया वेतनक विवरण लिखलनि। कोनो महिला अपन बेटीक जमा राशि बतबैत रो पड़लीह। अभय हुनका पानि देबाक कहलक, नोटबुक बन्द कऽ किछु देरि केवल सुनैत रहलाह। समाचारक तथ्यमे मनुष्यक थकान लेल सेहो ठाम चाही, ओ बुझैत छलाह।

भवनक मालिक अपन अधिवक्ता संग अएलाह। ओ कहलनि जे संस्थाक भाड़ा बहुत दिनसँ बाँकी छल, एखन भीतर रखल सामानक विषयमे कानूनी स्थिति स्पष्ट होयबाक आवश्यकता अछि। भीड़मे कियो चिचियायल, ‘‘कुर्सी बेचि हमर टका दिअ!’’ अधिकारी सभकेँ बुझौलथिन जे जाँचक अभिलेख, भाड़ाक विवाद, कर्मचारिक वेतन आ आवेदकक दावाक कानूनी प्रक्रिया अलग-अलग अछि। ताला तोड़ि सामान बाँटि देनाइ समाधान नहि। ई उत्तर सुनि लोक निराश भेल, मुदा कुसुम समझलीह जे हल्लामे कागज नष्ट भेल तँ हुनक अपन वेतनक प्रमाण सेहो चलि जायत। ओ फकीराकेँ पाँतिमे व्यवस्थित ठाढ़ करबाक कहलथिन।

किरण अपन घरमे एहि कार्यालयक बन्द होयबाक सूचना सुनलीह। ओ छबि देखलथिन —जतय प्रतिदिन कर्मचारी हुनका 'मैडम' कहि अभिवादन करैत छल, ओतय आब फाटकपर लोग बकाया माँगि रहल छल। हुनका याद पड़ल जे कतेक वेतन-पावती ओ स्वयं देरिसँ हस्ताक्षर केने छलीह। अधिवक्ता मालती सिन्हाकेँ फोन कऽ ओ पुछलथिन जे कर्मचारीक बकाया सम्बन्धी वास्तविक जानकारी देबाक उचित तरीका की अछि। मालती उत्तर देलथिन, ''अपन लगक वैध प्रति सुरक्षित राखू। जे सूचना कागजसँ पुष्ट अछि, ओ सम्बन्धित अधिकारीकेँ दिअ। एखन व्यक्तिगत सम्पर्क कऽ साक्षीक कथन प्रभावित नहि करू।'' किरण बुझलीह जे पछतावा तखन उपयोगी होयत जखन ओ जिम्मेवारीक साक्ष्यसँ भागतीह नहि।

रतनक गिरफ्तारीक बादो ओकर पुरान सम्पर्कक किछु लोक नब योजना बनबैत छल। वीरेन्द्र अपन निर्माण-कम्पनीक काम बन्द नहि होयबाक दलील दैत छल; श्रमिकक भुगतानक ओहि मदमे जाँच चलि रहल छल। एकटा दलाल बेरोजगार आवेदकसभकेँ कहलक जे अपन दलाली-शुल्क ओकरा दिअ तखन जाँचसँ पहिले पैसा वापस भेटि जायत। सविता एकर विरोध कएलथिन। ''जे टका घुरेबाक लेल फेर टका मँगैत अछि, ओकर कागज पहिने देखू,'' ओ कहलीह। दलाल भीड़सँ हटि गेल। मुदा नैना बुझलीह जे एकटा संस्थाक बन्द होयब ठगीक भूख समाप्त नहि करैत; बेबस लोकक बीच नब दलाल अपन ठाम बनएबाक प्रयास करैत अछि।

चन्दन घरमे बैसि अपन ऋणक सूची बना रहल छल। गाड़ी चलएबाक काज बन्द होयबासँ ओकर दैनिक आमदनी घटि गेल। एकटा वैध ढुलाई-मालिक ओकरा अस्थायी कामक प्रस्ताव देने छल, मुदा पुरान जाँचक समाचार सुनि प्रतीक्षा करबाक कहलनि। चन्दन नैनाकेँ पुछलक, ''हम कतय जाउ? घरक खर्च कहियो खाली नहि रहैत अछि।'' नैना कहलथिन, ''पहिने जे काज करब, ओकर पूरा शर्त लिखित लिअ। रोजगारीक हड़बड़ीमे फेर गलत लोकक पाछाँ नहि पड़िह।'' चन्दन उदास भऽ गेल। ओकरा लागि बहिनक ई सलाह सही छल, मुदा भातक बर्तनमे कम चाउर देखब बेसी कठिन छल। सरस्वती देवी दुनूकेँ देखैत रहलीह; बिना उपदेश देने चुल्हि पर चढ़ल दालमे पानि थोड़ा बेसी देलथिन।

माधवी देवी ओहि साँझ कामसँ घुरैत नैनाक आँगनमे ठहरलीह। ओ अपन पड़ोसक महिला सभक विषयमे कहलीह जे शराबबन्दीक पहिल महीनासभमे घरमे बचल पैसा सँ बच्चाक पुस्तक, कपड़ा आ औषधि किनल गेल छल। ‘‘हमरा लगल छल जे आब घरक झगड़ा घटत,’’ ओ कहलीह। ‘‘किछु घरमे घटलो। मुदा एक्के वर्षक भीतर गलीक भीतर फेर अवैध शराब अबय लागल। बेसी दाम, बेसी कर्जा।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘माल कतयसँ अबैत अछि, लोक की कहैत अछि?’’ माधवी कहलीह, ‘‘सभ अलग-अलग नाम लैत अछि। बिना प्रमाण ककरो नहि कहब। हम जे देखैत छी, से ई जे पियक्कड़ फेर जेबी खाली कऽ घर घुरैत अछि।’’ घरक संकट आ कारोबारक जाँचक बीच फरक स्पष्ट रहल।

पूनमकेँ रोजगार केन्द्र बन्द होयबाक समाचार सहायता-कर्मी सीमा देलीह। पूनम किछु देरि किछु नहि बजलीह। ‘‘हम जखन पहिल बेर ओहि फाटकसँ भीतर गेल रही, हमरा नौकरीक आशा छल,’’ ओ कहलीह। ‘‘आब ओहि फाटकपर कतेक लोक रुपैया मँगैत होयत।’’ सीमा पुछलथिन जे ओ पीड़ितसभक जानकारी लेल किछु लिखबाक चाहैत छथि कि नहि। पूनम कहलीह, ‘‘आइ नहि। हमरा औषधि खाकऽ आराम करबाक अछि। बादमे अपन अनुभव लिखब।’’ सीमा हुनक एहि निर्णयक आदर कएलथिन। पुनर्वासक अर्थ ई नहि जे पीड़ितकेँ प्रतिदिन अपन घावक सार्वजनिक कथा कहबाक बाध्यता रहय।

दोसरा दिन श्रम-विभागक निर्धारित स्थानपर कर्मचारिक समूह आवेदन देबाक पहुँचल। कुसुम सभक नामक संग बकाया अवधि लिखने छलीह। फकीराक पावती, इमरानक उपस्थिति आ अन्य कर्मचारिक बैंकक जमा-विवरण अलग-अलग संलग्न छल। अधिकारी पुछलथिन, ‘‘कोनो कर्मचारीक वेतन नगद मिलैत छल?’’ दू महिलाक हाथ उठल। हुनका लग नियमित रसीद नहि छल। अधिकारी हुनका सभसँ कामक दिन, भुगतानक अनुमान आ सम्भावित साक्षीक नाम लिखएबाक कहलथिन। कुसुम एहि लम्बा प्रक्रियासँ थाकल, मुदा हुनकासँ कोनो तत्काल परिणामक झूठ आश्वासन नहि देल गेल। ओ बाहर निकलि कहलीह, ‘‘कमसँ कम आब हमर नाम रजिस्टरमे अछि।’’

कार्यालयक बरामदामे एकटा कर्मचारी आरम्भमे लिखित आवेदन लेबाक बदला दलालक माध्यमसँ जा सकबाक अस्पष्ट सुझाव देलक। कुसुम एहि विषयमे सीधे वरिष्ठ

कर्मचारीसँ प्रक्रिया पुछलथिन। वरिष्ठ अधिकारी आवेदन जमा करबाक सार्वजनिक पद्धति आ पावतीक व्यवस्था स्पष्ट कएलनि। कुसुम बाहर आबि महिला कर्मचारीसभकेँ कहलथिन, ‘‘हम सभक वेतन कम अछि, एकर दावामे फेर अतिरिक्त पैसा किएक दिअ?’’ मजदूरसभ एकमत नहि छल; किछु लोक जल्दी परिणाम लेल शुल्क देबाक तैयार छल। मुदा फकीरा कहलक, ‘‘पहिने विधिसम्मत बाट अपनाबी। दू मासक मजूरी घुरेबाक नामपर तेसर मासक कमाइ नहि गमाबी।’’

नरेशक मायकेँ कार्यालय बन्द भेलाक खबरि सुनि पुरान दिन याद आएल। ‘‘तोहर भैया कहैत छल जे मेहनतक हिसाबमे धोखा नहि होयबाक चाही,’’ ओ रेखासँ कहलीह। रेखा उत्तर देलथिन, ‘‘ओही हिसाबक प्रश्न उठौने छलाह।’’ माय पूछलथिन, ‘‘एखन जे मजदूरक पैसा अटकल अछि, ओकरा की भेटत?’’ रेखा कहलीह, ‘‘ओ लोक आवेदन करैत अछि। हम भायक कागजक जतेक वैध नकल अधिकारी माँगताह, देब।’’ एहि घरक शोकक बीचो दोसरा घरक भूखक बात प्रवेश कऽ गेल। रेखा बुझैत छलीह जे नरेशक न्याय केवल हत्याक दोष सिद्ध करबाक प्रश्न नहि, हुनक सत्यनिष्ठा सेहो स्मरण रखबाक प्रश्न अछि।

नैना राति एकटा खाली कापी खोललथिन। पहिल पन्नापर लिखलथिन—‘नियुक्तिक विज्ञापन जाँचबाक आवश्यक बात’। दोसर पन्नापर शुल्क, लिखित अनुबन्ध, वास्तविक नियोक्ता आ शिकायतक अधिकारक नाम लिखलथिन। ओ कोनो नब संस्था शुरू करबाक घोषणा नहि करैत छलीह; घर चलएबाक नियमित आयक व्यवस्था एखनहुँ नहि छल। मुदा बेरोजगार युवकक एकटा प्रश्न निरन्तर सुनाइ दैत छल—सही नोकरीक समाचार कतय भेटत? अभय फोनपर पुछलनि जे कापीमे की लिखि रहल छी। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘पहिने जे गलती हमरा लोकसँ भेल, ओकर कारण बुझबाक प्रयास। अगिला लोक कमसँ कम कागज पढ़ि निर्णय लेय।’’ अभय कहलनि, ‘‘एहि काजमे सूचना जाँचबाक सहायता देब।’’

सविता नैनाकेँ एकटा पुरान सरकारी विज्ञापन देखौलथिन, जाहिमे नियुक्तिक आधिकारिक वेबसाइट आ सत्यापनक स्पष्ट प्रक्रिया लिखल छल। ओ कहलीह, ‘‘सभ विज्ञापन ठगी नहि। मुदा असली खबरि भेटब गरीबक लेल कठिन अछि।’’ नैना बुझलीह जे भविष्यक प्रयास केवल धोखेबाजक नामक सूची बनएब नहि होयत। लोककेँ वैध नोकरीक

सूचना, आवेदन भरबाक सहायता आ लिखित शर्त पढ़बाक सहारा चाही। ओ अपन कापीमे नब पाँति जोड़लथिन—'सत्यापित अवसरक सूची'। एखन एहि काजसँ आमदनी होयत कि नहि, किछु निश्चित नहि छल। मुदा पूनमक अनुभवक बाद आशाकेँ फेर बेचबाक बदला जानकारी बाँटबाक विचार जन्म लऽ रहल छल।

तहिना सविता फेर प्रतियोगिता परीक्षाक आवेदन भरि रहल छलीह। पेपर-लीकक आरोपक बाद रद्द भेल पुरान परीक्षाक परिणाम एखन ककरो हाथमे नहि छल। नब परीक्षा लेल फेर यात्रा, फेर शुल्क, फेर तैयारी। कुसुमक नौकरी बन्द भेल, चन्दनक ढुलाई रुकल, पूनमक मजदूरी अटकल—तीनू कथा अलग छल, मुदा रोजगारक दुर्लभताक दुःख एक्के नगरमे फैलल छल। सविताक माय पुछलथिन, ''एतेक बेर परीक्षा दऽ थाकि नहि जाइ छह?'' सविता उत्तर देलथिन, ''थाकैत छी। मुदा जे पढ़ल अछि, ओकरा काम भेटय, ई इच्छा छोड़ि देब तखन की बचत?'' ओ प्रवेशपत्रक नकल थैलामे रखलक।

साँझक बाद नई दिशा रोजगार केन्द्रक फाटक सून्न भऽ गेल। पोस्टरक एकटा कोना फाटि हवा मे फड़फड़ा रहल छल। फाटकक सोझाँ लगनिहार चायक दोकानमे ग्राहक घटि गेल छल; दोकानदार अपन दिनक बिक्री गनैत कहलक, ''भीड़ छल तँ कमाइ छल, आब सभ बन्द।'' ओकर कहब सुनि फकीरा मुस्कराएबो नहि सकल। काल्हि धरि जे भवन आशाक नामपर पैसा लेलक, आइ ओकर बन्द होयबो आसपासक छोट कारोबारपर असर करैत छल। भीतरक कुर्सी, कम्प्यूटर आ फाइल कानूनी प्रक्रियाक अधीन छल। बाहरक लोकक लेल प्रकट प्रश्न सरल छल—अगिला मास घर कोना चलत?

सुजाता कार्यालय बन्द होयबाक कागजातक प्रतिवेदन पढ़लथिन। ओ जाँचदलकेँ स्पष्ट कहलथिन जे कर्मचारीक वेतन-दावा, पीड़ितक जमा राशि आ अपराधक प्रमाण तीनूकेँ आवश्यक संस्थागत माध्यमसँ अलग-अलग निपटेबाक अछि। ओ निरपराध कर्मचारीकेँ अभियुक्तक नामसँ नहि देखबाक निर्देश देलथिन। नरेशक हत्याक मामलेमे जाँच आगाँ बढ़ि रहल छल, मुदा जे लोक जीवित छल ओकर भोजन, प्रतिष्ठा आ जीविकाक प्रश्न तत्काल छल। सुजाता पन्ना बन्द करैत लिखलथिन जे आर्थिक अभिलेखक उपलब्धता प्रभावित नहि होयबाक चाही, आ श्रम सम्बन्धी शिकायत उचित अधिकारी लग पहुँचेबाक चाही।

आर्थिक अपराधक जाँचमे राखल कम्प्यूटरक विवरणक विषयमे एकटा प्रश्न उठल। निर्दोष कर्मचारीसभ अपन वेतनक प्रमाण चाहैत छलाह; दोसर दिस कम्प्यूटरमे नियुक्ति-ठगीक सम्भावित अभिलेख सुरक्षित छल। सुजाता प्रासङ्गिक अधिकारीक सहयोगसँ प्रमाणित प्रतिलिपि उपलब्ध करएबाक विधिसम्मत तरीका निर्धारित करबाक प्रस्ताव देलथिन। ‘‘जाँचक नामपर कर्मचारीकेँ ओकर अधिकारसँ वञ्चित नहि करब,’’ ओ कहलीह। अरुण एहि निर्देशकेँ अलग नोटमे लिखलनि। एतय एकटा मामूली प्रतिलिपि सेहो लोकक परिवार लेल जीवनक महत्त्व रखैत छल।

राति नैना अपन आँगनमे बैसि रहल छलीह। सरस्वती देवी हुनका एकटा पुरान थारीमे भात देलथिन। चन्दन फेर वैध काजक खोजक बात करैत छल। अभयक पठाओल सन्देशमे अगले दिनक समाचारक शीर्षक छल—‘बन्द संस्थाक कर्मचारीक बकाया, ठगीक शिकार आवेदकक प्रतीक्षा’। नैना सन्देश पढ़ि फोन राखि देलथिन। हुनका पूनमक ओहि दिनक पहिल हँसी याद आएल जखन ओ नियुक्तिपत्र हाथमे लेनिहार छलीह। एकटा कागजमे छपल ‘सुनिश्चित भविष्य’ कतए-कतए टूटि गेल छल। मुदा टूटल भरोसाक बाद सही जानकारी, श्रम आ धैर्यसँ नब बाट बनएबाक इच्छा एखन मुइल नहि छल।

अध्याय ५२ : विभाक नब जीवन

सुमित्राक घरक बरामदामे बिहानक घाम तिरछा पड़ि रहल छल। आँगनमे धोएल कपड़ा बाँसक डाँड़पर पसारल छल, आ रसोईसँ भुजल जीराक गन्ह अबैत छल। विभा सिंह खिड़की लग बैसि बैंकक दूटा लिफाफा अलग करैत छलीह। एकटामे संयुक्त खाताक विवरण छल, दोसरमे ओ भुगतान छल जकर विषयमे हुनका कोनो जानकारी नहि देल गेल छल। लिफाफाक कागज चिक्कन छल, मुदा ओहिपर लिखल अङ्क देखिते हुनक हाथ पसीजि गेल। जे घरकेँ ओ अपन घर मानैत छलीह, ओतय हुनक नाम लिखल कागज हुनकेँ बिना पुछने काजमे आनल गेल छल।

सुमित्रा दू कप चाय लऽ एलीह। ‘‘काल्हि फेर राति देरी धरि जागल रहलीह?’’ ओ पुछलथिन। विभा मुस्कुरेबाक प्रयास कएलथिन। ‘‘आँखि लगैत छल तँ फाटकक आवाज सुनाइत छल। ओहि घरमे एतेक बरख रहलीहुँ, मुदा अपन चाभी सेहो कखनो-कखनो अपन नहि लगैत छल।’’ सुमित्रा कप रखैत कहलीह, ‘‘एतय रहबाक लेल कोनो हिसाब नहि देबय पड़त। मुदा आगाँक बात ठाढ़ मनसँ सोचू।’’ विभा चायकेँ ओठ लगेलथिन। हुनका बहिनक दयासँ बेसी ओकर एहि साधारण भरोसाक आवश्यकता छल।

सुमित्राक बेटा विद्यालय जाएबाक तैयारी करैत छल। ओ कापीक पन्ना फाड़ि कागजक एकटा जहाज बनौने छल, जे हवा लगिते बैंकक विवरणपर खसि पड़ल। विभा कागज उठा ओकरा देलथिन। बच्चा हँसि देलक। दुनियाँक सभ बात वयस्क लोकक जकाँ गम्भीर नहि होइत छैक। मुदा ओकर विद्यालयक शुल्कक रसीद देखिते विभाकेँ पहिल बेर स्पष्ट बुझायल जे बहिनक घरमे सेहो मासक अपन बजट अछि। अपन बचतमे जतेक छैक, तकर हिसाब नहि राखब एतय रहि कऽ उचित नहि होयत। ओ सुमित्रासँ कहलथिन, ‘‘घरक राशनमे हमर हिस्सा जोड़ि लिअ।’’ सुमित्रा पहिले टारए चाहलनि, फेर कहलीह, ‘‘ठीक अछि, मुदा भोजनक बदलामे किराया नहि। अपन पैरपर ठाढ़ होयबाक पहिल हिसाब बुझू।’’

अनुष्का सेहो सुमित्राक घरमे मायसँ संग रहि रहल छलीह। विद्यालय जाएबाक लेल ओकरा भोरे कनेक पहिने निकलय पड़ैत छल, मुदा अपन पुरान कक्षा आ सहेलीसभ छोड़बाक आवश्यकता नहि भेल छल। विभा पुछलथिन, ‘‘एतय असुविधा तँ नहि?’’ अनुष्का कहलीह, ‘‘कनेक ठाम कम अछि, मुदा मन हलुक अछि। बाबूजीक विषयमे सभ पुछैत अछि; हम सभ प्रश्नक उत्तर नहि देबय चाहैत छी।’’ विभा ओकर हाथ धरि कहलीह, ‘‘तोरा ककरो आगाँ घरक विवादक सफाइ देबाक आवश्यकता नहि। पढ़ाइ आ अपन मनक चिन्ता पहिने करिह।’’

दुपहर हुनका एकटा अधिवक्तासँ भेंट करबाक छल। बैंकक प्रमाणित कागज, संयुक्त खाताक पुरान पोथी आ घरक स्वामित्व-सम्बन्धी जे कागज हुनका भेटल छल, सभ एकटा नीक सँधल फाइलमे राखलनि। सुमित्रा संग जाएबाक प्रस्ताव देलथिन। विभा कहलथिन, ‘‘आजु पहिने हम स्वयं बात करब। जँ कोनो बात नहि बुझाय, तँ फेर संग चलब।’’ सुमित्रा हुनका एकटक देखलथिन। आइ ओ अपन प्रश्न स्वयं पुछबाक तैयारीमे छलीह।

अधिवक्ताक कार्यालय नगरक पुरान बजारक ऊपरतल्लापर छल। बरामदामे विवाह, जमीन, ऋण आ मजदूरीक विवाद लऽ कऽ लोक बैसल छल। विभा अपन नाम लिखि पाँतिमे बैसलीह। अगिला कुरसीपर एकटा वृद्धा जमीनक नापीक कागज पढ़बाक प्रयास करैत छलीह। वृद्धा पुछलथिन, ‘‘बेटी, ई अङ्क कने देखाबह?’’ विभा हुनका दस्तावेजक लिखल नम्बर पढ़ि देलथिन, मुदा अर्थ बुझाएबासँ पहिने कहलीह जे संबंधित कार्यालयसँ पुष्टि करा लेल जाय। वृद्धा आशीर्वाद देलथिन। अपन कागजक विषयमे जे सावधानी हुनका चाही छल, ओही सावधानीक अर्थ पहिल बेर दोसरो व्यक्तिक लेल देखलनि।

अधिवक्ता शैलजा ठाकुर कागज ध्यानसँ देखलथिन। ओ एक-एक तिथि अलग पन्नापर लिखलथिन। ‘‘ई खातामे अहाँक नाम अछि, मुदा सभ निकासी अहाँक अनुमति सँ भेल, ई मानि नहि सकैत छी,’’ शैलजा कहलीह। ‘‘जाहि हस्ताक्षरपर विवाद अछि, ओकर बैंक आ आवश्यक जाँचसँ परीक्षण होयत। घरक स्वामित्व, साझेदारी, बैंकक दायित्व आ दाम्पत्यक प्रश्न सेहो अलग-अलग बुझबाक अछि।’’ विभा पहिने सँ प्रश्न लिखि अनने छलीह। ‘‘जँ हमर नामक दुरुपयोग भेल हो, तँ अपन पति पर अभियोग लगाएब

आवश्यक?'' शैलजा उत्तर देलथिन, ''तथ्यक आधारपर विधिसम्मत शिकायत करबाक अधिकार अहाँक अछि। सभ परिणाम एखन निश्चित कहब उचित नहि। पहिने सुरक्षा, कागज आ अपन आवश्यकता स्पष्ट करू।''

विभा अपन विवाहक विषयमे सेहो पुछलथिन। किछु सप्ताह पहिने रतनक अवैध सम्बन्धक खबरि हुनका घायल केने छल; आब आर्थिक छलक आशङ्का ताहिसँ अलग पीड़ा दैत छल। ''विवाह टूटल मानि ली कि नहि?'' हुनक प्रश्नमे रोष कम, थकान बेसी छल। शैलजा कनेक रुकि कहलीह, ''एहि निर्णयक घड़ी अहाँ तय करब। हमरा काज अछि अहाँकेँ अधिकार, उत्तरदायित्व आ उपलब्ध उपाय बुझाएब। जँ अलग रहब चाहैत छी, तकर व्यवहारिक व्यवस्था सेहो देखबाक होयत।'' विभा पहिल बेर अनुभव कएलथिन जे कियो हुनका जल्दीमे कोनो एकटा बाट चुनबाक लेल नहि कहि रहल अछि।

भेंट समाप्त होइत शैलजा किछु कागजक नकल बनबएबाक सूची देलथिन। विभा शुल्कक रसीद माँगलथिन। पाँतिमे ठाढ़ रहबाक समय हुनका नरेश मण्डलक परिवार याद आएल। ओ आदमी अपन काजक हिसाब स्पष्ट करबाक प्रयासमे मरि गेल छलाह। विभा हुनका व्यक्तिगत रूपसँ बहुत कम जनैत छलीह, मुदा हुनक मृत्यु आब अपन जीवनक कागजसभकेँ पढ़बाक कारणो बनि गेल छल। एतय तुलना करब अन्याय होयत—नरेशक घरक क्षति अपूरणीय छल। तथापि ओकरा बाद चुप रहब विभाकेँ अपराध जकाँ लगैत छल।

बाहर निकललीह तँ रतनक पुरान परिचित एकटा व्यापारी सोझाँ पड़ि गेल। ओ हाथ जोड़ि कहलनि, ''भौजी, घरक बात घरमे रहैत तँ बेसी नीक होइत। रतन बाबू पर एहि समय बहुत दबाव अछि।'' विभा ओकरा सोझ तकलथिन। ''जाहि खातामे हमर नाम अछि, ओ हमर घरक प्रश्न अछि, मुदा जकर धन गेल, ओकरो घर अछि। अहाँ किछु लिखित बात कहब चाहैत छी?'' व्यापारी किछु क्षण चुप रहल, फेर अस्पष्ट आश्वासन दऽ किनार भऽ गेल। विभा जानि गेलीह जे 'घरक बात' कहि कतेक बेर बाहरी लोक हुनक चुप्पी माँगैत रहत।

सुमित्राक घर घुरैत समय ओ दूध, दाल आ सब्जी किनलथिन। दुकानदार पुछलक, ‘‘मेमसाहेब, पुरान गाड़ी किएक नहि देखाइत अछि?’’ विभा सरल उत्तर देलथिन, ‘‘आइ पैदल अएल छी।’’ लोकक जिज्ञासाकेँ सभ बेर जीवनक कथा सुनायब आवश्यक नहि। तराजूपर जोखल दालक थैली हाथमे लैत हुनका याद पड़ल जे कतबा दिन ओ घरक थोक खरीददारीक वास्तविक दाम नहि जनैत छलीह। ओ दुकानदारक लिखल रकम जोखि देखलथिन, फेर अपन हाथे भुगतान कएलथिन। ई कोनो पैघ विजय नहि छल; अपन दिनक खर्चक प्रत्यक्ष ज्ञान छल।

साँझ सुमित्राक रसोईमे विभा आटा सानैत छलीह। सुमित्रा पुछलथिन, ‘‘अधिवक्ता की कहलीह?’’ विभा सभ बात विस्तारसँ कहलीह। फेर जोड़लथिन, ‘‘ओ हमर बदला निर्णय नहि करतीह।’’ सुमित्रा हँसलीह, ‘‘ई तखन नीक भेल। हमरो अहाँक बदला निर्णय नहि करबाक अछि।’’ दुनू बहिन किछु देरि अपन मायकेक पुरान दिन याद केलनि। माय एकटा पितराक बकसामे कपड़ा आ कागज अलग राखैत छलीह; तखन दुनू हँसैत छलीह जे कागजक एतेक चिन्ता किएक। आइ विभा बुझैत छलीह जे कागज कपड़ासँ कम जरूरी नहि।

राति एकटा फोन आएल। अपरिचित नम्बर। विभा उठौलथिन तँ स्त्रीक आवाज छल—कुसुम, बन्द भेल रोजगार केन्द्रक कर्मचारी। कुसुम नम्रतासँ पुछलथिन जे विभाकेँ कार्यालयक वेतनक विषयमे किछु जानकारी अछि कि नहि। ‘‘हम कानूनक प्रक्रिया पूरा कऽ रहल छी, मुदा कतेक पावती मालिकक हस्ताक्षरमे रहि गेल,’’ कुसुम कहलीह। विभा उत्तर देलथिन, ‘‘हम कार्यालयक प्रबन्धक नहि रही। जँ हमर लग एहन वैध प्रति भेटत जे मदद करय, तँ संबंधित अधिकारीकेँ देब। अहाँ अपन आवेदनक पावती सुरक्षित राखू।’’ फोन बन्द भेलाक बाद विभा बुझलीह जे पतिक पुरान प्रतिष्ठाक कारण लोक एखनहुँ हुनका उत्तरदायी मानैत अछि। ओ सभ प्रश्नक उत्तर देबाक स्थिति मे नहि, मुदा जकर उत्तर जानतीह तकरासँ भागतीह नहि।

दोसरा दिन विभा अपन पुरान घरक सामानक सूची बनेलीह। ओ सभ किछु फटाफट लऽ आबय चाहैत नहि छलीह। कपड़ा, पुस्तक, अपन माय देल एकटा चाँदीक कटोरा, किछु

निजी कागज—एतबा तत्काल आवश्यक छल। शैलजा कहने छलीह जे विवादित सम्पत्तिक विषयमे विधिसम्मत तरीका अपनाउ। विभा एकटा आवेदन तैयार कएलथिन जाहिमे अपन निजी सामान प्राप्त करबाक व्यवस्था आ वस्तुक सूची छल। फाटकपर झगड़ा कऽ सामान उठाएब हुनक उद्देश्य नहि। पहिले जे घर अपन लगैत छल, ओहि घरमे प्रवेश लेल लिखित सूचना देनाइ हुनका पीड़ादायक लागल। मुदा बिना स्पष्टताक भीतर घुसब पछिला विवादकेँ आरो बिगाड़ि सकैत छल।

घर जाएबाक दिन सुमित्रा संग छलीह। फाटकपर पुरान माली रामदास भेटल। ओ हाथ जोड़ि कहलक, ‘‘मालकिन, बगियामे गुड़हल खिलल अछि।’’ विभा गाछ दिस तकलथिन। बर्खा कम पड़ल छल, ताहियौ दूटा फूल खुलेल छल। रामदासक आँखिमे प्रश्न छल, मुदा ओ किछु पुछलक नहि। भीतरक बैठकमे पुरान सोफाक ठाम बदलल छल; भित्तिपर रतनक सम्मानक फोटो ओही ठाम टाँगल छल। विभा ओहि फोटो दिस नहि गेलीह। ओ अपन कोठरीमे प्रवेश कऽ अलमारी खोललथिन। अपन माय देल कटोरा कपड़ामे लपेटि राखल छल। ओकरा देखिते आँखि भरि आएल, मुदा ओ रोयबाक लेल ताहि दिन नहि अएलीह।

पुरान नौकरानी कमला चुपचाप पानि रखि गेलीह। विभा पुछलथिन, ‘‘तोहर वेतन समयपर भेटैत अछि ने?’’ कमला माथ झुकौलनि। ‘‘पछिला मासक पाँच दिनक बकाया अछि। नब व्यवस्थापक कहैत अछि हिसाब देखब।’’ विभा पुछलथिन, ‘‘रसीद अछि?’’ ‘‘नहि, घरक काजक रसीद के दैत अछि?’’ कमलाक प्रश्न हुनका भीतर धरि लागल। ओ कहलीह, ‘‘जतेक दिन काज केने छह तकर तिथि लिखि राखह। बिना पुछने ककरो आगाँ कागजपर अँगूठा नहि लगाबह।’’ ओ कमलाकेँ कोनो झूठ आश्वासन नहि देलथिन जे ओकर पूरा वेतन हुनके हाथसँ भेटत; घरक धनक स्थितिक पूरा ज्ञान हुनका नहि छल।

रतन ओहि समय हिरासतमेसँ सम्बन्धित न्यायिक प्रक्रियाक अधीन छलाह। हुनक एकटा सहयोगी फोनपर कहलनि जे विभा अपन सार्वजनिक बयान वापस लऽ लेथि। विभा उत्तर देलथिन, ‘‘हम जे देखलहुँ, ताहि विषयमे लिखित जानकारी देने छी। जँ ओहिमे कोनो तथ्य गलत अछि तँ दस्तावेज देखाओल जाय। हम नाम वा भयक कारण अपन कथन नहि बदलब।’’ सहयोगी कहलनि, ‘‘एहि बातक असर संपत्तिपर पड़त।’’ विभा फोन बन्द कऽ

देलथिन। सुमित्रा हुनक मुख देखलथिन। ‘‘डर लगैत अछि?’’ विभा कहलीह, ‘‘बहुत। मुदा डरक कारणेँ फेर हस्ताक्षर करब, से आब नहि।’’

सामान लऽ घुरैत हुनका एकटा पुरान डायरी भेटल। विवाहक पहिल वर्ष रतन घरक खर्च लिखैत छलाह। पहिल पन्नामे दुन्नू मिलि किनल कुर्सीक दाम लिखल छल; दोसर पन्नामे विभाक बनाओल खीरक प्रशंसा। विभा डायरी बन्द कएलथिन। प्रेम छल, से झूठ नहि; बादक छल आ अपराधक प्रश्न सेहो झूठ नहि। ई दुनू साँच एक्के जीवनमे रहि सकैत अछि। ओ डायरी नष्ट नहि कएलथिन। अपन निजी स्मृति आ सार्वजनिक अपराधक कागजक बीच एकटा स्पष्ट दूरी बनेबय चाहैत छलीह।

सुमित्रा एहि बीच घरक छोट खर्चक जिम्मेवारी विभाकेँ देलथिन। हाटसँ घुरलाक बाद दुनू बहिन सब्जीक दाम लिखलथिन। एक किलो आलू, आधा किलो परवल, बच्चाक कापी आ तेलक छोट बोतल—प्रत्येक चीजक अपन मोल छल। विभा पुछलथिन, ‘‘तोँ पहिने सभ चीज मनसँ याद रखैत छलह?’’ सुमित्रा हँसलीह। ‘‘नहि, भूलैत रही। तखनेँ कापी बनौने छी।’’ विभा ओ कापी देखलीह। कतहु उधार, कतहु विद्यालयक शुल्क, कतहु मायके जाएबाक भाड़ा। हुनका बुझायल जे गृहस्थीक जिम्मेवारी केवल आयक मात्रासँ नहि, खर्चक नियमित जानकारीसँ बनैत अछि।

आगिला सप्ताह बैंकसँ हस्ताक्षरक जाँचक सम्बन्धमे एकटा स्वीकृति-पत्र आएल। विवादित लेनदेनमे जतेक जानकारी बैंक उपलब्ध करा सकैत छल, ओहि लेल प्रक्रिया शुरू भेल। विभाकेँ किछु रकमक तत्काल उपयोगपर अस्थायी कठिनाइ छल; बैंक ओहि विषयमे निर्धारित नियम स्पष्ट कएलक। सुमित्रा पुछलथिन, ‘‘एखन रोजक खर्च कोना चलत?’’ विभा अपन अलग बचतखाताक विवरण देखौलथिन। ओ जमा छोट छल, मुदा ओकरा आधारपर दू मासक खर्च सम्भव छल। आगाँ नियमित आमदनी चाही, ई आब स्पष्ट भेल।

विभा अपन पढ़ाइ याद केलथिन। विवाहक पहिने ओ स्नातकक बाद लेखा-सम्बन्धी प्रशिक्षण लेने छलीह। रतनक कारोबार बढ़लाक बाद घरक व्यस्तता आ परिवारक आशामे ओ प्रशिक्षण धूलि खा गेल। आब पहिने ही दिन दोसरक व्यवसाय खोलबाक घोषणा

कएनाइ ठीक नहि बुझलथिन। ओ नगरक महिला सहयोग-केन्द्रमे गेलीह, जतय रोजगार सम्बन्धी जानकारी देल जाइत छल। केन्द्रक कर्मचारी हुनक परिचय सुनि आरम्भमे विशेष आदर देखौलथिन, मुदा विभा कहलथिन, ‘‘हमरा सामान्य आवेदकक जकाँ प्रक्रिया बताउ।’’ हुनका लेखा-जाँच, कागज व्यवस्थित करब आ लघु व्यवसायक प्रशिक्षणक विकल्प भेटल।

कक्षामे ओ पहिल दिन पाछाँक कुरसीपर बैसलीह। एक युवती घरमे सिलाईक काज करैत छलीह; एक विधवा अपने खेतक पैदावार बेचलाक हिसाब रखबाक सीखय अएलीह। प्रशिक्षक पुछलथिन, ‘‘ककरा खाताक विवरण पढ़ब अबैत अछि?’’ विभा हाथ उठौलथिन, फेर दोसर महिला सभक दिस देखलथिन। हुनका ई ठाम अपन पुरान परिचयक जकाँ नहि, अपन कामक ज्ञानक अनुसार पहिचान भेटयवाला छल। सत्र समाप्त भेल तँ सिलाई करयवाली युवती पुछलनि, ‘‘अहाँ हमरा छोट हिसाबक कापी बनबएब सिखायब?’’ विभा कहलीह, ‘‘जे हमरा अबैत अछि, से संग बैसि देखब।’’

सुमित्राक घरमे आब विभाक दिनचर्या बदलि गेल। बिहान चाय, किछु घरक काज, फेर प्रशिक्षण, बैंक वा अधिवक्ताक कार्यालय। दुपहरक बाद ओ खर्चक सूची बनबैत छलीह। किछु राति हुनका पुरान घरक स्मृति घेरे लगैत छल, तखन ओ बहिनक आँगनमे चुप बैसि रहैत छलीह। सुमित्रा एक दिन कहलीह, ‘‘समय लागल तँ लागय। जे निर्णय उचित लगय, ओकरा जल्दीमे नहि बदलू।’’ विभा उत्तर देलथिन, ‘‘हम आब अपन निश्चयक संग एकटा साधारण दिन जीबाक अभ्यास करैत छी।’’ एकरे नाम नव जीवन होयत, एहन घोषणा ओ नहि कएलथिन; केवल अगिला दिनक कपड़ा रातिए सजा राखलथिन।

ताहि बीच निरीक्षक सुजाताक कार्यालयसँ एकटा औपचारिक सूचना आएल। विभाकेँ अपन प्रस्तुत कएल बैंक-अभिलेखक एकटा विशेष विवरण स्पष्ट करबाक छल। ओ निर्धारित दिन पहुँचलथिन, सुमित्रा फाटक धरि संग गेलीह। सुजाता पुछलथिन, ‘‘एहि तिथिमे अहाँ नगरसँ बाहर रही?’’ विभा अपन बहिनक घरक यात्रा-प्रमाण देखौलथिन। ‘‘हँ। एखन जे स्मृति अछि, ताहि आधारपर कहि रहल छी; लिखित प्रमाणक नकल अलग अछि।’’ सुजाता दुनूकेँ पृथक् दर्ज कएलथिन। विभा घर घुरलाक बाद कापीमे लिखलथिन

—‘स्मरण आ कागज अलग।’ एहि एकटा बातकेँ ओ अपन आगाँक सभ लेनदेनमे मन राखबाक निर्णय केलथिन।

रामदास फेर फोन कएलक। बगियाक पाइप फाटि गेल छल; घरक नब देखरेख करयवला लोक ओकरा दोष दऽ रहल छल। विभा कहलीह, ‘‘जे काज तोहर जिम्मामे छल, ओकर लिखित ब्योरा राखह। जँ पाइप पुरान छल तँ से बताबह। हमर नाम लऽ कऽ झगड़ा नहि करिह।’’ रामदास कहलक, ‘‘पहिने अहाँ रहैत छलीह तँ बात सुलझि जाइत छल।’’ विभा ओकरा उचित व्यक्तिसँ सम्पर्क करबाक कहि फोन रखलथिन।

राति रतनक अधिवक्ताक माध्यमसँ एकटा सन्देश आएल—ओ विभासँ भेटि दाम्पत्यक विषयमे बात करबाक इच्छुक छथि। विभा सन्देश पढ़ि बहुत देरि धरि चुप रहलीह। अपन जीवनक एकटा पैघ हिस्सा ओहि पुरुषक संग बितौने छलीह। ककरो संग बिताएल समय कागज फाड़ि कऽ समाप्त नहि कएल जा सकैत अछि। मुदा बात करबाक अर्थ फेर सँ नियंत्रण स्वीकार करबो नहि। ओ अपन अधिवक्तासँ पुछि उचित प्रक्रिया आ सीमा निश्चित करबाक उत्तर पठौलथिन। ओहि राति बिछौनापर पड़ल रहने विचार करैत रहलीह जे भेट होयत तँ पहिल प्रश्न की करब। उत्तर भेटल—‘हमर नामक कागजपर हस्ताक्षर ककरा कहने भेल?’

दोसरा दिन प्रशिक्षणक केन्द्रमे हिसाबक अभ्यास छल। प्रशिक्षक एकटा छोट संस्थाक आय-व्ययक नमूना देलथिन। विभा पन्ना जोड़ैत छलीह तँ बगलमे बैसल महिला कहलीह, ‘‘हमर खर्च दिनक अन्तमे मिलैत नहि।’’ विभा हुनका कहलथिन, ‘‘जे छोट रकम हाथसँ निकलैत अछि, ओकरो लिखू। समय बुझब आ रकम बुझब एक-दोसरासँ जुड़ल अछि।’’ अपन मुँहसँ ई बात सुनि हुनका नरेशक धीरज याद आएल। हिसाबक कापी रखब कतेक सामान्य काज अछि, मुदा एही सामान्य काजमे कतेक लोकक विश्वास टिकल रहैत अछि।

केन्द्रसँ घुरैत बाटमे एकटा परिचिता भेटलीह। ओ फुसफुसा कऽ पुछलथिन, ‘‘आब विवाहक की होयत?’’ विभा कहलीह, ‘‘जे निर्णय लेब, सोचि कऽ लेब। एखन अपन आर्थिक अधिकार आ सुरक्षाक व्यवस्था करैत छी।’’ परिचिता किछु कहबाक प्रयास

कएलनि, मुदा विभा विषय बदैल विद्यालयक छुट्टीक समय पुछलथिन। दोसरा लोकक उत्सुकता हुनक जीवनक दिशा निर्धारित नहि करय—ई सीमा स्थापित करब हुनका कठिन छल, मुदा असम्भव नहि। सुमित्राक दुआरि पर पहुँचलीह तँ बच्चा दौड़ि कऽ अपन गृहकार्य देखेबाक अएल। विभा बैग रखि कापी खोलि देलथिन।

रातिक भोजनमे दाल पातर छल, तरकारी कम। सुमित्रा क्षमा मँगबाक ढङ्गमे कहलीह जे बजारमे दाम बढ़ि गेल अछि। विभा हँसि देलथिन। ‘‘एहि दालक दाम बुझैत छी; चिन्ता नहि करू।’’ ओ अपन बचतसँ अगिला सप्ताहक राशनक हिस्सा अलग रखलथिन। बाहरी लोक हुनका एखनहुँ धनाढ्य घरक स्त्री कहैत छल, मुदा हुनक वास्तविक जीवनमे दालक मोल, यात्राक भाड़ा आ प्रशिक्षणक शुल्क फेर महत्त्व रखैत छल। एहि सत्यकेँ स्वीकार करब अपमान नहि, स्वतंत्र निर्णयक आधार छल।

सुतबासँ पहिने विभा फोनमे पुरान घरक गुड़हलक फोटो देखलथिन। रामदास पठौने छल—दूटा फूल फेर खिलल अछि। विभा फोटो सुमित्राकेँ देखौलथिन। ‘‘बगिया हम लगाएने रही,’’ ओ कहलीह, ‘‘मुदा फूल ओतहि रहत।’’ सुमित्रा पुछलथिन, ‘‘तोरा दुःख नहि होइत छह?’’ विभा कहलथिन, ‘‘होइत अछि। किन्तु जे किछु छोड़बाक पड़त, ओकरा छोड़ि देब। जे हमर अधिकार अछि, ओकरा कागजसँ, श्रमसँ आ धैर्यसँ बचायब।’’ खिड़कीक बाहर राति गाढ़ भऽ रहल छल। कोठरीमे अलमारीक एकटा खाना एखनहुँ खाली छल। विभा ओकरा ताकैत रहलीह, फेर आगाँक दिनक फाइल ओतय सजा देलथिन।

अध्याय ५३ : दिनेशक स्वीकार

दिनेश बिहान अपन काजघरक फाटक खोललनि तँ भीतर लकड़ीक धूलि जमल छल। टेबुलपर औजार पड़ल छल, मुदा पछिला चारि दिनसँ एकर ककरो उपयोग नहि भेल छल। मोटर-पुर्जाक दोकानमे घाटा बढ़लाक बाद पछिला किछु महिनामे दिनेश दोकान समेटि देने छलाह। पुरान परिचित मिस्त्री शम्भुक संग मिलि आब ओ घर-मरम्मतिक छोट-छोट ठेका लेब आरम्भ केने छलाह; पछिला मास एहि नब काजक ग्राहको घटि गेल छल। मिस्त्री शम्भु दरबज्जासँ झाँकि पुछलक, ‘‘आइ काज शुरू होयत कि फेर बन्द?’’ दिनेश ओकरा भीतर बजौलनि। ‘‘काम करब। जे अधूरा चौखट अछि, ओ पहिने पूरा करू।’’ शम्भु हुनक आवाजमे थकान सुनलक, मुदा प्रश्न नहि कएलक।

टेबुलक दराजमे दिनेशक फोनक पुरान सन्देश राखल छल। ओ सन्देश एक दिन क्रोधमे रतनकेँ पठौने छलाह—धन नहि देल जाएत तँ निजी सम्बन्धक बात सार्वजनिक कऽ देताह। तखन हुनका ई अपन अपमानक बदला लगल छल। आब रतन गिरफ्तार छलाह, किरण हुनक घरसँ अलग जीवन बिता रहल छलीह, आ स्वयं दिनेशक फोनक ओ सन्देश एखनहुँ मिटाएल नहि गेल छल। ओ सन्देश पढ़ि अपन ओहि साँझक स्वर याद कएलनि। आदमी क्रोधमे जे शब्द कहैत अछि, ओकर प्रभाव क्रोध उतरि गेलाक बादो रहैत छैक।

रवि, हुनक मामेर भाइ, दुपहर लग अएल। दिनेश पहिने ओकरा अपन ऋणक कागज देखौने छलाह। रवि औजारक काजमे हाथ बँटबैत पुछलक, ‘‘ऋणक बैंकसँ किछु उत्तर अएल?’’ दिनेश एकटा लिफाफा आगाँ बढ़ौलनि। ‘‘कागजमे हमर नाम अछि। मुदा कतेक भुगतान हम स्वयं स्वीकृत केलहुँ, से पहिने मिलायब पड़त।’’ रवि कागज पढ़ि पुछलक, ‘‘आ रतनसँ जे रुपैया माँगने रही, ताहि विषयमे?’’ दिनेश नजरि नहि उठौलनि। ओहि बातक चर्चा हुनका सबसँ बेसी कठिन लगैत छल।

‘‘रुपैया वास्तवमे अपन देनदारीक हिसाब माँगने रही कि किरणक बात सार्वजनिक नहि करबाक बदलामे?’’ रवि धीरेसँ पुछलक। दिनेश कनेक देरि चुप रहलाह। ‘‘पहिने ऋणक हिसाबे माँगने रही,’’ ओ कहलनि, ‘‘मुदा बादमे जे सन्देश पठौलहुँ, ओ ठीक नहि छल। स्पष्ट लिखने छलहुँ जे धन दिअ, नहि तँ सभकेँ बात बता देब।’’ रवि लम्बा साँस लेलनि। ‘‘ताहि सन्देशसँ अहाँक अपन दावा कमजोर होयत।’’ दिनेश उत्तर देलनि, ‘‘जँ कानूनक प्रश्न अछि तँ हमरा स्वयं कहबाक चाही। नुकेलासँ सन्देश बदलत नहि।’’

दिनेशक मनमे तीनटा अलग घटना एक-दोसरासँ उलझि रहल छल। किरणक विवाहेतर सम्बन्ध हुनका विश्वासघात लगल छल। अपन नामपर ऋणक कागज भेटलाक बाद आर्थिक भय बढ़ल छल। आ रतनक संग झगड़ाक दिन ओ प्रतिशोधक आवेगमे धनक माँगकेँ धमकी बना देने छलाह। पहिल दू पीड़ाक वास्तविकता तेसर काजकेँ उचित नहि बनबैत छल। ई बात ओ बुझैत छलाह, मुदा स्वीकार करबामे देरि लगल। ओ रविसँ कहलनि, ‘‘अपराधकेँ अपराध कहबाक अधिकार हमरा तखन होयत जखन अपन बातो साफ कहब।’’

रवि हुनका भरोसा देबाक बदला सावधानीक सलाह देलनि। ‘‘अधिवक्तासँ भेटू। अपन फोन, सन्देश आ ऋणक कागज सुरक्षित राखू। कोनो साक्षीकेँ मनाबबाक कोशिश नहि करू।’’ ‘‘पहिने कतेक आसान लगैत छल—थानामे कहि देब जे रतन हमरा बर्बाद केलक। आब बुझैत छी जे हमर काजक हिसाब सेहो पुछल जाएत।’’ शम्भु पाछाँसँ आवाज देलक जे चौखटक माप कम पड़ि रहल अछि। दिनेश उठि माप देखय गेलाह। दू इञ्चक त्रुटि सुधारबाक लेल लकड़ी फेर काटय पड़त। काजमे गलती सुधारल जा सकैत अछि; विश्वासक त्रुटि एतेक सरल नहि।

दोसरा दिन ओ अधिवक्ता नीलिमा झासँ भेटलाह। नीलिमा पहिने ऋणक विवाद सुनलीह, फेर फोनक सन्देश मँगौलथिन। दिनेश फोन हुनका आगाँ राखि देलनि। ‘‘ई हमर लिखल अछि।’’ नीलिमा कहलीह, ‘‘निजी अपमानक बदलामे धन माँगबाक धमकी गंभीर विषय बनि सकैत अछि। हम एखन कोनो कानूनी निष्कर्ष नहि देब; पूरा घटनाक्रम, सन्देशक मूल रूप आ ककरा-ककरा जानकारी अछि, से देखब आवश्यक अछि। तथापि

अहाँक लेल नीक ई होयत जे सत्य छिपायब नहि।'' दिनेश कागजक कोना मसलैत रहलाह।

नीलिमा पुछलथिन, ''धन भेटल?'' ''नहि,'' दिनेश उत्तर देलनि। ''रतन फोनपर कहलक जे ऋणक विषयमे ओकरा बात करबाक समय नहि अछि। हम फेर धमकी देने छलहुँ। तकर बाद किछु सम्पर्क नहि।'' ''कियो साक्षी अछि?'' ''हम फोनपर बात केने रही। रविकेँ बादमे बतौने रही।'' नीलिमा लिखलथिन, ''कथन आ प्रमाण अलग रखब। अहाँक अपमानक विषयमे जे व्यक्तिगत उपचारक प्रश्न अछि, ओ ऋणक विवादसँ अलग अछि। धमकीक विषय सेहो अलग।'' दिनेश माथ हिलौलनि।

थानामे जाएबाक दिन हुनका पसीना छुटि रहल छल। रास्तामे चायक दोकान लग कतेको लोक रतनक गिरफ्तारिक चर्चा करैत छल। कियो कहैत छल जे सभ मिलीभगत छल, कियो कहैत छल जे नेताक लोक एक-दोसराकेँ बचा लेत। दिनेश एहि चर्चामे किछु नहि बाजलाह। हुनका अपन एकटा सन्देशक जिम्मेवारीक भार पर्याप्त लगैत छल। निरीक्षक सुजाताक कार्यालयमे प्रवेश कएलनि तँ ओ पहिने सँ किछु फाइल देखैत छलीह। दिनेश अपन नाम बतौलनि। सुजाता बैसबाक संकेत देलथिन।

''हम रतन सिंहकेँ रुपैया देबाक लेल धमकौने छलहुँ,'' दिनेश पहिल वाक्य कहलनि। सुजाता पेन उठौलथिन। ''कखन, कोन माध्यमसँ, आ कोन कारण बताकऽ?'' दिनेश क्रमशः विवरण देलनि। जे स्मृति स्पष्ट नहि छल, ओहि विषयमे स्पष्ट कहलनि जे तिथि फोनसँ मिलाबय पड़त। ''हमर घरमे विवाद छल। किरणसँ हुनक सम्बन्धक जानकारी भेटलाक बाद हमरा क्रोध आएल। ऋणक कागज सेहो छल। हम कहलहुँ जे रुपैया नहि देब तँ बात उजागर करब।'' सुजाता हुनक कथन ध्यानसँ सुनलीह।

सुजाता पुछलथिन, ''रतनसँ धन वसूल करबाक वास्तविक प्रयास कएलहुँ?'' दिनेश उत्तर देलनि, ''माँग कएलहुँ, रकम भेटल नहि। एक बेर ओकर कार्यालयक लग गेलहुँ, मुदा भीतर भेंट नहि भेल।'' ''एहि क्रममे नरेश मण्डल वा मनोजसँ भेट भेल छल?'' ''नरेशकेँ कार्यालयमे देखल छलहुँ, बातचीत नहि। मनोजक नाम समाचारमे सुनलहुँ।'' सुजाता प्रश्न

दोहरौलथिन जे नरेशक हत्याक राति ओ कतय छलाह। दिनेश अपन काजघर आ रविक घरक समय बतौलनि, किछु तिथि निश्चयपूर्वक नहि कहलनि। सुजाता लिखलथिन जे एहि विवरणक स्वतन्त्र पुष्टि आवश्यक अछि।

बयानक अन्तमे सुजाता कहलीह, ‘‘एहि स्वीकारोक्तिसँ अहाँ स्वतः निर्दोष वा दोषी घोषित नहि होइत छी। तथ्यक परीक्षण होयत। ऋणक कागजक विषयमे अलग जाँचक आवश्यकता रहि सकैत अछि।’’ दिनेश माथ झुका लेलनि। बाहर निकलैत समय हुनका अचम्भा भेल जे देह हलुक नहि भेल छल। सत्य कहि देलाक बाद भय तुरन्त नहि हटैत अछि। मुदा आब डर केवल पकड़ा जाएबाक नहि, अपन काजक वास्तविक परिणामक छल। ओ रविकेँ फोन कऽ कहलनि, ‘‘जे कहबाक छल, कहि देलहुँ। आगाँ जे प्रश्न होयत, उत्तर देब।’’

किरणकेँ ई समाचार अधिवक्ता मालती सिन्हाक माध्यमसँ भेटल। मालती केवल एतबा जानकारी देलथिन जे दिनेश अपन धमकीक विषयमे बयान देने छथि आ ऋणक अभिलेखक जाँच अलग चलि सकैत अछि। किरण एकटा क्षण लेल कुर्सीक पाछाँ टेक लेलथिन। हुनका दिनेशक दुख पर करुणा छल, मुदा ओ दुखसँ निकसल धमकी उचित नहि छल। मालती पुछलथिन, ‘‘अहाँ दिनेशक सन्देशक कोनो प्रति रखैत छी?’’ किरण कहलीह, ‘‘ऋणक कागजक प्रति अछि। निजी बहसक जे सन्देश अछि, ओ सभ अलग रखल अछि। जे अधिकारी माँगताह, सम्बन्धित प्रति देब।’’

साँझ दिनेशक फोन आएल। किरण आवाज सुनिते चुप भऽ गेलीह। ‘‘हम थानामे गेल रही,’’ दिनेश कहलनि। ‘‘खबरि भेटल,’’ किरण उत्तर देलथिन। ‘‘हम अपन धमकी स्वीकार केलहुँ। मुदा एहि बातसँ अहाँ जे केलहुँ से छोट नहि भऽ जायत।’’ किरण धीरेसँ कहलीह, ‘‘हम ताहि बातक प्रयासो नहि करैत छी। अहाँ हमर विश्वास तोड़बाकेँ अपराध मानैत छी; ओ चोट हम नकारि नहि सकैत छी। मुदा अपन काजक हिसाब हमरा सेहो देबाक अछि।’’ दिनेश किछु देरि साँस लैत रहलाह।

‘‘हम आब संग नहि रहि सकब,’’ दिनेश अन्ततः कहलनि। ई पहिल बेर नहि छल जे ओ अलग रहबाक बात कहने छलाह, मुदा आइ ओकर स्वर निर्णयक छल। ‘‘हम सभक बीच जे ऋणक विवाद अछि, ओकर कानूनी निपटारा करब। घरक सामानक सूची बना लेब। बाकी विवाहक विषयमे सेहो उचित सलाह लेब।’’ किरण पुछलथिन, ‘‘भेंट कऽ बात करब?’’ दिनेश उत्तर देलनि, ‘‘कागजक काज लेल, अधिवक्ताक उपस्थिति मे। पुरान सम्बन्ध घुरेबाक आशामे नहि।’’ किरण ‘‘ठीक अछि’’ कहि फोन रखि देलथिन। एकटा शब्द कहबामे हुनका बहुत समय लागल।

दिनेश फोन बन्द कऽ काजघरक पिछिला कोठरीमे गेलाह। ओतय किरणक विवाहक समयक एकटा थाल पड़ल छल। घर बदलैत काल किछु सामान रवि ओतय रखि देने छल। दिनेश थाल उठेलनि, किनारपर हलुक दाग छल। ओ विवाहक दिनक भोजन याद कएलनि —सभ मित्र बैसल छलाह, किरणक हाथमे मेहन्दी छल, दुनू परिजन हँसैत छलाह। आब एहि स्मृतिक अर्थ की? ओ थाल फेर राखि देलनि। स्मृति जतेक सुन्दर हो, वर्तमानक निर्णय ततेक कठिन भऽ सकैत अछि।

ओहि राति रवि भोजन लऽ अएल। दिनेश थारीक एक भाग छोड़ि देलनि। रवि पुछलक, ‘‘काजघरक ठेका पूरा करब कि नहि?’’ ‘‘करब,’’ दिनेश उत्तर देलनि। ‘‘शम्भु दू दिनसँ मजूरी पुछैत अछि। हमर निजी संकट ओकर पेट खाली करबाक कारण नहि होयबाक चाही।’’ रवि कनेक सन्तोषसँ देखलक। दिनेश पहिल बेर ककरो पाछाँ दोष नहि राखि काजक हिसाब सोचैत छलाह। ओही राति मजदूरक बकाया गनलनि। किछु पैसा बचल छल; जे दऽ सकैत छलाह, देबाक तिथि लिखलनि।

दोसरा सप्ताह बैंकसँ ऋणक कागजक प्रमाणित प्रति भेटल। दिनेश ध्यानसँ पढ़लनि। एकटा पन्नापर हुनक हस्ताक्षर छल, मुदा राशि आ भुगतानक शर्त ओहि दिनक चर्चासँ अलग छल। ओ नीलिमाकेँ फोन कऽ कहलनि जे कागजक विषयमे स्पष्ट प्रश्न उठेबाक अछि। नीलिमा आगाँक विधिसम्मत प्रक्रिया बुझौलथिन। दिनेशक मन भेल जे किरणकेँ तुरन्त दोष देथि, मुदा ओ स्वयंकेँ रोकलनि। जँ कियो पन्ना बदलने होय तँ ओकर जाँच जरूरी छल; क्रोधमे अनुमानसँ प्रमाण नहि बनैत छैक।

किरण अपन घरक एकटा छोटी अलमारी खाली कऽ दिनेशक कपड़ा आ निजी कागजात अलग रखलथिन। ओ सामानकेँ उपेक्षासँ नहि फेकलथिन। दिनेशक गामक पुरान चिट्ठी आ औजारक गारन्टीक पन्ना सेहो भेटलनि। ओ सूची बनाकऽ दिनेशकेँ भेजलथिन। उत्तर आयल—''अधिवक्ताक माध्यमसँ लेब। सूची लेल धन्यवाद।'' एहि छोट औपचारिक उत्तरमे हुनका अनेक वर्षक दूरी सुनाइ देलक। ओ रसोईमे चाय चढ़ौलथिन, मुदा दोसर कप नहि निकाललथिन। असहमति आ वियोगक बीच घरक सामान अपन जगहपर रहि जाइत अछि; मनुष्यक भीतर ओकर ठाम बदलि जाइत अछि।

शम्भु एक दिन काजघरक फाटकपर ठाढ़ भऽ पुछलक, ''मालिक, गाममे लोक कहैत अछि रतन सिंहक मुकदमामे अहाँक नामो आएत। हम एतय काज करैत रही, हमरा कोनो दिक्कत होयत?'' दिनेश अपन औजार नीचाँ रखलनि। ''जे घटना हमर कएल अछि, ओकर उत्तर हम देब। तोरा काजक हिसाब साफ राखब। जँ पुलिस तोहरासँ प्रश्न पुछय, जे देखने छह से कहिह। ककरो कहने झूठ नहि बोलिह।'' शम्भु कहल, ''हमरा बस मजूरी समयपर चाही।'' दिनेश पावतीपर तिथि लिखि देलनि।

अभय एहि बीच दिनेशक बयानक विषयमे विश्वसनीय पुष्टि करैत छलाह। थानामे ककरो निजी विवादक विवरण सार्वजनिक करबाक उद्देश्य हुनक नहि छल। समाचारक मुख्य प्रश्न रतनक कारोबार, श्रमिकक शोषण आ नरेशक हत्या छल। दिनेशक धमकीक बात कानूनी प्रक्रियामे सम्बन्धित हो सकैत छल, मुदा ओकरा सनसनीक शीर्षक बनायब पूनम आ नरेशक परिवारक मूल प्रश्नक ऊपर परदा देत। अभय अपन नोटमे लिखलनि —'धमकीक कथनक पुष्टि, सम्बन्धित मामला, प्रकाशनक आवश्यकता।' तेसर प्रश्नक उत्तर हुनका एखन 'नहि' बुझायल।

दिनेश एकटा साँझ किरणक मायकेक गामसँ घुरैत मोटरसाइकिलपर बैसल पुरान मित्रकेँ देखलनि। मित्र पुछलक, ''मेल-मिलाप नहि होयत?'' दिनेश उत्तर देलनि, ''हमर निर्णय अलग रहबाक अछि। जे लोक एहि विषयमे गप्प करैत अछि, हुनकासँ कहू जे गप्पसँ ककरो घर नहि बनैत अछि।'' मित्र मुस्कुराएब बन्द कएलक। दिनेश आगाँ बढ़ि गेलाह। पुरान परिचय आ समाजक अपेक्षा विवाहक टूटल भरोसाक भरपाइ नहि करैत

छैक। ओहि राति ओ अपन बैंकक किस्तक अगिला तिथि लिखलनि आ शम्भुक मजदूरीक हिसाब मिलौलनि।

किरणक घरक बिजलीक बिल आएल। पहिने दिनेश चुकबैत छलाह; आब हुनका स्वयं भुगतान करबाक पड़ल। ओ कतेक बेर मोबाइलमे पुरान सम्पर्क खोलि फेर बन्द कएलथिन। अन्ततः बिलक रकम अपन बचतसँ देलथिन। बैंकक सन्देश अबिते हुनका बुझायल जे स्वतंत्र जीवन केवल भावनाक निर्णय नहि; छोट-छोट दायित्वक क्रम अछि। ओ नरेशक पुरान अपूर्ण वेतन-पत्रक नकल सम्बन्धित अधिकारीकेँ देबाक सूचीमे जोड़लथिन। दिनेशक प्रति अपराध-बोध हुनका अपन कार्यालयी जिम्मेवारीसँ मुक्त नहि करैत छल।

एकटा भोर दिनेश ओहि घरक सामनेसँ गुजरलाह जतय किरण रहैत छलीह। फाटकपर ओ ठहरलाह नहि। रसोईक खिड़की खुलल छल। भीतर एकटा फूलदान देखाइत छल, जे विवाहक बाद दुनू मिलि किनने छलाह। दिनेश क्षण भरि तकलनि, फेर बाइक आगाँ बढ़ा देलनि। तकर थोड़े दूर एकटा विद्यालयक बच्चा सड़क पार करैत समय ठिठकि गेल। दिनेश ब्रेक लगौलनि आ ओकरा सुरक्षित पार करएबाक बाट देलनि। मनमे क्रोध रहैतहुँ दोसरा लोकक प्रति सावधानी राखल जा सकैत अछि, ई छोट बात हुनका अपन दिनक लेल आवश्यक लगल।

थानासँ एकटा औपचारिक सूचना आएल जे दिनेशकेँ अपन फोनक मूल सन्देश आ ऋण सम्बन्धी दस्तावेजक पुष्टि लेल फेर उपस्थित होयबाक अछि। ओ निर्धारित दिन पहुँचलाह। सुजाता कहलथिन, ‘‘जे पिछिला बयानमे कहने छी, ओकर तिथि आ क्रम मोबाइलक विवरणसँ मिला रहल छी। जँ किछु भूल भेल हो तँ स्पष्ट कहू।’’ दिनेश दू तिथि सुधारलनि। ओ एकटा वाक्य जोड़लनि—‘‘हम धन नहि पेलहुँ, मुदा धन देबाक धमकीपूर्ण माँग कएलहुँ।’’ सुजाता बिना टिप्पणीक कथन दर्ज कएलथिन। ओहि क्षण दिनेशकेँ अपन कएल काजक पूरा नाम सुनाइ देलक।

रवि दिनेशकेँ स्टेशनक लगक चाय-दोकानपर भेटल। ‘‘किछु हलुक लगैत अछि?’’ ओ पुछलक। दिनेश कहला, ‘‘हलुक नहि। मुदा आब जे काज बाकी अछि, ओकर सूची बना

सकैत छी।'' ''कोन सूची?'' ''कर्जक कागज, मजदूरक बकाया, अदालतक तिथि, काजघरक अधूरा काम।'' रवि कहलक, ''आ अपन घर?'' दिनेश चायक कप रखलनि। ''घरक विषयमे ओही निर्णय जे किरणसँ कहने छी। पुरान विश्वास लौटि नहि रहल अछि। बिनु विश्वासक संग रहब, ई दुनूक लेल दण्ड होयत।''

किरणकेँ विभाक नाम याद आएल। दुनू स्त्री अलग कारणसँ रतनक जीवनमे घेरायल छलीह। विभाक विश्वास पतिक छलसँ टूटल छल; किरण स्वयं विवाहक विश्वास तोड़ने छलीह आ व्यावसायिक निर्णयमे सेहो किछु गलती कएने छलीह। हुनका विभासँ क्षमा माँगबाक मन होइत छल, मुदा ओ जानैत छलीह जे क्षमा माँगब भरिसँ हानि समाप्त नहि होयत। ओ एकटा छोट पत्र लिखलथिन—'जे कागज हम देबाक जिम्मेवारी लेने छी, ओ प्रमाणित होइतहि संबंधित अधिकारीकेँ सौंपब।' पत्र व्यक्तिगत क्षमा-याचनाक बदला तथ्यपर सीमित राखलनि। ओ पत्र एखन नहि पठौलथिन, अधिवक्तासँ जाँचबाक लेल रखलथिन।

दिनेशक छोट ठेका अन्ततः पूरा भेल। ग्राहक चौखट जाँचि कहलनि, ''पहिने जे माप बिगड़ल छल, आब ठीक अछि।'' दिनेश अपन मजदूरसभकेँ बकाया देलनि। शम्भु पावतीपर हस्ताक्षर कएलक। दिनेशक जेबीमे बहुत कम टका बचल, मुदा पहिल बेर कतेको दिनक बाद दिनक काजक एकटा हिसाब बन्द भेल। ओ घर घुरैत बाटमे दाल, तेल आ औषधि किनलनि। अपन लेल छोट घरक भाड़ा देब छल, जेकर कुर्सी पुरान आ दीवालपर रङ्ग उखड़ल छल। तथापि ओ घर अपन निर्णयक दायित्वसँ चलबाक छल।

दिनेशकेँ अपन पिता याद अएलाह। पिता कहैत छलाह जे घरमे विवाद हो तँ पहिने रोटीक व्यवस्था सम्हारू, तकर बाद बोली सम्हारू। ओहि वाक्यक अर्थ तखन हुनका सामान्य लगैत छल। आइ शम्भुक वेतन चुकौने दिनेशक अपन थारीमे भात कम छल, मुदा ककरो हक रोकि नहि रखने छलाह। ओ रविकेँ सन्देश पठौलनि जे अगिला सप्ताह बैंकक तिथि अछि। रवि उत्तर देलक, ''समयपर चलब।'' दिनेश फोन राखि एकटा पन्नापर सभ आवश्यक कागजक नाम लिखलनि। कागजक सभ पाँति हुनका अलग चिन्ता देखबैत छल,

मुदा कोनो पाँति नुकाएबाक विकल्प ओ आब नहि चाहैत छलाह। एहि साधारण सूचीमे कोनो प्रतिशोध नहि छल; केवल अपन उत्तरदायित्वक तैयारी छल।

रातिमे दिनेश विवाहक छायाचित्र उतारि कागजमे लपेटि बाकसमे राखलनि। ओ तस्वीर फाड़लनि नहि, सार्वजनिक रूपसँ ककरो अपमानो नहि केलनि। दुःखक नाँवपर धमकी देबाक गलती एक बेर कऽ चुकल छलाह। आब अपन चोटक बदला ककरो जीवनपर फेर वार नहि करबाक चाहैत छलाह। कानूनक आगाँ अपन उत्तरदायित्वक प्रश्न बाकी छल; ऋणक सत्य सेहो पूरा स्पष्ट नहि भेल छल। दीपक बुझएबाक पहिने ओ अगिला दिनक काजक समय लिखलनि। किरणसँ अलग जीवनक आरम्भ एहि साधारण कापीक पन्नासँ भेल।

अध्याय ५४ : समाचारक मर्यादा

अभय पासवान नगरक छोट समाचार-कक्षमे पहुँचलाह तँ मेजपर तीनटा तस्वीर राखल छल। पहिलमे नई दिशा रोजगार केन्द्रक बन्द फाटक, दोसरमे पुलिसक गाड़ी आ तेसरमे पूनमक पुरान नियुक्तिपत्रक संग ओकर छवि छल। तेसर तस्वीर ककरो मोबाइलसँ कार्यालयक समूहमे पठाओल गेल छल। मञ्जरी झाक दोसर संस्करणक सम्पादनक जिम्मेवारी भेटलाक बाद किछु सप्ताहसँ समाचार-कक्षक दैनन्दिन सम्पादन नवल किशोर सम्हारि रहल छलाह। मेजक पाछाँ बैसल सम्पादक नवल किशोर कहला, ‘‘लोक पूनमक कथा पढ़य चाहैत अछि। एखन समाचार चलत तँ बहुत लोक देखत।’’ अभय तस्वीर उलटि देलनि। ‘‘ओ पीड़ित छथि, प्रदर्शनक वस्तु नहि। हुनक सहमति बिना ई छवि नहि छापब।’’

नवल किशोर कहला, ‘‘नाम तँ आधा नगर जनैत अछि।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘नगरमे नाम घूमबाक अर्थ प्रकाशनक अनुमति नहि होइत अछि। कियो दबावमे, डरमे वा विवशतामे अपन अनुभव कहने हो, तँ ओकरा सभक आगाँ फेर-फेर उघारब आवश्यक नहि।’’ सम्पादक अपन चश्मा उतारलनि। ‘‘तखन खबरि की रहत?’’ अभय मेजपर नरेशक हत्याक जाँच, मजदूरक बकाया आ झूठ नियुक्तिक भुगतानक अलग-अलग नोट राखलनि। ‘‘खबरि बहुत अछि। बस आसान सनसनी चाही कि साँच विषय, ई तय करबाक अछि।’’

समाचार-कक्षमे नव नियुक्त सहायक रितेश कापी लऽ बैसल छल। ओ कहलक, ‘‘हम एकटा ऑनलाइन पन्नापर पूनमक घरक फोटो देखलहुँ। ओकरा हटएब कियो नहि कहि रहल अछि।’’ अभय पुछलनि, ‘‘तहिना काज करब जरूरी अछि?’’ रितेश चुप भऽ गेल। अभय ओकरा बुझौलनि जे पृष्ठपर एक बेर गेल छवि बहुत दूर धरि पहुँचि जाइत अछि। न्यायिक बयान, चिकित्सकीय जानकारी आ व्यक्तिक घरक पहचान सार्वजनिक करबाक अधिकार समाचारक हड़बड़ीसँ उत्पन्न नहि होइत। ओ कहला, ‘‘पाठककेँ प्रश्न बुझाउ, पीड़ितकेँ फेर निशाना नहि बनाउ।’’

एहि बहसक बीच फोन बाजल। पूनमक मामा बोलैत छलाह। ‘‘आइ दुआरिपर दू युवक कैमरा लऽ अएल छल। कहैत छल पूरा कथा सुनाउ, तखन सहायता भेटत। पूनम भीतरसँ बाहर नहि अएलीह।’’ अभय पुछलनि जे ओ युवक ककर नामसँ आएल छल। मामा कहला जे कियो स्पष्ट परिचय नहि देलक। अभय सलाह देलनि जे परिवार अपन इच्छा स्पष्ट कहि सकैत अछि, अनचाहल घुसपैठक विषयमे सम्बन्धित अधिकारीकेँ सूचित कऽ सकैत अछि। ओ स्वयं परिवारक दुआरिपर कैमरा लऽ जायबासँ इनकार केलनि।

नैना ओहि दिन पूनमसँ भेंट करबाक गेलीह। पूनम डॉक्टरक देखरेखमे धीरे-धीरे चलय लगलीह, मुदा बाहरी लोकक आवाज सुनिते चौंकि उठैत छलीह। ओ बरामदामे बैसि कपड़ाक पुरान थैला सहेजि रहल छलीह। नैना पुछलथिन, ‘‘बाहर जे लोक अएल छल, ओ फेर आएल?’’ ‘‘नहि,’’ पूनम उत्तर देलथिन। ‘‘मुदा पड़ोसक बच्चा मोबाइलमे हमर तस्वीर देखबैत छल। हम घरमे छी, तखनहुँ लगैत अछि जे फेर कतहु घेरि लेल गेलहुँ।’’ नैना थैलाक गाँठि खोलबामे हुनक सहायता कएलथिन, मुदा फोटो देखएबाक आग्रह नहि कएलथिन।

पूनमक माय पानि देलथिन। ‘‘हम चाहैत छी जे दोषीक दण्ड हो, मुदा बेटी सभक गप्पक विषय नहि बनय,’’ ओ कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अभय एहि विषयमे सावधान छथि। समाचारमे अन्य पीड़ितक नामो छिपाओल जाएत।’’ पूनम सुनि कहलीह, ‘‘हम अपन बयान अधिकारीकेँ देने छी। ओ बात सच अछि। मुदा हमर रोग, हमर घरक भीतरक बात आ हमरा कखन निन्न अबैत अछि—ई सभ ककरो समाचार नहि।’’ नैनाकेँ अपन मित्रक ई सीमा पूर्ण उचित लगल।

अभय समाचार-कक्षमे अपन रपट लिखब शुरू केलनि। पहिल पाँतिमे मालिकक गिरफ्तारीक उल्लेख छल, मुदा संगहि लिखल जे आरोपक न्यायिक परीक्षण एखन चलि रहल अछि। दोसर अंशमे श्रमिकक नियुक्ति-पत्र बदलल जाएब, मजदूरी रोकल जाएब आ आवाजाहीपर दबावक साक्ष्यक विषय छल। ओ पंक्तिक बगलमे स्रोतक स्थिति लिखलनि —पीड़ितक बयान, कार्यालयी अभिलेख, अधिकृत जानकारी। जाहि तथ्यक स्वतन्त्र पुष्टि

नहि छल, ओकरा खबरिक निश्चित कथनमे नहि बदललनि। समय कम छल, मुदा सत्यक सावधानीमे देरी होएब झूठक तीव्रतासँ नीक छल।

रितेश नब मसौदा पढ़ि पुछलक, ‘‘नरेशक हत्या आ पूनमक शोषण एक्के कारोबारक सँग जुड़ल अछि, तँ एक्के कहानी किएक नहि बनाबी?’’ अभय कहला, ‘‘दुनूकेँ जोड़यवला आर्थिक कागज अछि, ई तथ्य लिखू। मुदा नरेशक हत्याक पूरा घटनाक्रम न्यायालयमे परखल जायत। पूनम जे सहलनि, ओ अलग अपराधक अनुभव अछि। साक्ष्यकेँ जतेक जोड़ैत अछि, ओतेकहि जोड़ू। पाठक आकर्षित करबाक लेल अनुमानक डोरी नहि बाँधू।’’ रितेश नोटबुकमे एहि शब्दक अर्थ लिखलक।

दुपहर कार्यालयमे एकटा स्थानीय विज्ञापनदाता पहुँचल। ओकर ठेकेदारी कारोबारक नाम वीरेन्द्रक परिचित लोकक सूचीमे छल। ओ सम्पादकसँ कहलक, ‘‘श्रमिकक विषयमे बेसी लिखब तँ सभ ठेकेदार बदनाम होयत। समाचारक बदला विकासक काज देखाउ।’’ अभय शान्तिसँ पुछलनि, ‘‘कतेक मजदूरकेँ वेतन देबाक प्रमाण अहाँक लग अछि?’’ व्यक्ति कहलक, ‘‘हम एतय हिसाब देबाक नहि अएल छी।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘तखन हमर जाँचमे अहाँक कथनकेँ प्रमाण मानबाक आधार नहि। जँ तथ्यात्मक आपत्ति अछि, लिखित पठाउ।’’ व्यक्ति उठि चलि गेल। नवल किशोरक माथपर चिन्ताक रेखा पड़ल। विज्ञापनक पैसा छोट समाचार-कक्ष लेल महत्त्वपूर्ण छल।

नवल किशोर अभयकेँ अलग बजौलनि। ‘‘भाड़ा, बिजली, मुद्रण—सभक खर्च अछि। विज्ञापन गेल तँ कर्मचारीक वेतन कोना देब?’’ अभय हुनक चिन्ता अस्वीकार नहि कएलनि। ‘‘व्यवसाय चलाएब जरूरी अछि,’’ ओ कहलनि, ‘‘मुदा कारोबार बचएबाक लेल श्रमिकक अधिकारक खबरि रोकब तँ समाचार-कक्षक अर्थ की रहत? जे तथ्य त्रुटिपूर्ण अछि, सुधारब। जे सत्यापित अछि, ओकरा विज्ञापनक दामपर नहि हटाएब।’’ नवल किशोर किछु देरि हिसाबक कापी देखैत रहलाह। अन्ततः कहला, ‘‘रपट प्रकाशनसँ पहिने फेर जाँचू। मुदा शीर्षकमे आरोप आ सिद्ध दोषक भेद साफ रहय।’’

अभय शीर्षक लिखलनि—‘रोजगारक आशासँ शोषण धरि : प्रभावित श्रमिकक अधिकारक प्रश्न’। नवल किशोर कहला, ‘‘ई बहुत साधारण अछि।’’ अभय कहला, ‘‘कथाक भार घटना उठाओत, चिचियाइत शब्द नहि।’’ शीर्षकक नीचाँ ओ उपलब्ध सरकारी सहायता, लिखित शिकायत आ वैधानिक सहायताक साधारण जानकारी जोड़लनि। ओहि स्थानक पता मात्र देल गेल जकर सार्वजनिकता संस्थागत रूपसँ स्वीकृत छल। पूनमक घरक गली वा चिकित्सा-केन्द्रक नाम अनावश्यक छल, ताहि लेल हटाओल गेल।

तहिना एकटा दोसर फोन आएल। महिलासँ सम्बन्धित सहायता-संस्थाक कर्मी सीमा बोलैत छलीह। ओ कहलीह, ‘‘किछु रिपोर्टर कहैत छथि जे पीड़ितकेँ बोलब आवश्यक अछि, नहि तँ ओकर मामला कमजोर बुझाओत।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘सार्वजनिक मंचपर बयान देब कानूनी प्रक्रिया पूरा करबाक शर्त नहि। पीड़ित अपन सुविधा, इच्छा आ सुरक्षाक अनुसार निर्णय लेतीह।’’ सीमा कहलीह, ‘‘ई बात स्पष्ट लिखू। परिवारकेँ बहुत दबाव अछि।’’ अभय समाचारक अन्तिम अंशमे एहि विषयक जानकारी जोड़लनि, मुदा पूनमक निजी चिकित्सा वा डरक विशिष्ट विवरण नहि देलनि।

साँझ नैनाक फोन आएल। ‘‘पूनमक तस्वीर अखबारमे नहि जायत ने?’’ ओ पुछलथिन। अभय कहला, ‘‘नहि। ओकरा छापबाक आवश्यकता नहि।’’ नैना किछु क्षण चुप रहलीह। ‘‘हम लोक जखन ओकर खोज करैत रही, तखन सबहक सामने नाम लऽ कऽ पुछनाइ जरूरी लगैत छल। आब ओ जीवित घुरि अएल छथि; तखन हुनक नाम पर चुप रहनाइ सेहो जरूरी अछि।’’ अभय कहला, ‘‘खोजक समय सूचना देब आ सुरक्षित लौटलाक बाद निजता रखब, दुनू अलग परिस्थिति अछि।’’ नैना हुनक स्वरमे थकान पहचानलथिन। ‘‘खेनाइ खएलहुँ?’’ ओ पुछलथिन। अभय हँसलनि—‘‘अभी नहि। मसौदा पूरा कऽ रहल छी।’’

रातिमे रपट प्रकाशित भेल। अगिला बिहान चाय-दोकानपर कियो कहैत छल जे समाचारमे नाटक कम अछि; कियो कहैत छल जे पहिल बेर मजदूरक बकाया वेतनक विषय स्पष्ट पढ़ल। एकटा वृद्धा पन्नाक नीचाँ छपल सहायता-कार्यालयक पता कटि अपन थैलामे

रखि लेलीह। हुनक नतिनी परदेशमे घरेलू काज करबाक लेल गेल छलीह आ महीनासँ पूरा मजदूरी नहि भेटल छल। वृद्धा दोकानदारसँ पुछलथिन, ‘‘ई ठाम गेलासँ जानकारी भेटत?’’ दोकानदार कहलक, ‘‘पता सरकारी अछि; पहिने फोन कऽ बुझि लिअ।’’ समाचारक व्यावहारिक उपयोग ओहि छोट संवादमे देखाइत छल।

मुदा रपट प्रकाशित भेलाक तुरन्त बाद ऑनलाइन टिप्पणीमे किछु लोक पूनमक नाम जोड़ि देलक। रितेश पर्दापर देखलनि तँ भयभित भऽ गेल। ‘‘हम सभ नाम नहि देने रही, मुदा टिप्पणीमे लिखि रहल अछि।’’ अभय समाचार-कक्षक संचालककेँ कहलनि जे निजी जानकारी आ अपमानजनक सामग्रीकेँ नियमक अनुसार हटाओल जाय। नवल किशोर एहि विषयमे सहमति देलनि। बाहरी लोकक लेखल सभ बातपर नियन्त्रण सम्भव नहि छल, मुदा अपन मंचक उपयोगसँ होमयवाला हानि घटएबाक जिम्मेवारी स्वीकार कएल जा सकैत छल।

पूनमक भाइकेँ विद्यालयसँ घुरैत दूटा युवक टोकलक। एकटा पुछलक जे ओकर बहिनक संग वास्तवमे की भेल छल। बालक उत्तर देब नहि चाहलक। घर पहुँचिते मायकेँ सभ कहि देलक। परिवार एहि विषयमे सहायता-संस्थाक सीमा सँ सलाह लेलनि। सीमा बच्चाकेँ बुझौलथिन जे अनचाहल प्रश्नक उत्तर देबाक बाध्यता नहि छैक; जँ कियो बाट रोकय तँ विश्वसनीय वयस्ककेँ तुरन्त बताउ। पूनम ई बात सुनि छोट भाइक माथपर हाथ राखलथिन। अपन अनुभवक भार भाइक दैनिक जीवनपर नहि पड़य, ई हुनक नब चिन्ता छल।

एकटा डिजिटल पन्ना पूनमक घरक पुरान तस्वीरक संग झूठ शीर्षक लगा देने छल। अभय ओकर सञ्चालककेँ तथ्यात्मक आपत्ति पठौलनि। उत्तरमे सञ्चालक कहलक जे तस्वीर सामाजिक माध्यमपर पहिने सँ छल। अभय कहलनि, ‘‘पहिने भटकल सामग्रीकेँ फेर फैलाएब स्वतः उचित नहि होइत अछि। शीर्षकमे जे दावा अछि, तकर प्रमाण दिअ।’’ बिना प्रमाणक आरोप हटेबाक औपचारिक आग्रह करैत ओ समय आ सन्देशक प्रति सुरक्षित रखलनि। ओ निजी झगड़ाकेँ सार्वजनिक अपमानमे नहि बदललनि।

नरेशक बहिन रेखा एहि रपटकेँ पढ़ि अभयकेँ फोन केलथिन। ‘‘भायक नाम छापलहुँ, मुदा मायकेँ एखनहुँ फोन करयवाला लोक बुझैत अछि जे ककरो दोष सिद्ध भऽ गेल,’’ ओ कहलीह। अभय उत्तर देलनि, ‘‘हम आरोप आ न्यायिक निर्णयक अन्तर लिखने छी। जँ कोनो पाँति गलत वा अस्पष्ट अछि, बताउ।’’ रेखा कहलीह, ‘‘एकटा बात सही लिखल अछि—भैया हिसाबक प्रश्न उठौने छलाह। मुदा हुनका केवल मरल आदमीक रूपमे नहि याद राखू। ओ हमरा पढ़ाइमे सहायता करैत छलाह, माय लेल औषधि अनैत छलाह।’’ अभय रेखाक बात नोट कएलनि; ओकर निजी शोककेँ अगिला समाचारक सामग्री बनएबाक अनुमति मँगलनि नहि।

अगिला दिन अभय एकटा सम्पादकीय बैठकमे समाचारक त्रुटि-सुधारक बात उठौलनि। रितेश पहिल संस्करणमे एक भुगतानक तिथि गलत लिखि देने छल—तीन तारीखक बदला तेरह। घटनाक अर्थ ताहिसँ नहि बदलैत छल, मुदा नरेशक हिसाबक जाँचमे तिथि महत्त्वपूर्ण छल। अभय कहला, ‘‘जे गलती अछि, स्पष्ट सुधार छापू। चुपचाप बदलि देलासँ पाठककेँ पता नहि चलत।’’ नवल किशोर सहमति देलनि। रितेश फेर मसौदाक प्रत्येक नाम जाँचलक। अगिला अङ्कमे संक्षिप्त सुधार प्रकाशित भेल। समाचार-कक्षक विश्वसनीयता गलती नहि होयबामात्रसँ नहि, गलती स्वीकार करबासँ सेहो बनैत अछि।

एकटा साँझ अभय पूनमक परिवारसँ मिलने बिना नैनाक घर पहुँचलाह। सरस्वती देवी चाय देलथिन। चन्दन काजक खोजमे बाहर गेल छल; घरमे ओकर लौटबाक चिन्ता बनल छल। नैना कहलीह, ‘‘समाचारक बाद पूनमक घर लग भीड़ घटल अछि। मुदा लोक एखनहुँ पूछैत अछि जे की-की भेल छल।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘किछु प्रश्नक सार्वजनिक उत्तर नहि होएबो ठीक अछि। ओकर जीवन हुनक अपन अछि।’’ सरस्वती देवी कहलीह, ‘‘लोककेँ दुख सुनयमे रस आबय छैक। दुख सहनिहारकेँ फेर सभ कहय पड़ैत छैक, से कतेक कठिन होयत!’’ दुनू चुप भऽ गेलाह।

नैना अपन कापीक नब पन्ना अभयकेँ देखौलथिन। सत्यापित रोजगारक सूचना जाँचबाक किछु आधार लिखने छलीह। ‘‘हम सोचैत छी जे ककरो शिकायत सुनब तँ ओकर नाम बिना अनुमति सूचीमे नहि रखब,’’ ओ कहलीह। अभय उत्तर देलनि, ‘‘ठीक। जे

जानकारी चाही, ओतेकहि लिअ; ओकर उपयोग किएक होयत, पहिने स्पष्ट करू।'' नैना कहलीह, ''कार्यालयमे कतेक कागज हम बिना पुछने भरैत देखने रही। आब ओहि गलतीकेँ नब रूपमे नहि दोहराएब।'' एहि बातचीतमे दुनूक प्रेमक निकटता छल, मुदा एक-दोसराक काजपर असहमति करबाक स्वतंत्रताओ छल।

पूनम एकटा साँझ सीमासँ कहलथिन जे भविष्य मे ओ अपन अनुभवक किछु अंश लिखय चाहतीह, मुदा एखन नहि। सीमा पुछलथिन, ''जँ चाहब तँ लिखि राखब, सार्वजनिक करबाक बाध्यता नहि।'' पूनम एकटा कापी मँगौलथिन। पहिल पन्नापर ओ अपन नाम लिखलथिन, फेर बहुत देरि धरि किछु नहि लिखलथिन। ओ कापी बन्द कऽ सिरहाना लग राखि देलथिन। अपन कथाक समय चुनबाक अधिकार हुनक हाथमे घुरि आएब शुरू भेल छल। बाहरक लोकक द्रुत समाचारसँ एकर गतिक कोनो सम्बन्ध नहि छल।

रितेश एकटा दिन अभयसँ पुछलक, ''समाचारमे पाठकक रुचि रखब जरूरी अछि; तखन मर्यादा आ आकर्षणक बीच सीमा कतय?'' अभय कहला, ''एकटा सरल प्रश्न पुछ —ई विवरण नहि देने रहितहुँ पाठक मुख्य घटना बुझि सकैत छल कि नहि? जँ सकैत छल, आ विवरणसँ ककरो अनावश्यक हानि पहुँचत, तँ ओकरा हटाउ। दोसर प्रश्न—जे लिखैत छी, से प्रमाणित अछि कि केवल लोकक जिज्ञासा? तेसर—जकर बारेमे लिखैत छी, ओकरा उत्तर देबाक उचित अवसर देने छी?'' रितेश लिखैत रहल। ओ बुझलक जे समाचार बनएब केवल तेज लिखबाक काज नहि।

अभय पुलिससँ रतनक मामला सम्बन्धी नब जानकारी मँगौलनि। सुजाता कहलथिन जे जाँचक किछु अंश न्यायिक प्रक्रियाक अधीन अछि, अतः सार्वजनिक विवरण सीमित रहत। अभय पुछलनि जे पीड़ितसभक वैधानिक सहायता सम्बन्धी सूचना सार्वजनिक अछि कि नहि। सुजाता उपयुक्त सार्वजनिक माध्यम देखबाक कहलथिन। अभय जाँचक गोपनीय बात उगलाबबाक जिद नहि कएलनि। जे सूचना भेटल, ओ ओकर सन्दर्भ सहित लिखलनि; जे नहि भेटल, तकर विषयमे अनुमान नहि जोड़लनि। सूचना पाबयबाक अधिकार आ अनुसन्धान सुरक्षित रखबाक आवश्यकता एक-दोसराक विरोधी बनब आवश्यक नहि।

माधवी देवी समाचार पढ़ि नैनाकेँ कहलीह जे गरीब महिलासभक बात प्रायः ओहि समय सुनल जाइत अछि जखन कियो मारि-पीटि घायल भऽ जाए। ‘‘जे दिन घरमे शान्ति रहैत अछि, ओ दिनक बचल टका आ बच्चाक पढ़ाइकेँ के लिखैत अछि?’’ ओ पुछलथिन। नैना ई प्रश्न अभयकेँ बतौलथिन। अभय कहलनि, ‘‘शराबबन्दीक शुरुआती राहत आ बादक अवैध कारोबारक असर पर सभ घरक अनुभव एक्के नहि। जतेक गोटेसँ बात करब, ओतबा भिन्न साँच भेटत।’’ ओ निर्णय कएलनि जे अगिला रिपोर्टमे अनेक परिवारक पुष्टि कएल अनुभव अलग-अलग रखताह, ककरो बात सबहक प्रतिनिधि बना कऽ नहि लिखताह।

देरि राति समाचार-कक्षमे केवल दूटा बत्ती जरैत छल। नवल किशोर अभयक अगिला रपट पढ़ि कहलनि, ‘‘एहि बेर शीर्षक—‘बन्द संस्थाक कर्मचारी फेर नोकरीक खोजमे’। हत्या, तस्करी, गिरफ्तारीक बादो रोजगारक प्रश्न घुरि अएल।’’ अभय कहलनि, ‘‘ओ प्रश्न पहिनेसँ छल। बाँकी घटना ओकर ऊपर जमैत गेल।’’ नवल किशोर थोड़े देरि चुप रहलाह। ‘‘तखन समाचारक कामे अछि जे पाछाँ छूटल लोककेँ देखाबय।’’ अभय मेजपर कुसुम, फकीरा आ इमरानक बकाया मजदूरीक अलग-अलग सत्यापित विवरण सजा देलनि। ककरो अनावश्यक निजी परिचय बिना हुनक कठिनाइ स्पष्ट होइत छल।

घर घुरैत अभय बस अड्डापर रुकलाह। पाँतिमे युवक-युवती प्रमाणपत्रक फाइल लऽ ठाढ़ छलाह। एक युवती मोबाइलपर परीक्षा-कक्षक पता देखैत छलीह; एक युवक अपन चप्पलक पट्टी बाँधैत छल। नवगढ़क ई दृश्य हुनका पहिल बेर नैना सँ भेल भेंटक स्मृति देलक। ओहि दिन नैना नोकरीक आशामे दौड़ि रहल छलीह; आब ओ दोसरा लोकक लेल सही जानकारी खोजबाक योजना बना रहल छलीह। पूनम जीवित घुरि एलीह, मुदा ओहि अनुभवक घाव भरबाक समय चाही। अभय नोटबुक बन्द कएलनि। आइ राति ककरो घरक दुआरि बजाकऽ उत्तर मँगबाक आवश्यकता नहि छल।

दोसरा भोर अभय अपन प्रकाशित रपट फेर पढ़लनि। शीर्षकक बगलमे छोटी सुधार-सूचना, अन्तमे श्रमिकक अधिकारक उपयोगी पता, आ पूनमक परिवारक कोनो छवि नहि। समाचारसँ सभ समस्या हल नहि भेल छल। रतनक मुकदमा चलबाक छल, दिनेशक

स्वीकारोक्ति जाँचबाक छल, चन्दनक जिम्मेवारीक प्रश्न बाकी छल, कर्मचारीक वेतन एखन अटकल छल। तथापि आजुक पन्नामे पीड़ितक जीवनकेँ तमाशा बनौने बिना अन्यायपर प्रश्न उठाओल गेल छल। अभय कागज मोड़ि अपन झोरामे राखलनि आ अगिला दिनक समाचार जुटएबाक लेल निकलि गेलाह।

अध्याय ५५ : चन्दनक गलती

भोरमे चन्दनक निन्न खुलल तँ आँगनमे चक्कीक आवाज आबि रहल छल। सरस्वती देवी पीतलाक छोट डब्बामे धनिया कूटि रहल छलीह। जाड़क हलुक स्पर्श छल, मुदा चन्दनक देहपर पसीना छल। तकियाक नीचाँ राखल फोन रातिए तीन बेर बजल छल। पहिल बेर ऋण देनिहार महाजनक सन्देश, दोसर बेर पुरान चालकक, तेसर बेर अनचिन्हार नम्बर। तेसर सन्देशमे केवल एतबे लिखल छल—‘आबो समय अछि, जे कहबाक हो से सोचि कऽ कहिह।’ चन्दन सन्देश मिटौलक नहि। ओ स्क्रीनक तस्वीर सुरक्षित रखलक आ चुपचाप उठि बैसल।

रसोईमे नैना रोटीक पिठार सानि रहल छलीह। हुनका देखि चन्दन कहलक, ‘‘दीदी, आइ सुजाताजीसँ फेर बात करबाक अछि।’’ नैना हाथ धोइत पुछलथिन, ‘‘समय भेटल?’’ ‘‘दस बजे।’’ ‘‘अधिवक्तासँ?’’ ‘‘साढ़े नौ बजे थानाक कात भेंटताह।’’ सरस्वती देवी दुआरिसँ भीतर अएलिह। ‘‘हमहुँ चलब।’’ चन्दन तुरन्त रोकबय चाहलक, मुदा माय ओकर बात काटि देलथिन। ‘‘थानाक भीतर नहि बैसब तँ बाहर बैसल रहब। तोरा साँच कहबाक साहस चाही। हमर मुँह देखिकऽ झूठ नहि कहिह, एतबे कहय चाहैत छी।’’

नैना मायक चेहरा देखलथिन। अस्पतालसँ घुरलाक बाद हुनक चाल एखनहुँ मन्द छल। ‘‘अहाँ घरपर रहू,’’ ओ कहलीह, ‘‘हम चन्दनक संग छी। जे जानकारी भेटत, घुरिते बतायब।’’ सरस्वती किछु देरि आगिक बासनक कात ठाढ़ रहलिह। ‘‘हमरा बेटाकेँ बचाबय चाहैत छी,’’ ओ कहलीह, ‘‘मुदा बचेनाइ आ नुकएब एक बात नहि। तोहर बाबू जीवित रहितथि तँ एही कहितथि।’’ चन्दन माय दिस तकय नहि सकल। पिताक नाम ओकर घरमे कमे उठैत छल; उठिते सभक आवाज अपन-आप धीमा भऽ जाइत छल।

चन्दन जेबीसँ कापीक दूटा मोड़ल पन्ना निकाललक। ओ राति भरि अपन ढुलाईक तिथि लिखने छल। पहिल बेर निर्माण-सामग्री उठौने छल; तखन कागज साधारण छल।

दोसर बेर बन्द पेटी पहुँचेबाक कहल गेल छल, चालानमे 'उपकरण' लिखल छल, गाड़ीमे काँचक बोतलक खनखनाहट सुनाइत छल। तेसर बेर जखन मनोजक आदमी बोरा उतारय लागल, तखन चन्दन देखलक जे बोरा लगक जमीन भीजल अछि आ गन्धि तेज अछि। ओ पूछने छल, ''एहि मालक अनुमति अछि ने?'' उत्तरमे चालक कहने छल, ''जतेक पूछब, ओतेक नोकरी घटत।''

पहिने ओ एहि घटनाकेँ अपन दुविधाक प्रमाण मानैत छल। राति लिखैत ओकरा बुझायल जे शङ्का होयबाक बादो ओ गाड़ी चला देने छल। दोसर खेपक पाँच हजार टका ओकर बैंकमे नहि, हाथमे भेटल छल। ओ रकमसँ मोटरसाइकिलक किस्त चुकौने छल, किछु मायक औषधिमे लगौने छल। रुपैयाक उपयोग नीक काजमे भेलासँ ओकर स्रोत निर्दोष नहि भऽ जाइत अछि—ई बात ओ पहिने बुझितो अपनासँ लुका लेने छल। कापीक अन्तिम पन्नामे ओ लिखलक, 'गलती भेल दिन जतेक डर नहि छल, ओकरा मानबाक दिन ओतबसँ बेसी डर अछि।'

गलीसँ निकलिते चन्दनक भेट विजय सँ भेल। विजय छोट औषधि-दोकानमे काम करैत छल। ओकर हाथमे दवाक पेटी आ साइकिलक हैंडलपर झोरा छल। ''परीक्षाक नब सूचना अएल?'' ओ पुछलक। चन्दन कहलक, ''देखबाक समय नहि भेटल।'' विजय कनेक ठमकि गेल। ''तोहर फोटो देखलहुँ, ओहि जाँचवला समाचार लग। सब ठीक अछि?'' चन्दन उत्तर देबाक पहिने चारूकात देखलक। ''जे ठीक नहि अछि, तकरा ठीक करबाक कोशिश करैत छी।'' विजय आगाँ प्रश्न नहि केलक। चन्दनकेँ ई संयम अप्रत्याशित सहारा जेना लागल।

थानाक बाहर भीड़ छल। एक दिस छोट जमीन-विवादक लोक, दोसर दिस गुम भेल मोटरसाइकिलक शिकायत लऽ कऽ आएल परिवार। चन्दनकेँ अपन मामला एकाएक सभसँ पैघ आ सभसँ छोट दुनू बुझायल। अधिवक्ता शशिकान्त झा बरामदामे भेटलाह। ओ चन्दनक कापी खोलि कहलथिन, ''जे अपन आँखिसँ देखने छह, से साफ लिख। जे अनुमान अछि, ओकरा अनुमान कह। बिनु पढ़ने कोनो बयानपर हस्ताक्षर नहि करिह। आ

जे कागज तोहर लग अछि, ओकर मूल प्रति सुरक्षित रख।'' चन्दन माथ हिलौलक, मुदा मनमे एकटा प्रश्न छल—जँ साँच कहलाक बाद गिरफ्तारी भऽ गेल तँ?

सुजाता कुमारी कक्षमे बैसल छलीह। मेजपर नरेशक हत्या सम्बन्धी अलग फाइल, माल-ढुलाईक विवरण आ चन्दनक पहिल बयानक प्रति राखल छल। ओ पहिने चन्दनक स्वास्थ्य आ कानूनी सहायता उपलब्ध रहबाक पुष्टि कएलथिन। फेर पुछलथिन, ''पहिल कथनमे अहाँ कहने रही जे किछु खेपक सामानक विषयमे जानकारी नहि छल। आब की स्पष्ट करय चाहैत छी?'' चन्दन अपन लिखल पन्ना आगाँ बढ़ौलक। ''पहिल बेर सचमुच नहि बुझलहुँ। बादक दू खेपमे शङ्का भेल। हम माल खोलि नहि देखने रही, मुदा गलत काज होयबाक बात बुझय लागल छल। तखनहुँ टका लेलहुँ।''

सुजाता ओकर चेहरा देखैत रहलिह। ''शङ्का कखन भेल, तिथि याद अछि?'' चन्दन कापीक एक पन्ना खोललक। ''ई हफ्ताक मंगल, मुदा तारीख सुनिश्चित करबाक लेल फोनक सन्देश मिलाबय पड़त।'' ''ठीक।'' ''हम दामक बात पर मना कएने रही, मुदा फेर जरूरत कहि मानि गेलहुँ।'' सुजाता कहलथिन, ''एतय अहाँक मनक विचारसँ बेसी जरूरी अछि जे कोन काज भेल, कखन भेल, के उपस्थित छल। हमरा सच-सच बताउ। हम कोनो उत्तर अहाँक मुँहमे नहि रखब।'' चन्दन पहिल बेर थोड़े सहज भेल।

जखन हत्याक रातिक प्रसङ्ग उठल, तखन चन्दनक स्वर काँपय लागल। ओ कहलके जे मनोज ओकरा देरि राति फोन कऽ गाड़ी लऽ अनबाक कहने छल। ओ मनोजकेँ नहरक मोड़ लग छोड़ने छल आ किछु दूर बाटक कात प्रतीक्षा कएने छल। पहिने एतबे कहल छल। एखन ओ जोड़लक जे ओहि राति मनोजक कमीजक बाँह भीजल देखल छल, आ ओ घुरैत समय सामान्यसँ कम बात केने छल। ''अहाँ खून देखने छलहुँ?'' सुजाता पुछलथिन। ''नहि। पानि वा की छल, हम नहि जनैत छी।'' ''मनोजक हाथमे कोनो हथियार?'' ''हम नहि देखने छी।'' उत्तर छोट छल, मुदा एहि छोट उत्तरकेँ ओ अनुमानसँ भरबाक प्रयास नहि केलक।

सुजाता एकटा पुरान तस्वीर आगाँ बढ़ौलथिन—नहरक पक्का पुलक नीचाँक सड़क। ‘‘गाड़ी कतय ठाढ़ छल?’’ चन्दन तस्वीरपर उँगुर रखबाक बदला पेंसिल लऽ एकटा बिन्दु बनौलक। ‘‘एतय। मुदा रातिक अन्हार छल। दाहिना दिस जे पीपड़ छल, से ओहि दिन देखलहुँ।’’ सुजाता कर्मी अरुणकेँ नोट करबाक कहलथिन। फेर ओ चन्दनसँ फोनक स्थान-सम्बन्धी अभिलेख जाँचबाक सहमति आ आवश्यक प्रक्रिया स्पष्ट कएलथिन। चन्दनकेँ याद पड़ल जे तखन ओकरा अपन फोन बचेबाक बेचैनी छल; आजु ओहि फोनमे ओकर अपन बाटक हिसाब छल।

बातचीतक बीच चन्दन पानि मँगलक। गिलास हाथमे काँपि रहल छल। ‘‘हम हत्या नहि कएने छी,’’ ओ धीरे कहलक, ‘‘मुदा गलत मालक गाड़ी चलौने छी। जे रूपैया लेलहुँ, से छिपेने रही।’’ सुजाता कहलथिन, ‘‘हत्याक प्रश्न आ अवैध ढुलाईक प्रश्नक जाँच अलग आधारपर होयत। अहाँक कथनकेँ उपलब्ध प्रमाणसँ मिलाओल जाएत। कानूनी प्रक्रिया जे तय करत, ओ तकर अनुसार होयत।’’ चन्दन एहि उत्तरमे क्षमा खोजैत छल, मुदा क्षमा भेटल नहि; ओकरा केवल स्पष्ट बाट भेटल।

थानासँ बाहर निकलिते नैना पुछलथिन, ‘‘सब कहि देलह?’’ चन्दन हँ कहलके। ‘‘जाहि खेपक शङ्का छल, ओकरो?’’ ‘‘हँ।’’ ‘‘हत्याक राति जे देखलह?’’ ‘‘ओहो।’’ नैना ओकरा अपन थैलासँ रोटी आ सत्तूक छोट डब्बा देलथिन। चन्दन कहलके, ‘‘भूख नहि अछि।’’ ‘‘तथापि खा ले।’’ ओ चुपचाप एक कौर खएलक। बाहरे चायवला अपन बासन धोइत छल, सड़कपर विद्यालयक बस रुकल छल। न्याय आ अपराधक बीच जटिल प्रश्न चलैत रहल, मुदा दोपहरक भूख ककरो प्रतीक्षा नहि करैत छल।

पाछाँसँ एकटा स्त्री अपन किशोर बेटाकेँ लऽ कऽ थानाक फाटक लग बैसल छलीह। बेटाक साइकिल गलतीसँ ककरो गाड़ी सँ टकरा गेल छल; ओ लोक क्षतिपूर्तिक बात करय आएल छल। चन्दन हुनकर बातचीत सुनि सोचलक जे प्रत्येक गलती अपराध नहि होइत, मुदा प्रत्येक गलतीक किछु दाम होइत छैक। अपन काजमे ओ केवल अनजान राहगीर नहि छल। जे बेर ओकरा सन्देह भेल, ओहि बेर ‘नहि’ कहि सकैत छल। छोट राशिक लेल जे चुप्पी चुनने छल, से आब घरक प्रत्येक बातचीतमे सुनाइत छल। ओ स्त्री बेटाकेँ कहलीह,

‘‘जे बिगाड़लह, ओकर मरम्मति करिह।’’ चन्दन नजरि नीचाँ कऽ लेलक। ई बात ओकरा देरि धरि सतबैत रहल।

दुपहरक बाद सुजाता चन्दनक देल विवरणक आधारपर नब प्रश्न तैयार करैत छलीह। ओ अरुणकेँ कहलथिन जे गाड़ीक अभिलेख, मोबाइलक समय आ मालक कथित प्राप्तिकर्ताक बयानक तुलना करथि। ‘‘ककरो स्वीकार करबाक साहसकेँ निर्दोष होयबाक प्रमाण नहि बुझू,’’ ओ कहलीह, ‘‘आ जे कियो गलती मानैत अछि, तकरा सभ अपराधक माथा सेहो नहि देब। एक-एक बातक अपन जाँच होयत।’’ अरुण समय-सारणीमे नब पाँति जोड़लक। ओही दिन मनोजक न्यायिक हिरासत सम्बन्धी औपचारिक सूचना सेहो आएल छल। दुनू घटनाक कड़ी जोड़बाक काज एखन पूरा नहि भेल छल।

घर घुरबासँ पहिने चन्दन आ नैना बैंक गेलाह। मोटरसाइकिलक ऋणक तिथि दू दिन पाछाँ छल। चन्दन काउण्टरपर बकायाक सही विवरण मँगलक। कर्मचारी पहिले कहलके जे मोबाइलपर देखू; चन्दन लिखित प्रति चाहलक। ओहि कागजपर मूलधन, ब्याज आ विलम्ब-शुल्क अलग-अलग लिखल छल। चन्दन बहुत बेर ई अङ्क नजरि बचाकऽ देखैत छल; आइ ओ एक-एक पाँति पढ़लक। नैनाकेँ कहलक, ‘‘जँ हम अगिला मास वैध काजमे पाँच हजार कमाएब, तँ घरकेँ कतेक देब आ ई कतेक चुकाएब?’’ नैना कहलथिन, ‘‘पहिने काज भेटय। फेर दुनू हिसाब करब।’’

घर पहुँचिते सरस्वती देवी अपन कुरसीसँ उठि गेलीह। ‘‘की कहलनि?’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘हम जे केने छी से कहि देलहुँ। जाँच चलत।’’ ‘‘तोरा रोकलनि?’’ ‘‘आइ नहि। फेर बजेने छथि।’’ सरस्वतीक आँखि भीजि गेलनि। ओ चन्दनक माथ छू कऽ कहलीह, ‘‘तूँ छोट छलह तँ झूठ पकड़लाक बाद पहिने रोइत छलह, फेर साँच कहैत छलह। आब अपन गलतीक कारण रोनाइ कम नहि होयत। मुदा आब तोरा व्यवहार बदलय पड़त।’’ चन्दन पहिल बेर मायकेँ कहलक जे अवैध कमाइमे सँ बचल रकम अलग रखि देलक अछि, ओकर उपयोग ओ कानूनी सलाहक बिना नहि करत।

साँझ ओ अपन पुरान खर्चक कापीमे एकटा नब पन्ना जोड़लक। मायक औषधि पर जतेक टका गेल, ओहि खर्चक सोझाँ स्रोतक उल्लेख कएलक। ‘‘मायकेँ दवा देलहुँ, ताहिसँ हमरा गर्व होयबाक चाही,’’ ओ नैनासँ कहलक, ‘‘मुदा जे रुपैया सँ दवा किनल गेल, तकर बात मनमे काँटा अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘गलत काजक स्वीकार करब मतलब मायक इलाज गलत छल, से नहि। इलाज जरूरी छल। गलत ओ बाट छल जकरा तूँ चुनलह। अगिला बेर खर्चक जरूरत पर हम सभ मिलि सोचब, मुदा नुकायल रुपैया नहि लेब।’’ चन्दन कापी बन्द नहि केलक; ओ पन्ना खुलले रहल।

साँझ माधवी देवी अएलीह। ओ सरस्वती लेल पातर खिचड़ीक सामान देलथिन। ‘‘लोक बाहर बहुत बाजैत अछि,’’ ओ कहलीह। ‘‘कियो कहैत अछि जे चन्दन हत्यामे छल, कियो कहैत अछि पुलिस ओकरा छोड़ि देलक, माने सभ ठीक। दुनू बात हम नहि मानैत छी।’’ नैना कहलथिन, ‘‘मामला अदालतमे पहुँचल अछि। जेकर प्रमाण अछि, से अधिकारी कहताह।’’ माधवी माथ हिलौलथिन। ‘‘गरीबक लड़का गलत बाट पकड़य तँ लोक ओकर घरक भूख सेहो गिनब शुरू करैत अछि। मुदा भूखक उल्लेख गलतीक माफी नहि।’’ हुनक ई बात चन्दन भीतरसँ सुनि रहल छल।

रातिमे विजय फेर अएल। औषधि-दोकानक मालिककेँ गोदामसँ छोट माल ल्याबय लेल विश्वसनीय चालक चाही, मुदा पगार कम अछि आ काज स्थायी नहि। विजय कहलक, ‘‘हम तोहर नाम बिना पुछने नहि देने छी। तों चाहबह तँ मालिकसँ स्वयं बात करिह।’’ चन्दन पुछलक, ‘‘पुलिसक मामला सुनताह तँ?’’ ‘‘सुनताह। झूठ कहि नोकरी पकड़ब तँ फेर वही बात होयत।’’ चन्दनक मोन दुखल, मुदा विजयक प्रस्तावमे दया नहि, काजक सम्भावना छल। ओ अगिला दिन सत्य कहि भेंट करबाक निश्चय केलक।

राति अधिवक्ताक फोन अएल। शशिकान्त झा बतौलनि जे पुलिसक अगिला प्रश्नक उत्तर देबाक पहिने चन्दन उपलब्ध कागजात फेर व्यवस्थित राखय। ‘‘डरक कारण पुरान सन्देश नहि हटएब,’’ ओ कहलनि, ‘‘आ कसूर सँ बचबाक आशामे एहन बात नहि जोड़ब जकरा अहाँ देखल नहि। जँ अपन कथनमे कोनो भूल बुझाए, तुरन्त सुधारक आग्रह करब।’’ चन्दन पुछलक, ‘‘एहि सभसँ हम निर्दोष मानल जाएब?’’ ‘‘कोनो वचन नहि,’’

अधिवक्ता उत्तर देलनि, ‘‘मुदा सच आ ठीक कागजातसँ जाँचक सही आधार बनैत अछि।’’ चन्दन फोन राखि पहिल बेर अपन भयकेँ बिना झूठ आश्वासनक सहल।

नैना अपन कोठरीमे बैसि केन्द्रक सम्भावित खर्च लिखि रहल छलीह। चन्दन दुआरिपर अएल। ‘‘दीदी, अहाँ हमरा लेल ककरोसँ पैरवी करब?’’ ‘‘नहि। जँ काजक परिचय चाहब तँ देब, मुदा तोहर गलत काज नुकाएब नहि।’’ ‘‘लोक कहत जे बहिनो पराया भऽ गेल।’’ ‘‘पराया होयब आ झूठ नहि कहब अलग बात अछि। हम तोरा छोड़ब नहि; मुदा तोहर भागक उत्तर अपने नहि देब।’’ चन्दनक आँखि नीचाँ भऽ गेल। ओ बुझलक जे बहिनक प्रेम ओकरा कानूनसँ बचाबय लेल नहि, ओकरा फेर सच्चा जीवन धरि पहुँचाबय लेल अछि।

अगिला दिन चन्दन औषधि-दोकानक मालिकसँ भेंट करय गेल। मालिक पुछलक, ‘‘पहिने कतय काज केलह?’’ चन्दन पहिल कम्पनीक नाम कहलक, फेर बिना दबावक जोड़लक जे अपन किछु माल-ढुलाईक विषयमे पुलिसक जाँच चलि रहल अछि। मालिक ओहि क्षणे नोकरीक वचन नहि देलक। ‘‘हमरा बीमार लोकक दवा समयपर पहुँचएबाक आदमी चाही,’’ ओ कहलक, ‘‘कागज, परवाना आ जाँच देखब। फेर बतायब।’’ चन्दन खाली हाथ घुरल, मुदा एहि बेर ओकरा झूठ बोलि अवसर पकड़बाक लोभ नहि भेल।

बाटमे पुरान कोचिंग संस्थाक बाहर परीक्षा स्थगित होयबाक कागज चिपकल देखलक। सविता अन्य अभ्यर्थीसभक संग नियुक्तिक सूचना पढ़ि रहल छलीह। ओ चन्दनकेँ देखि पुछलथिन, ‘‘फेर परीक्षा देबह?’’ चन्दन उत्तर देलक, ‘‘पढ़ाइ छोड़ने नहि छी। मुदा हमरा अपन काजक परिणामक सामना करबाक अछि।’’ सविता कहलीह, ‘‘जे गलती केलक, ओकर जवाब दिअ; जे परिश्रम केलह, ओकरा फेकि नहि दिअ।’’ ई वाक्य सान्त्वना नहि छल। सविता स्वयं रद्द परीक्षाक कारण महिनासँ परेशान छलीह। दुनूकेँ बुझल छल जे नब आवेदनक शुल्को जुटेबाक पड़त।

चन्दन घर लौटल तँ सरस्वती देवी बरामदामे धूपमे बिछाओन पसारि रहल छलीह। ओ बाल्टी उठाकऽ पानि भरि आनलक। माय पुछलथिन, ‘‘नोकरी भेटल?’’ ‘‘एखन नहि।’’ ‘‘फेर जएबह?’’ ‘‘हँ, कागज लऽ कऽ।’’ सरस्वती मुस्कुरेलीह नहि, मुदा हुनक स्वरमे

पहिने सन काँप नहि छल। ‘‘आजु बिछाओन भीतर राखि दिअ। साँझमे ओस खसत।’’ चन्दन बिना उत्तरक बिछाओन मोड़य लगल। घरमे पहिल बेर ओहिसँ कोनो पैघ प्रश्न नहि, सामान्य काज कहल गेल छल।

साँझ चन्दनक फोनमे नब सूचना आएल—अगिला सप्ताह संबंधित जाँच लेल निर्धारित दिन उपस्थित रहबाक अछि। ओ सन्देश नैना आ अधिवक्ताकेँ देखौलक। तखन सन्देश कापीक तिथि लग लिखलक। ओकर अपराधक परिणाम समाप्त नहि भेल छल, ऋण सेहो बचल छल, आ वैध रोजगारी एखन आश्वासन मात्र छल। मुदा ओ फोन बन्द कऽ अन्हारमे लुका नहि गेल। सरस्वती भोजन लेल बजौलथिन तँ ओ बासन धोइ टेबुलपर रखलक आ मायक कात बैसि गेल।

अध्याय ५६ : नब रोजगारक प्रयास

नैना बिहानक उजासमे पुरान कापी खोलि बैसलीह। एही कापीमे कहियो अपन आवेदनक तिथि लिखैत छलीह; तकर बाद नई दिशा रोजगार केन्द्रक वेतन, गलत रसीद आ पूनमक खोजक क्रम जोड़ैत गेलीह। आब अन्तिम किछु पन्नापर काजक नब हिसाब छल—कोठरीक भाड़ा, दूटा मेज, कुरसी, बिजली, छपाइ आ एकटा पुरान कम्प्यूटरक मरम्मति। पन्नाक ऊपर ओ लिखने छलीह, 'रोजगार-सहायता—नियुक्तिक झूठ वचन नहि।' कापीक ई शीर्षक लिखब सहज छल, मुदा एहि नामपर दोसराक भरोसा लेबाक पहिने हजारटा प्रश्नक उत्तर चाही, से हुनका बुझल छलनि।

सरस्वती देवी नाश्ता देइत कहलीह, ''पहिने अपन कमाइ टुटि गेल, आब दोसराक काज खोजबाक भार उठएबह?'' नैना कहलीह, ''हम अपन काजो खोजब। एहि केन्द्रसँ पहिने मास कमाइ नहि, खर्च होयत। तेँ हम ट्यूशन छोड़ब नहि।'' माय पुछलथिन, ''भाड़ा कतय सँ देबह?'' नैना कापी घुमौलथिन। ''सवितासँ बात भेल अछि। कुसुमो अएतीह। पहिने सप्ताहमे दू दिन एकटा कोठरी भाड़ापर लेब। जे सेवा मुफ्त राखब, ओकर खर्च अलग देखब।'' सरस्वती ध्यानसँ अङ्क देखलथिन। ''चूल्हि हिसाब सँ जरैत अछि,'' ओ कहलीह, ''से ठीके।''

दुपहर नैना पुरान सार्वजनिक पुस्तकालय पहुँचलिह। पुस्तकालयक अगिला बरामदामे जखन-तखन स्थानीय संस्थासभ बैठक करैत छलाह। पुस्तकालय-समितिक सचिव हरिनारायण झा पञ्चायती अभिलेखक पुरान कर्मचारी छलाह। ओ नैना सँ पहिने दू प्रश्न पुछलनि—''अहाँ नौकरी दियाबयवाली कम्पनी छी कि जानकारी देनिहार केन्द्र?'' आ ''जे बेरोजगार आएत, तकर कागज के देखत?'' नैना स्पष्ट कहलीह, ''हम नियुक्ति नहि देब। सरकारी आ निजी रिक्त पदक सार्वजनिक सूचना जाँचब, आवेदन भरबामे सहायता करब,

मजदूरी आ शिकायतक उपलब्ध कार्यालयक पता देब। प्रमाणपत्रक मूल प्रति हम रखब नहि।'' सचिवक चेहरापर थोड़े भरोसा आएल।

पुस्तकालयक समितिमे सभ सहमत नहि भेलाह। एक सदस्य पुछलनि, ''जँ अहाँक बताओल नोकरी गलत निकलल तँ जिम्मेवारी के लेत?'' नैना उत्तर देलथिन, ''जे स्रोतसँ सूचना भेटत, ओ स्पष्ट लिखब। जकर जाँच नहि भेल, ओकरा 'सत्यापित' नहि कहब। लोक अपने निर्णय लेत, मुदा जाँचबाक उपाय बुझि कऽ।'' दोसर सदस्य पुछलनि जे केन्द्र चलयवला सभ राजनीतिक दलसँ जुड़ल छथि कि नहि। नैना अपन आ सहयोगीसभक भूमिका कहलथिन। एकटा छोट कोठरी सप्ताहमे दू दिनक लेल प्रयोग करबाक सशर्त सहमति भेल। पहिल मासक खर्च नैनाकेँ स्वयं जुटेबाक छल।

बाहर सविता प्रतीक्षा कऽ रहल छलीह। हुनक हाथमे पेपर-लीकक कारण रद्द भेल परीक्षाक आधिकारिक सूचना आ अभ्यर्थीसभक लिखित प्रश्नक प्रति छल। ''लोक फेर दलालक चक्करमे पड़ि रहल अछि,'' ओ कहलीह। ''कियो कहैत अछि जे नब परीक्षा निश्चित अछि, कियो कहैत अछि गुप्त सूची बनि गेल।'' नैना कहलीह, ''हम सूचना-पट्टपर केवल अधिकृत वेबसाइट वा कार्यालयक सूचना लगायब। जे अपुष्ट अछि, से अपुष्ट लिखब।'' सविता हँसलीह। ''अर्थात् आधा पट्ट खाली रहत।'' ''खाली रहनाइ झूठ भरल रहबासँ नीक।'' दुनू एहि बातपर सहमत भेलीह।

कुसुम बन्द कार्यालयसँ अपन लग बचल किछु कर्मचारी-सम्बन्धी कागज नेने एलीह। ओ पहिने स्पष्ट कएलथिन जे किनको निजी अभिलेखक अनुमति बिना उपयोग नहि करतीह। ''हम अपन बकाया वेतनक लड़ाइ जारी रखब,'' ओ कहलीह, ''मुदा कामक बाद अपन अनुभवसँ दोसरा अभ्यर्थीकेँ सावधान कऽ सकैत छी। नियुक्तिपत्र पढ़ैत समय कोन बात देखबाक चाही, से हुनका बतायब।'' नैना हुनका सहायता-कक्षमे बैसबाक आग्रह कएलथिन। कुसुम कहलीह, ''पहिने लिखि दिअ जे केन्द्रक लोक ककरो नियुक्ति पक्का होयबाक गारंटी नहि देत।'' हुनक आवाजमे पुरान धोखाक थकान छल।

प्रथम दिनक पहिने नैना कुसुम आ सविताक संग एकटा नियमक पन्ना बनौलथिन। सभक विचार सुनबाक बाद ओ नियम संशोधित करैत गेलीह। व्यक्तिगत कागजातक छायाप्रति बिना आवश्यकता नहि राखल जाएत। शुल्कक स्पष्ट सूची दुआरिपर रहत; जे आधारभूत जानकारी मुफ्त अछि, तकर लेल ककरोसँ टका नहि लेल जाएत। आवेदन भरबाक खर्च जँ होयत तँ रसीद देल जाएत। कोनो कम्पनीक विज्ञापन छापबाक बदला धन स्वीकार नहि कएल जाएत। शिकायत करयवालाक नाम हुनक अनुमति बिना सार्वजनिक नहि होयत। एहि नियमक प्रति तीनू पढ़ि हस्ताक्षर कएलथिन। कुसुम कहलीह, ‘‘नियम लिखि देलासँ मात्र काज नहि चलत। अपना ऊपर सेहो लागू करब पड़त।’’

माधवी देवी भोरमे झाड़ू लऽ पहुँचलिह। नैना कहलीह, ‘‘अहाँकेँ एतय झाड़ू देबाक आवश्यकता नहि।’’ माधवी हँसलीह। ‘‘तोहर केन्द्र अछि, मुदा धूलि हमर जाति नहि पूछत। हम काज करब तँ पारिश्रमिक लिखिह। मुफ्तमे गरीबक श्रम लऽ कऽ गरीबक मदति करब, ई कोन हिसाब?’’ नैना लज्जित भेलिह। ओ पहिल सप्ताहक सफाइक शुल्क बजटमे जोड़लथिन। माधवीक बातसँ केन्द्रक पहिल सचमुचक नियम बनल—सेवाक नामपर ककरो बिना दामक श्रम नहि लेब।

कोठरीमे पुरान दीवाल-घड़ी टँगल छल। एकटा पंखा घरघर करैत घुमैत छल, आ खिड़कीसँ सडकक धूलि भीतर अबैत छल। सविता बोर्डपर लिखलथिन—‘रोजगारक सूचना आ आवेदन-सहायता’। कुसुम ओकर नीचाँ छोट अक्षरमे जोड़लथिन—‘नियुक्तिक कोनो आश्वासन नहि’। नैना नियमक सूची लगौलथिन। पहिल घंटामे कियो नहि आएल। दोसर घंटामे एकटा युवक दरबज्जा लग ठाढ़ भऽ पुछलक, ‘‘एतय पंजीकरण लेल कतेक टका देब?’’ नैना कहलीह, ‘‘पहिने बताउ कोन सहायता चाही। किछु सूचना लेल कोनो शुल्क नहि।’’ युवक विश्वास नहि कएलक।

ओ युवक इमरान छल, जे नई दिशा संस्थामे अस्थायी काम कएने छल। ओकर दू मासक वेतन अटकल छल आ आब मोटर-पुर्जा बेचनिहार दोकानमे काज खोजैत छल। ‘‘हमरा पुरान संस्थाक नाम बतएबामे लाज होइत अछि,’’ ओ कहलक। कुसुम कहलथिन, ‘‘जकर वेतन रोकल गेल, ओकरा लाज किएक? जे काज केलहुँ, ओकर प्रमाण अछि ने?’’

इमरान अपन पहचानपत्र आ वेतनक पुरान सन्देश देखौलक। कुसुम ओकरा बकायाक दावा दर्ज करबाक उपयुक्त कार्यालयक जानकारी देलथिन; नैना नब दोकानक विज्ञापनक फोन नम्बर मिला देलथिन। ‘‘नोकरी भेटत?’’ इमरान पुछलक। ‘‘नहि जानि,’’ नैना कहलीह, ‘‘मुदा झूठ नहि कहब।’’

दोसरा आगन्तुक एकटा वृद्ध किसानक बेटा छल। ओ अपन बहिन लेल सिलाइ-काजक प्रशिक्षण खोजैत छल। फोनपर भेटल विज्ञापनमे पहिल बेरहि पैघ रकम जमा करबाक कहल गेल छल। सविता कहलथिन, ‘‘संस्थाक नाम, पञ्जीकरण आ प्रशिक्षण देनिहारक पता जाँचू। खाली सुन्दर पोस्टर भरोसाक आधार नहि।’’ युवक कहलक, ‘‘दोसरा ठाम पूछलहुँ तँ झट पैसा जमा करबाक कहलक। अहाँ सभ एतेक समय किएक लैत छी?’’ कुसुम उत्तर देलथिन, ‘‘किएक तँ अहाँक घरक रुपैया अहाँक घरक अछि; हमरा सभक कमाइ नहि।’’

साँझ नैना हिसाब लिखलथिन। ओहि दिन चारि आगन्तुक आएल छलाह। ककरो नियुक्ति नहि भेटल, मुदा दूटा सन्दिग्ध विज्ञापनक सूचना-पत्र अलग राखल गेल। छपाइक खर्च बीस टका, चायक खर्च बारह, सफाइक पारिश्रमिक तय भेल। नकद आय शून्य। सविता मजाकमे कहलीह, ‘‘बड़का व्यापार आरम्भ भेल।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘जे दिन आय होयत, तकरो हिसाब सबहक सामने रहत।’’ कुसुम खिड़की बन्द करैत कहलीह, ‘‘एहि सूनापनसँ नहि डेराउ। पहिल दिन ईमानदार उत्तर भेटनाइ सेहो काज अछि।’’

पूनमक घरमे नैना ओहि दिन नहि गेलीह। पहिने फोनपर पुछलथिन जे भेंट करब उचित रहत कि नहि। पूनमक स्वर पहिनेसँ स्थिर छल, मुदा ओ कहलीह, ‘‘आइ थाकल छी। काल्हि आउ।’’ नैना एतबे उत्तर देलथिन, ‘‘ठीक अछि।’’ पूनमक उद्धारक बाद बहुत लोक हुनका शीघ्र सामान्य जीवनमे घुरबाक सलाह देने छल। नैना धीरे-धीरे बुझि रहल छलीह जे कोनो व्यक्तिक स्वास्थ्य आ अपन समय ओकर अपन निर्णय अछि। केन्द्रमे पूनमक सहयोगक विचार छल, मुदा प्रस्ताव देबाक पहिने हुनक इच्छा जानब आवश्यक छल।

अगिला दिन नैना पूनमक दुआरिपर पहुँचलिह। आँगनमे धूप पसरल छल। पूनम कुर्सीपर बैसि कपड़ाक किनारि सिया रहल छलीह। माय भीतरसँ चाय अनलथिन। नैना केन्द्रक नियम आ कामक विषय स्पष्ट कहलथिन। ‘‘अहाँकेँ एतय आबय पड़त, एहन कोनो बात नहि,’’ ओ कहलीह, ‘‘जँ मन होय तँ कखनहुँ नियुक्तिपत्रक कठिन शब्द देखबाक काजमे सहायता दऽ सकैत छी।’’ पूनम सुइ थामि देलथिन। ‘‘हम ओहि कागजक नाम सुनिते एखन डेराइत छी।’’ नैना तुरन्त कहलीह, ‘‘तँ ई काज नहि। ककरो दबाव नहि।’’

किछु समय बाद पूनम पुछलथिन, ‘‘तखन एहन केहन काज अछि जाहिमे घरसँ बाहर नहि जेबाक पड़य?’’ नैना कहलीह, ‘‘जे सूचना सार्वजनिक अछि, ओकरा सहज भाषामे पढ़ि लिखबाक सहायता चाही। मुदा ओहो जँ अहाँ चाहब।’’ पूनम विचार करैत कहलीह, ‘‘हम पहिने सप्ताहमे एक दिन, एक घंटा देखब। अपन नामक प्रचार नहि चाही।’’ ‘‘अहाँक अनुमति बिना नाम तक नहि लिखब,’’ नैना कहलीह। पूनम हँसलीह नहि, मुदा एतबा निश्चित कएलथिन जे अगिला मंगल एक बेर केन्द्र देखय जएतीह। ई निर्णय हुनक अपन छल।

ओहि साँझ नैना अपन कापीमे पूनमक नाम कर्मचारीक रूपमे नहि लिखलथिन। केवल ‘मंगल—आगन्तुकक इच्छा अनुसार भेंट’ लिखलथिन। कुसुम पुछलथिन, ‘‘पूनम आउतीह?’’ ‘‘सम्भव अछि। हुनक इच्छापर छोड़ू।’’ कुसुम माथ हिलौलथिन। ‘‘हम याद रखब।’’ ओहि बीच सविताकेँ प्रतियोगिता परीक्षाक नब सूचना भेटल। तिथि एखन अन्तिम नहि छल। कुसुम बोर्डपर ‘सम्भावित’ शब्द पैघ अक्षरमे लिखलथिन। एतेक छोट शब्द बहुतो गलत आशाक बाट रोकि सकैत छल।

तेसर दिनक प्रथम आगन्तुक चन्दन छल। ओ हाथमे पुरान चालकक परवाना आ सिफारिशक खाली पन्ना लऽ आएल। नैना चौंकलीह नहि; कापी खोलि पुछलथिन, ‘‘की सहायता चाही?’’ चन्दन कहलक, ‘‘औषधि-दोकानक मालिक परवाना आ पहिले कएल काजक विवरण मँगने छथि। हम जे कानूनक जाँचमे छी, तकरा नुकाएब नहि चाहैत छी। मुदा आवेदनमे की लिखी?’’ नैना ओकरा सार्वजनिक रोजगार-नियम बतौलथिन, फेर अधिवक्तासँ कानूनी विवरणक विषयमे राय लेबाक सलाह देलथिन। ‘‘हम तोहर आवेदन

भरि देब, चयन नहि करब,'' ओ कहलीह। चन्दन पहिल बेर बहिनक काउन्टरक दोसर कात सामान्य आवेदक जेना बैसल।

सविता चन्दनसँ पुछलथिन जे परीक्षा-तैयारीक पुरान पुस्तकसभ एखनहुँ अछि कि नहि। ''अछि,'' ओ कहलक। सविता प्रस्ताव देलथिन जे सप्ताहक एक साँझ मुफ्त सामूहिक अध्ययनक छोट सत्र राखल जाय। ओहि सत्रमे परीक्षाक अधिकृत पाठ्यक्रम, पुरान प्रश्नपत्र आ आवेदनक अन्तिम तिथि बुझाओल जाय, प्रश्नपत्र उपलब्ध करेबाक दलालसँ सावधान सेहो कएल जाय। नैना कहलीह, ''केन्द्रक नियमित सेवासँ अलग समय राखू। एतय कामक खोजमे अएल व्यक्तिक भीड़मे छात्रकेँ नहि फँसाउ।'' प्रस्तावपर सभ सहमत भेल।

माधवी देवी एकटा महिला लऽ अएलीह—नाम बुधनी। बुधनी दू घरमे रसोइक काज करैत छलीह, मुदा एक घरमे महीनासँ पारिश्रमिक अटकल छल। ओ पुछलथिन, ''हम पढ़ल नहि छी, तखन एतय काज भेटत?'' नैना हुनका कुरसी देलथिन। ''अहाँ जे काज करैत छी, ओकरो रोजगार कहल जाइत अछि। पहिने बकाया मजदूरीक बात सुनू।'' बुधनी अपन काजक दिन गनौलथिन; माधवी तारीख याद करौलथिन। कुसुम लिखित विवरण बनौने छलीह आ उपयुक्त श्रम-सहायता सम्पर्कक पता देलथिन। बुधनी कहलीह, ''हमरा अपन बात लिखल रूपमे पहिल बेर भेटल।''

बुधनी अगिला दिन एकटा छोटी पोटलीमे गुड़ लऽ एलीह। ''कर्ज नहि उतारलहुँ,'' ओ कहलीह, ''मुदा घरवला मालिक बकाया मजदूरीक आधा देलनि। लिखित हिसाब देखौने रही, तखन बात बढ़ल।'' नैना पोटली घुरेबाक चाहलीह। बुधनी कहलीह, ''ई सेवा-शुल्क नहि, अपन घरक गुड़ अछि। सभ मिलि खाउ।'' माधवी हँसलीह। सभ पाँच गोटे गुड़ बाँटि खएलथिन। छोट सफलता छल—न घरक कर्जा मेटल, न स्थायी काज भेटल—मुदा बुधनी अपन मेहनतानाक प्रश्न निडरसँ पुछि सकल छलीह।

केन्द्रक पहिल सप्ताह कठिन छल। अनिलक साइबर-दोकानमे बिजली गेलाक कारण किछु आवेदन समयपर नहि भरल जा सकल; नैना पूर्वसूचना देलथिन जे जकर अन्तिम

तिथि एखन अछि, ओ अन्य उपलब्ध केन्द्रसँ भरथि। एकटा कम्पनी कहलक जे ओकर विज्ञापन लगाबय पर मासिक धन देत। नैना कागजात जाँचबाक समय मँगलथिन; कम्पनी झट उत्तर देल जे एतेक प्रश्न पूछब आवश्यक नहि। ओहि विज्ञापनकेँ बोर्डपर ठाम नहि भेटल। आयक अवसर छुटल, मुदा केन्द्रक पहिल नियम बाँचल रहल।

एकटा महिला पुरान नियुक्तिपत्र देखेबाक लेल अएलीह। कागजपर कम्पनीक मुहर छल, मुदा वेतनक ठाम 'प्रशिक्षण-पश्चात् निर्णय' लिखल छल। ओ कहलीह, ''घरे कहैत अछि जे जँ नौकरी छोड़ब तँ आलसी कहल जाएब।'' नैना हुनका पुछलथिन जे काजक समय, सुरक्षित आवागमन आ लिखित वेतनक शर्त की अछि। महिला एक-एक बात पढ़ि चकित भेलीह। ''हम केवल हस्ताक्षरक ठाम देखने रही,'' ओ कहलीह। सविता हुनका उपयुक्त कार्यालयसँ रोजगार-शर्तक जानकारी लेबाक मार्ग बतौलथिन। केन्द्र हुनक निर्णय नहि लेल; केवल कागजक अर्थ स्पष्ट कएलक।

अभय एक साँझ केन्द्र देखय अएलाह। नैनासँ पहिने ओ बोर्डपर शुल्कक सूची पढ़लनि, फेर कहला, ''रपट लिखि देब तऽ लोक बेसी आएत।'' नैना कहलीह, ''पहिने देखू जे एतेक लोककेँ सम्हारि सकब कि नहि। पूनमक नाम एहि रपटमे नहि चाही।'' अभय सहमति देलनि। ''काजक सूचना देब, विज्ञापनक ढङ्गमे तारीफ नहि करब,'' ओ कहला। नैना पुछलथिन, ''जँ हम गलती करब?'' अभय उत्तर देलनि, ''तखन अन्य संस्थाक जकाँ अहाँसँ सेहो प्रश्न पुछब।'' दुनू हँसि देलाह। एहि हँसीमे पुरान असहमतिक बाद भेटल भरोसा छल।

मंगलक दिन पूनम एलीह। हुनक संग माय छलीह। भीतर पयर रखिते ओ कनेक रुकलीह—मेज, कम्प्यूटर, फाइल आ रसीद देखिते पुरान कार्यालयक स्मृति अएलनि। नैना आगाँ बढ़ि कहलीह, ''एतय बैसू, जँ मन नहि लागय तँ तुरन्त घुरि जाएब।'' पूनम खिड़की लगक कुरसी चुनलथिन। कुसुम हुनका प्रश्न करबाक बदला चाय देलथिन। किछु देरि बाद पूनम बोर्डपर लिखल तीनटा सूचना पढ़लथिन। एकटामे निजी कम्पनीक नाम अस्पष्ट छल। ''ई कोन ठाम अछि?'' ओ पुछलथिन। सविता कहलीह, ''एखन जाँच बाकी अछि।'' पूनम स्वयं लाल पेंसिलसँ ओकर नीचाँ 'असत्यापित' लिखलथिन।

एक घंटाक बाद पूनम उठलीह। ‘‘आइ एतबे,’’ ओ कहलीह। नैना हुनका दुआरि धरि छोड़य गेलीह। ‘‘अगिला सप्ताह अहाँक इच्छा?’’ पूनम कनेक सोचलथिन। ‘‘आबि सकैत छी। मुदा जे काज करब, ओकरा दया नहि, काज बुझल जाय।’’ नैना तुरन्त कहलीह, ‘‘तखन ओकर मेहनताना सेहो तय होयत, जतेक छोट काज हो।’’ पूनम पहिल बेर मुस्कुरेलीह। ‘‘ठीक। तब हम अपन समय देखिकऽ बतायब।’’ हुनक माय बेटीकेँ घुरैत देखैत छलीह। घरसँ बाहर ई छोट यात्रा किनको लेल मामूली, हुनका लेल कठिन छल।

नैना सप्ताहक अन्तमे घर घुरलीह तँ खिस्सामे बचल टका गनलथिन। भाड़ा देबाक बाद किछु शेष नहि छल। सरस्वती देवी पुछलथिन, ‘‘तूँ एतना काज करैत छह, अपन लेल की बचल?’’ नैना कहलीह, ‘‘एखन अनुभव आ हिसाब। आगाँ ठोस आमदनी चाही। हम विद्यालयक बच्चासभकेँ पढ़ेनाइ नहि छोड़ब।’’ माय हुनका गरम भात परसलथिन। ‘‘एहन केन्द्र चलाबऽ जे ककरो टका लऽ कऽ चुप नहि भऽ जाए,’’ ओ कहलीह। नैना नीरव रहलिह। पुरान संस्थाक स्मृति आ नब केन्द्रक जिम्मेवारी एक्के बासनक कात बैसल जकाँ छल।

दोसरा सप्ताह पुस्तकालयक सचिव हरिनारायण झा निरीक्षण करय अएलाह। ओ रसीद-पुस्तिका, आगन्तुकक सहमति-नियम आ खर्चक लेखा देखलनि। ‘‘अहाँ सभ तऽ बहुत कम लोकक काज कएने छी,’’ ओ कहला। नैना कहलथिन, ‘‘जे भेल, से लिखल अछि। जे नहि भेल, तकर दावा नहि।’’ हरिनारायण एकटा पन्नापर हस्ताक्षर कऽ पुस्तकालयक कोठरीक उपयोग अगिला मास धरि जारी रखबाक सहमति देलनि। ‘‘दूसराक भरोसापर काज करब, तकरा धीरज सेहो चाही,’’ ओ कहला। सचिव गेलाक बाद कुसुम हँसि कहलीह, ‘‘कमाईक पहिल प्रमाण शायद ई हस्ताक्षर अछि।’’

साँझ नैना खिड़की बन्द करैत बाहरक सड़क तकलथिन। आगन्तुकसँ नोकरी पक्का करबाक झूठ वचन नहि देल गेल छल। कोचिंगसँ छुटल छात्रसभक भीड़मे सविता पोस्टर लऽ जा रहल छलीह; माधवी अपन दिनक पारिश्रमिक पावतीमे लिखि घर घुरलीह; पूनम अपन इच्छासँ अगिला सप्ताहक समय भेजने छलीह। नव केन्द्र ककरो नियति बदलि देनिहार शक्ति नहि छल। मुदा एतय छलक बदला प्रश्न पूछबाक ठाम छल, आ जे उत्तर

उपलब्ध नहि, ओकरा स्पष्ट कहबाक साहस छल। नैना बोर्डक नीचाँ ‘काल्हि बन्द’ लिखि लगौलथिन—किएक तँ अगिला दिन हुनका स्वयं नोकरीक साक्षात्कार देबाक छल।

अध्याय ५७ : विवाहक विरोध

नवगढ़मे अगहनक बिहान साफ छल। सरस्वती देवी आँगनमे चाउर फटकैत छलीह जखन हुनक ममियौत भाइ शैलेन्द्र झा दरबज्जापर पहुँचलाह। हुनक संग पत्नी कमला आ छोट भाँजीक विवाहक निमन्त्रण-पत्र छल। नेह-सम्बन्धक सामान्य गप्पसँ बातचीत शुरू भेल—ककर घरमे की समाचार, के बीमार, के बाहर काज करैत अछि। मुदा चाय समाप्त होयबासँ पहिने शैलेन्द्र पुछलनि, ‘‘नैनाक विवाहक विषयमे सोचलहुँ कि नहि? उमेर बढ़ैत जा रहल अछि।’’ सरस्वती उत्तर देलथिन, ‘‘नैना स्वयं निर्णय लेतिह। हम पहिने हुनक बात सुनब।’’ शैलेन्द्रक कप हाथमे ठमकि गेल। ‘‘बेटीक विवाह केवल एक गोटाक बात थोड़े होइत अछि।’’ एहि भोरसँ दू दिन पहिने नैना निर्धारित नोकरीक साक्षात्कार दऽ घुरलीह। निजी संस्थाक वेतन कम छल आ समय एतेक लम्बा जे रोजगार-सहायता केन्द्र चलाएब कठिन भऽ जायत। नियुक्तिक कोनो लिखित आश्वासन सेहो नहि भेटलनि। नैना प्रस्तावक उत्तरक प्रतीक्षा करैत, केन्द्रक काज आ बच्चासभकेँ पढ़ेबाक अपन आमदनी जारी रखबाक निर्णय कएलथिन। नैना पहिल बेर आवेदनक पाँतिमे ठाढ़ भेलीह, ताहि दिनसँ एक बरखसँ बेसी बीति चुकल छल। बीचमे दू बेर बरखा आएल, परीक्षा रद्द भेल आ फेर नव परीक्षाक सूचना पहुँचल; घरक चिन्ता आ काजक संघर्ष ताहि समयमे धीरे-धीरे अपन रूप बदललक।

नैना ओहि समय भीतरक कोठरीमे रोजगार-केन्द्रक रसीद मिलाबि रहल छलीह। हुनका अपन नाम सुनाइत छल, मुदा ओ बाहर नहि निकललीह। शैलेन्द्र अगिला प्रश्न पुछलनि, ‘‘ओ पत्रकार, अभय पासवान, एतय आबैत छथि ने?’’ सरस्वती कहलीह, ‘‘आबैत छथि। संकटमे बहुत मदति कएने छथि।’’ कमला कनेक तेज स्वरमे बजलीह, ‘‘लोक तरह-तरहक गप्प कहैत अछि। जाति-बिरादरी, खानदान, कमाइ—किछु देखल जाए कि नहि?’’ सरस्वती चाउरक सूप नीचाँ रखलथिन। ‘‘जे गप्प हम बेटी सँ पुछि सकैत छी, ओकर उत्तर लोकसँ नहि मँगब।’’

नैना बाहर एलीह। ‘‘मामा, अहाँ जे पुछय चाहैत छी, हमरा पुछू,’’ ओ कहलीह। शैलेन्द्र हुनका माथसँ पयर धरि देखलनि। ‘‘अहाँ सभ बहुत पढ़ि गेलहुँ। मुदा समाजक अपन नियम अछि। अभयक जाति अलग अछि। हुनकर नोकरी स्थायी नहि, तनखा कतेक छनि के जनैत अछि? ऊपरसँ चन्दनक मामला। एहन समयमे विवाहक बात उठाएब उचित नहि।’’ नैना एखन उत्तर नहि देलथिन। ओ चायक खाली प्याला भीतर राखि घुरलीह, तखन कहलीह, ‘‘एक-एक बातक उत्तर देब। पहिने अहाँ सभ हमर बात बीचमे नहि काटू।’’

शैलेन्द्र हँसबाक प्रयास कएलनि। ‘‘हम तोहर बुराइ किएक चाहब?’’ ‘‘हम नहि कहैत छी जे अहाँ बुराइ चाहैत छी,’’ नैना कहलीह, ‘‘मुदा हमर जीवनक विषयमे निर्णय हमरा बिना कोना होयत?’’ कमला धीरे बजलीह, ‘‘मायक सम्मानक प्रश्न सेहो अछि।’’ नैना मायक कात बैसलीह। ‘‘अहाँ हुनक सम्मानक चिन्ता करैत छी, नीक बात। तखन मायकेँ पहिने पुछू जे ओ की चाहैत छथि।’’ सरस्वती देवी बहुत देरि सँ चुप छलीह। ‘‘हम चाहैत छी जे बेटी छल आ भयमे नहि, भरोसामे घर बसाबथि,’’ ओ कहलीह।

मामाक मनमे नाराजगीक संग वास्तविक चिन्ता सेहो छल। हुनक अपन बेटाक विवाह आर्थिक कारणसँ टूटि गेल छल; ओहि दिन घरपर जे अपमान भेल, तकर स्मृति हुनका एखनहुँ छलनि। ‘‘अभय जँ अखबारक काज छोड़ि देथि तँ घर चलत?’’ ओ पुछलनि। ‘‘नैना आइ-काल्हि स्वयं बेरोजगार छलीह, आब छोट सहायता केन्द्र चलबैत छथि। ई सब निश्चिन्त जीवनक आधार नहि।’’ नैना एहि प्रश्नकेँ उड़ा नहि देलथिन। ‘‘ठीक कहैत छी,’’ ओ कहलीह, ‘‘आमदनीक प्रश्न कठिन अछि। हम अभयसँ एहि विषयमे स्पष्ट बात करब। मुदा जातिक भेदकेँ कमाइक प्रश्नक ओटमे रखनाइ उचित नहि।’’

शैलेन्द्र कठोर स्वरमे कहला, ‘‘अहाँ बुझैत नहि छी। सम्बन्धीसभ की कहताह? विवाहमे के आएत?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘जे हमरा शुभकामना देताह, ओ आएताह। जे नहि आएताह, हुनका खींचि नहि आनब।’’ ‘‘घरक परम्परा?’’ ‘‘घरक परम्परामे माता-पिताक सेवा, अतिथिक सम्मान, साँच बोलबो अछि। हम एहि सभसँ किएक दूर होयब?’’ कमला कहलीह, ‘‘कागजपर बहुत नीक सुनाइत अछि; जीवन अलग अछि।’’ नैना हुनका

दिस देखलथिन। ‘‘तेँ हम जीवनक प्रश्न पुछैत छी—बीमारीमे के साथ देत, घरक खर्च कोना बाँटल जायत, गलती भेल तँ बात कोना होयत।’’

ओहि दिनक भेट कटु स्वरमे समाप्त नहि भेल, मुदा प्रसन्नो नहि। शैलेन्द्र कहलनि जे एखन ककरो वचन नहि देब, परिजनसँ बात करब। नैना कहलथिन जे हुनक जीवनक विषयमे किनको अनुमति बिना सम्बन्ध तय नहि कएल जाय। अतिथि चलि गेलाह। दरबज्जा बन्द भेलाक बाद सरस्वती देवी सूप उठौलथिन, मुदा हाथ रुकि गेलनि। ‘‘तोहर बाबू रहितथि तँ कतेक कठिन बात होइत,’’ ओ कहलीह। नैना माय लग गेलीह। ‘‘अहाँक अपन मोनमे की डर अछि?’’ सरस्वती एखन पहिल बेर खुलि कऽ कहलीह, ‘‘तोरा दुःख नहि भेटय, ई चाहैत छी। ककरो जातिसँ नहि, लोकक कठोरता सँ डरैत छी।’’

साँझ अभय समाचार-कक्षसँ सीधे नैनाक केन्द्र नहि गेलाह। नैना स्वयं फोन कऽ कहलथिन जे किछु जरूरी बातचीत चाही। दुनू बस अड्डाक लग पुरान चाय-दोकानपर भेटलाह। दुकानमे भीड़ कम छल; ओ दुनू बाहरक बेंचपर बैसलाह। नैना मामाक सभ बात कहि देलथिन। अभय बहुत देरि धरि सुनैत रहलाह। ‘‘हमरा कारण अहाँक माय अपमानित होथि, से नहि चाहैत छी,’’ ओ कहला। नैना पुछलथिन, ‘‘अपमानक कारण अहाँ छी कि लोकक व्यवहार?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘कारण जे हो, ओकर भार जीवनमे आबैत अछि। ओहि भारक विषयमे हम सभकेँ साँच-साँच सोचबाक अछि।’’

अभय अपन मासिक कमाइक हिसाब बतौलनि। समाचार-कक्षक नियमित वेतन निश्चित छल, मुदा भत्ता आ अतिरिक्त काजक आमदनी अनिश्चित। किराया, भोजन, घरक बुजुर्गक सहायता आ पुरान ऋण चुकबैत बचत कम होइत छल। ‘‘हम अहाँकेँ पैघ घरक आश्वासन नहि देब,’’ ओ कहला। ‘‘कखनहुँ रपट रोकबाक दबाव पड़त, कखनहुँ काज छुटबाक भय रहत। मुदा कमाइक विषयमे झूठ नहि कहब।’’ नैना अपन ट्यूशन आ केन्द्रक खर्चक हिसाब देखौलथिन। ‘‘हमहुँ कोनो चमत्कार नहि करब,’’ ओ कहलीह। दुनू पहिल बेर प्रेमक विषयमे अपन-अपन अङ्क खुलि कऽ जोड़ि रहल छलाह।

नैना पुछलथिन, ‘‘अहाँक घरक लोक केहन सोचैत छथि?’’ अभय कहला, ‘‘माय हमरा बात सुनबाक कहने छथि। बाबूजी चिन्तित छथि जे अहाँक परिवार दबावमे आओर परेशान नहि होअय। हमर बहिन पुछैत अछि—विवाहक बाद नैना अपन काज छोड़तीह कि नहि? हम कहलहुँ, हुनक काज छोड़बाक प्रश्न हम किएक उठाएब?’’ नैना मुस्कुरेलीह। ‘‘तखन ई बात पहिने सँ तय बुझू—हम अपना परिश्रम सँ कमाएब।’’ अभय कहला, ‘‘आ हमर पत्रकारिता सेहो घरक पूरा धर्म नहि बनि जाए। अहाँक बात सुनबाक समय राखब पड़त।’’

दुनू बीच किछु देरि चुप्पी रहल। सड़कपर एकटा विवाहक बाजा बजबैत गाड़ी गेल। दुकानदार हँसि कहलक, ‘‘शादीक मौसम शुरू भऽ गेल।’’ नैना आ अभय एक-दोसराक दिस तकलाह। अभय धीरे पुछलनि, ‘‘जँ विरोध बेसी बढ़ल तँ?’’ नैना कहलीह, ‘‘हमर निर्णय बदलबाक आधार अहाँक व्यवहार होयत, दोसरा लोकक धमकी नहि। जँ अहाँ कखनहुँ हमर बात दबायब, हमर काज रोकब, छल करब, तँ हम अपन निर्णय फेर देखब। जातिक कारण नहि।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘एही नियम हमरा लेल सेहो। हम दू गोटे बराबरीसँ जीवन बनायब, एक-दोसराकेँ बचाएबो आ प्रश्नो करब।’’

घुरैत समय नैना बस अड्डाक पाछिल गलीसँ गेलीह। ओतय एकटा नवविवाहित जोड़ी किरायाक कोठरीक सामान रिक्शापर लादि रहल छल। कनियाँक हाथमे पीतलाक थारी, वरक हाथमे गद्दा। दुनू किछु बातपर झगड़ि रहल छलाह, फेर हँसि पड़लाह। नैना सोचलथिन जे विवाह केवल समारोह नहि; ई दू गोटेक लेल रोज-रोजक काजक बँटवारा, थकान, मतभेद आ मिलि चलबाक निर्णय अछि। मामाक प्रश्न एक सीमा धरि ठीक छल—घर चलाबय पड़त। मुदा एहि प्रश्नक उत्तर जातिक भेदसँ नहि भेटत।

अगिला दिन शैलेन्द्रक फोन सरस्वती देवीकेँ आएल। ओ कहलनि जे परिवारक किछु लोक नैनासँ बात करय चाहैत छथि। सरस्वती नैनाकेँ पुछि अनुमति लेलथिन। नैना कहलीह, ‘‘बात करब, मुदा गुप्त बैठकमे हमरा विषयमे फैसला नहि होय।’’ अतः रविदिन घरमे छोट भेटक समय रखल गेल। नैना अभयकेँ सेहो बतौलथिन। ‘‘अहाँ एखन नहि आउ,’’ ओ कहलीह, ‘‘पहिने हमर परिवार हमर बात सुनय।’’ अभय सहमति देलनि। ओहि निर्णयमे नैनाकेँ अपन आवाजक ठाम भेटल।

रविदिन बरामदामे चारि परिजन बैसलाह। काकी शकुन्तला पहिने मायकेँ पुछलथिन, ‘‘अहाँ सहीमे सहमत छी?’’ सरस्वती कहलीह, ‘‘हमर बेटी वयस्क छथि। हमर चिन्ता अछि, मुदा निर्णय दबाकऽ रोकब नहि।’’ शैलेन्द्र प्रश्न दोहरौलनि—‘‘जाति अलग, आमदनी कम।’’ नैना एहन प्रश्नक उत्तरकेँ वाद-विवादमे नहि बदललीह। ‘‘हम पहिने सभक बात सुनने छी,’’ ओ कहलीह। ‘‘अहाँ सभ हमर दुःखक डर करैत छी, से बुझैत छी। मुदा हमर जीवन चलत अपन निर्णयपर। हम अभयसँ विवाह करबाक चाहैत छी। एखन कानूनी मामला, घरक स्वास्थ्य आ काजक व्यवस्था देखिकऽ समय तय करब। बिना सोचने हड़बड़ी नहि करब।’’

काकी कहलीह, ‘‘जे पाँति सदियासँ बनल अछि, ओ तोड़ब तँ परिणाम होयत।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘परिणाम सभ निर्णयक होइत अछि। जातिक कारण योग्य-अयोग्य तय करब हमरा स्वीकार नहि। अभयक संग हम दुःख देखलहुँ, मतभेद सेहो भेल; ओ गलत समाचार लिखबाक दबावक सामने ठाढ़ रहलाह। हुनकर पहचान केवल उपनाम नहि।’’ शैलेन्द्र असहमत रहलाह। ‘‘अहाँ भावनामे निर्णय लैत छी।’’ नैना कहलीह, ‘‘भावना अछि, मुदा हिसाबो अछि। हम हुनक आमदनी बुझैत छी, ओ हमर जिम्मेवारी बुझैत छथि।’’

एहि बीच चन्दन भीतरसँ पानि लऽ आएल। ओकरा देखिते एक परिजन कहलक, ‘‘घरमे एकटा मामला एखन चलि रहल अछि। पहिने ओकरा समेटू।’’ चन्दन थारी रखि कहलके, ‘‘हमर गलत काजक भार दीदीक विवाहपर नहि राखू। हम जाँचमे जे कहबाक छल, कहने छी। कानूनी प्रक्रिया चलत। हमरा कारण हुनक जीवन रोकब ठीक नहि।’’ ओकर आवाज स्थिर नहि छल, मुदा ओ बैठकसँ भागल नहि। शैलेन्द्र कहला, ‘‘तोरा एखन चुप रहनाइ चाही।’’ नैना कहलीह, ‘‘ओ अपन भागक बात कहि रहल अछि। सुनू।’’

सरस्वती एखन दुनू सन्तानक दिस देखलथिन। एक गोटे गलती मानि रहल छल, दोसर अपन जीवनक निर्णय स्पष्ट करैत छलीह। हुनका अपन पति सँ विवाहक पहिल दिन याद पड़ल—घरक आर्थिक अवस्था नीक नहि छल, मुदा ओ दुनू मिलि खर्च चलौने छलाह। ‘‘हम तोरा सभसँ एतबे कहैत छी,’’ ओ परिजनसभसँ कहलीह, ‘‘जे किछु डर अछि, सो

खुलि कऽ कहू। मुदा नैनाकेँ एकटा वस्तु जेना ककरो हाथमे नहि देब। ओ पढ़ल छथि, श्रम करैत छथि, अपन विचार रखैत छथि। एहि बातमे अपमान की अछि?''

किछु परिजनक स्वर नरम भेल, किछुक नहि। शकुन्तला कहलीह, ''हमरा अभयसँ भेंट करबाक इच्छा अछि।'' नैना उत्तर देलथिन, ''ओहो उचित अछि। अभयक परिवारो अहाँ सभसँ भेटि सकैत छथि, जँ सभ एक-दोसराकेँ सम्मान देथि।'' शैलेन्द्र उग्र स्वरमे नहि, थाकल स्वरमे कहला, ''हम एखन सहमत नहि।'' नैना कहलीह, ''अहाँक असहमति हम सुनलहुँ। मुदा एहि कारण निर्णय छिपायब नहि।'' बैठकक अन्तमे किनको विजयक अनुभव नहि भेल। तथापि नैनाक बात सभ सुनलनि; ई पहिल अन्तर छल।

परिजन गेलाक बाद सरस्वती थाकि गेलीह। नैना हुनका ओछाओनपर बैसबय देलथिन। ''हम एहन बात पहिने कहियो नहि सुनने रही,'' माय कहलीह, ''बेटी अपन विवाहक विषयमे एतेक स्पष्ट बोलैत अछि।'' नैना कनेक संकोचसँ पुछलथिन, ''अहाँ नाराज छी?'' सरस्वती उत्तर देलथिन, ''नहि। मुदा तोरा लोकक कठोर बात सुनबाक पड़त, तकर चिन्ता अछि।'' नैना मायक हाथ पकड़लथिन। ''ओ बात अकेले नहि सुनब। जँ अहाँ चाहब तँ हम धीरे-धीरे सभसँ बात करब। मुदा अपन निर्णय साँच राखब।''

राति अभयक फोन आएल। नैना बैठकक पूरा वृत्तान्त कहलथिन—मामाक विरोध, काकीक प्रश्न, चन्दनक बात आ मायक उत्तर। अभय कहला, ''हम अहाँक मामा सँ बात करबाक तैयार छी, मुदा अपमानक सामना करबाक बहानामे फेर झगड़ा नहि बढ़ाएब।'' नैना कहलीह, ''सभसँ पहिने अहाँ अपन घरमे खुलेआम कहू।'' अभय हँ कहलनि। ''हमर माय पहिनेसँ जानैत छथि। बाबूजीसँ विस्तारमे बात करब। हम चाहैत छी दुनू घरक लोक जँ भेटथि तँ सम्मानसँ। जँ नहि भेल, तखनहुँ हमर निर्णय स्पष्ट रहत।''

अभय अगिला दिन अपन घर गेलाह। हुनक माय चूल्हिपर दाल चढ़ौने छलीह। बाबूजी पुरान अखबार पढ़ैत छलाह। अभय नैनाक परिवारक विरोधक बात कहला। बाबूजी पहिने पुछलनि, ''नैनाक अपन इच्छा पक्का अछि?'' ''हँ।'' ''तखन हुनका ऊपर समाजक नाँवपर दबाव किएक?'' अभयक माय कहलीह, ''हमरा जातिसँ नहि, बेटीक मनक

शान्तिसँ मतलब अछि। मुदा तोहर कमाइ कम अछि, घरक जिम्मेवारी अछि। दुनू मिलि निर्णय कर।'' अभय उत्तर देलनि जे ओ नैनासँ खर्चक बात कऽ चुकल छथि। माय कहलीह, ''भेंट करबाक दिन तय हो तँ हमरा बतायब।''

शकुन्तला काकी जखन अगिला बेर फोन कएलथिन, तखन हुनक स्वर पहिने सन कठोर नहि छल। ओ पुछलथिन, ''अभयक घरमे स्त्रीसभ काम करैत छथि? घरक लोक नैनाकेँ काज छोड़बाक तऽ नहि कहत?'' नैना उत्तर देलथिन, ''हम एहि विषयमे हुनका सँ स्पष्ट बात कएने छी। मुदा हुनक परिवारसँ भेंटमे अहाँ सेहो पुछि सकैत छी।'' काकी कनेक चुप रहलीह। ''हम अपने विवाहक बाद विद्यालयक काज छोड़ने रही,'' ओ कहलीह, ''तखन सभ कहने छल जे घर सम्हारब पैघ काज अछि। बादमे रुपैयाक जरूरत पड़ल तँ फेर काम भेटब कठिन भेल।'' नैना पहिल बेर काकीक विरोधक भीतर हुनक अपन अपूर्ण इच्छा सुनलथिन।

दोसर दिन अभयक बहिन रानीक फोन नैनाकेँ आएल। रानी अपन घरमे पढ़ाइ आ काजक विषयमे खुलि कऽ बात करैत छलीह। ''भैया कहैत छथि जे अहाँ अपना केन्द्रक काम जारी रखब,'' ओ कहलीह। ''हमरा ई नीक लगल। मुदा हमारे बाबूजीक स्वास्थ्य एखन ठीक नहि रहैत अछि। भविष्य मे देखरेखक बोझ केकरा पर पड़त, से पहिने तय करब नीक।'' नैना उत्तर देलथिन, ''हमर मायक स्वास्थ्य सेहो कमजोर अछि। कोनो एकटाकेँ अपन घर छोड़ि दोसरक घरक सेवा करय बाध्य नहि करब। मिलि व्यवस्था सोचब।'' रानीक प्रश्न जातिक नहि, जीवनक छल; नैना ओकरा महत्त्व देलथिन।

शैलेन्द्रक मनो फेर सहज नहि भेल। ओ अपन पुरान परिचितसँ अभयक विषयमे बिना जनौने जानकारी मँगबाक प्रयास केलनि। परिचित कहलक जे पत्रकारिता करयवाला युवकक विरुद्ध किछु लोक सामाजिक माध्यमपर खराब बात लिखैत अछि। शैलेन्द्र ओहि बातपर भरोसा करबाक करीब छलाह, मुदा हुनका याद आएल जे नैनाक विरुद्धो झूठ आरोप फैलल छल। ओ कागज मँगलनि—''जे आरोप अछि तकर प्रमाण कोन?'' परिचित कोनो उत्तर नहि देलक। शैलेन्द्र एहि घटना केँ नैनाकेँ कहलनि नहि, मुदा पहिल बेर बुझलनि जे अफवाह पर अपन घरक निर्णय देनाइ कतेक खतरनाक होयत।

नैना विवाहक विषयमे सोचैत छलीह तखन चन्दन कहलके, ‘‘दीदी, हमर मामला कारण जँ अहाँ विवाह टारि देब तँ हमरा आओर दुःख होयत।’’ नैना कहलथिन, ‘‘तोर मामलाक समय आ हमर जीवनक समय दुनू अलग अछि। हम निश्चय करब जे कब उचित होयत, मुदा तोहर दोष छिपा कऽ नहि।’’ चन्दन पुछलक, ‘‘अभय हमरा घृणा करताह?’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘तोर काजक आलोचना आ तोरा घृणा करब दू बात अछि। ओ तोहर कहबाक बात सुनने छथि। आगाँ तोहर व्यवहार बताओत जे तौँ केहन व्यक्ति बनब चाहैत छह।’’ चन्दन एखन उत्तर नहि देलक।

ओहि साँझ नैना नब केन्द्रक काज समाप्त कऽ घुरैत छलीह। सविता पुछलथिन, ‘‘आइ उदास छी?’’ नैना कहलीह, ‘‘घरमे विवाहक बात उठल अछि। लोक जाति आ कमाइपर बहस करैत अछि।’’ सविता हँसि कहलीह, ‘‘हम सभ नोकरीक नामपर परीक्षा दैत-दैत थाकि गेलहुँ। विवाहो एकटा परीक्षा बुझैत छथि लोक।’’ नैना मुस्कुरेलीह। ‘‘अन्तर ई जे एहि परीक्षाक प्रश्न हम स्वयं चुनब,’’ ओ कहलीह। दुनू बरामदासँ उतरलीह। बाहर सडकपर विवाहक रंगीन रोशनीक तैयारी होइत छल; भीतर केन्द्रक बोर्डपर अगिला दिनक रिक्त पदक सूचना टाँगल छल।

राति नैना अपन कापीक पाछिल पन्नामे विवाहसँ सम्बन्धित किछु प्रश्न लिखलथिन—रहनाइ कतय होयत, खर्च कोना बाँटल जाएत, मायक चिकित्सा, अभयक माता-पिताक देखरेख, अपन केन्द्रक समय, पत्रकारिताक जोखिम, धर्म आ संस्कारक कार्यक्रममे परस्पर सम्मान। ओ एहन किछु नहि लिखलथिन जे प्रेम सिद्ध करबाक लेल परीक्षा हो। ई सभ वैवाहिक जीवनक दिनचर्याक वास्तविक प्रश्न छल। अगिला भेटमे अभयसँ एक-एक बात करबाक निर्णय कएलथिन। ओ जानैत छलीह जे स्नेहक संग स्पष्ट व्यवहार नहि रहत तँ बादमे अनेक छोट प्रश्न पैघ झगड़ा बनि सकैत अछि।

भोरक बेला सरस्वतीक दुआरिपर कमलाक सन्देश आएल—‘काल्हिक बातसँ मोन दुखल; मुदा नैनासँ फेर शान्तिसँ भेटब।’ नैना सन्देश पढ़ि मायकेँ देलथिन। ‘‘आउथि,’’ ओ कहलीह, ‘‘हम असहमति सुनि सकैत छी। केवल अपन निर्णयक अधिकार नहि छोड़ब।’’ सरस्वती देवी आँगनमे रखल तुलसीक चौरा लग पानि देलथिन। एहि घरमे विवाहक तिथि

एखन तय नहि भेल छल, परिजनसभक विचार सेहो एक नहि छल। मुदा नैना अपन निर्णय न नुकौने छलीह, नहि ककरो अपमान कएने छलीह। ओ झोरा उठौलथिन आ रोजगार केन्द्र दिस निकलि गेलीह—जतय आइ फेर नोकरीक खोजमे लोकक पाँति लागबाक छल। हुनका अपन निर्णयपर कोनो संशय नहि छलनि।

अध्याय ५८ : अदालतक सुनवाई

जाड़क बिहानमे नवगढ़क जिला अदालत दिस जाएवला सड़कपर धून्हस पसरल छल। चायक दोकानसभमे धुआँ उठैत छल आ फाटकक बाहर लोक अपन-अपन कागज झोरामे दबौने ठाढ़ छलाह। रेखा मण्डल अपन भाइक पुरान ऊनी चादर काँधपर रखने छलीह। ओ चादर नरेशक छल; पछिला वर्ष ओ खरीदने छलाह, मुदा बहुत कम ओढ़ने रहथि। रेखा चादर राखि देबाक सोचने छलीह। आइ अदालत आबैत समय हुनका बुझायल जे एकटा परिचित वस्तु संग रहत तँ ओ अपन बात ठीकसँ कहि सकतीह। संगमे नरेशक पत्नी सीमा आ पड़ोसक वृद्ध बिसुनदेव साह छलाह। सीमाक हाथमे भोजनक छोट डब्बा छल, जकरा ओ बिहान भरि खोलबाक अवसर नहि पओने छलीह। रतनक गिरफ्तारीसँ अदालतक एहि सुनवाई धरि अनेक सप्ताह बीतल छल। बीचमे आरोप-पत्र, वकीलसभक तैयारी आ साक्षीकेँ सूचना पहुँचेबाक प्रक्रिया चलल; परिवारकेँ कखनो एक तिथिसँ दोसर तिथि धरि बाट देखय पड़ल।

अदालतमे आइ रतन सिंह आ मनोज साहसँ सम्बन्धित मामलाक सुनवाई निर्धारित छल। पुलिस हत्याक अनुसन्धानक आधारपर आरोप-पत्र दाखिल कऽ देने छल। रोजगार-ठगी आ श्रमिक-तस्करीसँ सम्बन्धित किछु आरोपक अभिलेखो सक्षम अदालतक आगाँ पहुँचल छल, मुदा सभ विषय एक्के दिन निर्णय होयबाक नहि छल। सुजाता कुमारी एही बातक जानकारी परिवारकेँ धैर्यक संग बारम्बार स्पष्ट रूपसँ पहिनहि देने छलीह। रेखा सुनने छलीह, तैयो मनक एक कोनमे चाहना छलनि जे आइ कियो उठि कहलथि—नरेशक हत्या केलक आ किएक। ओ अपन ई चाहना किनको नहि कहलथिन।

अदालतक परिसरमे घुसबाक पहिने रेखाकेँ एकटा कागजपर अपन नाम लिखए पड़लनि। सुरक्षा-कर्मचारी पुछलनि जे ओ कोन मामलासँ सम्बन्धित छथि। रेखा कहलीह, “नरेश मण्डलक बहिन।” कर्मचारी सूचीमे नाम खोजलक आ बहुत आदरसँ धीरे स्वरमे हुनका भीतर जेबाक सही मार्ग बतौलक। एतबा सामान्य प्रक्रिया सेहो रेखाकेँ भारी लगलनि। गाममे लोक हुनका नामसँ कम, भाइक बहिन कहि बेसी चिन्हैत छल। आजु ई

सम्बन्ध कागजपर लिखाबय पड़ि रहल छल। भीतर एकटा बूढ़ स्त्री अपन पतिक पेंशनक मामला बुझबाक लेल अलग कक्षक पता पुछैत छलीह। रेखाकेँ देखाइत छल जे एहि भवनक प्रत्येक सीढ़ी पर ककरो अपन प्रतीक्षा अछि।

फाटकक कात अभय भेटलाह। हुनक काँधपर पुरान थैला आ हाथमे समाचार-कक्षक परिचयपत्र छल। ओ रेखाकेँ नमस्कार करैत पुछलनि, ‘‘अहाँ सभ कखन अएलहुँ?’’ रेखा कहलीह, ‘‘किछु देरि भेल। एतय एतेक लोक अछि जे बुझाइत नहि कोन घरमे जाएब।’’ अभय हुनका अदालतक सहायकक सूचना-पट्ट दिस देखौलनि। ‘‘हम समाचार लिखबाक कारणसँ आएल छी। अहाँक जे व्यक्तिगत बात अछि, ओकर विषयमे बिना अनुमति नहि पुछब।’’ रेखा कहलथिन, ‘‘भाइक हत्या समाचारमे आबि गेल। मुदा घरक खर्च समाचार नहि बुझैत अछि।’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘एहि बातकेँ बिसरब नहि।’’

सीमा अदालतक बरामदामे बैसबाक ठाम खोजि रहल छलीह। हुनक बेटा विद्यालय गेल छल; पड़ोसक बुजुर्ग महिला ओकरा साँझ धरि देखतीह। नरेश जखन जीवित छलाह तँ बालकक विद्यालयक शुल्क तेसर तिथिसँ पहिने जमा कऽ दैत छलाह। एहि बेर फीसक रसीद सीमा अपन थैलामे एना राखने छलीह जे मानू ओहो हत्याक कागजातक हिस्सा हो। बिसुनदेव कहलनि, ‘‘बेटी, जे न्याय चाहैत छी तकर बाट लाम होइत अछि। मुदा शरीरक चिन्ता सेहो करू।’’ सीमा डब्बा खोललथिन। भीतर दूटा रोटी आ आलूक तरकारी छल। आधा रोटी तोड़ि रेखाकेँ देलथिन। रेखा कहलथिन, ‘‘भूख नहि अछि।’’ सीमा जिद कएलथिन, ‘‘भूख नहि लागलासँ काज नहि चलत।’’

नरेशक मृत्युक बाद परिवार पहिल दू मासमे जे ऋण लेल छल, ओकर सूची सीमाक थैलामे छल। ओ बारम्बार सूची देखैत छलीह, मानू अदालतमे कोनो व्यक्ति एहि अभावक लेखा मँगत। रेखा हुनका कहलथिन, ‘‘ई कागज अभी थैलामे रखू। जहिया जरुरत होय, तहिया देब।’’ सीमा पूछलथिन, ‘‘मुदा जे कागजमे नहि अछि, ओ के कहत? बच्चाक राति-राति जागब, हमर बजार जाएबाक डर, भाड़ाक तिथि?’’ रेखा किछु देरि सोचि उत्तर देलथिन, ‘‘सभ बातक अलग जगह होयत। आइ जे आवश्यक अछि से सुनब। बाकी जीवनकेँ हम सभ घरमे सम्हारब।’’

सुनवाईक पहिने सुजाता अपन सहकर्मी अरुणसँ बात कऽ रहल छलीह। पुलिसक दस्तावेजमे नरेशक अन्तिम फोन-सम्पर्क, गोदामक प्रवेश-पञ्जी, पुरान गाड़ीक यात्रा-

विवरण आ चिकित्सकीय प्रतिवेदन सुरक्षित छल। हत्याक घटनाक्रमकेँ जोड़बाक आधार एहि साक्ष्यसभमे छल, मुदा सुजाता जानैत छलीह जे अभियोजनक प्रत्येक दावाक जाँच अदालतमे होयत आ बचाव पक्ष प्रश्न उठाओत। ओ अरुणकेँ कहलथिन, ‘‘मूल कागजातक सूची फेर मिला लिअ। जकर प्रमाणित प्रति दैत छी, ओ मूलसँ मेल खएबाक चाही।’’ अरुण माथ हिलौलनि। ‘‘रेखाक देल कापीक रसीदो अछि।’’ ‘‘ठीक। अपन बातसँ बेसी कागज बोलय दियौ।’’

एही बीच रतनकेँ सुरक्षाक बीच अनल गेल। रेखा पहिल बेर ओकरा एतेक कातसँ देखलथिन। नगरक सभामे रतन फूलमाला पहिरि मंचपर बैसैत छलाह। आइ हुनक कात पुलिसक दू सिपाही छलाह, आ हाथमे कागज देबाक काम अधिवक्ता करैत छलाह। ओ माथ झुका कऽ चललाह, मुदा एक बेर चारूकात ताकलनि। रेखाकेँ नहि बुझायल जे हुनक नजर ओकरापर पड़ल कि नहि। सीमा एकाएक रेखाक बाँहि पकड़ि लेलथिन। ‘‘चलू, एहि दिस बैसू,’’ रेखा फुसफुसैलीह। ओ सभ रतनक चेहरासँ अधिक अदालतक दुआरिपर दृष्टि राखबाक प्रयास कएलनि।

कक्षसँ बाहर एकटा युवक रतनक गिरफ्तारीक विषयमे अपन साथीक संग तेज आवाजमे तर्क करैत छल। एक कहैत छल जे धनवान लोक जामिन पाबि अन्तमे बचि जाइत अछि; दोसर कहैत छल जे गिरफ्तार भऽ गेल तऽ दोष सिद्ध भेल। सुजाता ओतयसँ गुजरैत रुकलीह। ‘‘दुनू बातक निर्णय अदालतक प्रक्रियासँ होयत,’’ ओ शान्त स्वरमे कहलीह। युवक सभ चुप भऽ गेल। रेखा एहि वाक्यकेँ सुनि सोचलीह जे ओकरा लेल आरोपक प्रत्येक कागज केवल संख्या नहि, भाइक अनुपस्थिति अछि। मुदा न्याय जँ मनमर्जीसँ होय तऽ नरेश अपन जीवनमे हिसाब मिलएबाक एतेक जिद किएक करितथि?

मनोजकेँ दोसर मार्गसँ आनल गेल। चन्दन अदालत नहि आएल छल; ओकरा अपन अलग जाँचक सम्बन्धमे निर्धारित तिथिपर उपस्थित होयबाक सूचना छल। नैना चाहने छलीह जे चन्दन अदालतक भीड़मे तमाशा देखबाक लेल नहि जाए। ओ स्वयं आजु पूनमक संग नहि, नरेशक परिवारक हाल पुछबाक लेल पहुँचलीह। सरस्वती देवीक औषधि देबाक बाद सविता हुनक घरमे किछु समय रहबाक सहमति देने छलीह। नैना अदालतक फाटकपर रेखाकेँ देखि कातमे ठाढ़ भऽ गेलीह। ‘‘दीदी, एतय आएब जरूरी नहि छल,’’ रेखा

कहलीह। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘हम निर्णय देबय नहि अएलहुँ। अहाँकेँ जे किछु चाही, से कहू।’’

सुनवाई शुरू भेल तँ अदालतक कक्षमे बैसबाक ठाम कम पड़ि गेल। किछु लोक बाहरक बरामदामे प्रतीक्षा करैत रहलाह। अदालतक कर्मचारी क्रमसँ मामलाक नाम पुकारैत छल। जखन नरेशक हत्यासँ सम्बन्धित मामला पुकारल गेल, वकीलसभ उठलाह। न्यायालय अभियोजनपक्ष आ बचावपक्षक उपस्थितिक पुष्टि कएलक। दाखिल आरोप-पत्र आ सम्बन्धित अभिलेखक प्रतिलिपि उपलब्ध करएबाक स्थिति पर चर्चा भेल। अभियोजनक ओरसँ किछु साक्षीक सुरक्षाक चिन्ता रखल गेल। बचाव पक्ष दस्तावेजसभक पूरा प्रति आ अपन पक्ष रखबाक पर्याप्त अवसरक माँग कएलक। अदालत दुनू पक्षक बात सुनलक।

रेखा जे सुनि रहल छलीह ओकर प्रत्येक शब्द हुनका स्पष्ट नहि बुझाइत छलनि। कखनहुँ कोनो तिथि, कखनहुँ कागजक संख्या, कखनहुँ प्रतिलिपि उपलब्ध करएबाक चर्चा। ओ अपन चादरक किनारि मरोड़ैत रहलिह। रतनक अधिवक्ता कहलनि जे गिरफ्तारीक अर्थ दोष सिद्ध भऽ जाएब नहि होइत अछि; आरोपक परीक्षण आवश्यक अछि। अभियोजनक अधिवक्ता उत्तर देलनि जे आरोप-पत्रमे अनेक स्वतन्त्र स्रोतसँ जुटाओल सामग्री अछि आ साक्षीक सुरक्षा महत्त्वपूर्ण अछि। रेखाकेँ बुझायल जे दुनू बात अदालत सुनत; एतय ककरो मनक वेदना मात्र पर्याप्त नहि।

बरामदाक एकटा कोनमे नरेशक पुरान सहकर्मी कुसुम भेटलीह। हुनक हाथमे बन्द कार्यालयक बकाया वेतनक आवेदन छल। ओ रेखाकेँ देखिते रुकलीह। ‘‘नरेश बाबू जखन गिनती करैत छलाह तँ पाँतीक एक रुपैया नहि छोड़ैत छलाह,’’ ओ कहलीह। ‘‘हम सोचैत रही एतबा सतर्क किएक छथि। आब बुझाइत अछि।’’ रेखा पुछलथिन, ‘‘अहाँक वेतन भेटल?’’ कुसुम माथ हिलौलीह। ‘‘नहि। मालिक पर मामला चलैत अछि, कर्मचारीक पेट अपने चलबाक अछि।’’ रेखा कहलीह, ‘‘हमर भाइक नामपर ककरो अधिकारक प्रश्न छोट नहि मानू। अहाँ अपन कागजक प्रति सुरक्षित रखू।’’

विराम भेलाक बाद रेखा बाहर निकलीह। अभय पुछलनि, ‘‘की अहाँकेँ किछु बुझएमे सहायता चाही?’’ रेखा कहलीह, ‘‘बहुत कागजक बात भेल। न्याय कखन होयत?’’ अभय कहलनि, ‘‘आइ निर्णयक दिन नहि छल। अगिला तिथि अभिलेख आ आरोपक प्रक्रियासँ जुड़ल अछि। गवाहीक क्रम अलग होयत।’’ रेखा निश्श्वेष्ट हँसि देलथिन। ‘‘भैया जतबा दिनमे

मरि गेलाह, ओकर साँच कहबाक लेल एतेक दिन।'' अभय उत्तर खोजैत रहलाह, मुदा जल्दीमे कोनो सांत्वना नहि देलनि।

नैना रेखाकेँ अदालतक परिसरक छोट पुस्तक-विक्रेताक दोकान लग लऽ गेलीह। दोकानदार अधिवक्तासभ लेल कोरा पन्ना, फाइल आ मुहरक स्याही बेचैत छल। ''अहाँक भैया जे कापी राखने छलाह, ओकर नकल सुरक्षित अछि ने?'' नैना पुछलथिन। ''हँ। सुजाताजी रसीद देने छथि। मूल पुलिसक लग अछि, हमरो एकटा प्रति अछि।'' ''ओहि प्रति घरमे सुरक्षित रखू, ककरो दबावपर बिना बुझने कागजपर हस्ताक्षर नहि करू।'' रेखा कहलथिन, ''आइ हम ककरो सँ लड़बाक स्थिति मे नहि छी। मुदा हस्ताक्षरक अर्थ पहिने बुझब।'' ई वाक्य कहिते हुनक स्वर कनेक स्थिर भेल।

बरामदामे सीमा अपन बेटाक विद्यालयक शुल्कक बात निकारलथिन। ''हुनक मृत्यु लेल ककरा दोष देल जाए, ई अदालत ठहराओत। मुदा महीनाक भाड़ा तँ आइ देबाक अछि,'' ओ कहलीह। बिसुनदेव सुझाव देलनि जे विद्यालयक प्रधानाध्यापकसँ समय बढ़एबाक लिखित निवेदन देल जाय। नैना कहलथिन जे रोजगार-सहायता केन्द्रक माध्यमसँ विधवा लेल उपलब्ध सहायता योजनाक सही जानकारी जाँचि सकैत छी; जतेक अधिकार वास्तवमे अछि, ततेक कहब, झूठ भरोसा नहि देब। सीमा माथ हिलौलथिन। ''नाम लिखि दिअ, मुदा आवेदन हम स्वयं पढ़ब।''

नैना भोजनक बाद अदालतक सूचना-कक्ष लग गेलीह। ओतय एक कर्मचारी कागजक बण्डल मिलाबैत छल। नैना पुछलथिन जे अगिला सुनवाईक सूचना परिवारकेँ लिखित कोना भेटत। कर्मचारी उपलब्ध सार्वजनिक प्रक्रिया बुझौलक, साथहि कहलक जे अधिकृत सूचनासँ अलग अफवाहपर भरोसा नहि करथि। रेखाक घरमे स्मार्ट फोन सधैँ चलैत नहि छल; सीमाक फोन पुरान छल आ बारम्बार बन्द भऽ जाइत छल। नैना सोचलीह जे समाचारकेँ तुरन्त पएबाक सुविधा सेहो सभकेँ समान नहि अछि। ओ उपलब्ध जानकारी नोट कऽ रेखाकेँ देलथिन, मुदा अन्तिम तिथि अधिकृत पर्चीसँ मिलाएबाक आग्रहो कएलथिन।

दोपहरक समय पुलिसक एक कर्मचारीक फोन सुजाताकेँ आएल। पूनमक बयानसँ सम्बन्धित गोपनीय दस्तावेजक अधिकृत प्रति तैयार करबाक विषय छल। सुजाता स्पष्ट कहलथिन जे पीड़ितक अनावश्यक पहिचान उजागर होयबाक जोखिम नहि उठाओल जाय।

नरेशक हत्याक मामला आ श्रमिक-तस्करीक अनुसन्धानमे किछु लेनदेनक सम्बन्ध भेटैत छल, मुदा ओ सभ अलग प्रक्रियाक विषय छल। एकटा स्थानीय संवाददाता सभकेँ एकसाथ जोड़ि सनसनीखेज शीर्षक बनएबाक तैयारीमे छल। सुजाता ओकरा कहलथिन, ‘‘जाँचक विषय लिखू, अनुमानकेँ फैसला बना कऽ नहि।’’

कक्षमे सुनवाई फेर शुरू होयबासँ पहिने रेखा एकटा क्षण लेल बाहरक नीम तर ठाढ़ छलीह। हुनक मनमे नरेशक ओहि आदतकेँ स्मरण भेल जे घरमे कोनो बिल गलत भेटिते ओ लाल पेनसँ घेरा दऽ दैत छलाह। आइ हुनका बुझायल जे अदालतक प्रत्येक कागज ओहि लाल घेराक जकाँ सावधानी चाहैत अछि। ओ चादर ठीक कएलथिन आ भीतर चलि गेलीह।

साँझ दिस न्यायालय अगिला तिथि निर्धारित कएलक। अदालत किछु दस्तावेजक प्रतिलिपि आ प्रक्रियागत विषय पूरा करबाक निर्देश देलक। रतनक अधिवक्ता अपन मुवक्किलसँ क्षणभर बात कएलनि। मनोज अपन अधिवक्ताकेँ किछु कहलक आ चुप भऽ गेल। अदालतक बाहर केओ कहलनि, ‘‘आइ फैसला नहि भेल।’’ दोसर व्यक्ति उत्तर देलक, ‘‘एहन मामलामे वर्षों लगि जाइत अछि।’’ रेखा एहि बातचीतसँ दूर रहबाक प्रयास कएलथिन। दिन भरिक बाद हुनका बुझायल जे सभक बात सुनब अनिवार्य नहि अछि।

रेखा वापस जाएबाक पहिने नरेशक पुरान परिचित अरुण बाबूसँ भेटलीह। ओ कखनो संस्थाक हिसाब-किताब देखैत छलाह, मुदा एखन अपन अलग काजमे लगल रहैत छलाह। ‘‘नरेशजी हमरा एक दिन कहने छलाह जे कागजक सामने लोकक पद नहि देखबाक चाही,’’ ओ कहलनि। रेखा पुछलथिन, ‘‘तखन अहाँ ई बात जाँचमे कहलहुँ?’’ ‘‘पहिल बयानमे कहलहुँ, फेर जे समय याद भेल से लिखित देलहुँ।’’ रेखा उत्तर देलथिन, ‘‘ठीक केलहुँ। याद नहि होय तँ नहि कहू। हुनका लेल झूठो हम नहि चाहैत छी।’’

अभय अपन कापीमे दिनक घटनाक क्रम लिखि रहल छलाह। नवल किशोर सम्पादकक फोन आएल—‘‘आजु अदालतमे की भेल? गिरफ्तारीक बाद पहिल पैघ सुनवाई छल।’’ अभय ठामक आ तिथिक जानकारी देलनि। नवल किशोर पुछलनि, ‘‘रतन दोष मानलनि?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘एहन कोनो स्वीकारोक्ति नहि भेल। अभियोजनक कागजात, बचावक अधिकार आ अगिला तिथिक चर्चा भेल।’’ सम्पादक साँस छोड़लनि। ‘‘ई खबरि कम बिकत।’’ अभय कहलनि, ‘‘मुदा सही रहत।’’ नवल किशोर क्षणभर मौन रहि कहला, ‘‘ठीक, समाचार पठाउ।’’

रास्तामे नैना फोनपर चन्दनसँ बात कएलथिन। ओ पुछलक जे सुजाता हुनका विषयमे किछु कहलथिन कि नहि। नैना उत्तर देलथिन, ‘‘आइ अदालतमे तोहर जाँचक विषय नहि छल। तोहर जे तिथि अछि से कापीमे रख, अधिवक्तासँ समयपर बात कर।’’ चन्दन कहलक, ‘‘हम सोचलहुँ जे नरेश बाबूक बहिन हमरा देखितथि तँ की कहितथि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘ओहि प्रश्नक उत्तर हुनक अधिकार अछि। तूँ जतेक जनैत छह, स्पष्ट कह। क्षमा माँगबासँ पहिने अपन गलतीक पूरा भार बुझ।’’ चन्दन बहुत देरि चुप रहल, फेर कहलक जे मायकेँ औषधि दऽ चुकल अछि।

घर घुरैत समय नैना आ अभय अदालतक बाहरक जलपान-दोकानपर रुकलाह। अभय कहलनि, ‘‘नरेशक परिवारक लेल दिन कठिन छल।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘आइ हम बुझलहुँ जे न्याय भेटबाक आशा सेहो खर्च मँगैत अछि—भाड़ा, एक दिनक मजदूरी, बच्चाक देखरेख, भोजन।’’ अभय कहलनि, ‘‘ई किछु समाचारमे लिखब। मुदा रेखाक निजी दुःखक वर्णन ओकर अनुमति बिना नहि।’’ नैना हुनक दिस तकलथिन। ‘‘अहाँ एहन बात अब जल्दी नहि बिसरैत छी।’’ अभय हँसि देलाह। ‘‘पूनम हमरा सिखौने छथि जे ककरो घाव समाचारक सामान नहि होइत अछि।’’

अदालतसँ घुरलाक बाद रेखा घरमे चादर उतारि सहेजलथिन। सीमा शुल्कक रसीदक संग अगिला तिथिक पर्ची रखलथिन। छोट बालक विद्यालयसँ घुरि पुछलक, ‘‘माय, बाबूजीकेँ मारयवला जेलमे अछि ने?’’ सीमा ओकर कात बैसि कहलीह, ‘‘किछु लोक गिरफ्तार छथि। अदालत प्रमाण देखत।’’ बालक दोसर प्रश्न पुछलक, ‘‘बाबूजी घुरि आबताह?’’ ओहि प्रश्नपर सीमा किछु उत्तर नहि दऽ सकलीह। रेखा बालककेँ लग बैसबि कहलथिन, ‘‘तोहर बाबूजी घुरि नहि आबताह। मुदा हम सभ हुनकर कएल नीक काज नहि बिसरब।’’

रातिमे रेखा नरेशक कापीक नकल खोललथिन। अक्षर स्पष्ट छल—किछु अङ्क, किछु नाम, भुगतानक तिथि, आ कतेको प्रश्नचिह्न। कापीक अन्तिम पन्नामे नरेश अपन हाथसँ लिखने छलाह जे खर्चक रसीद मिलान करब बाकी अछि। ओहि साधारण वाक्यक कात रेखा अपन पेंसिलसँ एकटा नब तिथि लिखलथिन—अदालतक अगिला सुनवाई। ओ सोचलीह जे भाइक अपूर्ण जाँचक निष्कर्ष ओ स्वयं नहि देबय चाहैत छथि। मुदा दस्तावेज सुरक्षित राखबाक आ सत्यक बात कहबाक उत्तरदायित्व सँ नहि हटतीह।

नरेशक बालक ओहि राति विद्यालयक कापीमे गणितक प्रश्न हल करैत छल। योगक एक पाँतिमे ओकर उत्तर गलत छल। रेखा ओकरा डाँटलथिन नहि; फेर कापीक भीतर अङ्क रखि पुछलथिन जे कोन ठाम चूक भेल। बालक अपन त्रुटि स्वयं देखलक। ‘‘बाबूजी सेहो एना करबैत छलाह,’’ ओ कहलक। सीमा रसोइसँ ई बात सुनि क्षणभर ठाढ़ रहि गेलीह। नरेशक मृत्युकेँ अदालत कागज आ साक्ष्यसँ देखत, मुदा घरमे हुनक उपस्थिति एहन छोट कामसभमे बचल छल। रेखा बालकक कापी बन्द कएलथिन आ कहलथिन, ‘‘काल्हि फेर पढ़ब। आइ नीक कएलह।’’

एहि बीच विभा अपन भाड़ाक कोठरीमे बैंकसँ आएल नब पत्र पढ़ैत छलीह। संयुक्त खाताक किछु रकमक विषयमे हुनक स्पष्टीकरण फेर माँगल गेल छल। ओ अधिवक्ताकेँ फोन कएलथिन—‘‘हम अदालतक तारीखपर उपस्थित रहबाक आवश्यकता अछि?’’ अधिवक्ता उत्तर देलनि जे आवश्यकता भेलापर विधिवत सूचना देल जायत; एखन अपन मूल प्रमाण आ स्वतंत्र लेखा सुरक्षित रखथि। विभा कहलथिन, ‘‘हम पतिक बचाव लेल झूठ नहि कहब, मुदा जकर जानकारी नहि, तकर दोषो नहि लेब।’’ हुनका अपन छोट आयक काजसँ एखन किछु टका भेटय लागल छल। ओहि दिन हुनका पहिल बेर बुझायल जे आर्थिक स्वाधीनताक अर्थ प्रत्येक प्रश्नक उत्तर स्वतन्त्र रूपसँ देबाक साहस सेहो अछि।

पूनम अदालत नहि गेलीह। ओहि दिन स्वास्थ्यक देखरेखक निर्धारित भेट छल। सहायता-कर्मी सीमा हुनका पुछलथिन, ‘‘अदालतक समाचार सुनबाक इच्छा अछि?’’ पूनम उत्तर देलथिन, ‘‘जे हमर मुकदमासँ सम्बन्धित होयत, से अधिकृत रूपसँ जानब। एखन सभक चर्चा सुनब आवश्यक नहि।’’ ओ अपन कापीमे रोजगार केन्द्रक अगिला भेटक तिथि लिखलथिन। हुनका अदालतक प्रतीक्षा छल, मुदा प्रत्येक दिन अपन जीवनक सभ काज रोकि प्रतीक्षा करबाक इच्छा नहि छलनि।

अभय समाचार लिखि चुकलाक बाद अपन नामक नीचाँ एकटा पाँति फेर जाँचलनि। पहिले लिखने छलाह जे हत्याक वास्तविकता अदालतमे प्रमाणित भऽ गेल; ओ वाक्य काटि देलनि। प्रमाण अदालतक परीक्षणमे छल, निर्णय एखन नहि भेल छल। एतेक छोट सुधारसँ शीर्षकक उत्तेजना घटि गेल, मुदा तथ्यक अर्थ बचल। नवल किशोर रपट पढ़ि पुछलनि, ‘‘एतेक सावधानी किएक?’’ अभय कहला, ‘‘आइ रेखाक घर देखलहुँ। हमर

एकटा गलत वाक्य हुनक दुःखक ऊपर आओर गलत आशा राखि देत।'' सम्पादक बिना दोसर प्रश्नक रपट छपबाक लेल पठा देलनि।

अगिला भोर नवगढ़क अदालतक फाटक फेर खुलल। ओतय नरेशक नामक मामला आइ पुकारल नहि जाएवला छल; अन्य परिवार अपन-अपन दुःख आ कागज लऽ पहुँचैत छलाह। रेखा ओहि दिन घरमे अपन भातिजक विद्यालयक हिसाब मिला रहल छलीह, अभय समाचारमे अदालतक वास्तविक प्रक्रिया लिखि रहल छलाह, आ नैना केन्द्रमे एकटा नब आवेदककेँ फीसक रसीद पढ़ि सुना रहल छलीह। न्यायालयक तिथि आगाँ बढ़ि गेल छल, मुदा नरेशक हत्या सम्बन्धी प्रश्न समाप्त नहि भेल छल। रेखा पर्चीकेँ कापीक भीतर सुरक्षित रखि देलथिन—अगिला दिनक बाट देखबाक लेल नहि, अगिला दिन उपस्थित रहबाक लेल।

अध्याय ५९ : फेर नौकरीक पाँति

नवगढ़क बस अड्डापर सबेरक पहिल बससँ पहिने लोकक पाँति लागि गेल छल। ककरो हाथमे पारदर्शी थैलीमे प्रवेशपत्र छल, ककरो पाछाँक जेबीमे पहचानपत्र, कियो पुस्तकक अन्तिम पन्ना पढ़ि रहल छल। सड़कक कात चायक भट्ठी सुलगि गेल छल आ घाम ओतबे निकसल छल जे लोक अपन छाह चिन्हि सकथि। सविता कुमारी एकटा नील फाइल छातीसँ सटौने पाँतिमे ठाढ़ छलीह। फेर परीक्षा छल। पछिला परीक्षा प्रश्नपत्र बाहिर जाएबाक आरोप आ जाँचक बीच रद्द भऽ गेल छल; नव सूचना अबिते अभ्यर्थीसभक पुरान दिनचर्या लौटि आएल छल। पाठ्यक्रम लगभग ओही, भाड़ा बढ़ल, तैयारीक समय घटल।

सविताक आगाँ एकटा युवती ठाढ़ छलीह, जकर माथपर ओससँ भीजल केश चिपकल छल। ओ बारम्बार फोन खोलि परीक्षा-केन्द्रक पता देखैत छलीह। ‘‘अहाँ पहिने एतय गेल छी?’’ ओ सवितासँ पुछलथिन। ‘‘नहि, मुदा नक्शा देखलहुँ। बससँ उतरि कने पैदल जाएब पड़त।’’ युवती अपन नाम मुन्नी कहलीह; घर दुरक गाममे छलनि। पिता खेतक छोट पट्टेदार, माय घरक संग दोसरा घरमे धान कुटबाक काज करैत छलीह। ‘‘आइ नोकरी नहि भेटत, केवल परीक्षा देब,’’ मुन्नी कहलथिन, ‘‘मुदा घरमे सबेरेसँ कहल जा रहल अछि जे नोकरी लऽ कऽ घुरिह।’’ सविता कनेक हँसलीह। ‘‘एहि दू बातक बीच दूरी अछि।’’

बस अड्डाक टेबुल लग चाय बेचयवला किशोर गणेश छल। ओ सात बजेसँ पहिने चाय उबालि राखैत छल, फेर दू घण्टा विद्यालयक कोचिंगमे जाइत छल। ओकर पिता पछिला बरख अस्वस्थ भेल छलाह; गणेशक कमाइ घरक छोट सहारा बनल छल। सविता ओकरा पुछलथिन, ‘‘आजु पढ़ाइ नहि?’’ ओ उत्तर देलक, ‘‘दस बजेसँ। एखन पिताजी दोकान नहि सम्हारि सकैत छथि।’’ गणेशक हाथ चायक भाँड़ देबा समय जलि गेल, मुदा ओ मुस्कुरा देलक। सविताकेँ बुझायल जे केवल परीक्षा दैत युवक नहि, ओकरा सेवा देनिहार अनेक किशोर सेहो रोजगारक भार सँ घेरल छथि।

पाँतिमे चन्दन सेहो छल, मुदा परीक्षा देबाक लेल नहि। ओ औषधि-दोकानक मालिकसँ भेटि अस्थायी ढुलाईक कामक विषयमे बात करए शहर आएल छल। पिछला सप्ताह

ओकर पुलिसक समक्ष उपस्थिति भऽ चुकल छल; अगिला तिथिक सूचना कापीमे लिखल छल। अपन पुरान कोचिंगक मित्रसभकेँ देखिते ओ रुकि गेल। सविता पुछलथिन, ‘‘तोहर आवेदन नहि भरल?’’ चन्दन कहलक, ‘‘एहि बेर शुल्को जुटेबाक कठिनाइ छल। तैयो अगिला विज्ञापन देखब। एखन वैध काज चाही।’’ सविता उत्तर देलथिन, ‘‘तूँ पढ़ब छोड़ि देबह तँ पुरान मेहनत बेकार होयत। मुदा पेटक खर्चक बातो हम बुझैत छी।’’

एक युवक पाँतिसँ कातमे आबि सभकेँ मोबाइलपर सन्देश देखबए लगल। सन्देशमे लिखल छल जे परीक्षा केन्द्र बदलि गेल अछि; सही ठाम जनबाक लेल एकटा निजी नम्बरपर शुल्क पठेबाक अछि। किछु अभ्यर्थी घबरा गेलाह। सविता अधिकृत वेबसाइटपर सूचना मिलौलथिन। कोनो परिवर्तन नहि छल। ओ युवककेँ पुछलथिन जे सन्देश कतयसँ भेटल। ‘‘समूहमे आएल,’’ ओ कहलक। ‘‘समूहमे आएल बात आदेश नहि होइत अछि,’’ सविता उत्तर देलथिन। ओ सभकेँ मूल प्रवेशपत्रपर छपल पता देखबाक कहलीह। किछु लोक निश्चिन्त भेलाह; दोसर सभ संदेहमे रहलाह।

बस चलल तँ भीतर ठाढ़ रहबाक ठाम कठिनाइ सँ भेटल। मुन्नी खिड़की लग ठाम बना कऽ सविताक फाइल राखि देलथिन। चन्दन दोसरा मोड़पर उतरि गेल। ओकरा देखिते सविताकेँ ओहि दिनक याद आएल जखन चन्दन परीक्षा रद्द होयबाक खबरि सुनि कोचिंगक फाटक लग चुप बैसल छल। बेरोजगारी ओकरा अपराध करबाक बाध्य नहि केने छल; निर्णय ओकर अपन छल। मुदा विकल्प कम रहबाक पीड़ा ओहि निर्णयक पाछाँ रहैत छल। सविता मनमे सोचलीह जे कानूनक प्रश्न आ रोजगारक प्रश्नकेँ एक-दोसराक बदला नहि राखल जा सकैत अछि।

बससँ उतरलाक बाद मुन्नी एकटा पानक दोकानपर बाट पुछलथिन। दोकानदार कहलक जे परीक्षा केन्द्र ओहि विद्यालयमे अछि जकरा पहुँचबाक लेल पुल पार करबाक अछि। एकटा अनचिन्हार युवक कहलके जे ओ छोट रास्तासँ लऽ जायत, मुदा पहिले भाड़ा देबाक पड़त। सविता कहलीह, ‘‘हम सार्वजनिक सड़कसँ जेब, एखन समय अछि।’’ मुन्नीकेँ कनेक राग भेल जे फेर सावधान रहबाक पड़ि रहल अछि। सविता उत्तर देलथिन, ‘‘सभ लोक गलत नहि होइत अछि, मुदा नया शहरमे ठाम बुझि चलब ठीक। परीक्षा देबासँ पहिने बेकारक भय नहि बढ़ाबी।’’ दुनू पुल पार कएलथिन।

परीक्षा भवनक बाहर फेर पाँति छल। कागजक जाँचक लेल अलग दुआरि, सामान जमा करबाक अलग जगह। मुन्नीक फोटो पहचानपत्रसँ कने अलग देखाइत छल; प्रवेशद्वारपर कर्मचारी प्रश्न कएलनि। ओ डरि गेलीह। सविता बीचमे बजबाक बदला हुनका स्वयं उत्तर देबाक इशारा कएलथिन। मुन्नी जन्मतिथि, पिताक नाम आ प्रमाणपत्रक जानकारी सहीसँ कहलथिन। कर्मचारी दोसर दस्तावेज देखलनि आ भीतर जेबाक अनुमति देलनि। मुन्नी मुड़ि कऽ सविताकेँ धन्यवाद कहलीह। सविता उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँ अपन बात स्वयं कहने छी।’’

कक्षमे प्रश्नपत्र बाँटल गेल तँ सभ किछु परिचित छल—सामान्य ज्ञान, गणित, भाषा आ तर्क। सविताकेँ पहिल प्रश्न सोझ बुझायल, तेसर कठिन। ओ घड़ी देखलीह। किछु समय लेल परीक्षा रद्द भेलाक क्रोध, अभिभावकक चिन्ता आ दलालक सन्देश सभ पाछाँ छूटि गेल। सोझाँ प्रश्न छल आ अपन लिखबाक जिम्मेवारी। ओ जे जनैत छलीह, से लिखलथिन; जे नहि जनैत छलीह, ओकर अनुमान करैत समय सावधानी रखलथिन। परीक्षाक अवधि समाप्त भेल तँ कर्मचारी उत्तरपुस्तिका जमा कएलनि। बाहर निकलिते ककरो आँखिमे आशा छल, ककरो चेहरापर निराशा। परिणाम एखन बहुत दूर छल।

बाहर निकलैत अभ्यर्थीसभ उत्तर मिलाबय लगलाह। एक युवक कहलक जे ओकर पाँचटा प्रश्न निश्चित गलत भेल; ओ माथ नीचाँ कऽ बैसि गेल। मुन्नी ओकरा कहलथिन, ‘‘जे भेल से आब बदलत नहि। पहिले भोजन करू।’’ ओ स्वयं बिहानसँ किछु नहि खएने छलीह। सविता तिनूकेँ सड़कक कातक छोट दोकानमे लऽ गेलीह। तीन गिलास पानि आ तीनटा सस्ता पराठा मँगाओल गेल। खर्च बाँटबाक समय युवक कहलक जे ओकरा लग छोट पैसा नहि अछि। मुन्नी अपन बचल भाड़ासँ हिस्सा देलथिन; सविता कहलथिन जे घुरबाक भाड़ा सुरक्षित राखू। भोजनक टेबुलपर प्रश्नक उत्तरसँ बेसी घरक हिसाबक चर्चा भेल।

परीक्षाक बाद सविता नैना चलौने रोजगार-सहायता केन्द्र पहुँचलिह। ओतय कुसुम कर्मचारीक बकाया वेतनक आवेदनक प्रति बनबैत छलीह। पूनम एकटा सार्वजनिक नियुक्ति-विज्ञापनक शब्द पढ़ि रहल छलीह; ओहि दिन हुनका एतय आबयमे असुविधा नहि भेल छल, तैयो नैना हुनका काजक समय सीमित रखबाक कहलथिन। सविता कहलीह, ‘‘आइ पाँतिमे फेर एकटा झूठ सूचना फैलल। शुल्क देबाक कहल जाइत छल।’’ नैना ओ

सन्देशक विवरण लिखलथिन, मुदा अज्ञात नम्बरकेँ अपराधी घोषित नहि कएलथिन। ‘‘पहिने अधिकृत सूचना मिलायब। जँ ठगीक प्रमाण भेटत तँ शिकायतक बाट बतायब,’’ ओ कहलीह।

माधवी देवी ओहि समय दू अन्य महिला संग अएलीह। एक गोटे पछिला मास होटलमे बर्तन माँजने छलीह, मुदा मजदूरी पूरा नहि भेटल छलनि। दोसर महिलाक पति शराबक कारण फेर कमाइ घर नहि अनैत छलाह। माधवी कहलीह, ‘‘आरम्भमे शराबबन्दी भेल तँ घरमे पहली बेर खर्चक पोटली भरल। हम सभ कहलहुँ जे आब बच्चाक पुस्तक किनब। साल भरि जाइत-जाइत गलीमे चोरी-नुकाए मदिरा भेटय लागल। आब दामो बेसी, भय सेहो बेसी।’’ दोसर महिला कहलथिन, ‘‘जे बिकैत अछि तकरा रोकबाक बात करैत सभ अछि, मुदा कमाइ खसयवला हमर घरक चिन्ता ककरा अछि?’’ नैना हुनक बात सुनलथिन। केन्द्रक काज रोजगारक सूचना छल; सामाजिक समस्याक सभ समाधान ओकरा लग नहि छल। तैयो मजदूरीक बकाया लिखबाक सहायता ओ सभकेँ देलथिन।

सविता पुछलथिन, ‘‘अहाँ सभक घरमे शराबक दाम चुकबाक लेल फेर ऋण लेल जाइत अछि?’’ माधवी उत्तर देलथिन, ‘‘किछु घरमे हँ। किछु पुरुष पीब छोड़ि देने छथि; हुनकर घर एखनहुँ नीक चलैत अछि। मुदा जे अवैध शराब बेचैत अछि, ओकर कमाइ बढ़ल। गरीब स्त्री फेर दुःख सहैत अछि।’’ ओ अपन बहिनक गामक कथा कहलथिन, जतय एक युवक ढुलाईक काजमे फँसि पुलिसक मामला झेलि रहल छल। सविता चन्दनक चेहरा याद कएलथिन। मुदा ओ ओहि महिलाकेँ चन्दनक नाम नहि कहलथिन; एक घरक घटना दोसर घरक दोष सिद्ध नहि करैत अछि।

केन्द्रक बाहर एकटा नब पर्चा टाँगल गेल छल—‘निश्चित सरकारी नियुक्ति, सीमित स्थान, अग्रिम जमा आवश्यक’। पर्चापर संस्थाक पता स्पष्ट नहि छल; सम्पर्क नम्बर छल, मुदा विभागक नाम सरकारी सन लगैत छल। कुसुम पर्चा देखिते कहलीह, ‘‘नई दिशा केन्द्रो पहिने एहन वचन दैत छल।’’ नैना पर्चा उतारि फाड़लथिन नहि। ओ ओकर फोटो लेलथिन आ पुछलथिन जे पर्चा के टाँगल। पड़ोसक दोकानदार कहलनि जे एकटा युवक भोरे चिपकौने गेल। नैना कहलीह, ‘‘ककरो नाम कल्पना सँ नहि जोड़ब। विज्ञापनक दावाक जाँच करब।’’

नैनाक केन्द्रमे ओहि दिन एकटा छोट समस्या उठल। एक आवेदक चाहैत छल जे कुसुम ओकरा तुरन्त 'योग्य' लिखि प्रमाणपत्र बना देथि। ''हमरा सरकारी कार्यालयमे दाखिल करबाक अछि,'' ओ कहलक। कुसुम बतौलथिन जे केन्द्रक अधिकार योग्यता प्रमाणित करब नहि, विज्ञापन बुझबामे सहायता करब अछि। आवेदक रुष्ट भऽ गेल। ''तखन एतय आ कऽ फायदा की?'' नैना शान्त स्वरमे कहलीह, ''जे काज नहि करैत छी, ओकर शुल्क नहि लैत छी। जँ प्रमाणपत्र चाही तँ अधिकृत संस्थाक बाट बतायब।'' ओ युवक क्रोधमे चलि गेल। कुसुमक चेहरा उतरि गेल। नैना कहलीह, ''सभ आगन्तुक सन्तुष्ट नहि होयत, मुदा झूठ कागज दऽ ककरो भला नहि करब।''

दुपहर एक वृद्ध पिता अपन पुत्रक संग अएलाह। पुत्र स्नातक छल, दू बेर परीक्षा रद्द भेल छल आ एक बेर परिणामक विषयमे विवाद चलि रहल छल। पिता कहलनि, ''कहू ने, कोनो भरोसाक नोकरी अछि? घरक गहना बेचि पढ़ौलहुँ। आब बेटाक मुँह देखैत लाज लगैत अछि।'' पुत्र चुप छल। नैना हुनका बैसबय देलथिन। ''अहाँ पढ़ाइमे जतेक मेहनत केलहुँ, ओकर मोल एकटा परीक्षा तय नहि करैत अछि,'' ओ कहलीह, ''मुदा हम आजु नोकरी भेटबाक झूठ वचन नहि देब। एतय खुलल रिक्तिक सूचना अछि; जँ अहाँ चाहब तँ योग्यता मिलायब।'' युवक पहिल बेर माथ उठा कऽ पुछलक, ''निजी काजो?'' ''हँ, शर्त स्पष्ट होय तखन।''

कुसुम एकटा कारखानाक विज्ञापन देखौलथिन। कार्यघण्टा बेसी छल, वेतन सामान्य; निवासक व्यवस्था नहि। युवक कहलक जे ओ गामसँ रोज आबि नहि सकत। पिता तुरन्त कहलनि, ''भाड़ा हम देब।'' युवकक चेहरा उतरि गेल। नैना कहलथिन, ''पहिने पूरा हिसाब जोखि लिअ। भाड़ाक बाद कतेक बाँचत, भोजनक खर्च की होयत, स्वास्थ्यक असर की पड़त।'' पिता कनेक लजा गेलाह। ''हम तऽ जे भेटय से धऽ लेबाक कहैत रही।'' नैना उत्तर देलथिन, ''काजक आवश्यकता अछि, मुदा शर्त पढ़बाक अधिकारो अछि।'' ओ सभ विज्ञापनक प्रति लऽ गेलाह, तुरन्त हस्ताक्षर नहि कएलनि।

केन्द्रक रजिस्टरमे ओहि दिन एकटा युवक अपन नाम लिखबासँ इनकार कएलक। ओकरा डर छल जे पहिनुक ठगीक शिकायतक कारण फेर कियो परेशान करत। नैना कहलीह जे सहायता लेबाक लेल अनावश्यक निजी जानकारी देब जरूरी नहि। ओ सार्वजनिक विभागक पता लिखि देलथिन। युवक पुछलक, ''अहाँ हमरा नाम नहि जनब?''

नैना उत्तर देलथिन, ‘‘जतेक जानकारीक आवश्यकता अछि, ओतबे लेब। अहाँक भरोसा जबरदस्ती नहि लेब।’’ युवक पर्ची लऽ गेल। आगन्तुकक आँखिमे डर स्पष्ट देखाइत छल।

साँझ सविताकेँ परीक्षा-केन्द्रक किछु अभ्यर्थीक फोन आएल। निजी समूहमे प्रश्नपत्र बिकबाक अफवाह फेर फैलि रहल छल। कियो कहलनि आजुक प्रश्न पहिनहि उपलब्ध छल; दोसर कहलनि ई पुरान प्रश्नपत्रक फोटो मात्र अछि। सविता सबकेँ कहलथिन जे मूल प्रमाण बिना आरोप नहि दोहराओल जाय। ओ स्वयं अधिकृत शिकायतक पद्धति खोजलथिन। ‘‘जाँचक माँग करब, मुदा निर्दोष अभ्यर्थीकेँ चोर कहबाक अधिकार हमरा नहि,’’ ओ कहलीह। नैना हुनका देखैत सोचलीह जे सविताक दृढ़ता ओहि दिनक पाँतिसँ कतेक बदलि गेल अछि।

एही बीच चन्दन औषधि-दोकानक मालिकसँ भेंट कऽ केन्द्र पहुँचल। मालिक पहिने काजक परीक्षण लेल तीन दिनक अवधि देबाक कहने छलाह। भुगतान कम छल, मुदा लिखित समय आ मालक सूची देबाक सहमति छल। चन्दन नैनाकेँ पर्चा देखौलक। ‘‘गाड़ीमे जे किछु राखल जाएत, ओकर सूची चाहब,’’ ओ कहलक। नैना पुछलथिन, ‘‘जँ मालिक कहथि जे एतना प्रश्न करयवला चालक नहि चाही?’’ चन्दन चुप रहल, फेर कहलक, ‘‘तखन दोसर काज खोजब।’’ सविता ओकरा पुछलथिन जे पढ़ाइ जारी राखत कि नहि। ‘‘रातिमे घण्टा भरि,’’ चन्दन कहलक। सविता मुस्कुरैलीह। ‘‘हम पुस्तकक सूची पठाएब।’’

साँझ सविता एकटा छोट खुला बैठक कएलथिन। किछु अभ्यर्थी पुछलनि जे प्रश्नपत्र लीक होयबाक अफवाहपर आन्दोलन करब कि नहि। सविता कहलीह, ‘‘जाँचक माँग लिखित रूपमे करब, जे प्रमाण अछि से जोड़ब। मुदा प्रत्येक सफल अभ्यर्थीकेँ दोषी कहब अन्याय अछि।’’ कियो कहलक जे लगातार परीक्षा रद्द होइत रहला सँ वर्ष बीति जाइत अछि। सविता उत्तर देलथिन, ‘‘एहि लेल पारदर्शी समयसारिणी आ निश्चयक माँग आवश्यक अछि।’’ बैठकक अन्तमे एक युवक प्रश्न उठौलक जे आर्थिक रूपसँ कमजोर आवेदकक यात्राक खर्चक मदति कोना होय। सभ एहि विषयमे अपन-अपन क्षमता अनुसार विचार करबाक तय कएलनि।

किरणक पूर्व परिचित एकटा महिला केन्द्रमे पहुँचलिह। ओ कहलीह जे नव संस्थाक नाँवसँ फोन आएल अछि—जमा राशि देलासँ नियुक्ति निश्चित। ‘‘जे पाछाँ अपराधमे

फँसलाह, से लोक दोसर नाम सँ फेर शुरू कऽ सकैत छथि,'' ओ आशङ्का रखलथिन। नैना उत्तर देलथिन, ''सम्भव अछि, मुदा केवल आशङ्कापर ककरो दोष नहि देब। नम्बर, कम्पनीक विवरण आ भुगतानक माँग सुरक्षित रखू।'' महिला पुछलथिन, ''अहाँ फेर पुलिस लग जएबह?'' नैना कहलीह, ''जतय लिखित शिकायत उचित होयत, ओतय जेबाक चाही। मुदा एकटा संस्था बन्द भेला सँ झूठ वचनक कारोबार आपसँ नहि रुकैत अछि।''

आवेदकसभक भीड़ बढ़ल तँ पुस्तकालयक सचिव हरिनारायण झा पुछलथिन जे केन्द्रकेँ दू घण्टा अतिरिक्त कोठरी चाही कि नहि। नैना हिसाब कएलथिन। ''एखन हमरा अति विस्तृत काज नहि खोलबाक अछि,'' ओ कहलीह। ''जतेक जाँच सकी, ततेक सूचना देब। भीड़ जुटा कऽ नाम कमाएब लक्ष्य नहि।'' हरिनारायण कहलनि, ''अहाँक धैर्यक परीक्षा होयत। लोग तुरन्त परिणाम चाहत।'' नैना मुस्कुरैलीह। ''हमहुँ कहियो एही पाँतिमे तुरन्त परिणाम चाहैत रही। तेँ हुनक अधीरता बुझैत छी।''

राति घुरबाक पहिने सविता बोर्डपर एकटा सूचना चिपकौलथिन—'कोनो नोकरी, परीक्षा वा प्रशिक्षणक नामपर धन देबासँ पहिने अधिकृत स्रोत जाँचू। केवल विज्ञापन देखिकऽ नियुक्ति निश्चित नहि होइत अछि।' ओहि सूचना पर किछु विद्यार्थी प्रश्न लिखि देने छलाह। सविता लघु उत्तर सभ लिखलथिन आ जाहि विषयमे जानकारी नहि छल, ओतय 'जाँच बाँकी' लिखलथिन। मुन्नीक फोन आएल। ''परीक्षा ठीक भेल,'' ओ कहलीह, ''मुदा परिणामक डर अछि।'' सविता उत्तर देलथिन, ''डर रहत। मुदा आइ ककरो झूठ नम्बरपर टका नहि पठौलहुँ, ईहो काज भेल।''

घरमे चन्दन देरि सँ पहुँचल। सरस्वती देवी पूछलथिन जे मजदूरी निश्चित भेल कि नहि। ''तीन दिनक परीक्षण अछि,'' चन्दन कहलके। ''लिखित कागज बनत?'' ''हँ।'' माय चुप भऽ गेलीह। नैना अपन केन्द्रक दिन भरिक हिसाब रखलीह—दस आगन्तुक, तीनटा विज्ञापनक जाँच, दू लिखित आवेदन, एको नियुक्तिक पुष्टि नहि। ओहि कापीक पन्नापर कोनो विजयक घोषणा नहि छल। मुदा लोक जे प्रश्न एतय पुछि रहल छल, से प्रश्न ओ सभ एक बरख पहिने ककरो पुछि नहि सकने छलाह।

राति चन्दन पुरान परीक्षा-पुस्तकक पहिल पन्ना खोललक। पहिने जहाँ प्रश्नक उत्तर लाल पेनसँ चिह्नित कऽ देने छल, ओहि पन्नापर एकटा पुरान तिथि सेहो लिखल छल। ओ

तिथि परीक्षा रद्द भेलाक बादक छल। चन्दन किताबक कातमे लिखलक—‘काजक समयक बाद पढ़ब, ककरो झूठ आश्वासनपर धन नहि देब।’ माय ओकर कोठरीक दुआरिपर अएलीह। ‘‘बत्ती बुझा कऽ सूतिह। सबेर कामपर जाएबाक अछि,’’ ओ कहलीह। चन्दन पुस्तक बन्द कऽ राखलक। पढ़ाइ आ मजदूरी दुनू संग निभेबाक कठिनाइ ओकरा बुझाइत छल; तैयो आब दू पैघ वचन देबाक बदला अगिला दिनक एक घण्टा तय करैत छल।

अगिला भोर ओही बस अड्डापर फेर युवक-युवती पाँतिमे ठाढ़ छलाह। एकटा नब परीक्षा, एकटा छोट प्रशिक्षण, ककरो अस्पतालक परिचारिकाक पद, ककरो कारखानाक श्रमिकक पद। कियो पुरान चप्पल सी सकने छल, कियो फाइलक फाटल किनारि बाँधने छल। चायक दोकानदार एक युवकसँ पुछलक, ‘‘एतेक बेर परीक्षा देलह, नोकरी कखन भेटत?’’ युवक उत्तर देलक, ‘‘जे दिन सही क्रममे प्रश्नपत्र, परीक्षा आ परिणाम भेटत।’’ बगलमे ठाढ़ वृद्ध किसान एतबे कहलनि, ‘‘ओहि दिन धरि घर चलएबाक सेहो उपाय चाही।’’ पाँति आगाँ बढ़ैत रहल।

अध्याय ६० : जिनगी आगाँ बढ़ैत अछि

नवगढ़मे फागुनक पहिल उजास पसरल छल। रातिक ओससँ भीजल आँगनमे सरस्वती देवी तुलसी लग पानि देलथिन। आँगनक गाछपर चिड़ैसभ भोरेसँ चहकि रहल छल। पुरान घरक देवालक प्लास्टर दू ठामसँ खसि गेल छल, मुदा दुआरिपर राखल गमलामे नब पात निकलि आएल छल। नैना भोरहि उठि रसोइक चूल्हि देखलीह, तखन रोजगार-सहायता केन्द्रक कापी खोललथिन। आजु दूटा काम छल—केंद्रक मासिक खर्चक हिसाब पूरा करब आ अभयक परिवारसँ विवाहक अन्तिम व्यवस्था पर बात करब। दुनू काज हुनका एकसमान वास्तविक लगैत छल। एक दिस कोठरीक भाड़ा, दोसर दिस अगिला जीवनक भाड़ा, भोजन आ समयक बाँट। नैना पहिल बेर वर्षाक दिन नोकरी खोजय निकलबा सँ एहि फागुन धरि लगभग डेढ़ बरख बीति गेल छल। एहि बीच दोसर वर्षाक मौसम सेहो आएल, आ शहरक बस अड्डापर आवेदनक पाँति फेर लागल।

शैलेन्द्र मामा पछिला सप्ताह फेर आएल छलाह। एहि बेर संग कोनो आरोप नहि अनने छलाह। ओ चुप्पे सरस्वतीक स्वास्थ्य पुछलनि, फेर कहलनि जे अभयक परिवारसँ भेंट करबाक इच्छा अछि। नैना कहलथिन, ‘‘भेंट करू। मुदा जे बात हमरा वा अभयकेँ सीधा पुछि सकैत छी, से पाछाँ गुप्त रूपसँ नहि पुछू।’’ शैलेन्द्र असहज हँसी हँसलनि। ‘‘हमरा अपन चिन्ता रहल,’’ ओ कहलनि। ‘‘अहाँक चिन्ता हम सुनलहुँ,’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘मुदा एकटा जातिक नाम हमरा जीवनक निर्णय नहि लिखत।’’ मामा ओहि दिन अन्तिम सहमति नहि देलनि; बस एतबे कहलनि जे ओ भेंटमे आओताह। नैना एकरा बदलल परिस्थिति मानलीह, विजय नहि।

अभयक घरमे सेहो तैयारी चलि रहल छल। हुनक माय विवाहक अवसरपर छोट भोजक बात कहैत छलीह, बाबूजी खर्चक हिसाब पूछैत छलाह। रानी, अभयक बहिन, फोनपर नैना सँ कहलीह, ‘‘भैया चाहैत छथि जे सभ कार्यक्रम सरल रहय। मुदा माय कहैत छथि जे

पड़ोसीकेँ खाली खबरि दऽ छोड़ब उचित नहि।'' नैना मुस्कुरा कऽ उत्तर देलथिन, ''दू घरक खुशीक हिसाब लगब कठिन नहि, जँ दिखावा नहि होय।'' रानी पुछलथिन, ''अहाँ अपन काज जारी राखब ने?'' नैना कहलीह, ''हँ। विवाहक बादो केन्द्रक काज हमर काज रहत। अभयक पत्रकारिता हुनकर काज। घरे दुनूक काज बाँटबाक पड़त।''

बैठकसँ पहिने सरस्वती देवी नैनाकेँ अलग बजौलथिन। ''बेटी, हम तोरा रोकबाक नहि चाहैत छी। मुदा चन्दनक मामलाक कारण अभयक परिवार तोहर अपमान करय तँ?'' नैना कहलीह, ''ओ सभ चन्दनक विषय जानैत छथि। हम कोनो बात नुकौने नहि छी। चन्दन अपन काजक जवाब देत, हम अपन जीवनक।'' सरस्वती पुनः पुछलथिन, ''तोरा अपन मायक बोझ लगैत होयत?'' नैना मायक हाथ धरि कहलीह, ''बोझ नहि। मुदा हमरा सभकेँ व्यवस्था चाही, जतय अहाँक इच्छा सेहो सुनल जाय।'' सरस्वती चुप भऽ गेलीह। एकटा मायक भयक बीच बेटी हुनका अपन निर्णयक सहभागी बना रहल छलीह।

किछु दिनक बाद दुनू परिवार पुस्तकालयक पाछिल बरामदामे भेटल। एही बरामदामे नैना कखनो रोजगारकेन्द्रक अनुमति मँगने छलीह। आइसँ पहिले ओतय लाज, भय आ आशङ्का अधिक छल; आइ नब तरहक संकोच छल। अभयक बाबूजी सरस्वती देवीकेँ पुछलनि, ''दवाक नियमित खर्च कतेक पड़ैत अछि?'' सरस्वती सन्न भऽ गेलीह। ओ सोचने छलीह जे जाति वा खानदानक प्रश्न उठत। अभयक बाबूजी कहला, ''हम एही लेल पुछैत छी जे विवाहक बाद बेटीकेँ मायक चिन्ता किएक छोड़बाक पड़य? सभ मिलि व्यवस्था बुझि लेब।'' शैलेन्द्र एक बेर हुनक चेहरा देखलनि, फेर नीचाँ तकलनि।

बैठकमे रहबाक व्यवस्था पर बेसी समय लगल। अभयक काज शहरक समाचार-कक्ष लग छल; नैनाक केन्द्र पुस्तकालयमे। किरायाक दूटा कोठरी लेल खोज चलि रहल छल। नैना स्पष्ट कहलीह जे सरस्वती देवी अपन घरमे रहय चाहैत छथि, मुदा आवश्यकता पड़ला पर हुनका नियमित देखरेख चाही। चन्दन घरमे रहत, तकर अर्थ ई नहि जे समस्त जिम्मेवारी ओकरा माथ पर देल जाय। अभय सहमति देलनि। ''हम सँझमे समाचारक काजसँ जल्दी घुरि नहि सकब, मुदा बिहानक घरेलू काम आ सप्ताहक बजारक भार लऽ

सकैत छी,'' ओ कहलनि। रानी हँसि पड़लीह। ''भैया, पहिले कपड़ा सम्हारब सीखू!'' सभक मुखपर एकटा साधारण हँसी फैलल।

बरामदाक कोनमे रानी आ चन्दनक बातचीत होइत छल। रानी कहलीह, ''भैया घरमे कखनो समयपर नहि पहुँचैत छथि। अखबारक काम एहन अछि?'' चन्दन हँसि कहलके, ''दीदी सेहो केन्द्रमे देरि करैत छथि। तखन दुनूक झगड़ा निश्चित।'' रानी उत्तर देलथिन, ''झगड़ा होय तँ दुनू भोजन बनब सीखथि।'' चन्दनक चेहरा कनेक गम्भीर भेल। ''हम एखन गलती सुधरबाक काजमे छी। घरक काम सँ दूर रहला पर सब दोष दीदीपर पड़ैत छल।'' रानी कहलथिन, ''हुनका एकटा घर बनएबाक अछि, पुरान सभ भार अकेले उठेबाक नहि।'' दुनू भीतर आबि बासन समेटबामे लागलाह।

शैलेन्द्र फेर जातिक प्रश्न उठौलनि, मुदा एहि बेर स्वर पहिनेसँ धीमा छल। ''सामाजिक समारोहमे किछु सम्बन्धी नहि आओताह। एतना बुझि लिअ,'' ओ कहलनि। नैना उत्तर देलथिन, ''आब बुझि लेने छी। जँ कियो नहि आओताह तँ हुनका अपमानित नहि करब; जँ आओताह तँ स्वागत करब। मुदा विवाह टारब नहि।'' अभयक माय कहलीह, ''लोकक मुख बन्द करब हमर हाथमे नहि। अपन घरक दुआरि खुलल राखब हमर हाथमे अछि।'' शैलेन्द्र कनेक देरि चुप रहलाह। ओहि दिन हुनका अपन तर्क फेर दोहरएबाक आवश्यकता नहि बुझायल।

विवाहक कार्यक्रम निश्चय भेल—कानूनी औपचारिकता पूरा कऽ, परिवारक उपस्थितिमे सरल विधिसँ सम्बन्ध स्थापित करब। तिथि एना चुनल गेल जे अभयक समाचार-कक्षमे आवश्यक अवकाश भेटि सकय आ नैनाक केन्द्रमे सविता आ कुसुम आगन्तुकक सहायता सँभालि सकथि। नैना केन्द्रक फाटकपर सूचना लगौलथिन जे ओहि दिन कार्यालय बन्द रहत, मुदा आवश्यक सार्वजनिक सूचना फोनपर उपलब्ध रहत। कुसुम कहलीह, ''अहाँ विवाहक दिनो कामक चिन्ता करैत छी!'' नैना उत्तर देलथिन, ''कामक समयमे जे लोक अबैत छथि, हुनका बिना खबरि घुरब उचित नहि। मुदा विवाहक दिन कार्यालय खोलि बैसबाक सेहो नहि अछि।''

नैना विवाहक खर्चक सूची बनबैत समय बैंकमे जमा अपन छोट बचत देखलीह। पहिले ओ सोचने छलीह जे विवाह लेल ऋण लेल जाए। अभय एहि विचारक विरोध कएलनि। ‘‘जे ऋण आवश्यक नहि, से केवल लोकक देखबामे खर्च करब मूर्खता होयत,’’ ओ कहलनि। नैना सहमति देलथिन। भोजन बनयवला स्थानीय महिलासभसँ उचित पारिश्रमिकपर सहायता लेबाक निर्णय भेल। माधवी देवीकेँ पुछल गेल तँ ओ कहलीह, ‘‘काज करब, मुदा मजदूरी स्पष्ट लिखू। मुफ्तमे दया नहि चाही।’’ नैना रसीद बनौलथिन। माधवी हँसलीह—‘‘तों आब रसीद बिना पानि सेहो नहि देबही!’’ नैना कहलीह, ‘‘पानिक रसीद नहि, श्रमक हिसाब जरूर।’’

पूनमकेँ निमन्त्रण नैना स्वयं देबय गेलीह। पूनम दुआरिपर अपन कापी लऽ बैसल छलीह। तनिक स्वास्थ्य सुधरल छलनि, यद्यपि तेज आवाज सुनिते कखनहुँ घबरा जाइत छलीह। नैना कहलीह, ‘‘हम चाहैत छी अहाँ आऊ, मुदा जँ भीड़मे असुविधा होय तँ बिल्कुल नहि आउ।’’ पूनम निमन्त्रणपत्रक अक्षर पढ़लथिन। ‘‘हम आओतहुँ, थोड़े देरि लेल,’’ ओ कहलीह, ‘‘आ जँ जल्दी घुरबाक मन भेल तँ बुरा नहि मानब।’’ नैना हुनक हाथ पकड़बाक पहिने पुछलथिन, ‘‘हाथ धरि सकैत छी?’’ पूनम मुस्कुरा देलथिन। ‘‘धरू। हर बात पूछब जरूरी नहि, मुदा पूछैत छी तँ नीक लगैत अछि।’’

विभा स्वयं नहि आबि सकबाक सन्देश पठौलथिन। हुनक एकटा प्रशिक्षणक परीक्षा ओही दिन छल। ओ लिखलथिन जे नैनाक स्वतन्त्र निर्णयक सम्मान करैत छथि, आ घर बसएबाक अर्थ अपन पुरान जीवन समाप्त करब नहि अछि। नैना हुनका शुभकामना देलथिन। किरणक संग नैना कोनो व्यक्तिगत सम्बन्ध नहि रखैत छलीह; ओकर कानूनी मामला अपन मार्गपर छल। दिनेश सेहो अपन काजघरमे व्यस्त छलाह। जीवनक सभ पात्र एक्के उत्सवमे जमा होयबाक आवश्यकता नहि छल। हुनका सभक बीच जे सम्बन्ध छल, से घटनाक परिणामसँ बनल छल; किछु सम्बन्ध दूरीमे रहनाइ उचित छल। अनुष्का सेहो मायक संग रहि अपन विद्यालयक पढ़ाइ जारी रखलनि। ओ नैनाक विवाह लेल छोट शुभकामना-पत्र पठौलक; विभा पत्रक संग ई समाचार सेहो लिखलथिन जे बेटी आब अपन भविष्यमे की पढ़त, से स्वयं सोचि रहल अछि।

चन्दन विवाहक तैयारीमे सबसँ बेसी छोट-छोट काज कएलक। ओ कुरसीक व्यवस्था देखलक, अतिथिक पानि रखबाक घैला धोलक, बजारसँ साग-सब्जी अनलक। हमर गलती घरक खुशीक बाट नहि रोकय, ई ओकर मनक इच्छा छल। मुदा पुलिसक अगिला उपस्थितिक सूचना आएल तँ ओ ओकरा कापीमे लिखलक आ अधिवक्ताकेँ जनौलक। नैना ओकरा कहलथिन, ‘‘विवाहक दिन काज सम्हारिह, मुदा कानूनी विषय नुकएब नहि।’’ चन्दन कहलक, ‘‘आब बात नुकएला सँ स्थिति सुधरत नहि।’’ एकटा साधारण वाक्य छल, मुदा नैना जानैत छलीह जे एहि निष्कर्ष धरि पहुँचबामे ओकर कतेक हानि भेल अछि।

एहि बीच अभयक समाचार-कक्षमे विवाहक अवकाशक कागज देबामे अटकल भेल। एकटा आकस्मिक समाचारक कारण सम्पादक नवल किशोर चाहैत छलाह जे अभय ओहि दिनो काम करथि। अभय साफ कहला जे जिम्मेवारीक हस्तान्तरण पहिनहि कऽ देने छथि, आ विवाहक निर्धारित दिन उपस्थित नहि रहि सकताह। नवल किशोर पहिने नाराज भेलाह, फेर दोसर संवाददाताकेँ काज देलनि। ‘‘विवाहक बादो पत्रकारिता छोड़ब नहि,’’ ओ हँसैत कहलनि। अभय उत्तर देलनि, ‘‘पत्रकारिता हमर काज अछि; घरक जिम्मेवारी सेहो हमर अछि।’’ एहि छोट असहमतिमे हुनका अपन अगिला जीवनक समयक महत्त्व बुझायल।

विवाहक बिहान शहरक आकाशमे बादरक हलुक रेखा छल। सरस्वती देवी नैनाक लेल पेटी खोललथिन। ओतय अपन विवाहक समयक साड़ी छल, रङ्ग कनेक मलिन भऽ चुकल। ‘‘इहे पहिरब?’’ माय पुछलथिन। नैना साड़ी बाहर निकालि देखलीह। ‘‘ई अहाँक स्मृति अछि। हम एकरा सँभालि राखब। आइ जे सादा साड़ी तैयार केने छी, ओ पहिरब।’’ सरस्वतीक आँखि भीजि गेलनि। ‘‘हम सोचने रही जे तोहर विवाहमे कतेक लोक आओताह, कतेक बाजा बाजत।’’ नैना कहलथिन, ‘‘माय, लोक कम छथि, मुदा हम डेराएल नहि छी।’’ माय हुनक माथपर हाथ रखलथिन।

कार्यक्रममे किछु सम्बन्धी आएलाह, किछु नहि। शैलेन्द्र अन्ततः आएलाह। दरबज्जापर अभयक बाबूजी हुनका आदरसँ भीतर लऽ गेलाह। दुनू बीच पुरान समाजक विषयमे बहस नहि भेल; सारा समय अतिथिक भोजन आ बैसबाक व्यवस्थामे बीतल। कमला नैना लग आबि कहलीह, ‘‘हम जे बात कहने रही, ओ कठोर छल।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘अहाँक

बात हमरा दुख देने छल, मुदा आजु ओहि दिनक बहस दोहराएब नहि।'' कमला नैनाक हाथमे छोट चूड़ीक डब्बा देलथिन। ''ई आशीष बुझू, आदेश नहि।'' नैना कनेक हँसलीह।

अभय विवाहक समय सामान्य कुरता पहिरने छलाह। हुनका माथपर पसिनाक कण छल। नैना पुछलथिन, ''एतेक घबड़ा रहल छी?'' अभय धीरे कहला, ''समाचारक जाँचमे एतेक प्रश्न करैत छी; अपन जीवनक विषयमे आजु किछु शब्द कम पड़ि रहल अछि।'' नैना उत्तर देलथिन, ''शब्द कम रहय तँ काजसँ पूरा करब।'' विधि आ आवश्यक कागजक औपचारिकता पूरा भेल। दुनू परिवारक लोक अपन-अपन ढङ्गसँ शुभेच्छा देलनि। ओहि दिन भाषण नहि भेल। किछु बच्चा मिठाइक दोसरा टुकड़ा मँगैत छल, रानी पानिक गिलास भरि रहल छलीह, चन्दन कुर्सी लगबैत छल। एतबा बीच नैना आ अभयक विवाह भऽ गेल।

पूनम किछु देरि लेल एलीह। ओ भीड़सँ कने दूर बैसलीह, फेर नैनाकेँ एकटा छोट कापी देलथिन। ''एहि पर लिखल अछि जे रोजगार-सूचना जाँच करबाक समय कोन प्रश्न पुछबाक चाही,'' ओ कहलीह, ''हम केन्द्रमे काज करैत ई बनौने छी। अहाँक विवाहक उपहार एतबे।'' नैना कापी खोललथिन—वेतन, आवास, पहचानपत्र, छुट्टी, सम्पर्क आ आकस्मिक सहायता सम्बन्धी प्रश्न। ''ई बहुत काजक अछि,'' नैना कहलीह। पूनम उत्तर देलथिन, ''हमरा जे प्रश्न पहिने पुछबाक चाही छल, ओ सभ लिखि लेने छी। दोसराक लेल उपयोगी होय, तँ नीक।'' ओ थोड़े देरि बाद मायक संग घुरि गेलीह। केओ हुनका रोकबाक आग्रह नहि कएलक।

नव दम्पतीक पहिल साँझ किरायाक कोठरीमे बीतल। दीवालपर एकटा पुरान घड़ी छल जे पाँच मिनट पाछाँ चलैत छल। अभय झोरासँ दूटा स्टीलक गिलास निकाललनि, नैना पानिक मटका राखलथिन। भोजन घरसँ आएल छल; अगिला दिनसँ स्वयं बनायब पड़त। अभय पुछलनि, ''घड़ी ठीक करब?'' नैना कहलीह, ''करब। नहि तँ सबेरे कार्यालयमे देरी होयत।'' अभय हँसि देलाह। विवाहक दिन समाप्त भऽ गेल छल, मुदा जीवनक कामक पहिल सूची शुरू भऽ चुकल छल।

विवाहक अगिला बिहान दम्पती पहिल बेर किरायाक कोठरीक खर्च मिलौलनि। घरसँ आएल पात्र, मेज आ बिछाओनक सूची अलग छल। अभय किरायाक रसीद रखलनि। नैना पुछलथिन, ‘‘मासक राशन के कीनत?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘जे पहिले बाजार पहुँचत, ओ। मुदा खर्च दुनू लिखब।’’ नैना हँसलीह। ‘‘रसीद पर घर नहि चलैत अछि, मुदा बिना हिसाब घर डोलैत अछि।’’ भोजन बनबैत अभय तरकारीमे नोन बेसी दऽ देलनि। नैना चखि पुछलथिन, ‘‘नोन जोखने छलहुँ?’’ ‘‘नहि,’’ अभय कहला। ‘‘तखन दोसर बेर जोखब,’’ नैना उत्तर देलथिन। दुनू पातर दाल मिला कऽ भोजन समाप्त कएलनि।

दोसरा सप्ताह नैनाक केन्द्र फेर नियमित खुलल। केन्द्रमे आगन्तुकक संख्या कखनो बेसी, कखनो बहुत कम रहैत छल। सविता अधिकृत परीक्षा-सूचना मिलबैत छलीह; कुसुम पूर्व कर्मचारीसभक बकाया वेतनक आवेदनमे सहयोग करैत छलीह। पूनम सप्ताहमे दू दिन अपन स्वास्थ्यक अनुसार सूचना पढ़बाक काज करैत छलीह। ओकर नाम बोर्डपर अनुमति लऽ लिखल गेल छल—‘सूचना-सहयोगी’। नैना ओहि नामक सोझाँ निर्धारित पारिश्रमिक लिखलथिन। ‘‘मुफ्त सेवा कहि कऽ ओकर श्रम नहि लेब,’’ ओ कुसुमकेँ कहलथिन। पूनम अपन पहिल छोट पारिश्रमिक पाबि मायक औषधि कीनलीह।

चन्दन औषधि-दोकानक ढुलाईक अस्थायी काज शुरू कएलक। मालिकक देल लिखित सूची देखिकऽ ओ सामान उठबैत छल। कखनो काम कम भेटैत छल, कखनो पूरा दिन लगि जाइत छल। पुलिसक जाँचमे ओकरा फेर बयान देबाक पड़ल। अधिवक्ता हुनका स्पष्ट कहलनि जे साँच कहबाक अर्थ आरोपसँ स्वतः मुक्त भऽ जाएब नहि होइत अछि। चन्दन उत्तर देलक, ‘‘हम ई बुझैत छी।’’ माय कखनहुँ ओकर विषयमे चिन्ता करैत छलीह, मुदा आब ओकरा दरबज्जासँ बाहर निकलिते झूठ बहाना बनाबय नहि पड़ैत छल।

रेखा मण्डलसँ नैनाक कखनो-कखनो भेंट होइत छल। नरेशक हत्याक मामला अदालतमे चलि रहल छल; अगिला सुनवाईक तिथि निर्धारित होइत, कागजातक जाँच चलैत आ साक्षीसभकेँ आवश्यक सूचना भेटैत। रेखा अपन भाइक स्मृतिमे केवल अपराधक चर्चा नहि करैत छलीह। ओ हुनक पुरान पुस्तकसभ विद्यालयक छोट पुस्तकालयकेँ देबाक विचार कएलथिन। नरेशक बेटाकेँ पढ़ाइ लेल पुस्तक मिलि रहल छल; सीमाक रोजगारक

प्रश्न एखन पूरा हल नहि भेल छल। नैना हुनकासँ भेटि खाली आश्वासन नहि देलथिन, उपलब्ध सहायताक सही जानकारी दैत रहलिह।

माधवी देवीक घरमे सेहो सभ समस्या समाप्त नहि भेल छल। अवैध शराब बेचबाक खबरि समय-समयपर अबैत छल; कखनो पुलिस कार्रवाई होइत, कखनो नब लोक ओही धन्धामे उतरैत। हुनक पति शराब छोड़बाक प्रयास कऽ रहल छलाह, मुदा घरक खर्चक जिम्मेवारी एखनहुँ माधवीक कमाइपर बहुत निर्भर छल। एक दिन ओ केन्द्रमे अएलीह आ कहलीह, ‘‘पहिने शराबबन्दी भेल तँ हम सभ सोचलहुँ जे आब सभ बदलि जाएत। फेर बुझायल जे कानूनक संग घरमे रोजगार, हिसाब आ साहस सेहो चाही।’’ नैना हुनक बात सुनलथिन। माधवी अपन दिनक मजदूरीक सही हिसाब माँगबाक लेल नब आवेदन लऽ गेलीह।

भानु प्रतापक चौकीक अधूरी रात्रि-पञ्जी, ठीकेदार वीरेन्द्र रायसँ सम्बन्धित भुगतान आ नेता जगदीश चौधरीक सम्पर्कक विषयमे जाँच एखनहुँ चलि रहल छल। सुजाता सम्बन्धित अभिलेख अलग-अलग अधिकारीक समक्ष सत्यापन लेल पठौने छलीह। केवल परिचय वा अफवाहक आधारपर ककरो अपराधी घोषित नहि कएल गेल छल। माधवीक गाममे लोक कार्रवाईक समाचार सुनैत छलाह, मुदा अवैध शराबक कारोबार एखनहुँ पूरा रोकल नहि गेल छल।

अभयक समाचार-कक्षमे एक नब पत्रकार आएल छल। ओ नरेशक हत्याक विषयमे पुरान फोटो देखैत पुछलक, ‘‘एहि मामलाक अन्तिम खबरि कखन लिखब?’’ अभय उत्तर देलनि, ‘‘अदालत जे निर्णय देत, तकर समाचार लिखब। एखन जाँच आ सुनवाईक वास्तविक स्थिति लिखबाक अछि।’’ नब पत्रकार पुछलक, ‘‘पाठकसभकेँ आश्चर्यजनक शीर्षक चाही।’’ अभय कहलनि, ‘‘पाठककेँ सही जानकारीक अधिकार बेसी अछि।’’ ओ दिनभरि काम कऽ घर घुरलाह तँ नैना ओहि समय किरायाक कोठरीमे केन्द्रक हिसाब लिखि रहल छलीह। दुनू एक-दोसराकेँ अपन दिनक काजक कथा कहला, कखनो असहमत भेलाह, फेर भोजन तैयार करय उठलाह।

केंद्रक मासिक समीक्षामे सविता बतौलथिन जे किछु आगन्तुककेँ प्रमाणित रिक्तिक सूचना भेटल, दू गोटे साक्षात्कार धरि पहुँचल, मुदा नियुक्ति निश्चित नहि भेल। कुसुमक बकाया वेतनक आवेदनक सुनवाई आगाँ बढ़ल छल, पूनमक कामक समय ओकर इच्छानुसार तय छल। नैना कागजपर एतबे लिखलथिन। ‘‘हम सभ पाँच नियुक्ति करौने छी’’ एहन झूठ प्रचार करबाक सुझाव एक बाहरी शुभचिन्तक देने छल; नैना स्पष्ट अस्वीकार कएलथिन। केन्द्रक परिचय-पत्रमे एकटा पाँति राखल गेल—‘सही सूचना, स्पष्ट शुल्क, नियुक्तिक कोनो झूठ आश्वासन नहि’। ओ पाँति नैनाकेँ अपन पुरान जीवनक अनुभवसँ कमाओल नियम लगैत छल।

एक दिन नैना बस अड्डासँ घुरि रहल छलीह। ओही ठाम जतय पहिल बेर नोकरीक आवेदन लऽ पाँतिमे ठाढ़ रहलीह, आब दोसरा युवती अपन कागज सम्हारैत असहाय भावसँ एम्हर-ओम्हर देखैत छलीह। ओकर हाथमे एकटा नियुक्ति-विज्ञापन आ फीस जमा करबाक पर्ची छल। युवती नैनाकेँ पुछलथिन, ‘‘एहि संस्थाक पता कतय अछि? फोनपर कहलनि जे आजु रुपैया नहि देब तँ अवसर छुटि जाएत।’’ नैना पर्ची ध्यानसँ पढ़लथिन। ओही प्रकारक जल्दी आ आश्वासनक भाषा छल जे पूनमक समय सुनने छलीह। मुदा संस्था नब छल; केवल कागज देखिकऽ ठगी घोषित करब उचित नहि छल।

‘‘अहाँक नाम की?’’ नैना पुछलथिन। ‘‘रूपा,’’ युवती कहलीह। ‘‘कतेक टका माँगलनि?’’ ‘‘बारह हजार। घरसँ पाँच हजार लऽ अएल छी। बाकी ऋण पर लेब।’’ नैना पुछलथिन, ‘‘नियुक्तिक लिखित शर्त देखौलनि?’’ रूपा माथ हिलौलीह। ‘‘नहि, कहलनि जमा कएलाक बाद।’’ नैना अपन थैलासँ केन्द्रक पता लिखल पर्ची निकाललथिन। ‘‘हम रोजगारक व्यवस्था करबाक वचन नहि दैत छी। मुदा विज्ञापनक स्रोत जाँचि सकैत छी। जँ चाही तँ पहिने ओतय चलू।’’ रूपा किछु देरि सोचलीह, फेर कहलथिन, ‘‘घरमे सभ बाट देखैत अछि।’’ नैना उत्तर देलथिन, ‘‘घरकेँ सही बात कहब। टका देबासँ पहिने शर्त बुझब सेहो जरूरी अछि।’’

बस अड्डापर रुकल एकटा बसक खिड़कीसँ मुन्नी हाथ हिलौलीह। ओ परीक्षा देलाक बाद घर घुरि रहल छलीह; परिणामक सूचना एखन नहि आएल छल। सविता हुनका देखिते

पुछलथिन जे अगिला सप्ताह पुस्तकालयक अध्ययन-बैठकमे आएतीह कि नहि। मुन्नी कहलीह, ‘‘घरक खेतक काज अछि, मुदा समय निकालब।’’ नैना रूपाकेँ कहलथिन, ‘‘एहि शहरमे किछु लोक सहायता करैत छथि, किछु ठगैत छथि। दुनूकेँ चिन्हबाक लेल प्रश्न जरूरी अछि।’’ रूपा विज्ञापनक पर्ची मोड़ि थैलामे रखलीह। ओ आब केवल डरि नहि रहल छलीह; ओ पूछबाक तैयारी करि रहल छलीह।

रूपा नैनाक संग पुस्तकालय दिस चललीह। सड़कपर नब कोचिंगक विज्ञापन छल, पुरान कारखानाक फाटकपर मजदूर ठाढ़ छलाह, दूर पुलिसक गाड़ी जाइत छल। शहरक एकटा चेहरा चमकैत दुकान, नब मकान आ रोजगारक होर्डिङमे देखाइत छल; दोसर चेहरा पाँति, ऋण, अनिश्चित वेतन आ नोकरीक आशामे ठाढ़ लोकक छल। नैना एहि दुनू चेहराकेँ आब अलग-अलग संसार नहि बुझैत छलीह। ओ रूपाकेँ कार्यालयक दुआरिपर पहुँचाबि कहलीह, ‘‘बैसू। पहिने कागज पढ़ू। प्रश्न पुछबाक अधिकार अहाँक अछि।’’ रूपा कुरसी खींचि बैसलीह। बाहर सड़कपर पाँति फेर बढ़ि रहल छल। भीतर नैना कापीक नब पन्ना खोललथिन। ओहि पन्नापर पहिल प्रश्न छल, उत्तर एखन नहि। मुदा प्रश्न पुछबाक साहस छल, आ ओहि साहसक संग जिनगी आगाँ बढ़ैत छल।

शहरक दोसर चेहरा

मैथिली कादम्बरी · गजेन्द्र ठाकुर

एक शहर, दू चेहरा—
आ एकटा पाँति, जाहिमे सभक भविष्य ठाढ़ अछि।

नवगढ़क बस अड्डापर भोरे-भोर पाँति लागल अछि—हाथमे फाइल, आँखिमे नोकरीक आस। नैना मिश्र ओही पाँतिमे ठाढ़ छथि; हुनका लग प्रमाणपत्र छनि, घरक हिसाब छनि, आ सोझाँ छैक ‘नई दिशा रोजगार केन्द्र’क चमकैत विज्ञापन।

ई विज्ञापन आश्वासन अछि कि जाल? पूनम गायब भऽ जाइत छथि; बन्द मोबाइल, थानाक दुआरि, झूठक कागज आ गामक बदनामीक बीच एकटा हत्याक अनुसन्धान शुरू होइत अछि।

शहरक एक चेहरा चमकैत दोकान, नब मकान आ रोजगारक होर्डिङमे देखाइत अछि; दोसर चेहरा पाँति, ऋण आ अनिश्चित वेतनमे ठाढ़ अछि। साँचक दाम के चुकबैत अछि, आ झूठक कागज कतेक दिन टिकैत अछि—एहि प्रश्नक उत्तर तकैत अछि ई मैथिली कादम्बरी।

पाँच भाग · साठि अध्याय

भाग १	भाग २	भाग ३	भाग ४	भाग ५
नोकरीक खोज	गायब भेल लोक	घृणा आ विश्वासघात	साँचक दाम	बाँचल लोक

विदेह — स्कैन कऽ पढ़ू

www.videha.co.in

videha-ejournal.github.io/videha

© २०१७ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर · प्रथम संस्करण : २०१७ · सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : विदेह · ISSN 2229-547X